





हमरा ज्ञाग.  
आचाररन्नाकर

पुण्य उक्तपायजी श्री १०८ श्री श्री श्री श्री  
लक्ष्मी प्रधानजी गणि:

( मोहन गुप्त )

पंक्ति मोहनलाल मुनिना

वज्र आचारपंथान् ज्ञागाररन्ना

( शुद्धीकरण )

॥ॐ॥ कलकत्ता ॥ मुंबई, ॥ॐ॥

तत्तदीयत मोहनगंमली सदायेन प्रकाशितं

॥ॐ॥ मुंबई, जैनपाठशाला ॥ॐ॥

सं। १९४९ ड। स। १९९९

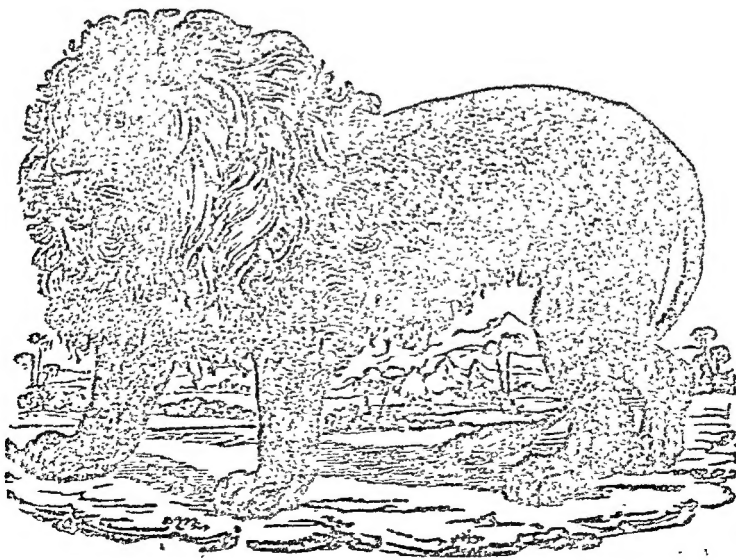
मुंबई इन्डियन प्रीटिंग प्रेस.

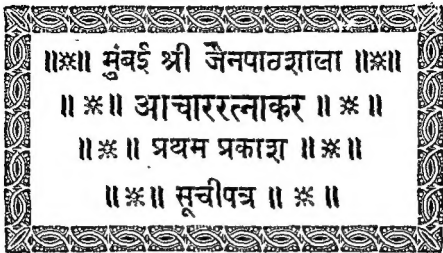
॥ ❀ ॥ प्रशस्ति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री मन्वीर जिनेंद्र तीर्थ तिलकः सद्भूत संपन्नधिः ।  
संजज्ञे सुगुरुः सुधर्मं गणनृत्तस्यान्वये सर्वतः । पुण्ये चांद्रकुलेऽन  
वत् सुविहिते पदे सदाचारवान् । सेव्यः शोचन धीमतां सुमति  
मानुद्द्योतनः सूरिराट् ॥ १ ॥ आसीत्तत्पदं पंकजैकं मधुकृत् श्री  
वर्द्धमानाजिधः । सूरिस्तस्य जिनेश्वराख्य गणनृत्तातो विनेयोत्तमः ।  
यः प्रापत् नञ् सिद्धिं पंक्तिं सरदिः ( १ ० ८ ० ) श्री पत्तने वादिनो  
जित्वा सद्भिरुदं कृती खरतरे त्पारख्यं नृपादे मुंखान् ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ गढे चारुतरे वृहत्खरतरे श्री चंद्रसूरिश्वराः । राजंते  
मनुजैर्द्रसेवित पदाः शास्त्रार्थे वागीश्वराः । स्तत्पादाब्ज पराग धान  
मधुपा लक्ष्मीप्रधानावराः । सङ्गीतादि गुणैर्युता सुगुरुवः संतीह  
सङ्गीवराः ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तेषां विनयेन सुमोहनेन । संपूर्णं आचार विचार गणां  
संकीर्तितेयं खलु बाल शिष्या । सिद्धान्त सारार्थं विज्ञामुदेवै ॥ २ ॥





॥❖॥ संख्या	॥ ❖ ॥ प्रकरण ॥ ❖ ॥	॥❖॥ पत्रांक ॥❖॥
॥ १ ॥ आचारदीपिका मंगलाचरण	....	.... १
॥ २ ॥ आचारकी प्रमाणता	....	.... ३
॥ ३ ॥ साधुपदका स्वरूप	....	.... ६
॥ ४ ॥ श्रावक धर्मका स्वरूप	....	.... ७
॥ ५ ॥ वृद्ध श्रावकाधिकार	....	.... ७
॥ ६ ॥ लघु श्रावकाधिकार	....	.... ९
॥ ७ ॥ संवेग पक्षी श्रावकाधिकार	....	.... ११
॥ ८ ॥ देवतत्वका स्वरूप	....	.... १२
॥ ९ ॥ गुरुतत्वका स्वरूप	....	.... १३
॥ १० ॥ धर्मतत्वका स्वरूप	....	.... १४
॥ ११ ॥ गृहस्थ धर्मके १६ संस्कार नाममात्रः	....	.... १९
॥ १२ ॥ साधुधर्मके १६ संस्कार नाममात्रः	....	.... १९
॥ १३ ॥ साधु ( और ) जैन पंथित, दोनुके योग्य १० संस्कार नामः	....	.... १९
॥ १४ ॥ गृहस्थोंको १६ संस्कार करानेयोग्य गुरुवाधिकार	....	.... २२
॥ १५ ॥ कुलगुरु कैसे आचारवान् चाहिये	....	.... २३
॥ १६ ॥ अनेकांत तत्वदीपक हितोपदेश	....	.... २३
॥ १७ ॥ कर्माकी ८ मूल प्रकृति १५८ उत्तर प्रकृति सर्व नाम, स्वरूप	....	.... २३
॥ १८ ॥ श्री आदीश्वर नमस्कार रूप अंत्य मंगल	....	.... २६

॥❖॥ इति आचाररत्नाकर दीपिका ॥❖॥



## ॥\*॥ अथ आचाररत्नाकर १६ संस्कार विधि ॥\*॥

॥ १९ ॥ ( प्रथम ) गर्जाधान, पंचममास संस्कार	....	.... ३६
॥ २० ॥ ( दूसरा ) पुंसवन, ७ मा मास संस्कार	....	.... ३७
॥ २१ ॥ ( तीसरा ) जन्मकी वखतका संस्कार	....	.... ४०
॥ २२ ॥ ( चौथा ) सूर्य, चंद्र, दर्शन संस्कार विधि:	....	.... ४१
॥ २३ ॥ ( पांचमा ) क्षीरासन संस्कार विधि:	....	.... ४३
॥ २४ ॥ ( षठा ) षष्ठी संस्कार विधि:	....	.... ४४
॥ २५ ॥ ( सातमा ) १० में दिन शुचिकर्म संस्कार विधि:	....	.... ४६
॥ २६ ॥ ( आठमा ) नामकरण संस्कार विधि:	....	.... ४७
॥ २७ ॥ ( नवमा ) अन्न प्राशन संस्कार विधि:	...	.... ४९
॥ २८ ॥ ( दशमा ) कर्णवेध संस्कार विधि:	....	.... ५०
॥ २९ ॥ ( ११ मा ) चूनाकर्म, मस्तक मुंमन संस्कार विधि:	....	.... ५१
॥ ३० ॥ ( १२ मा ) उपनयन संस्कार विधि:	....	.... ५१
॥ ३१ ॥ जिनोपवीत बनानेकाधिकार	....	.... ५३
॥ ३२ ॥ जिनोपवीत धारन करनेकी विधि:....	....	.... ५४
॥ ३३ ॥ व्रतादेश करनेकी विधि:	....	.... ५७
॥ ३४ ॥ ब्राह्मण वर्ण, व्रतादेशाधिकार:	....	.... ५९
॥ ३५ ॥ क्षत्रिय वर्ण, व्रतादेश अधिकार:	....	.... ५९
॥ ३६ ॥ वैश्यवर्ण व्रतादेश अधिकार:	....	.... ६०
॥ ३७ ॥ चारों वर्ण समान आदेश अधिकार:	....	.... ६१
॥ ३८ ॥ व्रत विसर्ग विधि:	....	.... ६२
॥ ३९ ॥ शुद्धवर्णके उत्तराशन धारन विधि: ....	....	.... ६४
॥ ४० ॥ रत्नसोनइयादि दान देनेकी विधि:....	....	.... ६५
॥ ४१ ॥ आचारभ्रष्ट ब्राह्मणको, शुद्ध ब्राह्मण करनेकी विधि:	....	.... ६७
॥ ४२ ॥ ( १३ मा ) विद्याध्ययनारंभ संस्कार विधि: ....	....	.... ६९
॥ ४३ ॥ जौले, तथा, ककाको संपूर्ण अर्थ:....	....	.... ७१
॥ ४४ ॥ ( १४ मा ) विवाह संस्कार विधि:	....	.... ७२
॥ ४५ ॥ ( १५ मा ) व्रतारोप संस्कार विधि:	....	.... ७२

॥ ४६ ॥ ( इत्तमं ) प्रथम सम्यक्त उच्चारण विधि:....	....	ए४
॥ ४७ ॥ १२ व्रत दंभक उच्चारण विधि:....	....	ए५
॥ ४८ ॥ सम्यक्त मूल १२ व्रत, टीप लिखानेकी विधि:	....	ए८
॥ ४९ ॥ मुनि: कपूरचंदजीकृत १२ व्रतपूजा	....	१०८
॥ ५० ॥ १२ व्रतपूजा विधि:....	....	१२१
॥ ५१ ॥ आर्य दिनकृत्य	....	१२२
॥ ५२ ॥ नित्य मंत्रासहित जिन पूजन विधि:	....	१२४
॥ ५३ ॥ जिन मंदर जाणेंकी, १० त्रिक साचवनकी विधि:	....	१२८
॥ ५४ ॥ नित्य जोजन करनेकी विधि: ....	....	१३२
॥ ५५ ॥ आवककेश १ गुण, नामाधिकार:....	....	१३४
॥ ५६ ॥ रात्री जोजन निषेधाधिकार: ....	....	१३७
॥ ५७ ॥ सदैव धर्मकृत्य विधि: ....	....	१३९
॥ ५८ ॥ उपद्रव शांत्यर्थ:, शांति पूजा विधि: ....	....	१४४
॥ ५९ ॥ १० दिग्पाल, ए ग्रह स्थापन, पूजन विधि:	....	१४६
॥ ६० ॥ १० दिग्पाल आक्षान मंत्र: ....	....	१५०
॥ ६१ ॥ १० दिग्पाल विशर्जन मंत्र: ....	....	१५३
॥ ६२ ॥ पाठक श्री बालचंद्रजीकृत पंचकल्याणक पूजा:	....	१५५
॥ ६३ ॥ पांच कल्याणककी विस्तारसँ पूजन विधि:....	....	१६६
॥ ६४ ॥ पांच कल्याणककी संखेपसँ पूजन विधि: ....	....	१६८
॥ ६५ ॥ नवपद मंमल, स्थापन पूजा विधि: ....	....	१६९
॥ ६६ ॥ संघमाला रोपण विधि: ....	....	१७९
॥ ६७ ॥ उपधान तप, नित्य कर्त्तव्यता:....	....	१८३
॥ ६८ ॥ उपधान तप, धारन पालन विधि: ....	....	१८४
॥ ६९ ॥ साधुकों आचार्यपद देनँकी संक्षिप्त विधि: ....	....	२०४
॥ ७० ॥ जैन ब्राह्मणकों, आचार्यपददेनँकी विधि: ....	....	२०५
॥ ७१ ॥ जैन ब्राह्मणकों उपाध्यायपददेनँकी विधि: ....	....	२०६
॥ ७२ ॥ स्थानपति, कर्माधिकारीपद देनँकी विधि: ....	....	२०८
॥ ७३ ॥ त्रिकाल जैन गायत्री मंत्रासहित	....	२०८

( तथा ) कोई जैन आचार ( कोई ) अन्य मत आचार करनेसे, नहिं जैन, नहिं विष्णुं, आस्थाविगर एककेई फलकों प्राप्त नहिं होते हैं ( क्युं कि ) जैनसिद्धांतोंका सार यहीहै, और असल जैनीकी श्रद्धा ऐसी होतीहै ( कि ) अपना जैनधर्म देव, गुरु, धर्मकोंही वंदन पूजन करना (परंतु) अन्यमती कुदेव, कुगुरु, कुधर्मकों, वंदन पूजन न करना ( फेर ) दिलकी आस्थाविगर जन्म विवाहादि संसारी मंगलीक कामोंमें, अपना धर्ममु जव आचार ठोमके, अन्यधर्ममुजव आचार करना ( कैसें ) शुभ फल दायक हो सकेगा ॥ ( जैसें ) दो देशके दो राजाहैं । एक धर्मराजा । एक अधर्मराजा ॥ (जिसमें) जो प्रजा धर्मराजाकों मानते हैं (सो) जहांतक धर्मराजाकी आग्यामुजव संपूर्ण काम करते रहेंगे (तहां तक ) संपूर्ण शुभ फलकों प्राप्त ऊवेंगे ( इसी हेतुसें ) वर्तमानमें प्राय वहुतसे जैन लोक, धर्मसें, धनसें, परिवारसें, विद्यासें, आचारसें, हीन होते जाते हैं ( इस उपरांत ) अन्य मतवाले मिथ्यात्वी लोक, वहुत जैनधर्मकी हांसी करते हैं ( और ) अनेक तरहके विकल्प करते हैं ( कोई कहते हैं ) जैनधर्मवाले शुद्रके समान होते हैं। इनके कोई धर्मसंबंधी आचार नहीं हैं। कहते तो हैं (कि) हम जैन हैं (और) आचार कोई जैनका करतेहैं, कोई अन्यमतका करतेहैं( इससें ) एककी गिणतीमें नहिं आते हैं (और) जन्मसें मरणपर्यंत आचारका जैनमें कोई ग्रंथजी मालुम न पडता है (इत्यादि) अनेक तरहके विकल्प करनें लगगए हैं ( इससें ) अहो सर्वे जैन बांधवो ॥ आप समें गन्ध मतका, कदाग्रह ठोमके, एकेकसें वेष, निंदा ठोमके, एक्यतापणो धारण करो ( तथा ) कोई प्रकार जैनधर्मकी उन्नति करो ॥ वमे वमे सर्व ठिकाणें, वमी १ सच्चा जेल्ही करके, वमे वमे विद्वज्जनोंकी संमति लेके, पक्षपात रहित, आपसमें विचार करके, कितनेक प्रकारके ऐसे नियम बांधो ( जिससें ) जैन लोकोंकी स्थितिका सुधारा ऊवै ॥ ( और ) अन्यमत का आचार ठोमके, अपना धर्ममुजव आचार करे ( और ) जैनविद्याकी वृद्धी ऊवै (इस कालमें) जैनविद्याकी वहुतसी हानी हो रही है । सर्व मतवाले, अपना धर्मकी विद्या प्रथम सीखते हैं ( पीठे ) सर्व कला सीखते हैं ( और ) आजके जैनलोक, अपना लमकांको, प्रथमसेंही अन्यमतके

गुरुओंकेपासे, अन्यधर्म आश्रित कला सिखातेहैं । जिससें दोपैसा कमाकर लावे (परंतु) अनंतजनोंमें प्राप्त होना दुर्लभ, ऐसा मनुष्यपणा पायके, आत्माको अक्षयसुख मिले, ऐसा जैनधर्मको नहिं सिखाते हैं ( और ) अपना धर्म जाणेविगर, प्रथमसेंही अन्यधर्मकी कला सिखानेसें, वज्रतसे जैन धर्माचारसें भ्रष्ट हो जाते हैं ( और ) हाथमें चिंतामण रत्न आया हुवा गमायके, फेर दलद्रीकेमुजब, नरक निगोदादिक गतिमें, अनंतजव परिभ्रमण करते हैं (इससें) अहो जैन जाइयो, अनेक कामोंमें, हजारों रुपिया वे अर्थ लगा देते हो । सो ठोमके विद्यावृक्षीके काममें लगावो ( और ) जैन आचारके, नीतिके, जोतिपके, जो जैनशास्त्र विवेद होते जाते हैं ( उसको ) लिखायके प्रशिक्ष करो ( क्युं कि ) वज्रतसे जैन आचार, नीतिके ग्रंथ, विवेद होगए हैं (इससें) जो ग्रंथ मिलसक्ते हैं उनको तो प्रशिक्ष करो । नहिंतो यहूजी विवेद हो जायगा ( और ) जो कोई सर्वोपयोगी ग्रंथ अपनी उमेदसें महनत करके प्रशिक्ष करे ( वा ) प्रशिक्ष किया चाहै, उसको संघ मिलके मदत देवो ( और ) साधु, श्रावक, गंधप, भोजक, महात्मा, इनमें जो कोई, विद्या पढनें, पढानेमें उमेदवान् होय, अछा बुद्धिमान् होय । उनको वनें जहांतक सारी मदत देवो (जो कोई) धर्म उन्नतिका काम करै, उसको संघ मिलके मान देवो । मदत करो । ( इत्यादि प्रकारसें ) कोईप्रकार जैन लोकोंकी स्थितिका सुधारा करो ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अहो देवानुप्रियो, मैं कुठ ऐसा पंन्ति नहिं जुं, और संघकी मदत विगर, विशेष खरच करके, पाठशाला पुस्तक प्रगट करनेमें शक्तिमान् नहिं जुं ( तथापि ) मैं मेरी अल्पमति, अल्प शक्ति प्रमाणें धर्मका तत्व जो ज्ञान, जिसको उदीपन करनेवाले, कितनेक साधु श्रावकोंका, दिलमें आश्रय विचारके, आज पांच वरष आसरे जुवा ग्यान उदीपन करनेको; तत्वदीपक मोहन मंमली, स्थापन करी है ॥ इसका मुख्य नियम यही है ( कि ) जैन पाठशाला स्थापन करके विद्या की वृद्धी करना ( और ) सर्वोपयोगी जैन पुस्तक ठपायके प्रगट करना । ( इससें ) कलकत्ता, मुंबईमें, जैनपाठशाला स्थापन करी है ॥ ए पाठशालामें ऐसा नियम रक्खा है (कि) सबेर, सांजे, जो अपना धर्मकृत्य

शीखनेकों आवे, उनकों कुठनी मासिक पगार लिये विगार, शिखाते रहना ( और ) देश परदेशके, सर्व साधु श्रावकोंके वारैमास उपयोगमें आवे (ऐसा) संपूर्ण धर्मकृत्योंका संग्रह करके ज्ञानवृद्धीके अर्थ रत्नसागर प्रथम जाग उपायके प्रसिद्ध किया है । ( और ) अनी रत्नसागरका दूसरा जागमें, आचाररत्नाकर नामें ग्रंथका, दो प्रकाश हिंदीभाषामें उपाय के प्रसिद्ध किया है ॥ इसका प्रथमप्रकाशमें जैनलोकका जन्मसें मरण पर्यंत कुल आचारविधिका संग्रह किया है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( और दूसरा प्रकाशमें ) जैनइतिहास उपाया है ( इस वास्ते ) सर्व जैनके यह दोनुं पुस्तक उपयोगी है । जिसकों जैनधर्मका संपूर्ण आचार ( तथा ) संपूर्ण जिन धर्मका स्वरूप, संखेपमें जाणनेकी इच्छा होय ( तथा ) खरतर गच्छ तपगच्छादिकका, वारै मास उपयोगमें आवे, ऐसा धर्मकृत्य करना, करावना होय, शीखना, शिखावना, होय ( तो ) अवश्य, रत्नसागर प्रथम जाग ( तथा ) रत्नसागर दूसरा जागकी एकेक पुस्तक लेके अपने पास रखखो, जो धर्मरागी ( तथा ) सर्व विद्या जाणनेकी इच्छावाले सुझ पुरुष एकेक पुस्तक लेके ( तथा ) साधू, वा साधर्मी ज्ञाइयोंकों ज्ञानवृद्धीनिमित्त देने खातै, पांच पच्चीस पुस्तक लेकर पाठशालाकों मदत देवेंगे ( तो ) मेरा परिश्रम किया सफल होगा ( और ) उनकेनी एक पुस्तकसें, पच्चीस पुस्तकका काम सरैगा ॥ वारै मास उपगार होता रहैगा ॥

॥ ❀ ॥ ( अब ) संवसें बीनती करता जुं ( कि ) आचार दिनकर, विधि प्रपादि, आचार ग्रंथोंसें, कितनेक आचारका हिंदी भाषामें संग्रह करके, मैंने यह, आचाररत्नाकर ग्रंथ बनाया है ( इसमें ) जो कोई आगम विरुद्ध मंदमतिपणासें ( वा ) ठापेके दोषसें, ( वा ) भाषाके दोषसें ओढे, अधिको, हीन अक्षर, लिखनेमें आयो होय ( तो ) सर्व संघके सन्मुख, मैं मिच्छामि डकम देता जुं ॥ ( और ) मेरी आशा है ( कि ) सुझ विवज्जन पुरुष, श्रेणक राजाके तुल्य गुणग्राहीपणा धारन करके गुण ग्रहण करेंगे ( और ) उपगार निमत सर्व ठिकाणें एकेककों प्रेरणा करके पुस्तक प्रवर्तन करेंगे ( और ) वनें जिस मुजब विद्यावृद्धीके निमत पाठशालाकों मदत देवेंगे ॥ इसलंविस्तरेण ॥ ❀ ॥

॥ॐ॥ नमः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ नमः ॥ॐ॥ अ सि आ उ सा ॥ॐ॥

॥ॐ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तप पदेभ्यो नमः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ नमः ॥ॐ॥ श्रीऽर्जुन श्री गौतमस्वामिने नमः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ नमः ॥ॐ॥ श्री वद वद वाग्वादिनी वागेश्वर्ये नमः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ नमः ॥ॐ॥ श्रीऽर्जुन श्री जिन कुशलसूरिभ्योनमः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ अथ आचार रत्नाकर दीपिका लिख्यते ॥ॐ॥

॥ॐ॥ मंगलाचरण ॥ॐ॥

तत्त्वज्ञान मयो लोके । यः आचारं प्रणीतवान् ॥

केनापि हेतुना तस्मै । नमः आद्याययोगिने ॥ १ ॥

॥ ( व्याख्या ) ॥ ग्रंथकारक प्रथम मंगलाचरण कर्तेहैं ॥ नमस्कारजुत  
आद्ययोगीश्वरकुं, कैसाहै वो आद्य योगीश्वर, कि तत्त्वज्ञानमयहैं  
(अर्थात्) केवलज्ञान केवलदर्शनसैं लोकां लोकके जावकुं जाणनैं वालेहैं  
ऐसे आद्य योगीश्वर, श्रीआदिनाथ स्वामी । लोकके बिपै ( केनापि हे  
तुना ) कोईनि कारणैं, गृहिधर्म, यतिधर्म, लोकाचार रूप, आचारप्रत  
कहतेनए, क्यूं कि लोकमध्ये सर्व कायंकि सिद्धि आचारमैं चालने सैं  
हीज होती है, इसके लिये नगवानने प्रथम आचार वर्णनकरा ( ऐसे प्र  
थम तीर्थकर श्रीऽपन्न देव, आदि योगीश्वरकुं मेरा नमस्कार जुत ) ॥ १ ॥

॥ आत्मांतर्ध्यान हेतो वा । कारुण्यादथ देहिनां ॥

॥ यः आचारं स्वयं चक्रे । तंवदे हंतमादिमम् ॥ २ ॥

( व्याख्या ) ॥ श्री ऋगवान्ने आचार किस हेतुसे कहा है (सो अब हेतु लिखते हैं) —आत्माके अंतरध्यान उत्तम करनेके लिये (अर्थात्) सुध आचारमें चलनेसे आत्माका हृदयके बीचमें ध्यान हो सकता है, इस हेतुसे (अथवा) सब भूत प्राणिमात्रकी दयाकेलिये, श्रीऋगवान् आप आचारकुं धारण कराहें ( ऐसे आदि तीर्थकर श्रीऋषभदेव स्वामीकुं में नमस्कार कर्त्ताऊं ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ तत्प्रसादा त्सुखालोक्ये । पथि तत्त्वो पयोगिनः ॥

॥ यो लोकाचार माचख्यौ । तस्मै सर्वात्मने नमः ॥ ३ ॥

( व्याख्या ) ॥ तिस आचारके प्रसादसे ( सुखालोक्य पथि) सुखे देखने में आवे जो मोक्ष मार्ग, तिसमें चलनेवाले जो तत्त्व उपयोगी पुरुष है, तिसके लिये ऋगवान् आचारकुं कहतेजए ( तिस सर्वात्मा चिदानंद परमेश्वर को मेरा नमस्कार ऊवो. ) ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अनादितत्त्व ज्ञातापि । स्वस्थ मोक्षप्रदो पिव ॥

॥ स्वयं चचाराचारं यो । नमस्तस्मै स्वयंभुवे ॥ ४ ॥

॥ ( व्याख्या ) ॥ ऋगवान् आप अनादिकाल तत्त्वके जाणकारहे, और स्वस्थ निश्चल चित्तके धरनेवाले हैं, और मोक्षके देनेवाले हैं ( तथापि ) ऋगवान् स्वयं आचारकुं आचरण कर्त्तेजए ( ऐसे स्वयंभु कहिइ स्वतः प्रतिबोध पामनेवाले ऋगवान्कुं मेरा नमस्कार ऊउ ॥ ४ ॥ )

॥ यस्य श्रुतपरा वाणी । पूजनात् परमा श्रियः ॥

॥ तत्त्वालोकः परंध्याना । तस्यै अर्हजिरे नमः ॥ ५ ॥

—॥ ( व्याख्या ) ॥ जिस ऋगवानकी श्रुत सिद्धांतरूप वाणीके पूजने सेती उत्कृष्टी लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है ( और ) तिनहीज वाणीके ध्यानसे तत्त्व ज्ञानका देखना होता है ( ऐसी तिस अर्हतवाणीकुं नमस्कार ऊउ ) ॥ ५ ॥

॥ सर्वैर्दयः शुभं ज्ञानं । कीर्त्ति र्यस्याः प्रसादतः ॥

॥ प्राप्यते ह्यणमात्रेण । तामंवां प्रणमाम्यहं ॥ ६ ॥

॥ ( व्याख्या ) ॥ जिस अर्हतकी वाणीके प्रसादसेती सर्वशक्ति, सुभज्ञान,

और कीर्ति, क्लृप्तमात्रसैं ( अर्थात् ) तत्काल प्राप्ति होतीहैं ( तिस अंवा मातारूप अर्हतकी वाणीकुं में नित्यप्रति नमस्कार कर्ताहुं ॥ ६ ॥ )

॥ विद्वत्पर्वत्सु गङ्गाति । मादृशा यत्प्रसादतः ।

॥ नमोस्तु गुरुपादेभ्य । स्तेभ्यःएव प्रतिक्षणं ॥ ७ ॥

॥ ( व्याख्या ) ॥ अब गुरुकुं नमस्कार कर्तेहैं, जिस गुरुके चरणकमलकी रुपासैं, मेरे सरीखेनि मनुष्य, विद्वज्जनकी सन्नाके बीचमें गाज रयेहैं, ( तिस गुरुके चरणारविंदकुं क्षण ५ प्रति मेरा नमस्कार ऊबो ) ॥ ७ ॥

॥ उपाय कोटिभि नैव । प्राप्यं यत्तत्त्वमुत्तमं ।

॥ सुप्राप्यं यत्प्रसादात् । तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ८ ॥

॥ ( व्याख्या ) ॥ क्रोड़ों उपायसैं जो उत्तम तत्व प्राप्ति नहि होता है, ( सो तत्व ) जिस गुरुप्रसादसैं सुखपूर्वक प्राप्ति हो जाता हैं, ( तिस श्री युक्त गुरुकुं मेरा नमस्कार ऊबो ) ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ सत्पज्ञानात्सुखालोक्यः । पंथा कैवल्यकारणं ॥

॥ तच्चाचारवतां नृणा । मुन्मीलति विशेषतः ॥ ९ ॥

॥ ( व्याख्या ) ॥ सत्यज्ञानसेति सुखसुं देखनेमें आवैं, ऐसो कैवल्य मुक्तिरोहेतु पंथामार्ग हैं । सो मार्ग आचारवान् पुरुषोंके विशेष करके प्रगट होता हैं ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ आगर्भवासात्ज्ञानात्मा । रूपज्ञःपरमःपुमान् ॥

॥ प्रविवेश यदाचारं । तत्सप्रामाण्यमंचति ॥ १० ॥

॥ ( व्याख्या ) ॥ गर्भावाससैं लेकैं, ज्ञानवान् परमपुरुष श्रीरूपज्ञदेव स्वामी, जिस आचारकुं स्थापित करते नए, तिससेती यह आचार निश्चैसैं प्रामाण्यभूत हैं, और पूजने योग्य हैं ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अब आचारकी विशेष प्रामाण्यता देखाते हैं ॥

( इस जगत्में ) के इक दर्शनमोहनीय करके मुखबुझिवाले, आर्हत १ सौगत २ वैशेषिक ३ नैयायिक ४ सांख्य ५ चार्वाक ६ ( इत्यादिक ) जो तत्वज्ञानके परमार्थकुं न जाणनेवाले, केवल नामानुसारी, अपने हृदयसँहीज



कुयुक्तियां उपार्जन करके आचारकुं तिरस्कार कर्ते हैं ( ऐसे पुरुषोंका वचन सत्पुरुषोंकुं प्रमाण करना योग्य नहीं हैं ) क्युं कि सर्व जगत्के परमार्थकुं जाणनेवाले अरिहंत जगवान्ने पण गर्जाधानसें लेकै राज्यान्निषेकपर्यंत संस्कारोंकुं आप धारण करे हैं ( और तैसेही ) देशविरतिरूप गृहिधर्मके विषै सम्यक्तका आरोपण, व्रतादिकका धारण, प्रतिमोघहनादिक, आचारकुं आचरण किये हैं ( तथा ) केवल ज्ञान तो निमेषमात्र शुद्ध ध्यानकरके प्राप्य हैं ( तथापि ) साधु मुद्रा धारण करके तपश्चरणादिक दीर्घ कालतक किये हैं ( और ) जब केवल ज्ञान प्राप्ति हुआ तब चिदानंदरूप हुआ, अरु अन्पकी अपेक्षारहित हुये ( तो पण ) देवादिकोंके किया हुआ ठत्र चामरादिक अतिशययुक्त सिंहासनपर बैठके, धर्मका उपदेश करना, गणधरादिक पदकी स्थापना करनी, विहार करना, सब जीवोंके शंसयादिक ठेदन करना, इत्यादिक आचारकुं धारण करेहैं और सबकुं आचारमें चलनेका उपदेश दिये हैं ( तदनंतर ) जगवान्के निर्वाण कल्याण होयेवाद, ६४ इंद्रादिक देवता सर्व मिलके, प्राणरहित कर्त्ता कर्म रहित तिस जगवान्के शरीरका अग्नि संस्कार करना, रत्नमइ स्तूपवनाना, दाढां प्रमुख आपापके विमानमें लेजाना, अर्घाई महोत्सव करना, इत्यादिक आचार करते हैं ( इससे ) अर्हतम तमें पण निश्चेसेती मोटा पुरुषोंने आचारकुं आचीर्ण कत्था, इनसें आचार मुख्य प्रमाण है ॥ ( और तत्वानु वादेपि ) आश्रव, संवर, यह दोनु तत्व आचाररूप है ॥ ( यथा ) आश्रवके विषै मन वचन कायासें शुद्ध शुद्ध आचरणमें चलनेसे शुद्धशुद्ध कर्मकुं बांधते हैं, इससे आश्रवतत्व आचाररूप जया ( तथा ) संवरतत्वमें द्रव्य ज्ञाव जेदसें तिस शुद्ध शुद्ध कर्मके त्याग करनेसें यह संवरनि आचार रूप है, इससेति जैनधर्मम आचार मुख्य प्रमाण है ( अर्थात् ) निश्चै, व्यवहार, ज्ञान, क्रिया, ७ नय, ४ निक्षेपा, सप्तजंगी, इत्यादिक अनेकांतिक जेदोसें आचार उद्यम मुख्य प्रमाण है ॥ १ ॥ ( और ) बौद्धके मतमें पण सुखकी आशा प्रमुखसें शरीरके आचारकर्ते हैं, आपके बुद्ध देवकी अर्चनरूप क्रिया मंत्र स्मरणादिक करते हैं, ऐसे क्षणकमति बौद्ध मतमेंजी आचार प्रमाण है ॥ २ ॥ और वैशेषिक मतमें विशेष परीक्षारूप आचार है

( अर्थात् ) वैशेषिक मतकी क्रिया करनेवाले पुरुषांकों परीक्षा विगर को इन्द्रि विशेष नहि मानते हैं, जो अष्टी क्रिया आचारमें चलते हैं उसीकुंहीज प्रमाण मानते हैं, इससेती वैशेषिक मतमेंनी आचार प्रमाण है ॥३॥ (और) नैयायिक मतमें प्रमाणोपलंजरूप अनेक तत्व कहे हैं (जिसमें) क्रियाहीज मुख्य प्रमाणहै, इससे नैयायिक मतमेंनी आचार प्रमाण है ॥ ४ ॥ ( और ) सांख्यादिकके मतमें प्रकृतिकुं आदिलेके २५ तत्वकुं मानते हैं ( परंतु ) सा प्रकृति पुरुषके संयोगसैं शुभ्र आचारादिकमें प्रवर्तमान होती है, अंध पंगु न्यायसैं ( जैसैं ) पंगुके अंध पुरुषके संयोगसैं चलनरूप क्रिया होय तबक एसैं पार उतर जाते हैं, ऐसैं सांख्य मतमें पण आचार प्रमाण है ॥ ५ ॥ (और) चार्वाकके मतवाले नास्तिक है ( अर्थात् ) जीवादिकका परलोका दिकमें जाणा आणा नहि मानते हैं ( तथापि ) प्रत्यक्ष प्रमाण मानता ऊवा केवल शरीरके सुखनिमित्त, आचार आचरण कर्ते है, अष्टा खाना, अष्टा पीना, जैसैं शरीरकुं सुखहोय ऐसी क्रियामें चलनां ऐसे कहते हैं, इससैं चार्वाक मतमें पण आचार प्रमाण है ॥ ६ ॥ इस रीतिसैं—पट्टदर्शनमें आचारहीज मुख्य प्रमाण है, तत् परमत चिंतनेन अलं ॥ ❀ ॥ इस प्रस्तुत कार्यके करनेके लिये स्वमतहीज प्रामाण्यताकुं प्रातिहोते हैं—(यदुक्तमागमे-) नाणं सदत्थं मूलंच । साहा खंधो अ दंसणं । चारित्तंच फलं तस्स । सग्गे सुक्खोजिणो इनु ॥१॥ अब सिद्धांत समुद्रके कल्लोलरूप, चारित्रोपाख्यानकुं कोन केणेकुं सामर्थ्य है ( तथापि ) श्रुतकेवली प्रणीत शास्त्रार्थके लेशकुं अवलंबन करके, किंचित् आचार योग वचन कहते हैं ॥❀॥ प्रथम रूपना दिज्ञगवान् दो प्रकारके आचारकहे हैं—यतिके आचार १ तथा गृहस्थ के आचार २—॥ अब साधुश्रावकका आचार स्वरूप लिखते हैं ॥ ❀ ॥

( यदुक्तं— ) सावज्जं जोग परिवज्जणानं । सब्बुत्तमो जई धम्मो । बीजं सावग धम्मो । तइजं संविग्ग पक्खपहो ॥ १ ॥

॥ व्याख्या॥ गुणस्थान चौथा, पांचमा, ठठादिककी; अपेक्षायें जैनधर्म धारन करने वालांके तीन जेदकहे हैं, ॥ सर्वे सावद्य योगके त्याग करनेसैं, ठठा गुणस्थानसैं १४ मा. गुणस्थान पर्यंत, रत्नत्रयी धारक,

सबसें उत्तम ( प्रथम साधु धर्म कहा ) ॥ १ ॥ ( दूसरा ) ५ मा गुणस्थान वर्ती, देशे व्रत पञ्चकाणादि चारित्र्य पालन करने वाला ( श्रावकधर्म कहा ) ॥ २ ॥ ( तीसरा ) चौथे गुणस्थान वर्ती, व्रत पञ्चकाणादि चारित्र्य रहित, निकेवल्ल सुद्ध सम्यक्त गुण धारक ( संवेग पक्षी कहा ) ॥ ३ ॥ ( अत्र तीनों जेदका किंचित विस्तारसें स्वरूप पाठक गणके हितार्थ लिखते हैं ॥ ❀ ॥ जो जव्य मोटे पुन्य योगसें, अपने सुद्ध जावसें, गृहस्थावास, संसार संबंधी संपूर्ण सावद्य योगका त्याग करके, ठठा प्रमत्त गुणस्थानसे लेके १४ मा अयोगी गुणस्थान पर्यंत, अधिक ९ शांतिवृत्ति, सुज्ञयोग, आचार, धारनेवाले सुसाधु होते हैं ॥ तिकेसाधु एक विधि दया धर्म पालने वाले, द्विविध राग द्वेष कों जीतने वाले, ३ तत्त्वकों जाणने वाले ( तथा ) तीन गुप्तीकों धारन करने वाले, ४ कषाय जीतने वाले, ५ महाव्रत, ५ सुमतिकों, धारन करने वाले, ( तथा ) ५ प्रमादकों दूर करने वाले, ळ्कायजीवोंकी रक्षा करने वाले ( तथा ) षट् द्रव्यकों जाणने वाले, सप्त ज्ञयकों जंजन करने वाले, अष्ट मदकों जीतने वाले, नववाडि ब्रह्म चर्य कों पालने वाले, ( तथा ) नव तत्त्वका स्वरूप जाणने वाले, दशविध यती धर्म सुद्ध पालने वाले, ११ श्रावक प्रतिमा स्वरूप जाणने वाले १२ अंग, १२ उपांगका उपदेश करने वाले, १३ काठिया दूर करने वाले, १४ विद्याका स्वरूप जाणने वाले, १५ जेदे सिद्धोंका स्वरूप जाणने वाले, १६ कषाय जेदकों छेडने वाले, १७ जेदे संजम पालने वाले, १८ जेदे शील व्रत पालने वाले ( इत्यादि ) अनेक गुण संयुक्त होते हैं ( गामे एगरा इयं नगरे पंचराइयं ) ऐसे अप्रतिवद्ध विहारी, कोई स्थानकमें बज्जत परिचय डुकान दारी नहिं जमातेहैं ( तथा ) मानोपेत सपेद वस्त्र धारन करते हैं ( नारंगिज्जा नाधोइज्जा ) नहिं केसरा दिक्में रंगते हैं, नहिं साजी सावण लगाय धोते हैं, अप्रमादी ज्ञए थके, रात दिन स्वाध्यायादि धर्म कार्यमें मग्न रहते हैं, सब जव्य जीवोंकों, उपगार बुद्धीसें, अक्षय सुख दायक, अनेकांतिक श्रीजिन धर्मका उपदेश करते हे, द्रव्य, क्षेत्र, काल, जाव, मुजव, वनें जहांतक पापपंकसें अन्य जीवोंकों निर्मल करते हे ( तथा ) कोई जीवसें द्वेष कलहादिक न करते हे, स्वधर्मियोंके ऊपर प्रमोद

जाव (अन्य मति) पापीजीवोंपर मध्यस्थ जाव धारन करते है, इनसाधु  
 वोंमें गह्र समुदायकी सारणा वारणादि करनेवाले, निस परग्रही ठत्र चाम  
 रादि आमंत्र रहित, आचार्य, उपाध्याय, वाचक, प्रवर्तक, धिवर, गणाव  
 ह्नेदक, गणिः, मुनिः, ऋषि, साधू, यती, संवेगी, अनगारं, निग्रथ, ऐसे नाम  
 गुण धारक होते हैं ॥ (इत्यादि) अनेक गुण संयुक्त, चारित्र पात्र, चिंताम  
 णि रत्नके समान, सर्व गुण निधान, जिनाज्ञा युक्त, रत्नत्रयी गुण धारक  
 केवल ग्यान पायके जलदी मोह जांने वाले होते हैं, (इससे) साधु मुनि  
 राज सबसे उत्तम है ॥ ५ जगत-५ ऐश्वर्य, ५ महा विदेह, एवं १५ कर्म भूमि  
 क्षेत्रोंमें, होते विचरते रहते हैं (ऐसे सब साधु मुनि राजकों मेरा नमस्कार  
 ऊवो, ॥५॥ यह साधु पदका स्वरूप किंचित् कहा ॥ १ ॥५॥ अब दूसरा  
 श्रावक धर्मका स्वरूप किंचित् लिखते हैं ॥ ५॥ प्रथम श्रावक दो प्रकार  
 के होते हैं, १ अविरती श्रावक, कृष्णश्रेणिकादिक (जिसका स्वरूप ती  
 सरा जेदमें लिखेंगे) ॥ और दूसरा विरतिश्रावक होते हैं, ॥ तिके सर्वे  
 सावध्ययोग त्यागके दशविध यतीधर्म धारन पालन नहिं कर सक्ते हैं, (परंतु)  
 जिन वचनोंसे, सुद्ध सम्यक्त गुण पायके, देशे व्रत पञ्चखाण सुद्धश्रद्धासें  
 धारण करनेवाले होते हैं । तिके श्रावक ४ अनंतानबंधी । ४ अप्रत्याख्यानी,  
 एवं ८ कपाय जेदके क्षयोपशमपणासें देशविरति पांचमा गुणस्थान धारक  
 होते हैं, (ऐसे विरति श्रावकजी दो प्रकारके होते हैं) १ वृद्ध श्रावक (दूसरा)  
 लघुश्रावक (वृद्धश्रावक उनकों कहते हैं) जो खेतीवाणिज्यादिक महा  
 पापकारी व्यापारादिकर्म ठोमके । जिनोपवीत ब्राह्मणवर्णके संस्कार धारन  
 करे । निकेवल यथाशक्ति धर्मकार्य उद्दीपन करे । रातदिन जैनविद्याका  
 अज्यास करे । अन्य जैनीयोंकों विद्याअज्यास करावै । धर्मउपदेश करते  
 रहे । जन्मसें मरन पर्यंत १६ संस्कार, गृहस्थाचार (तथा) पूजा प्रतिष्ठा  
 दिक शास्त्रोंके विधिसंहित करावे । आपजी सुद्ध श्रावकधर्म देशेचारित्र  
 पाले । (यह वृद्धश्रावकजी दो प्रकारके होते हैं) १ गृहस्थी जैनब्राह्मण स्त्री  
 धारक होते हैं, तिके तो मंदर उपासरामे, देव गुरुकी सेवा पूजा भक्ति वेयाव  
 चमें हमेशा रहते हैं ॥ जैनगृहस्थीके घरका जन्मसें विवाहादिपर्यंत संस्कार  
 शांतिक पौष्टिक संपूर्ण आचार जैनपंमिताचार्य गुरुकी आग्यासें करातेहैं,

जैनी गृहस्थके घरका दान पुण्य लेते हैं (ऐसे) कुलगुरु, महात्मा, गंधप, सेवग, जैनब्राह्मणादि होते हैं ॥ १ ॥ (और दूसरा) सुद्धाचार धारक, ग्यान गुणमें अधिक, ब्रह्मचारी होते हैं (जिनमें) जो ठत्र चामरादि आमंत्र धारक आचार्य उपाध्याय पदधारन करनेवाले होते हैं, तिके श्रीपूज, महाराज, पत्रपति, नटारक, जैनपंमिताचार्य, परमकुलगुरु, ( इत्यादि नामसे ) अनेकांतिक गुणग्राही जैनीयोंके अत्यंत मान्यनीक पूज्यनीक होते हैं (जिनकी आग्या मुजब) जन्मसे मरणपर्यंत १६ संस्कार, जैनशास्त्रोक्त विधिसे, धारन करते कराते हैं । विवाहादिकके उपरांत, जिनोपवीत, सम्यक्त व्रतादि सब संस्कार, पूजा, प्रतिष्ठादिक, आचार्य, उपाध्याय, यति, संवेग पक्खी, ब्रह्मचारी, पदाधिकारी, कराते हैं (जिसमें कई तो) पुर्वानुपुर्विये सम्यक्त, देशविरतिचारित्र पालके, फेर सुज्जकर्मों दयसे, उत्तम साधुआचार्य पदकों प्राप्त होते हैं, सो उत्कृष्ट धन्य होते हैं (तथा) कई जोगावल्यादि असुज्ज कर्मके उदयसे साधुपदकों विराधके देशचारि त्रधारक जैनपंमिताचार्य हो जाते हैं ॥ ( परंतु जो ) सम्यक्तगुणसे त्रष्ट न होय, और सुद्धअनेकांतिक धर्मके दीपन करनेवाले होय, ( तहांतक ) निस्संदेह, वंदन, पूजन, सत्कार, सन्मानसे, गुणग्रहण करनेके योग्य होते हैं ( अब वृद्धश्रावकोंका पहरेस व्यवहार कहते हैं ) ॥ मस्तक मुंठादि मुंमरक्खे ( वा ) एक चुट्टैके माफक केसरक्खे । वस्त्र रेसमी ( वा ) सूतू, पीला के सरिया ( वा ) सपेद, धारन करै, । धोतीकी एक लांग खुली रखे । गले में, मोती मुंगा चांदी सोनेकी १०८ दाणारी माला रखे । ( तथा ) सुद्धाचारसें जिनोपवीत सोनेकी ( तथा ) सूतकी धारन करे, । लोह जड्या खालका जूता न पहरे । तिलक ऊजो ( तथा ) गोल मेरूके समान, केसरचंदनको करै ( जिसमें जो गृहस्थी जैन ब्राह्मण होय ) सो मस्तकपर चोटी रखे, सोनेली मुगुठके समान टोपी ( तथा ) केसरिया, लाल, सपेद, फेंटा रखे जोजन साधमी श्रावकके घरका ( तथा ) अपने कुल जातीके घरका ( तथा ) अपने हाथका करे । अपना खरच दान पुण्य साधमी जैन लोकोंके पास लेवे । याचना करे । ( परंतु ) अन्य मिथ्यात्वीयोंके पास दान पुण्य न लेवे, याचना न करे । जिनेश्वर देवका वंदन पूजन ( तथा ) धर्म उद्दीपन, हमें सां करते रहे । अरिहंतादिक नवपद ( तथा ) नवपदके अधिष्ठायक स

स्यक्ती देव टाल, अन्य मिथ्यात्वि देव गुरुवादिकका स्मरण पूजन (तथा) देवज्ञावे निंदन कदापि काले न करे । ( तथा इनोके ) माहण ब्राह्मण, वृद्धश्रावक, जैनपंथित, सिद्धपुत्र, सर्वज्ञपुत्र, महात्मा, कुलगुरु, पन्नाकड, हुल्लक, यति, संवेग पक्षी, आचार्य, उपाध्याय, पदाधिकारी, कर्माधिकारी ( इत्यादि नाम पद कहे हैं ) इन सर्वका अने कांतिक विवेकी जैनी लोक यथायोग्य मान्य करते हैं । ( इन वृद्धश्रावकोंकी आदमें उत्पत्ति ) श्री कृष्णदेव स्वामीकों केवल ज्ञान ऊँच वाद । भरतचक्रवर्तिन । सौधर्म इंद्रके वचनोंसे । धर्म वृद्धीके अर्थ करीहे ॥ ( सो अधिकार ) दूसरा प्रकाश, जैन इतिहासमें लिखेंगे ॥ ऐसे गुणयुक्त आचारवान वृद्धश्रावक होते हैं ॥ इनमें जिके सम्यक्तसें भ्रष्ट, एकांती मिथ्यात्वी, निम्नवादी ही नाचारी होय ( तिके ) जैनियोंमें अवंदनीक होते हैं ॥ यह प्रथम वृद्ध श्रावकोंका स्वरूप कहा ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अब दूसरा लघुश्रावक कैसे होते हैं सो लिखते हैं ॥❀॥

॥ ❀ ॥ जो कृत्री, वैश्य, सुद्र, अपनें शुच कर्मोदयसें, ( तथा ) स्वा दवादी जैन गुरुके उपदेशसें, सुद्ध श्रावक धर्म अंगीकार करै ॥ अपनें वर्ण मुजव, जिनोपवीत, उत्तरासण, सम्यक्तादि व्रत, सुद्धाचारसें धारण कर के, अंतरंग सत्य श्रद्धासें पावै ( और ) सुद्धविणज बोपार ( तथा ) राज्यपद, मंत्रीपद, सेठ, सेनापती, मंमलीक, पदादि, धारन करके । धर्म, अर्थ, काम, दान पुण्यादिकों साधन करै ॥ देवज्जवनके समान, अनुपम जिनमंदर बनावै ॥ द्रव्ये, ज्ञावे, अनेकप्रकारसें । देव, गुरु, धर्मका, वंदन, पूजन, महोत्तवादि करे ॥ धर्मशाला, पाठशाला, दानशाला, पुस्तकशाला, स्थापन करै ॥ यथाशक्ति धर्मके सात क्षेत्रोंमें अपना धन खरच करै ( तथा ) धर्म उद्दीपन निमित्त, जैन विद्या जो पढे ( तथा ) पढावै । जिनों का वहुत मान्य करे । तन, मन, धनसें, मदत देवे । ( और ) जन्मसें मरणपर्यंत पूजा प्रतिक्रमणादिक सर्व आचार, जैन शास्त्रोक्त विधिसें, जैन पंथितों पासे । विनय संयुक्त शीखै, धारन करै ॥ प्रथम विद्या पढनेकों ( तथा ) जिनोपवीत, सम्यक्त्वव्रतादिक, धारन करनेकों । यथाशक्ति वस्त्रे उज्जवकेसाथ, गुरुकेपास जावे ॥ द्रव्ये, ज्ञावे, गुरुपूजा करे ( ऐसे लघु श्रा

वक होते हैं) अनी वर्तमानकालमें अनेक जैनी लघुश्रावकके कुलगोत्र प्रसिद्ध है (तिके सर्व) सुद्ध साधु आचार्य महाराजोंके प्रतिबोधकहे (जैसैं) सं । २-२२ केशी आचार्य संतानी, श्रीरत्नप्रज्ञसूरिजी, महाप्र ज्ञावीक आचार्य ऊए (सो) उंसियां नगरीके राजादिक कृत्री वैश्य सर्व लोकोंने प्रतिबोधके जैनी किये ॥ तवसें उंशवाल ऊए (तथा) कोटिक गणी खरतर विरुध धारक । श्री जिनचंद्र सूरिजी, दिह्ली शहरमें । सं । १०, ११ श्रीमाल महतियाण गोत्रकों प्रतिबोधके जैनी किये (तवसें) श्रीमाल गोत्रीय श्रावक ऊए (तिसपीठे) सं । ११६९ खरतरगह्वी महा प्रज्ञावीक युगप्रधान आचार्य श्रीजिनदत्तसूरजी पद धारक ऊए (जिणोंनें) प्रथम तो सवाक्रोड फ़ीकारजीको जाप करकै । ५२ वीर, ६४ योगणीया दि, बज्रतसे देवगणकों सेवक किये (और) पंजाब, जेशलमेर, मारवानादि देशोंमें बिहार करते । कृत्री, ब्राह्मणादिककों प्रतिबोधके (सवालाख जैनी श्रावक किये) जिनोंका । सावण सुक्खा, गोलह्वा, गजेड, राखेचा, नाह द्वा लूणिया, नडकतिया, वाफणा, चोरडिया, पारख, मागा, वेगवाणी ढह्वा, डधड, लालाणी, गणधर चोपमा, कोठारी, मूणोंत, (इत्यादि) अने क गोत्र प्रसिद्ध ऊए (जिसपीठे) सं । १२७५ चित्रवालगतके चैत्यवासी, जगचंद्राचार्यजी, सुन्नकर्मके योग, वमेतपस्वी साधु ऊए (जवसें) तपाग ह प्रसिद्ध ऊवा (इनोंके) वस्तुपाल तेजपालादि दशा श्रावक ऊए (इसी तरे) ओशवाल श्रीमाल पोरवानादिक जैनी लघु श्रावक ऊए ॥ सो वर्त मानमें प्रसिद्ध हे (ऐसे लघु श्रावक होते हैं) ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अब वृद्ध, लघु, दोनूं श्रावक, जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट, तीन प्रकारके होतेहैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जो सुद्ध सम्यक्त गुण पायके । नवकारसी आदिक (किंचि त) व्रत पञ्चक्खाण जावसे धारन करने वाला होय (सो जघन्य श्रावक होते हैं) १ (तथा) सुद्ध १२ व्रत धारक । २१ गुण संयुक्त होय (सो मध्यम श्रावक होते हैं) २ ॥ (तथा) अतीचार रहित १२ व्रत, ११ प्रतिमा धारक होय । सर्व सचित्तके त्यागी, साधर्मियोंके (तथा) अपने जात जाईयोके घरोंसें निह्वा वृत्ति करने वाले होय ॥ साधुके तुल्य मोटा

अजिग्रह पञ्चरकाण धारन करने वाले होय ॥ सर्व संसारी कार्य ठोमके  
आनंदादिककी परे धर्म कार्य स्वाध्यायमें रातदिन मग्न रहे ( सो उत्कृष्ट  
श्रावक होते हैं ) ३ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अब सामान्य प्रकारे गुण लिखते हैं ॥ ❀ ॥

॥ ॥ ❀ ॥ श्रावक कैसे होय । यथाशक्ति सुख श्रावक धर्म पाले । एकां  
त पक्षपात, कलहादि रहित, विनयादि गुण धारके, अनेकांतिक सुख गु  
रु धर्माचार्यकी सेवना करे ( तथा ) जवो जवमें नरक निगोदादिकके ड  
ख दें वाली, असुचि विष्टाके समान, कालकूट जहरसे अधिक, ऐसी प  
रनिंदा ठोमे ( और ) स्वर्ग मोक्ष सुख दायनी, कृत कर्म विध्वंसनी, आ  
त्म निंदा करता रहे ( तथा ) १३ काठिया प्रमाद रूप महा शत्रुओंको दूर  
करके, सुख साधु, श्रावक, संवेग पक्खी ) सबके गुण ग्रहण करे । साध  
मीजाणके यथा योग्य चक्रि वज्रमान करे ॥ श्रीजिनेश्वरदेवका, विनय मू  
ल, दया मूल, चारित्र्य मूल, धर्मका उद्योत करता रहै ( इत्यादि गुण युक्त  
श्रावक धर्महै ( सोपिण सुगम पणासें दूर रस्ते मोक्ष जाणेंका बीज जूतहै  
॥ ❀ ॥ यह दूसरा देश चारित्र्य धारक श्रावक धर्मका स्वरूप कहा ॥

॥ ❀ ॥ अब तीसरा संवेग पक्षी श्रावकोंका स्वरूप  
आचारलिखते हैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अनादि कालसें मिथ्या मोहादि कर्मोंकेवत्, चिदानंदनें ज  
न्म मरण करते, आपना गुण न पाया ( सो ) काल, जावी, जग्यत्व स्व  
जावादिक, पांच सम वाय मिले थके । यथा प्रवृत्ति १, अपूर्व २, अनिवृ  
त्ति ३, ( यह ) तीन करण, शुद्धानु योगसें, सर्व कर्मोंकी वज्रतसी स्थिति  
खपाके, किंचित् न्यून एक कोडा कोडि सागरो पम प्रमाण शेष रखे  
( तब ) रागद्वेषकी महा सचिक्कण निगड गांठ जेदन करे ( और ( अनं  
तानुबंधी ) क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, कपाय चार ( तथा मोह  
नी ३ ) सम्यक् १, मिथ्यात्व २, मिश्र ३, ॥— यह सात प्रकृतिकों क्यो  
पशम करके । उप शमादि ज्ञान दर्शन गुणको प्राप्त होताहै ( जब ऐसा  
ज्ञान, दर्शन, अपना गुण प्राप्त होनेसे ) अनंता पुन्य परावर्त जब भ्रमण



दूर होके । जघन्य अंतरमहूर्त (उत्कृष्ट) अर्ध पुञ्ज परावर्त, नव स्थिति, रहै ( तिस पीठे अवश्य मुक्ति पदकी प्राप्तिहोय ( ऐसा ) अक्षय सुखदायक, चिंता मणि रत्नवत्, ( ज्ञान, दर्शन, गुण ) गुरुके उपदेशसें ( तथा ) अपने स्वभावसें ( जो ) ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, सुद्रके, सुनकर्म सुमताके योगसें प्राप्त होय ( तब ) राग, द्वेषादि, रहित । सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, श्रीजिने श्वर देवके वचन अंतरंग श्रद्धासें सत्य मानें । श्रीजिन धर्मकी अनेक प्र कारसें उन्नति करे ( संसारमें ) सुदेव, सुगुरु, सुधर्म, ( यह ) तीन तत्व पदार्थ सत्य जानके परमजन्ती करता रहै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अब तीन तत्वकी श्रद्धा लिखते हैं ॥❀॥

॥ ❀ ॥ ( प्रथम सुदेव किसको कहिये ) ॥ ( जो ) राग द्वेषादि १८ दूषण रहित, सर्व देव इंद्रोंके पुज्य, ३४ अतिशय, ३५ वचनगुण सो जित, मोक्ष ऊएवाद, संसारमें आवा गमन रहित, ( ऐसे ) जिन, सिद्धादिक, ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, अल्ला, अलखादि, जो होय । ( उनको ) संवेग पकली, अनेकांती, ( ईश्वर, परमात्मा, मानें ) और ऐसे सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, लोका लोक ज्ञाव प्रकाशक, अरिहंत, सिद्धकों, सुदेव, ईश्वर, जगवान, कहियै ( परंतु ) राग द्वेषादि सहित, पूर्वोक्त गुणां रहित, कोईनि दल द्रीनें, अपना ईश्वर नाम, ( तथा ) रातदिन आप काम बिटंबणामें फस रहाहे ( उसनें ) अपना ब्रह्मचारी नाम, ( तथा ) ठाणा चुगनें वालीहे ( उसने ) अपना लक्ष्मी नाम, स्थापन किया ( इसीतरै ) निगुर्ण नाम धारकको, ईश्वर, जगवान, सुदेव, न कहियै ( क्युंकि ) जो आपनी राग द्वेषादिक संसार बिटंबनामे फस रहे हे । कोईकों बर देरहेहे, कोईकों मार रहेहें ( सोकनी ) ईश्वर मोक्षदायक न होते हैं ॥ ( जहां तक ) जो व ऊल संसारी जीव मोह मदिराके नस्सेमें व्याप्त होतेहैं ( तहांतक ) चौथी गतिवाले १८ दूषण सहित (और) कुकर्म करनें वाले । नय देखानें वालेकों । ईश्वरावतार, जगवान तुल्य, मोक्ष दायक जानते हैं ॥ ( औरजब ) मोह मदिराका नस्सा उतरताहे ( तब ) अपना सुध ग्यान गुण, विवेकसें, मुद्रा, कृत्य, वचन, सिद्धांतादिक, देखके । राग द्वेषादि रहित, श्री अरिहंत देवकों, ईश्वर मोक्ष दायक जाणतेहैं । ध्याते, पूजतेहैं ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ भगवानका स्वरूप लिखतेहैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रशम रस निमग्नं दृष्टि युग्मं प्रशन्नं । वदन कमल मंकाः का  
मनी संगसून्यः । करि युग मपि धत्ते शस्त्र संबंध बंध्यं । तृदश जगति देवो  
वीतराग स्वमेवः ॥ १ ॥ ❀ ॥ भवबीजां कुरु जनना । रागाद्याक्षय म  
पा गता यस्य । ब्रह्मावा विष्णुर्वा । हरो जिनोवा नम स्तस्मैः ॥ १ ॥ (ऐसे)  
गुण स्वरूपयुक्त, ईश्वर परमात्माको । नाम, स्थापना, द्रव्य, जाव, चारुं  
निक्षेपै । अनेकांती जैनी, त्रिकालै, त्रिकरण सुद्धे, ध्यावन, पूजन, करै (तथा)  
ईश्वर परमात्माके आग्या कारी सम्यक्ती, इंद्रादिक सर्व देवगणकों, अप  
ना मुख्य साधमी जाणके । वज्रत मान्यसं, जन्मादिक संस्कारोंमें (तथा)  
पूजा प्रतिष्ठादिक सर्व धर्म कार्योंमें, निमंत्रण पूजन नमस्कारादि करै ॥  
(क्योंकि श्रेयांसी वज्र विमानि) कल्याण कारक धर्म कार्य करते । मि  
थ्यात्वी देवादिक अनेक उपद्रव करतेहैं (इसवास्ते) अवश्य संपूर्ण धर्म  
कार्यमें । साधमी देवकी, निमंत्रणा, चक्ति, वज्र मानादि करै । सहाज्यलेवै ॥  
(परंतु) प्रथम गुण स्थान वंती । हरि, हरादि, मिथ्यात्वी देवका । वंदन, पू  
जन, निमंत्रणादि, कोईप्रकार न करै (और) अन्य देवकी देवसें निंदना  
जी न करै (इसी तरे) सुद्ध देव तत्वकी श्रद्धा धारन करे ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अब गुरुत्वकी श्रद्धा लिखते हैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (तथा गुरु ऐसे मानें) जो श्रीजिनेश्वरदेवकी आज्ञा संयुक्त,  
अनेकांतिक सुद्धधर्म प्ररूपक, उक्ताय जीवोंकी दया करनेवाले, कालानुसा  
रे सुसाधु होय । आपत्तिरे अन्यकों तारै (तथा) प्रथम जिसकेपास जैन  
धर्म सुद्ध पाया हे । धर्म शीखा हे । जिसके प्रसाद, अनादि भव दुःखदाय  
क मिथ्या मोह दूर होके । थोड़े कालमें अक्षय सुखदायक सम्यक्तरत्न, ग्यान  
रत्न मिला है ॥ ऐसे परम उपगारी । जैन पंडिताचार्यादि, श्रावक, संवेग  
पक्षीकोंजी । सुसाधु धर्माचार्यसें अधिक जाणके । वंदन, पूजन, चक्ति, वज्रमा  
नादि करे ॥ कृतज्ञपणासें अपना धर्म गुरु मानें ॥ (कृतज्ञ उसकों कहतेहैं)  
जो किये उपगारको जाएं । आप पीठा उपगार करे ॥ सो श्रीपालजीके  
समान उत्तम कृतज्ञ पुरुष कहिये ॥ (तथा) ॥ किया कोईका उपगार भूले  
नहिं । परंतु । आप उसका प्रतिउपगार कर शक्ता नहिं ॥ सो

५ ज्ञावसैं कुठ्नी उदय न आया (निकेवल) जिनेश्वर देव, गुरु, धर्म, की  
 अंतरंग जक्तिसैं । तीर्थकर गोत्र उगार्जन किया ॥ आवती चौवीसीमें जग  
 वान ऊवेंगे ॥ ऐसे गुण ग्राही, दायक सम्यक्त गुण धारक, निश्चल जैन  
 धर्मी ऊए (जिनोंकी) साधर्म इंद्रनैं सर्व देवगणके सन्मुख प्रसंसा करी (जब)  
 कोई मिथ्यात्वी देवतायें इंद्रका वचन सत्य न माना । ( सो देव ) चारका  
 नगरी आयके । गलित अंग स्वानके रूपसैं । श्रीरुष्ण महारायकी परिक्षा  
 करके (सत्य गुणग्राही जाना) सो दृष्टांत इहां ज्ञावन करना (तथा) इसी  
 तरे कोई देव श्रेणिक राजाके वखतमें इंद्रकी करी प्रसंसाकों सत्य न मानके  
 राजग्रही नगर आया । उहां मन्नीगर साधु ( और ) गर्जधारक साध्वीका  
 स्वरूप देखाके । श्रेणिक राजाकों ( निश्चल सम्यक्ती जाना ) सो दृष्टांत  
 इहां ज्ञावन करना ॥ ( इसीतरे ) व्रत प्रत्याक्षानादि रहित । निकेवल चतुर्थ  
 गुण स्थान सम्यक्त रत्न गुणधारक ( जो ) इंद्रादि सर्व देवगण ( तथा )  
 राजादि मनुष्य गणमें होय ( सो ) जैन धर्मका तीसरा जेद, संवेगपद्धी  
 श्रावक धर्मका ठोठा चाईके तुल्य जाणना (क्युंकि) यह संवेगपद्धी जी  
 मोक्ष मार्गके बीजभूतहे ॥ निश्चय जिन वचन प्रमाणसैं अर्ध पुजल पराव  
 र्तके नीतर मोक्ष जाएं वाले हे ॥ सम्यक्त विगर कठिन चारित्र जी पाला  
 ऊवा । अजवी ( तथा ) जमाली आदिक कीपरे जवनाशक न होताहे  
 ( यडुक्त आगमे ) दंशण जवो जवो । दंशण जवस्स नत्थि निवाणं । सि  
 झंति चरण रहिया । दंशण रहिया न सिझंति ॥ १ ॥ ( इससैं ) साधु  
 श्रावक, संवेग पद्धी, तीनों जेद (यथा) अपना कर्म क्षयोपशम प्रमाणें मो  
 क्षमार्ग साधक है ( इससैं ) स्यादवादी जैन धर्मियोंके अत्यंत मान्यनीक  
 है ॥ वंदन, पूजन, साधमी वात्सल्यादि करनैं योग्यहे ( यडुक्त मागमे )  
 विसमोवि नियडगमणो । मग्गो मुक्खस्स ईह जइधम्मो । सुगमोवि दूरगम  
 णो । गिहत्थधम्मोवि मुक्खपहो ॥ १ ॥ इतिवचनात्, सुद्ध साधुधर्म, श्रावक  
 धर्म, दोनुं मोक्षदायक है ( तथापि ) साधू धर्म, श्रावक धर्मके, महान् अं  
 तर हे ( जैसें ) मेरु पर्वत, और, सरसुंका दाणाके । सूर्य, और, खजुवा  
 जानवरके । चंद्रमा, और, ताराके । जैसा मोटा अंतर है ॥ ऐसा साधु  
 धर्म, श्रावक धर्मके अंतर हे ( यडुक्त ) जह मेरु सरिसवाणं । खज्जोअ रवी

ए चंद ताराणं । तद् अंतर महंतं । जइधम्म गिहत्थ धम्माणं ॥ १ ॥ इति वचनात् साधु धर्म मोटा है । महा कठिन मार्ग है । वीस विस्वा दया पाल नेवालाहै । निकट नदी जलदी मोक्ष जाणें वाले जीवोंके, महा पुन्य योगसैं द्रव्ये, जावे, सुख चारित्र उदयमें आवैहै । सिंहकीपरे धारणकरे सिंहकीपरै पालै (तथा) स्यालकी परे धारन करै । सिंहकीपरे पालै, ऐसा साधु धर्म धारन पालन वाला, महाधन्यहै, कृतपुन्यहै (परंतु) जोगावली कर्मोंके उदय प्रवृत्तासैं, जहांतक, सर्व सुख चारित्र उदय न आवै (अथवा) सूरवीराई सैं प्रथम साधु धर्म धारन कियाहै । कठन वृत्तिसैं पालेहै (तथापि) जोगावली कर्मोंके उदयसे, नंदिखेणजी, (तथा) आद्रकुमर जीकी परे सर्व सुख चारित्र न पालसके (तब) सुख श्रावक धर्म गृहस्थ आचार तो अवश्य धारन करना चाहिये (क्युंकि) ऐसाही कर्म उदय होय । तब जीव आपही जोगवता है । क्या सुःख । क्या दुःख (तथापि) सर्वतो अष्ट न होना चाहियै । ११ मा उपशांत मोक्ष गुण ठाणें तक चढाऊवा जीव, कपाय कर्मोंके वस, पीठा पडताथका (कदास) चौथा गुणस्थान परजी, जीव स्थिर रहजाय । तो सर्वतो अष्ट कजी न होय । (और) सम्यक् गुणस्थानमें रहते । नरक निगोदादिक हीन गतिका बंध कजी न होय ॥ ज्ञान, दर्शन, गुण, जहांतक सुख है । तहांतक सर्व सुख है (परंतु) चउताणी चउगइया ॥ ऐसानी कहाहै ॥ ४ ज्ञान १४ पूर्वके धरनें वाले ११ गुणस्थान तक चढे ऊवे साधुजी । कपाय, प्रमाद, कर्मोंकेवस, पीठा गिरताथका । पहला मिथ्यात्व गुणकों प्राप्त होके । नरक निगोदादिक गतिमें पमतेहैं । तिके सर्वतो अष्ट हो जाते हैं । (परंतु) ऐसे जीवजी । ग्यान, दर्शन, चारित्र, रत्न त्रयी गुण फरसा ऊवा है (इसैं) उसी जवमें (वा) अन्य जवमें । अवश्य रत्नत्रयी गुण प्राप्त होते हैं ॥ सम्यक्, मिथ्यात्व, कोई जात कारण नहीं है ॥ सुख, असुख, गुण, परिणाम, कारण है ॥ (इहां) नंदी खेणजी, आद्र कुमरजी, का दृष्टांत जावन करना ॥ (इसैं) श्रावक धर्महै सो साधु धर्मके पूर्व साधन झूत है ॥ देशे । सुजा चार धारण करनें वालाहै (तथा) सुरासुर सेवित अरिहंता दिक साधु पदके आराधकहै । वस, पात्र, सुख आहारादिक सैं, विनय, वे.

यावच्च, अत्यंत भक्तिका करने वाला है ( तथा ) जगवान श्री जिनेश्वर देव कों । चारुं निक्षेपै सत्य मानके । द्रव्ये, जावे, अनेक प्रकारसे वंदन, पूजन, करके । जैनधर्म दीपानें वाले हैं ( तथा ) साधू १ । साध्वी २ श्रावक ३ । श्राविका ४ । जिनमंदर नवीन ( तथा ) जीर्णोद्धार ५ । धर्म शाला ( तथा ) ज्ञानमंदार ६ । जीव दया, ( तथा ) दान शाला ७ ॥ ऐसे ७ धर्म क्षेत्रोंमें । दान पुण्यादिक करने वाले । संप्रतिराजा, कुमारपाल राजाके तुल्य, महा प्रजावी क होते हैं ॥ अनंता जवमें दश दृष्टांते डुल्लेख । आर्य देश । उत्तम कुल । पंचद्वी परगमी । लंबा आयुष्य । जैनधर्म । गुरु संयोग युक्त मनुष्य जन्म प्रायके । देवपूजा दिक सत्कर्म करके सफल करने वाले होतेहैं ॥

॥ ❀ ॥ अब सत्कर्म लिखतेहैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ देव पूजा १ दया २ दानं ३ । तीर्थयात्रा ४ जप । ५ स्तपः ६ । श्रुतं ७ परोपकारश्च ८ । मर्त्य जन्म फलाष्टकं ॥ १ ॥ ( इहां जैसे ) को ठिक गणीय, आर्य सुहस्थिसूरि प्रतिबोधक, संप्रति राजा । ( और ) मलधार गङ्गी हेमाचार्यजी प्रतिबोधक, कुमारपाल राजा ऊवा ( सो ) अनेक जिन मंदर, जीर्णोद्धार, ग्यान शाला, दान शालादि, सत्कर्म करके महा प्र जावीक ऊए । सो दृष्टांत जावनकरना ( इसी कारणसे ), जगवान श्रीक्षिपञ्च देव स्वामी प्रमुख जिनेंद्रोने । पूर्वानुपूर्विये । प्रथम गृहस्थ श्रावक धर्म, चौथे, पांचमें, गुणस्थान वर्ती जीवोंका । जन्मसे मरण पर्यंत षोडश सं स्कार, धारनरूप सुजाचार कहा है ( तीस पीढे ) साधु धर्मका षोडश सं स्कार धारन रूप सुजाचार कहा है ॥ ❀ ॥ प्रथम गृहस्थ धर्मका सुजा चार कहनेसे व्यवहार धर्मत्री प्रमाण ऊवा ( यडुकं आगमे ) समणस्सणं जगवन्न महावीरस्स । अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइ पन्निक्कमणं करंति । तइये दिवसे चंदसूर दंसणं कुणंति । ठेठे दिवसे धम्म जागरियं जागरंति । संपत्ते वारसाहे दिवसे विरए—इत्यादिक व्यवहार कर्म जगवानके माता पि ताये ( तथा ) जगवान आपपिण आचर्णं कियेहें ( पुनः आगमे वि नि र्दिष्टं ) विवहारो विज्ज वलवं । जंवदइ केवलीवि ठुमत्थं । आहा क म्मं जुंजइ । तो व्यवहारं पमाणंतु ॥ १ ॥ ( अन्य मतेपि कथितं ) चतु र्णां मपि वेदानां । धारका यदि पारगा । तथापि लोकिका चारं । मनसा

पि न लंघयत् ॥ १ ॥ ( यद्यपि ) आवश्यकादि आचार प्रदर्शक ग्रंथ व  
 कृतसेहे ( तथापि ) खरतर गङ्गीय श्री वर्द्धमान सूरीके रचाऊवा । मो  
 हांधकारकों दूर करने वाला । साधु धर्म, श्रावक धर्म, प्रकाश करने में  
 सूर्यके समान । ( झैसा ) आचार दिनकर ग्रंथ प्रसिद्ध है ( जिसमें )  
 ४० उदय आचारके विस्तारसे वणन कियेहै ( तिके ) ४० उदय प्रथम  
 पीठिकामें नाम मात्र लिखे है, (उसी मुजब) नाम मात्र ४० उदय, मैत्री  
 यह आचार रत्नाकरकी दीपकामें लिखताऊं ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ प्रथम गृहस्थ धर्मके षोडस संस्कार लिखतेहैं ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ गर्जाधानं १ पुंसवनं २ । जन्म ३ चंद्रादि दर्शनं ४ । क्षीरास  
 नं ५ चैव षष्ठी ६ । तथाच शुचि कर्मच ७ ॥ १ ॥ तथाच नाम करणं  
 ८ । अन्न प्राशन ए मेवच । कर्ण वेधो १० मुंडनं ११ च । तथोपनय  
 नं परं १२ ॥ २ ॥ पाठा लंजो १३ विवाहश्च १४ । व्रता रोषो १५ त  
 कर्मच १६ । अमी षोडश संस्काराः । गृहीणां परि कीर्तिता ॥ ३ ॥  
 यह १६ संस्कार गृहस्थ जैनीकों अवश्य धारनेका कहा है ॥ ॥ ✽ ॥

॥ अब साधुके योग्य १६ संस्कार लिखते हैं ॥

॥ ✽ ॥ ब्रह्मचर्यं १ कुल्लुकत्वं २ । प्रव्रज्यो ३ स्थापना ४ तथा । त  
 थाच योगो वह्नं ५ । वाचना ग्रहणं ६ तथा ॥ ४ ॥ ततश्च वाचनानुज्ञा  
 ७ । सोपाध्याय पदस्थिति ८ । आचार्य पदयुक्तिश्च ९ । प्रतिमो वह्नं १०  
 तथा ॥ ५ ॥ व्रतनी व्रत दानं च ११ । प्रवर्तनी पदक्रमः १२ । महत्तरा  
 पदाचारो १३ । दिन रात्रि स्थितिर्द्वयो १४ ॥ ६ ॥ ऋतु स्थितिश्च सा  
 व्याख्या १५ । मरणस्य विधि १६ पुनः । द्वाराणि षोडशै तानि । यत्या  
 चारे प्रदर्शिताः ॥ ७ ॥ यह १६ संस्कार साधुवोंके धारने योग्य कहेहैं ॥

॥ ✽ ॥ अब साधु (और) जैन पंथित श्रावकके समान आचर  
 णें योग्य ८ उदय लिखते हैं ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ प्रतिष्ठा विंव चैत्पादेः १ । शांतिकं २ पोष्टिकं वलिः ३ । प्रायश्चित्त  
 विधिश्चैव । आवस्यक विधि ६ स्तथा ॥ ८ ॥ तपोविधि ७ स्त्रिविधोपि । पदारो  
 पण ८ मेवच । गृहिसाध्वोः समानानि । द्वारान्यष्ट प्रकीर्तिताः ॥ ९ ॥ ✽ ॥

यह आठ उदय साधु आवकके समान कहेहैं ॥ इतना विवेक, विनय गुण अवश्य चाहिये ( कि ) अपना गुरु आचार्य उपाध्यायकी आग्या विगर कोईनी धर्म कार्य नकरै । जो ग्यान गुणमें अधिक होय, सब विधीके जाण कार होय । आचार्य उपाध्यायादि पद धारक होय । जिस गुरुसँ धर्म कार्य विधि जाणनें धारनेमें आई होय । (ऐसे) गुरु आचार्यादिककी आज्ञा सँ सर्व धर्म कार्य विधि करनी चाहिये (आवश्यकदिक आचार सिद्धांतोंमें) प्रथम अपना धर्म गुरु, कुलगुरुकी, आग्यासँही सर्व कार्य करना कहा हे सोप्रसिद्धहै ॥ कोईनी विद्या, गुरुके पास विनय संयुक्त धारन करने सँ फलदायक होतीहै ॥ ( जैसँ ) श्रेणकराजा, एकचंमालके पास आक खणी विद्या, अविनयसँ होकम करके सिंहासण पर बैठ सीखनें लगा ( त थापि ) फलदायक नहिं ऊई ( तब ) उत्पातकी१, विनयकी२, धर्मानकी, कर्मानकी, ऐसी चारबुद्धिके निधान । अन्नय कुमारजी कहनें लगे (कि महा राज) इस विद्या दाताकों, ऊंचा सिंघासण पर बैठाय खुसीकरके विनय संयु क्त विद्या ग्रहण करिये । तब फलदायक ऊवेगी (क्युंकि) विद्या आनेंका, व धनेंका, फल दायक होनेंका, तीन प्रकार कहा हे (यडुक्तं) ॥ गुरु शश्रूषया विद्या । पुष्कले न धनेनवा । अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थ नैवकारणं ॥ १ ॥ तब श्रेणक राजा, उसकों वज्रतसा खुसी करके, विनय संयुक्त स न्मुख बैठके, विद्या ग्रहण करी, तब फलदायक ऊई ॥ ( इहां श्रेणक राजा, अन्नय कुमारजीका दृष्टांत ज्ञावन करना ) ॥ यह ४० उदय आ चारके नाम मात्र कहे हैं ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अब इन ४० उदयोंमें जो साधुवोंके १६ संस्कार कहेहैं । सो प्रायें सब विधि साधुवोंमें होती है । साधु अपना आचार ठोमके अन्यमत आचार न करतेहैं (इससँ) जो साधु होते हैं (सोतो) प्रथम अपना गुरुके पास, अपना आचार ग्रंथ सीखते हैं (परंतु) वर्त्तमान कालमें प्रायें जैन गृहस्थाचार शास्त्रोक्तरीति मुजब दिनदिन विलुप्त होता जाताहै ॥ इस ऊं मा अवसर्पणी दुखमा कालके प्रज्ञाव, चालनी प्राय धर्म होनेंसँ, मन मा फक आचार करनें लगगए हैं । ( इससँ दिन दिन ) धनसँ, धर्मसँ, परि वारसँ, विद्यासँ, सर्व ठिकाणें हीन प्रभुते जातेहै ॥ हीनाचारी ऊवाथका

इस जन्ममें दलित्रताका दुख देखते हैं । परजन्ममें निगोदादिकका दुखदेखते हैं ॥ ( इसीसे ) अनेकांती सर्व जैनी चाइयोंके, हित सुःखार्थे, अ वश्य, जाणनें, धारण करने लायक, जन्मसें मरण पर्यंत, जैन गृहस्थाचारके पोमेश उदय ( इस ) आचार रत्नाकरके प्रथम प्रकाशमें किं चित् विस्तारसें प्रसिद्ध करुंगा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ आदौ पोमस उदय नाम मात्र लिखताहुं ॥❀॥

॥ ❀ ॥ आद्य गर्जाधान संस्कार ( जब ) गर्ज उत्पत्ति होय, उससमय आचार विधि मंत्रादि कथनरूप प्रथम उदयः ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( तथा ) गर्जा धानसें आठमें मासका कृत्य ( देशविशेषसें ) सीमंत आघरणी कहते हैं॥ उसका आचार मंत्रादि कथन रूप द्वितीय उदयः ॥ २ ॥ ❀ ॥ ( तथा ) जन्मज्जवे धाद, जन्मका संस्कार, जन्मो ठव प्रमुख किस विधीसें करना ॥ तद्विधि मंत्रादि संयुक्त, कथन रूप तृतीय उदयः ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ( तथा ) जन्मसें तीसरे दिवस, चंद्र, सूर्यके, दर्शन कराणा ॥ तद्विधि मंत्रादि संयुक्त कथन रूप चतुर्थ उदयः ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ( तथा ) जन्मसें तीसरे दिवस माताके स्तनका संस्कार कराके, बालकको स्तन पान कराणा ॥ तद्विधि मंत्रादि संयुक्त कथन रूप पंचम उदयः ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ( तथा ) जन्मसें ठे दिवस संध्या समय, मातृका देवी पूजन रूप, षष्ठी संस्कार कराना ॥ तद्विधि मंत्रादि संयुक्त कथन रूप षष्ठ उदयः ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ( तथा ) जन्मसें १० दिवस उपरांत सुज मज्ज्जे शुचिकर्म रूप संस्कार कराना ॥ तद्विधि मंत्रादि संयुक्त कथन रूप सप्तम उदयः ॥ ७ ॥ ❀ ॥ सुची कर्म कियेबाद, नाम कर्म संस्कार कराणा । तद्विधि मंत्रादि संयुक्त कथन रूप अष्टम उदयः ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ( तथा ) जन्मसें ठे मास बालकको ( और ) पांचमें मास कन्याको, अन्न प्राशनके संस्कार करायके, जो विधिसें मुखमें अन्नदेना ॥ तद्विधि मंत्रादि संयुक्त कथन रूप नवम उदयः ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ( तथा ) जन्मसें तीसरे, ५ में, ७ में, वरप निर्दोष दिवसे कर्ण वेध न कराणा । तद्विधि मंत्रादि कथन रूप दशम उदयः ॥ १० ॥ ❀ ॥ ( तथा ) मास दिवस मज्ज्जे सुज देखके चूमा कर्म करना ( अर्थात् ) मुंमन क रना ॥ तद्विधि मंत्रादि कथन रूप एकादशम उदयः ॥ ११ ॥ ❀ ॥ ( तथा )



जन्मसें, ८ में वर्ष ब्राह्मणकों, १० में वर्ष क्षत्रीकों, १२ में वर्ष वैश्यकों, शुभ्र मङ्गलें जिनो पवीत धारन कराना ( तथा ) जिनो पवीत बनाना, व्रत उपदेश देना, व्रत विसर्ग कराना, भूम्यादि दानादिक देना, चारु व र्णका संस्कार कराना, सुद्रकों उत्तरासन रूप जिनोपवीत धारन कराना ( तथा ) वटु करण विधि ( अर्थात् ) संस्कारसें ब्राह्मण करना ॥ इत्यादि अधिकार विधि मंत्रादि कथन रूप द्वादशम उदयः ॥ १२ ॥ ❀ ॥ ( तथा ) सुभ्र मङ्गलें, प्रथम पुत्रकों, जैनी पंथितके पास विद्याध्ययन कराना । त विधि मंत्रादि कथन रूप त्रयोदशम उदयः ॥ १३ ॥ ❀ ॥ ( तथा ) ज न्मसें ८ में वर्ष उपरांत, ११ में वर्ष पर्यंत कन्याका विवाह, ( और ) ज न्मसें १६ वर्ष उपरांत पुरुषका विवाह करना ( तिसमें ) वेदी स्थापन विधि, ७ कुलकर गणपति स्थापन पूजन विधि ( तथा ) अग्नीकी स्थापना अग्नीका तर्पण, दानादिक देना, लाजा कर्म, ॥ इत्यादिक विधि मंत्रादि कथन रूप चतुर्दशम उदयः ॥ १४ ॥ ❀ ॥ ( तथा ) साधु ) वा ) जैन पंडिताचार्यके पास सम्यक् धारन करना, १२ व्रत उचरना, उपधान तप स्या करनी, संघमाला पहरनी ( तथा ) किस विधिसें जगवानके मंदर जाणा, जगवानकी पूजा करना, शांतिक पोष्टिक पूजाकरना ( तथा ) सरस रागणीके गायन युक्त, १२ व्रत पूजा, पांच कल्याणक पूजा, । १४ स्व म पूजा, ए ग्रह, १० दिग्याल पूजा । श्रावकका सविस्तर दिन कृत्य, ॥ इत्यादिक विधि मंत्रादि कथन रूप, पंचदशम उदयः ॥ १५ ॥ ❀ ॥ ( तथा ) अंत्य संस्कारके विषे श्राद्ध आराधना, चतुःशरण क्षामणा, तद्विधि मंत्रादि कथन रूप षोडशम उदयः ॥ १६ ॥ ❀ ॥ इसी क्रमसें षोडस उदय सवि स्तर प्रथम प्रकाशमें वर्णन करुंगा ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥❀॥ अब गृहस्थीके १६ संस्कार साधु (वा) कुलगुरु, किसको कराना उचित है ( सो लिखता हूं ) ॥❀॥

॥❀॥ जो संसारकर्म परिग्रह ठोरके । द्रव्ये, जावे, सुधसाधु जाए हैं । जिनोको तो एक व्रतारोप संस्कार ( अर्थात् ) धर्मोपदेश देना, सम्यक्तादि व्रत धारण कराना उचित है ॥ शेष १५ संस्कार कराना उचित नहिं ।

( यङ्कुलमागमे ) ॥ व्रतारोपं परित्यज्य । संस्कारा दशपंचच ॥ गृहीणां नैव कर्त्तव्या । यतिभिः कर्मवर्जितैः ॥ १ ॥ विज्ञायं जोइसं चैव । कम्मं संसारियं तथा । विज्ञा मंतं कुणंतोअ । साङ्गहोइ विराहउ ॥ २ ॥ ( इतिवास्ते ) दूसरा देसविरति कुलगुरु, जैन ब्राह्मण, कृष्णकादिकको, गृहस्थका १५ संस्कार कराना उचित है ॥५॥ ॥५॥ ॥ ॥

॥५॥ अब संस्कार कराएँवाले कुलगुरु कैसे आचारवान चाहिये ( सो लिखते हैं ) ॥५॥

॥५॥ जो अर्हन् मंत्रसें पवित्रित, जिनोपवीत, सम्यक् व्रतादि, धारन किया थका होय ( तथा ) विनयवान्, बुद्धिवान्, शौचवान्, आचारवान्, दयावान्, शरल स्वभावी, शांति परिणामी, दृढ सम्यक्की, अनेकांती, अर्हंत साधुकी आग्या धारक, विधि मार्गका जाणकार, अल्प कपाई, त्रिकालै देव वंदन, सामायक, करनेवाला । अनेक प्रकारसें धर्मवृद्धी करने वाला, ( इत्यादि ) अनेक गुण धारक होय ॥ ५ ॥ ऐसे कुलगुरु जैन पंथित ब्राह्मणोंकेपासे । जैन गृहस्थोंको सर्व संस्कार विधि, विनय संयुक्त धारन करनी चाहिये ॥ कोईजी विद्या विनयसें लीवी फलदायक होतीहै ॥ यह प्रथम प्रकाशका अधिकार दीपन करा ॥५॥

॥ ५ ॥ और दूसरा प्रकाश मध्ये ॥ ५ ॥

॥५॥ जैन इतिहास, ( तथा ) ५५ बोलगर्जित, कृपणादि २४ जगवानका दृष्टांत स्वरूप ( तथा ) १२ चक्रवर्त्ति, ए वासुदेव, ए प्रतिवासुदेव, ए बलदेव, ( इत्यादिकके ) माता, पिता, नाम, नगर स्वरूप ( तथा ) जगवान महावीरस्वामीसें लेकर, वर्त्तमान काल तक, सुद्ध कोटिक गच्छ परंपरा आचार्यादिकके स्वरूप, मत मतांतरके स्वरूप, ( तथा ) सर्वके उपयोगी । स्वप्न, सुकन, मज्जतादिक, विचारण स्वरूप ( इत्यादि ) अधिकार दूसरा प्रकाशमें किंचित विस्तारसें वर्णन करंगा ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ अब हितोपदेश लिखताऊं ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ अहो देवाणुप्रियो । अहो प्यारा सर्व जैन नाइयो । अहो स्वावाद धर्म रागियो । अहो सज्जन पुरुषो । प्रेरणा मदत करके । सर्व

स्थानके । वनें जिस मुजब धर्म वृद्धी करो । धर्म वृद्धी ग्यान सेती होती है ( इससेती ) ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, सुद्र, ( जो ) जैन विद्या, पढै पढावै, ( तथा ) जैन आचार धारन करै, करावै, जिसकों मदत देवो । जिसका वज्रत मान्यकरो । ( और ) जो निराश्रई होय ( उसकों ) वस्त्र आहारादिकका सहाय्य करके विद्या पढाउ ॥ एकेकका गुण ग्रहण करो । एकेकका गुण वधाउ ॥ कोई प्रकार जैन विद्याकी वृद्धी करो । अपना धर्म गुरु, कुलगुरुके पास, विनय संयुक्त धर्म कृत्य आचार शीखो । जन्मसें मरण पर्यंत जैन आचार धारन करो । शक्ति मुजब आचार व्यवहारमें चलो । शक्ति मुजब व्रतपञ्चखाण धारन करो । सर्व नाश कारक निंदा ध्वेष ठेमो । सर्व गह्व, सर्व जैनीनाई आपसमें समता स्वभाव धारण करो । सबुद्धिसें विचार करके । एकांत दृष्टिराग पक्षपात ठेमो ॥ एकेकके देव स । पर्वतिथीका नाश करके । लीलोती आदिक अनंता जीवांरा घाण मति करो ॥ जीव दया सुध पालो । सत्य वचन बोलो ॥ अदत्त वस्तु ग्रहण मति करो । परस्त्री अचिन्ताषा कुशील ठेमो । अंगीकार करी ऊई अपनीस्त्रीपर संतोष धारन करो । परिग्रहकी सूझा अल्पकरो । तृण्णा अल्प करके परिग्रहका प्रमाण करो ( तथा ) पांचुं व्रतकों गुणकारी दिग्दिश परमाण करो । मद्य, मांशादि अन्नद्व अन्नत काय अवस्य त्यक्त करो । ( तथा ) १५ कर्मादानादि महा सावद्य व्यापार त्यक्त करके । निरवद्य व्यापार करो ॥ जोगोपजोग वस्तुका प्रमाण करो । ( अहो नाइयो ) अनर्थ दंभ त्यक्त करो ( अर्थात् ) वे अर्थ कोई पापका नागी मतिऊ वो । ( तथा ) सामायक, पोषध, प्रतिक्रमण, दैव पूजन, दान, पुन्य, उप गारकों । करते, कराते, करनें वालांका अनुमोदना, करते रहे ॥ अहे अहे चित्त आल्हाद कारक जिन मंदर वनवां ( तथा ) संप्रतिराजा, कुमार पाल राजा दिकका कराया ऊवा जीर्ण मंदिरोका उधार कराउ । ( और ) कोईस्थानके निम्नवादिकके प्रसंगसें जिन मंदर अपूज ( वा ) बंध रहता होय ( तो ) ऐसा मंदरोंकी अवश्य संजाल रखो । जिन द्रव्यकों वधाउ । देव, गुरु, द्रव्यका नक्ष्ण मति करो । मांगके खाना दलद्री होना फेरनी अज्ञा है ( परंतु ) देव गुरु द्रव्यका नक्ष्ण करके अनं

ताजव नरक निगोदा दिकमें जमणा अन्ना नहिं है ॥ (अहो देवाणु  
प्रियो) जूवा, चोरी, मांस, मदरा, वेश्या गमन, परस्त्री गमन, जीवहत्या,  
आहेडीपणा ७ । (ऐसा) महा दुःख दायक सात व्यसन ठोडो । धर्म  
नीति, कुलनीति, राज्यनीति, अनुसार चलो ॥ रथजात्रा तीर्थयात्रा करो  
सार्धमी वात्सल्य करो । (तथा) देव, गुरु, धर्मकों, तत्त्वपदार्थ जानके,  
अंतरंग प्रीति रखो ॥ (तथा) कर्मोंकी विचित्र गति जानके (कोई)  
संसारी जीवकी निंदा मतकरो । बुझी कर्मानु सारणी है । अपना कर्मोंके प्र  
साद, सुख दुःख सर्वजीव जोगवते हे ॥ १ ॥ (युक्तं) ॥ ॥ कृतकर्म  
हृयो नास्ती । कल्प कोटि शतैरपि । अवस्य मेव ज्ञोक्तव्यं । कृत कर्मः  
सुजासुजं ॥ १ ॥ (पुनः) ॥ जं जं समयं जीवो । आवस्सइ जेण  
जेण ज्ञावेण । सो तंमि तंमि समए । सुहा सुहं वंधएक स्मं ॥ २ ॥  
(पुनः) ॥ नीचै गोंवावतार श्रम जिनपते मल्लिनाथा बलात्वं । अंधत्वं  
ब्रह्मदत्ते जगत नृप जयः सर्वनाशश्च रुण्णे । निर्वाणं नारदेपि प्रशम सुख  
रति स्या चित्ताती सुतेपि । इत्थं कर्मानु धीर्योः स्फुट मिह जयतां स्पर्धया  
चिंत्यरूपे ॥ ३ ॥ ब्रह्मा येन कुलाल व क्षियमितो ब्र  
ह्मांम ज्ञानोदरे । विष्णुर्येन दशावतार गहने क्षितः महासंकटे । रुद्रो येन  
कपाल पाणि पुट के जिह्वाटनं कारितः । सूर्यो आम्यति नित्य मेव गगने  
तस्मै नमः कर्मणैः ॥ ४ ॥ प्रचलति यदि मेरुः शीततां  
याति बन्धि । उदयति यदि ज्ञानुः पश्चिमायां दिशायां । विकशति यदि पद्मं  
पर्वताग्रे शिलायां । तदपि न चलनीयं ज्ञाविनी कर्मरेखा ॥ ५ ॥  
एककै पाय अनेक परे पुनि एक अनेकके पाय परेहै । एक अनेक  
किंचितहै अरु एक न आपनो पेटजरेहै । एक खुस्याल सूत्रे सुख पालमें  
एककुं कंथन खाट जुरै है । देखत यार कहै धमसी जगि पुन्यरु पाप प्र  
तिक्रिफिरै है ॥ ६ ॥ ऐऐदेखो दई गतिया वतिया कटुही  
न कहीसी परै है । रंककों राउरु रांजकों रंक पलकमें औसी हलक करै  
है । एक विचित्र ही चित्र बनावत एककों जंजन एक घरै है । वात धर  
स्मसी वाहीके हाथ है टाखोन काहूको ईस टरेहै ॥ ७ ॥  
लंगन चंदमें तापदिनंदमें चंदन मांहिं फण्डिको वासो । पंक्ति निर्वन सद्ध

न है सठ नारि महाहठको घरवासो । हीम हिमाचल खार है वारधि केत  
 कि कंठक कोटिको पासो । देखो धरम्मसी है सवकों डुख कोऊ करो मति  
 काऊको हासो ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ( इसवास्तै ) अहो देवाणु प्रियो । कर्मोंकी ८  
 मूल प्रकृति ( तथा ) १५८ उत्तर प्रकृतिका स्वरूप जाणके सम ज्ञावसैं  
 आत्म लघुता करते रहो ॥ ❀ ॥ अब कर्मोंकी ८ मूलप्रकृति ( तथा ) १५८  
 उत्तर प्रकृतिका स्वरूप किंचित ॥ मात्र इहां लिखता ऊं ॥ ❀ ॥  
 (मूलकर्म जेद ८) ग्यानावरणी १ । दर्शना वरणी २ । वेदनी ३ । मोहनी ४ ।  
 आऊ ५ । नाम ६ । गोत्र ७ । अंतराय ८ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥❀॥ अब १ ज्ञाना वरणी कर्मका स्वरूप लि० ॥❀॥

॥❀॥ इसकी उत्तर प्रकृति ५ ॥ मति ज्ञानावरण १ । श्रुत ज्ञानावरण २ ।  
 अवधि ज्ञानावरण ३ । मन पर्यव ज्ञाना वरण ४ । केवल ज्ञाना वरण ५ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अब सात प्रकारसैं जीवोंके ज्ञानावरणी कर्म बद्ध होय  
 ( सोलिखते हैं ) ॥ सिद्धांत शास्त्र वेचके आजीवका करै ॥ १ ॥ कुदेवकी  
 प्रशंशाकरै २ ॥ ज्ञानके विषय संदेह करै ३ । कुशास्त्रकी, कुगीतकी, प्र  
 शंशाकरै ४ । सिद्धांतका मूल अर्थ न्त्थापन करै ५ । पर पुरपका दूषण  
 प्रकाशकरै ६ । मिथ्या शास्त्रका उपदेश करै ७ ॥ ❀ ॥ (इस) ज्ञाना वरणी  
 कर्मकी ३० कोमा कोमि सागरोपम उकष्ट स्थिती होय ॥ यह कर्म ने  
 त्रांके पाटे समान होताहै ( जैसें ) ८ पुठ वस्त्रका पट्टा बांध्यां थकां । ने  
 त्रांसैं कुठनी न दीखताहै ( इसीतरे ) ज्ञानावरणी कर्मके उदय, जंगत्र स्वरूप  
 का ग्यान न होताहै ॥ ज्ञायते परिच्छिद्यते वस्त्व नेनेति ज्ञानं ॥ आव्रियते  
 आह्वाद्यते अनेने त्यावरण ॥ ज्ञानस्या वरणीयं ज्ञानावरणीयं ॥ ( इति  
 समासः ) ॥ यह ज्ञानावरणी कर्मका स्वरूप कहा ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अब २ दर्शना वरणी कर्मका स्वरूप लि० ॥❀॥

॥ ❀ ॥ ( इसकी उत्तर प्रकृति ) ९ ॥ चक्षु दर्शनावरण १ । अचक्षु दर्श  
 नावरण २ । अवधि दर्शना वरण ३ । केवल दर्शनावरण ४ ॥ सुखे जागे  
 ( सो ) निद्रा ५ । डुखे जागै ( सो ) निद्रा निद्रा ६ । वैठां ऊन्नां निद्रा  
 आवे ( सो ) प्रचला ७ । मार्ग चालतां निद्रा आवे ( सो ) प्रचला

प्रचला ८ ( तथा ) जिस निद्रामें वासु देवसैं अर्ध पराक्रमहोय । ठहै मास आवै । दिनका चिंत्या रात्रकों कार्य करै । शत्रुकों जीतके पीठा आय सोवे ( तवज्जी ) निद्रा जागृत नहोय ( सो ) स्त्यानर्द्धि निद्रा ए ॥ इस निद्रावाला अवश्य सातमी नरक जाय ॥ ॐ ॥ यह ए प्रकृति कही ॥ ॐ ॥ (अब) दश प्रकारसैं जीवोंके दर्शना वरणी कर्म बद्ध होय (सो लिखते हैं) ॥ ॐ ॥ कुदेवकी प्रशंशा करै १ । कुतीर्थकी स्तुतीकरै २ । कुगुह हीनाचारीकी प्रशंशा करै ३ । जीव हिंसा करै ४ । कुशास्त्रकी प्रशंशा करै ५ । मिथ्यात्व बुद्धी धारन करै ६ । शोक दुःख अधिक धारन करै ७ । सम कितकों दूषण लगावै ८ ॥ मिथ्या आचार व्रत धारन करै ९ ॥ मिथ्या बुद्धीयें अन्याय कूठ बोले १० ॥ ॐ ॥ यह १० बोले जीव दर्शनावरणी कर्म बांधै ॥ ॐ ॥ (इसकी) ३० कोमा कोमि सागरो पम स्थिति (यह) कर्म प्रोलिखैके समान है (जैसैं) प्रोलियो, राजाकेपास कोईको जानैं न देवै (इसीतरै) यहकर्म दर्शन राजासैं मिलनैं न देवै ॥ दर्शना वरणी कर्म खपायां विना दर्शनगुण उदय न आवै ॥ दृश्यते अनेनेति दर्शनं । तस्या वरणीयं, आद्यादनीयं, दर्शना वरणीयं (इति समासः) ॥ ॐ ॥ यह दर्शना वरणी कर्मका स्वरूपक हा ॥ १ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अब ३ वेदनी कर्मका स्वरूप कहते हैं ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (इस कर्मकी उत्तर प्रकृति) २ ॥ सातावेदनी, सुःख भोगावना १ ॥ असाता वेदनी, दुःख भोगावना २ ॥ ॐ ॥ (अब) १४ बोले जीव सातावेदनी कर्म बद्ध करै (सो कहते हैं) ॥ दयावंत १ । दानवंत २ । क्षमावंत ३ । व्रतवंत ४ । शीलवंत ५ । दमवंत ६ । संजमवंत ७ । ज्ञानवंत ८ । जिन पूजावंत ९ । जिन वंदनवंत १० । जिन शास्त्र विचारवंत ११ । दया धर्म उपदेशक १२ । दीन पर अनुकंपा धारन करै १३ । सत्य वचन बोले १४ ॥ ॐ ॥ यह १४ प्रकारे जीव साता वेदनी कर्म बांधै । संसारका सुख भोगवै ॥ ॐ ॥ (अब) १५ बोले, जीव असाता वेदनी कर्म बद्ध करै (सो कहते हैं) मनुष्यकों मारै १ । जीवाकों बंध करै २ । जीवाकों छेदन करै ३ । जीवाकों जेदन करै ४ । चामी करै ५ । परकों दुःख उप जावे ६ । जीवांकों त्रास देवै ७ । आक्रंद करावै ८ । दुःख शोक धारन करै ९ । परद्रोह

आपण मोसो करै १० । असत्य वचन बोले ११ । वैर करावै १२ । युद्ध करावै १३ । क्रोध, मान, उपजावै १४ पर निंदा करै १५ ॥ ❀ ॥ (यह) १५ प्रकारे जीव असाता वेदनी बांधै ॥ संसारमें जमतां महा डरक जोग वै ॥ (इसकी) ३० कोमाकोमि सागरोपम स्थिति ॥ (यह कर्म,) मधुलिप्त खड्ग धारासमान है (जैसे) खांमेकी धारके ऊपर, मधु लगाया ऊवा चाट ऐसे, प्रथम मिष्ट लगै ( सो साता वेदनी ) पीठे खांमेकी धारासें जीन क ठै दुःख पावै (सो असाता वेदनी) ॥ वेद्यते आकादि रूपेण यदनुज्यूयते तदे दनीयं ॥ ३ ॥ ( इति समासः ) ॥ ❀ ॥ यह वेदनी कर्मका स्वरूप कहा ॥

॥❀॥ अब चौथा मोहनी कर्मका स्वरूप कहते हैं ॥❀॥

॥ ❀ ॥ इसकी उत्तर प्रकृति २८ ॥ ( अनंतानुबंधी ) क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४ ॥ जावज्जीव रहै । समकित उदय नहिं आवै ॥ ( अप्रत्याख्यानी ) क्रोध ५ । मान ६ । माया ७ । लोभ ८ ॥ उदय आयां उत्कृष्ट १ वृत्तर रहै ॥ इस कषाय चौकमी के उदय समकित गुण पावै ( परंतु ) देश विरति श्रावक गुण न पावै । व्रत प्रत्याख्यान उदय न आवै ॥ ( प्रत्याख्यानी ) क्रोध ९ । मान १० । माया ११ । लोभ १२ ॥ उदय आयां उत्कृष्ट ४ मास रहै ॥ इस कषाय चौकमीके उदय श्रावक गुण पावै ( परंतु ) साधुपणा उदय न आवै ॥ ( संजलना ) क्रोध १३ । मान १४ । माया १५ । लोभ १६ । उदय आयां उत्कृष्ट १५ दिन रहै ॥ इस कषाय चौकमीके उदय, यथा ख्यात चारित्र उदय नहिं आवै । केवल ग्यान नहिं पावै ॥ ( यह १६ ) कषाय प्रकृति कही ॥ ( अब ए नोकषाय प्रकृति क० ) । हास्य १७ । रति १८ । अरति १९ । जय २० । शोक २१ । डुंगठा २२ । पुरुष वेद २३ । स्त्री वेद २४ । नपुंसक वेद २५ ॥ इति ए नोकषाय प्रकृति कही ॥ ( तथा मोहनी ३ ) सम्यक्त मोहनी २६ । मिथ्यात्व मो० २७ । मिश्र मोहनी २८ ॥ मोहनी कर्मकी २८ प्रकृतिकही ॥ इस २८ प्रकृतिमें । २५ कषाय प्रकृति चारित्र मोहनीकी ॥ शेष ३, दर्शन मोहनीकी जाणनी ॥ ❀ ॥ अब ६ बोले जीव, दर्शन मोहनी कर्म बद्ध करै ( सो कहते हैं ) केवल ग्यानकी निंदा करै १ । अरि हंत वचनकी निंदा करै २ । सिद्धांत वाचककी निंदा करै ३ । जिन धर्म

की निंदा करै ४ । गुरु ( तथा संघकी निंदा करै ५ । कुमार प्रकाश करै ६ ॥ ॥ अब दोबोले चारित्र मोहनी कर्म वक्ष करै ॥ तत्र कषाय के करनेसे १ । हास्यादिकके करनेसे २ ॥ इस प्रकारसे जीवके मोहनी कर्म वक्ष होय ॥ (इसकी) ७० कोमाकोमि सागरोपम स्थिति ॥ (यहकर्म) मदिरा पान संमान है, ( जैसे ) मदिरा पान करनेसे मनुष्यों जली बुरी वातका विवेक न होय । ( तैसे ) मोहनी कर्मके उदय सत् असत्का ज्ञान न होय । पर पुत्रलोकों माहरो माहरो कहता । संसारमें जन्मतारहे ( और ) महा दुःख देखता रहै ॥ ॥ इति मोहनी कर्मका स्वरूप कहा ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अब ५ आयु कर्मका स्वरूप कहते हैं ॥ ॥

॥ ॥ (इसकी उत्तर प्रकृति ४) ॥ देवायु १ । मनुष्यायु २ । तिर्यचायु ३ । नरकायु ४ ॥ ॥ अब किस प्रकारै जीवके देवायु वक्ष होय ॥ ( तद्यथा ) ॥ ॥ क्रोधादि कषाय अल्प धारन करै १ । सदा समकित पालै २ । सुख श्रावक धर्म पालै ३ । मरनेका ( तथा ) गत वस्तुका शोक न करै ४ । तीर्थंकरकी जक्ति करै ५ । दया, दानकी, निरंतर बुद्धि रहै ६ । सुख साधु धर्म पालै ॥ ७ । जिन धर्मको अत्यंत रागी ८ । बाल तपस्वी ९ । मेंहां काया कष्ट करै ॥ १० ॥ ॥ यह १० प्रकारे जीव देवगतिका आयु वक्ष करै । देव गतिमें जावे । महा सुख जोगवै ॥ १ ॥ ॥ अब ९ प्रकारे जीवके मनुष्यायु वक्ष होय ॥ ॥ ( तद्यथा ) ॥ ॥ देव गुरुकी पूजा जक्ति करै १ ॥ जीवपर दया धारन करै २ ॥ शास्त्र सिद्धांत पढ़ै, पढ़ावै ३ ॥ न्यायसे लक्ष्मी उपार्जन करै ४ ॥ चित्त प्रशानतासे अन्न वस्त्रादि दान देता रहै ५ ॥ चामी ( तथा ) निंदा कोईकी न करै ६ ॥ परका उपकार करै ७ ॥ कोई जीवकों पीडा न उपजावै ८ ॥ आरंजन करै ॥ ( अर्थात् ) सरल परिणामसे, अर्थे आरंजन करताजी संकता रहै ९ ॥ ॥ यह नवप्रकारे जीव उत्तम मनुष्य जव पावै । मनुष्यका सुख जोगवै । उत्तम धर्म पावै ॥ ( इहां ) मेघ कुमारजीका दृष्टांत ज्ञावन करना ॥ ॥ अथ १० प्रकारै, जीव तीर्थच गतिका आऊ वक्ष करै ॥ ( तद्यथा ) शील जंग करै १ ॥ जीवकों उगै २ । मिथ्यात्व कर्म समाचरै ३ । कुकर्मका



नुपदेश करै ४ । तोल, माप, लेनेका अधिक, दैनैका उंग करै ५ । कपट वृत्ति धारके लोककों ठगै ६ । असत्य वचन बोलै ७ । ऊँची शाख जरै ८ । सुगंधमें दुर्गंध मिलावे ९ । कपूरादिकमें जेल करके बेचे १० । कस्तूरीमें जेल करके बेचे ११ । सोना रूपा मध्य जेल करै १२ । कलह करै १३ । निंदा करै १४ । चोरी करै १५ । अणजुंती बात बनावै १६ । घृत तेल मांहि जेल करै १७ । नील लेश्या परिणाम धारै १८ । कापोत लेश्या परिणाम धारै १९ । आर्त ध्यान करै २० ॥ ❀ ॥ यह २० बोलै तिर्यंचायु वध करै ॥ निगोदादिक तिर्यंच गतिमें जावै । महा दुख जोगवै ॥ ❀ ॥ अथ २० प्रकारै जीव नरक गतिका आज्ञा वध करै ॥ ❀ ॥ (तद्यथा) वज्रत लोभ करै १ । मद मत्सर वज्रत करै २ । क्रोध वज्रत करै ३ । मिथ्यात्व कर्म आचरै ४ । जीव हिंसा करै ५ । असत्य वचन बोलै ६ । चोरी करै ७ । शील जंग करै ८ । अति रक्त होके संसार सुख जोगवै १० । मर्म जेद करै ११ । पंचेद्री विषयादिककों सार मानै १२ । जिन, संवकी घात करै १३ । जिन वचन नुत्थापै १४ । जिन तीर्थकरकी पूजा न करै, न करावै १५ । मदिरा पान करै १६ । मांश भक्षण करै १७ । रात्री भोजन करै १८ । अन्नक्ष अनंत काय भक्षण करै १९ । रोद्रध्यान, कृष्ण लेश्या धारण करै २० ॥ ❀ ॥ यह २० बोले जीव मरके नरक गतिमें जावै ॥ ठे दन जेदनादि महा दुःख जोगवै ॥ ❀ ॥ (इस) आयु कर्मकी उत्कृष्ट ३३ सागरोपम स्थिति ॥ (इसका) स्वप्नाव खोडै समान है (जैसें) खोमैमें पुरुषका पांव दिया ऊँचा निकल सके नहीं (इसीतरै) अपना वध किया आयु कर्म विन जोगव्यां बूटे नहीं ॥ (तथा) एति आगच्छति प्रतिबंधक तां स्वकृत कर्म वध नरकादि कुगति निक्रमितु मनसो जंतो रियायु ॥१॥ (अथवा) आसमंता देती गच्छति जवा ज्वांतर संक्रांतौ विपाकोदय मियायु ॥ (इति समासः) ॥ ❀ ॥ इति ५ आयु कर्मका स्वरूप कहा ॥५॥

॥ ❀ ॥ अब ६ नाम कर्मका स्वरूप लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (इसकी) उत्तर प्रकृति मूल ४२ ॥ जेदांतरै ६७ ॥ तथा ए३ ॥ विस्तारे १०३ ॥ ❀ ॥ अब १०३ प्रकृति नाम मात्र लिखते है ॥ ❀ ॥ (गति ४,) नरकगति १ । तिर्यंचगति २ । मनुष्यगति ३ । देवगति ४ । (इंद्रिय ५)

एकेंद्री जात ५ । वे इंद्री ६ । ते इंद्री ७ । चौ इंद्री ८ । पंचेंद्री ९ । (शरीर ५) औदारिक १० । वेक्रिय ११ । आहारक १२ । तेजस १३ । कर्मण १४ ॥ (अंगोपांग ३) औदारिक अंगोपांग १५ । वेक्रिय अंगोपांग १६ । आहारक अंगोपांग १७ । (बंधन १५) औदारिक २ बंधन १८ । औदारिक तेजस बंधन १९ । ऊदारिक कर्मण बंधन २० । औदारिक तेजस कर्मण बंधन २१ । वेक्रिय वेक्रिय बंधन २२ । वेक्रिय तेजस बंधन २३ । वेक्रिय कर्मण बंधन २४ । वेक्रिय तेजस कर्मण बंधन २५ । आहारक २ बंधन २६ । आहारक तेजस बंधन २७ । आहारक कर्मण बंधन २८ । आहारक तेजस कर्मण बंधन २९ । तेजस २ बंधन ३० । कर्मण २ बंधन ३१ । तेजस कर्मण बंधन ३२ ॥ (संघातन ५) ॥ औदारिक ३३ । वेक्रिय सं० ३४ । आहारक सं० ३५ । तेजस सं० ३६ । कर्मण संघातन ३७ ॥ (संघयण ६) वज्र रिपन्न नाराच ३८ । कृपन्न नाराच ३९ । नाराच ४० । अर्द्ध नाराच ४१ । कीलका ४२ । ठेवघो संघयण ४३ । (संस्थान ६) । सम चौरस ४४ । निघोघ ४५ । सादि ४६ । वामन ४७ । कुब्ज ४८ । झुंमक संस्थान ४९ ॥ (वर्ण ५) कृष्ण ५० । नील ५१ । पीत ५२ । रक्त ५३ । स्वेत ५४ । (गंध २) सुरजि गंध ५५ । डुरजि गंध ५६ ॥ (रस ५) तीक्ष्ण ५७ । कटुक ५८ । कषायलो ५९ । खटो ६० । मधुररस ६१ ॥ (फरस ८) जारी ६२ । हलको ६३ । सुंहालो ६४ । खरखरो ६५ । शीत ६६ । उष्ण ६७ । लूखो ६८ । सचिकण ६९ । (आनुपूर्वी ४) देवा नु० ७० । मनुष्या नु० ७१ । तिर्यचा नु० ७२ । नरकानुपूर्वी ७३ ॥ (व्रसादि १० नामः) व्रसपणो पावै ७४ । वादर पणो ७५ । पर्यातिपणो ७६ । प्रत्येक पणो ७७ । धिरपणो ७८ । शुन्नपणो ७९ । सौजाग्यपणो ८० । आदेयपणो ८१ । जसपणो ८२ । सुस्वरपणो पावै ८३ ॥ (धावरदि १० नामः) धावर पणो पावै ८४ । सुद्धमपणो ८५ । अपर्यातिपणो ८६ । साधारण पणो ८७ । अधिर पणो ८८ । अशुन्न पणो ८९ । दौजाग्य पणो ९० । दुस्वर पणो ९१ । अनादर पणो ९२ । कुजसपणो ९३ ॥ (तथा) पराघात नामकर्म ९४ । उद्योत नाम० ९५ । आतप नाम० ९६ । ऊसास नाम० ९७ । अगुरु लघु नाम० ९८ । तीर्थ

कर नाम ० एए । निर्माण नाम ० १ ० ० उपघात नाम कर्म १ ० १ । शुभ विहायो  
गति १ ० २ । असुभ विहायोगति १ ० ३ ॥ ❀ ॥ यह नामकर्मकी उत्तर प्र  
कृति १ ० ३ कही ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ३ प्रकारे जीव उत्तम नामकर्म वद्ध करे ( तद्यथा ) श्री  
जिन धर्ममें रक्त होय १ । दयावंत दानवंत होय २ । मुक्तिकी अजिला  
खा करे ३ ॥ ❀ ॥ अथ ८ प्रकारे जीव मध्यम नाम कर्म वद्ध करै ( सो लि  
खते हैं ) ॥ ❀ ॥ मिथ्यात्व उपदेश करै १ । कु धर्म मार्ग ग्रहण करै २ ।  
दान आप नही देवै ( तथा ) दूसरैकों दान देतां मनाकरै ३ । धर्म स्थानक  
गिरावे हानि करै ४ । कठोर असत्य वचन बोलै ५ । महा पापारंभ करै  
६ । पर निंदा करै ७ । सबजीव पर द्रोह धारन करै ८ ॥ ❀ ॥ यह आठ प्र  
कारै नीच नामकर्म बांधै ॥ ❀ ॥ ( इस ) नामकर्मकी १ ० कोमाकोमी साग  
रोपम उत्कृष्ट स्थिति ॥ संसारमें जमावे ॥ ( यह कर्म ) चित्रकार समान है ( जे  
सैं ) चित्रकार अनेक प्रकारका, अंठा, बुरा, चित्रवनावे ( तेसैं ) नामकर्म  
के उदय, अंठा, बुरा, अनेक नाम उपार्जन करै ॥ ❀ ॥ ( तथा ) नामय  
ति गत्यादि पर्यायानुजवनं प्रति प्रवणयति जीव मिति नाम । ( इति समासः )  
इति नामकर्म स्वरूप कहा ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अब ७ गोत्रकर्मका स्वरूप कहते हैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गोत्र कर्मकी उत्तर प्रकृति १ ॥ उच्च गोत्र १ । नीच गोत्र  
१ ॥ ❀ ॥ प्रथम १६ प्रकारे जीव उच्च गोत्र वद्ध करै ( सो कहते हैं )  
समकितवंत १ । विनयवंत २ । शीलवंत ३ । अदत्त अग्राही ४ । यथा  
शक्ति दान देवै ५ । निरंतर संबेगगुण, सरल परिणाम, धारन करै ६ ।  
तीर्थकरकी जक्ति करै ७ । आचार्य, उपाध्याय, साधुकी, जक्ती करै ८ ।  
ब्रह्मश्रुतकी जक्ति करै ९ । जिनागमकी जक्ति करै १० । साधुओंकी वे  
यावन्न करै ११ । गुरु साधुका दास होके रहै १२ । अनेकांत जिनधर्म  
आदरै १३ । उन्नयटक प्रतिक्रमण करै १४ । यथाशक्ति पापकर्म दूर करै  
१५ । साधुमी वात्सल्य करै १६ ॥ ❀ ॥ यह १६ प्रकारे जीव तीर्थकरा  
दि उच्च गोत्र पावै ॥ ❀ ॥ लोकमें मान्यनीक, पुज्यनीक, ऊँवै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अब ५ प्रकारे जीव नीच गोत्र कर्म वद्ध करै सो ( कहते हैं )

तिव्र क्रोधादि कषाय धारके, परगुण न जाएँ १ । परकी निंदा करै । अव  
गुण प्रकासै २ । लोककी चामी चुगली करै ३ । अणसुनीकों सुनीवात  
कहै । अण देखीकों देखी कहै । लूगी शाख जरै ४ ॥ जीव हिंसादि महा  
पाप कर्म करै ५ ॥ ॥ यह ५ प्रकारै जीव । स्नेह, कसाई, इत्यादिक नीच  
गोत्र बांधै । लोकमें निंदनीक दुगंठा योग्य ऊँचै ॥ ॥ (इस) गोत्र कर्मकी  
३० कोमा कोडि सागरोपम स्थिति ॥ (यह) गोत्र कर्म कुंजकार समान है  
(जैसैं) कुंजकार मदीका जाजन मोटा ठोठा अनेक प्रकारका अपनी  
बुद्धी माफक बनावै (तैसैं) गोत्र कर्म उदय । उच्च, नीच, भेदांतर अनेक  
गोत्र पावै ॥ (तथा) गूयते शब्देते उच्चा वचैः शब्दैर्यत्तत्तु गोत्रं ॥ ॥  
इति गोत्र कर्मका स्वरूप कहा ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ ८ अंतराय कर्मका स्वरूप कहते हैं ॥ ॥

॥ ॥ अंतराय कर्मकी उत्तर प्रकृति ५ ॥ दानांतराय १ । लाजांतराय  
२ । भोगांतराय ३ । उपभोगांतराय ४ । वीर्यांतराय ५ ॥ ॥

॥ ॥ अथ १८ प्रकारे जीव अंतराय कर्म बद्ध करै ॥ ॥

॥ ॥ करुणा दया रहित ऊँचै १ । दीन दयामणा जीवोंके अंतराय  
देवै २ । असमर्थ जीवोंपर कोप करै ३ । अनेकांति गुरूकों वंदन पूजन  
निषेध करै ४ । तपस्वीकों नमस्कार न करै (तथा) वंदन, पूजन, नि  
षेध करै ५ । जिन भक्ति निषेध करै ६ । जिन सिद्धांत उत्थापै ७ । जिन  
धर्म धारतां विधन करै ८ । सिद्धांतकी अवहीलना आशातना करै ९ । सु  
त्रार्थ भ्रणतां अंतराय करै १० । दान न देवै, (तथा) औरको देतां निषेध  
करै ११ । अपना धर्मके मार्ग चालतां अंतराय करै १२ । परमार्थ कहतां  
हासीकरै १३ । विपरीत उपदेश करै १४ । असत्यवचन बोलै १५ । अदत्त वस्तु  
ग्रहण करै १६ । कोई जीवके । दान, लाज, भोग, उपभोग, वीर्यमें, अंतराय  
करै १७ । कोई जीवका गुण विभावै । दूषण प्रकास करै १८ ॥ ॥ यह १८  
प्रकारसैं जीव अंतराय कर्म बांधै । संसार दलितद्रताका महा डुख भोगवै ॥  
॥ (इस) अंतराय कर्मकी तीस कोमाकोडि सागरोपम स्थिति (यह)  
कर्म जंमारी समान है (जैसैं) राजारै ऊँकमसैं जंमारी देवे जब मिलै.

पूजत । सज्ज गुण धार सुदेव नमो । जिन गुण ग्राहक श्रीवर पावत  
मुक्ति मोहन जयकार नमो ॥ ३ ॥ ॐ ॥ इति आदि जिनस्तुतिः ॥ ॐ ॥  
इत्युपाध्याय श्री लक्ष्मी प्रधान गणिः । तत्सिष्य । पंमित मुक्तिकमल मुनिः  
वज्र आचार ग्रंथात् संग्रहीता । विरचिता । आचार रत्नाकर दीपका ॥ सं ० ॥

## ॥ ॐ ॥ अथ प्रथम गर्भाधान संस्कार विधि लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( यथा ) संजाते पंचमे मासे । गर्भाधाना दनंतरं । गर्भाधान  
विधि कार्यो । गुरुभिः गृह मेधिभिः ॥ ॐ ॥ गर्भाधानके अनंतर पांचमें मा  
से । सुजतिथी, चंद्रवलादि, सुज मज्जत देखके । पूर्वोक्त गुण धारक, य  
हस्थ देशविरति कुलगुरु, स्नान करै । अन्ना सपेद वस्त्र पहरे । नवकार  
मंत्रसें पवत्रित करके चौटीके गांठ देवे । केसर चंदनको तिलक करै । सु  
वर्ण मुद्रिका अंगुलीमें धारन करै । पंच परमेष्ठी मंत्रसें पवत्रित करके, पं  
चग्रंथी युक्त, मोली मात्रको कंकण बनाके, दहिणें हाथमें लेवे ॥ शी  
लव्रत ( तथा ) निवी, एकासण आदिक, व्रत धारन करै ॥ इसी तरै अं  
ग पवत्रित ( तथा ) मंगल कार्य करके । गृहस्थीके घरे आवै ( तदा ) ग  
र्जणी स्त्री ( तथा ) उसका पति, नख सिखांत सुध जलसें स्नान करै । अ  
न्ना सुची वस्त्र पहिरै । अपना वर्णानुसार, जिनो पवीत, उत्तरासण धारन  
किया ऊवा पवित्र करै । केसरा दिकका तिलक करै ( इसी तरै ) अंग सुध  
करके । गुरुके पास आवै ॥ ( तव ) गुरु, आदिजिन की प्रतिमा ( तथा ) नव  
पद गद्दा स्थापन करके । विधि संयुक्त दहत् स्नात्र पूजा करावै । ( पीठे )  
स्नात्र जल । जूदा ज्ञाजन में स्थापन करके । अष्टप्रकारी पूजा करावै ।  
( पूजाते ) गुरु, स्नात्र जल लेके । गर्जणी स्त्रीके सिंचन करै ( तदनंतर ) सर्व  
जल स्थानकका जल में, सहस्र षष्ठी चूरण मिलाके, शांतिदेवीके मंत्रसें  
७ वेरमंत्रै ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

## ॥ ॐ ॥ अथ शांतिदेवीका मंत्र लिख्यते ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ नमो निश्चित वचसे । नगवते । पूजा मर्हते । जयवते । यश  
श्विने । यतिस्वामिने । सकल महासंपत्ति समन्विताय । त्रैलोक्य पूजिताय ।  
सर्व सुरासुर स्वामी पूजिताय । अजिताय । भुवन जन पाल नोदयताय । स

वैं डुरितौघ नाशन कराय । सर्वा शिव प्रशमनाय । डुष्टग्रह नूत पिशाच ।  
 शाकनीनां प्रमथनाय । तस्येति नाममंत्र स्मरण तुष्टा जगवती । तत्पद न  
 क्त्या विजया देवी । ॐ ह्रीं नमस्ते जगवति विजये । जय२ परे । परापरे । अ  
 जिते । अपराजिते । जयावहे । सर्व संघस्य भद्र कल्याण मंगलं प्रददे । साधू  
 नां शिव तुष्टि पुष्टि प्रदे जय२ । ज्ञानानां कृतसिद्धे । सत्त्वानां निर्द्वैति निर्वाण  
 जननी । अन्नय प्रदे । स्वस्ति प्रदे । भक्तानां जंतूनां । शुभ प्रदानाय नि  
 स्योद्यते । सम्यग्दृष्टीनां । धृति रति मति बुद्धि प्रदे । जिन शासन रतानां ।  
 शांति प्रणतानां जनानां । श्रीशंपत्की त्रिं यशो वर्धनी । शलिला द्रक्ष २ ।  
 अनिलाद्रक्ष २ । विपात् रक्ष २ । विपधरे ज्यो रक्ष २ । राक्षसे ज्यो रक्ष २ ।  
 मारिज्यो रक्ष २ । इतिज्यो रक्ष २ । स्वापदे ज्यो रक्ष २ । शिवं कुरु २ ।  
 शांतिं कुरु २ । तुष्टिं कुरु २ । पुष्टिं कुरु २ । स्वस्तिं कुरु २ ॥ जगवति गु  
 णवति । जनानां शिव, शांति, तुष्टि, पुष्टि, स्वस्तिं कुरु २ । ॐ नमो न  
 मो हूं ह्रीं यः क्लृं फट् स्वाहा ॥ ॐ ॥ (इस मंत्रसें) सर्व स्थानकके जल  
 कों ७ वेर मंत्रके, पुत्रवती सधवास्त्रीके हाथमें देवै । (तव) सधवा स्त्रियां  
 मंगल गीत गावै । गर्जवंतीकों स्नान करावै । केशरादिक सुगंध वस्तुका  
 विलेपन करै । अष्टा वस्त्र आभूषण पहिरावै (पीठे) पतिकेसाथ वस्त्रांचलसें  
 गांठ बांधके, गुरुके सन्मुख आवै । नमोस्तु २ कहके सुज्ञासण पर बैठै ।  
 पतिके वाम पासे स्त्री बैठै । स्वस्तिक करै ॥ (तव) गुरु ग्रंथि योजन मंत्र  
 पढ़ै ॥ ॐ ॥ (ग्रंथि योजन मंत्रो यथा) ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ॐ अर्हं स्वस्ति संसार संबंधः । वक्ष्योः प्रतिभार्ययोः । युवयोर  
 वियोगोस्तु । नववासांत माशिषा ॥ १ ॐ ॥ यह मंत्र ७ वेर पढ़ै ॥ एक  
 विवाहको वर्जके, सर्व स्थानक (इसीमंत्रसें) स्त्री, नरतारके, वस्त्रमें गांठबांधे  
 (पीठे) गुरु, पद्मासणसें बैठे थका । स्वर्ण, रुप्य, पात्रमें जिन स्नात्र जल  
 ( तथा ) सर्व स्थानकको जल लेके । कुशाग्रसें, आर्य वेदमंत्रसें मंत्रके । गर्ज  
 वतीप्रते सिंचन करै ॥ ॐ ॥— (आर्य वेद मंत्रो यथा) ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ॐ अर्हं जीवोसि । जीव तत्त्व मसि । प्राण्यसि । जन्म्यसि ।  
 जन्मवानसी । संसारादी संसरन्नसी । कर्मवानसी । कर्म वक्षोसी । नव त्रां  
 तोसी । नव विभ्रमिपुरसी । पूर्ण पिंमोसी । जातोपांगोसी । जायमानो ।

मोहनलाल मुनिः । आचार ग्रंथा त्संग्रही कृते । आचार रत्नाकर प्रथम प्रकाशे । द्वितीय पुंसवन संस्कार उदयः ॥ १ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ तृतीय जन्मसंस्कार विधि लिपि ॥ ❀ ॥

॥❀॥ जन्म कालके संपूर्ण मास दिनके विषे । सूतिका घरके नजीक घरमें ( जहां ) स्त्री, बाल, पशु, प्रचार रहित । एकांत स्थानमें । पंच पर मेंष्टी जाप संयुक्त रहै ॥ घडीकों देखता रहै । ( जिस वखत ) बालकका जन्म होय ( जब ) गुरु, जोतषी, लग्न ग्रहा दिकका प्रमाण सुधतासे माता पिता दिकके सन्मुष प्रकट करै । ( तब ) माता पिता दिक नाल छे दनसें पहले । गुरु, जोतषीकों, यथाशक्ती वस्त्र आभूषणादिक दान देवै ( पीठे ) नाल छेदन करै ( जब गुरु ) बालकके माता पितादिक कुल बालांकों ( इस माफक ) आशीर्वाद देवै ( सो लिखैहै ) ॥ ❀ ॥ नै अर्जु । कुलंबो वर्धतां संतु । शतशः पुत्र प्रपोत्राः । अक्षीण मस्त्वायु र्धन यशः सुखंच । अर्जुनं ॥ ❀ ॥ ( इति वेदाशी ॥ ❀ ॥ ( तथा वृत्तं ) आदित्यो, रजनी पति, क्षितिसुतः, सौम्य, स्तथा वाक्पतिः । शुक्रः, सूर्य सुतो, विधुं, तुद इव, श्रेष्ठाः ग्रहाः पातुवः । अश्विन्यादिक मंमलं तद परो मेषादि राशि क्रमः । कल्याणं पृथुकस्य वृद्धि मधिकी संतान मप्यस्यचः ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( पुनः ) यो मेरु श्रृंगे त्रिदशादि नाथै । दैत्यादि नाथै स्मः परिहृदेश्व । कुंजा मृतै स्तं स्नपित स्सदैव । आद्यो विदध्यात् कुल वर्धनंच ॥ १ ॥ ❀ ॥ ऐसा आशीर्वाद देवै ॥ ( पीठे ) गुरु अपने घरे जाके । सूतिका कर्म करणें वाली कुल वृद्ध स्त्रीयां कूं । बालकके स्नान कराणेंके अर्थ जलमंत्र के देवै ॥ ❀ ॥ ( जलमंत्रो यथा ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नै अर्जु । नमो ह्रस्तिष्ठा चार्यो पाध्याय सर्व साधुच्यः ॥ ( वृत्तं ) ॥ क्षीरोदनीरैः किल जन्मकाले । यै मेरुश्रृंगे स्नपितो जिनैन्द्रः । स्नानोदकं तस्य जवन्विदंच । शिशो र्महा मंगल पुन्य वृद्धयै ॥ १ ॥ ❀ ॥ इस मंत्रसें ७ बेर जलमंत्रै । इस जलकों लेजाके कुल वृद्धा स्नान करावै । अपने कुलाचार रीति नालछेदन करै ( पीठे ) गुरु अपने स्थानक रहा थका । चंदन, रक्त चंदन, विद्व काष्ठादिक, जलाके जस्मी करै ॥ ( उस ) ज

स्मीमें स्वेत सरसुं, लवण, मिलाके पोटली करै (और) लोह खं  
रु, रक्तचंदन खं, वरुण मूल खं, कोमी, सहित । रुग्ण सूत्रसें गलैमें  
बांधनें लायक मोरा करके । रक्षा मंत्रसें मंत्रै ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ रक्षानिमंत्रण मंत्रः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अंबे । जगदंबे । शुभे । शुभं करे । अमुं बालं ।  
भूतेभ्यो रक्ष १ । ग्रहेभ्यो रक्ष १ । पिशाचेभ्योरक्ष १ । वैतालेभ्योरक्ष १ ।  
शाकनीभ्योरक्ष १ । गगन देवीभ्योरक्ष १ । दृष्टि दोषेभ्योरक्ष १ । जयंकुरु १  
तुष्टिकुरु १ । पुष्टिकुरु १ । कुल दृष्टिकुरु १ । श्रीं ह्रीं ॐ भगवती श्रीं अं  
विके नमः ॥ ॐ ॥ (इस मंत्रसें) ७ बेर पूर्वोक्त राखनी मंत्रके कुलदृष्टा स  
धवाके हाथमें देवै । कुलदृष्टा ले जाके बालकके गलैमें बांधे ॥ (कदा  
चित्) अश्लेषा, जेष्ठा, मघा, मूल, गंमांत, जद्राके विषे । बालकका  
जन्म होय (तो) बालकका पिताकों (तथा) कुल बालाकों  
शोक, संताप, दालीद्र कारक होय (इस वास्ते) पिता (तथा) कुल  
में वमैरा होय (सो) बालकका नाम निकाले (जहांतक) मुख नहिं दे  
खै (और) शान्तिकर्म पूजा पाठ करावै ॥ विस्तारके जयसें नक्षत्रादिक शां  
ति प्रक्रम विधि इहां नलिखी है ॥ सो आचार दिनकरसें (तथा) गुरुके  
मुखसे जाण लैनी ॥ ॐ ॥ इत्यु पाध्याय श्रीलक्ष्मी प्रधान गणिः । तत्सिष्य ।  
पं । मुक्ति कमल मुनिः । आचार ग्रंथा तस्यही कृते । आचार रत्नाकर प्रथम  
प्रकाशे । तृतीय जन्म संस्कारोदयः संपूर्णम् ॥ ॐ ॥ ३ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ ४ सूर्य चंद्र दर्शन संस्कार विधि लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जन्मसें तीसरे दिवस, कुलगुरु, सूतिकाघरके नजीक घरके  
त्रिषे (प्रथम) जिन प्रतिमा स्थापन पूजन करके । जिन प्रतिमा सन्मुख स्वर्ण  
ताम्र मई (वा) रक्तचंदन मयी सूर्यकी प्रतिमा स्थापन करै । (पीठे)  
अष्ट द्रव्यसें पूजन करै ॥ ॐ ॥ (पूजन मंत्रोच्यते) ॥ ॐ ॥ ॐ घृणि १  
नमः ॥ श्री सूर्याय सहस्रकिरणाय । रत्ना देवी कांताय । वेदगर्भाय । यम  
यमुना जनकाय । जगत्कर्म साक्षिणे । पुण्य कर्म प्रभावकाय । पूर्वदिग्धी  
शाय । स्फटिकोज्ज्वलाय । रक्तवस्त्राय । कमल हस्ताय । सप्ताश्व रथ वा



हनाय । श्री सूर्यः सायुधः । सवाहनः । स परिच्छदः । इह जन्म महोत्तवे  
आगच्छ १ । इदमर्घ्यं, पादं, वलिं, चरुं, आचमनीयं गृहाण १ । सन्निहितो  
न्नव १ । स्वाहाः ॥ जलं गृहाण १ । गंधं ० । पुष्पं ० । अक्षतान् ० । फलानि ० ।  
मुद्रां ० । धूपं ० । दीपं ० । नैवेद्यं ० । सर्वोपचारान् ० । शान्तिकुरु १ । तुष्टिं  
कुरु १ । रुद्धिं ० । वृद्धिं ० । सर्वं समीहितं देहि १ स्वाहा ॥ ॐ ॥ इसी तरे  
सूर्यकी पूजा करके । माता पिता, पुत्रकों हाथमें लेके । सूर्यका दर्शन करावै  
( तव ) गुरु सूर्य मंत्र पढ़ै ॥ ॐ ॥ ( सूर्यमंत्रोच्यथा ) ॥ ॐ नमो अर्जुन सूर्यो  
सि । दिनकरोसि । सहस्र किरणोसि । विज्ञाव सुरसि । तमोपहोसि । प्रियं  
करोसि । शिवं करोसि । जगच्चक्षुरसि । सुरवेष्टितोसि । मुनिवेष्टितोसि ।  
वितत विमानोसि । तेजमयोसि । अरुण सारथी रसि । मार्त्तमोसि । वाद  
शात्मासि । चक्र बोधवोसि । नमस्ते भगवन् । प्रसीदास्य कुलस्य । तुष्टिं,  
पुष्टिं, प्रमोदं कुरु १ । शान्तिं हितोन्नव । अर्जुन नमो ॥ ॐ ॥ इस मंत्रको प  
ढ़के । बालकको सूर्यका दर्शन करावै ( पीठे ) माता पुत्र गुरुको नमस्कार  
करै ( तव ) गुरु, सपुत्र माताको आशीर्वाद देवै ॥ ( आशीर्वाद श्लोकः )  
सर्व सुरासुर वन्द्यः । कारयिता सर्वं धर्मं कार्याणां । भूयाच्च जगच्चक्षुः ।  
मंगलस्तसपुत्रदः ॥ १ ॥ ॐ ॥ (इहां) सूतकमें गुरुदक्षिणा नलेवै । ( पीठे )  
गुरु जिनप्रतिमा स्थापन ( तथा ) सूर्य प्रतिमा स्थापन विसर्जन करै ॥  
सूतकसेती माता पिताको प्रतिमा ठूणें देवें नही ॥ (इति सूर्यपूजाधिकारः)  
॥ ॐ ॥ ( पीठे ) उसीदिन संध्यासमें । जिनप्रतिमा स्थापन, देववन्दन कर  
के । प्रतिमासन्मुख, स्फटिक, रूप्य ( वा ) चंदनमयी चंद्रमूर्तिस्थापन  
करै । ( पीठे ) अष्टद्रव्यसें चंद्र पूजाकरै ॥ ॐ ॥ ( चंद्र मंत्रोच्यथा )  
॥ ॐ ॥ नमो चंद्राय । शंभुशेखराय । पौरुष कला परिपूर्णाय । ताः  
रागण धीशाय । श्वेत दशवाजि वाहनाय । सुधाकुंभ हस्ताय । श्रीचंद्रः सा  
युधः । सवाहनः । स परिच्छदः । इह जन्म महोत्तवे आगच्छ १ । इदं अ  
र्घ्यं, पादं, वलिं, चरुं, आचमनीयं, गृहाण १ । सन्निहितोन्नव १ स्वाहा ॥  
जलं गृहाण १ ॥ सर्वं पूर्ववत् ॥ ॐ ॥ इसमंत्रसेती अष्टद्रव्यसें पूजा गुरु  
करावै ॥ ( पीठे ) चंद्रोदय जुवां । मात्रापुत्रको चंद्रमाका दर्शन करावै ।  
॥ (तव) गुरु चंद्र मंत्र पढ़ै (चंद्रमंत्रोच्यथा) ॥ नमो अर्जुन चंद्रोसि । निशाकरोसि ।

सुधाकरोसि । चंद्रमाअसि । गृहपति रसि । नक्षत्रपति रसि । कौमुदी प  
ति रसि । निशापति रसि । मदना मित्र रसि । जगजीवन मसि । जैवात्रिको  
सि । क्षीरसागरोद्भवोसि । स्वेतवाहनोसि । राजासि । राज राजोसि । औ  
पधी गर्जोसि । बंधोसि । पूज्योसि । नमस्ते जगवन् । अस्य कुलस्य क  
र्त्तिं कुरु १ । वृद्धिं कुरु १ । तुष्टिं ० । पुष्टिं ० । जयं ० । विजयं ० । कुरु १  
चंद्रंकुरु १ । वृद्धिंकुरु १ । प्रमोदं ० । श्री शशांकायनमः । अर्जुं नै  
॥ ॥ (इस) मंत्रको पढके । स पुत्र माताको चंद्रदर्शन करावै । ( पीठे )  
माता पुत्र, कुलगुरुको, नमोस्तु १ कहके । नमस्कारकरै ॥ ( तव ) गुरु  
आशीर्वाददेवै ॥ ( आशीर्वादवृत्तं ) ॥ सर्वोपधी मिश्र मरीचि जालं । सर्वा  
पदां संहरण प्रवीणः । करोतु वृद्धिं सकलेपि वंसे । युष्माक मिंडु सततं  
प्रसन्नः ॥ १ ॥ ॥ ( पीठे ) गुरु, जिन प्रतिमा, चंद्र प्रतिमा, विसर्जन  
करै ॥ ( इतना विशेष है ) जो रुग्णपक्षकी १४ ( तथा ) अमावस हो  
य ( तथा ) बढ़ल होय । चंद्रोदय उसरात्रको मालूम न होय ( तो ) पूज  
न तो तीसरे दिवस संध्याको हीज करावै ( और ) चंद्र दर्शन, दूसरे दिन चं  
द्रोदय होय जब करावै ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ इत्यु पाध्याय श्री लक्ष्मी प्रधानगणिः । तत्सिष्य । पं । मोहनलाल  
मुनिः । आचार ग्रं था त्संग्रही कृते । आचार रत्नाकर प्रथम प्रकाशे । चतुर्थ  
सूर्येण्ड संस्कारोदयः संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ क्षीराशन पंचम संस्कार विधिः लि ॥ ॥ ॥

॥ ॥ जन्मसे तीसरे दिवस । चंद्र सूर्यका दर्शन कराके ( पीठे ) वा  
लकको स्तन पान संस्कार विधि करावै ( पूर्वोक्त ) गुण वेप धारी कुल गुरु  
गंगादिक सुख जलकूं १०८ वेर मंत्रके । बालककी माता का स्तन धोवावै  
( अमृत मंत्रो यथा ) ॥ नै अमृते । अमृ तो ज्वे । अमृत वर्षणी । अमृत आवय  
१ स्वाहा ॥ ॥ ( इस ) मंत्रसे १०८ वेर जलमंत्रके स्तन धोवावै ( पीठे )  
माता । अपनो जीमणो ( वा ) मावो, जो स्वर बहतो होय । सो स्तन बाल  
कको पहले पिलावै । बालक दूध पीते । गुरु, इसमाफक आशीर्वाद देवै  
( यथा जैन वेद मंत्रः ) ॥ नै अर्जुं जीवोसि । आत्मासि । गुरवोसि । शब्दो

सि । रसज्ञोसि । गंधज्ञोसि । स्पर्शज्ञोसि । सदाहारोसि । कृता हारोसि  
अन्यस्ताहारोसि । कावलिका हारोसि । लोमा हारोसि । औदारक शरीरोसि  
अनेनाहारेण नवांगं वर्द्धतां । वलं वर्द्धतां । तेजो वर्द्धतां । पाटवं वर्द्धतां । सौ  
ष्टवं वर्द्धतां । पूर्णायुः जव । अर्जुनै ॥ ॐ ॥ इस मंत्रसें ३ बेर आशीर्वाद देवै  
॥ ॐ ॥ इत्यु पाध्याय श्री० ( पंचम ) क्षीरासन संस्कारोदयः संपूर्ण ॥ ॐ ॥

## ॥ ॐ ॥ अथ षष्ठी संस्कार विधिः लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जन्मसें ठठे दिवस संध्याके समय ( पूर्वोक्त ) गुण वेष धारी गुरु ।  
प्रसूतिका घरमें आके । षष्ठी पूजन विधि प्रारंभ करावै । षष्ठी पूजनमें सूत  
क न गिणें ॥ ॐ ॥ ( यडुक्त ) ॥ ॐ ॥ स्वकुले तीर्थ मध्येच । तथा वश्ये बला  
दपि । षष्ठी पूजन कालेच । गणये नैव सूतकं ॥ १ ॥ ( इति वचनात् ) ॥  
( प्रथम ) सधवा स्त्रीके हाथसें । सूतिका घरमें । गोबर मिट्टीका चौका दिरवावै ।  
सपेद खड़ी मिट्टीसें पोतावै । अंगणमें चोखूणो मंजल करै । सपेद पोती  
ऊई नीतके ऊपर । केसर, चंदन, हिंगलू, आदि सुगंधी द्रव्यसें । सूती बैठी,  
ऊनी, तीन प्रकारे । अष्ट माताका स्वरूप आलेखन करै ॥ ( पीठै ) सधवा स्त्रियां  
सें मंगल गीत गवायके । जूदे ३ मंत्रसें ८ देवीकी । अष्ट द्रव्यसें पूजा करावै

॥ ॐ ॥ नैऋती नमो जगवती ब्रह्माणी । वीणा पुस्तक पद्माक्ष सूत्र करै  
हंस वाहने । श्वेत वर्णै । इह षष्ठी पूजने आगच्छ १ स्वाहाः ॥ १ ॥ इस  
मंत्रकों ३ बेर पढके । पुष्पोसें आकान करै ॥ ( फेर ) इसी मंत्रकों ३ बेर  
आगच्छ ३ के स्थानक ( सन्नहितोन्नव १ ) कहके । फूलोंसें सन्निधी करण  
करै ॥ इति सन्निधी करण मंत्रः ॥ ॐ ॥ ( तथा ) इसी मंत्रकूं ३ बेर, आ  
गच्छ १ के स्थानक ( षष्ठी पूजने तिष्ठ १ ) स्वाहा ॥ इति देवी स्थापन मंत्रः  
( पीठै ) इसी मंत्रकों । एकेक बेर पढके । जलचंदनादि एकेक द्रव्य चढावै । जि  
सका नाम उच्चारण करै ( यथा ) गंधं गृह्ण १ । पुष्पं गृह्ण १ । धूपं गृह्ण  
१ । दीपं गृह्ण १ । अक्षतान् गृह्ण १ । नैवेद्यं गृह्ण १ । फलं गृह्ण १ ।  
जलं गृह्ण १ ॥ ( इसीतरै ) आठुं माताकी पूजन विधि करावै ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ नैऋती नमो जगवती माहेश्वरी । त्रिशूल, पिनाक, कपाल, खट  
वांग करे । चंद्रार्ध ललाटे । गजचर्मामृतै । शैशाहि वहे । कांची कलापे ।

त्रिनयने । वृषजवाहने । स्वेतवर्णे । इहपष्ठी पूजने आगच्छ १ ( वा ) संज्ञि  
हिता नव १ ॥ तिष्ठ १ ॥ गंधं गृह्ण १ ( इत्यादि पूर्ववत् ) ॥ १ ॥ ॥ ॥

। ( तथा ) । ॐ ह्रीं नमो जगवती कौमारी । प्रणुपुखि, शूल, शक्तिधरे ।  
वरदा । अन्नयंकरे । मयूरवाहने । गौरवर्णे । इहपष्ठी पूजने आगच्छ १ ।  
( शेषपूर्ववत् ) ३ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॐ ह्रीं नमो जगवती वैश्रवी । शंख, चक्र, गदा, सारंग, खड्ग करे ।  
गरुडवाहने । कल्लवर्णे । इहपष्ठी पूजने आगच्छ १ ( शेषपूर्ववत् ) ॥ ४ ॥

॥ ॥ ॐ ह्रीं नमो जगवती वाराही । वाराहमुही । चक्र खड्ग, हस्ते ।  
मेघवाहने । श्यामवर्णे । इहपष्ठी पूजने आगच्छ २ ॥ ( शेषपूर्ववत् ) ॥ ५ ॥

॥ ॥ ॐ ह्रीं नमो जगवती इंद्राणी । सहस्र नेत्राय । वज्रहस्ते । सर्वा  
न्नरण भूषिते । गजवाहने । सुरांगना कोटि वेष्टिते । कांचनवर्णे । इह प  
ष्ठी पूजने आगच्छ १ । ( शेषपूर्ववत् ) ६ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॐ ह्रीं नमो जगवती चामुन्दी । शिरा, जाल, कराल शरीरे । प्रक  
टित दशने । ज्वाला कुंतले । रक्तत्रिनेत्रे । शूल कपाल खड्गे । प्रेत केश  
करे । प्रेतवाहने । धूसरवर्णे । इहपष्ठी पूजने आगच्छ १ ॥ ( शेषपूर्ववत् ) ७ ॥

॥ ॥ ॐ ह्रीं नमो जगवती त्रिपुरे । पद्मपुस्तके । वरदान्नयकरे । सिंह  
वाहने । स्वेतवर्णे । इह पष्ठी पूजने आगच्छ १ । ( शेषपूर्ववत् ) ८ ॥ ॥ ॥

( इसी तरैसँ ) सूती, वैठी, ऊनी, तीनुं प्रकार ८ देवी स्थापनकी पूजा  
करावै ( पीठे श्लोक पढ़ै ) ब्रह्माद्या मातरोप्यष्टौ । स्वस्वास्त्र बल वाहना  
पष्ठी संपूजना त्पूर्व । कल्याणं ददतांशिशोः ॥ १ ॥ ( तदनंतर ) मातृ स्थाप  
न अग्र भूमीमें । केसर चंदनादिक सुगंधी द्रव्यसँ । पष्ठी माताको स्थापन  
करै ॥ ( तिस पष्ठीकी ) दधि, चंदन, अक्षत, दोव करके पूजा करावै । ( पीठे )  
गुरु पुष्प हाथमें लेके । पष्ठी मंत्र पढ़ै ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॐ ह्रीं पष्टि आम्न बनासीनि । कदंब वन बिहारे । पुत्रवय युते ।  
नरवाहने । श्यामांगी । इह आगच्छ २ स्वाहा ॥ ॥ इसी मंत्रसँ अष्ट माता  
के पूजन विधि तुल्य । अष्टद्रव्यसँ पूजा करावै ॥ ( पीठे ) गुरु अपने  
स्थानक जावै ( और ) माता सहित सधव स्त्रीयां मंगलगीत गावै । पष्ठी रा  
त्री जागर्ण करै ॥ ( जब ) सवेराहोय ( तब ) गुरु आके अष्ट देवी ( तथा )

लमें बमेरा होय । उसके हाथमें सांघे ॥ ( तव ) यथाशक्ती गुरु जो तषीकों, वस्त्र सुवर्णादि दान देवै ( पीठे ) गुरु । जन्म नक्षत्रानुसारै । सर्वकै सन्मुख । नाम प्रकाश करके । अपने स्थानक जावै ( जोतषी गुरु, इतनी विधि कीयां पीठे । ( कुलगुरु ) माता, पिता दिक्, सर्व कुल वालोंकों सन्मुख वैठावे । दोव हाथमें लेके । पंच पर मेष्टी मंत्र गुण के । जाति गुणोचित नाम प्रकाश करै । ( पीठे ) गुरु, पालखी आदि स वारीमें ( वा ) पैदल, बालककों लेके । पुरुष स्त्रीयां सर्व परिवार सहित । वा जित्र वाजते । गीत गान करते । जगवानके मंदर जावै ॥ विधि संयुक्त २४ महाराजकी पूजा करै । ( और ) स्वर्ण, रुप्य, मुद्रा, फल, वस्त्रादिक, सर्व चौबी स २ चढावै । ऋषमंमल पूजा, विधि ( रत्नसागरके ) प्रथम जागमें लिखी है । जहांसैं जानलेना । पूजा, आरती, कीयां पीठे । कुल वृद्धा स्त्री, जगवानके सन्मुख बालकका नाम प्रकाश करै ( कदाचित् ) मंदर कोई स्थानक न होय ( तव ) घर देरासरके सन्मुख सब विधि करावै । फिर इसी रीतिसैं पोषध शाला आवै ( जहां ) जोजन मंमली स्थानके । मंमली पट्ठ स्थापन करके पूजा करै ॥ मंमली पट्ठ पूजा विधि कहैहै ॥ लम्के की माता ( श्री गौतमायनमः ) ऐसा मंत्र उच्चारण करती थकी । गंध । अक्षत । पुष्प । धूप । दीप । नैवेद्य । फल । जलसैं । मंमली पट्ठकी पूजाकरै ॥ मंमली पट्ठ ऊपर । स्वर्ण मुद्रा २० । रुप्यमुद्रा २० । नालिकेर २० । इत्यादिक स्थापन करके नमस्कार करै ॥ ( पीठे ) पुत्रसहित स्त्री प्रदक्षिणा देके । यती गुरु प्रतैं नमस्कार करै । नव स्वर्ण मुद्रा, करके । नवांग पूजा करै ॥ क्षमा श्रमण पूर्वक दोनुं हाथ जोमके कहै ॥ जगवन् वासक्षेपकरेह ॥ ( तव ) गुरु । काम धेनुं मुद्रा करके । उँकार, झींकार, पूर्वक । वर्द्धमान विद्यासैं । वासचूर्ण मंत्रके । माता पुत्रके मस्तक ऊपर माले ( और ) माता पुत्रके मस्तक ऊपर, उँ झींश्री, यह अक्षर सन्निवेश करै ॥ बालकके चंदन अक्षत को तिलक करै ( पीठे ) जो धर्म शालामें साधुका जोग होय ( तो ) इसी तरै । सर्व साधु मुनिराजके पास जावै । प्रदक्षिणा देके नमस्कार करै । खप मुजव सुध अन्न, वस्त्र, पात्रादि, दान देवै ॥ ( और ) गृहस्थी कुल गुरुकों, यथाशक्ती अलंकार वस्त्रादि दान देवै ॥ ( पीठे ) नसीतरे वा

जिजादि महोत्तवसहित अपने घर जावै । उचित व्यवहार कार्यमें प्रवर्तै ॥

॥ ✽ ॥ इत्युपाध्याय श्री० अष्टम नामसंस्कारोदयः संपूर्णम् ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ (ए) अन्न प्राशन संस्कार विधि लि ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ जन्मसँ ठैमास पुत्रकों, पांचमें मास कन्याकों । सुन्न मज्जतं चंद्रवलादि देखके अन्नप्राशन विधि करावै । पूर्वोक्त गुण वेपधारी जैन पंथित, गृहस्थके घरे आके । सर्व देशका आया ऊवा धान्य ( तथा ) फल ( तथा ) घृत तैलादिक विगय ( इत्यादि ) जो चीज मिलती होय ( तो ) इकठ्ठी करावै ॥ पूजाकी सामग्री सब तैयार करावै ( पीठे ) बालकका पिता, बन्नेरादिक, स्नान करके अंग सुचीनूत करै । अन्ना वस्त्र पहारै ( पीठे ) गुरु, मोटा मंदिर होय ( तबतो ) मोटा मंदिरमें ( नहीं तो ) घरदेरासरमें । विधि संयुक्त । बृहत्स्मान् महोत्तव करावै ( क्रमसँ ) जूदे जूदे पात्रमें, नैवेद्य, फलादि संपूर्ण नक्ष्त्र चीज चढावै ( तदनंतर ) स्नात्रजल, गुरु लेके । बालकके अंगोपांगपर सिंचन करै ॥ ( पीठे ) श्री गौतमस्वामी की । अष्ट द्रव्यसँ पूजा करावै ( तथा ) अष्टद्रव्यसँ । क्षेत्र देवता, कुलदेवता की पूजा करवावै ( पीठे ) सधव स्त्रियां मंगलगीत गाती थकी ( कुलवृद्धा ) बालकके मुखमें अन्न कवल देवै ( जब ) गुरु वेद मंत्र पढै ॥ ✽ ॥

( वेद मंत्रो यथा ) ॥ ✽ ॥ ॐ अर्जं । जगवान् ज्ञान् त्रिलोक नाथ । त्रिलोक पूजितः । सुधारित शरीरोपि । कावलिका हार माहारित वान् । तपस्यन् पि पारणा विधा विह्वरस परमात्मा ज्ञो जनात्परमानंदा दाप केवलं तद्देहि नो दारिक शरीरमाप्तः त्वमप्या हारय । आहारंतते दीर्घमायु रारोग्य मस्तु । अर्जं ॐ ॥ ✽ ॥ इस मंत्रको ३ बेर पढै ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( पीठे ) साधुका योग होय ( तो ) शुद्ध आहार बहिरावै ॥ जैन पंडिताचार्यादि यती गुरुकों । परमात्मसँ चराऊवा । सुवर्ण, रुप्य, पात्र दान देवै ॥ ( और ) गृही गुरुकों । सर्व धान्य, घृत, तेल, गुड, लवणादि ( तथा ) कांश्ययाल, वस्त्र युग्म, दान देवै ॥ ✽ ॥

इत्युपाध्याय श्री० अन्न प्राशन संस्कारोदयः संपूर्णम् ॥ ए ॥ ✽ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ (१०) कर्ण वेध संस्कार विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जन्मसें तीसरै, पांचमें, सातमें, वर्ष शुभ मङ्गल देखके । कर्ण वेध संस्कार विधि प्रारंभ करै ॥ प्रथम कुल गुरु अंग सुचीकर अष्टा वस्त्र पहरेके गृहस्थके घर आवै । पूजा सामग्री सर्व तैयार करावै ( पीठे ) माता पुत्रकों मंगल गीत गान पूर्वक सधवास्त्रीके हाथसें स्नान करवावे । अष्टा वस्त्र आभूषण पहिरावै । विधि पूर्वक जगवानकी स्नात्र पूजा करावै । अष्टद्रव्य चढावै ( पीठे ) अपना कुलाचार मुजब कर्णवेध प्रारंभ करै ॥ बालककों सुखासन ऊपर । पूर्व दिशतरफ मुख करके बैठावे ॥ कर्णवेध करती वखत गुरु इसमाफक वेद मंत्र पढ़ै ॥ ❀ ॥ ( वेदमंत्रो यथा ) ॥ ❀ ॥

॥ ॐ अर्जु । श्रुते । अंगै । उपांगै । कालिक । उत्कालिक । पूर्वगते चूलिका निः सुत्रैः । पूर्वानुयोगैः । तदोन्नि लक्ष्मणैर्निरुक्तैः । धर्मशास्त्रैर्विद्ध कर्णो नूयात् । अर्जु ॐ ॥ ( सुद्रादेस्तु ) ॐ अर्जु । तवश्रुति दयाय हृदयं धर्माविद्धमस्तु ॥ ( इत्येवं वाच्यं ) ॥ इस मंत्रकों ७ बेर पढ़ै ( पीठे ) मातापुत्र स्त्रीयांके साथमें धर्मशाला आवै । पूर्वोक्त विधि मुजब मंमली पढ़पूजा करै । गुरुकों नमस्कार करै ( तब ) गुरु, मातापुत्रके मस्तकपर वासकैप करै । ( पीठे ) अपने घर आके । सुध साधु मुनिराज होय ( तो ) निर्दोष आहार वस्त्र पात्रदान देवै ( और ) गृही गुरुके गलैमें, कणवीर पुष्पोंकी माला पहरेके । वस्त्र, स्वर्ण, दान देवै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इत्युपाध्याय श्री ० दशमा कर्णवेध संस्कारोदयः संपूर्णम् ॥ १० ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ (११) चूनाकर्म संस्कार विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुभतिथी चंद्रबलादि शुभ मङ्गल देखके । अपना कुलाचार मुजब । ग्राम, वन, पर्वत ( तथा ) घरके विषै । प्रथम गुरु अंगसुचीकर अष्टा वस्त्र पहरेके आवै ( पीठे ) माता पिता दिक स्नान करके अंग सुचीनूत करै । पुत्रका अंग सुचीनूत करै । षष्ठी संस्कारमें कहे मुजब, षष्ठीपूजा वर्जके ( और ) अष्ट मातृपूजन ( तथा ) पोष्टिक विधि करै । ( पीठे ) विधि संयुक्त जगवानकी दहत्स्नात्र पूजा करावै । अष्टद्रव्य चढावै ( पीठे ) कुल गुरु जिनस्नात्रोदककों । पूर्वोक्त गर्भाधान संस्कारमें कहा ऊवा । शांतिदे





इक्ष्वागुवंश, हरिवंश, सूर्यवंश, चंद्रवंश, कृत्रिय वंशा, दिक्में उत्पन्न ऊवा  
जिन, चक्री, बलदेव, वासुदेव, श्रेयांस, दशार्ण मद्रादि, कृत्रिय वर्ण  
वाले, गृहस्थ पणामें जिनोपवीत धारन करे ॥ जिन, चक्री, बलदेव, वा  
सुदेव, अवश्य पूर्वोक्त कृत्रिय वंशोंमें उत्पन्न होतेहैं । ( परंतु ) अंत, प्रांत,  
तुह, दलिद्र, निह्वाचर कुलामें, उत्पन्न न ऊवा । न ऊवै । न ऊसी ॥ १॥  
( यडुक्तमागमे ) ॥ देवाणुप्रिया । नएयं ज्ञूयं । नएयं ज्ञव्वं । नएयं ज्ञवि  
स्सइ । ( जन्हं ) अरिहंतावा । चक्क वदीवा । बल देवावा । वासु देवावा ।  
अंत कुलेसुवा । पंतकुण । तुहकुण । दरिद् कुलेण । निक्खायरकुण । ना  
इं सुवा । नाइंतिवा । नाइस्संतिवा । एवं खलु अरिहंतावा । चक्कवदीवा  
बलदेवावा, वासुदेवावा, उग कुलेसुवा, जोग, राइन्न, नाय, खत्तिय, इक्खा  
गु, हरिवंश कुलेसुवा । अन्नयरे सुवा । तहप्पगारेसु विसुद्धजाइ कुलवंशे  
सुवा । आयंसुवा । आयंतिवा । आयस्संतिवा । ( इस्यादि ) सुत्र पाठसैं ।  
अवश्य जिन, चक्री, आदिक कृत्रिय वंशमें होय ( तथा ) कामदेव, का  
र्तिक, सुदर्शन सेठ आदि, वैश्यवर्णवाले । जिनो पवीत धारन करै ( तथा )  
आनंद, सदाख पुत्रादिक, सुद्रवर्णवाले । जिनोपवीतके स्थानक. उत्तरासंग  
धारनकरै ॥ यह जिनोपवीतहै ( सो ) जिनकी गृहस्थ मुद्राहै ( इसवा  
स्ते ) जैन गृहस्थाकों जिनोपवीत धारन करना अवश्य चाहियै ॥ ( और )  
( जो ) बाह्य, अग्र्यंतर, ग्रंथीरहित । द्रव्ये, जावै, सुद्ध साधूपणा धारनकर  
ना ( सो ) जगवानकी साधु मुद्राहै ॥ ( जिसनें ) साधु मुद्रा धारनकरी  
हैं ( उसकों ) जिनो पवीत धारन करना उचित नहिं ( क्युंकि ) ज्ञान,  
दर्शन, चारित्र, रत्नत्रयकों ( तथा ) नव ब्रह्मचर्य गुप्तिकों । सर्वे सुद्धपणें  
धारन किया है । ( और ) अहो निशि तज्जावना जावित तन्मई जिनोंका  
चित्त होरहाहै ( इससेती ) संसार कर्म सर्व त्यक्त करके ( जो ) सर्व गुण  
धारन कियाहै ( सो ) समुद्रके, सूर्यके, तुल्यहै ॥ ( जैस ) समुद्रके जल  
पात्र रखनेका प्रयोजन नहिं ( और ) सूर्यके दीपक रखनेका प्रयोजन न  
हिं । ( इसीतरै ) साधुवोंकों जिनो पवीत धारन करनेका प्रयोजन नहिं  
( यडुक्तं ) अग्नि देवोस्ति विप्राणां । हृदेः देवास्ति योगिनां । प्रतिमा स्व  
ल्प बुद्धीनां । सर्वत्र विदितात्मनां ॥ २ ॥ ( इससेती ) जो देशविरति आ

वक तीन रत्न, नव ब्रह्मगुप्तिकों । लेशमात्र सुणने, धारने, सेती । सूत्र मुद्रा रूप ( जिनोपवीत ) वाह्य हृदयमें धारन करै ॥ ( प्रतिमा स्वल्प बुद्धीनां ) इति वचनात् ॥ ❖ ॥ ॥ ❖ ॥ ॥ ❖ ॥ ॥ ❖ ॥

॥ ❖ ॥ अब जिनो पवीत बनानेका ( तथा ) धारन कर नेका परमार्थ कहते हैं ॥ ❖ ॥

॥ ❖ ॥ अपनी हथेली ऊपर । सूत्रका ८४ आंटा देंसे । जितना लं वा सुत्रहोय तिसको त्रिगुणा करै । जब २८ हाथरहै ( तथा ) त्रिगुणा किया ऊवाकों और त्रिगुणा करै ( तब ) नवहाथ किंचित् उपरांत सूत्र रहै । ( इसकोबटके ) तीन लमी जिनोपवीत वणावै । जिसके नव तंतू गच्छिं त, त्रिसूत्र मई एक अग्रदेवे । ( ऐसी तीन गांठकी जिनोपवीत ब्राह्मण धारण करै ॥ ( इसका परमार्थ यहहै ) । जैनी ब्राह्मण, नव ब्रह्मगुप्ति युक्त ज्ञान, दर्शन, चारित्र, रूप ३ रत्न । आप धारन करै । अन्यपुरषांको धार न करावै । ( तथा ) अन्यपुरषांको । जिनोपवीतादि धर्म धारन करने को । आज्ञा उपदेश करै ॥ ३ ॥ ( इसवास्ते ) ब्राह्मणके जिनो पवीतमें ३ ग्रंथी कही ( और ) कृत्री वर्णके जिनोपवीतमें दोय गांठ होय ॥ आपधारण करै । अ न्यको धारन करावै ( परंतु ) आग्या उपदेशका अधिकार कृत्रीको नहिं ( और ) वैश्यके एक गांठकी जिनोपवीत होय । ( निकेवल ) ज्ञान दर्शनकी न स्तीसें श्रावक आचार आपधारन करै ( परंतु ) असामर्थ्यपणें सेती अन्य को धारन करानेका ( वा ) आग्या करनेका अधिकार नही ( और ) सु द्रांको निकेवल ग्रंथी रहित उत्तरासण रखनेकी आग्या है ( किसवास्ते ) अग्यानपणें सेती निसत्वपणें सेती अधम जातित्व सेती ( निकेवल ) जग वानकी आग्या प्रमाण करै ( परंतु ) ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप, रत्नत्रयी आपची धारन करनेको असमर्थ है ( इसवास्ते ) उत्तरासण धारण कर नेकी आज्ञा है ( और ) अन्य मतमें यज्ञोपवीतका प्रमाण युगां ऊपर कहा है ( यथा ) रुते स्वर्णमयं सूत्रं । त्रेतायां रौप्य मेवच । वापरे ताम्र सूत्रंच । कलौ कार्पाश मिष्यति ॥ १ ॥ ( जिनमतेतु ) सर्वकाले जैन ब्रा ह्मण ३ लमी सोनेकी जिनोपवीत धारन करै ॥ असमर्थ होय ( तो ) सू द्रादिककी धारण करै ( और ) कृत्री, वैश्य, सुद्र, सदा सूत्रमयी जिनोप

शिष्य नमोस्तु कहतो थको गुरूके पगामें पडके नमस्कार करै ॥ ॥॥

॥ ॥ मुंजमेखलाको प्रमाण कहतेहै ॥ ॥

॥ ॥ ३ तंतुकी वणी ऊई। मुंज ८१ हाथ लेके। ए लडी बटै (ऐसी) मुंजमेखला ब्राह्मणके कमियामें बंधावै (तथा) कृत्रीके ५४ हाथ मुंज कों ६ लमी बटके बंधावै (तथा) वैश्यके २७ हाथ मुंजकों ३ लमीबटके बंधावै। (ऐसैं) ब्राह्मण, कृत्री, वैश्यके। ए गुणी, ६ गुणी, ३ गुणी, मुंजमेखलाको प्रमाण जाणनो (और) जिनो पवीत, कोपीन, मुंजमेखला, धारन करनेका उज्जव। गीत गान मंगल रात्री जागण पहलै दिनकरै (पीठे) गुरू, १ वेंतजर चौमी। दैढ हाथ लंबी। कोपीन दोनु हाथमें लेके। (वेद मंत्र पढै)। (यथा) नै अर्जुन आत्मनः देहिनः। मति ज्ञानावरणेन। श्रुत ज्ञानावरणेन। अवधि ज्ञानावरणेन। मन पर्याया वरणेन। केवला वरणेन। इंद्रिया वरणेन। चित्तावरणेन। आवृतोसि। तन्मुच्यतां तवावरण मनेनावरणेन। अर्जुन नै ॥ ॥ इस वेदमंत्रको ७ वेर पढके, उपनयी शिष्यके कडीमें को पीन बंधावै (तव) उपनयी शिष्य नमोस्तु कहतो थको गुरूके पगामें पडै नमस्कार करै (पीठे) तीन १ प्रदक्षिणा देकर चारुं दिश तरफ आ दीश्वर स्तवना पूर्वक शक्रस्तव पढै। देवबंदन करै ॥ (पीठे) शुचलभकी वखत आपैंसैं (पूर्वोक्त) जिनो पवीत अपने हाथमें लेके। उपनयी शिष्य दोनु हाथ जोम्के ऐसा वचन कहै ॥ हेनगवन् में वर्ण रहित जुं। ज्ञानरहि तजुं। क्रिया रहितजुं। (इसवास्ते) मेरैकों ज्ञान क्रियाके विषे आरोपण करो (ऐसा कहके) नमोस्तु २ कहतो गृही गुरूके पगामें पडै (तव) गुरू परमेष्ठी मंत्र पढके, शिखा जालके ऊनो करै (और) जिनो पवीत अपने हाथमें लेके। गुरू वेद मंत्र पढै ॥ (वेद मंत्रो यथा) नै अर्जुन नव ब्रह्म गुप्तीः। सकरण। कारणानुमती। चारयो। तदक्षय मस्तु ॥ तेच तं स्व पर, तरण तारण समर्थो नव। अर्जुन नै ॥ ॥ (कृत्रियकों) करण, कारण ज्यां, धारवे स्वस्य तरण समर्थो नव (वैश्यकों) करणेन धारये स्वस्य कंठे जिनो पवीत संस्थाप्य तरण समर्थो नव ॥ ॥ इति। (तिस पीठे) उपनयी शिष्य तीन प्रदक्षिणा देके। नमोस्तु २ कहतो पावोंमें पडै। नमस्कार करै। (तव) गुरू, नित्यारग पारगो नव। ऐसा आशीर्वाद देवै (और)

पूर्व दिशाके सन्मुख वामपासे स्थापन करके । सर्व जगत्रमें सारजूत । चिं  
तामणि रत्नके समान । वांछित पूरण हार । मोक्ष सुखदैण हार । (ऐसा) पंच  
परमेष्ठी मंत्र, ३ वेर, सुगंधी द्रव्यसें पूजित दहिणें कानमें सुणावै । जिनो  
पवीत धारकके मुखसें जी उच्चारण करावै ॥३॥ (यथा) ॥ एमो अरिहंताणं ।  
एमो सिद्धाणं । एमो आयरियाणं । एमो उवझायाणं । एमो लोए सब सा  
हूणं ॥ इतिपरमेष्ठीमंत्रः ॥ ( पीठे ) इस परमेष्ठी मंत्रकी अचिंत्य महिमा  
गुरू सुनावै ( ऐसा कहै ) हे शिष्य । इस मंत्रका, सदैव संपूर्ण मंगलका  
यमें, अवश्य ध्यान करते रहणा (जिससें ) तुमारे संपूर्ण सिद्धी होगी  
( यदुक्तं ) ॥ नवकार इक अक्षर । पावं फेरेइ सत्त अयराणं । पन्नासं  
च पणं । सागर पणसय समग्गेणं ॥ १ ॥ जोगुणइ लक्खमेगं । पूएइ  
विहीइ जिण नमुक्कारं । तित्थयर नाम गोअं । सो वंधइ नत्थिसंदेहो ॥ २ ॥  
अवेवय अठसया । अठसहस्संच अक्कोमीउ । जो गुणइ नत्ति जुत्तो ।  
सो पावइ सासयं ठाणं ॥ ३ ॥ सिद्धांतो दधि निम्मथा । जवनीत मिवोद्धु  
तं । परमेष्ठी महामंत्रं । धारयेत् हृदि सर्वदा ॥ ४ ॥ सर्व पातक हर्त्तारं ।  
सर्व वांछित दायकं । मोक्षा रोहन शोपानं । मंत्रं प्राप्नोति पुण्यवान् ॥ ५ ॥  
अनेन मंत्र राजेन । जातस्त्वं विश्वपूजितः । प्राणांतेपि परित्याग । मस्य  
कुर्यान्न कुत्र चित् ॥ ६ ॥ गुरु त्यागे जवेहुःखं । मंत्र त्यागे दक्षिद्रता । गुरु  
मंत्रं परित्यागे । सिद्धोपि नरकं व्रजेत् ॥ ७ ॥ इति ज्ञात्वा सुगृहीतं । कुर्या  
न्मंत्र ममुंसदा । सिद्ध्यन्ति सर्व कार्याणी । तवास्मा न्मंत्रतो ध्रुवं ॥ ८ ॥  
( इत्यादि ) पंच परमेष्ठी नवकार मंत्रकी अचिंत्य महिमा सुनके, अंतरंग  
भक्तिसें धारनकरै । (और) वज्रत खुसी होके । तीन प्रदक्षिणा देके । न  
मोस्तु २ कहता । गुरूकै पगामिं पमै । नमस्कार करै । ( यथाशक्ती ) सोनें  
की जिनो पवीत ( तथा ) वस्त्रादिक जेट करै । ( यथाशक्ती ) साधमी  
वात्सल्य करै । सर्व संघकी, आहार तांबूलादिकसें भक्ती करै । साधु मुनि  
राजकों, सुद्ध आहारादिक दान देवै ॥३॥ इति उपनयन व्रत बंध विधिः॥

॥ ३ ॥ अथ व्रतादेश विधि कहतेहै ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ जिनोपवीत धारन कियांके अनंतर ( उसी समय ) वाजित्र, मं  
गल गीत गान पूर्वक, समवसरण चौमुख जिनकै सन्मुख, संघ समुदाय

के योग थके, व्रतादेश प्रारंभ करै ( तिसका यहक्रमहै ) गृही गुरु, उपनीत पुरुषका रेशमी, सूतू, बस्त्र, दूरकराके ( और ) मुंजमेखला, कोपीन, जिनो पवीत, बल्कल वस्त्र, धारनकराके स्थापन करै । हाथमें पलाशादिका दंभ देवै ॥ वेदमंत्र पढै—( वेद मंत्रोयथा )—ॐ अर्धं ब्रह्मचार्योसि । ब्रह्मचार्योसि । अवधि ब्रह्म चर्योसि । धृत ब्रह्मचर्योसि । धृत जिन दंभोसि । बुद्धोसि । प्रबुद्धोसि । धृत सम्यक्तोसि । दृढ सम्यक्तोसि । पुमानसि । सर्वपूज्योसि । तदवधि ब्रह्मव्रतं । आगुरु निर्देशं धारयेः । अर्धं ॐ ॥ ❀ ॥ ऐसा मंत्र पढके काष्ठ ( वा ) माज्जके आशण पर, उपनेयी शिष्यको स्थापन करै ॥ तिसके दहिणें हाथमें ( सुवर्ण मुद्रिका ) पहरावै । मंत्र पढै ( मुद्रिका मंत्रो यथा ) पवित्रं दुर्लभलोके । सुरासुर नृबल्लभं । सुवर्णहंति पापानि । मालिन्यं च नशंशयः ॥ १ ॥ ❀ ॥ ( पीठे ) गुरु परमेष्ठी मंत्र पूर्वक अष्टद्रव्यसँ जगवानकी पूजा करवावै ( पूजांते ) उपनीत शिष्य । तीन प्रदक्षिणादेके । नमोस्तु १ कहतो थको । गुरुको नमस्कार करै ( और ) दोनुं हाथ जोमके शिष्य प्रश्न करै ॥ गुरु उत्तरदेवै ( यथा )

शिष्य—हे जगवन् उपनीतोहं ॥ ❀ ॥ गुरु—सुष्टु उपनीतोऽभव ॥

शिष्य—कृतोमे व्रतबंधः ॥ ❀ ॥ गुरु—सुजातोस्तु ॥

शिष्य—जातो अहं ब्राह्मणः ( वा ) क्षत्रियः ( वा ) वैश्यः ॥

गुरु—दृढव्रतोऽभव । दृढसम्यक्तोऽभव ॥ दृढाचारोऽभव ॥

शिष्य—हे जगवन् आप ब्राह्मण कियो ( तो ) मेरे लायक आदेश दीजै ॥

गुरु—जगवानकी आज्ञा मुजब आदेश देताऊं ॥

शिष्य—जगवन् मया स्वयं करणीयं ॥ ❀ ॥ गुरु—करणीयं ॥

शिष्य—जगवन् मया अन्यै कारतव्यं ॥ ❀ ॥ गुरु—कारतव्यं ॥

शिष्य—जगवन् मया अनुज्ञातव्या ॥ ❀ ॥ गुरु—अनुज्ञातव्या ॥

( इसमाफक ) ब्राह्मण शिष्यको । करणा, करावणा, आज्ञा उपदेशदेणा, ॥ ३ आदेश देवै ॥ ( और ) क्षत्रिय वर्णवालेको, पूर्वोक्त सर्व प्रश्नोत्तर करकै । करणा, करावणा, दो आदेश देवै ॥ क्षत्रियको, आज्ञा उपदेशका अधिकार नहिं ( और ) वैश्यको, पूर्वोक्त सर्व प्रश्नोत्तर करके । करणा, ऐसा एक आदेश देवै । समादेश, आज्ञा उपदेशका अधिकार नहिं ॥ इतना विशेष समझणा ॥

॥ ✽ ॥ अथ ब्राह्मण वर्णदेशः कथ्यते ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ गुरु-परमेष्ठी नवकार मंत्रका सदैव स्मरण करते रहणा । कच्ची नवकार मंत्रसें विमुख न होना ॥ तीनों कालमें अवश्य जिनेश्वर देव की, यथा शक्ति द्रव्ये चावे पूजा चक्की करते रहणा ॥ निग्रंथ साधू, आचार्यादिककी, वेयावच्च चक्की करते रहणा ॥ सामायक, प्रतिक्रमणादि धर्म कृत्य सेवन करते रहणा ॥ जैनाचार्यके पास अपना धर्म कृत्य विनय संयुक्त सुणना, शीखना ॥ जीव दया, सत्य वचनादि, व्रत, पचक्खणा धारन करना ॥ परस्त्री, परधनका, त्याग करना ॥ मदरा, मांश, अन्नक, अनंत कायादिक, वस्तुका त्यागकरना ॥ रात्री नोजन ( तथा ) विदलचीजका त्याग करना ॥ जिनो पवीत ( तथा ) स्वर्ण मुद्राकों कच्ची त्याग न करना ( प्रायें ) क्षत्री वैश्यांके घरमें अन्यहाथका किया नोजन न करना ॥ साधमी स्ववर्ण वालैके घरे । स्व वर्ण, स्व धर्म वालैके हाथका ( वा ) अपने हाथका किया नोजन करना ॥ नीच, सुद्रादिक, अन्यधर्मीके पास याचना न करना ॥ शुद्ध सम्यक्त व्रतादि गुण धारन करना ॥ मिथ्या शास्त्र मिथ्या मत को परिचय त्यक्त करणा ॥ नाना आर्य देशमें गयां थकां, त्रिकरण सुद्ध शौच मार्गमें चलना ॥ गृही संस्कार, जिन पूजा, शांति कर्मादिक, जै नाचार, धारन करते, कराते रहना ॥ स्वधर्मी जैनी चाइयोंकों बियाअन्या श कराते रहना । स्वधर्म आग्या उपदेश देते रहना ॥ विनय गुणधारके स्वधर्म वक्ष्यर्थ आत्म लघुता करना ॥ ( परंतु ) कपायादिक धारके, कच्ची परनिंदा नकरना ॥ सर्वका गुण ग्रहण करना । औगुण त्यक्त करना ॥ कर्म, चेतनका, यथा वस्थित स्वरूप जावन करते रहना ॥ ✽ ॥ ॥ इति ब्राह्मण वर्ण देशः ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ क्षत्रिय वर्ण देशः कथ्यते ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ परमेष्ठी नवकार मंत्रका स्मरण करना ॥ तीनोंकाल देव वंदन जगवंतकी पूजा चक्की करना ॥ सम्यकादि वारै व्रत धारन करना । यथा शक्ती अतीचार रहित शुद्ध पालना ॥ रात्री नोजन, मदिरा मांश, अन्नक, अनंत काय, का त्याग करना ॥ जिनोपवीत कच्ची त्यक्त न करना ॥ जै

न साधु, जैनाचार्य, जैन पंमित, श्रावक, सम्यक्तीका आदर करना । यथा शक्ती धर्म कृत्य सेवन करना, सुणना, सीखना, ॥ अन्य लिंगी ब्राह्मण ( तथा ) अन्य देवादिकों वाह्य व्यवहार नयसे नमस्कार करना ( परंतु ) धर्म समजके नमस्कार परिचय न करना । उष्ट निग्रह, युद्धादिकों वर्जके ( प्रायें ) जीवहिंसादिक पापकर्म न करना, नकरावना ॥ ( कृत्रियांको आचारहै ) श्रेष्ठकों पालै ( और ) उर्जनका निग्रहकरै ॥ देवके अर्थ, गुरूके अर्थ । धर्मके अर्थ । अपनादेश जंगादिकके अर्थ । युद्धादिकमें । मृत्युका ज्ञय न गिणके, वीर्य रस धारन करै । सर्व जीवोंपर अनुकंपा धारके । अपने देशमें, दान शाला, उषध, शाला, स्थापन करना ॥ शुद्ध श्रावक का गुण धारन करना ॥ सर्व स्थानक धर्मका उद्योत, धर्मकी प्रज्ञावना करते रहना ॥ ❀ ॥ इति कृत्रिय वर्ण व्रता देशः कथितः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वैश्यवर्ण व्रतादेशः कथ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंच परमेष्ठी नवकार मंत्रका ध्यान करना ॥ त्रिकालें देव वंदन देवपूजा, द्रव्यै, जावै करते रहना ॥ सम्यक्तादि द्वादश व्रत, अतीचार रहि शुद्ध पालना ॥ निग्रंथ साधु आचार्यादिककी सेवा ज्ञक्ती करना ॥ जैन विद्याचार्य, जैन पंमित, ब्राह्मणकी, सेवा ज्ञक्ती करना । सामायकादि धर्म कृत्य ( तथा ) जैन विद्याज्यास करते रहना । विनय गुण शरलपणा, धारन करना । आत्मनिंदा करना ( परंतु ) परनिंदा कच्ची न करना ॥ पनरै कर्मा दान रहित उत्तम विणज वौपार करना ॥ परधन परस्त्रीका ( तथा ) मांश मदरादि अन्नद्व वस्तुका त्याग करना । जिनो पवीत धारन किया ऊ वा कच्ची त्यक्त न करना ॥ जिन मंदर, रथ यात्रा, तीर्थयात्रादिक, करके सदा धर्म उद्योत करते रहना । स्वधर्मियोंपर अंतरंग प्रीति रखना ॥ यथा शक्ती अन्न वस्त्रादिक दान देता रहना ॥ शरल परिणाम धारके सर्व जीवों पर दया धारन करना ( क्युंकि ) दया है, सो, धर्मकों पालन वृद्धी करनेमें माताके समान है ॥ ❀ ॥ ( यउक्तं ) ॥ ❀ ॥ जयणाय धम्म जणणी । जयणा धम्मस्स पालनीचेव । तह बुद्धिकरी जयणा । एकांत सुहावहा जयणा ॥ १ ॥ ( पुनः ) दया है सो संपूर्ण सुखकी देनेवाली है ( यथा ) आयु दीर्घतरं, वपुर्वरतरं, गोत्रं गरीयस्तरं । वित्तं भूरितरं, बलं बज्जतरं, स्वा

मित्त्व मुञ्चैस्तरं । आरोग्यं विगतांतरं त्रिजगत श्लाघत्वं मल्यैस्तरं । संसारं  
वुनिधिं करोति सुतरां चेतः रुपाद्रांतरं ॥ १ ॥ ॐ ॥

॥१॥ अथ चातुर्वर्ण्यस्य समानो व्रतादेशः कथ्यते ॥१॥

॥ॐ॥ निज पूज्य गुरु प्रोक्तं । देव धर्मादिपालनं । देवार्चनं साधु  
पूजा । प्रणामो विप्रलिङ्गिषु ॥ १ ॥ धनार्जनं च न्यायेन । परनिंदा विवर्जनं  
न । अर्वाणवादो नकापि । राजादिषु विशेषतः ॥ २ ॥ स्वसत्त्वस्या परित्या  
गो । दानं वित्तानु सारतः । आयोचितो व्यय श्रैव । काले काले च भोज  
नं ॥ ३ ॥ नवासेल्य जले देशे, नदी गुरु विवर्जिते । न विश्वासो नरेन्द्रा  
णां । नागनीच नियोगिनां ॥ ४ ॥ नारीणां च नदीनां च । लोभिनां पूर्ववैरि  
णां । कार्यं विना स्थावराणां । महिंसा देहिनामपि ॥ ५ ॥ नासत्याऽहित  
वाक्चैव । विवादो गुरुभिर्न च । माता पित्रौ गुरो श्रैव । माननं परतत्त्व  
वत् ॥ ६ ॥ शुभ्रशास्त्रा कर्णनं च । तथा नाभक्त भक्त्युत्तमं । अत्याजानां न  
चत्यागो । परहत्या नामघातकं ॥ ७ ॥ अतिथौ च तथा पात्रे । दीनेदानं  
यथाविधि । दरिद्राणां तथा धानां । मापद्भार भृतामपि ॥ ८ ॥ स्त्रीनांगानां  
विकलानां । नोपहासः कदाचन । समुत्पन्नं कृत्विपाशा । घृणा क्रोधादि  
गोपनं ॥ ९ ॥ अरिषट्गं विजयः । पक्षपातो गुणेषु च । देशाचारा चरणं च ।  
जयं पापा पवादयोः ॥ १० ॥ उवाहः सदृशाचारैः । सम जात्यन्य गोत्र  
जैः । त्रिवर्गा साधनं नित्यं । मन्योन्त्या प्रतिबंधनः ॥ ११ ॥ परिज्ञानं स्व पर  
यो । देश कालादि चिंतनं । सौजन्यं दीर्घदर्शित्वं । कृतज्ञत्वं सख्यज्ञता ॥  
॥ १२ ॥ परोपकार करणं च । परपीडनं वर्जनं । पराक्रमः परभवे । सर्व  
त्र क्तांति रन्यदा ॥ १३ ॥ जलाशय स्मशानानां । तथा दैवत सधनां ।  
निद्रा हार रतादीनां । संध्यासु परिवर्जनं ॥ १४ ॥ प्रदेशोल्लंघनं चैव । तटे  
शयनं मेव च । कुपस्य वर्जनं नद्या । लंघनं तरणी विना ॥ १५ ॥ गुर्वा  
शनादि संध्यासु । तालवृते कुक्षमिषु । डुर्गोष्ठीषु कुकार्येषु । सदैवा शन  
वर्जनं ॥ १६ ॥ न लंघनं न गतादि । चण्डप्र स्वामि सेवनं । न चतुर्थेऽ  
नग्नस्त्री । शक्र चाप विलोकनं ॥ १७ ॥ हृथ्यश्व नखिनां चाप । वादिनां  
दूरि वर्जनं । दिवा संजोग्य करणं । रुद्रस्यो पाशनं निशि ॥ १८ ॥ क  
लहे तत्समीपं च । वर्जनीयं निरंतरं । देश काल विरुद्धं । भोज्यं कृत्यं ग



मागमौ ॥ १९ ॥ असत्यं व्यवसायश्च । कर्त्तव्यानि न कर्हिचित् । चातुर्वर्णस्य सर्वस्य । व्रतादेशोय मुत्तमं ॥ १० ॥ ❀ ॥

इति चातुर्वर्णस्य समानोव्रतादेश कथितः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( इसीतरे ) गुरू, वर्ण मुजव, व्रता देश करके । उप नयी शिष्यकों समवसरण जावके तीन प्रदक्षिणा दिरावै । पूर्वदिश जगवानके सन्मुख शक्रस्तव, पढावै । देव वंदन कराके गुरू शुभाशन वेठे । ( तव ) उपनयी शिष्य, नमोस्तु १ कहतो । गुरूके, पगामें पडै । नमस्कार करके (ऐसा वचन कहै) ॥ जगवन्, मम व्रता देशोदत्तः । तत्सुगृहीतोस्तु । सु रक्षितोस्तु । (गुरू कहै) संसार सागरात् स्वयंतर, परंतास्य ॥ ( पीठे ) गुरू, और उपनेयी शिष्य, (दोनूं) जगवानकों तीन प्रदक्षिणा देके, चैत्य वंदन करै (तिस पीठे) ब्राह्मण वर्णवालातो, क्षत्री, वैश्यांके, घर निक्का मांगे (तथा) क्षत्री वर्णवाला शस्त्र धारन करै । वैश्य वर्णवाला अन्नदान देवै ॥ ❀ ॥

इति व्रता देशविधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ व्रत विसर्ग विधिः कथ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ब्राह्मण वर्ण वाला । आठमें वर्ष जिनोपवीत, दंम, कोपीन, ब्रह्मचर्य धारके । १६ मा वर्ष पर्यंत, गुरूके पास रहै ( तथा ) क्षत्री, १० मावर्षसँ लेके, पूर्वोक्त विधिसँ १६ मा वर्ष पर्यंत रहै (वैश्य) पूर्वोक्त विधि १२ मा वर्षसँ लेके, १६ मा वर्ष पर्यंत रहै ॥ ( यह उत्तम पक्ष कहा ) ॥ (कदाश) अधिर चित्तसँ उत्तम पक्ष मुजव, गुरू कुलवासमें नहिं रह सक्ता होय (तो) ठम्माश (वा) एक माश ( वा ) तीन दिवश गुरूके पास रहै ( कदाचित् ) तीन दिवशजी न रहसके ( तो ) उसीदिन व्रत विसर्जनकरै ( सो विधि लिखतेहें ) कुलगुरू, उपनयी शिष्यकों, तीन प्रदक्षिणा दिराके । समवसरण जाव, चतुर्मुख जिनकी पूजा करावै । चारै दिशतरफ शक्रस्तव पढाके देववंदन करावै ( पीठे ) उपनयी शिष्य, नमोस्तु १ कहके, गुरूकों नमस्कार करै । हाथ जोमके कहे ( जगवन् ) देश, काला, पेक्षया व्रत विसर्गः आदिष्टः ॥ ( गुरूकहै आदिष्टः ) ॥ ( पुनः ) शिष्य नमस्कार करके कहै ( जगवन् ) व्रत बंधो विश्रुष्टः ( गुरूकहै ) जिनो पवीत धारणन अविश्रुष्टोस्तु ॥ ( अर्थात् ) जिनो पवीत, नित्य नेमका त्याग न क

रना ॥ ( पीठे ) शिष्य, नवकार मंत्र । ३ बेर पढके । कटि मेखला, कोपी न, दंम, बल्कल वस्त्रादि, ब्रह्मचारी चिन्ह, गुरूके सन्मुख रखे ॥ आप श्वेत वस्त्र जिनोपवीत धारन करके ( गुरूकों ) नमस्कार करै । ( तव गुरू ) शिष्यके पूर्वोक्त मंत्रसें पवत्रित चंदनसें, तिलक करे ( और ) जिनो पवीत वर्णन उपदेश करै ॥५॥ ( यथा ) ॥५॥ गर्जका माश अंतर्भूत करके ( ब्राह्मणकों ) आठमें वर्ष ( क्षत्रीकों ) दशमें वर्ष ( वैश्यकों ) बार मेंवर्ष जिनोपवीत धारन कराना । जिनोपवीत ( अर्थात् ) जिनकी गृहस्थ मुद्रा । नव ब्रह्मगुप्ती गर्जित, रत्नत्रयी रूप ( इसका ) प्रथम श्री आदिनाथ स्वामी गृहस्थाश्रम युक्त । ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, तीनोंवर्णकों धारन करनेका उपदेश कियाहै ( जबसें ) जिनोपवीत, सुत्र मुद्रा, धारन करनेका व्यवहार प्रचलितहुवा ( तीस पीठे ) वज्रत कालके बाद । मिथ्यात्व मोहित ( पर्वतादि ) ब्राह्मणोंने । चारु वेदमें हिंसा प्ररूपण करके ( वसु राजादि ) राजाओंसें मिथ्या पथ यज्ञ मार्ग प्रवर्त्तन किया ( और ) जिनोपवीतका नाम स्थानक यज्ञोपवीत नाम रखवा ( तबसें ) लोकीकमें यज्ञोपवीत, इसका नाम कहतेहैं—मिथ्या दृष्टी यथेष्टा कहो ( जिन मतमें तो, ) पूर्वोक्त सूत्र मुद्राका, जिनोपवीत नामहै ( ऐसी ) जिनोपवीत मुद्राकों, हे शिष्य, तुमनें धारन किया है । ( सो ) माश ९ प्रति नवीन धारन करते रहना । प्रमादादिकसें कभी त्यक्त न करना ( कदाचित् ) कोई बेर टूटजाय, गिरपमे, ( तो ) उसीवखत नवीन जिनोपवीत धारन करना ( और ) तीन उपवासका दंम चरना ( तथा प्रेत किया ) किसीकी मृत्यु होनेसें स्मशानमें जाना पमै ( तव ) जिनोपवीतकों दक्षिण स्कंधके ऊपर, वामकक्षाके अधो जागमें धारन करना ( यह ) मृतक, विपरीत कर्महै ( इससें ) जिनोपवीत विपरीत धारना ( साधुपण ) मृतक साधूके परिस्थाग समें । विपरीत वस्त्रकों धारतेहैं ( तत्त्वंतु ) जन्म ना जायते सुद्रः । संस्कारा विज मुच्यते । वेद पाठ त्रयो विप्रः । ब्रम्ह जानंति ब्रम्हणः ॥ ( यथा ) जन्मसें सुद्रहै ( सो ) संस्कार विशेषसें उत्तम वर्णकों प्राप्त होतेहैं । ब्रम्हगुप्तिके धारनसें ब्रम्हण कहियै । अन्यकों प्रहार लगनेसें त्राण रक्षा करै उत्तकों, क्षत्रिय कहियै ॥ न्याय धर्मोपवेश

सं, वैश्य कहियै ॥ तीनों वर्ण क्रिया सहित है । एतज्जिनोपवीतं सुगृहीतं कुर्याः । सुरक्षितं कुर्याः । अस्तुते क्षयरहितः । सधर्म वसनं उपनयन विधिः ॥ ऐसा उपदेश करके । नवकार मंत्रपढके । जगवानके सन्मुख चैत्य वंदन करावै ( पीठे ) शिष्य, साधू गुरुकों, वंदन नमस्कार करै ॥ ॥ ❀ ॥ इति जिनोपवीत संस्कारे व्रत विसर्ग विधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ सुद्रके उत्तराशन धारन विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम सप्त दिन पर्यंत, तैलान्निषेक, स्नान महोत्सव, मस्तक मुमन । चतुष्कोण वेदी करण । जिन प्रतिमा स्थापन । शांतिक पोष्टिक कर्म, सर्व जिनोपवीत तुल्य करै ( पीठे ) गृह्य गुरु, अष्ट प्रकारी पूजा करावै । चारे दिशामें शक्रस्तव पाठ करायके । गुरु शुभाशनवेठै ( तब ) शिष्य, श्वेतवस्त्र उत्तराशण धारके । समवसरण, गुरुकों, तीन प्रदक्षिणा देवै । गुरुके सन्मुख, नमोस्तुष्ट कहता । हाथ जोमके बिनती करै ॥ ( हे जगवन् ) मैं, आर्यदेश, आर्यकुलमें मनुष्यजन्म पायाछुं ( मेरेकों ) बोधीरूप जिनाज्ञा दीजै ( गुरु कहै, ददामि ) पुनः शिष्य, नमस्कार करके कहै । मैं, जिनोपवीत धारन करनें योग्य नहीछुं ( इससें ) मेरेकों जिनाज्ञा दीजियै ( गुरु कहै ददामि ) पीठे गुरु । चादश गर्भ तंतू रूप कार्पास (अथवा) कौशेय उत्तराशन, जिनोपवीत समान दीर्घ करके । नवकार मंत्र पढता थका । जिनोपवीत वत् उत्तराशन पहिरावै । पूर्वदिश, जगवानके सन्मुख बैठके, चैत्य वंदन करावै । ( पीठे ) शिष्य नमस्कार करके हाथ जोमके, गुरुकों, कहै ( हे जगवन् ) उत्तरीयक न्यासेन जिनाज्ञा आरोपितोहं ( गुरु कहै ) सम्यक् आरोपितोसी । तर जव सागरं ( तब ) शिष्य नमस्कार करै ॥ ( गुरु ) उपदेश करै ( यथा ) ॥ ❀ ॥ सम्यक स्वनुष्ठितव्यानि । व्रतानि चादशैव हि । धार्याणि जवतानैव । कार्यः कुल मदस्त्वया ॥ १ ॥ जैनर्षीणां तथा जैन । ब्राह्मणानां मुपाशनं । विधेयं चैव गीतार्था । चीर्णं कार्यं तपस्त्वया ॥ २ ॥ न निन्द्यः कोपि पापात्मा । न कार्यं स्वप्रशंसनं । ब्राह्मणस्यो स्त्वयास्त्रयं । दातव्यं हित मित्रता ॥ ३ ॥ शिक्षा चतुर्षु वर्णेषु । श्लोक व्याह्वान माचरेत् । उत्तरीय परित्रंशे । जंगेवाप्युपवीत वत् ॥ ४ ॥ कार्यं व्रतं प्रेतकर्म । कारणं वृषलत्वया । युक्ति रेषोत्तरा सं

गा नुज्ञायांचविधीयते ॥५॥ कृत्राणांमथवैश्याणां । देशकालादियोगतः । त्वक्तो  
पवीतानांकार्य । मुत्तरासंगयोजनं ॥६॥ धर्मकार्येगुरोर्दृष्टौ । देवगुर्वालिपेच ।  
धार्यस्तथोत्तरासंगः । सुवस्त्रेत्तकर्मणि ॥७॥ अन्येषामपिकारूणां । गुर्वानुज्ञां  
विनापिहिः । गुरुधर्मादिकार्येषु । उत्तरासंगइष्यते ॥ ८ ॥ ( एसेउपदेशकरके )  
गुरु शिष्यकुं चैत्पवंदनकरावै । नवकारमंत्रका उच्चारण ( अरु ) मंत्रका  
व्याख्यान सर्वपूर्ववत् ( इतनाविशेषहे ) शुद्रादिककुं नमोस्थाने एमोपदञ्चा  
रणकरणो ) पीठे शिष्यसहित गुरु उत्सव कर्त्तव्यके धर्मस्थानमेंआवे । उहां  
मंमली पूजादिकविधि पूर्वोक्तकरके गुरुकों नमस्कार कराके वासक्षेप दिरावे  
तदनंतर मुनियोंकुं, अन्न वस्त्र पात्रका दान ( अरु ) चतुर्विधसंघकी पूजा  
सामीवत्तलादिकरै ( इसरीतसं ) जिनोपवीतकेस्थानमे शुद्रादिकनकुं उत्तरा  
सनरखना.कहा । ब्राह्मण क्षत्री वैश्यके जिनोपवीतमें तीन, दोय, एक, कमसें  
ग्रंथि लगतीहे ( अरु ) तंतूकाप्रमाण पण जुदा जुदा कहाहे । परंतु शुद्रके  
वारै सूत्रतंतूगर्जित ग्रंथिरहित उत्तरीकन्यासरूप जिनोपवीतकहा ॥ ✽ ॥  
इतिशुद्रउत्तरीयकन्यासविधिः ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥३॥ अथ न्रम्यादि दानविधि लिख्यते ॥३॥

॥ ✽ ॥ व्रत विसर्ग किये पीठे शिष्य सहित गुरु तीनवेर प्रदक्षिणा दे  
के पूर्ववत् चारे दिशामे शक्रस्तवका पाठ करै ॥ तदनंतर गृह्यगुरुः आशन  
पर बैठे ( पीठे शिष्य ) गुरुकों तीन प्रदक्षिणा दे के, दोनुं हाथ जोम नम  
स्कार करके वीनती करै—हे जगवान् तारितोहं निस्तारितोहं उद्यमकृतोहं स  
त्तमःकृतोहं पूतःकृतोहं- तद्भगवान् आदिश, प्रमाद वञ्छले गृहस्थधर्मे मम  
किं रहस्यभूतं सुकृतं ॥ ( तवगुरु कहे ) हे वत्स, सुष्टु अनुष्ठितं, सुष्टु पठं,  
तत्श्रूयतां ॥ ( श्लोकाः ) ॥ दानंहि परमोधर्मो । दानंहि परमाक्रिया । दा  
नंहि परमोमार्ग । स्तस्माद्दानेननःकुरु ॥ १ ॥ दयास्यादन्नयंदान । मुपकार  
स्तथाविधः । सर्वोहि धर्मसंघातो । दानांतर्जाव महंते ॥ २ ॥ ब्रह्मचारीच  
पाठेन । त्रिह्रुथैव समाधिना । वानप्रस्थस्तुकपेन । गृही दानेन शुद्ध्यति ॥ ३ ॥  
ग्यानिनो परमार्थज्ञा । अर्हंतो जगदीश्वराः । व्रतकाले प्रयच्छन्ति । दानंसां  
वत्सरव्रते ॥ ४ ॥ गृह्णतां प्रीणनां सम्यक् । ददतांपुण्यमक्षयं । दानतुल्यस्ततो  
लोके । मोक्षेपायोस्तिनापरः ॥ ५ ॥ ( इससेती हेवत्स ) ब्राह्मण, ( वा )

ह्वी, ( वा ) वैश्य, वर्ण पायके । गृहस्थाश्रमको मंरुनञ्जुत, मोक्षसोपान रूप, अक्षयफलदायक दानधर्मको प्रारंभकर ( तव नमस्कार करके शिष्य कहै ) हे जगवन् दानकी विधि कहो ( गुरुकहै हेवत्स दानकीविधि तु सुण ) ॥ ( यथा श्लोकः ) ॥ गावो जूमि सुवर्णच । रत्नान्यनंच कन्यका । गजाश्वा इतिदानंत । दष्टधा परिकीर्तितं ॥ १ ॥ एतच्चाष्टविधंदानं । विप्राणां गृहमेधिनां । देयं नचापियतयो । गृह्णत्ये तच्चनिस्पृहाः ॥ २ ॥ यतिभ्यो भोजनं वस्त्रं । पात्रमौषध पुस्तके । दातव्यं द्रव्यदानेन । तौघौ नरकगामिनौ ॥ ३ ॥ इसप्रकार दानकीविधि सुणके, शिष्य उपनीत ऊवो थको प्रथम गौदान करै ॥ अच्चा वर्ण लक्षणयुक्त गायकों स्नान करवाके सोनेंका सींग रूपैका खुर आदि आभूषण ( तथा ) वस्त्रादिकसैं सोजित करके, गुरुके पास लावै ( तवगुरु ) गायको पुंठ हाथमें धारनकरके ऐसा मंत्रपढ़ै ( तथा ) ॥ ॐ अर्हं गौरियं धेनुरियं प्रशस्य पशुनियं सर्वोत्तमह्वीर दधिघृतेयं पवित्र गौमयमूत्रेयं सुधाश्रावणीयं रसोद्भाषणीयं पूज्येयं । हृद्येयं । अग्निवाभ्येयं । तदत्तेयं । त्वयाधेनुःकृतपुन्योन्नव । प्राप्तपुन्योन्नव । अक्षयं दानमस्तु । अर्हं ॐ ॥ ॥ ( इत्युक्ता ) गृह्यगुरु, धेनुको ग्रहणकरै ( तव ) शिष्य, तिसगौके साथ । द्रोणमात्र सातधान्य ( और ) तुलामात्र, षट्परस ( इत्यादि ) यथाशक्ती दान देवै-इससैं, दूसरा जूमि, रत्नादिकका दान आचार्यादिक गृही गुरुकों देवै ( तवगुरु ) ऐसा वेदमंत्र पढ़ै ॥ ( वेदमंत्रो यथा ) ॥ ॐ ॥ ॐ अर्हं एकमस्ति दशकमस्ति शतमस्ति सहस्रमस्ति कोट्यस्ति कोटिदशकमस्ति कोटिशतमस्ति । कोटिसहस्रमस्ति । कोट्ययुतमस्ति । कोटिलक्षमस्ति । कोटिप्रयुतमस्ति । कोटाकोटिरस्ति । संख्येयमस्ति । असंख्येयमस्ति । अनंतमस्ति । अनंतानंतमस्ति । दानफलमस्ति । तदक्षयं दानमस्तुते अर्हं ॐ ॥ ॥ गौदानसैं अन्यदानोंका यहीमंत्र है ॥ जिनोपवीत धारनसमय तो गौदान दैनेंकाही निश्चय है । अन्यदान कोईजीसमै देना ॥ गौदानादिक जैन पंमिताचार्यादि सपरिग्रही गृही गुरु जैनब्राह्मणोंकें देना चाहिये ( परंतु ) निस्परिग्रही निस्प्रही साधु यतीकों नदेवै । साधुकों निकेवल अन्न पात्र वस्त्र जेष्ठज वसति पुस्तकादि दान देवै ( तथा ) साधुवांके अन्नपात्रादिदाने धर्मदा न एवमंत्रः ॥ ( गृह्यगुरुः ) उपनीत शिष्यकेपास गौदान लेकें शिष्यकों

वर्णमुजव अनुज्ञा आदेश देवै ॥ जगवानके सन्मुख चैत्यबदन करावै  
( पीठे ) सब संघके साथ मंगलगीत गान वाजिन्नादि महोत्सव सहित, यती  
साधुके पास ले जावै ( तत्र पूर्ववत् ) मन्मथी पटपूजा करके यथाशक्ति ज्ञान  
खाते दान देवै । साधुकों बस्त्रपात्रादिक दान देवै । सर्व संघकी यथा शक्ति  
आहारादिकसें भजी करै ॥ \* ॥ इति ॥ \* ॥

॥ \* ॥ अथ वटुकरण विधि लिख्यते ॥ \* ॥

॥ \* ॥ प्रथम जिसनें जिनोपवीत धारन किया है ( सो ) जिनोपवीतके  
आचार मुजव चलै । अपना धर्मकृत्य खटकर्मका अज्यास करता रहै ।  
मृतक सूतकादि कुत्खितदान न लेवै । साधुमीठाल अन्यजातीका ( तथा ) अ  
न्य हाथका भोजन न करै ( तथा ) संपूर्ण गृहस्थके संस्कार पूजादिक  
क्रियाक्रामकों धारन करै, करावै ( तथा ) खेती, रसोई, चाकरी, आदि कर्मन  
करै । यजमानकों नमस्कार कियेविगर आशीर्वाद न देवै ( ऐसे ) आचारवान्  
ब्राह्मण होतेहैं ( और ) जो खेती, चाकरी आदिक नीचकुलके योग्य कर्म  
करै । सुद्रादिकके हाथका भोजन खावै । और अपना आचार खटक  
र्मसे रहित ( तथा ) तीनतत्त्वकी श्रद्धारहित ऊँचै ( सो ) आचारहीन सु  
द्रादिक समान होते हैं ॥ ऐसे आचारहीन पुरुष कालांतरै शुचिकर्मानुयोग  
पुनः जिनोपवीतादि शुद्धाचार धारनकरके शुद्ध ब्राह्मणपणो धारन करै ।  
जिसकों वटुकरण विधि कहियै ( यडुक्तं ) ॥ \* ॥ द्युत व्रतानां ब्राह्मणानां ।  
तथा नैवेद्य भोजिनां । अक्रमणां मवेदानां । अजपानांच शस्त्रिणां ॥ १ ॥  
आग्न्याणां कुलहीनानां । विप्राणां नीचकर्मणां । प्रेतान् भोजिनां चैव ।  
मागधानांच वंदिनां ॥ २ ॥ घंटिकानां सेवकानां । गंधतांबूल जीविनां । न  
टानां विप्रवेपाणां । परशुरामान्वयायिनां ॥ ३ ॥ अन्यजात्युद्भवानांच । वंदिवे  
पोपजीविनां । इत्यादि विप्ररूपाणां । वटुकरण मित्यते ॥ ४ ॥ ऐसे कुलही  
न आचारहीन ब्राह्मणादिककों शुद्ध करनेकेलियै वटु करणकर्म करना  
चाहिये ( अन्यमतेपि नक्तं ) जन्मनो जायते सुद्रः । संस्कारा द्विजमुच्यते ।  
वेदपाठनयो विप्र । ब्रह्मजानंति ब्राह्मणः ॥ १ ॥ स्वपाकी गर्भसंभूतो । पारा  
शर महामुनिः । तपसा ब्राह्मणोजातः । तस्माज्जातिरकारणं ॥ २ ॥ कैवर्त्ती  
गर्भसंभूतो । व्यासेनाम महामुनिः । तपसा ब्राह्मणोजातः । तस्माज्जातिरकारणं

॥ ३ ॥ विश्वामित्रं च चामाली । वशिष्ठं चोर्वसी तथा । विप्रजाति कुला  
 ज्ञावे । एते तेवै द्विजोत्तमा ॥ ४ ॥ शीलं प्रधानं नकुलं प्रधानं । कुलेन किं  
 शीलं विवर्जितेन । बह्वोनरा नीचकुलेषु जाताः । स्वर्गंगताः शीलं मुपेस्य  
 धीरा ॥ ५ ॥ इत्यादि अन्यमत जारतादिक ग्रंथोमें कहाहै ॥ तपस्या, ब्रह्म  
 चर्य, संस्कार, धारन करनेसे ब्राह्मण होता है । जातिका कुल कारण नहीं

### ॥ ❀ ॥ अथ बटुकरण संस्कार विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिसको बटुकर्म करना होय । उसके घरमें गृह्यगुरु प्रथम  
 यथोक्तविधिसँ शांतिक पौष्टिक पूजादिक कृत्य करै ( पीठे ) शिष्यका म  
 स्तक मुम्न कराकै । मंत्रा जुवा तीर्थोदकसँ स्नान करवावै ॥ ( तीर्थोदक  
 मंत्र यथा ) ॥ नै वरुणोसि । वारुणमसि । गांगेयमसि । यामुनमसि । गोदा  
 वर्यमसि । नार्मदमसि । पौष्करमसि । सारस्वतमसि । शातद्रवमसि । वैपाश  
 मसि । सेंधवमसि । चांद्रजागमसि । वैतस्तमसि । ऐरावतमसि । कावेरमसि ।  
 कारतोषमसि । गोमतमसि । रौप्यकूलमसि । सुवर्णकूलमसि । शालीलमसि ।  
 रक्तवतमसि । नैमग्नमसि । रत्नमसि । अनघसलिलमसि । पद्ममसि । महा  
 पद्ममसि । तैगह्वमसि । कैशरमसि । पौमरीकमसि । झादमसि । नादेयमसि ।  
 क्रौपमसि । सारसमसि । कौन्मसि । नैर्जरमसि । वाप्यमसि । तैर्यमसि ।  
 अमृतमसि । जीवनमसि । पवित्रमसि । पावनमसि । तदमुं पवित्रय । कुलाचार  
 रहित मपिदेहि ॥ ❀ ॥ इसमंत्रसे ७ बेर जलमंत्रके कुशाग्रसँ ७ बेर शिष्य  
 को शिंचन करै ॥ ( पीठे ) गुरु पूर्वोक्तप्रमाण मुंजमेखला हाथमें लेके ७  
 बेर मंत्रसँ मंत्रके शिष्यके बंधावे ( मेखला बंधन मंत्रः ) नै पवित्रोसि । प्रा  
 चीनोसि । नवीनोसि । सुगमोसि अजोसि शुद्धजन्मासि । तदमुं देहिनं धृतव्रत  
 मव्रतं वा पावय पुनीहि अत्राह्वणमपि ब्राह्मणंकुरु ॥ इसमंत्रसँ मुंजमेखला  
 बंधावै ॥ ( पीठे ) कोपीन हाथमें लेके वेदमंत्रपढै ॥ ( कोपीन मंत्र ) ॥  
 नै अवह्वचर्य गुप्तोसि । ब्रह्मचर्य धरोपिवा । वृत्तः कोपीन बंधेन । ब्रह्मचारी  
 निगद्यते ॥ १ ॥ ❀ ॥ इस मंत्रको ७ बेर पढके कोपीन पहिरावै ॥ ( पीठे ) गुरु  
 पूर्वोक्त ब्राह्मणवर्ण शदश जिनोपवीत हाथमें लेके वेदमंत्र पढै ॥ ( जिनोपवी  
 तमंत्रः ) ॥ ❀ ॥ नै सधर्मोसि । अधर्मोसि । कुलीनोसि । अकुलीनोसि । सव्रह्म  
 चर्योसि । अव्रह्मचर्योसि । सुमनाअसि । दुर्मनाअसि । श्रद्धालुरसि । अश्र

द्वालुरसि । आस्तिकोसि । नास्तिकोसि । आर्हतोसि । सौगतोसि । नैयायि  
कोसि । वैशेषिकोसि । सांख्योसि । चार्वाकोसि । सखिङ्गोसि । अखिङ्गोसि ।  
तत्त्वज्ञोसि । अतत्त्वज्ञोसि । तद्भव ब्राह्मणः अमुनो पवीतेन ज्वंतु ते सर्वार्थ  
सिद्ध्यः ॥ ५॥ इस मंत्रसे ए बेर जिनोपवीत मंत्रके शिष्यकों धारन करावै  
हाथमें पलाशादि लकमीका दंम देवै ॥ बल्कलचीरादि वस्त्र धारन कराके  
जिह्वा मंगावै (पीठे) गुरु, एक जिनोपवीत रखके (अन्य) मुंजमेखला,  
कोपीन, दंडादिकका मंत्र पढ़के त्याग करावै (तदपनयनमंत्रो यथा) ॥ ५॥  
नै ध्रुवोसि । स्थिरोसि तदेकमुपवीतं धारय ॥ इस मंत्रसे बल्कलवस्त्र दंम  
दिकका त्याग कराके स्वैतवस्त्र पहिरावै (पीठे) शिष्य नमोस्तु १ कहतो  
गुरुके पगामें पमै । नमस्कार करके, सन्मुख बैठे ॥ (तव) गुरु, ऐसी  
शिद्धा करै ॥ (उक्तंच) ॥ परिनिंदा परद्रोह । परस्त्री धन वांछनं । मांसाश  
नं श्लेष्ठ कंद । नक्षत्रं चैव वर्जयेत् ॥ १ ॥ बाणिज्ये स्वामिसेवायां । कपटं  
माकृत्या क्वचित् । ब्रह्मस्त्री भ्रूण गोरक्षा । देवर्षि गुरुसेवनं ॥ २ ॥ अतिथी  
नां पूजनंच । कुर्याद्दानं यथाधनं । अघात्यघातं माकुर्या । मांवृथां परतापनं  
॥ ३ ॥ उपवीतमिदं स्थाप्य । माजन्म विधिवत्कुर्या । शेषः शिष्याक्रमः कथ्य ।  
श्रानुवर्णस्य पूर्ववत् ॥ ४॥ इत्यादि आदेश पूर्वोक्त ब्राह्मणवर्ण सदृश करै ॥  
इहां विशेष विधही सो लिखी है और सर्वविधि पूर्वोक्त जिनोपवीत संस्कार  
मुजंव जाणनी (पीठे) शिष्य, धेनु अन्न वस्त्रादि गुरुकों दान देवै (इतना  
विशेष है) अन्न वटुकरणे । वेदिचतुष्पिका । समवशरण । चैत्यवंदन । व्रता  
नुज्ञां । व्रत विसर्गादिनास्ति ॥ ५ ॥ (श्लोका) पौष्टिकस्योपकरणं । मौंजी  
कौपीन बल्कलं । उपवीतं स्वर्णमुद्रा । गावः संधंस्यसंगमः ॥ १ ॥ तीर्थों  
दकानि वस्त्राणि । चंदनं गर्जएवच । पंचगव्यं बलिकर्म । तथा वेदि चतु  
ष्पिका ॥ २ ॥ चतुर्मुखस्य प्रतिमा । दंम पलाश एववा । इत्यादि वस्त्रसंयो  
गो । व्रतबंधे विधीयते ॥ ३ ॥ ॥ इति वटुकरण विधिः ॥ इत्युपाध्याय श्री  
लक्ष्मीप्रधानगणिः पं । मोहनलाल मुनिः ० जिनोपवीत संस्कार संपूर्णम् ॥

॥ ५ ॥ अथ विद्याध्ययनारंभ संस्कार विधिः ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ प्रथम शुचिदिन शुचिघटी मङ्गल देखके यथाशक्ति लक्ष्मीके वडै



महोत्सवसें मंगलगीतगान पूर्वक स्नान मञ्जन करावै । अन्ना वस्त्र आभूषण पहारावै । ( पीठे ) हाथी घोमादिक असवारी पर चढाके ( अथवा ) प्या दल सर्व सज्जन लोक साथमें होकै । जैनपंथित यती गुरुकेपास लावै खारक खोपरा विदाम मिश्री आदि सुखमीका जरा ऊवां थाल और यथा शक्ति रोकनाणो गुरुके जेठ करै विनयसंयुक्त वंदन नमस्कार करै ( तवगुरु ) अपने वामपाशे कुशारासनपर शिष्य लडकैकों बैठाकै तिसके दक्षिण कर्णकों केशरादिक सुगंधी द्रव्यसें पूजन करके सरस्वतीका मंत्र तीनवेर सुनावै पढावै ॥ ( सरस्वतीदेवी मंत्रोयथा ) ॥ ॐ ॥ ॐ ह्रीं श्रीवद्वद् वाग् वादनी वागीश्वरी श्री सरस्वत्यैनमः ॥ ॐ ह्रीं ऐं हंसवाहन्यैनमः ॥ ॐ ॥ इस मंत्रकों सातवेर पढाकै सरस्वती देवीकों नमस्कार करावै पूजन करावै ( पीठे ) काव्यादिकसें गुरुकी स्तवना सुनावै पढावै ( यथा ) ॥ अग्यान तिमिरांधानां । ज्ञानांजन शलाकया । नेत्रमुन्मीलितयेन । तस्मै श्रीगुरवेनमः ॥ १ ॥ यासां प्रसादा दधिगम्य सम्यक् । शास्त्राणि विंदन्ति परंपदज्ञा । मनीषितार्थ प्रतिपादकास्यो । नमोस्तुतास्यो गुरु पादकास्यः ॥ २ ॥ इति मत्वात्वयावत्स । त्रिसंध्योपासनं गुरौः । विधेयं येन जायते । गीर्धीः कीर्ति धृति श्रियः ॥ ३ ॥ ऐसीशिष्या गृहीगुरु जैनपंथित देके आचार्य उपाध्यायकेपास लावै ( तव ) जैनगुरु आचार्य उपाध्यायादि शिष्यके मस्तकपर वर्द्धमान विद्यासें मंत्रके वासक्केप करै ( और ) तीनवेर कानमें नवकार मंत्र सुनावै ( पीठे ) ॥ ॐ नमःसिद्धं ॥ अ आ इ ई—इत्यादिक अक्षर विन्यासका जेद समजावै अर्थ सुनावै हाथसें लिखावै ( प्रथम स्वर ) १४ अ । आ । इ । ई । उ । ऊ । ऋ । ॠ । ए । ऐ । ओ । औ । अं । अः ॥ ॐ ॥ ( व्यंजन ३३ ) क् ख् ग् घ् ङ् इत्यादिक अक्षरोंमें अ आ इ ई आदि स्वर मिलानेसें तथा पूर्वस्वर दैनेसें बोलनेमें आता है ( यथा ) ॥ क्, अ । क ॥ क्, आ । का ॥ क्, इ । कि ॥ क्, ई । की ॥ क्, उ । कु ॥ क्, ऊ । कू ॥ क्, ऋ । कृ ॥ क्, ए । के ॥ क्, ऐ । कै ॥ क्, ओ । को ॥ क्, औ । कौ ॥ क्, अं । कं ॥ क्, अः । कः ॥ ॐ ॥ क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ॥ इसीमाफक सर्व अक्षरोंकी बाराखमी ऊस्व दीर्घ जेदसें समजावै लृ लृ समेत १६ स्वरमे अ । इ । उ । ऋ । लृ । यह

पांच स्वर निकेवल ( वा ) व्यंजन अक्षरमें मिला जुवा फ़स्व कहियै ।  
शेष ११ स्वर दीर्घ कहियै ॥ ५५ ॥

॥ ५५ ॥ अथ चोले ककानो अर्थ लिख्यते ॥ ५५ ॥

॥ ५५ ॥ प्रथम दोय लिंटी लिखते है, जिसकों (रिखी सिंधी) बोलते है॥  
हे नव्य इसका अर्थ जीवनी दोय राशी है । एक सिधनाजीव निस्कर्मी,  
दूसरा संसारीजीव सकर्मी, जाणना ॥ १ ॥ ( ८ चले ) अरे जीवतुं सिधजीवों  
की राशीमें मिलनैकी इच्छा रखना ॥ २ ॥ ( मीमुं ० ) संसाररूप गोलाकारे  
एक उमो गहरो कूपहे तिसमेंसे निकलनैका एक छिद्र है जोतुं संसाररूप  
छिद्रसँ निकलैगा ॥ तो सिधोंमें मिलैगा ॥ ३ ॥ ( विलामी ) सोजेसँ कूवैमें  
पनी ऊई वस्तु लोहेकी विलामी सेती निकाले, तैसे इहां संसारी जीवोंकों  
संसाररूपी कूपमेंसँ निकालनैकी । प्रथम देशविरति, दूसरी सब विरति रूप  
विलामी दोजाणनी ( अब सिधोंके जीव कहां रहतेहै ) सो कहतेहै ( उ  
गण चोटियो, माथे पोटियो, उँ ) चवदे राजर्लाकका तीन जाग, अषो  
लोक पाताल, मध्यलोक मनुष्यक्षेत्र, उर्ध्वलोक वैमानिकदेव, एवं उर्ध्वलो  
कके चोटीके स्थानके वारा योजन विस्तारकी तनु पझारानामें पृथ्वी हे  
तहां एक योजनके चौबीसमें जाग ३३३ धनुष, ऊपर वत्तीस अंगुल,  
इतने विस्तारमें सिधोंका सब जीव अलोकसँ जिडके रहेहै ( ननोवीटालो )  
हे जीव तुं संसारके काम जोगमें मग्न होके मोहजालमें फसा जुवा रह  
ताहे जिससेती अवोगति नरकगतिकों प्राप्त होताहे ( ममो मानलो )  
यह संसार जीवनो अनादि घरहे जिसमें मोहनामें मानलो ( नाम )  
मामो है ॥ ७ ॥ ( ममा हाथे दो लाडुवा ) जो मोह नामें मामोहेसो जी  
वांकुं काम जोग रूप दोय लामू हाथमे देके जोलायके अपनै वसमें रख  
ताहे ॥ ( सिधैराणी चोकनी ) क० सिधैरूप राणीके मंदर चढने मोह  
राजायें चार कषायरूप चोकनी पहायत रखी है । इससँ कोई  
जीव उंचो चढे ( तोपिण ) जीवकों उंचो सिद्धिगति जानै न देवे ॥ ८ ॥  
( पाठी चार कुंमावली ) सा कषाय चोकडी जीवकों इग्यारमें गुणठाणेंसँ  
पीठे संसाररूप मिथ्यात गुणठाणेंमें लायनाखे ॥ १० ॥ ढाउं ढाउं ढोकलो  
माथे ब्रेकरो ) रे जीव तुं संसारमें वेर वेर जन्ममरण करनेसँ ढोकलाकी

तरे सीऊतो थको महाडुख भोगवतो रहेगो और पुत्र पुत्री आदिक कविटी वना तुमारे मस्तक पर पमेगी (इसवास्ते) सधर्म चक्रवर्ती महाराजको जासि द्विनगरहे सो देखनेकी इच्छा होय तो प्रथम महामंत्रीश्वर श्रीसम्यक्तके साथ मिलापकर (सो) तुमकों धर्म महाराजासँ मिलाप कराय दैगा (परंतु) सम्यक्त मंत्रीश्वरके मक्कान जातां थकां रस्तेमें कषायादिक वज्रत विघ्न करनेवाला रहताहे उसकों जीतनेका उपाय कहताऊं ॥११॥ ( हाथमां दो मांगमी ) क० धर्मकथा सुनके, यथा प्रवृत्ति करण तथा दूसरो अपूर्वकरण सुन्नपरि णामरूपी मांगडी अर्थात् मुजर हाथमें लेके चलना ( आईमा दोनाईमा बमो जाइकांनो ) जो रस्तेमें विघ्नकरनेवाला राग, द्वेष, रूप दोनाईमा मि ले जिसको पठाडके दूर करना (फेर) अनंतानुबंधी क्रोध, मान माया, लोभ, मिथ्यात, मिथ्र, सम्यक्त मोहनी ॥ यह सात प्रकृतिरूप चोरोकाद्वय करना इसमाफक अपूर्वकरण मुजर सेती रागद्वेष कषायादिक मिथ्यातकी गांठ जेदनकरके आगे चलिये सो तुमकों सजुणनिवासमे महामंत्री स्वर सम्यक्त नामें पांचरूप करके बैठाहे उसका दर्शन मिलेगा ( पीठे ) तुं सदैव सुख दर्शनकी सेवामे रहेगा तो कोईवेर तुमारी योग्यता देखके जो चारित्रधर्म राजाकी दो पुत्रीयों है ( इकडी वाई तनुअंगी, वडी इकमी स्वीकारो ) लघुपुत्री देशविरति और वमी पुत्री सर्व विरति इन दोनोंमें जिसपर तुमारा अंतष्करण खुसी होगा उसी कन्याके साथ विवाह करदेगा परंतु एकाग्र चित्तसँ सम्यक्त मंत्रीश्वरकी आग्यामें चलतो रहिये सो सदृशन तुमारेपर सदैव खुसी रहै ( उकार केवल आंकोमा, वमे ऊकार फांकोडा ) जो शंका कंखा, विति गिज्ञा, कषायादिरूप आंकोमा फांकोमाकी संगत करेगा तो स धर्म मंत्री तुमारेपर नाराज होगा (इसवास्ते) शंका कंखादि सब दूषणोंसँ अलग रहिये ( ऊकार वाई नाचणी, वमी ऊकार पांचणी ) फेरममता माया, रूप दोय जहरकी बेलहे जिसमें विषय, रूप ( अथवा ) काम, भोगरूप, दोय सर्प सूताहै जिनांकों कच्ची जगाना ठेकनामत ( जिससँ ) तुमारेपर सधर्म मंत्री प्रशन्न होकर सिद्धिनगर जाते अच्चे सथवारेको साथ करदेगा ( ऐन बैन दोगामी, वमी गामीमात्रा ) और सुमति, गुप्ति, रूप दोयगामी चढने वावत देवेगा ( न रखवाला बलदिया, वमे वेगम जोतिया ) सो दोनुं

गामीके ज्ञान, चारित्र, रूप दोबलध जोतेगा ( अं अः दो रासमी ) जिनोके संवर निर्झरा रूप दो रासमी लगाके सिद्धिनगरके मार्गकों चलावजे ॥ २० ॥ ( कको केवलो ) परंतु केवल ग्यानरूप बोलावे विगर सिद्धिनगर पोंहच शका नहिं ( इसवास्ते ) केवल ग्यानकों साथ लेनेका उद्यम करजे । सो केवल ग्यान सुधजाव ( तथा ) इच्छा रोधन तप करनेसे साथ चलेगा ॥ २१ ॥ ( ख कवो खाजूलो ) इससेती सुधजावसे तपस्या करेणा परंतु चार प्रकारके आहारको स्वादी तथा रसनेंद्रियको लोलुपी होणा मति ॥ २२ ॥ ( गगा गुरुजन पायपसायें ) संपूर्ण धर्मकार्यका वताने वाला गुरुमहाराजकुं मोटा उपगारी समझके । सेवा, नकि, वज्रमान करतो रहिये ॥ २३ ॥ ( घग्घो घरट पलाएजोयाय ) ओरे जीव तुं घरको धंधो आरंभ समारंभरूप नार सेती रातदिन पलाएयो थको डख भोगवेहैं । इस डख सेती गुरुमहाराज ठेकावेगा ॥ २४ ॥ ( ननि उ आमण दूमणो ) परंतु संसारका डख मिटानेकों गुरुमहाराज पांच अणुव्रत, ( अथवा ) पांच महव्रतरूप, अजिग्रह नियमादिक अंगीकार कराया होय । उस व्रतोंको पालन करनेमें आमण दूमणो ( अर्थात् ) पश्चात्ताप मति करजे ॥ २५ ॥ ( चच्चा चितनी चौपडी ) निरंतर गुरुदत्त चारित्र धर्म पालनेको चितमें चौप राखजे ॥ २६ ॥ ( ठठा विद्या पोटलो ) ठद्वस्थपणामें चारित्र पालतां, गुरुकेपास श्रुतज्ञान चतुर्दपूर्वका वज्रत अज्यास करके विद्याको पोटलो बांधिये ( अर्थात् ) विद्याको संचय करजे ॥ २७ ॥ ( जज्जो जे शल बाणिउ ) कण विद्या को संचय करतां, मायाशल्य, नियाणाशल्य, मिथ्यादंशण शल्य, रूप तीन वैरियोंको दिलसे दूर करनेका वणिज बोपार करजे ॥ २८ ॥ ऊओ ऊारी सारिखो ) कण निरंतर ऊारीके समान स्वभाव धारन करजे ( जैसे ) जल जरनेकी ऊारी होती है जिसका मुंहतो सांकमा होताहै । और पेट मोटा होताहै ॥ ( तैसे ) तुं पिण मुहकों संकोचमें रखिये ( अर्थात् ) वेविचारसे असत्य मर्मभेदक वचन मतबोलिये ( और ) पेट मोटो रखजे । सर्व कीवात पेटमें धारन करजे ॥ २९ ॥ न नीयो खांमोचादे ) कण अर्द्धचंद्र के समान लोकके चोटीके स्थानक सिद्ध शिलाहै । उहाँ जानेकेवास्ते निरंतर उद्यम करतो रहजे ॥ ३० ॥ ( टट्टा पोली खांडेपु ) व्रत

पञ्चखाण रूप प्रौल दरवाजैकों दृढ राखिजे ( अर्थात् ) जो गुरूकेपास  
 व्रत पञ्चखाण धारन किया ( वा ) करै । सो निश्चल चित्तसँ पालिये । जाव  
 जीव खंमनमति करजे ॥ ३० ॥ ( ठग ठोवरगाडुन ) क० तुं जागा ऊवा  
 घमकेसमान मति ऊइए ( अर्थात् ) गुरूके दीवीनई शिख्यारूप जलकुं  
 हृदयरूप घटमें स्थिर राखिजे ॥ ३१ ॥ ( ममा मामर गांठ ) तुं  
 बाससँ जूटा आमंवर करके अग्र्यंतर कर्मकी गांठ मति बांधजे ॥ ३३ ॥  
 ( ढह्वा श्वानको पुंठमो ) क० स्वानकै पूंठडा समान वक्र स्वभाव धारन मत  
 करजे ॥ ३४ ॥ एणो ताणो सेले ) क० ग्यान, दर्शन, चारित्र, ( तथा )  
 त्रिण गुतिरूप शैला हाथमें लेके मोहराजाकेसाथ युद्ध करजे ॥ ३५ ॥  
 ( तत्तो तावै तेले ) क० तप, जप, करतां कोईका कठोर वचन सुनके तपा  
 ऊवा तैलकीपरै क्रोधसँ तप्तवान् मति ऊइए ( क्युंकि ) क्रोमवरस तपस्या  
 करी नई । क्रोधादिकषाय संजोग खिणमे निःफल होजातीहै । इससेती  
 कषायादिकसँ दिलकों तप्त मति करजे ॥ ३६ ॥ ( थत्था थिर तन वोल )  
 क० कदाचित् थारो, मन, एकस्थान न रह सके ( तथापि ) वचन, काया  
 कौंतो थिर रखजे ( अर्थात् ) वचन कायासँ कुकर्ममति करजे ॥ ३७ ॥  
 दहीयो दीवटो ) क० हृदयरूप अपनै घरमें समकितरूप दीपक अखंम  
 रखजे ( क्युंकि ) दर्शन सहचारी ज्ञान है । ज्ञान सहचारी दर्शन है ( यह )  
 दर्शन, ज्ञानके, अखंम ज्योतसँ संपूर्ण धर्ममार्ग प्रकाश होता रहेगा ( यउक्तं )  
 दानं दया दमद्रीणां । दर्शनं दैवपूजनं । दकारापंचकुर्वति । दुर्गतिं नैवगच्छति  
 ॥ ३८ ॥ ( धहीयो धाणको ) क० परिग्रहादि संचयकारक । नरक निगो  
 दादि दुःखदायक । आर्तध्यान, रोद्रध्यानकों दूरकरके । शिवसुखदायक धर्म  
 ध्यान, शुल्कध्यान, दिलमें धारन करजे ॥ ३९ ॥ ( ननियो पुलायरो ) क०  
 निरंतर जीवास्तिक बुद्धी धारनकरके नास्तिक मति दूरकरजे ( अर्थात् ) ना  
 स्तिक बुद्धीकों दूर करके समकित निर्मल करजे ॥ ४० ॥ ( पप्पा पोली  
 पांटे ) क० । पाप आनैका पांच आश्रवधारकों संवररूप कपाट लगाके  
 बंधरखिये ( परंतु ) खुला मत रखिये । जो पांच आश्रवधारकों खुला रखेगा तो  
 अगै पापस्थानक रूप चौर । थरै हृदयरूप घरमें आयके धर्म धनकों  
 नाशकर देगा ॥ ४१ ॥ ( फप्पा फगमे जोडे जाय ) क० मिथ्यामत फा

सीमें फसानेवाले । अविनीत, अनाचारी, एकांती, पुरुषोंकी संगत करैगा (तो) तेरा धर्मधन तीनके हीनगतिमें नमावैगा (इससे) दुष्ट अधर्मी जनकी संगत मति करजे ॥ ४१ ॥ ( वच्चा मांहे चांदणो ) क० हृदयरूप घरमें बोध बीज गुणकी वृद्धी करजे । बोधबीजकी वृद्धी होनेसे चंद्रकलावत् दिन दिन ज्ञानका प्रकाश वृद्धीमान् होता रहैगा ॥ ४४ ॥ ( नछो नारी जैसको ) कंद, मूल, मांश, मदरादि, अन्नक, अनंतकायादिक, नक्षत्रण करके जैसाकी तैरे पुष्ट शरीर मति करजे ( जो मांश मदरादिक अन्नक वस्तु नक्षत्रण करैगा ( और ) वे अर्थ अनंत जीवोंका बाण करैगा ( तो ) अंतमें महाडुःखदायक नरक निगोदादिक गतियोंमें परिभ्रमण करता महा डुःखी होगा ( तथा, नञीयो नाट चूलेतरो ) क० जैसें नमजुंजैकैचूलेकी नाट धगधगती जलती रहतीहै ( इसीतरै ) तु व्रत नियम पाळता तपस्या करतां कोईका आक्रोश असह्य मर्म बेधाला वचन सुनके । कषायाश्रिसें आत्माकों तप्तवान् मतिकरजे ( कदाचित् ) क्रोधादिक अश्रिसें आत्मा तप्तवान् होय ( तो ) उपशम क्षमादिक गुणरूप जलसें शीतल करजे ( परंतु ) कषायाश्रिकों वधनें मति दीजे । चार कषाय जीवकों महाडुःखदायक है ( यडुक्तं ) कोहोपीष्पणासेइ । मानो विनयनासणो । मायामि चाणि नासेइ । लोहो संवविणासणो ॥ १ ॥—॥ ४४ ॥ ॥ ( ममयीयो मोचक ) क्षमादिक गुण धारके अष्टकर्मको मुक्त करजे ( अर्थात् ) अष्टकर्मका क्षय करजे । मोक्षमार्गका आदर करजे ॥ ४५ ॥ ( ययीयोजामो पेटको ) कृतांत कर्मरूप यमराजको पेट मोटो है । जगत्र जीवोंको आस करताहै ( तोनी ) काल, जीवोंको नक्षत्रण करनेमें अप्रमादी रहता है ( इस सेती ) कालयमराजको जीवमें जय रखके । जिनधर्मको अप्रमादी होके सेवन करता रहना ॥ ४६ ॥ ( रायरो कटारमल्ल ) राग, तथा द्वेष यह दोनुं मोह राजाका मोटा मल्ल है ( यह ) दोनुं मल्लकों जीतेगा तो केवल ज्ञान पायके संसार कर्मसें मोक्ष होगा ॥ ४७ ॥ ( लल्ला घोमो लात वावे ) तथा तुं लोचरूप घोडाके लातसें दूर रहजे । जो लोचन घोमापर बज्रत चढैगा तोतेरैकं जन्ममें ऐसा नमावैगा ( किंतु ) बरे बरे जन्म मरण कुगतीमें करतां महाडुःख पावेगा ( लोचमल्लानि पापानि ) सर्व पापकामूल

अति लोभ है (इससे) अतिलोभसे सदा दूर रहजे । संतोषान्नपरं सुखं इति तत्त्वं ॥ ४८ ॥ ( ववा विंगण वासदे ) तथा अपना मन मंदरमें विवेकादिक गुण समूहकों रैवास दीजे ( परंतु ) निर्विवेकसे कामादिक विंग दूषणको निवासमत दीजे ( जो ) कामादिक व्यंग चोरोकुं मन मंदरमें रखेगा ( तो ) तुमारा आत्मगुण सर्वकों विच्छिन्न कर दैगा ॥ ४९ ॥ ( शशाकोटा मरमिया ) जैसें शिशिला जिनावर कोट नाम अपनी नशकों कानोंसे ठकके गलियार जुवा थका पमा रहै । तब कोईवेर अकस्मात् पारधी आयेके गलामरोम मार देताहै ( इसीतरै ) तुं आलस्यादि १३ काठियादिक केवस गलियारहोके अपना धर्मकृत्यकों मत ठोमिये ( जो ) अपना अवश्य धर्मकृत्य ठोडके आलस्यादिकमें गलियार होगा ( तो ) अकस्मात् कालरूप पारधी मारके नरक निगोटादिक दुर्गतिमें पोंहचावैगा ॥ ५० ॥ ( पषा खूणेंचीरिया ) कच्ची प्रवृत्तपणें खूणेंमेंची वैठके अपना व्रतादिक धारन किया जुवाकुं दूषण मत लगाइये, सत्य बोलजे, ऊठ कच्ची मत बोलजे । जो व्रतादिककों दूषण लगावैगा (और) असत्य बोलैगा तो क्रमसें सब आत्मगुण चलाजायगा ( जैसे ) कोथला धानका जैरा जुवा होय उसका एक तरफ खुणा फाटणेंसें क्रमसें सर्वधान निकल जाता है ( तैसें ) एक असत्यके बोलनेसें सर्व व्रत गुण चला जाता है ( इहां ) वसु राजाका दृष्टांत चित्तमें जावन करजे ॥ ५१ ॥ ( सारसेर दंती ) तथा सत्य शील संतोषादिक गुण धारन करके । मोहराजाकी सेन्याकेसाथ युद्ध करजे । और युद्ध करतां दंती नाम हस्तीकी परै साहसीक रहजे । कायरहोके पीठापग मतदीजे । मिथ्यात्वका ह्दय करजे ॥ ५२ ॥ हाहोलो हरिणैकलो ) जैसें हिरण, पारधी आहेडीकों देखके तत्काल दूर जाग जाताहै ( इसीतरै ) मोहरूप पारधीकों देखके दूर जागिये ( परंतु ) मोहपारधीके फासमें मत पमिये ( जो ) फासमें पमेगा तो संसारबंधनसें कच्ची बूटेगा नही ॥ ५३ ॥ ( छावै लह्वी दोपणिहार ) जो तुं मोहका अजिलाखी होके संसारबंधन का छेदन करेगा ( तो ) द्रव्य, जाव दोनुं प्रकारकी लक्ष्मी थारै पणिहार मुजब बनी रहेगा ( जैसें ) भरतजी अनुत्तरादिक उत्कृष्ट देवसुख तथा चक्रवर्ति आदिक उत्कृष्ट मनुष्य जवरूप द्रव्य लक्ष्मीको जोगके सिद्धरूप

जाबलदमीकों जोगवनेवाला ऊवा ( तैस ) तुं पिण दोनुं लक्ष्मीकों जोगवने  
 वाला होगा। अब सिद्धका सुख कोनप्रकारसे प्राप्त होय सो कहतेहैं॥ ५४॥  
 ( खनिया खाटक मोर, गलेघतांन मोर, पालेबाधा दो चोर ) प्राणाति पाता  
 दि रात्री जोजनपर्यंत खटवत रूपमोर सर्वे गलेमें धारके। खट कायजीवोंकी  
 दया पालना (और) रागद्वेषरूप चोरोंकुं बांधके अंतमें क्षय करना (क्युंकि)  
 रागद्वेष चौर है सो ग्यानादिक संपूर्ण गुणोंका चोरनेवाला है ( जिसदिन )  
 रागद्वेषरूप दोनुं चोरोंकाक्षय करके चार धनघाती कर्मोंका क्षय करैगा  
 ( उसीदिन ) तेरेकों लोकालोक प्रकाशक केवल ग्यान उत्पन्न होगा ( पीठे )  
 शेशरहा चार कर्मका क्षय करके अक्षय सुख सिद्धि अवस्थाकों प्राप्त  
 होगा ॥ ५५ ॥ ❀ ॥ ( मंगल महाश्री, देविद्यापरमेश्वरी ) सिद्धिस्थानमें  
 जानेंसें परम मंगलीकरूप जाबलदमीका चरतार होगा ( अर्थात् ) अपना  
 आत्मगुण अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतचारित्र्य, अनंतवीर्य, अगुरुलघु,  
 अरूपी, अखंड, अव्यय, अजर, अमर, अविनाशी, परमानंदरूप, जाबल  
 दमीकों सादि अनंतजागै अनंतसुख जोगवता रहेगा ( इसवारेते ) जिनधर्मकुं  
 सुनतो, पढतो, धारतो, पालतो, हरहमेश रहिये और नीतिमुजब चलजे  
 ( ज्युं ) तेरा दिन दिन तपतेज बधता रहेगा ॥ ❀ ॥ इसीतरै क्रमसें चारुं  
 वर्णोंको लिखना पढनादि अनेक तरैकी कला उपाध्याय जैनपंथित सि  
 खावै । ब्राह्मणोंको वेदविद्या धर्मशास्त्र पढावै ॥ ( क्षत्रीकों ) धर्मकृत्य आ  
 युर्वेद । धनुर्वेद । दंमनीति । आजीविकादि विद्या पढावै ॥ ( वैश्यकों ) धर्म  
 कृत्य शास्त्र, नीतिशास्त्र, गणितशास्त्र आजीविकादि विद्यापढावै ॥ ( सुद्रकों )  
 नीति, गणित, धर्मकृत्य, आजीविकादि कला पढावै ॥ इसीतरै लम्बेकों म  
 होत्तब संयुक्त जैनपाठशाला लायके आचार्य उपाध्यायादि जैन पंथितके  
 पास प्रथम विद्याध्ययन प्रारंभ कराके पीठे महोत्तवादियुक्त अपने घरजावै ।  
 जैन पंडितोंको यथाशक्ति द्रव्यादि दान देवै । साधु गुरुकों सुख आहार  
 वस्त्रादिक दान देवै । ज्ञान वृद्धी करै पुस्तकादि दान सर्व पाठशालाका लेखा  
 लियां देवै ॥ ( संस्कारोपकरण संग्रहीत श्लोकः ) ॥ पौष्टिकसंयोजन ।  
 गीतं वादित्रमेवच । मंत्रोपदेशः पाठस्य । संस्कार वस्तु संग्रह ॥ ❀ ॥ इत्यु  
 पाध्याय श्री लक्ष्मीप्रधानगणिः पंथित मोहनलालमुनिः आचारग्रंथात्संग्रही



कृते आचाररत्नाकर प्रथम प्रकारो त्रयोदशम पाठशाला महोच्च विद्यारंज  
संस्कार संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चतुर्दशम विवाह संस्कारविधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इस जगत्के बीच जिसका कुल ( और ) शील समान होय  
उसीका परस्पर विवाह होताहै ( उक्तंच ) ययो रेव समंशीलं । ययौरेव समं  
कुलं । तयोन्मैत्री विवाहश्च । नतुपुष्ट विपुष्टयो ॥ १ ॥ ( इससे ) प्रथम वर  
कन्या, दोनुंका कुल, शील, जाति, देश, कृत्य, धर्म, समान देखके विवाह  
करना चाहियै ( तथा ) । वर, कन्या, जिसका विक्रित कुल होय । उसका  
त्याग करै ॥ अब विक्रितकुलका लक्षण देखातेहै ॥ जिस कन्याका पिताके  
रोम वज्रत होय । हरस रोग होय । वज्रत खाटरा होय । खर्जरोग होय ।  
स्वेतकुष्ठि नेत्र नदर आदिका मोटा रोग होय । ऐसे कुलकी कन्या ग्रहण न  
करै ॥ अब विक्रित कन्याका लक्षण कहतेहै ॥ जिस कन्याका कोईन्नी  
अंग न्यून अधिक होय । दूषणयुक्त होय । ऊर्ध्वदृष्टि होय । मोटे कोई रोग  
होय । कपिलादि कुष्ठितवर्ण होय । जिसका हस्तफरस ( वा ) वचन  
प्यारा नलगता होय । ( तथा ) देवताका । ऋषियोंका, नदीका, अशिका,  
वृद्धका ॥ कन्याका नाम रख्या होय ( जैसे ) लक्ष्मी, सरस्वती, पार्वती,  
यमुना, मथुरा, इत्यादि नाम होय । सरीरमें रोम वज्रत होय । नेत्र पीला होय ।  
घर्घरी स्वरसें बोलती होय । ऐसी कन्याकों निर्विकार कुलवाला ग्रहण न  
करै ॥ अब वरका विक्रितकुल देखातेहै ॥ हीन कुल होय । दारिद्र्ययुक्त  
होय । सातव्यशनयुक्त होय । मातापितादिकके सरीरमें मोटा रोग होय ।  
कुलमें मितष अल्प होय । ऐसे कुलमें कन्या न देवै ॥ अब विक्रित पुरुषका  
लक्षण देखातेहै ॥ मूर्ख होय । निर्धन होय । दूरदेशांतर रहता होय । सूर  
वीर होय । मोक्षान्निदायी तपस्वी होय । कन्याके वर्षासें त्रिगुणावरण उपरांत  
होय । मोटा रोग कोई होय । ऐसा वरकों उत्तम निर्दूषित कन्या न देवै ॥ अ  
ब विशेष कहतेहै ॥ ( जो ) वर, कन्या, दोनुंका निर्विकार कुल होय तो विवाह  
संबंध करै । ( अथवा ) दोनुंका सविकार कुल होय तो विवाहका संबंध करै ॥  
( पुनः ) वर, कन्याके परस्पर पांचप्रकारकी शुद्धिकों देखके संयोग करना चा  
हिये ॥ सो पांच प्रकार कहतेहैं ॥ राशीमेल देखना १ ॥ योनिमेल देखना २ ॥

नाडीमेल देखना ३॥ गुणमेल देखना ४॥ वर्गमेल देखना ५॥ (पुनः) वरका ७ गुण देखना सो कहतेहैं ॥ कुल अज्ञा होय १॥ शीलस्वभाव अज्ञा होय २॥ कौटुम्भी श्रीमंतकी जिसके सहायता होय ३॥ विद्यावंत होय ४॥ धनवान ५॥ सुंदर शरीर अंगोपांग होय ६॥ वय ठोटी होय ७॥ यह ७ गुणकों देखके कन्या दान करना । उपरांत कन्याका जाग होय सो काम आवै ॥ गन्नाधानसें ८ आठमा वरपसें इग्यारमा वरपर्यंत कन्याका विवाह करदेना चाहियै ( इस युगमें ) वारमा वरप उपरांत कन्याकों रजस्वला संज्ञाहै ( जो तपमें कहाहै ) अष्टवर्षा नवेतुगौरी । नववर्षाच रोहणी । दशवर्षा नवेतु कन्या । तत्तुर्द्ध रजस्वला ॥ १ ॥ वारमा वर्षसें उपरांत कन्याका विवाहमें मज्जुर्त्तादिकका काम नहिं । उठव कियेविगर एक चंद्रवलकों देखके विवाह कर देना ( और ) पुरपका १८ वरप उपरांत विवाह करना चाहिये ( जो ) ठोटी अवस्थामें विवाह करै ( तो ) शरीर विद्यासंवंधी हानी होय ॥ ॥ ॥ विवाह दोप्रकार केहैं । आर्य १ अनार्य २- ( आर्यके ४ भेद ) ब्राह्म १ । प्राजापत्य २ । आर्य ३ । दैवत ४ । यह चार प्रकारके धार्मिक विवाह सोतो मातापिताकी आज्ञासेंहोतेहैं ॥ ( अनार्यके ४ भेद ) गांधर्व १ । असुर २ । राक्षस ३ । पैशाच ४ । यह ४ प्रकारके पापविवाह सो वरकन्याकी स्वेच्छासें होतेहैं ॥ ब्राह्मविवाह विधीके लक्षण देखातेहैं ॥ शुभदिने । शुभलभे । पूर्वोक्त गुणयुक्त वरकुं बोलायके स्नानालंकृतयुक्त करके । अलंकारसहित कन्याका दान करै ॥ ( मंत्रौघ्या ) ॥ ॐ अहं सर्वं गुणाय । सर्वं विधाय । सर्वं सुखाय । सर्वं पूजताय । सर्वं शोभनायतु । सवस्त्र गंध माट्यालंकारालंकृतां कन्यां ददामि । प्रतिगृह्णीष्य नद्रंजव । अहं ॐ ॥ ॥ ५ मंत्रेण वधांचलौ दंपती स्वगृहं गन्ततः ॥ यह ब्राह्मविवाह कहा ॥ १ ॥ अरु प्राजापत्य विवाह जगतमें प्रसिद्ध है । उसीकाहीज व्यवहार चलताहै उसीका लक्षण आगे कहेंगे ॥ २ वनमें रहे ऊँचे वानप्रस्थमुनि गृहस्थकी कन्याकुं परणीजतेहैं । इस विवाहके मंत्र जैनके वेदमें नहींहैं । किसवास्ते कि जैनमें मुनीयोंका विवाह अकल्पनी कहै ॥ ३ ॥ दैवत विवाहकेलक्षण—पिता आपके पुरोहित इष्ट व्रतकर्मके करनेवारेंकुं आपकी कन्या दक्षिणाकी परै देवै ॥ ४ ॥ यह ४ धार्मिक विवाहके लक्षण फहे ॥—अब पापविवाहके लक्षण देखातेहैं ॥ मातापिताकी

अप्रीतिसैं ( अरु ) वरकन्याकी परस्पर प्रीतिसैं होना ( सो ) गांधर्व विवाह कहिए ॥ १ ॥ पिता वरकेपास पण बंधकरै । हम तुमारेपास अमुक वस्तुकुं लेगे । ऐसा निश्चय करके कन्यादेनी । वोआसुरी विवाह कहिये ॥ २ ॥ हठकरके कन्या ग्रहण करना । सो राक्षसी विवाह कहिये ॥ ३ ॥ मदीन्मत्त कन्याको करके उसका ग्रहण करना सो पैशाचिक विवाह कहिये ॥ ४ ॥ इस चारकों पापविवाह कहतेहैं । माता, पिता, गुरुकी आज्ञा रहत पणसैं ( और ) ब्राह्म १॥ आर्ष २॥ दैवत ३॥ ए तीन विवाह कलयुग दुखमा कालमें प्रवर्तमान नहिं है ( और ) चारेपाप विवाहमें अधर्मत्वपणैसैं वेदोक्त विधि नही है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अब प्राजापत्य विवाहकी विधि विस्तारसैं लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम वरकन्याके नामसैं विवाह योग्य शुभ मङ्गल देखके विवाहसैं कईदिन पहले वरकन्या दोनुंपक्षके सर्व स्वजन संबंधी इकठे होके अपना जोतषी गृहीगुरुको उत्तमासनपर बैठायेके उसीके हाथसैं विवाहलग्न लिखावै । ( पीठे ) उस लग्नको रुप्य सुवर्ण मुद्रासैं ( तथा ) फल पुष्प, डूर्वादिकसैं, जन्मलग्नकीतरै पूजन करावै ( तदनंतर ) वर, कन्या दोनुं पक्षके वृक्षपुरुष अपना जोतषी गुरुको वस्त्र, अलंकार, तांबूलादिक यथाशक्ति दान देवै ( पीठे ) कन्याके कुलमें जो वृक्षपुरुष होय ( सो ) वरके कुलमें वृक्षपुरुषकों नालेर, सोपारी, ब्रीही, दूर्वा, हरिद्रादानसैं ( और ) स्वस्वदेश कुलोचित आचारसैं कन्या दान करै तब गृह्यगुरु ऐसा वेदमंत्र पढ़ै ॥ ॐ अर्धं परम सौभाग्याय । परमसुखाय । परमज्ञोगाय । परमधर्माय । परमयशसे । परमसंतानाय । जोगोप जोगांतराय व्यवहृदाय । इमां अमुक नाम्नी कन्यां । अमुक गोत्रां । अमुक नाम्ने वराय । अमुक गोत्राय । ददाति । प्रतियहाण अर्धं ॐ ॥ इसीतरै वर कन्याको प्रथम विवाह संबंध करै ॥ विवाहसंबंध ऊए पीठे विवाहतो कितनाही दिन पीठे होताहै । परंतु कन्याको पिता कन्याको दान जिसकेनामें कर चुको उसीकों परणावै । उसी कों ठेम्के कोई प्रकारका लोभ बस होकर दूसरैकों संबंध करी ऊई कन्या नहिं दे शक्ताहै ( उक्तंच ) शक्रज्जल्पन्ति राजानः । शक्रज्जल्पन्ति साधवः । शक्रव कन्या प्रदीयन्ते । त्रण्येतानिशक्रव शक्रव ॥ १ ॥ ( तथा )

वरके घरसें वस्त्र, आभरण, सुगंधी वस्तु, कांगसी, इत्यादिक वस्त्रे उज्ज्वल संहित कन्याके घरकों जेजै (पीठै) कन्याको पिता कुटुंबसहित वरकों भोजन करावै । यथाशक्ति वस्त्राभरणादि दान देवै ॥ ३५ ॥ इति विवाहसंबंध विधिः ॥

॥ ३६ ॥ अब विवाहके प्रथम कार्य करनेकी विधिः ॥ ३६ ॥

॥ ३६ ॥ विवाहके प्रथम १५ ( वा ) १३ ( वा ) ११ ( वा ) ए ( वा ) ९ दिवस पहले शुभ मङ्गल । वधु, वरके घरमें । मंगलीकगीत वाजिज वादन पूर्वक तैलान्नपेक स्नान विवाह पर्यंत नित्य करनेका प्रारंभ करै ( प्रथम ) तैलान्नपेकदिने वरके घरसें । कन्याके घरकुं । तेल, कांगसी, गंधवस्तु, द्राक्षादिखाद्यवस्तु ( तथा ) शुद्ध फल पुष्पादिक भेजावै । सर्व कुटुंबके पुरुषस्त्रीयां इकठे होके । वरपक्षी कन्याके घरकुं । ( और ) कन्यापक्षी वरके घरकुं, तैलादि पूर्वोक्त वस्तु लेके आवै—जवतेल धान्यादि लानेवाली स्त्रीयांकां वधू, वरके घरकी, दृक्स्त्रीयां मालपूर्वादिक पक्वान्न भोजन करावै ॥ अब विवाहादिविधि देशाचार, कुलाचार, सें करावै ( तथा ) तैलान्नपेक । कुलकर, गणेशादि स्थापन । कंकणबंध । और विवाहोपचारदिक सर्व वधु, वरके, चंद्र बलकुं देखके वैवाहिक नक्षत्रमें करावै—और धूलिभक्त, शौचाग्न्यजलानयन । प्रभृतिकर्म मंगलीक गीत वाजिज संहित देशाचार कुलाचारसें करावै ॥ कोरा मृत्तिकाके पात्रमें वर, कन्या, दोनोंके घरामें । यव धान्यको वपनकरावै ( फिरगृहीगुरुः ) कन्याके घरमें पूर्वपक्षी संस्कारमें कह्यै मुजब विधिसें । मातृकादेव्योंकी स्थापना करावै ( और ) वरके घरमें जैसे परसमय अनुसार चलनेवाले गणपति ( तथा ) काम देवकी स्थापना करतेहैं । ( तैसें ) जिनमतानुसार चलनेवालोंके घरोंमें । मातृका देव्योंकी ( तथा ) सात कुलकरोंकी स्थापना करावै ॥ ३७ ॥

॥ ३८ ॥ अब सप्त कुलकर स्थापनविधि लिखते हैं ॥ ३८ ॥

॥ ३८ ॥ गृहगुरु भूमिपर पमाज्जवा गोमय लेके पृथ्वीकुं शुद्ध करके तिनपर स्वर्णमय वा रूप्यमय वा ताम्रमय अथवा श्रीपणि रक्तके काष्ठमय पट्टक स्थापना करना ॥ पट्टक स्थापनमंत्र ॥ ३९ ॥ ॐ आधारायनमः । आधार शक्तयेनमः । आसनायनमः । ( इस मंत्रकुं ) सात बार जपके पट्टस्थापित करै

( पीठे ) तिस पटकुं नै अमृते अमृतोद्भवे ० इस मंत्र करके तीर्थके जलसे अग्निषेक करै । चंदना कृत दूर्वासैं पटकी पूजन करै ( ततः आदौ ) नै नमः प्रथम कुलकराय । कांचनवर्णाय । श्यामवर्ण चंद्रयशाप्रियतमा सहिताय । हाकारमात्रख्यापित न्याय्यपथाय । विमलवाहनाग्निधानाय । इह विवाह महोत्सवादौ आगच्छ १ । इहस्थाने तिष्ठ १ । सन्निहितोज्ज्व १ । हेमदोज्ज्व १ । उत्सवदोज्ज्व १ । आनंददोज्ज्व १ । जोगदोज्ज्व १ । कीर्तिदोज्ज्व १ । अपत्यसंतानदोज्ज्व १ । स्नेहदोज्ज्व १ । राज्यदोज्ज्व १ । अर्घ्य पाद्य चरुं आचमनीयं गृहाण १ । सर्वोपचारान् गृहाण १ । ( ततः ) नै गंधायनमः । नै पुष्पायनमः । नै धूपायनमः । नै दीपायनमः । नै उपवीतायनमः । नै नूपुरायनमः । नै नैवेद्यायनमः । नै तांबूलायनमः । पूर्वमंत्रेण आहूय संस्थाप्य सन्निधिकृत्य अर्घ्य पाद्य वलि रत्नांचमनीयदानं दद्यात् । अपरैः नै कारादिभिर्मन्त्रैर्गंधतिलकघ्यं, नैवेद्यघ्यं, तांबूलघ्यं, दद्यात् ॥ १ ॥ ॥ ( तदनंतर बीजे स्थानमें ) नै नमोक्षितीयकुलकराय । श्यामवर्णाय । चंद्रकांताप्रियतमासहिताय । हाकारमात्रख्यापित न्याय्यपथाय चक्षुष्मानग्निधानाय इह विवाह महोत्सवे शेषपूर्ववत् ॥ २ ॥ नै नमः तृतीयकुलकराय । श्यामवर्णाय । सुरूपाप्रियतमासहिताय । हाकारमात्रस्थापितन्याय्यपथाय । यशस्मानग्निधानाय ( शेषपूर्ववत् ) ॥ ३ ॥ नै नमः चतुर्थ कुलकराय । स्वेतवर्णाय । श्यामवर्णप्रतिरूपाप्रियतमासहिताय । माकारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय । अग्निचंद्राग्निधानाय ( शेषपूर्ववत् ) ॥ ४ ॥ नै नमः पंचमकुलकराय । श्यामवर्णश्चक्षुः कांताप्रियतमासहिताय । धिक्कारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय । प्रसेनजित् अग्निधानाय ( शेषपूर्ववत् ॥ ५ ॥ ॥ नै नमः षष्ठमकुलकराय । स्वर्णवर्णाय । श्यामवर्णश्रीकांता प्रियतमा सहिताय । धिक्कार मात्र ख्यापित न्याय्य पथाय । मरुदेवाग्निधानाय । ( शेषपूर्ववत् ॥ ६ ॥ नै नमः सप्तमकुल कराय । कांचन वर्णाय । श्यामवर्ण मरुदेवा प्रियतमा सहिताय । धिक्कारमात्र ख्यापित न्याय्य पथाय । नाय्यग्निधानाय । ( शेषपूर्ववत् ॥ ७ ॥ इसीतरै सप्तकुलकरकी स्थापना करावै ( सा ) स्थापना विवाह हुये पीठे सात दिन पर्यंत रखा वै ( पीठे ) वरके घरमें शांतिक पौष्टिक पाठ कर्म करै ॥ ( यदि ग्रामांतरे नगरांतरे देशांतरे वर होय तिसकी आविधिहै—प्रथम दिवसे मातृपूजा पूर्वक सर्वज्ञा

तिजनाकु भोजन देवै । ( दूसरे दिवस ) वर अठीतरे स्नान करे । चंदनादिकको लेपन करे । वस्त्र, गंध, मालालंकृत । किरीटभूषितः मस्तक होके अश्वारूढ ( वा ) गजाधिरूढ ( वा ) पालखीपर वेसकें चले । तिसके समीप । संबंधि जून अठ्ठे वस्त्रकुं धारण करकें । हर्षसहित पान चक्षुणकर्तें थके । स्वसंपदानुसारै तुरंगाधिरूढ होके ( अथवा ) पदाति होके वरके साथ चलें ( ओर ) वरके दोनुं पार्श्वमें मंगलीक गीत गाती थकी झातीकी स्त्रियां चाले ( अपर गृह्य गुरु ) ब्राह्मणादिक शांतिमंत्रकुं पाठ करता थका चाले ॥

॥ ❀ ॥ शांतिमंत्र लिखतेहैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ अहं आदिमोअहन् । आदिमोनृपः । आदिमोदाता । आदिमोनिघंता । आदिमोगुरुः । आदिमःश्रेष्ठः । आदिमोचर्त्ता । आदिमोजयी । आदिमोनयी । आदिमःशिल्पी । आदिमोविद्वान् । आदिमोजल्पाकः । आदिमःशास्ता । आदिमोरौद्रः । आदिमःसौम्यः । आदिमःकाम्यः । आदिमःशरण्यः । आदिमोदाता । आदिमोबंधः । आदिमस्तुत्यः । आदिमोज्ञेयः । आदिमोध्येयः । आदिमोन्नोक्ता । आदिमःसोढा । आदिमएकः । आदिमोऽनेकः । आदिमःस्थूलः । आदिमःकर्मवान् । आदिमोऽकर्मा । आदिमो धर्मवित् । आदिमोऽनुष्ठेयः । आदिमोऽनुष्ठाता । आदिमःसहजः । आदिमोदशावान् । आदिमःसकलत्र । आदिमः २ कुशलः । आदिमोविबोढा । आदिमःस्वापकः । आदिमोज्ञापकः । आदिमोविडुरः । आदिमःकुशलः । आदिमोवैज्ञानिकाः । आदिमःसेव्यः । आदिमोगम्यः । आदिमोविमृश्यः । आदिमोविमर्ष्टा । सुरासुरनरोरगप्रणतः । प्रातर्विमलकेवलो योगीयते सकल प्रांगणहितः । दयालुः । परोपेक्षारहितः । परात्मा । परंज्योतिः । परब्रह्म । परमैश्वर्य जाक् । परंपरः । अपरंपरः जगदुत्तमः । सर्वगः । सर्ववित् । सर्वजित् । सर्वायः । सर्वप्रशस्यः । सर्वबंधः । सर्वपूज्यः । सर्वान्मा असंसारः अव्ययोवार्यवीर्यः । श्रीहंश्रयः श्रेयः संश्रयः विश्वावशाय हन् संशयदूतः । विश्वसारो । निरंजनो । निर्म्ममो । निःकलंको । निःपापः । निःपुण्यः । निर्म्मनाः निर्देही । निस्संशयो । निराधारो । निरवधिप्रमाण प्रमेय प्रमाता ! जीवा जीवा श्रव संवर निजंरा बंध मोक्ष प्रकाशकः । सएवजगवान् । शांतिकरोतु । तुष्टिकरोतु । पुष्टिकरोतु । ऊर्ध्विकरोतु ।

सुखं करोतु । सौख्यं करोतु । लक्ष्मीं करोतु । अहं नै ॥ इसरीतसे आर्यवेद पाठी ब्राह्मण, वरके आगल चालै ( पीठे ) इसहीजविधिसैं । महोत्सव करके स्वपरिपाटीसैं गुरुवन्दन, मंमलीपूजन, पुरदेवतादि पूजन करै । पीठे मार्गमें चालै ( तैसैं ) इसहीज रीतिसैं । कन्याधिष्ठित पुरमे पण प्रवेशविधेय करना ॥ ( और ) तिणहीजपुरमे विवाहके अर्थ चालते वरके पण यहहीज विधिहै ( तथैव ) नित्य स्नान कीये पीठे । स्त्रीपुरुषके शरीरका मान करै ( पीठे ) विवाहके दिन आथेसैं विवाहका लसैं प्रथम तिसहीज देशमे रहनेवाला ( अथवा ) अन्यदेशसैं आया ऊवा वर । तिसहीज पूर्वोक्तविधिसैं पाणिग्रहणके अर्थ चले ( जब ) तिसवरकी जगिनी आदिक विशेषकरके लूण उतारे ( इस रीतसे ) वो वर, गृह्यगुरु स हित कन्याके घरकुं जावैं । कन्याके द्वारमे जायके खमा रहे ( उहां ) सासू आके कपूर दीपादिकसैं आरति करै ( पीठे ) दूसरी स्त्रीआयके मृन्मय पात्रमें जाज्वल्पमान अग्नीकुंलेके उसपर लूणकुंधरके वरके ऊपर तीनवेर फेरके, वरघरमे प्रवेशकरे, तिससमें वामजागमें धरे ( पुनः ) अन्या स्त्री, मंथान नेतरो कौसुंजवस्त्रसैं अलंकृत करकैं । तीनवेर वरके ललाटकुं स्पर्शकरै ( पीठे ) वर बाहनसैं उतरके वामपादसैं अग्निलवणयुक्त सरावसंपुटकुं खंमन करै ( तदनंतर ) वरकुं, श्वश्रू ( अथवा ) कन्याकी मांमी ( वा ) कन्याका मांमा । कौसुंजवस्त्रकुं वरके कंठमे स्थापित करके । वरकुं खेंचके, घरके भीतर लेजावे ( पीठे ) पूर्वाग्निमुख आसनपर विनूषित होके । कौतुक मंग लादिक करके बेठी ऊई । कन्याके वामपार्श्वे मातृका देवीके सन्मुख वरकुं बेसावैं ( पीठे ) गृह्यगुरु लग्न बेलासमये । शुक्लनवमांशकुं देखके । चंदनके शर ( अरु ) पीसी ऊई शमीकी त्वचा, पिप्पलकी त्वचा, मिश्रित करके स्त्री पुरुषका दक्षिणहस्तकुं युक्तकरे । ( ऊपर ) कौसुंजसूत्रसैं बंधन करे ॥ ॐ ॥ हस्तबंधन मंत्रः ॥ ॐ ॥ नै अहं आत्मासि । जीवोसि । समकालोसि । समकर्मासि । समाश्रयोसि । समदेहोसि । समक्रियोसि । समस्नेहोसि । सम चेष्टितोसि । समान्जिलाषोसि । समेहोसि । समप्रमोदोसि । समविषादोसि । समवस्थोसि । समनिमित्तोसि । समवचोसि । समक्षुत्तृश्रोसि । समागमोसि । समविहारोसि । समविषयोसि समसब्दोसि । समरूपोसि । समरसोसि । सम

गंधोसि । समरुपशोसि । समेन्द्रियोसि । समाश्रयोसि । समबंधोसि । समसंव  
 रोसि । समनिर्जरोसि । सममोक्षोसि । तदैकत्वमिदानीं अहं उं ॥५॥ इति  
 हस्तबंधनमंत्रः ॥ अन्यसमयांतरमें, देशांतरमें, कुलांतरमें, लग्नसाधनसमये  
 मधुपर्कका प्राशन ( और ) वरकुं गोयुग्मका दान । कन्याकुं ब्रह्मा  
 रणादिकका दान इत्यादिक कार्य करतेहैं ॥ ५॥ पाणिग्रहण किये ऊँचे  
 वर, वधू, मातृकाके पास बैठेहैं । उससमे कन्याके पक्षी वेदिरचना करे (तिसकी  
 यहविधि) चोतरफ काष्ठके स्तंभहैं ( और ) ऊपर काष्ठसे आच्छादित हैं ।  
 ऐसे मंडपके बीचमें चतुःकोणा वेदिकरे । कितनेक कन्यापक्षी मनुष्य वेदीके  
 चतुःकोणमें सात सात कुंजस्थापित करतेहैं । अनुक्रमसे सबके हेठेवना ।  
 उनके ऊपर ठोठा । ऊपर ठोठेसे ठोठा । कलश सुवर्णमय, रूप्यमय, ताम्र  
 मय ( अथवा ) मृन्मयी लेके त्रिकोण वंशसे बंधन करै । मंडपके ४ चार  
 करै ४ द्वारपर ब्रह्ममय ( वा ) काष्ठमय तोरण बांधै । आश्रके पत्रकी  
 बंदरमाल बांधै । बीचमें त्रिकोण अशिकुंम करै ( पीठे गृह्यगुरु ) पूर्वोक्त  
 वेषधारी वेदीकी प्रतिष्ठा करै (तिसकी यहविधिः) वास, पुष्प अक्षत, परिपूर्ण  
 हस्तहोके गुरु इसमंत्रकुं पठै ॥ उं नमः क्षेत्रदेवतायै शिवायै ह्रीं ह्रीं हूं ह्रीं हः  
 इहविवाह मंमपे आगच्छ १ । इह बलि परिभोगं गृह्ण २ । भोगं देहि । सुखं देहि  
 यशो देहि । संततिं देहि । ऊर्ध्वं देहि । वृद्धिं देहि । सर्वसमीहितं देहि । १ स्वा  
 हा ॥५॥ ( इस मंत्रकुं पठके ) चार कोणमें प्रत्येके वास, माला, अक्षत,  
 रखावै-तोरणकी प्रतिष्ठापण इसीजरीतसे करावै ॥ तिसके मंत्रः ॥ उं ह्रीं  
 नमो चारत्रिये । सर्व पूजिते । सर्व मानिते । सर्व प्रधाने । इह तोरणस्था  
 सर्व समीहितं देहि १ स्वाहा ॥ इति तोरणप्रतिष्ठा ॥ ( तदनंतर ) वेदिमध्ये  
 त्रिकोण अशिकुंममें मंत्रपूर्वक अशिकों स्थापित करै ॥५॥ अशिस्थापनका  
 मंत्र ॥५॥ उं रं रं रां रूं रौं रः । नमोऽग्नये । नमो बृहज्जानवे । नमोऽनंत  
 तेजसे । नमोऽनंत वीर्याय । नमोऽनंत गुणाय । नमो हिरण्य तेजसे । नमो  
 ऋगवाहनाय । नमो हव्याशनाय । अत्रकुंमे आगच्छ १ । अवतर १ ।  
 तिष्ठ १ स्वाहा ॥ अन्य मतमें, देशांतरमें, कुलांतरमें, हस्त मेलन, वर वधू  
 के वेदीके पास कराते हैं ( और ) कोई देशकुलाचारसे ऐसे कर्ते हैं । म  
 धुपर्क प्राशनके पीठे । हस्त मेलनके प्रथम । वर वधूकों परस्पर कुतूहल



कराते हैं । वो कुतूहल देश विशेषतः लोकांसँ जान लेना । यह वार्ता शास्त्रोक्त नहीं है । इससे हमने नहि लिखा ( परंतु ) सौजाग्यकी प्रातिके अर्थ ( और ) वरकुं वशीकरणके अर्थ करते हैं ( तदनंतर ) वर, वधू, हस्त मेलन करे छुये । नरनारीकी कटि आरूढ होके । गीत गावते मंमपके दक्षिण द्वारसे प्रवेश करके देशकुलाचारसे । काष्ठके आसनपर ( वा ) चित्र विचित्र आसनपर ( अथवा ) सिंहासनपर पूर्वाग्निमुख वर वधूकुं वेठावै वेदी कर्मके समय कुलाचारके अनुसारसे कोरा वस्त्र, कसुंवल वस्त्र ( अरु ) स्वाज्ञाविक वस्त्र, स्वेत वस्त्र, वरवधूकुं देवै ( तदनंतर गृह्य गुरुः ) उत्तराग्नि मुख वेठके । मृगचर्मपर अग्नीकुं । शमी, पिप्पल, कपित्थ, कुटल, विल्व, अमलक, इत्यादिककी काष्ठसे प्रज्वलित करै । पीठे अग्निमें--घृत, मधु, तिल, यव, फलसे होम करै ॥३॥ तिसके मंत्र ॥३॥ ॐ अर्हं । ॐ अग्ने प्रसन्नः सावधानोज्ज्व । तवायमवसरः तदाहारय । इंद्रं, यमं, नैर्ऋतं, वरुणं, वायु कुवेरं, ईशानं, नागानं, ब्रह्माणं, लोकपालान् । ग्रहांश्च । सूर्यं, शशि, कुज, सौम्य, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राज्ञ, केतून्, असुरांश्च, असुर नाग, सुपर्ण, विद्यु, दधि, क्षीपो, दधि, दिग्कुमारान्, नुवनपतीन् । पिशाच भूत यक्ष किन्नर किंपुरुष महोरग गंधर्वान् व्यंतरान् । चंद्रार्क ग्रह नक्षत्र तारकान् । ज्योतिष्कान् । सौधर्मेशान सनकुमार माहेंद्र ब्रह्म लांतक शुक्र सहश्रारान् आणत प्राणतारणाच्युत ग्रैवेयका नुत्तरन्नवान् । वैमानिकान् । इंद्र पार्षदसामानिक त्रायत्रिसंल्लोकपालानीक प्रकीर्णक । लोकांतिकाजियोगिक । जेदन्निन्नां श्रतुर्णिकायान् अपि । सन्नार्यान् । सायुधबलवाहनान् । स्वस्तोपः लक्षितवर्हान् । अप्सरसश्च । परिग्रहीता, परिग्रहीता जेदन्निन्नाः ससरवीका सदासिकाः साज्जरणाः रुचिकवासिनी दिग्कुमारिकाश्च । सर्वाः समुद्र नदीः गिरि आकर वनदेवतास्तद्देवतान् सर्वाश्च इदमर्घ पाद्य माचमनीयं बलिं चरुं ऊतं न्यस्तं ग्राह्य २ स्वयं गृहाण २ स्वाहा अर्हं ॐ ॥ ऐसे होम करनेसे अग्नीकुं प्रज्वलित करै ( पीठे प्रसन्न होके गृह्य गुरुः । वरके दक्षिण पार्श्वमें स्थित कन्याकुं उठायेके । वरके सन्मुख वेठायेके ( ऐसे बोले ) ॥ ॐ अर्हं इदमासन मध्यासीनौ स्वध्यासीनौ स्थितौ सुस्थितौ तदस्तु वांसनातनः संगमः अर्हं ॐ ॥ ऐसे मंत्रोच्चारण करके । दर्जनके अग्रजागसे । तीर्थोदकसे वरवधू

का अन्निपेक करै—( पीठे ) बधूका पितामह दादा ( अथवा ) पिता ( अथवा ) काका ( अथवा ) चाचा ( अथवा ) माता ( अथवा ) मामी ( अथवा ) कुलमें ज्येष्ठ पुरुष । स्वधर्मानुष्ठान करके । अष्टे वस्त्राभरण पहिर के । वरबधूके आगे बैठें । ( तदनंतर गृह्य गुरुः ) ॐ नमो अहंत् सिद्धाचार्यो पाध्याय सर्वं साधुन्यः । ऐसैं बोलके दूर्वाकृत हस्तमें लेके । बधू वरके आगे वचन बोले । तुमारा दोनूका गोत्रादिक संबंध करनेसैं हमने जाणा ( परंतु ) अब तुमारा दोनूका गोत्र सबके सुनतें प्रकाशित करो ( तब ) प्रथम वरके पक्षी, आपके गोत्र प्रवर ज्ञाति अन्वयकुं प्रकाश करै ( पीठे ) वरके मातृपक्षीय गोत्र प्रवर ज्ञाति अन्वयकुं प्रकाश करै । ( पुनः ) कन्याके पक्षी स्वकीय गोत्र प्रवर ज्ञाति अन्वयकुं प्रकाश करै ( पीठे कन्याके मातृपक्षी गोत्र प्रवर ज्ञाति अन्वयादिककुं प्रकाश करै ॥ ( तदनंतर ) गृह्य गुरु ऐसैं वचनोच्चारण करै ॥ ॐ अहं अमुक गोत्रीय इयत् प्रवरः॥ अमुक ज्ञाति। अमुकान्वयः॥ अमुक प्रपौत्रः॥ अमुक पौत्रः अमुक पुत्रः अमुक गोत्रीयः॥ इयत् प्रवरः॥ अमुक ज्ञातीयः अमुकान्वयः अमुक प्रदौहित्रः अमुक गोत्रीयः इयत् प्रवरः अमुक ज्ञातीयः अमुकान्वयः अमुक प्रपौत्री अमुक पौत्री अमुक पुत्री अमुक गोत्रीय। इयत् प्रवरः॥ अमुक ज्ञातीय अमुकान्वयः अमुक प्रदौहित्री अमुक मात्रीय। इयत् प्रवरः॥ अमुक ज्ञातीय अमुकान्वयः अमुक प्रदौहित्री अमुका वधू । तदा तयोर्वयो वरयो निविमो विवाह संबंधोस्तु । शांतिरस्तु । तुष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । बुद्धिरस्तु । धनसंतानवृद्धिरस्तु अहं ॐ ( तदनंतर गृह्य गुरुः ) वर बधूके पाससैं गंध पुष्प धूप नैवेद्यादिकसैं अग्नीकी पूजा करावे ( पीठे ) वर बधू चाबलकी धांणि हाथमें लेके अग्नीमें प्रक्षेप करै ( तदनंतर ) पुनः वरकुं दक्षिणभागमें बैठावे । बधू कुं वामभागमें बैठावके गृह्यगुरु वेदके मंत्रकुं पढ़े—॥ ॐ अहं अनादिब्रिह्म अनादिरात्मा अनादिकालः अनादिकर्म अनादिसंबंधो देहिनां वेदानुमतानुगतानां क्रोधाहंकार ठग्न लोभैः संजलन प्रत्याख्यानाऽप्रत्याख्यानाऽनंतानुबंधिभिः शब्दरूप रसगंध स्पर्शरिक्तापरि संकलितैः संबंधोऽनुबंधः प्रतिबंधः संयोगः सुगमः सुरुतः स्वनुष्ठितः सुप्राप्तः सुबुद्ध्यो द्रव्यभावविशेषेण अहं ॐ ॥ ऐसैं मंत्रकुं पढ़के गुरु फेर ऐसैं कहें ॥ तदस्तु वां सिद्धप्र

त्यक्तं केवलप्रत्यक्तं चतुर्निकाय देवप्रत्यक्तं विवाहप्रधानाग्नि प्रत्यक्तं नामप्र  
 त्यक्तं नरनारीप्रत्यक्तं जनप्रत्यक्तं गुरुप्रत्यक्तं मातृप्रत्यक्तं पितृप्रत्यक्तं मातृपक्ष  
 प्रत्यक्तं पितृपक्षप्रत्यक्तं संबंधः सुकृतः सदनुष्ठितः सुप्रातः सुबंधः सुसंगतः ॥  
 (पीठे) प्रदक्षिणा करो, अग्नीकी (अरु) सूर्यकी, ऐसैं गृह्यगुरु वचनोच्चार करै  
 तव गंठजोमा बंधे ऊबे । दोनुं वर वधु अग्नीकी प्रदक्षिणा करे । प्रदक्षिणा  
 करके पूर्वोक्त रीतीसैं लाजधाणि हाथमें लिये थके बैठे । तीन प्रदक्षिणा करते  
 वधू आगल रहे । वर पाठल रहै । दक्षिणभागमें वरका आसन । वामभागमें  
 वधूका आसन ॥ इति प्रथम आजीकर्म ॥ वर वधूके आसनपर बैठे थके  
 गुरु वेदमंत्रकुं पढै-॥ ॐ अहं कर्मास्ति मोहनीयमस्ति दीर्घस्थित्यस्ति निविम  
 मस्ति दुह्येयमस्ति अष्टाविंशति प्रकृत्यस्ति क्रोधोस्ति मानोस्ति मायास्ति  
 लोभोस्ति भंज्वलनोस्ति प्रत्याख्यानावरणोस्ति अप्रत्याख्यानावरणोस्ति अनं  
 तानुबंध्यस्ति चतुश्चतुर्विधोस्ति हास्यमस्ति रतिरस्ति अरतिरस्ति जयमस्ति  
 जुगुप्सास्ति शोकोस्ति पुंवेदोस्ति नपुंसकवेदोस्ति मिथ्यात्वमस्ति मिश्रमस्ति  
 सम्यक्तमस्ति सप्तति कोटाकोटि सागरस्थित्यस्ति अहं ॐ ॥ ऐसैं वेदमंत्रकुं  
 पढके पुनः ऐसा कहैं- तदस्तु वां निकाचित निविमवधू मोहनीयकर्मोदयकृतः  
 स्नेहसुकृतोस्तु सुनिष्ठितोस्तु सुसंवद्धोस्तु आचममक्षयोस्तु-॥ (फिर) अग्नीकी  
 प्रदक्षिणा करो ( तव ) वरवधू पुनः अग्नीकी प्रदक्षिणा पूर्वोक्त रीतीसैं करै ॥  
 इति द्वितीय लाजाकर्म ॥ चारैऽ लाजाकर्ममें प्रदक्षिणाके प्रारंभमें वरवधू  
 लाजकी मुष्टिकुं प्रक्षेप करै ( तदनंतर ) तिस दोनु वरवधूके बैठे थके ।  
 गुरु ऐसैं वेदमंत्रकुं पढै ॥ ॐ अहं कर्मास्ति वेदनीयमस्ति सातमस्ति असातम  
 स्ति सुपुंवेयं सातं । दुपुंवेयं असातं । सुवर्गणाश्रवणं सातं । दुवर्गणाश्रवणं अ  
 सातं शुभपुञ्जलदर्शनं सातं । दुःपुञ्जलदर्शनं असातं । शुभषड्रसा स्वादनं सातं  
 अशुभ पुञ्जला स्वादनं असातं । शुभ पुञ्जल स्पर्शनं सातं । अशुभ पुञ्जल स्प  
 र्शनं असातं । सर्वं सुखकृतं सातं । सर्वदुःखकृतं असातं । अहं ॐ ॥ ऐसैं वे  
 दमंत्रकुं पढके । पीठे ऐसैं कहैं-तदस्तु वां सातावेदनीयं माञ्जूदसाता वेदनीयं  
 तत्प्रदक्षिणी क्रियतां विज्ञावसुः । ऐसैं गुरुवचन कहे । तब वरवधू पूर्वोक्तरीतसैं  
 अग्नीकी प्रदक्षिणा करके आसनपरबैठे ॥ इति तृतीय लाजाकर्म ॥ तदनंतर  
 पुनः गृह्यगुरुः वेदके मंत्रकुं पढे ॥ ॐ अहं सहजोस्ति स्वभावोस्ति संबंधो

स्ति प्रतिबंधोस्ति मोहनीयमस्ति वेदनीयमस्ति नामास्ति गोत्रमस्ति आयुरस्ति  
 हेतुरस्ति आश्रयश्चमस्ति क्रियावश्चमस्ति कायवश्चमस्ति तदस्ति संसारिक  
 संबंधः अर्हः वै ॥ ऐसं वेदमंत्रकुं गुरुः पढके कन्याका पिताके, अथवा काके  
 के, अथवा चाइके, अथवा कुलमें ज्येष्ठ होवे. तिसीके हाथमें । तिल यव  
 कुश डूवां युक्त जलकुं देकें ऐसं कहै ॥ अथ अमुक संवत्सरे अमुकायने अ  
 मुक कृतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक नित्यौ अमुक वासरे अमुक नक्ष  
 त्रे अमुक योगे अमुक करणे अमुक मुहूर्ते पूर्वकमसंबंधानुबद्ध वस्त्र गंधमा  
 ल्यालंकृतां सुवर्णं रूप्य मणि नूपण नूपितां ददाति अयं प्रतिगृह्णीथ । इति क  
 थयित्वा । वर वधूके युक्त हाथके अंतर जलका निक्षेप करै । तदावर कहै । प्रति  
 गृह्णामि । तव गुरुः कहै । सुप्रति गृहीतास्तु । शांतिस्तु । पुष्टिस्तु । तुष्टिस्तु ।  
 क्षतिस्तु वृद्धिस्तु । धनसंतान वृद्धिस्तु (तदनंतर) प्रथम तो तीनवेर अग्नीकी  
 प्रदक्षिणा करणसमें, वरका हस्त अधः था (अरु) कन्याका हस्त ऊपर था  
 (अथ) चौथी प्रदक्षिणासमें कन्याका हस्त अधः करना (आरै) वरका हस्त  
 ऊपर करना ( तदनंतर ) वर वधू दोनुंको आसनसे उठाके । वरकुं आगल  
 करना । वधूकुं पीठे करना । लाजकी मुष्टि अग्नीमें प्रक्षेप कराके । गृह्यगुरु  
 कहे प्रदक्षिणा करो ( तव ) वर वधू अग्नीकी प्रदक्षिणा करै । तिसमें क  
 न्याका पिता ( यावत् ) कुलका ज्येष्ठ पुरुष । संपूर्ण वर वधूकुं देणे योग्य  
 वस्तु । वस्त्र, आभरण, स्वर्ण, रूप्य, रत्न, ताम्र, कांश्य, दासी,  
 गो, चपन, पल्लवक, तूलिकोत्सीर्षक, दीप, शस्त्र, पाक, ज्ञान प्रवृत्ति,  
 सर्व वस्तु वेदीके भीतर बैठे ऊँचे वर वधूको देवे ( पीठे ) ओरपण क  
 न्याके बंधु संबंधि मित्रादिक स्वकीय संपदाके अनुसार पूर्वोक्त वस्तु वेदीके  
 अंतर देवे ( तदनंतर ) वर वधू अग्नीकी चौथी प्रदक्षिणा देके पूर्वोक्त रीति  
 से आसनपर बैठें ( इहां ) वर जीमणेवासे । अरु । कन्या वाम पार्श्वे बैठें  
 (तदनंतर) गृह्यगुरुः । कुश दूर्वा अक्षत सुगंधिवस्तु हाथमें लेकें ऐसं कहै ये  
 नाऽनुष्ठानेना शयोऽहं शक्रादि देवकोटिपरिवृतो जोगाय संसारीजीव व्यवहार  
 मार्गसंदर्शनाय । सुनंदा सुमंगले पर्याणैपीत । ज्ञातमज्ञातं या तदनुष्ठान नुष्ठित  
 मस्तु ऐसे वचनकहै (पीठे) वास दूर्वाक्षत कुशान् वर वधूके मस्तकपर प्रक्षेप  
 करै (पीठे) गृह्यगुरुः । आज्ञा दीये थके । वधूके पिता, जल यव तिल कुशांकुं

हस्तमे लेके, वरके हस्तमे देके ऐसे कहैं-। दायं ददामि प्रतिगृहाण । वरः कथयति प्रतिगृह्णामि । प्रतिगृहीतं परिगृहीतं (गुरुः कहैं) सुगृहीतमस्तु, सुपरिगृहीतमस्तु (पुनः) नूषण हस्ती अश्वादि दाय दान समय पण वधूपिता पूर्वोक्त विधि करै । ऐसें सर्ववस्तुका दान दीये पीठे । गुरु ऐसें कहैं॥ वधू वरौ वां पूर्वक स्मानुबंधेन निविमेन । निकाचित वधेन । अनुपवर्त्तनीये । अप्यत्तनीयेन । अनुपायेन अश्लेषेन अवश्यज्ञोग्येन विवाहः प्रतिवक्षो वज्रव । तवस्तु अखंभितो अक्षयो अव्ययो निरपायो निराबाधः सुखदोस्तु शांतिरस्तु पुष्टिरस्तु रुधिरस्तु वृद्धिरस्तु धनसंतान वृद्धिरस्तु॥ ऐसे वचनबोलके तीर्थोदकका जल लेके कुशाग्रसें अग्निषेक करै (पीठे गुरु) वर वधूकुं उग्रायके जहां मातृका स्थापित करी ऊई है तहां उपवेशन कराके गुरु ऐसें कहैं ॥ अनुष्ठितो वां विवाहो समस्नेहौ सन्नोगौ समायुषौ सधर्माणौ समदुःख सुखौ सम शत्रुमित्रौ समगुणदोषौ सम वाङ्मनः कायौ समाचारौ समगुणोन्नतां ॥ गुरु ऐसे कहैं ॥ पीठे ॥ कन्याका पिता करमोचनके अर्थ गुरुकुं कहैं ( तव ) गुरु वेदमंत्रकुं पढै ॥ नै अहं जीवस्त्वं कर्मणावध । ज्ञानावरणेन वधः । दर्शनावरणेन वधः । वेदनीयेन वधः । मोहनीयेन वधः । आयुषावधः । जात्यावधः । गोत्रेण वधः । अंतरायेण वधः । प्रकृत्यावधः । स्थित्यावधः । रसेन वधः । प्रदेशेन वधः । तदस्तु तेमोक्षो गुणस्थानारोह क्रमेण अहं नै ॥ ऐसें वेदमंत्रकुं पढके गुरु ऐसा कहैं- मुक्तयो करयोस्तु वां स्नेह संबंधो अखंभितः ऐसें कहके करमोचन करावै । कन्याका पिता करमोचनके समय जमाइको । वांछितवस्तु स्वसंपदाके अनुसार अधिक तरेसें देवै । दानकी विधि पूर्वोक्त युक्तिसैं । पीठे उहांसे उग्राय के पुनः वर वधूकुं वेदिके पास लाके आसनपर बैठावै (पीठे) ऐसें वृत्तका उच्चारण करै ॥ उक्तंच॥ पूर्व युगादिजगवान् विधिनैवयेन । विश्वस्य कार्यरुतये किल पर्यैषा । ज्ञार्याद्यं तदमुना विधिनास्तु युग्म । मेतत्सुकाम परिज्ञोगफला नुबंधि ॥ १ ॥ ऐसें वचनोच्चारण करके । पूर्वोक्त विधिसे गंठ जोमा ठोमायके ( गुरु कहैं ) अचल सौजाग्यं न्वतां । ऐसें गुरुवचन कछे पीठे । दंपती स्त्री पुरुष अनेक सौजाग्यवंती स्त्रीयादिकसें वेष्टित ऊवे थके शृंगार घरमें प्रवेश करै । तिस शृंगार घरमे पूर्वे स्थापी ऊई कामदेवकी मूर्तिकुं कुलवृद्धानुसारसें पूजन करै ( पीठे ) तिसी जगें वर वधू सम काल क्षीरान्न

जो जन करें। यथा युक्ति सब प्रचार करें (पीठे) जिस रीतिके उत्सवसे आये थे। उसी रीतिके उत्सवसे पीठा घरकुं जावे (पीठे) वरके माता, पिता, वर वधूके मंगलकी विधि देशकुलाचारके अनुसार करें। कंकणबंधन कंकणमोचन द्यूतक्रीमा वेणियंत्रनादि कर्म सर्व तत्र देश कुलाचारके अनुसार करें। विवाहके पूर्व वर वधूके दोनों पक्षमें जो जन दान करें (तदनंतर) धूलिजक्त जन्यजक्त प्रजृति देशकुलाचारसें करें तदनंतर सप्तदिन पीठे वरवधूका विसर्जन करें ॥ तिसकी विधि: ॥ सप्तदिनपर्यंत विविध भक्तिसे पूजित ऐसे जमाइकुं अनेक वस्तुका दान देवे (पीठे) वने आमंवरसें वरकुं आपके घरे पञ्चाचावे। पीठे सप्त रात्रिपर्यंत, अथवा मासपर्यंत, अथवा पणमासपर्यंत, १२ मासपर्यंत, महोत्सव करे कुलसंपदा देशाचारानुसारसें सप्तरात्रि पीठे वा मास पीठे कन्याके पक्षमें कुलाचारानुसारसें मातृ विसर्जन करावे पूर्वोक्त रीतिसें और गणपति मदनादि विसर्जनकी विधि लोकप्रसिद्ध:—वरपक्षमें कुलकरके विसर्जनकी विधि कहते हैं ॥ कुल करके स्थापन किये पीठे प्रतिदिन कुल करकी पूजा करे। विसर्जन समयें कुलकरकी पूजन करके विसर्जन करावे (गुरुमंत्र पढ़े) ॐ अमुक कुलकराय इत्यादि पूर्ववत् संपूर्ण मंत्र पढ़िके पुनरागमनाय स्वाहा॥ इस रीतिसें संपूर्ण कुलकरांके विसर्जन करें (उक्तंच) ॐ आज्ञाहीनं क्रियाहीनं। मंत्रहीनंच यत्कृतं। तत्सर्वं रुपयादेव। क्षमस्व परमेश्वर १॥ इति कुलकर विसर्जन विधि: ॥ तदनंतर मंगलपूजा गुरुपूजा वासुदेवादि पूर्ववत्। साधूवांके वस्त्र पात्रका दान। विप्रेभ्यो पूजा दान। वंदिजनाकुं तथा अपर याचकादि जनकुं यथा संपदा दान देवे। (तथैव) समयांतरमें, देशकुलाचारसें, विवाहलग्नमें वर श्वशुरके घरकुं आवे। तब ठकाम करें। प्रथम आसनदान। श्वशुरः कथयति। विष्टरं प्रति ग्रहाण। वर कथयति। ॐ प्रतिगृह्णामि। इस रीतिसें आसनपर बैठे (पीठे) श्वशुर, वरके पादप्रक्षालन करें। पीठे अर्घदानं दधि चंदनाक्षत डुवां कुड़ा पुष्प स्वेत संपप जलैः श्वशुरो यामात्रे अर्घदानं ददाति। तसें आचमनदान तदनंतर गंधाक्षतपूजा तिलककरणं तदनंतर मधुपर्कप्राशनं (ऐमें) आसन, पाय. अर्घ, आचमनीय, गंध, मधुपर्क पट्कार्य (पीठे) वरके भीतर लायके वधु वरके परस्पर दृष्टिमेलन करावे। इत्यादि। शेष पूर्ववत् विधि: ॥ विवाहकी विधिके श्लोक ॥ इति देशकुलाचारैः।

विवाहस्य विधिः परः । विधेयं श्व संपत्ति । बंधः पक्षानुसारतः ॥ १ ॥ मूलशास्त्रं  
 समालोक्य । विधिरेषः प्रदर्शितः । स्वदेशकुलजाचार । पेक्षणीयो महात्मनिः ॥  
 २ ॥ वरकार्यं रात्रिमातृ । कुलदेव्यादिपूजनं । स्वस्ववंशानुसारेण । विधेयं स्या  
 द्यथाविधिः ॥ ३ ॥ वेद्यानयनकर्मपि । तथा मंरुपबंधनं । कुलवृक्षादिवचनैः । विधे  
 यं विधिवेदिनिः ॥ ४ ॥ कार्यः कंकणबंधस्तु । विवाहादौकुलोचितः । विवाहांते  
 तस्यमोक्षः । कार्योवृद्धगिरापरं ॥ ५ ॥ ऊर्णामयं सूत्रमयं । कौशेयमयमित्य  
 पि । परेमुंजमयंप्राञ्जः । कंकणं कुलयुक्तितः ॥ ६ ॥ केचिन्मातृ गृहेप्राञ्ज ।  
 द्विपत्यो करबंधनम् । मधुपर्काशिनात्पश्चात्परैवेद्यासनस्थयोः ॥ ७ ॥ अग्नी  
 प्रदक्षिणाकाले । शिलालोष्टोः पदेनच । वध्वास्पर्शनमित्याञ्जः । परैर्नैवचकिं  
 चन ॥ ८ ॥ कचिद्देशांतरेचैव । वरकन्या समागमे । विवाहमाञ्ज कुत्रापि ।  
 तयोरंचलंकर्षणात् ॥ ९ ॥ देशाचारे विवाहांत । रुपहासंवगानतः । मिथःकुर्व  
 तिमहिला । ज्ञेयोदेशकुलादितः ॥ १० ॥ पितृमातृगिरायस्तु । संगमोवरक  
 न्ययोः । ज्ञेयोविवाहधर्मोपि । विधिनायेनकेनचित् ॥ ११ ॥ वज्रनामं वरेणापि ।  
 वज्रद्रव्यव्ययेनच ज्ञेयः पापविवाहस्य । पितृमातृवचोविना ॥ १२ ॥ अत्रातः  
 कथितोयस्तु । सवेदोक्तोविधिः परं । देशान्वयव्यवहारा । दन्यत्कार्यं पृथग्विधः  
 ॥ १३ ॥ तैलान्निषेकोवैवाह । वस्तुप्रारंभएवच । वैवाहिकेषु धिद्वेषु । करणीयो  
 महात्मनिः ॥ १४ ॥ वाद्यनार्यः कुलवृक्षा । द्योःस्वजनसंसदि । मंरुपोमातृपू  
 जाच । तथा कुलकरार्चनं ॥ १५ ॥ वेदिस्तोरणमर्चादि । वस्तुशांतिकपोष्टि  
 के । वज्रजोजनसामग्री । कौसुंजेसूत्रवाससी ॥ १६ ॥ आसनं रुद्रिवृद्धिश्च ।  
 यवादिवपनंतथा । गुरुर्वस्त्रं नूपणंच । वरेदेयंगवादिच ॥ १७ ॥ पाकजोजन  
 पात्राणि । दानशक्ति धनंतथा । इमान्यन्यानि कार्याणि । विवाहस्य विनिर्दिशे  
 त् ॥ १८ ॥ इत्युपाध्याय श्रीलक्ष्मीप्रधानगणिः पं । मोहनलालमुनिः आचार  
 ग्रंथात्संग्रहीकृते आचाररत्नाकर प्रथमप्रकाशे चतुर्दशमविवाह संस्कारः ॥ १९ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१५) व्रतारोप संस्कार विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम वरष मास दिन नक्षत्र शुद्ध देखके । समवशरणकी स्था  
 पना करै । शांतिक पोष्टिक पूजन आदि सब विधि जैन पंथित करावै । पीठे  
 मंदर ( वा ) और धर्म स्थानके कालानुसारै संप्रदाई अनेकांती शुद्ध साधु  
 आचार्य उपाध्याय होय (जहां) सम्यक्त व्रतग्राही पुरुष स्नानादिकसँ शुद्ध

होके, अन्ना सपेदं वस्त्रं पहरेके, उत्तराश्विन धारन करके चोटी बांधकै, चंदन को तिलक करके, वमै उठवसैं कुटुंबसाथ आवैं । वर्यानुसारै जिनोपवीत धारन कियो थको, मुखवस्त्रिका हाथमें लेके, गुरुके सन्मुख वामपासे खमा रहै (तव) गुरु आवक दोनुं इरियावही पन्क्तिमें (पीठे) गुरु आसनपर बैठां थकां आवक दोनुं हाथ जोम्के कहै ॥ इत्थामि खमासमाणे ० । इत्था कारेण संदिसह जगवन् तुप्पे अहं सम्मत्तमारोवणियं नंदिकद्वावणियं वासक्खेवं करेह ॥ ततो गुरुः सूरि मंत्रसैं ( वा ) गणविद्या वर्द्धमान विद्यासैं वासक्खेप मंत्रके । परमेष्ठी, कामधेनु मुद्रा करके । अपनैं वामपासे पूर्व दिशके सन्मुख ऊठो थको व्रतग्राहीके मस्तकपर वाशक्खेप करै ( पीठे ) फिर व्रतग्राही समवशरणकों तीन प्रदक्षिणा देके (पूर्ववत्) गुरुके सन्मुख खमाशमाणे देके इत्थाका जगवन् तुप्पे अहं सम्मत्त मारोवणियं चेइयांइ वंदामेह ( तव गुरुः ) यदंजिनमनादेव, आदि कोई महावीर स्वामीकी चारधुई कहके चैत्य वंदन करावै । चोथी स्तुतिवाचं नमोऽस्तुते ० । सधे तिविहेण वंदामि तव ( पीठे ) श्री शान्तिनाथजी आराधनार्थ करेमि काउसग्गं । वंदन वत्तिवाए ० (जाव) अम्पाणं बोशरामितक् कहके । एक लोगस्स (वा) चार नोकारको कावसग्ग करके स्तुति कहे ॥ यथा ॥ श्रीमते शान्तिनाथाय । नमः शान्तिविधायने । त्रैलोक्य इयामराधीश । मुकुटाज्यर्चितां जित्थे ॥ १ ॥ शान्ति शान्ति करः श्रीमान् । शान्तिं दिशतुमे गुरुः । शान्तिरेव सदा तेषां । येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ ( पुनः ) श्रुत देवता राधनार्थ करेमि काउसग्गं ॥ अन्नञ्जससियेणं ० । कहके एक नवकारको कावसग्ग करै ॥ गुरुस्तुति कहै ॥ स्वसित सुरज्जिगंधा लीढजृंगी कुरंगं । मुख शशिन मज्जसं विज्जती या विज्जती । विकच कमल मुच्चैः सास्त्व चिंत्य प्रजावा । सकल सुख विधात्री प्राणिजाजां श्रुतांगी ॥ १ ॥ (पुनः) क्षेत्र देवता राधनार्थ करेमि कावसग्गं ॥ अन्नञ्ज ० । कहके । एक नवकारको कावसग्ग करै (पीठे) एमोअरिहताणं । नमोऽर्जुत सिद्धा कहके स्तुति कहै ॥ यस्याक्षेत्रं समाश्रित्य । साधुभिः साध्यते क्रिया । साक्षेत्र देवतानित्यं । भूपात्रः सुख दायनी ॥ १ ॥ ( पुनः ) ज्वन देवता राधनार्थ करेमि काउसग्गं ॥ अन्नत्थू ० । कहके । एक नवकारको कावसग्ग करै ॥ एमो अरिहताणं । नमोऽर्जुत सिद्धा कहके एक स्तुति कहै ॥ ( यथा )



ज्ञानादि गुण युतानां । स्वाध्याय ध्यान संयमरतानां । विदधातुं भुवन देवी ।  
 शिवंसदा सर्व साधूनां ॥ १ ॥ ( पुनः ) शाशनदेवता राधनार्थं करेमि कान्त  
 सग्नं ॥ अन्नन्नं कहके । चार नवकारको कावसग्न करै । करके । नमोर्जुत सि  
 द्धा कहके एक स्तुति कहै ॥ या पाति शासनं जैनं । सद्यः प्रत्यूह नासनी  
 सान्निप्रेत समृद्धचर्थ । नूयाञ्जासन देवता ॥ १ ॥ ( पुनः ) समस्त बैया  
 वृत्य कर आराधनार्थं करेमि कान्तसग्नं अन्नन्नं कहके । एक नवकारको  
 कावसग्न करै ॥ नमो नमोर्जुत सिद्धा कहके एक स्तुति कहै ॥ येते जि  
 न वचन रता । बैया वृत्योद्यताश्च ये नित्यं । ते सर्वे शांति करा । न्वंतु सर्वा  
 णु यद्वाद्याः ॥ १ ॥ ( पीठे ) बैठके एमोत्थुणं कहै । मोटो कोई स्तोत्र स्त  
 वन कहै । जयवीरराय कहै ॥ इति नंदी विधिः ॥ पीठे ) सम्यक्तग्राही गुरू  
 कों खमासमण देके श्रुतसामायक सम्यक्त सामायक आराहनार्थं कान्तस  
 ग्नं करावेह ( गुरु कहै करावेमो ) ( पीठे ) सम्यक्त सामायक आराहनार्थं  
 करेमि कान्तसग्नं ॥ अन्नत्थुणं कहके ४ चार लोगस्सको कान्तसग्न करावै  
 ( पारके ) प्रगट लोगस्स कहै ( पीठे ) तीन नवकार गुणके । ३ बेर स  
 म्यक्त दंमक उच्चरै । गुरुपाठ बोले उसकी मनमें धारणा रखे ॥३॥

### ॥ ३ ॥ मुत्रपाठ यथा ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ ( सुत्रं ) ( अहन्नं जंते ) तुल्लाणं समीधे मिञ्जत्तानं पम्पिकमा  
 मि । सम्मत्तं उवंसंपक्कामि । नोमेकप्पइ । अऊप्पन्निइ अन्नतीत्थिएवा । अ  
 न्नतीत्थिदेवयाणिव । अन्नतीत्थि परिग्गहिय अरिहंतचेइयाणिव । वंदित  
 एवा । नमंसित्तएवा । पुविंअणाल्लित्तएणं आलवित्तएवा ( तेसिं ) असणंवा ।  
 पाणंवा । खाइमंवा । साइमंवा दाणंवा । अणप्पाणंवा । तेसिं गंधमल्लाइ पेसि  
 उंवा । ( नन्नत्थ ) रायान्नियोगेणं । गणान्नियोगेणं । वलान्नियोगेणं । देवान्न  
 योगेणं । गुरुनिग्गहेणं । वित्तीकंतारेणं । तंचनविहं ( तंजहा ) दव्वनं । खित्तनं ।  
 कालनं । जाव्वनं । तत्थ ( दव्वनं ) दंसणदवाइ अहिगिच्च । ( खित्तनं ) जाव  
 न्नरह मप्पिमखंमे ( कालनं ) जावज्जीवाए । ( जाव्वनं ) जावव्वलेणं न  
 वल्लिज्जामि । जाव सन्निवाएणं नन्नविज्जामि । जाव केणइ उम्माइ वसेणं ।  
 एसोदंसण पाळण परिणामो नपरिम्मइ । तावमे एसो दंसणान्निग्गहो । अ  
 न्नत्थणा न्नोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं । सब समाहि वत्ति आ

गारेणं । वोसिरइ ॥ पीठे उं ऊं श्री अर्ह नमः ॥ ॐ ॥ ऐसे अक्षर श्रीगुरुके पास हाथमें लिखा कै । जिन प्रतिमाकों वासहेप चढावै । नवकार पढतो यको ३ प्रदक्षिणा देकै ( देव गुरुप्रति बंदै ) पीठे श्रुत सामायिक थिरी करणार्थे । सत्तावीस उत्सासप्रमाणे । एक लोगस्सको कानसग्न करै । एक लोगस्स कहकै पारै । पीठें सम्यक्तरूपी कल्पवृक्ष पायकै । अति आनन्दसँ ऐसा अग्निग्रह वचन बोलै ॥ अरिहंतो महदेवो । जावज्जीवं सुसाज्जणो गुरुणो । जिन पन्नत्तं तत्तं । इय सम्मत्तंमए महियं ॥ १ ॥ पीठे गुरु धम्मदेश ना देवै । मिथ्यात्व वरजै (इसोतरै) सम्यक्त ग्रहण कियेवाद् जो विशेष जाव वृद्धी होय तो अपनी इच्छाप्रमाण दोय चार ( अथवा ) १२ वारै श्रावक का व्रत गुरुके पास ग्रहण करै और जो केईदिन मास पीठे व्रत ग्रहण करै ( तो ) पूर्वोक्त संपूर्ण विधि करै । नित्य चैत्यवंदन इतनी बेरकरुंगा । इतनी नवकार नित्यगुणुंगा । फल केसरादि वर्षप्रति इतना चढावुंगा । ग्यान दर्शन चारित्रिके जक्ति अर्थे इतनी द्रव्य खरचुंगा । सीलव्रत इतनी पधैतिथि पालुंगा । नित्य पंचक्खाण इसमाफक करुंगा । दिनकों नवकारस्यादिव्रत ( तथा ) रात्रीकों चउविहार । त्रिविहार । डुविहार । प्रमुख । और । बावीस अन्नक । वत्तीस । अनंतकाय । विदल प्रमुख । धारणाप्रमाणे सब ठेमुंगा । इत्यादि अपनी धारणा माफक सर्ववस्तुका प्रमाण । गुरुके सन्मुख करै । वारै व्रतका टीप सुणै । जिसमें लिया ऊवा व्रतकों अतीचार न लगे ऐसा उपियोग सदा रखै ॥ ॐ ॥ इति सम्यक्त व्रतारोपण विधिः ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥



॥ ॐ ॥ अथ प्राणातिपातव्रत दंमक लि० ( १ ) ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( अहंनंते । तुह्माणं समीवे । थूलग पाणाइवायं संकप्पिणं निरवराहं पंचक्खामि । जावज्जीवाए । एगविहं । एगविहेणं ( अथवा ) डु विहं । तिविहेणं । मणेणं । वायाए । काएणं न करेमि । न कारवेमि । तस्स जंते । पम्किमामि । निंदामि । गरिहामि । अण्णाणं वोसरामि ॥ यह पढला व्रतका दंमक बार ३ उचरावै ॥ १ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( अहंनंते । तुह्माणं समीवे । थूलगं मुसाइ वायं । जीहात्तेया

इहेतुअं । कनालीयं । गोवालीयं । चूमालीयं । थापणमोसा । कूटसाखीयं ।  
 पंचविहं पच्चक्खामि । दक्खिन्नाइ अविसे । दवउ । खित्तउ । कालउ ।  
 जावउ । दवउणं मुसावायं । खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं जाव  
 जीवाए । जावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि । ठलेणं न ठलिज्जामि ।  
 अन्नेण केणवि रोगाइयं । एसो परिणामो न परिवडइ । ताव अग्निग्गह ।  
 डुविहं । तिविहेणं । अन्नत्थणा जोगेणं । सहस्सागारेणं । मह० सब्बसमा  
 हि वत्तियागारेणं । वोसिरइ ॥ २ ॥ ॐ ॥ इति मृखावाद व्रतं ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( अहन्नं जंते तुह्माणं समीवे । अदिन्नादाणं । खत्तखणणा  
 इयं । चोरंकारकरं । रात्रिनिग्गहकारयं । सच्चित्ताचित्त वत्थुविसयं पच्चक्खा  
 मि । दवउ । खित्तउ । कालउ । जावउ ॥ दवउणं । अदिन्नादाणं । खित्तउ  
 णं । इत्थवा अणत्थवा । कालउणं जावजीवं । जावउणं जावगहेणं न ग  
 हिज्जामि । जावठलेणं न ठलिज्जामि । अन्नेणकेणवि रोगाइ एसो परिणामो न  
 परिवडइ । ताव अग्निग्गह । डुविहं । तिविहेणं । अन्नत्थ० सहस्सा० महत्त०  
 सब्ब० वोसिरइ ॥ ३ ॥ ॐ ॥ इति अदत्तादान व्रतं ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( अहन्नं जंते तुह्माणं समीवे । उदारिय वैक्रिय जेयं । धूलमेज्ज  
 णं पच्चक्खामि । अहागहियजंगएणं । दिव्वं तिरित्थं । माणसियं । एगविहं  
 एग विहेणं । पच्चक्खामि । दवउ । खित्तउ । कालउ । जावउ ॥ दवउणं मे  
 ज्जणं । खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं जावजीवाए । जावउणं । जा  
 वगहेणं न गहिज्जामि० । अन्न० । सह० । मह० सब्ब० । वोसिरइ ॥ ४ ॥

॥ ॐ ॥ ( अहन्नं जंते तुह्माणं समीवे परिग्गहंपमुच्च । अपरिमियपरि  
 ग्गहं पच्चक्खामि । धणधन्नाइ नवविह वत्थुविसयं । इत्थापरिमाणं उवसंपज्जा  
 मि । अहागहियजंगएणं । ( तंजहा ) दवउ । खित्तउ । कालउ । जावउ ।  
 दवउणं । नवविहपरिग्गहं । खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं जावजी  
 वाए । जावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि० । अन्न० । सह० । मह० । सब्ब० ।  
 वोसिरइ ॥ ५ ॥ इति परिग्रह प्रमाण व्रतं ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( अहन्नं जंते तुह्माणं समीवे । दिशिपरिमाणं पच्चक्खामि ।  
 ( तंजहा ) दवउ खित्तउ । कालउ । जावउ । दवउणं । दिशिपरिमाणं । खि  
 त्तउणं धारणा प्रमाणं । कालउणं जावजीवाए । जावउणं । जावगहेणं न

गहिज्जामि । जाव ठलेण तावअजिग्गह । अन्न० । सह० । मह० । सब० ।  
वोसिरइ ॥ ६ ॥ इति दिशिपरमाण व्रतं ॥ ❀ ॥ ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ ( अहं नंते तुह्माणं समीवे । जोगोवजोगेये ( जोयणं ) अ  
नंतकाय वज्जवीवा राइजोयणाइं परिहरामि । ( कम्मओणं ) पन्नरसकम्माइ  
यं । इं गालं कम्माइयाइं । वज्जसावज्जाइं । खरकम्माइयं । रायाजियोगंच परिह  
रामि । ( तंजहा ) दव्वं । खित्तं । कालं । जावं । दव्वंणं । जोगोवजो  
गवयं । खित्तंणं इत्थवा अन्नत्थवा । कालंणं जावज्जीवाए । जावंणं जाव  
गहेणं नगहिज्जामि० । अन्न० । सह० । मह० । सब० । वोसिरइ ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ ( अहं नंते तुह्माणं समीवे । अन्नत्थदंमं पचक्खामि । अव  
प्प्राण । पापोपदेश । हिंसोपकरणदानं प्रमादचरितं । चण्डिहं अन्नत्थदंमं ।  
जहा सत्तीए परिहरामि (तंजहा) दव्वं । खित्तं । कालं । जावं । दव्वंणं  
अन्नत्थदंमं । खित्तंणं इत्थवा अन्नत्थवा । कालंणं जावज्जीवाए । जावंणं  
जावगहेणं नगहि० । अन्न० । सह० । मह० । सब० । वोसिरइ ॥ ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अहं नंते ) तुह्माणं समीवे । सामाइयं । पोसहोववासं । दे  
सावगासियं । अतिथिसंविज्जागवयं । जहा सत्तीए पमिवज्जामि । इच्चयं  
सम्मत्तमूलं । पंचाणुवयं । सत्तसिक्खावयं । पुवालसविहं सावगधम्मं उवसं  
पक्कत्ताणं विहरामि । अन्नत्थणाजोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं ।  
सव्वसमाहिवत्तियागारेणं । वोसिरइ ॥ पट्साख । ठ ठंमी । च्यार आगार स  
हित पालुं । ए । १० । ११ । १२ ॥ ❀ ॥ ॥ ३ ॥  
इति आवककों संक्षेप वारैव्रत उचरावणविधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीतीतरागायनमः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सम्यक्तमूल वारै व्रतकी टीप लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम सम्यक्तकी शुद्ध धारना करै । तहां देव अरिहंत । अणरै  
दोपरहित । चौत्रीस अतिसय पैत्रीस जापागुण संयुक्त । श्रीअरिहंत देवकों  
देवकरीमानें । चार प्रकारै आराधे । नामअरिहंत १ । स्थापना अरिहंत २ ।  
द्रव्यअरिहंत ३ । जावअरिहंत ४ । ए च्यार प्रकारसैं अरिहंत देवकों ध्यावै  
पजै । और कुदेव हरि हरादिक, राक्षस, व्यंतर, देवी, खेत्रपालादिक

लीक, कन्याकै सगाईमें वरष अधिका उन्नानकहै। इसमें द्विपदसंबंधी जूठ सर्व  
जाणके ठेमें ॥ दूजा गौवालीक ॥ गाय जैसे घोमा हाथी इनकों बेचते लेते  
जूठनबोलै ॥ तीजा ज़ोमालीक । ज़ूमिजमीनका जूठ न बोलै । चौथा जूठी  
साखनजरै । कारणै जयणा ॥ पांचमाथापणमोसा ॥ थापण कहिये धरोर न  
पचावै । प्रथमतो किसही की धरोर न राखै । जो राखै तो धणी मांगै तब  
देवे । जो रखणैवाला न होय तो धरमहेते खरचे ( इस ज्ञातिबीजाव्रतपालै )  
इसके पांच अतीचार हे सो कहै है ॥ प्रथम अतीचार, सहसातकारै अण  
विचाखो वचन कहै ॥ १ ॥ दूजा अतीचार किसहीनै ठानीवात आपणी  
कहीथी सो लोकमें प्रकाश करदेवै ॥ २ ॥ तीजा अतीचार, मंत्र जेद ॥  
अपनी अस्त्रीका । अथवा धरका । अथवा औरही किसका । ठाना गुह्य  
प्रकाशै ॥ ३ ॥ चौथा मृषा उपदेश । जूठो उपदेशदेवै । साचाने जूठो करै ।  
धर्मका मार्ग जूठा प्ररूपै ॥ ४ ॥ पांचमा कूमलेख । जूठा कागद खत बणाइ  
कै जगमै ॥ ५ ॥ ए पांच अतीचार टालके दूजा व्रत पालै ॥ १ ॥ ॐ ॥  
॥ ॐ ॥ अवतीजा थूल अदत्ता दान विरमण व्रत लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ थूल कहिये मोटी अदत्त कहिये चोरी तिससे विरमनां । तहां पांच  
प्रकारकी चोरी न करै । प्रथम पराई पडी गिरी वस्तु न लेवे । जो चित्तकी  
चपलता सों लेवे तो धणीकुं देवे । वस्तुका धणी न मिलै तो पुन्यहेत खरचै  
जो नहिं खरचै तो चोरीको दूषण लगे । इति प्रथम दोष । दूजा विस्मृत  
दोष । किसीनै झूलपणै चीज गमाई होई जो पावे तो धनीकों देवै । नदेतो  
अतीचार लागै ॥ अथ तीजा थापन दोष ॥ कोई वस्तु धरगया है तिसकी  
वस्तु नदे मुकर जाइ ॥ चौथास्थित दोष ॥ कोई कांही ठानी वस्तु रखगया  
है सो निकाल लेवै ॥ पांचमा नष्टग्रहण दोष ॥ किसहीकी गईवस्तु रखे पावे  
तोझी धणीकुं नदे ॥ ए पांच मोटा अदत्त नलेवै ॥ इस व्रतके पांच अ  
तीचार टालै ॥ प्रथम तेनाहत ॥ चोरनै चुराई जोवस्तु मोल लेवै ॥ १ ॥  
तत्प्रयोगदूजा अतीचार ॥ तत्कहिये चोरसों प्रयोग करै । चोरकोंजेद देवै ।  
तीजातत् प्रतिरूप अतीचार ॥ चोरसों साज्जा करे पूजी देवै ॥ चौथा  
दानचोरी । राजा पातस्याके हासलकी चोरी करै । कोई कारणपाके अथवा  
झूलिपणै ठोटी मोटी वस्तु लेता बेचतां हासल नदीजीये तेहनीजयणा । वस्तु

खरी दिखाई खोटी बेचै । (वा) जेलकरी बेचे । ए चोथा अतीचार ॥ पांचमाराज  
विरुद्धातिक्रम ॥ राजाने जोदेशमें कार्य मन्है कीया सो करै । खोटामापा खो  
टातोळ करै ॥ ए पांच अतीचार टांझके तीजो व्रत पालै ॥ ३ ॥ अथ चो  
थोस्वदारा संतोष परदारविरमन नामव्रत ॥ अपनी छीऊपर संतोष । परस्त्रीका  
त्याग करै । तहां अपनी काया करिकै शील व्रत पालै । देवता मनुष्य तीर्थच  
के मैथुनका परित्याग करै । अपना कुटुंबके निमित्त किसहीका विवाह स  
गाई करावणकी जयणा । मन करि, वचन करि, हासी मसकरी करितां जो  
दोष लागै तिसकी जयणा ॥ इस व्रतके पांच अतीचार टालै ॥ प्रथम  
अपरिगृहीता वैश्यादिकको सेवन करै ॥ १ ॥ दूजा, इतर काल परिगृहीत  
स्त्रीको सेवन करै ॥ २ ॥ तोजा काम क्रीडा विशेष करै ॥ ३ ॥ चोथा ती  
जकामानुराग करै ॥ ४ ॥ पांचमां पर विवाह करै ॥ ५ ॥ ए पांच  
अतीचार टालै । मन वचनकी जयणा । काया करी शील शुद्ध पालै  
ए पांच अतीचार टाली चोथा व्रतपालना ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ पांचमा परिग्रह प्रमाण व्रत ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ इच्छाप्रमाण नव प्रकारका परिग्रह प्रमाणकरै । तहां प्रथम धनद्रव्यनी  
संख्या अपनी इच्छा मुजब करै ॥ प्रथम रुपया मोहरकी संख्या । सोनाकी  
संख्या । रूपाके आशणकी संख्या ॥ जवाहर टूटा गहणा ॥ पीतलके वासण  
मण ॥ जसदके वासणमण । सीसा रंगके वासणमण । लोहाके राठ पीठ  
हथ्यार काठके वासण चोकी तखत । चीणीसंग काचके वासण मण । हाथी  
बोना । बैल । गाय । नैश । उंठ । बकरी । लोमी । गुलाम । रथ ।  
गाम्नी । पालखी । मोली । इत्यादि ० अथ वस्त्रकी संख्या । रेशमकी जाति  
सर्व । सूतकी जाति सर्व । टसरकी जाति सर्व । घासकी जाति सर्व । ऊनकी  
जाति सर्व । मखमलकी जाति । पसमकी जाति । धिरमा पाचमी बनात कि  
नारी गोटाइत्यादि ॥ अथ विठवनेकी विगता ॥ गलीचा जोम । मसलंद जोड ।  
सीतलपटी जोम । सितरंजी जोम । जाजिमजोडी । इत्यादि सर्व इच्छा पर  
माण रखे ॥ अथ धान २४ जातिके है तिसकी संख्या करै ॥ गज्जु मण ।  
चानल मण । मोठ मण । मूंग मण । जून्द मण । अरहंड मण । बोना मण  
तूवर मण । बाजरी मण । मसूर मण । जुबारि मण । तिश्न मण । कुलथी

मण । मंडुवा मण । मकई मण । कौणी मण । कौदू मण । जालरकी दाल  
 मण । मटरकी दाल मण । खिसारी मण । कावलीचिणा मण । किरान  
 मण । झुरट मण । सरसौ मण । तीसी मण । ओरनी देश परदेश जाइयैतों  
 तहां कोई अपूर्व जातिनो नाज होइ । तेहनी संख्या करै ॥ अब किरी  
 याणादिकनी संख्या कहेहै ॥ घी वर्ष माश मध्ये मण । तेलजात माशमध्ये  
 मण । गुडमाशमै मण । खामि जाति मिठाई मण । झौणजाति मण । रूई  
 मण । रसम मण । ऊन पसम मण । सुंठि मिरच आदि करीयाणा मण । हल  
 द मण । हरमै बहेमा आदि मण । नालेरादि फल । सुगंध अरगजादिक  
 सर्व जाति । अंतर, रंग, महिदी मण । ओर ठोटी बनी वस्तु झूल चुक लैएँ  
 दैनमें आवै तिसकी जयणा ॥ अपणै निमित्त देश परदेश मध्ये, घर मोल  
 लेणा । नवा वणावणा । जामे लैना । घर, क्षेत्र, बाग, बानी, डुकान ।  
 ए सर्वनी यथासक्ति संख्या करै । ओर झूली चूकी ठोटी बनी वस्तु  
 मोकली नरही । और काम पमे सें लेवें । तो व्रतजंग नही होय । ए परिग्रह  
 प्रमाण अपणी कायाका मोकला है । ओर घरमें ओर कै निमित्त लेतां देतां  
 देश परदेश झूल चुककी जयणा ॥ इस व्रतके पांच अतीचार टालै ॥  
 तिसको विगत ॥ प्रथम धनधान्यातिक्रम । जेधन धान मोकला रक्खा है । तिस  
 सें ज्यादा बधावै ॥ १ ॥ दूजा क्षेत्रातिक्रम । जो क्षेत्र जमीन मोकली रखी है  
 अथवा घर बागरख्याहै । तिससें अधिक बधावै ॥ २ ॥ तीजा रूप्य स्वर्ण  
 मानातिक्रम । रूपा सोना जवाहर ग्रहणादिक मोकलाहै तिससां यादा  
 बधावै ॥ ३ ॥ चोथा द्विपद चतुष्पद मानातिक्रम । जे नफर दाशी घोमा,  
 हाथी बैल गाय नैश आदि जो मोकला रक्खाहै । तिससें अधिक रक्खै  
 ॥ ४ ॥ घरबखरी मानातिक्रम ॥ जे घरकै निमित्त ठोटा बन्ना राठ पोठ  
 वस्तु ज्ञाव रक्खाहै । तिसकै मानसो अधिक मान बढावै । ए पांच अतीचार  
 टालके पांचमा व्रत पालै । इति पंचमव्रत ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ठठा दिशिविदिशि प्रमाणव्रत लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तहांदिशि ४, विदिशि ४, अध १ ऊर्ध्व १ एवं दश दिशीका  
 प्रमाण, इच्छापरमाणें करै । एवं दशदिशाविषै जावणैकी संज्ञा उपरांत न जाणां  
 कागद जेजणेकी जयणा ॥ जलबटें नदी समुद्रै नाव तथा जिहाजै कार्यपमै

धके चढणैकी जयणा । ठगव्रतना पांच अतीचार टाले । प्रथम ऊर्ध्वदिशि प्रमाणातिक्रम ॥ १ ॥ दूजा अघोदिशि प्रमाणातिक्रम ॥ २ ॥ तीजातिरुद्धी दिशि प्रमाणातिक्रम ॥ ३ ॥ चौथाअतिचार, जे कांम पड्या दिशि विदिशि घटावै वधावै ॥ ४ ॥ पांचमा अतीचार, जे मननै विस्मृत उपनै दिशि विदिशि का प्रमाणलंघके जाणा ॥ ५ ॥ ए पांच अतीचार टालके ठगव्रतपालै ॥ ६ ॥

॥ ✽ ॥ अथ सातमां जोगोपजोग नामव्रत ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ इसके जेद दोष ॥ एक जोग वस्तुकीसंज्ञा । दूजा कर्मादानकी संज्ञा । तहां प्रथम जोगार्थे चतुर्दश नेमकी संज्ञा नित्यप्रते करै । सचिंत १ । दध २ । विगई ३ ॥ पानही ४ । तंबोल ५ । बत्थ ६ । कुशमेसु ७ ॥ बाहन ८ । सयण ९ । विलेपण ॥ १० ॥ वंज ११ । दिशि १२ । न्हाण १३ । जत्तेसु १४ ॥ यह चवदै नियमको नित्य प्रति अपनी इच्छामुजब प्रमाण करै । तिसकी विगत । प्रथम सचिंतकी संज्ञा । दिनमै सचिंत । द्रव्य इतनो । खाणैके विगै ७ । जूती । जोमा । पानकेबीमा । वस्तु वेशपहिरणा । अपणै शरीर खाते तिसकी दिनमै ७ । फूल सर्वजातिना तिसकी संज्ञा । बाहन । असवारीकी संज्ञा । दिनमै असवारी ७ । सिज्या चौपई । पाटला । तखत । पीढा । चौकी । आसण । एताउपरांत नरखणां । विलेपन दिनमै । अवंच । शीलपालणा । दिनमै च्याह दिश जाणा कोस ७ । दिनमै स्नान । करणां । जत्तेसु कहतां आहारकी संख्या । सो आहार चार प्रकारका । अशन १ पाण २ खादिम ३ स्वादिम ४ ए चार प्रकारकी नित्य संज्ञा करणी । ते मध्ये । प्रथम दिने नाज खाणेकोनेम करै । दिनमै अपणै पीवणै निमत्त पाणी घमो । धोवणै न्हाणैकुं घमा वाकी नियम । खादिम मेवाजाति दिनमै मोकला । मिठाई जाति दिनमै ७ मोकली । तरकारीकी जाति सूकी हरी इत नी मोकली । फलजाति दिनमै मोकला । स्वादिम मुखसोधकी जाति दिनमै मोकली । औरजी जूत्रे विसरेकी जयणा । इति जोगसंज्ञा । जोगोपजोगके ५ अतीचार । सचिंतनक्षत्र १ ॥ सचिंतप्रतिवक्ष नक्षत्र २ ॥ अपकाहार नक्षत्र ३ ॥ उपकाहार नक्षत्र ४ ॥ तुष्टोपधी नक्षत्र ५ ॥ ए पांच अतिचार कहा ॥ अब पनरै कर्मादान । प्रथम इंगालकर्म । इंगाल कंदीये कौइलानो व्यापार निषेध । घरनै कार्य मोललेवै । जंगल कटाइके न करावै । कारण



जयणा । इटादिकके कार्य पजावा न पचावै । धा गलाइ । टंकसालमें  
 न वैचै । घरके निमतें जयणा । नषध पचावणकी जयणा । दूजा वणकर्म  
 तहां दिनमें अपणै निमत नाजमण । पीसावणा । मण दलावणा । मण ।  
 सेकावणा । पांन फूल फलादि व्यापार न करणा । घरकै निमत लेतां जयणा  
 इंधण माशमें घरके खरच माफक लेणा । यादानही । चौथा जामी कर्म । गामा  
 गामी ठंठ वैल घोमा घोमी बकरा जामै न देणा । अपणै निमत जामै लेतां  
 जयणा । पांचमाफोमी कर्म । जमीखुदाय खानिकढाइ धान मिठी लौन पाषा  
 ण इत्यादि व्यापार निषेध । अपणै काम जमीन खुदावै तो जयणा । दांतनो  
 व्यापार निषेध । अपणै निमत कारणै लेतां जयणा । लाखका व्यापार निषेध  
 रसवाणिज्जे । रस घी, तेल, सहित, गुम, इत्यादिक व्यापार निषेध । घरमें  
 मोकलाहै ते बिगमै तो बेचनकी जयणा । केसवाणिज्जे । केसवाणिज्ज निषेध  
 अपणै अर्थे केस, सुगंध, बाल, चमरके बाल, पसम, लेणेकी जयणा । विष  
 वाणिज्जे । विष हरताल, मज्जरा, जहर, अफीम, इत्यादि व्यापार निषेध ।  
 आत्माके कार्य लीजीये तेहनी जयणा । यंत्र पीलण कर्म निषेध । घाणी को  
 लु प्रमुख न चलावैण । निह्मंठण कर्म निषेध । बालक पशु जीवना अवयव  
 छेदवा निषेध । दवदान कर्म ॥ दवदैणा जंगल जलावणा निषेध । नदी ब्रह्म  
 तलाव कूआ होद प्रमुखना अवावरपाणी ऊलिंचवानही । असती जन पोषण  
 या ॥ बाघ सिंह चीता कुत्ता बिल्ला बाज जुररा तोता मैना इत्यादि हिंसक जीव  
 पोषी वैचणका । निषेध । घरमें तोतादि जीव होइ तेहनें पोषणकी जयणा ।  
 औरजी कोटवादी दरोगाई अमीती इत्यादिक लोकनें पीमा ऊपजै ते  
 कार्य व्यापार न करै ॥ इति १५ कर्मादान टालके सातमा व्रत पालै ॥ ७ ॥

॥ ॐ ॥ अथ अष्टम अनर्थ दंम व्रत लिख्यते ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ तहां अपणै कार्य बिनाही पापदंम लगावना । तेहना ४ प्रकार है ॥ प्रथम  
 प्रमाद आचरित जे प्रमादकेवसें घी तेल प्रमुखका वासण उद्यामाखा तहां अ  
 नेक जीव मरै । अनर्थ दंम । दूजा हिंसाप्रदान । शस्त्र हथियार तुरी कटारी  
 जहर प्रमुख मांग्या देवै (ते न देना) तीजा पापोपदेश । निष्कारण जूग उप  
 देस देना हासी मसकरी निंदा आरंनका उपदेस देना (ते निषेध) झूलि चूक  
 घरनें कार्य जयणा । चौथा अपध्याना चरित । आर्त्तध्यान, रोद्रध्यान, ध्यावनी

ते निषेध करै यथाशक्ति । पांचमां क्रीमावलोकन । तहां चोरमारीजता सती होते देखना । ओरनी हंस्याके तमासा कुं देखन जाना । तेहनो निवारण करै । उदीरणा करी तमासा देखन न जावै । मार्गमै जातां आवतां निजर पमै तहां समा न रहै । ओर चूला, चकी, ऊखली, तुरी, कैंची, इत्यादि हंस्याके कामके लाइक चीजवस्तु औरकुं मांगी न देवै । इस व्रतके पांच अतीचार है ॥ प्रथम कंदर्पचेष्टा ॥ जिस सेती काम उपजै सो चेष्टा करै । दूजा कुकथा ॥ राजकथा १ । स्त्रीकथा २ । देशकथा ३ । जोजनकथा ४ । ए चार विकथा करै ॥ तीजा वाचालत्व ॥ अविचार्यो वचनं जिम तिम बोलै ॥ चोथा अधिकरण ॥ पीठी मऊन उन्होपाणी आपलाइकचहिये ते और दस पांच लोकों निमत्तवणावै । सर्व पहिला चूड़ोजलावै । आवै जिसकों आग मांगी देवे ॥ पांचमो जोगोपजोग अतिरिक्त ॥ जीमतां नाज अधिकोलेई जूगोनाखै । तहां माखी प्रमुख जीव विराध्या जाय ते करै । यह पांच अतिचार टाली अष्टमव्रत पालन करै । अपने निमत्त जो कार्य कर नमै आवै सो जयणा रखे निकारण अन्यायै पापारंज उपदेशादि नकरै ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवमा सामायिक व्रत लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वर्षमध्ये जघन्यपणै सामायिक ॥ ७० ॥ करणा (वा) माशमध्ये सामायिक जघन्य ॥ ६० ॥ करै । दिनमध्ये सामायिक जघन्य । दोय करै (अथवा) यथा सक्तिसारुकरै ॥ इसका पांच अतीचार टालना ॥ प्रथम मनो दुःप्रणिधान ॥ मनकरीनै, सामायिक मध्ये संकल्प विकल्प आरति रौद्र ध्यावै (ते न ध्यावणा) ॥ दूजा वचन दुःप्रणिधान ॥ वचनै करी विकथा हार्य क्रोध गालि इत्यादि बोलना । तेन बोलै । अवोलपणै रहै । बोलै तो साखपाठ पढै । तीजा काय दुःप्रणिधान ॥ कायाइ एक आसणै न बैठे । अंग उपांग हलावै । उठै बैठै । (ते न करै) ॥ चोथा अनवस्था अतीचार ॥ सा मायिकके कालसँ अधिका उत्रा काल घटावै चलावै ॥ पांचमावेला विस्मृत अतीचार ॥ तहां सामायिकनी विरीया झूल जावे व्रतविषै आदर न करै । ए पांच अतीचार टालके । नवमाव्रत पालना ॥ इति नवमं व्रतं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दशमां देसावगासिकव्रत ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तहांदिश अथवा कालको परिमाण करै । दिशिचारुं मोकली रखी

है जिसमेंसे नित्यप्रति अपने कार्यलायक रखै। उपरांत जाणेका त्याग (वा) जिस जागा बैठे होय सोइ मोकली रखियै। उपरांत फिरे नही। तहां एक ठिकाणें वेठी। घनी तथा प्रहर मर्यादा ताई। धर्म ध्यान ध्यावै। ते देशा वगासिक व्रत माशमध्ये यथाशक्ति करणां। इसका पांच अतीचार। प्रथम आपको उठणो नही। तेसेती चीजवस्तु और पासि मंगावै ॥ दूजा मूका वणा ॥ औरकुं कही वस्तु धरावै। तीजा साद जरणा ॥ नफर चाकरको बुलाईके काम कहणा। चौथारूप देखावणा। पांचमां काकरी नाखी, तथा ताढी वजाईं ऊंकारा करी आपोजणाईयै। ए पांच अतीचार टालके दशमो व्रतपालणा ॥ इति दशमव्रतं ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ एकादशमा पोषध व्रत लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ते पौषधव्रत वर्षमे करणा। माशमें करणा। दिनका पोशा करणा। रात्रिका पोशा करणा। वलीयथाशक्ति अधिक करै ते लाज। इसका पांच अतीचार ॥ प्रथम अप्रति लेखित अतीचार ॥ जेजागा पोसो करै ते विना बुहारी विना पमिलेही करै। दूजा दुःप्रमार्जित सिज्यासंस्थारक ॥ तहां कपडा पूंठणा सज्या विना पमिलेही वावरै ॥ तीजा उचार पासवणजूमि विनादेखी परठवै लघुनीत वमिनीत। जमीनविनादेखी मालनां। चौथा विक था निद्रा प्रमाद करणा ॥ पांचमां ॥ पोषधमांहि पारणेंका फिकर करणा ॥ ए पांच अतीचार टालके इग्यारमा व्रतपालै। इति ११ माव्रत ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ बारमा अतिथि संविभाग नामव्रत लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावक पोशाके पारणें अतिथि कहीये साधू मुनीश्वर। तेहनें संविभाग कहीयै शुद्धदान चार प्रकारको आहार यथाशक्ति सारू देवै साधुनी जोगवाई न मिले तो श्रावक श्राविका ब्रह्मव्रतधारीनें पोषणा। माश मध्ये मुनीश्वरने हीनसक्तिदान ॥ दोयदिन, ४ दिन, देणा। उपरांत देणा सो लाज। महीनामें। श्रावक २। श्रावका ४ जिमावणी। ज्यादा जिमाइयै ते लाज ॥ आहार दान १। औषधदान २ शास्त्र दान ३ अन्नयदान ४ ए चारू दान यथाशक्ति करना ॥ बारमा व्रतका पांच अतीचार टालके व्रत पाले ॥ प्रथम मुनीश्वर आये आहार शुद्ध ऊपर सचित्त मिलावै ॥ १ ॥

दूजा अतीचार जे शुद्ध आहारकों सचित्तसैं ढोंके ॥ २ ॥ तीजा अतीचार जे साधूनें कोई वस्तु मांगी ते आपणी ठी परनी वस्तु कहै ॥ ३ ॥ चौथा अतीचार । जे साधुना गोचरीनी बेलाटाली आहारनी निमंत्रणा करै ॥ ४ ॥ पांचमा दूसरेकों दान देतां देखके मञ्जरतासैं दान देवै ॥ ५ ॥ पांच अतीचार टालके वारमा व्रत शुद्ध पालणां ॥ इति वारमा व्रत समाप्त ॥ ५॥ ( तथा ) वारै व्रतधारी श्रावक ५ पांच आचार शुद्ध पालै । प्रथम ज्ञानाचार तिसका ८ अतीचार टालके ज्ञानकों आराधै ॥ दूजा दर्शनाचार तिसके ८ अतीचार टालके शुद्धदर्शनको आराधै । तीजा चारित्राचार तिसके । आठ अतीचार टालके चारित्र शुद्ध आराधै । चौथा तपाचार । तिसके वारै अतीचार टालके तपकों आराधै । पांचमा वीर्याचार । तिसके तीन अतीचार टालके आत्मके साधनै वीर्य पराक्रम फोरवै । ५ पांच आचार पालै । संलेखनाके पांच अतीचार ते टालके संलेखना शुद्ध करै ॥ ५॥ ५ वारै व्रत उचारै तब ठुंमनी । आगार मोकला राखे । तिसका नाम । प्रथम रायानि योगेण । राजानें अक्रामयोगे करी । बलान्नियोगेण कोईके बलात्कारे करी । गणान्नियोगेण । गणके लाजका कामें करी । देवानि योगेण । कोई देवतानें अन्नियोगे करी ॥ ४ ॥ गुरु निग्गहेण । गुरुके कहे लाजको कारण ऊपजेसैं ॥ ५॥ वित्ती कंतरेण । जंगल अटवीमध्ये प्रवेश कियां थका ॥ ६॥ ए ठ प्रकार माहिलो कार्य कोई ऊपजे । व्रत विराध्यो जाय तिसको दोष नही ॥ बली चार आगार ओरजी राखणा । अनत्यणा भोगेण । सह स्तागरेण ॥ २ ॥ महत्तरा गारेण ॥ ३ ॥ सब समाहि व्रतियागारेण वो सिरामि ॥ ४॥ ए व्रत उचरतांको पञ्चखाणहै । कदाचित् व्रतमें प्रमादकेवसें जो कोई अतीचार लागै तिसकी आलोचण । चौथ जक्त उपवासर करै । नही तो आंधिल दोष करे । ते न होइ तो नीवी तीन करै । नही तो इकासणा ४ करै । (अथवा) बीश नोकरवाली मनशुद्ध गुणै । व्रता अतीचार । अनाचार लागै तो विशेष तप करै । शुभजावना जावै । आत्माकी निंदा करै । ए प्रकार करी शुद्ध सम्यक्त सहित व्रत निश्चलपणें पालै । ते जीव पापपंक दूर करके आपणा आत्माकों निरमल करै । और देवलोक ( तथा ) अनुक्रमै मुक्तिका सुखपामै । यह वारै व्रतकी टीप रोज संजालै । जे कोई दूषण लागै

ते पक्कमणामध्ये आलोवै । नित्य नसंचारी जाय ते दिन १५ मै संचारै ॥  
इति श्री व्रत विधान व्रतोच्चारण विधि समाप्त ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ वार व्रतकी पूजा लिख्यते ॥ ॥

॥ ॥ प्रथम समकित द्रव्य करण जल पूजा ॥ दूहा ॥ व्रत वारै आदर  
करी । पूजा तेर विधान । आनंदादिक संग्रही । सप्तम अंग प्रधान ॥ १ ॥  
राग सरपदो ॥ ज्योति सकल जग जागती हां ॥ ए चाल ॥ ज्योति विमल  
जगज्जलहलै । हारै अश्वोत्त ० ए । शाशन पति जिनचंद । त्रिकरण प्रणमन  
करिसूं । वीरचरण अरविंद ॥ १ ॥ न्हवन १ विलेवण २ वासनी ३ ।  
हारै ० माल ४ दीवंच ५ धुवणियं ६ ॥ फूल ७ सुमंगल ८ तंडुला ९ ॥  
हारै ० ए ॥ अमलं दण्णच १० नैवज्जं ११ ॥ १ ॥ ध्वज १२ फलवृंद  
१३ एमेलियै । हां ० ए । पूजा त्रिदश प्रकार । हां ए । व्रत ग्रहि अनुक्रम  
अरचीयै । जगपति जगदाधार ॥ ३ ॥ सिवतरु सुखफल स्वादनो । हारै ०  
दायक गुणमणि खांण । हां ए । कुशल कला कलना थकी । प्रगटै परम  
निधान ॥ ४ ॥ दूहा ॥ समकित व्रत धुर आदरो । भेटो निज मन नर्म ।  
दूर थकी ए परि हरो । कुगुरु कुदेव कुधर्म ॥ १ ॥ धुर दर्शनाण सुचरण  
अणसण धीर वीर्य वखानियै । तपइम सकलना सिद्धि गज वसु पण ति वार  
सुमानियै । व्रत वारना अतिचार शर शर परम गुरुमुख जानियै । करित्याग  
राग प्रशस्त धरिमन विमल संवर मानियै ॥ १ ॥ राग रामगिरी ॥ गात्रलूहै  
जिनमन रंगसूरे देवा । स ० ए चाल ॥ धुर समकित व्रत चित धरोरे वा  
ल्हा । नवन्नय डुख दल परिहरो । परिहरो हारै वाल्हाप ० शिवरमणी वर  
लीजीयै ॥ १ ॥ वीर जिनेसर बंदीयैरे वाल्हा । जिम चिरकालसु नंदीयै ।  
नं ० हारेवा ० ॥ कुमति डुरति सरकीजीयै २ ॥ चरण करण गुण मणि  
निलोरे । वाल्हा ० जगजन तारण सिरतिलो । सि ० हां ० ॥ सदगुरुचरण  
नमीजीयै ॥ ३ ॥ जिन चावित श्रुतसागरोरे वा ० । जेद विविध विधि  
आगरो । आगरो ० हारै ० ॥ श्रवण जुगलकर पीजीयै ॥ ४ ॥ जिन  
शासन जिनधर्म नोरे वा ० । रागदलन वसुकर्मनो । कर्म ० । हां ० । कुश  
लकला रसनीजीयै ॥ ५ ॥ इति ॥ डूहा ॥ सकल करमदल मलहरण । पूजा  
धुर जलधार । जगनायक जिनतुंगनी । नरधर नगति नदार ॥ १ ॥ रागजी

जोटी ॥ निरमल होय नजलै प्रज्जुप्यारा । सब ० ॥ ए चाल ॥ जिनवर न्हवण  
करण सुखदाई । बूटै जनम मरण दुखदाई । जि ० ॥ टेरे ॥ खीरजलधि गंगोद  
कमांदि । अमल कमल रस सरस मिलाई । जिन ० ॥ १ ॥ निरमल शकल  
परम तीरथ जल । मणियुत कंचन कलेश भराई ॥ जिन ० ॥ २ ॥ या जिन  
जीके नवण करणें । नवजय दुखदल दाघसमाई ॥ जि ० ॥ ३ ॥ द्रव्य जाव  
विधि समकित फरसै । तेनर नरक निगोद न जाई ॥ जि ० ॥ ४ ॥ यातें नवि  
जनके दुख नासै । कपूर कहै सुरहोत सहाई ॥ जि ० ॥ ५ ॥ इति ० ॥ काव्य  
परमलंकृत संस्कृत श्रद्धया । स्तपति यो जिनचंद्र मिमंमुदा । नवजय परिमु  
च्य सदोदय । नजति सिद्धिपदं सुखसागरं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अ  
नंतानंत ग्यानसक्तये । जन्मजरा ० श्रीमद् ० श्रीसमकितव्रत उपदेशकाय जलं  
यजामहेस्वाहा । इति प्रथम समकित व्रतपूजा ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ अथ प्राणातिपातव्रते केशर चंदन विलेपन पूजा ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ दूहा ॥ प्राणातिपात विमण व्रतें । बंमो जंतु विनास । इणसुं  
शिवसुख नामिलै । हिंसा दोषविलास ॥ १ ॥ हंमकुं बंडचले वनमा  
धो । राधा ० ॥ ए चाल ॥ नविजन जीवदया व्रत धारो । सम परिणा  
म संचारोरे । न ० ॥ टेरे ॥ अपराधा पिण जीव न हणियै । जावै  
जगदा धारोरे । देशविरति धरनें पिण नारव्यो । विन अपराध न मारोरे । न ०  
गो गज संधव महिपा दिकनें । वधन वध न विचारोरे । कीजै न अवयव  
ठेद त्रिकालै । जलचारो न विसारोरे ॥ न ० ॥ २ ॥ कीमी कुंजरनें सम  
गिणियै । सुख दुख जोग विकारोरे । थावर वस पंचैद्यादिकनो । होय रहि  
यै हित कारोरे ॥ न ० ॥ ३ ॥ ए व्रत रत चित जे नर जगमें । सुर नर गण  
मन प्यारोरे । तेहिज लोच महाजटमाखो । सकल करम परिवारोरे न ० ॥ ४  
थूलथकी ए व्रत जे पालै । तेहहै शिवसुख सारोरे । कुशल कला कलना  
करी प्रगटे । अनुनवरंग उंदारोरे । नवि ० ॥ ५ ॥ दूहा ॥ नव दव दाघ सवे  
मिटै । पूजो परम दयाल । जावठ नंजन सुखकरण । दूजी पूजरसाल ॥ १ ॥  
(राग धाटो) । जिनराजनाम तेरा न्हाराज ० ए चाल ॥ पूजो जिनेंद्र प्यारा ।  
होतारो रे विकट नवजलसै । हो ० । टेरे ॥ हारे घनसार चंदन वासै । हारे  
सुकुरंग नाचि जासै । दुख नारकादि नासै ॥ होता ० ॥ १ ॥ वसिं सूकमा

दि जेली । नाना सुगंध मेली । शिवदेन कर्म ठेली ॥ होता ० ॥ १ ॥ पूजा  
 सदा रचावो । वर ज्ञावनापि ज्ञावो । शिवसौधमे समावो ॥ होता ० ॥ ३ ॥ विधि  
 ज्ञाव द्रव्य धारो । हिंसाको दोष वारो । प्रज्जुनाम नां विसारो । होता ० ॥ ४ ॥  
 तज पाप ज्ञार फंदा । शिवशं कलाप कंदा । साधै कपूरचंदा ॥ होता ० ॥ ५ ॥  
 इति प्रथम पूजा ॥ काव्यं ॥ अमल कुंकुम केशर मिश्रितै । जिनपतेर्युगपा  
 द समर्चनं । हरति सो जवदाध मसुंदरं । रचतियो घनसार सुचंदनै ॥ १ ॥  
 नै ज्ञी श्री परमात्मने अनंता ० जन्म ० श्रीमत् ० प्राणातिपात विरमण व्रत  
 उपदेशकाय चंदनं यजामहे स्वाहाः ॥ इति प्राणातिपात पूजा ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ मृषावाद व्रत वासंक्षेप पूजा ॥ ॥

॥ ॥ ॥ दुहा ॥ मृषात्याग व्रत दूसरो । कुमति डुरति हरतार ।  
 जविजन ज्ञावै आदरो । शिवतरु फलदातार ॥ १ ॥ राग वशंत ॥ सब  
 अरति मयन मुदारधूप । कर ० ॥ ए चाल ॥ सुण जविक नर धर डुतिय  
 व्रत मन । मृषावादन वोलेरे । वाला मृषा ० । टेरे ॥ मृषावाद कुवाद शेश्वर  
 कुजशवाद न ठोलेरे । वाला । कुजश ० सु ० ॥ १ ॥ सकल शिवसुख धाम  
 धमरवि । ठकण राज्ञ निठोलेरे । शिवपुर नगर पथि शवर सरिखो । अरति  
 व्यापन घोलेरे । वाला । अरति ० वाला ० । सु ० ॥ २ ॥ निपट कूट कला  
 प करिनै । परगुपति मतखोलेरे । ऋणविधौ धनधान्य निकरै । कपट कूट न  
 तोलेरे ॥ वालाक ० सु ० ॥ ३ ॥ कूटलेख कुसाख जरिनै । रचयमां मममो  
 लेरे । अन्य सिरसि कलंक धरिनै । चरित ठानुं न वोलेरे । वाला चरित ०  
 सु ० ॥ ४ ॥ वसुनरेसर वृथा रचिनै । लह्यो कुगति कचोलेरे । डुतीय व्रत  
 रस राग जैरवी । कुशलसार विमोलेरे । वालाकुश ० सु ० ॥ ५ ॥ इति ॥  
 दुहा ॥ जगदाधार जिनंदनै । पूजौ वासरसैण । शिववनिता वस कीजियै ।  
 पूजा व्रयतम एण ॥ १ ॥ राग गरवो ॥ जवि चतुर सुजाण परनारी सुं प्रीत  
 मी कवज्जन कीजियै ॥ जण ए चाल ॥ जविज्ञाव धरी जवसागर निस तार  
 क जिनपति सेवियै ॥ जण ॥ टेरे ॥ वाचनचंदन खंमन करियै । तेहमां बलि  
 कुंकुमरस जरियै । मृगमद परिसलता अनुसरियै ॥ जवि ० ॥ १ ॥ कंकोल  
 सुवासित बलि कीजै । तिम विवध कुसुम रस कस दीजै । ए चूरण विधि  
 निज वसकीजै ॥ जवि ० ॥ २ ॥ इम वासरसै जे जिन पूजै ॥ तिणसै स

वि करम सबल धूजै ॥ सुखसंपति जायन घर दूजै ॥ जवि० ॥ ३ ॥ सुर  
 किंनर नर सासन धारै । विनसमस्यां सज्जसंकट वारै । ए पूजन मनवंछित  
 सारै ॥ जवि० ॥ ४ ॥ विमला कमला सबला पावै । जे प्रभुगुण गण जावन  
 जावै । इम चंदकपूर सुजशगवै ॥ जवि० ॥ ५ ॥ इति काव्यं ॥ मृगमदां  
 वर घशृण मिश्रितै । वरवरास सुचंदन संस्कृतैः । रचतियो जिन पूजन  
 मंजसा । संलज्जते निज्जति किलवासकैः ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत  
 ग्यानसक्तये । जन्मजरामृत्यु श्रीमद० मृषावाद विरमण व्रत उपदेशकाय वा  
 संक्षेपं यजामहे स्वाहाः । इति तीसरी मृषावाद व्रत पूजा ॥ ३ ॥ ॐ ॥  
 ॥ ✽ ॥ अथ चौथी अदत्तादांन व्रत पुष्प माल पूजा ॥ ✽ ॥  
 ॥ ✽ ॥ व्रततृतीय दिवसांजलो । जाखै जगतजिनंद । स्तेयकरण सब सुख  
 हरण । अष्टकरम दलकंद ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ हांहेरे देवा । वावन चंदन  
 घसि कुमकुमा । चूरण ए चाल ॥ हांहेरे वाला । परधन हरण गमन करो ।  
 धरि त्रिकरण शुद्ध बिलाशए । हांहेरे वालहा । ए जवजल जलधर समो । व  
 लि समकित वृंद विनास ए । व० ॥ १ ॥ हांहेरे वालहा ॥ कनक रजत मणि  
 धातुनो । जल थल खज पशु पटकूलए । ज० ॥ हांहेरे वालहा ॥ इमतनु थू  
 लें जंगतिनखा । लही सकल पदारथ मूलए । ल० ॥ २ ॥ हांहेरे बा  
 ल्हा । कुमति डरति रमणी तणो । ठै सदन ए चोरीनो कर्मए । ठै० हांहेरे  
 चा० । विपद जलधि पिण जाणियै । सचपल थई नासैधर्मए । स० ॥ ३ ॥  
 हांहेरे बा० ॥ ए व्रत सुरतरु सारिखो । शिव सुख फल दैन उदार ए । शि०  
 हांहेरे वालहा । कुशल कलायुत कीजीयै । लहियै जवजलनोपार ए । ल०  
 ॥ ४ ॥ इति ॥ दूहा ॥ पूज चतुर्थी मालनी । करियै नक्ति वशेण । मोहति  
 मरं जर उपशमै । प्रगटै बोध खिणेण ॥ १ ॥ राग खंजायची । जवजल हरणा ।  
 शिवसुख करणा । सदां जजो ब्रम० में० एचाल ॥ जविजन पूजो जिन ग्रीवा  
 धरि । वर फूलनकी माला । मैवारी० व० ॥ ए पूजन डरगति घरठेदी । विरचै  
 शिवसुख साला । मै० विर० जवि० ॥ २ ॥ चंपक मरुक तिलक चंपेली । पामल  
 लालगुलाला । मैवा० पा० । विमल कमल परिमल मदमाता । नतजै अलि  
 मतवाला । मैवा० नत० जवि० ॥ २ ॥ जाइ दमण जूही कोरंटक । मालति  
 मरुक रसाला । मैवा० मा० ॥ ऐसं पंचवरण कुसुमें करि । माल रचन परना



ला । मैवा ० मा ० नविण ॥ ३ ॥ ए मालापूजन करीनासै । कोटि करम डखजा  
 ला । मैवा ० को ० सुमति सुरति अनुभव बलि प्रगटै । चासै कुमति कुचाला ।  
 मैवा ० त्रा ० नविण ॥ ४ ॥ ए विधि संवरचार विकासै । पापसदन मुखताला ।  
 मैवा ० पा ० कपूरकहै प्रभुचरण सरणमै । मंगल माल विशाला । मैवा ० मं ०  
 नवि ॥ ५ ॥ इति ॥ काव्य । सरस मुद्गर चंपक पाटलै । मरुक मालति केतकि  
 सत्कजैः । विधि विगुंफयजिनं परिपूजयेत् । सज मजश्रम मीनिरजेष्ठकः ॥ १ ॥  
 ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानं ० जन्मजरा ० श्रीम ० अदत्तादान विरमण व्रत  
 उपदेशकाय । मालं यजामहे स्वाहाः ॥ इति अदत्तादान व्रत चोश्री पूजा ॥ ४ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ पांचमी मैथुन व्रत दीपपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ व्रत चोथे मैथुन तजो । नजो नविक नगवान । शीला  
 राधन योगसै । लहियै शर्म वितान ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण शशी ऊ  
 जलोरे देवा । पावण ॥ ए चाल ॥ मन बच काया थिरकरीरे । बालहा । कलु  
 ख कुशील निवारोरे । आठो । एह नरक रमणी तणोरे । बालहा । शोदर  
 अति हित कारोरे । आठो ॥ १ ॥ नर सुर पशु सज्जजातनोरे । बालहा । वि  
 षिय कलित बज्ज दोषैरे । आठो । ते परिहरिनं थिररहोरे बाला ० निजदा  
 रासंतोषैरे ॥ २ ॥ आठो । लंकापति नरकै गयोरे । बालहा एमैथुनरस  
 धारूरे आठो । एहनें तजकरि केईलक्षारे । बालहा । जीवसकल सुखसारूरे  
 ॥ ३ ॥ आठो । शील रत्न जतनें धरोरे । बालहा । तसदूषण सविठंमीरे  
 आठो । कुशलकला करिनं लहोरे । शिवसुख माल प्रचंमीरे । आठो ॥ ४ ॥  
 इति ॥ ❀ ॥ दूहा ॥ दीपकपूजा पंचमी । करै सकल डखनास । ज्ञायक  
 लोका लोकनो । प्रगटै बोधविकास ॥ १ ॥ रागदेश वरवो ॥ केसरियानेजाऊ  
 को ० ॥ एचाल ॥ ❀ ॥ नावधरी दीपक पूज रचावो । यातैं शिव सुख संपति  
 पावो । ना ० रक्त पीत सित वरण विचितृत । सूतनीवाट वणावो । गोघृतमां  
 हि अधिक तरकरिनं । सुन्नमन दीपजणावो । ना ० दीपकनैमिस मनमंदि  
 रमै । ग्यानकोदीप जगावो । जम्तातिमर कलापहरीनं । मंगलमालवधावो ।  
 नावण ॥ २ ॥ अरतिहरण रतिदायक जगमै । एपूजन मनजावो । सुर नर  
 पावनमै ततखिणही । यातैं नरकनजावो ॥ नावण ॥ ३ ॥ अनुभव नावविशाल  
 करीनै । आतमसुं लयलावो । कपूरकहै नविजनसै प्रभुके । वर गुणगण ज

श गावो ॥ जाव ० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ आत्मप्रबोधै कविवर्धनाय । जाड्यांधकार  
व्रजमर्दनाय । ज्व्यप्रदीपं कुरुचक्रिदंतेः । प्रजोगृहे वायवतर्जनाय ॥ १ ॥  
ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत ० जन्मजरा ० श्रीमज्जि ० मैथुन विरमणवत  
उपदेश काय दीपयजामहेस्वाहाः ॥ इति पांचमीमैथुन व्रत पूजा ॥ ५ ॥ ॐ ॥

॥ ६ ॥ अथ ठठी परिग्रह व्रते धूप पूजा ॥ ६ ॥

॥ ॐ ॥ डहा ॥ जविकीजै व्रत पंचमै । सकल परिग्रह मानं । ए मोहा  
दिक शवरनो । झुहर डखनी खान ॥ १ ॥ राग वशंत ॥ अतुल विमल  
मेल्या अखंम गुणै । मेल्या ० ए चाल ॥ सकल जविकनखा विमल गुणै  
बालहा मान परिग्रहनो करो ए । सकल ० ॥ टेर ॥ वज्र समान ए समगिरि  
जेदन । दोष दिवश पति वासरो ए । स ० ॥ १ ॥ धन कण वशन गवादि  
क पशुनो । धातु निकर तिम जाणियै ए । इत्यादिक नवजेद विधाने । दशवै  
कालिक जाणियै ए ॥ सक ० ॥ २ ॥ एहनें मूलथकी जेहरै नर । तेहनें  
मोह मित्रै सही ए । सुचिर काल ग्रहवास वसै जे । तेहनें देश विधै कहि ए ।  
सक ० ॥ ३ ॥ नरक निवास इणै विनपाभ्यो । मुग्मण सेठ ते जाणियै ए । जवि  
जन ए व्रत जावथी पालो । कुशल कला निजदाखिये ए ॥ स ० ॥ ४ ॥ इति  
॥ ॐ ॥ डहा ॥ ठठी पूजन धूपकी । धूपो जिनवर अंग । कुशुर  
जि करमतणी हरै । दायक शिवसुख चंग ॥ १ ॥ राग देसाख ॥ प्यारीठि  
वरणी न जाय । प्यारी ० । अरै मुखमारी हो वारीराज । प्या ॥ ए चाल ॥  
ऐसी विधि पूजन जाई दिलधार । धूप धूम धनसार धार करि । ऐसी ० ।  
टेर ॥ या जवजीम वारिसागरमें । तरस तरंक तरल विचार । धूप ० ॥ १ ॥  
चंदन देवदारु बलि अंवर । मृगमद गंधवटी बनसार । धूप ० ॥ २ ॥  
ऐसैं सुरजिद्रव्य वज्रमेखी । तिणमें सेल्हारस नविसार । धूप ० ॥ ३ ॥ म  
णियुत कंचन धूपदानमै । विमलानलथी करि सुप्रचार । धूप ० ॥ ४ ॥ क  
पूर करत नुतिया जिन पूजा । जविजन गणकी तारणहार । धूप ० ॥ ५ ॥  
काव्यं ॥ नानासुगंध वसुनिर्मित सारधूप । चाकर्षितं अमरचंद मतिहिंयेन ॥  
श्रद्धाश्रये विधि निवेदय विशालभक्त्या । धूपे जिनाधिपतिनं शिवदं  
मुदावै ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत ० श्रीमज्जि ० परिग्रह प्रमाण व्रत  
उपदेशकाय धूप यजामहेस्वाहाः इति परिग्रह प्रमाण व्रत ठठी पूजा ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सातमी दिशपरिमाण व्रते पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ठगे व्रत दिशमानको । गमनागमन निवार । अकुश  
लता सवि उपशमै । श्रेयसंपजै सार ॥ १ ॥ रागगरवो । सिद्धाचलमंमण स्वा  
मीरे ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥ श्रीशिवसुख संपति वरियैरे । नवन्नय डखवार  
ण करियैरे । करिदिशि परिमाण जेचरियै । रसीला । नाव विमल दिल  
धरियैरे । बालहा धरियै तो समरस नरियै । २० ॥ १ ॥ अथ ऊर्ध्वने तीरठ  
वखाणोरे । दिश विदिशने तेम प्रमाणोरे । ए ठे संकट जलधिनेराणो ॥ रसी०  
॥ २ ॥ एमां गमनागमन निवारैरे । ओठै कुमति डुरति नरतारोरे । इकच  
क्री लखौ डखनारो । रसी० ॥ ३ ॥ ए व्रत शिवसाधन चंमेरे । तुमे नविजन  
एहन खंमेरे । कहै कुशलकला नितमंमो । रसी० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥  
॥ ❀ ॥ दूहा ॥ नवियण पूजा सातमी । कीजे नक्ति विशाल । ससुरनि नाना  
जातना । विमल कुशम नरथाल ॥ १ ॥ ❀ ॥ रागधन्याशरी ॥ कवजमें नीके  
नाथन ध्यायो ॥ क० ए चाल ॥ प्रभुजीकी फलै पूजन सारो । प्र० ॥ टेरा श्रीजिन  
जीके चरणकमलमें । अलि समता गुणधारो । प्रभु० ॥ १ ॥ चंपक कुंद गुलाव  
कैवमा । पारधिनाग कलारो । जासु दमण वासंति मोगरा । पामल लाल मं  
दारो । प्रभु० ॥ २ ॥ इम नानाविध कुशम घटा करि । नाव विमल जलजारो ।  
तोलहियै नविजन ध्रुव करिनै । अचिरस्थकी नवपारो । प्रभु० ॥ ३ ॥ व्रत  
धर फूल कलाप रुचिर ग्रहि । पूजत जे जगतारो । कपूर कहत जिन चर  
ण सरण लहि । करम सबल दल मारो । प्रभु० ॥ ४ ॥ इति ॥ काव्यं ॥  
गंधामलादि गुण लक्षण लक्षितैव । पुष्पोत्करै रखिल गुंजित चंचरीकैः ॥  
संसेवये विविध जाति समुद्रवैर्या । जैनेश्वरं व्रजतिसोद्य चिराञ्छिबंन ॥ १ ॥  
ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत० जन्म० श्रीमज्जि० दिशि परमाण व्रत  
उपदेशकाय पुष्पयजामहे स्वाहाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥  
इति दिशि परमाण व्रत सातमी पूजा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आठमी अष्टमंगलीक भोगोपभोग व्रतपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जगनायक पदकमलमें । धरियै करि मनभृंग । भोग अनें उप  
भोगनो । एसजुवत गिरिशृंग ॥ १ ॥ ❀ ॥ सिद्धचक्रपद बंदोरे । नविकासि०

ए चाल ॥५॥ सकलसच्चित्तनें द्रव्यविरुती । वाहन वलि तंबोल । वसन कुशम  
दल पानहि तिमवलि । सयण विलेवण घोलेरे । नविका । इण व्रतमें मनमंनो ।  
शिवसुख रयण करंमोरे । नविका । इण ० ॥ १ ॥ ब्रह्मचार्य दिशि न्हाण  
नत्त इम । नियम चतुर्दश माल । प्रतिदिन जाव हृदयधरि करियै । एहनी  
सार संजालेरे । नवि ० इण ० ॥ २ ॥ तिमही अन्नक करोत्तर त्रिंशत । अ  
खिल विपुल महिकंदो । कालखीण सज्ज द्रव्य अजाण्यो । फल निशिनो  
जन वेदोरे । न ० ॥ इण ० ॥ ३ ॥ विविध अप्पोल डुप्पोल विजेदै । अशना  
रंज विशाल । इंगालादिक करण करावण । कर्मादान कुचालेरे । न ० ॥ ४ ॥  
इण ० ॥ एठमै ते शिवसुखमंमै । खंमै कुगति डुकाल । सहजानंद शस्यसुख  
प्रगटै । प्रवदै त्रिजगत्पालेरे । न ० । इण ० ॥ ५ ॥ इण व्रतकरि चितमंदिर  
नरियै । तरियै नवजलपार । अनन्नव चंद्र सुधा ऊडमंमै । कुशलकला निर  
धारे । न ० । इण ० ॥ ५ ॥ इति ० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ दूहा ॥ मंगलपूजा अष्टमी । करमदलन असिधार । करियै  
श्रीजिनराजकी । वरियै शर्म अगार ॥ १ ॥ राग तुमरी ॥ ॥ ॥  
तुमविन दीनानाथ दयानिधि कोनखवारलै मेरीरें । तु ० । ए चाल ॥ न  
विज्ज न जावै श्रीजिनवरकी । मंगलपूजा कीजैरे ० । वालामंग ० ॥ टेरे ॥  
श्रीलान्यन शरत्तासन नंदा । वर्त कुंज निर्मीजैरे । मीनजुगल श्रीवन्न सरावनी  
संपुट स्वस्ति करीजैरे । वाटहा । संपु ० । नवि ० ॥ १ ॥ ए अममंगल  
मंमन कारण । कंचन थालरचीजैरे । खचिराखंम विमल गुणधारी । तंडुलसैं  
लिखलीजैरे । नवि ० ॥ २ ॥ निजमन नंक्तिजाव धरि नविका । प्रभुसनमुख  
धरदीजैरे । तोसुखधाम मुक्तिपुट जेदन । निवसन कृत्य लहीजैरे । नवि ० ॥  
२ ॥ स्वांत गगनसम सूर्योदयथी । कोटिकरम तम ठीजैरे । प्रगट प्रताप  
पीनजिन चरणें । चंदकपूर नमीजैरे । नवि ० ॥ ४ ॥ इति ॥ काव्यं ॥  
यः सत्कांचननाजने शुचितरे मण्युत्तमैर्मनिते । श्रीलान्यष्ट सुमंगलानि विधि  
ना मंम्यप्रज्ञो सन्मुखे । नक्त्यात्मा परिदोषकये द्रुचिपरः सोधव्रजं नाशयेत् ।  
जित्ते डुर्गति नूवरं च लज्जते स्वर्गादि मोक्षाश्रयं ॥ १ ॥ ॐ श्री परमा  
ने अनंतानंत ग्यानसक्तये जन्म ० श्रीमज्जि ० जोगोपजोगव्रत उपदेश  
काय अष्टमंगलं यजामहे स्वाहाः ॥ इति जोगोपजोग व्रत आठमी पूजा ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवमी अनरथ दंमव्रते तंदुल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ नवि ए व्रत अष्टमधरो । अनरथ दंम विचार । पाप  
चिरंतन उपशमै । प्रगटै पुन्यप्रचार ॥ १ ॥ सुगणसनेही साजन  
श्रीसीमंदिरसामि । अ० ॥ ए चाल ॥ त्रिकरणशुद्ध निसुणनवि अनरथ दंम  
विचार । समकित सुनठनो गंजन नंजन संवर चार । मनमय बोधविकासक  
शाख पठन अधिकार । मुख नू दग तनुथी करै नंमकुचेष्टागार ॥ १ ॥ हा  
श्ययकीवली कुवचन नाषण मुखरप्रबंध । ऊखल मूशल वरदादय अतिधरण  
डुरंध । स्नानसमै जल तेल अधिकतर अप्रतिबंध । पापविधाना देशप्रकाशन  
दूषणखंध । सरस वस्तुनृत पात्र मात्र विन ठादनठान । धरणकरण सुविवेक विकल  
तिम दानादान । इम सज्ज अनरथ करम अवरपिण डुखनी खान । व्यथ  
पणै मनमान्यां ठेदै पुन्यप्रधान ॥ २ ॥ इण करिपूर्व केइगया नरसंकटधाम ।  
व्रतग्रहिने रहियै तव लहियै शिवसुखगाम । ए व्रत तरणी नवोदधि तारण  
तरण प्रकाम । कुशलकला नितकरतां प्रगटै अन्ननवमांस ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ नवमी श्रीजिनराजनी । पूजा परमविलास । विमलाकृत  
नरिनाजनै । नविजन करो प्रकाश ॥ १ ॥ राग पीलू ॥ अवतौ उवाखो मोहि  
चहीयै जिनंदराय । राखुं नरोसोमै रावरै चरणको । अ० ॥ ए चाल ॥  
श्रीजिनवरजीकी सेवा सारै । सो नवन्नय डुख दूरनिरारै । श्रीजि० ॥  
तंडुलविमल सकलगुण मंमि । खंमिदोष रहित उरधारै । कंचनपात्र नरी  
जिन आगै । ठोकनबुद्धि प्रवल सुविचारै ॥ श्रीजि० ॥ १ ॥ या पूजन जन  
तन मनरंजन । गंजन कुगतिकुं बोधविदारै । सबल करम नग जेदनहारो ।  
सधन नवोदधि पारउतारै ॥ श्रीजि० ॥ २ ॥ सुमति सानुनव आन मिलावै ।  
तेपिण पद दिवशर्म समारै । पीनमहोदय धार नावधरि । चंदकपूर सनूर नि  
हारै ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ यःखंमजाति गुणवृंद समन्वितानि ।  
नाढोकये विपुलनिर्मल तंडुलानि ॥ कर्मावलिं ऊटति ठेय हिमज्जिनाग्रे ।  
सोवैजजे त्रिवसुखं सुतरामनंतं ॥ १ ॥ नैं ऊं श्रीपरमात्मने अनंतानं० ज०  
श्रीमज्जि० अनरथदंम विरमण व्रत उपदेशकाय अकृतं यजामहे स्वाहाः ॥  
इति नवमी अनरथ दंम विरमण व्रत पूजा ॥ ए ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दशमी सामायक व्रते दर्पण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ नवमो नव निधि जाणियै । सामायव्रत सार । सुर जे  
हनी आसाकरै । सुरतरु समदातार ॥ १ ॥ राग ॥ आयरहो दिल बाग  
मैं होप्पारे जिनजी । आयण ॥ ए चाल ॥ सामायक व्रत पाले । न  
विकजन । सामायण ॥ टेर ॥ त्रिकरण त्रिकजोगै इकमऊरत । निरतीचारै  
चाले । नविण ॥ १ ॥ साण गृहव्यापार तजीनै सुजमन । धरि निरवद्य  
विशाले । नण ॥ २ ॥ सामाण ॥ मन वच वपु प्रणिधान असेवन । स्मृति  
विहीनता टाले । नण ॥ ३ ॥ साण ॥ वात्रिंशत दूषण परिहरिनै । पंचम  
गुण बरजाले । नण ॥ ४ ॥ साण ॥ इम धनमित्र तणीपर सीजो । कुश  
लकला परनाले । नण ॥ साण । इति ॥ ❀ ॥ दूहा ॥ दशमी दर्पण पूज  
ना । कीजै श्रावक सुध । सुरपादपसम शंकरण । हरणपाप संकुध ॥ १ ॥  
राग कालिंगमो ॥ नेम प्रजुजीसुं कहज्योजि श्द्वारा नेमण ॥ ए चाल ॥  
जिन पूजनमें रहीपैरे । श्द्वारा जिण मन बंठित फल लहीपैरे । श्द्वारा जिण  
॥ टेर ॥ कंचनमणी रतनेकरि जमियो । वर दरपण करगहीये । जिनवर  
सनमुख दाखन विधिसैं । सकल करम बनदहीपैरे । श्द्वारा । जिनण ॥ १ ॥  
प्रजुजीकीसेवा सब सुखदाई । जावजक्ति उरचहीये । शिवबनिता तुम प्रेम  
बिलूधै । अपर अधिकस्युं कहहीपैरे । श्द्वारा ॥ २ ॥ जिण निजकसरीर प्रमाद  
वसें करि । नवदल जीतिसहीये । सुजमन समकित वीरसंगले । चंदकपूर  
निवहियैरे । श्द्वारा ॥ ३ ॥ जिण । इति ॥ काव्य ॥ रुचिर निर्मल दर्पण  
दर्शन । विनयनृधृदयः किलकारयेत् । जिनपते रचिरा ज्वसंगमं । सचनिरस्य  
नजे त्रिवर्मजसा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत ग्यानसक्तये नमः  
जराण श्रीमज्जिण सामायक व्रत ग्रहण उपदेशकाय । दर्पणं यजामहे  
स्वाहाः ॥ इति दशमी सामायक व्रत पूजा ॥ १० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ इग्यारमी देशावगासी व्रते नैवेद्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ दसमो व्रत दिव नवियणा । धारो धरिवर जाव । संसारा  
एव गहिरनो । तारण वर तरनाव ॥ १ ॥ सिद्धाचलगिरिनेद्वारे । धन्य  
जाग हमारां । सिद्धाण ए चाल ॥ ❀ ॥ अद्या धर मन जाजैरे । धनपाप तिहा  
रा । श्रद्धाण । भाजैण । टेर ॥ विमल सकल सुज विनय धरीनै । गुरुमुख

वचन हजार । ए व्रत सुंदर दिल धरो नविजन । देशावकास विचारारे ।  
 घनपाठ । श्रद्धा ० ॥ १ ॥ द्रव्यानयन प्रेक्षप्रयोगै । सब्द रूप अनुसारा ।  
 पुजल पेक्षण प्रभृति सकलना । तजीयै दूषण धारारे । घनपाठ ॥ २ ॥  
 परमोत्कृष्ट जघन्य प्रकारै । प्रत्याख्यांन प्रचार । सज्ज व्रतनो आगमन ए  
 व्रतमें । गुणमणि रयण नमरारे । घनपाठ ॥ ३ ॥ कर्म कषाय हरीनैं ठेदै ।  
 चनुगति गेह बिहारा । अजरामर धनदैलखोनिरमल । कुशलकला करिसारारे ।  
 घनपाठ ॥ ४ ॥ श्रद्धा ० ॥ इति ॥ दूहा ॥ एकादशमी पूजमें । विवध जा  
 ति नैवद्य । मेल करो जिनराजनी । दायक सुखनिरवद्य ॥ १ ॥ राग कल्या  
 ण ॥ तेरी पूजावणी है रसमें । होते ० । एचाल ॥ ॥ सेवासारो श्रावक जिन  
 चरणै । होसे ० । टेर ॥ मोदक लपनश्री वर धेवर । शिता सुरस घृत ऊरणैं ।  
 मुक्त चूर बिंदादिक वज्रतर । नैवेद्य नानावरणैं । होसे ० ॥ २ ॥ रयणांकित  
 कंचन नाजन नरि । मन वय तनु थिरकरणैं । करिढोकन विधि परम विन  
 य धरी । रहियै नित प्रभु सरणैं । होसेवा ० ॥ ३ ॥ दुखदल नासन या  
 पूजन विधि । निर्वृति विशद सुख नरणैं । चंदकपूर कहत नविजनके । क  
 लिमलमाला हरणैं । होसेवा ० ॥ ४ ॥ इति ॥ काव्य ॥ धवल धाम शिता  
 र्पि समुद्रवै । विमलनक्ति समन्वित कर्णै । जिनपते विंदधाति वियूषन ।  
 सलनते शिवशं प्रवरान्नकैः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत ० ग्या  
 न सक्तिये जन्म ० श्रीमज्जि ० देशावगासिक व्रत द्रढ ग्रहण उपदेशकाय नै  
 वेद्यं यजामहे स्वाहाः ॥ इग्यारमी देशावगासी व्रत पूजा ॥ ११ ॥

॥ ॥ अथ बारमी पोसहव्रते ध्वजपूजा ॥ ॥

॥ ॥ व्रतपोषध इग्यारमो । जावो नविकविधान । ध्यावो ज्युं द्रुतसहरै ।  
 प्राकृतकर्म वितान ॥ ए देशी ॥ इण सरवरियानी पालऊनादोचराजवी । म्हां  
 रालाल ऊना ० ए चाल ॥ नविजन जाव विसाल प्रमाद नीवारियै । म्हां ०  
 प्र ० टेर ॥ पोसहव्रत चितमाहि विनयधरि धारीयै । म्हां ० वि ० ॥ ते पिण  
 डविधप्रकार चतुर न विसारियै । म्हां ० च ० ॥ प्रतिवासर प्रतिपर्व सजैतिम  
 सारियै । म्हां ० स ० ॥ १ ॥ पडिलेहण धुरधार सकल किरिया करो । म्हां ०  
 स ० ॥ परिठावण बिधिवाद मयाधरि आदरो । म्हां ० म ० षटकाया संघट्ट  
 तजीनैं संचरो । म्हां ० त ० ॥ अचपल थई पचक्खाण विविधमनसंजरो ।

म्हां० ॥ २ ॥ वि० ॥ वलिसज्ज दुखण टालिनें पांपनिकंदिये । म्हां० पा० ॥  
 चौमति च्यार कपाय करमदल दैदिये । म्हां० ॥ इण विधि तारण तरण सुगु  
 रुपदवंदिये । म्हां० सु० ॥ कुशल कलादल मालकरी चिरनंदिये ॥ ३ ॥  
 म्हां० क० इति ॥ दूहा ॥ द्वादशमी धज पूजमें । घोषणदेई अमार । धरिये  
 द्वादश जावना । तेरिये जवजलपार ॥ १ ॥ राग देशाख ॥ कुवजानें जाड  
 मारा ॥ ए चाल ॥ प्रभुजीसैं प्रीतझाना । करीअजपूजन विविधानाहो ।  
 प्र० ॥ १ ॥ टेरे ॥ जोयण सहस मानमणि मंमि । कंचनदंम रचानाहो ।  
 प्र० ॥ २ ॥ पंचवरणयुत वसनपताका । अधिवासित लहकानाहो । प्र० ।  
 ३ ॥ ठकनाद करी तीन प्रदिकणा । रोहणविधि मनजानाहो । प्र० ॥ ४ ॥  
 या विधिसकल करम रिपुदारण । जोतिमें जोतिसमानाहो । प्र० ॥ ५ ॥ ज  
 गतारण श्री जिनदरशणसैं । चंदकपूरलुजानाहो । प्र० ॥ ६ ॥ इति काव्य ॥  
 जव्याचंति वजवरैः सगुणैः सलीलैः । जैनैश्वरं कनकदंम युतैः सशोभैः ॥  
 कर्मारि वृंदजय उन्न समन्वितैर्यो । वैसोजजे छिब दिवादिसु राज्यलक्ष्मीः  
 ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत जन्म० श्रीम० पोसहव्रत ग्रहण  
 उपदेशकाय ध्वजं यजामहे स्वाहाः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इति वारमी पोसहव्रत ध्वजपूजा ॥ १२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ अथ तेरमी अतिथिसंविभाग व्रते फल पूजा ॥ ॥ ॥  
 ॥ ॥ ॥ दूहा ॥ द्वादशमोव्रत सुखफलद । साधु दांसनमान । अजरा  
 मर पदसंपजै । साखिभद्र अनुमान ॥ १ ॥ राग कजरी ॥ मेरो मनमोहो  
 माई आणंदजिलै आ० ॥ ए चाल ॥ साधुदांन व्रत जवि हृदय धरो । हृदय  
 धरोरेजाई हृदय धरोरे । सा० ॥ टेरे ॥ व्रतसंयम गत परखिंगीनें । पमिला  
 जन मति रिजुनकरो । रिजु० ॥ १ ॥ जा० सा० ॥ जिनमत मुनिवर चरण  
 नमीजै । अशनादिक देई सुकृतवरो । सुक० जा० । सा० ॥ २ ॥ बलि  
 पंचातीचार निवारी । परम विरतिना विघन हरो । विघ० जाव० ॥ ३ ॥  
 सा० श्रीभेयांसनं चंदन बाला । अनुमानें पदनिवृत्तिचरो निवृ० जा० ॥ ४ ॥  
 सा० इति ॥ दूहा ॥ फलदल पूजा तेरमी । जेरिजाजन कमनीय । जविक  
 रचौ जगवाननी । जवविषधर दमनीय ॥ १ ॥ राग प्याल ॥ लोचनी नैनारे लोचनी  
 नैना । हो दरशणके० ए चाल ॥ ॥ ॥ लोचनीसैणारे लोचनीसेणा हो पूजन



के लोचनीसेणा ॥ टेरा ॥ पूजनविधि प्रभुकी दिल धरलै । धिर करि मनतनु वैणा ।  
 हो पू० ॥ १ ॥ श्रीफलपुंगी बीजपूरवलि । आम्भकदली फल लेणा । हो  
 पू० ॥ २ ॥ इमनानाफल गहिप्रभु आगै । नरिजाजन धर दैणा । हो०  
 पू० ॥ ३ ॥ नक्ति विमल सुचित्र धर मनमें । प्रभु समरण दिनरैणा ।  
 हो पू० ॥ ४ ॥ कपूरकहै प्रभुपद पंकजमें । षट्पद नए जुगनैणा । हो  
 पू० ॥ ५ ॥ इति ॥ कलश ॥ हांहो यश धारा । प्रभुजीका वचन अमृत यश  
 धारा ॥ टेरा ॥ सुर नर मुनि तिरियग वन सीचन । वचन सजल घनकारा ॥  
 हांहो० प्र० । विक्रमपुर श्रीत्रिशालानंदन । जिनवर त्रिभुवन प्यारा । द्वाद  
 श व्रत पूजन विधि पञ्जणी । नवियण गण हितकारा ॥ हांहोहि० १  
 प्र० ॥ गुरु खरतर जिन चंद्र सूरिवर । राजै विगति विकारा । श्रीमति ज्ञा  
 धृति रादि कलितके । धरि मन वचन अगारा । हांहो० आ० प्र० २ ॥  
 संवत रस त्रिक तिथि रात्रिकर । मासाश्विन मनुहारा । धवलपद्म प्रतिपद  
 तिथि सोजन ॥ रजनीपति सुतवारा ॥ हांहो सु० ३ । प्र० ॥ श्रीजिनरत्न  
 सूरिसाखाधर । पाठकपद विसतारा । रूपचंदगणि चरण कमलमें । कुशलसार  
 मधुकारा । हांहो म० प्र० अपर नामकरि चंदकपूरा । रचि जिनपति नुतिसा  
 रा । लक्ष्मीप्रधान प्रवर गणिवर्की । प्रेरणया सुविचारा । हांहो० प्र० ५ इति ॥

॥ ॥ काव्य ॥ जंबाम्रादि फल व्रजैः ससुरसैर्गंधादिभिर्मिश्रितैः । नूनं ।  
 द्रव्यं हतुं ज्ञैश्च विधिना कुर्यात् प्रज्ञोरर्चनं । नक्तः स प्रभु पूजनैक निरतो  
 न्यूपि न्यूपो लजे । तृष्मस्वर्गं तरोरकं सुखफला गारं वरं निर्मलं ॥ १ ॥  
 ॐ श्री परमात्मने अनंता० श्रीमज्जि० अतिथि संविज्ञाग व्रत उपदेशकाय  
 फलं यजामहे स्वाहा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 इति श्री वारह व्रत पूजा संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

## ॥ ॥ अथ संक्षिप्त विधि ॥ ॥

॥ ॥ विशाल जिन मंदर अथवा धर्मशालामें त्रिगुण पीठ सम वसरण  
 की स्थापना करै । जिसपर पूर्व दिशकी तरफ श्रीमहावीर स्वामी एवं चारे  
 दिशें चार प्रतिमा स्थापन करै ( आगे एक चोखूणा अर्द्धा चांदी पीत  
 लादिकका पट्ट स्थापन करै । जिसपर एक बीचमें । ६ ऊपर । ६ नीचे  
 एवं १३ साथिया करके १३ चावलोंका पुंज करै । ऊपर व्रतनाम युक्त

१३ चिठी स्थापन करै । वामपासे कल्पवृक्ष, दहिणें पासे धजा अष्टमंगलीकादि सोजतां अतिशय स्थापन करै ॥ अब १३ चिठी लिखनेकी रीति ॥

॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री सर्व धर्म मूल श्री मदरशनायनमः ॥

॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल मृषावाद विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल अदत्तादान विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल मैथुन विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल परिग्रह परिमाण विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्री दिशा परिमाण गुण व्रतायनमः ॥

॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री जोगोपजोग परिमाण गुण व्रतायनमः ॥

॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्री अनर्थ दंभ विरमण गुण व्रतायनमः ॥

॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री सामायक शिक्षा व्रतायनमः ॥

॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्री देशावगाशीरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥

॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्री पोषधोपवासरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥

॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्री अतिथि संविज्ञाग दानरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥

॥ ॐ ॥ इसीतरै चिठी १३ लिखके स्थापित करै । तीन नवकार गुणके वाशक्षेपसैं प्रतिष्ठत करै (और) जल, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, अक्षत, वस्त्र, धजा, अष्टमंगलीक आदि तेरै तेरै, पूजाके लायक द्रव्य १३ थाल्यामें लगाय दोनुं तरफ रखै । पीठें स्नात्र करायके पूजा करावै । जो पद की पूजा सुरू होय सो थाली लेतो रहै चढातो रहै (परंतु) नालेरका गोटा १३ वरगं लगाया जुवा और धजा १३ व्रतका मांमलापर व्रत दीठ चढावै । बाकी द्रव्य सर्व थाल्यामें दोनुं तरफ रखै । दीपक पूजामें १३ दीपक तो एक थालीमें रखै । और वारह व्रतका अतीचार १२४ वर्जण निमत्त १२४ एकसो चौबीस दीपक मांमल्लके चारुं तरफ सोजता अणीक रखै इत्यादि यथा शक्ति चित्तकी उदार वृत्तीसैं पूजनविधि करै, करावै, करतां की अनुमोदना करै । विशेष चित्तकी उमंग होय तो बाजिबादि उष्ट्रवके साथ मोटी धजा, कल्पवृक्ष अष्टमंगलीक नगरमें फिराकर लावै उत्तम उत्तम द्रव्य जगवानके जेट करै ॥ ॐ ॥ इति वारह व्रत पूजा विधि संपूर्णम् ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्राद्ध दिन कृत्य लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चिदानंद स्वरूपाय । रूपातीताय तायिने । परम ज्योतिषे त  
स्मै । नमःश्री परमात्मने ॥ १ ॥ अर्थ ॥ ग्यानानंद मई है स्वरूप जि  
सका और उदारक शरीरादि रूप रहित । उत्कृष्ट तेजके धरनेवाले ऐसे  
श्रीपरमात्मा परमेश्वरकों मेरो नमस्कार ऊवो ॥ १ ॥ पश्यति योगिनो  
यस्य । स्वरूपं ध्यान चक्षुषा । दधाना मनसःशुद्धिं । तं स्तुवे परमेश्वरम  
॥ २ ॥ जिसके स्वरूपकों ध्यानरूपी दृष्टीसें मनशुद्धी धरताथका मोटे  
योगीश्वर देखते हैं । ऐसें परमेश्वरकी बारवार स्तवना करता ऊं ॥  
ऐसे परमात्म गुणधारक । सर्व जीव हितकारक । सर्वज्ञ सर्वदर्शी  
शाशनाधिपती श्रीमहावीर स्वामीकी आग्यानुसार दिन रातमें श्रावकके क  
रने योग्य शुद्ध आचारोपदेश लिखता ऊं ॥ क्युंकि संपूर्ण जगत्रका जीव  
सुखकी वांछा करनेवाले है (और) संपूर्ण सुख सिद्धि स्थानकमें है । सिद्धि  
स्थानक मिलनेसें जीवकों संपूर्ण सुख मिले । इससें सिद्धि स्थानककी  
प्राप्तीके अर्थ शुद्ध आचार धारन करनो । शुद्धाचारसें । कषाय ४ इंद्रियां पां  
चकों जीतके मनकों शुद्ध करै । एकाग्र चित्तसें आत्मगुणका ध्यान करता  
सिद्धि स्थानककों प्राप्त ऊवै । चित्तमें विवेक धारण करके यथा शक्ति  
शुद्धाचार धारन करनो । अमृतको बुंद मात्राजी जीवकों सुखदायक है (और)  
जहरको लवलेशमात्र जीवको दुःखदायक है (इससें) यथाशक्ति ब्रत पत्र  
कखाण पूजादिक धारन करना । परंतु । विवेकसें शास्त्रोक्त विधि मुजब करना  
जिससें इच्छत फल होय । अविधिसें किया ऊवा वज्रतजी धर्मकृत्य संसार  
वृद्धीकारक है । प्रथम दश दृष्टान्ते अनंता जवमें मनुष्यजव पावणा महा  
डुर्लभ है (जिससें) आर्य देश, उत्तम कुल, पंचेंद्री परगमी, मोटा आयुष्य  
पावणा महा डुर्लभ है (इन सबसें) जिनेश्वर देवका धर्मपर श्रद्धा उत्पन्न  
होणा । अनेकांती स्यादादी धर्मोपदेशक गुरूका जोग मिलना । शुद्धज्ञान  
का प्राप्त होना (और) शुद्ध ग्यानसें शुद्ध आचारमें चलना । यह जलदी  
मोक्त जाएंवाले जीवोंका लक्षण है । इससें दूरजव अजवों पावणा महा  
महा डुर्लभ है । इस सेती पूर्वोक्त लक्षणांयुक्त सारो संजोग पायके साधु  
श्रावककु अपने अपने शास्त्रोक्त आचार मुजब चलनो चाहियै (इससें) उत्त

म श्रावक, रात्रीके चोथे प्रहरै दो घन्टी चार घन्टी रात रहते निद्राकों दूर करै। प्रथम तीन नवकार गुणै (पीठे)अपनी कुलधर्म दिनमें करनेको कृत्य स्मरण करके, लघुशंकादि निवारके, रात्रीका लक्ष चंदलके शुद्ध चित्तसँ शुद्ध नवकार मंत्रको ध्यान करे। इस जगत्रमें अनेक मंत्र हैं परंतु चवद्वै पूर्वको सारभूत, उत्कृष्ट ज्ञाव, मंगलरूप, सर्व कार्य सिद्धिकारक मोक्षसुख दायक, एक नवकार मंत्र है। इस समान और कोई मंत्र है नहीं। कहानी हे ॥ नमस्कार समोमंत्र । सत्रुंजय समोगिरी । वीतराग समोदेवो ॥ न भूतो न भविष्यति ॥ १ ॥ ऐसा नवकार मंत्रका ध्यान पूर्वदिश उत्तर दिश सन्मुख बैठके एकाग्र निर्मल चित्तसँ यथाशक्ति प्रमाण जाप करै ॥ सो जाप तीन प्रकारको होता है ॥ उत्कृष्ट १ । मध्यम २ । जघन्य ३ । सुद्ध उपयोग रखके आंगुल्यांका विश्वापर जाप करै । चित्तकों स्थिर रखे सो उत्कृष्ट जाप कहियै ॥ १ ॥ मालासँ चलत चित्तसँ जाप करै । सो मध्यम २ ॥ संख्या विगर उपयोग शुन्यसँ जाप करै । सो अधम जाप कहिये ३ ॥ (इससँ) अपनी शक्ति मुजव उपयोग सहित स्थिर चित्तसँ जाप करै । धर्मस्थानक जाके(वा) एकांत स्थानके रात्री प्रतिक्रमण विधि संयुक्त करै पीठे मंगलाष्टक स्तोत्र गुणै ॥ यथा ॥ नात्रेयाद्याजिनाः सर्वे । नरताद्याश्च चक्रिणः । कुर्वतु मंगलं सर्वे । विष्णवः प्रतिविष्णवः ॥ १ ॥ नात्रि सिद्धार्थ भूपाद्या । जिनानां पितरःसमे । पालिता खंम साम्राज्या । जनयंतु जयं मम ॥ २ ॥ मरुदेवी त्रिशलाद्या । विख्याता जिनमातरः । त्रिजगज्जनितानंदा । मंगलाय भवंतुमे ॥ ३ ॥ श्रीपुंमरीकेंद्रभूति । प्रमुखा गणधारिणः । श्रुति केवलिनोपीह । मंगलानि दिशंतुमे ॥ ४ ॥ ब्राह्मी चंदन बालाद्या । महासत्त्वो महत्तरा । अखंम शीललीलाद्या । यत्तंतु मममंगलां ॥ ५ ॥ चक्रेश्वरी सिद्धार्थिका । मुख्यः शासन देवताः । सन्यगूढशां त्रिवहारा । रचयंतु जयंश्रियं ॥ ६ ॥ कपर्दि मातंग मुख्या । यक्षा विक्षात विक्रमाः । जैन विवहारा नित्यं । दिशंतु मंगलानिमे ॥ ७ ॥ सर्व मंगल मांगल्यं । सर्व कल्याण कारणं । प्रधानं सर्व धर्माणां । जैन जयतु नाशनं ॥ ८ ॥ मंगलं जगवान् बीरो । मंगलं गौतमः प्रभुः । मंगलं स्थूल जद्रादया । जैनो धर्मोस्तु मंगलं ॥ ९ ॥ पीठे निर्जीव भूमिका यें सनन करके द्रव्ये ज्ञावे

शुद्ध होके घर देराशरमें जगवानकी पूजा करै ॥ यथा ॥ ॐ ॥ ॥ॐ॥

## ॥ ॐ ॥ अथ जिनार्चन विधि ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अर्हत्कल्याणुसारें तथा विधि प्रपाकानुसारें किंचित्मात्र लिखते हैं ॥ जगवंतके मंदिर ( वा ) घर देरासरके विषे । चोटीकूं बांधकै शुद्ध वस्त्र पहरके उत्तरासंग जिनोपवीत मुखकोससहित । एकांतके विषे पूर्व दिश उत्तरदिश तरफ बैठके परमेश्वरकी पूजा करै ॥ प्रथम जल, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल, आदि चीजांकूं मंत्रों सैं पवित्र करै ( यथा ) ॥ ॐ आपो अप्य काया एकेंद्रिय जीव निर्व्याहं त्पूजाया निर्व्यथाः संतु । निरपायाः संतु । सज्जतयः संतु । नमेस्तु संघट्टण हिंसापापमर्हदर्वने॥ इस मंत्रसैं जल मंत्रणा ॥ॐ॥ ॐ वनस्पतयो वनस्पतिका या जीवा एकेंद्रिया निर्व्याहर्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु । निरपायाः संतु । सज्जतयः संतु । नमेस्तु संघट्टन हिंसा पापमर्हदर्वने ॥ इति पत्र पुष्प फल धूप चंदनादि अग्निमंत्रण मंत्र॥ॐ॥ ॐ अग्नयो अग्निकाया जीवा एकेंद्रिया निर्व्याहर्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु । निरपायाः संतु । सज्जतयः संतु । नमेस्तु संघट्टन हिंसा पापमर्हदर्वने॥ इति बन्धि दीपाद्यग्निमंत्रणं ॥ फेर वास चूर्ण फूल गंधादिक हाथमें लेके मंत्र पढे ॥ ॐ त्रसरूपोहं संसारिजीवः सुवासनः सुमेधा एक चित्तो निर्व्याहर्हदर्वनै निर्व्यथोन्नयासं । निःपापोन्नयासं । मत्संश्रिता अन्येपि संसारिजीवा निर्व्याहर्हदर्वने निर्व्यथा नूयासुः निरुपद्रवा नूयासुः ॥ इस मंत्रसैं केशर मंत्रके अपणें तिलक करे ॥ ॐ ॥ पुष्पसैं अपणें मस्तककी पूजा करे ( फेर ) पुष्प अक्षत आदि हाथमें लेके मंत्र पढे ॥ तन्मंत्रो यथा ॥ ॐ पृथिव्यप्तेजो वायु वनस्पति त्रसकाया एक वि त्रि चतुः पंचेद्रिया स्तिर्यङ् मनुष्या नारक देवगति गता श्वतुर्दशर ज्वात्मक लोकाकाश निवासिनः । इह जिनार्चने कृतानुमोदनाः संतुः । निःपापासंतु । निरपायाः संतुः । सुखिनः संतुः । प्राप्त कामाः संतुः । मुक्ताः संतु । बोध माप्नुवन्ति ॥ इस मंत्रसैं मंत्रकै दशदिशामें गंध जल अक्षतादिक छेपन करे । फेर यह श्लोक कहे ॥ शिवमस्तु सर्व जगतः । परहित निरता भवन्ति भूतगणाः । दोषाः प्रयांतु नाशं । सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥१॥ सर्वेपि संतु सुखिनः । सर्वेसंतु निरामया । सर्वे भद्राणि पश्यंतु

मां कश्चिदुक्खं ज्ञान्नेवेत् ॥ १ ॥ फेर मंत्र पढे ॥ ॐ नूतधात्री पवित्रास्तु ।  
 अधिवासितास्तु । इस मंत्रसे मंत्रितजलसे जमीन पवित्र करे ( फेर ) स्थि.  
 रायशास्वताय निश्चलाय पीठायनमः ॥ फेरपखाल करवाके परमेश्वरकुं पढ  
 ऊपर स्थापन करे । धिरविंव होय तो वेदी ऊपर पखाल करावे ॥ पीठे इस  
 मंत्रकुं पढे ॥ ॐ अत्रक्षेत्रे । अत्रकाले । नामार्हतो । रूपार्हतो । द्रव्यार्हतो ।  
 ज्ञार्हतः । समागताः । सुस्थिताः । सुनिष्ठिताः । सुप्रतिष्ठाः संतु ॥ इति  
 अर्हत्प्रतिमा स्थापन मंत्र ॥ फेर मौनसहित अगामी पुष्पग्रहण करके मंत्र  
 पढे ॥ ॐ नमो अर्हद्भ्यः सिद्धेभ्यः । स्तीर्णेभ्यः । स्तारकेभ्यः । बोधकेभ्यः ।  
 सर्वजंतुहितेभ्यः । इह कल्पना विंवे जगवंतोर्हतः सुप्रतिष्ठिताः संतु ॥ यह  
 मंत्र मौन सहित पढके जगवंतके चरणऊपर पुष्पस्थापन करे । फेर पुष्प  
 जल हाथमें लेके कहे ॥ यथा ॥ स्वांगतमस्तु । सुस्थितिस्तु । सुप्रतिष्ठास्तु  
 पुष्पाग्निषेकेन अर्घ्यमस्तु । पाद्यमस्तु । आचमनीयमस्तु । सर्वोपचारैः पूजास्तु  
 ॥ इस मंत्रसे मंत्रित जिन प्रतिमाऊपर जलसहित पुष्प चढावै ॥ (फेर) जलग्र  
 हण करके मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हतं तर्पणंपयं । प्राणदं मलनाशनं । जलं जिनाब्धेने  
 त्रैव । जायतां सुखहेतवे ॥ १ ॥ इस मंत्रसे मंत्रित जल करके अग्निषेक करावै ।  
 फेर चंदन कुंकुम कस्तुरी आदिगंध वस्तु हाथमें ग्रहण करके । यह मंत्र  
 पढे ॥ ॐ अर्हतं ॥ इदं गंधं महामोदं । बृंहणं प्रीणनं सदा । जिनाब्धेनेच स  
 त्कर्म । संसिद्ध्यौ जायतामिमः ॥ १ ॥ ऐसा पढके विवधगंध वस्तुका विलेपन  
 करे । फेर । पुष्पपत्रिका हाथमें ग्रहण करके । यह मंत्र पढे । ॐ अर्हतं ।  
 नानावर्णमहामोदं । सर्वत्रिदशवल्लभं । जिनाब्धेनेच संसिद्ध्यौ । सुखंभवतु  
 मेसदा ॥ १ ॥ इति पुष्पपूजा ॥ फेर अकृत ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥  
 ॐ अर्हतं । प्रीणनं निर्म्मलं थल्पं । मांगल्यं सर्वसिद्धिदं । जीवनं कार्यसंति  
 द्यौ । नूयान्मेजिनमंदिरं ॥ १ ॥ इस मंत्रसे मंत्रित अकृतका तीनपुंज करे ।  
 फेर पूंगीफल जातीफलदिवस्तु ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हतं ।  
 जन्मफलं स्वर्गफलं । पुण्यमोक्षफलं फलं । दयाज्जिनाब्धेने त्रैव । जिनपादाय  
 संस्थितः ॥ इति जिन पादाग्रे फलपूजा ॥ (फेर) धूप ग्रहण करके यह मंत्र  
 पढे ॥ ॐ अर्हतं श्रीखंभागरु कस्तुरी । द्रुमनिर्यास संभवः । प्रीणनः सर्व दे  
 वानां । धूपोस्तु जिनपूजने ॥ १ ॥ इस मंत्रसे धूप क्षेपन करे ॥ फेर पुष्प

धमः । लवणार्चिं लवणांधुः । पिषाते सेवते पदौ ॥ १ ॥ ऐसा कहके लवण  
जल उवारणा करे ॥ फेर आरती लेके यह पढे ॥ सप्तमीति विधाताहं । स  
तव्यसन नाशकृत् । यत्सप्तनरकद्वारा । सप्तारस्तुलांगतं ॥ १ ॥ सप्तांग राज्य  
फलदान कृतप्रमोदं । सत्सप्त तत्त्वविदन्तवृतप्रबोधं । तववक्त्र हस्तधृतसंगत सप्त  
दीप । मारात्रिकं नवतु सप्तम सङ्गुणायां ॥ ऐसा कहके आरती उतारे ॥ फेर  
मंगलदीप लेके यह पढे ॥ विश्वत्रय नवेज्जीवैः । सदेवा सुर मानवैः । चिन्मं  
गलं श्रीजिनैन्द्रात् । प्रार्थनीयं दिनेदिने ॥ १ ॥ यन्मंगलं नगवतः प्रथमार्हतः  
श्री । संयोजनैः प्रतिवन्नूव विवाहकाले । सर्वाःसुरासुर वधूमुख गीयमानं । स  
र्वर्षिन्निश्च सुमनोजि रुदीर्यमासा ॥ २ ॥ दास्यं गतेषु सकलेषु सुरासुरेषु ।  
राज्येर्हतः प्रथम सृष्टि कृतोयदासीत् । सन्मंगलं मिथुन पाणिग तीर्थवारि ।  
पादान्निषेक विधिनान्युपचीयमानं ॥ ३ ॥ यद्विश्वाधिपतेः समस्ततनु नृत्सं  
सारनिस्तारणे । तीर्थेषुष्टि मुपेयुषिप्रतिदिनं वृद्धिर्गतं मंगलं । तत्संप्रत्युपनीतपू  
जनविधौ विश्वात्मना मर्हतां । नूयान्मंगल मङ्गयंच जगते स्वस्त्यतु संघायच  
॥ ४ ॥ यह चारवृत्त कहके मंगलदीप आरती उतारे ॥ फेर सक्रस्तव पढे ॥  
यह सदैव जिन पूजन करणैकी विधि कही ॥ ( पीठे ) यथाशक्ती अञ्जा  
वस्त्र आभूषण पहरेके, घोमा, हाथी, रथ, पालखी, सिपाई, नोकर, जाई,  
बंधु ( इत्यादि ) परिवार सहित पूजाके लायक, फल फूल प्रमुख उत्तम  
द्रव्य हाथमें लेके । नव्यजी कौं मोक्ष मार्ग दिखाता ऊआ, जिनशाश  
नकी प्रज्ञावना करता ऊआ, जिनमंदर जावै । जिनमंदरमें प्रवेश करके  
१० त्रिक विधि शाचवन करै ( सो १० त्रिक लिखतेहे ) ( पहिला  
त्रिक ) ( ३ निस्सही ) कहणैका ( जिसमें ) १ निस्सही, जिनमंदरमें  
पैशतेही कहै ( कहे पीठे ) संसार घर संबंधी कुठनी कार्य विचारणा  
न करै ॥ १ ॥ ( दूसरी ) निस्सही, प्रदक्षिणा तीन दिये पीठे कहै ।  
जिन मंदरमें फूटा टूटा ठीक करानेकी सारसंज्ञाल रक्खीथी सोनीठेमें ।  
इहां द्रव्य पूजा करणी मोकली रही ॥ २ ॥ तीसरी निस्सही कहै पीठे  
निकेवल ज्ञाव पूजा करै । पिण द्रव्य पूजा न करै ॥ ३ ॥ यह प्रथम नि  
स्सही त्रिक कहा ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ ( दूसरा त्रिक ) ज्ञान त्रिककी आराधना करनेको प्रज्ञाके द

क्षिणावर्त्तसं तीन प्रदक्षिणादेवै ॥ ॐ ॥ ( तीसरा त्रिक ) मूल नायकजीके विंवकों पंचांग मिलाके, तीन बेर नमस्कार करै ॥-३ ॥ ( चौथा त्रिक ) प्रन्नूकी अंग १। अग्र २। जाव ३। त्रिविध प्रकार पूजा करै ॥ ( अब निस्सही किये पीठे । कृत्य, अकृत्य (तथा) पूजा विधि संक्षिप्त लिखतेहैं ॥ निस्सही किये पीठे, मनोगुप्ती, वचन गुप्ती, काय गुप्ती, करके युक्त रहै ॥ पांचो इंद्रियांको वशमें रखै । गमनां गमनमें उपयोगी रहै । गीतादिक अन्यका सुनके चित्तमें व्याकुलता न रखे । कुठजी देव कार्यकों ठेम्मे और कार्यकी विचारणा न करै । राज कथादि संपूर्ण विकथा ठेम्मे । जन्म ( और ) कर्मके, अनुगत वचन न बोले ( अर्थात् ) कोईके माता पितादिकका किया थका, छोटा कार्यकों प्रगट न करै ( तथा ) कर्मानुगत वचन आंधेकों आंधा, गोद्वैकों गोदा ( इत्यादि वचन ) नबोलै ॥ निस्सही किये पीठे जिन मंदरमें धर्म संयुक्त, आत्म हितकारी, प्रमाणोपेत वचन बोलना चाहिये ॥ ( जिसनें ) मन, वचन कायाके, खोटै व्यापारों का निषेध अपनी आत्मासें कियाहे ( उसके ) जावसें निस्सही होय ( और ) जिसनें दूषणका त्याग न कियाहे । उसके केवल शब्द उच्चारण मात्र, द्रव्य निस्सही होय ( इसवास्ते । पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरेके, आठतहके उज्जल वस्त्रसें मुखकोश बांधे । धूपादिकसें अंग अपना सुध करै । जावसें, दूशरी निस्सही कहते, मूल गुप्तामें प्रवेश करै । जयणा संयुक्त पूजा करै । पूजा करते ऊए, शरीरमें खाज न खुणें । खेल खंखार न करै । निकेवल जगवानकी स्तवनामें चित्त रखे । प्रथम सुगंधयुक्त जल पंचामृतसें स्नात्र करावै । सुकमाल अज्जा कोमल सुगंध युक्त वस्त्रसें जगवान का अंगलहै । कपूर कस्तूरी मिश्रित सुध केशर चंदनका विलेपन करै । शुभवर्ण, शुभगंध युक्त, जीवादि रहित, निर्दोस । गुलाब, चंपा, चंपेली, केवला, जाई, जुई, मोगरादिक पुष्पसें पूजा करै । अष्टांग धूप अगरवत्ती खेवै ॥ मंगलदीप करै । अखंभ उज्जल अकृतांसें प्रन्नूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लिखै ॥ दर्पण १। जद्रासण २। वर्धमान सरावसंपुट ३। श्रीवत्स ४। मधुयुग ५। पूर्ण कलश ६। स्वस्तिक ७। नयावर्त्त ८। ( ऐसा ) अष्ट मंगलकी रचना करै । पंच वर्ण फूलोंसे अष्ट मंगलीक पूजै । सुंदर कुंकुम मिश्रित



चंदनसें हथ्योदेवै । उत्तम नैवेद्य चढावै । अन्ना खाद्य फल चढावै । ( इत्यादि ) पूजाकी विधि, आरती पर्यंत । राय प्रशोणी, ग्याता धर्मकथा, जीवाग्निगमादि, सिद्धांतोमें लिख्ये मुजब करै ( पीठे ) अंतरंग भक्तीसें प्रभूके सन्मुख नाटक करै ॥ ( जैसें ) देवेंद्र, दानवेंद्र, नारद, इनोंनें ( तथा ) उदाई राजाकी, राणी प्रजावतीनें । द्रोपदीनें नाटक किया ( और ) रावण प्रमुख, कई जीवोंनें अष्टापदादि ऊपर नाटक करके, तीर्थकर गोत्र उपाजन किया ( तैसें ) प्रभूके सन्मुख शंकारहित होके । उत्तम पुरुष नाटक करै ॥

॥ ❀ ॥ ( अब ) जल चंदन पुष्पादिकसें पूजा करै ॥ ( सो ) अंगपूजा ॥ १ ॥ प्रभूके सन्मुख नैवेद्य प्रमुख चढावै ( सो ) अग्र पूजा ॥ २ ॥ प्रभूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करै ( सो ) ज्ञाव पूजा ॥ ३ ॥ ( यह पूजाका विचार गबिर्जित चोथा त्रिक कहा ) ॥ ❀ ॥ ( अब पांचमा त्रिक ) ॥ ❀ ॥ तीन अवस्था विचारणी ॥ पिमस्थ (१) पदस्थ (२) रूपातीत ॥ ३ ॥ इसमें पिमस्थ अवस्थाके तीन जेद ॥ जन्मावस्था ॥ १ ॥ राज्यावस्था ॥ २ ॥ श्रमणावस्था ॥ ३ ॥ ( और ) केवल अवस्थाको विचार करणा ( सो ) पदस्थ अवस्था ॥ निरंजनाकार ( सो ) सिद्धावस्था । तिसकुं रूपातीत अवस्था कहतेहै ॥ ❀ ॥ ( अब ठठात्रिक ) तीन दिशा ठोमके प्रभूके सामनें निजर रखै । उर्ध्व १ ॥ अध २ ॥ तिरछी ३ ॥ दहणी । बांइ । पिठामी । निजर नहीं करै ॥ ❀ ॥ ( अब सातमा त्रिक ) तीन बेर धरती प्रमार्जकै । उस ठिकाणें चैत्यवंदन करै ॥ ❀ ॥ ( अब आठमा त्रिक ) ॥ ❀ ॥ वर्णादिक तीन संपदाका ॥ हरफशुद्ध उच्चारण करै ( सो ) वर्ण शुद्धि ॥ १ ॥ हरफोंके अर्थपर आलंबन रखवै ( सो ) अर्थशुद्धि २ ॥ आलंबन एक जिन प्रतिमाका रखवै ( सो ) मन शुद्धि ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ( अब नवमात्रिक ) ॥ ❀ ॥ तीन मुद्रा करनी ॥ जोग मुद्रा १ ॥ जिनमुद्रा २ ॥ मुक्ताशुक्ति मुद्रा ३ ॥ ( इसमें ) जोग मुद्रा कि सकुं कहते है ॥ पञ्च कोशाकारै । दोनुं हाथ परस्पर अंगुली मिलानी । एजोग मुद्रायें सक्रस्तव कहिये १ ॥ कानसगग मुद्रा ( सो ) जिन मुद्रा २ ॥ ( और ) दोसीपका जोमा तिस आकार हाथ रखना । ( सो ) मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३ ॥ इस मुद्रासे प्रणिधान ( जय वीरराय ) इत्यादि करै ( अब

दशमात्रिक ) ॥ ✽ ॥ प्रणिधान तीन ॥ जिन वंदन प्रणिधान १ ॥ मुनि वंदन प्रणिधान २ ॥ प्रार्थना प्रणिधान ३ ॥ इसमें ( जो ) जावन्ति चेइयाई ( इत्यादि ) इहसंतो तत्थ संताई ( तक ) जिन वंदन प्रणिधान ॥ १ ॥ जावन्ति केवि साज्ज ( इत्यादि ) तिबिहेण तिदंम विरियाणं ( इहां तक ) मुनि वंदन प्रणिधान २ ॥ जय वीरारायसं ( लेके ) आज्ञाक्रम खंमा तक । प्रार्थना रूप प्रणिधान ३ ॥ ✽ ॥ ( ऐसं दशत्रिकका पहला चार कहा ) ॥ ✽ ॥ ( अब पांच अग्निगमन साचवणेंका दूसरा चार कहतेहैं ) ॥ ✽ ॥ सच्चि त्द्रव्य कुशमादिक अपनेपास होय उसकुं अलग रख देना १ ॥ ( और ) राज चिन्ह, मुकुट, ठग, खड्ग, चामर, पाडुका, अचित्त वस्तुओंमना । आभूषण प्रमुख पहन्या रखना २ । मन एकाग्र करना ३ ॥ एक पद उत्तरा संग करना ४ ॥ जिन विंव देखतेही ( नमो जुवण वंधुणो ) ऐसं नमस्कार करना ॥ ५ ॥ ✽ ॥ यह दूसरा चार कहा ॥ ✽ ॥ ( अब तीसरा चार दो दिशीका ) पुरुष दहणी दिशा बैठा । जगवंतकों बांदे ॥ स्त्री, बांम दिश वैठके जगवंतकुं बांदे ॥ ✽ ॥ ( अब चौथा चार तीन अग्निग्रह ) ॥ ✽ ॥ अग्निग्रह देव बांदणामें कहाहे ॥ ( जघन्य ) नव हाथ दूर वैठके देव बांदे १ ॥ ( मध्यम ) नव हाथसं उपरांत वैठके देव बांदे २ ॥ ( उत्कृष्ट ) ६० हाथ दूर वैठके देव बांदे ३ ॥ ( अब पांचमा चार चैत्यवंदनका ) ॥ ✽ ॥ ( सो ) जघन्य १ ॥ मध्यम २ ॥ उत्कृष्ट ३ ॥ तीन जेद है ( तिहां ) एमो अरि हंताणं ( इत्यादिक कहके ) वा । एक दोय गाथाका नमस्कार कहके । शक्रस्तव कहना ( ए जघन्य चैत्य वंदन १ । जिस देव वंदनमें स्थापनाई त स्तवंदमक । नमोत्तुणंसं ( लेके ) अरिहंत चेइयाणं ( इत्यादिक संपूर्ण कह्यै ) एक स्तुति कह्यै ( सो ) ॥ मध्यम चैत्यवंदन ( तथा ) कोई आचार्य कह्यै ॥ पांच दंमक सहित । थूई गाथा ( ४ ) कह्यै ( सो ) मध्यम चैत्यवंदन कहिये ॥ ( तथा ) विधिपूर्वक शक्रस्तवादि पांच दंमक । जय वीराराय पर्यंत । आठे थूई ए देव बांदै । ( सो ) उत्कृष्ट चैत्य वंदन कहिये ॥ ✽ ॥ ( अब ठग चार पंचांग प्रणिपात करै । दो हाथ दोय गोडा ( और ) मस्तक ( ए ) पांच अंग मिलायके जमीनमें लगावै ॥ ✽ ॥ ( अब सातमा

हार ॥ ❀ ॥ जघन्पै एक गाथासैं लेकर नरुष्ट एक सो आठ श्लोक  
( तथा ) काव्यसैं प्रज्ञूकी स्तवना करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ स्तवना करके आनंदमान ऊवो थको अपना घरे आके गृह  
संबंधी कहवा योग्य जो कृत्य अपना आदमीकों कहै ( पीठे ) धर्मस्थानमें जो  
गुरुको जोग होय तो अवश्य गुरुके पास जावे । जाके विनयसंयुक्त पंचांग  
नमस्कार करै । गुरुकी आशातना टालतो ऊवो, यथायोग्य स्थानके  
बैठके, एकाग्र चित्तसैं धर्म अधर्मकी व्यापक, अमृततुल्य जगवानकी वाणी  
गुरुमुखसैं सुणै । बुद्धीका आठ गुण संयुक्त शास्त्रकों धारण करे ( यडुक्तं )  
शुश्रूषा श्रवणंचैव । ग्रहणं धारणं तथा । ऊहापोहोर्थं विग्यानं । तत्त्वग्यानंच  
धीगुणाः ॥ १ ॥ शास्त्र सुणनैसैं सर्व धर्मा धर्मको जाणपणो होता है ।  
( यडुक्तं ) श्रुत्वा धर्मं विजानाति । श्रुत्वात्यजति दुर्मति । श्रुत्वा ग्यानमवा  
प्नोति । श्रुत्वा मोक्षंच गच्छति ॥ १ ॥ उपदेश पूर्ण ऊएवाद ( प्रथम ) आत्म  
शास्त्रे, तथा देवशास्त्रे पञ्चकखाण कियो होय ( सो फेर ) गुरुके मुखसैं पञ्चकखा  
ण करै । पञ्चकखाण कियेविगर दातार होय सो नी तिर्यंचादियोनीमें उत्पन्न  
ऊवै । तहां जोगजोगवै परंतु बंधनमें फसा ऊवा रहै । ( यडुक्तं ) न दाता  
नरकंयाति । न तीर्थं गिरतो न वेत् । दयालुर्नायुखाहीनाः । सत्यवक्ता न दुःस्वरः  
॥ १ ॥ तपस्याका फल मोटा है । ( यडुक्तं ) तपःसर्वाक्ष सारंग । वशी  
करणवागुरा । कषाय ताप मृद्धीका । कर्माजीर्णं हरीतकी ॥ १ ॥ यहूरं  
यहुराराध्यं । यत्सुरैरपि दुष्करं । तत्सर्वं तपसा साध्यं । तपोहि दुर्तिक्रमः ॥ २ ॥  
इसवास्ते यथाशक्ति शुद्धजावसैं व्रत पञ्चकखाण धारण करै ( पीठे ) यथाशक्ति  
देवगुरुकी वर्णना करनेवाले जैन याचकादिककों दान देके अपने घर आवै  
पीठे अपना धर्मोपदेशक गुरुका जोग होय तो गुरु अतिथिकों शुद्ध  
आहारादिकका दान देके । अपना नाईबंधवांके साथ नरुष्ट अनरुष्ट जाणता  
थका उत्तम विधिसैं भोजन करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अब भोजनकी विधि लिखते है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोकः ॥ अधौ तपादः क्रोधांधो । वदन् दुर्वचनानियत् । दक्षि  
णाग्निं मुखोन्नते । तस्याद्राक्षस भोजनम् ॥ १ ॥ पवित्रांगे शुभ्रे स्थाने । नि  
विष्टो निश्चलः शनैः । स्मृत्वा देवगुरुं नृते । तस्यान्मानुषभोजनं ॥ २ ॥ स्ना

त्वादेवान् समन्वय्य । नत्वा पूज्य जनान्मुदा । दत्वादानं सुपात्रेभ्यो । जुक्ते  
 जुक्तं तदुत्तमम् ॥३॥ (तथा) भोजने मैथुने स्थाने । वमने दंतधावने । विण्मुत्रो  
 त्सर्गकालेच ॥ मौनं कुर्यान्महामतिः ॥ ४ ॥ इतने ठिकाणें मौन रखना  
 युक्त है ॥ अब भोजन कोणदिशीमें करणा सो लिखतेहैं ॥ अग्निकूण १  
 नैऋत कूण २ दक्षिणदिशि ३ यह तीन दिशी वर्ज्य है । तथा सूर्यकी  
 उदय बेला ( तथा ) अस्तबेला । उर ग्रहणकी वखत ( तथा ) अपणा  
 ज्ञाति स्वजन संबंधीयूंहा जहांतक मृतकपम्ना होय । तहां तक भोजन न  
 करै ॥ औरत्रैतें द्रव्यें भोजनादिकमें रुपणपणूं न करे । उर अजाणी थाली  
 प्रमुख भोजनमें । तथा अजाणेंके घर भोजन न करें ॥ तथा भोजन  
 करतीवखत । बाल १। स्त्री २। गर्भ ३। गौ ४। यह मोटी हत्याको करणें  
 बालो (तथा) आचार लोप न करणेंबालो (तथा) अपणें कुलसैं विटंबित  
 ज्योथको । इतनोंकी पंक्तिमें बैस करके भोजन नहिं करै ॥ ( तथा ) म  
 दिरा, मांझ, माखण, मधुं, पांच जातिके उंवर जामके फल । अनंतकाय ।  
 सर्व जातीके अजाणे फल । तथा रात्री भोजन, ए सबदा त्याग करना  
 चाहिए ॥ तथा काचो गोरस गठदहीमें मुंग मोठा दिविदलंमिला जुवा अन्न।  
 समानजयाअन्न । दोदिन उपरांतका दही । यह चीज त्याग करना फल, फूल,  
 पान, उर दूसरा पदार्थ (जो) जीवादिक सहित होय (सो) सब त्याग करे  
 (तथा) अथाणा प्रमुख बावीस अन्नक्षय ठामैं । भोजन करतां (तथा) वमीनीत  
 करतां बहोत देरी न लगावे । और पाणी पीणा, स्नान करणा, यह दो  
 काम थिरतासैं करणा चाहिए ॥ भोजनके आदिमें पानी पीना जहर सदृश  
 ( तथा ) भोजनके अंतमें पानी पीना सो शीसा सदृश । भोजनके  
 बीचमें पाणी पीना सो अमृत सदृश इससैं भोजनके बीचमें जल पीना  
 चाहिये ॥ इस रीतीसैं पाणी-पीनका फल जाणना ॥ अजीर्ण होय तो  
 भोजन न करना । जैसा रुचै, तैसा भोजन कालमें करना ॥ भोजन करके  
 मुखयोके पान सोपारीसैं मुखशुद्ध करै ॥ विवेकी पुरष रस्ते चालतो थको  
 तंबोल न खावे । आखी सोपारीकूं दांतसैं न तोमै ॥ भोजन कीएवाद् उष्ण  
 काल बिगर निद्रा न लेवै । किसवास्ते दिनकूं सोणेंसैं शरीरके विषे रोगोत्पत्ति  
 होय ॥ फेर घरकी शोभापत्रें देखतो थको । पंथितकेसाथ बातचीत करतो

थको पुत्रादिककूं शीखामण देतो थको । सुख समाधीसैं द्योय घनी पर्यंत  
 घरके विषे रहे । गुणको समूह अपनैं वश है । धनादिक तो जाग्याधीन है ।  
 ऐसी तत्वकी बात जाणनेवालेके कच्ची गुणकी हानी न होय ॥ कुञ्जहीन  
 माणस होय लेकिन गुणकरके उत्तमता प्राप्त होय ॥ उत्तम मनुष्यकी कोई  
 ची खाणि नहिं है । सत्वादिक गुण सहित पुरुष (जिसैं) राज्यके योग्य होय ॥  
 तिस तरेसैं, श्रावकची इक्कीश गुण करके सहित होणेंसैं धर्म राज्यके योग्य होय  
 ॥३॥ अवश्रावकके इक्कीश गुण लिखते है ॥ जिसको क्रुद्ध हृदय न होय  
 १ । तथा सौम्य होय २ । रूपवंत होय ३ । सर्वलोककूं बल्लभ होय ४ ।  
 क्रूर न होय ५ । संसारसैं मरतोरहे ६ । मूर्ख न होय ७ । सदादाक्षिण्यवंत  
 होय ८ । लज्जावंत होय ९ । दयासहित होय १० ॥ किसीके ऊपर  
 रागवेष न करे ११ । सौम्यनिजर होय १२ । गुणकोरागी होय १३ । अच्छी  
 धर्मकथा सहित होय १४ । अच्छे परिवारवालो होय १५ ॥ ऊंमो विचार क  
 रणेंवालो होय १६ । बनेमाणसकूं मान्यनीक होय १७ । विनयवंत होय  
 १८ । करानया उपगारकूं जाणनेवाला होय १९ । परम हित अर्थी होय  
 २० । सर्व बात स्यादादका नेदयुक्त समझणेंवाला होय २१ । यह इक्कीश  
 गुण श्रावक होय सो अवश्य धारण करे ॥ फेर जाएकर श्रावक  
 होय सो प्रायें राजकथा । देशकथा । स्त्री कथा । नक्तकथा । इस  
 चार कथाको त्याग करे ॥ किसवास्ते कि जिससैं अनर्थकी प्राप्ति होय ॥  
 अच्छे मित्रसाथ जाईसाथ धर्म बातकरे ॥ जिससेती पापकी बुद्धि उत्पन्न  
 होय । उसकी संगत न करे ॥ कोई क्रोधसेती कुठनी कहे तोपिण  
 न्यायमार्गकूं न ठेमे ॥ जो उत्तम मनुष्य पंथित होते है सो किसीकाभी  
 अवगुण कहे नहिं ( तथा ) माता, पिता, गुरु, सेठ, स्वामी, राजादिक,  
 इनोंका अवगुण तो अवश्य नहिं बोलै (और) मूर्ख, दुष्ट, अनाचारी, मलीन  
 धर्मनिंदक, कुशीलीया, लोचनी, चोर, इतनाकी संगत उत्तम पुरुष नकरे ॥ (तथा)  
 अजाणें माणसकी प्रशंसा । अजाणेंकूं अपणें घरमें रहणें वास्ते स्थान ।  
 अजाणें कुलसाथ सगाई । अजाणे माणसकूं नोकर रखना । अपणेंसैं  
 बनेकेसाथ क्रोध । अपणेंसैं बन्ना वैरीकेसाथ वैर रखना । गुणीकेसाथ विवाद  
 करना । अपणेंसैं जवरकूं नोकर रखना । मायेदेणा करके धर्म करना ।

व्याजसँ लाके दूसरेकूँ उधार देना । स्वजनकेसाथ विरोध रखना ।  
 दूसरे आदमीकेसाथ प्रीति रखना । धर्मकेवास्ते तारीफी करणँसँ न  
 देना । चाकरकेपास दंमसँ धन लेना । दारिद्र आनेँसँ जाई बांधवादि  
 कको आश्रय लेना । अपणें मुखसँ अपणी तारीफ करना । आपवात कहे  
 फेर आपहंसना । ( यह ) सर्व अपगुण ग्रहण करणँसँ इस लोक परलोक  
 में बहोत कष्ट भोगवे । इसवास्ते ऊपर कहा सब अपगुणाँको त्याग  
 करै ॥ न्यायसँ धनपेदा करे । न्यायसँ चलाएँवाला । देश विरुद्ध ।  
 कालविरुद्ध । कार्यकूँ त्याग करे ॥ राजाके बैरीकी संगत न करे ।  
 बहोत आदमीकेसाथ विरोध न करे ॥ कुल और आचार शील  
 जिसका अपनै बरोबर होय तो उसकेसाथ विवाहादिक करे ॥ अ  
 ठे पामोसीयाके पास घर लेके बांधवादिक सहित रहे । उपद्रवके ठिका  
 णँका त्याग करे ( तथा ) आवक योग्य खरच करे । द्रव्यके अनुसार बस्त्रा  
 दिक पहरे । लोकनिंदा करे उस कामकूँ त्याग करे । देशके आचारें चा  
 लतो अपणो धर्म न ठोमे । जो अपणें आसरे रहा होय उसको हित करे ॥  
 अपणो बल अने निबलपणों जाणें । हित अहितकी बात जाणे । पांच  
 इंद्रिय दमन करे । देवगुरुकी विशेष भक्ति करे । यथायोग्यपणें स्वजनकी  
 दीनकी अतिथिकी सेवा करे । शास्त्रकूँ सुणतो जणतो थको चतुरपुरषके  
 साथ कितनौक बखत गमावै ॥ फेर द्रव्य कमाणेका उपाय करे । मगर जो  
 जाग्यमें होगा सो मिलेगा । ऐसा कहके निश्चित न रहे । किसवास्ते उद्य  
 म किए बिगर जाग्य फलदाई न हो सके । इससँ उद्यम जरूर करणा चा  
 हिये । शुद्ध अच्चा व्यापार करता सदैव रहे । खोटा तोल, खोटा मापका  
 त्याग करे । जिसमें पनरै १५ कर्मादान तो आवककूँ अवश्य त्याग करणा  
 चाहिये ( सो लिखतेहैं ) अंगार कर्म १ । वन कर्म २ । शकट कर्म ३ ।  
 नाटक कर्म ४ । धरतीफोमन कर्म ५ । दांत कुवाणिज्य ६ । लाख कुवा  
 णिज्य ७ । घृत तेल मधादिक कुवाणिज्य ८ । केश कुवाणिज्य ९ । विप  
 कुवाणिज्य १० । चाणीयंब प्रमुख ११ । वैल समांरण कर्ण कंचल ठेदना  
 दि १२ । असती डट दासी श्वान मार्जार प्रमुख पापी जीवादिक पोषण  
 कर्म १३ । जमीनमें दव अग्नि लगावण कर्म १४ । सरद्रहतलोवादिक शो

षण कर्म १५। यह पनरे कर्मादान ठोमे ॥ (तथा) लोहखंभ, महुमाके फूल, मदिरा, मधु, कंद, मूल, पान, प्रमुख वस्तु व्यापार करणेंकेवास्ते ग्रहण न करे ॥ जो चतुर श्रावक होय सो फागुण माशनुपरान्त । तिल, अलसी, गोल, टोपरा, प्रमुख बहोत जीवोंका घात जाए करके चोमासेमें न राखे । गामी (अथवा) पोठीया प्रमुख चोमासेमें न चलावे । (तथा) जीवकी हिंसाको कारण खेतीवामी कर्म न करे । बहोत लाज होय (तोपण) गहणें राखे विगर लोभ करके किसीकूं व्याजवास्ते नाणां नुवार नहिं देवे । चोरीकी वस्तु मोल न लेवे । सरस निरस वस्तु झेल कर के नहिं बेचे । चोर साथ, चंमाल साथ, धूर्त साथ, मलीन अंतःकरण वा लेके साथ, पापीके साथ, इणोंसें व्यापार नहिं करे ॥ अपनी वस्तु बेचता थका मिथ्या न बोले । दूसरेकी वस्तु लेका थका वचन नहिं पलटे । जो चतुर पुरुष होय सो विगर देखी वस्तुके साथ साटो न करे । सोनो, रूपो, रत्न परखे विगर नहिं लेवे ॥ राजाके तेज विगर अनर्थ आपदाको नाशन होवे । इसवास्ते राजाकों आसरो लेणो चाहिये । लेकिन स्वाधीनपणें रहे ॥ (तथा) पंमित, तपस्वी, कवीश्वर, वैद्य, मर्मका जाए, रसोई करनेवाला, मंत्रवादी, पूजनीक, इतनाकुं कोपावणा नहिं ॥ द्रव्यको अर्थी द्रव्यपेदाकरणें में बहोत डुरकसहे (मगर) धर्मकूं ठोमे नहिं ॥ नीचकी सेवाका त्याग करे । जो विश्वासघात करे उसकी संगत न करे । लेना देना करते थके अपणें बोलको लोपन करे । मगर अपणों वचन पाले । जो माणस अपणें वचनमें थिर रहताहे । उसकी प्रतिष्ठा बहोत बधे । पंमित पुरुष होय सो सर्व वस्तुको नासनी हो जाय (लेकिन) थोमे लाजकेवास्ते अपणें वचन को लोप न करें (अगर) लोप करे तो वसु राजाकी तरसें दुःख प्राप्त होय। ऐसा व्यवहारके विषे दिवसको चौथो प्रहर गमावै ॥ पीठे व्यालू करणेंके वास्ते अपने घर जावे । एकासणों, आंवल, उपवासादिकको, पञ्चकाण कियो होय (सो) पंमिकमणों करनेकेवास्ते संध्याकालमें धर्मस्थानके जावै । दिवसके आठमें जाग (याने) चार घन्टी दिन रहणेंसें नोजन करे । मगर संध्याकी बखतमें नोजन कदापि न करै ॥ आहार १ । स्त्रीसेवा २ । निद्रा ३ । स्वाध्याय ४ । ए चार कर्म सांज समय त्याग करे ॥ यड

क्तं ॥ चत्वारि खलु कर्माणि । संध्याकाले विवर्जयेत् । आहारं मैथुनं निद्रा ।  
 स्वाध्यायं च विशेषतः ॥ १ ॥ आहाराज्जायते व्याधि । मैथुनाज्जर्जडता ।  
 ज्ञतपीमा निद्रया स्यात् । स्वाध्यायाद्बुद्धिहीनता ॥ २ ॥ प्रत्याख्यानं इत्य-  
 रिमं । कुर्यादैकालिकादनु । द्विविधं त्रिविधं चापि । चाहारं वर्जयेत्समम् ॥ ३ ॥  
 अन्होमुखे वसाने च । यो देवे घटिकेत्यजेत् । निशा भोजन दोषको । विज्ञेयः  
 पुण्य भोजनम् ॥ ४ ॥ करोति विरतिं धन्यो । यः सदानि शि भोजनात् ।  
 सोऽपि पुरुषा युपस्य । स्वादवश्य मुपोषितः ॥ ५ ॥ वासरे च रजन्यां च । यः  
 स्वादन्नव तिष्ठते । शृंग पुत्र परिभ्रष्टः । स स्पष्टं पशुरेव हि ॥ ६ ॥ उलूक  
 काक मार्जार । गृध्रशंवर शूकराः । अहि वृश्चिक गोधाश्च । जायते रात्रि  
 भोजनात् ॥ ७ ॥ नैवाज्जतिर्न च स्नानं । न श्राद्धं देवतार्चनम् । दानं वा विहि-  
 तं रात्रौ । भोजनंतु विशेषतः ॥ ८ ॥ इत्यस्तै रात्री भोजन श्रावककूं करणा  
 उचित नहि । रात्री भोजनका दूषण पर मतमें नैकहा है ॥ यदुक्तं ॥ अस्तं  
 गते दिवानाथे । आपोरुधिर मुच्यते । अन्नं मांश समं प्रोक्तं । मार्कमेव  
 महर्षिणा ॥ १ ॥ यह श्लोक मार्कम पुराणमें लिखा है ॥ ऐसं परम  
 तके बहोतसे ग्रंथोंमें रात्री भोजनका दूषण लिखा है ( तो ) जैनी  
 नामधराके रात्री भोजनका विशेष त्याग करणा उचित है ॥ यह रात्री  
 भोजनका अधिकार कहा ॥ पीछे थोड़ेसे पाणीसें पग, हाथ, मुख, पखा  
 लके, अपणी आत्माकूं धन्य मानतो यको जिनेश्वर देवकी भक्तिसहित पूजा  
 करे ॥ अन्नी क्रियासहित ज्ञान है सो मोक्षका कारण है ॥ ऐसा जा  
 एतो यको सांत्तिकी वखत प्रतिक्रमणादि क्रिया करे ( जैसं ) स्त्री, अन्न,  
 भोजनके सुखको जाणकार होय ( उसकूं स्त्री भोगवे विगार ) भोजनखाए  
 विगार । मात्रनाम जाणनेसं सुख नहिं ऊवे ॥ तिसंतरे क्रियाविगार ज्ञान फल  
 दायक नहिं ॥ गुरुका संयोग न होनेसं अपणें घरके विषे स्थापना चार्य रखके,  
 स्थापना न होय तो नोकरवाली पुस्तक आदि स्थापन करके । पम्तिकमाणुं करे ।  
 धर्मसं सर्व कार्यकी सिद्धि होती है । ऐसा जाणता थका प्रतिक्रमण समय  
 उल्लंघन न करे । ( अगर ) इसवखतकूं उल्लंघन करके जापादिकं धर्म कर्म  
 करे ( तो ) सर्व ऊखर क्षेत्रके विषे धान्य बोणेंकी तरेसें निःफल होय ।  
 यन्मि होय सो विधीकूं पूरण करके धर्मकी क्रिया प्रते करे ( परंतु ) जोहीन



अधिक करे । सो अनेक तरसैं दुःख प्राप्त होय ॥ जेसैं रोगीकूं दवाई उलटी  
 बताएँसैं । वा रोगीके कुपथ्य करणेंसैं रोग बढै ( तैसैं ) अगामी पिठामी  
 क्रिया करणेंसैं अनर्थ उत्पन्न होय ॥ पीठे गुरु आदिककी बेयावच्च करे  
 बेयावच्च यानें नक्ति करणेंसैं श्रेय मंगलीक प्राप्त होय ॥ बाहुबल जीनैं  
 बेयावच्च करणेंसैं जुजावल पैदा करा । ( कि ) जिसके अगाडी चक्रवर्तनी  
 हारगए । यह बेयावच्चके प्रभावसैं ऐसा बलजया । ऐसा जाणके । पंमित  
 श्रावक, साधु साध्वी, श्रावक, श्राविका चतुर्विध संघकी नक्ति करे । वस्त्रसैं  
 मुखको संवाध करके । विगर बोलता थका । सर्व अंगकी खेदकूं हरता  
 थका । अपणें पगका फरस त्याग करता थका । यत्नसैं गुरूकी चरण  
 सेवा करे ॥ पीठे देरासरमें जाके जगवंतको दरशण करके अपणें घर  
 आवे । सोनेकी बखत पगधोके, पंचपरमेष्ठी नवकार मंत्रगुणें । चक्र  
 सायको चैत्य वंदन करे । मेरेकूं श्रीअरिहंत महाराजको सरण जुवो ।  
 मुऊकों श्रीसिद्धमहाराजको सरण जुवो । मुऊकूं श्रीकेवलि नासित जिन  
 धर्मको सरण जुवो । फेर मुऊकों सदैव श्रीसाधु महाराजको सरण जुवो ।  
 ( तथा ) मंगलीकके करणेवाले दुःखसैं राखणेंवाले । कंदर्पकूं जीतणेंवाले  
 श्रीथून्नद्रजीकूं नमस्कार जुवो ॥ गृहस्थाश्रममें जिसकों शीलकी लीलाजई  
 ऐसा श्रीसुदर्शन सेठकों नमस्कार जुवो ॥ धन्यहै, कृतपुन्य है, ( जो ) कामदे  
 वकूं जीतणेवाले मुनिराज, चारित्र ग्रहण करा जवसैं । अतीचार रहित शील  
 पालनेवाले हैं ॥ और जो बहोत पापकर्मको करणेवालो, इंद्र जीतणेंकूं  
 असमर्थ, ऐसो पुरुष एक दिनजी शीलपाल सके नहिं ॥ संसाररूप समु  
 द्रके विषे, मदयुक्त है नेत्र जिसका । ऐसी स्त्रीसैं नहिं बचणें वालेकों संसार  
 समुद्र तिरणा दुर्लभ है ॥ अब स्त्रीका दोष बतलावे है ॥ यउक्तं ॥ अनृतं  
 साहसं माया । मूर्खत्व मतिलोभता । अशौचं निर्दयत्वंच । स्त्रीणां  
 दोषा स्वप्नावजाः ॥ १ ॥ यह सात दोष तो स्त्रीजातीकूं स्वप्नावसैं प्राप्त हो  
 ताहे । फेर जो स्त्री अनेक पुरुषके ऊपर रागवंती होय । ऐसी स्त्रीकूं कोण  
 नोगवे । जो पंमित होय सो तो मुक्ति रूपिणी स्त्रीकों नोगवे । किस  
 वास्तै । कि मुक्ति रूपिणी स्त्री जोहे सो वैरागी ऊपर रागवंती हे । ऐसो  
 स्त्रीको असारपणों विचारतो थको जरा देरतक समाधिसहित निद्रा करे ।

मगर बुद्धिवंत, पुरुष धर्म पर्वके दिन मैथुन न सेवे । फेर बुद्धिवंत पुरुष बहोत निद्रा न लेवे ( कारण ) बहोत निद्रा । धर्म, अर्थ, सुख, इस तीनोंक नाश करणेंवालीहे । ( इससें ) जो स्वल्प आहार करे । स्वल्प निद्रा लेवे । स्वल्प आरंज करे । स्वल्प परिग्रह रखे । क्रोध थोमो करे । ऐसा पुरुष संसारमें स्वल्प जमें ॥ ( तथा ) निद्रा १ । आहार १ । जय ३ । स्नेह ४ । लज्जा ५ । काम ६ । विषय ७ । कलह ८ । क्रोध ९ । यह बढ़ाएँसें बढ़े । घटाएँसें घटे ॥ विघ्नरूप बेलकूं वेदन करनेमें कुठार समान ऐसे श्री नेमिनाथ जगवानकूं निद्रा समय ध्यावनी करणेंसें खोटा स्वप्नादिक न होय ॥ अश्वसेन राजा वा मा राणीके पुत्र श्रीपार्श्वनाथ स्वामीको ध्यान करे ( तो ) दुःस्वप्न न देखे । ( तिसी तरेसें ) लक्ष्मणा राणी, महसेन राजाके पुत्र, श्रीचंद्रप्रज स्वामीकूं स्मरण करे तो सुखें निद्रा प्राप्त होय ॥ ( तथा ) संपूर्ण विघ्नरूप सर्पानें हणनेकूं गरुड समान । सब सिद्धिकों देणेंवाले । श्रीशान्तिनाथ स्वामी प्रते चित्तमें ध्यातो, थको सोवे ( तो ) मनुष्यकों चोर प्रमुखका जय न होय ॥ ऐसी क्रिया जो पंक्ति अंगीकार करतेहैं । उसकूं उत्तम फल प्राप्त होते हे ॥ ❀ ॥ इति दिनकृत्य विधि ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथ सदैव धर्मकृत्य विधि लि० ॥❀॥

॥ ❀ ॥ समस्त जन्मकोसार ऐसो मनुष्यपणो पायकरके धर्मकृत्यसें सफल करे । निरंतर धर्म करणेंसें सुख होताहे ॥ इसवास्ते । दान, ध्यान, तप करके, दिन व्यतीत करे ( मगर ) चोपन्वाजी करके न करे ॥ जीव अपणें आयुष्यसें ( प्रायें ) तीशरे जाग ( अथवा ) अंतसमयमें अगामी जवको आयुष्यवांधे । आयुष्यके तीशरे जाग रहा थका प्राणी बीज, पांचम, आठम, एकादशी, चौदश, यह पांच पर्वके दिन धर्म करतां थकां अन्ना आनुखा वांधे । बीज पालणेंसें प्राणी यती धर्म, श्रावक धर्म, प्रते आराधन करे । बहोत पुण्यसमूह संपादन करतो थको राग देष इण दोनुकों बीजतीथीसें जीते ॥ पांचम पालतो थको पांच ग्यानप्रते पावे ॥ पांच चारित्र । पांच महाव्रत प्राप्त होवे । अहंकार, विषय, कषाय, निद्रा, विकथा, इस पांच प्रमादकूं जीतणेंवाळा जवे ॥ आठम पालनेसें ॥ उष्ट्र अष्ट कर्मकूं दूर करे ( तथा ) पांच समिति

तीन गुप्ति । यह ८ प्रवचन माताकूँ धारणैवाला ऊँवे ( तथा ) जातिमद  
 १ । कुलमद २ । रूपमद ३ । बलमद ४ । ग्यानमद ५ । तपमद ६ । लाज  
 मद ७ । धनमद ८ । यह आठ मदकूँ जीतणैवाला ऊँवे ॥ एकादशी करतो  
 थको ॥ पंक्ति पुरप ११ इग्यारे अंगप्रतें ( तथा ) श्रावककी ११ इग्यारे  
 प्रतिमाका आराधन करणैवाला होय ॥ चतुर्दशीतप आराधन करतो थको  
 प्राणी १४ चौदे राजलोकके ऊपर मोक्षरूप स्थानकहे तिसप्रतें ( तथा )  
 १४ चौदे पूर्वप्रतें प्राप्त होय ॥ यह पांच पर्व है सो एकएकसँ अधिक ९  
 फलके देनेवाले है । इसवास्ते पर्वके दिन विशेष पोसह प्रतिक्रमणादिक  
 धर्मकृत्य आराधन करे । उसदिन स्नान मैथुनका त्याग करे ॥ बुद्धिवंत पर्व  
 दिनके विषै पोसह करे ( यह ) मुक्तिकूँ वश करणैमें उबध समान है ॥  
 अगर शक्ति न होय तो सामायक व्रत ग्रहण करे ॥ ( और ) च्यवन १ ।  
 जन्म २ । दिक्ता ३ । केवल ४ । मोक्ष ५ । यह पांच कल्याणककूँ आराधन  
 करे । पहला कल्याणककेदिन एकासणूँ करे । दूसरा कल्याणकमें नीवीकरे ।  
 तीसरा कल्याणकमें आयंविल करे । चौथा कल्याणकमें उपवाश करे ।  
 पांचमा कल्याणकमें एकासणै सहित उपवाश करे । पांच कल्याणक तप  
 पांचवर्षमें पूरण होय ॥ ( तथा ) एमो अरिहंतादिक १० बीस स्थानक आराधन  
 करणैसँ तीर्थकर गोत्रबांधै ॥ साढापांच वरस उजवाली पांचम तप करणैसँ  
 मोक्षगती मिले ॥ व्रत संपूर्णअएवाद ऊजमणूँ करें । जो शक्ति न होय तो  
 डुगणै तप करे ॥ पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकरवाली, यह पांच ग्यानके  
 उपगरण पांचमके उजमणैमें रखे ॥ और पाट्कीको पन्तिक्रमण करणैसँ श्रावक  
 १५ पनरेदिनकोपक्ष ( तथा ) कुटुंबको पक्ष यह दोनू पक्षकौं शुद्धि करे ॥  
 आसाढ चोमाशो, कार्तिक चोमाशो, फाल्गुण चोमाशो ( यह ) तीन  
 चोमाशेमें ठठ तप करे ॥ ( तथा ) संवत्तरी पर्वके दिन अष्ठम तप  
 सहित प्रतिक्रमण कामणा करे ॥ समस्त अठाई पर्वकेदिन अपणै घरके  
 विषे । खांमणा । दलणा । धोना । स्नान प्रमुख आरंभ न करे ॥ ( तथा ) शुद्ध  
 मनसँजिन शासनकी उन्नती करतो थको । नगरमें जीवदया पलावतो थको  
 कल्पसुत्र सुणै ॥ पजूपण पर्वके दिन श्रीकल्पसुत्र सात, आठ, एकबीस दफे  
 सुणै तो ८ आठ जवमें मोक्ष प्राप्त होय ॥ फेर सम्यक्त सहित ब्रह्मचर्य पा

लनेंसें जितना पुन्य होय । इतना पुन्य श्रीकल्पसुत्र सुणनेंसें होता है । दान करके, तप करके, तीर्थकी सेवा करके, जो प्राणीयोंका पापक्षय होय, उतना फल कल्पसुत्र सुणनेसें होता है ॥ मुक्ति उपरांत कोईनी पद नहिं । सत्रुंजय उपरांत कोईनी तीर्थ नहिं । समकित सिवाय कोईनी व्रत नहिं ॥ तिसी तरेसें कल्पसुत्र उपरांत कोईनी सुत्र नहिं । (तथा) काती बदकी अमावस्या के रोज श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गए हैं । पम्वाके दिन श्रीगौतमस्वामीकूं केवल ग्यान उत्पन्न जया है । इसवास्ते स्मरण जाप तपस्याबेलेकी करे तो उत्तम फल प्राप्त होय ॥ अपणें घरके मंदरमें (तथा) सहरके मंदिरमें दीपक करे । बाद कुटुंब सहित भोजन करे । जगवंतके पांच कल्याणक दिनके विषे अपणें शक्तिमाफक याचककूं दान देवे । ऐसा धर्मकृत्य करणें से शिद्धि संतानादिक इस लोकमें मिले । पर लोकमें देवलोक, अंतमें मोक्षपद प्राप्त होय । धर्मसें ऐश्वर्यपणों पायके जो फेर धर्मकृत्य न करे । ऐसा प्राणी धर्मरूप मालकका द्रोहीकी क्या गती होय । कनी जला न होय । अच्छी बुद्धिको धणी निरंतर भुक्ति मुक्तिके फल देणेंवाला दान, शील, तप, ज्ञान, यह चार प्रकारको धर्म आराधन करे ॥ शक्तिमुजब दान देणा चाहिए । कारण वमे उदयकी अपेक्षा न करणी ॥ किसवास्ते मनकी इच्छा सरखी नहिं है । जो प्राणी ज्ञानको दान करे (तो) आप ज्ञानवंत होय । अन्नयदान देणें से आप जय रहित होय । अन्नको दान देणेंसें सदासुखी होय । उषधीको दान देणेंसें रोग रहित होय । पुन्यसें कीर्त्ति होय । एकली कीर्त्तिकेवास्ते जो दान देते हैं सो मूर्ख जानना चाहिए । (और कहा है) जो व्याजकेवास्ते धन देवे तो डुगणों होय । व्यापारमें चोगुणों होय । क्षेत्रमें बाणेंसें सो गुणों होय । सुपात्रकों दान देवे तो अनंतगुणों होय ॥ ( तथा ) देरासर १ प्रतिमा २ पुस्तक ३ साधू ४ साध्वी ५ श्रावक ६ श्राविका ७ यह सात क्षेत्रके विषे धन बावरे तो बहोत फल होय ॥ ( तथा ) जक्तिज्ञावसें जो देरासर करावे । वो पुरुष धन्य है । देरासरके परमाणुकी जितनी संख्या होय । उतना पल्योपमतक देवताको आयु भोग वै ॥ सोनेकी, रूपेकी, पाषाणकी, रत्नकी, मट्टीकी, ऐसी जगवंतकी प्रतिमा जो पुराव करायके प्रतिष्ठित करे । सो निश्चे तीर्थकर होय ॥ और

चढता गुणधारन करके मोक्ष जाणेवाले हैं ( इससे ) उत्तम पात्र है ॥  
 भक्ति, तथा, वंदन करने योग्य है । साधमें जाईका गुण ग्रहण करे  
 ( परंतु ) दूषण तो कभी ग्रहण न करे । सम्यक्ती उत्तम पुरुषका लक्षणतो  
 यही है ॥ कि नवमा श्रीकृष्णवासुदेवकीपरे हरकोई जीवका गुणग्रहण करे  
 परंतु ओगुण अपना मुखसे न कहै ( यथा ) एकदिन सोधर्म इंद्र अपनी  
 देवसन्नामें बैठे अवधि ग्यानके उपयोगसे श्रीकृष्णवासुदेवको गुणग्राही  
 जाणके सन्नामें प्रशंशा कीवी । कि कृष्णवासुदेव गुणग्राही है । दूषण ग्राही  
 नहीं है । तब एक देवतायें यह बातकों न मानके द्वारकानगरीमें आके  
 मरा झुवा, सडा झुवा, गंधा झुवा, कुतैकारूप बनाके राजमार्गमें पमा उस  
 वक्त उसीरस्ते कृष्ण वासुदेवकी असवारी आई । सर्वलोक निंदा करता मुह  
 आमा पद्मादेके आगे चले । जब श्रीकृष्णजीनें देखा । तब कहनें लगे । कि  
 इस कुतैकी दांतोकी बत्तीसी केसी सोजायमान बराबर हे । ऐसा कहके आगे  
 चला ( तब ) देवता परम आनंदवान होकर अपना रूप प्रगट करके कृष्ण  
 जीकों नमस्कार करके बरदिया ( इसी दृष्टांते ) उत्तम पुरुष कोईका दूषण  
 ओमके गुण ग्रहण करे ( औ ) शक्त्यनुसारे बार मासमें कोई तपस्याके उज  
 मणैमें ( तथा ) कोई पर्व कल्याणकके दिन । दोचार मोटी पूजा जिन मंदरमें  
 करावे । मोटा मंगलीक कार्यादिकमें उपद्रव मरी आदिक रोग शांतिके अर्थ  
 शांतिपूजा विधि संयुक्त गुरूके पास करावे । जिसमें सतर जेदी आदिक कित  
 नीक मोटी पूजायां रत्नसागर प्रथम जागमें लिखी हुई हे । इहां शांति  
 पूजा ( तथा ) पांच कल्याणक पूजा लिखते हैं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ शांतिपूजा विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुभ दिन शुभ मङ्गल जिन मंदरमें समोसरणपर जिन प्रति  
 मा स्थापन करावे ( आगे ) पंच परमेष्ठी पट् स्थापन करे ( तथा ) जग  
 वानके दहिणेंपासे दश दिग्याल पट् ( और ) वामपासे नवग्रह पट् स्थापन  
 करे ( पीठे ) एक मोटा, एक ठोटा, तांबे, पीतल, मट्टी आदिकका हंमा  
 ऊपर खम्भो सपेद मिट्टी पोतके चार चार केशर कुंकुमा साथिया करे ॥  
 पीठे ऊंची नीची दोय टिवची काठकी धरावे । नीची टिवचीपर मोटा हंमा  
 धरे । ऊंचीपर ठोटा हंमा धरे । ठोटा हंमाके तले एक छिद्र करे । दोनुं मट

काके नीतर साथिया करे ॥ बन्ना मटकाकी टिबचीके नीचे । चावलका सा  
थिया करके । ऊपर नालेर रुपियो थापनाको धरे ॥ दोनुं मटका ऊपर मोली  
सुत्रवटके पंचरंगी खजली । एकेक खूणें ११ इकीस पोकर । चारुं  
खुणें ८४ खजली पोके तणी बांधे ॥ नालेरके आकार मोली सुत्रको दमो  
नीचला मोटा हंमामें लटकतो रखके । ऊपरकी मोली गेटा हंमाके ठिद्रमें  
पोकर, ऊपर जो चोखुंणी तणी बांधीहे । जिसके बीचमें गांठ देवे ( पीठे )  
जो संघ संमुदायकी तरफसे शांतिपूजा होय ( जवतो ) मंदरको कलश  
लेवे ( और ) एकजनकी तरफसे होय । ( तब ) शांतिकारकके गृह  
सेती सधवखी, जिसका । माता, पिता, सा, सुसरा, चारैमाईत जीता होय  
जिस स्त्रीकुं अष्टा वस्त्र आभूषण पहरायके, कलशके मांढ कुंकु केशरको  
साथियो करके, चावल, सुपारी, पंचरत्नकी पोटली धरके । मुखपर नालेर  
ढकणें माफक लगाय कसुंवल कपडो मोली सेती बांधे । ऊपर चार साथि  
यांकर पूर्वेक्त स्त्रीके मस्तकपर रखके । गीतगान पूर्वक नानाप्रकार वाजित्रादि  
उत्तवसहित जिनमंदरमें लावे ॥ समवसरणके सन्मुख चावलांको साथियो  
करके । ऊपर कलश थापन करे ॥ ( पीठे ) प्रांच दश जणा द्रव्ये जावे  
अपना अंग शुद्ध करे ॥ गुरुकेपासे केशर मंत्रायके तिलक करे ॥ दहि  
णा हाथके मोली कांकणमोरा मंत्रायके बांधे ॥ ॐ परमेष्ठी नमस्कारं ॥  
इत्यादि स्तोत्रसें गुरु आत्मारक्षा करावे ॥ ( पीठे ) एक थालीमें १० एक  
थालीमें ९ एक थालीमें ९ नागरखेलका पान सर्व १८ लगावे (जिसपर)  
फूल, अक्षत, नेवेद्य, फल, रोक नाणो, सब पानपर बराबर धरायके तैयार  
रखे ॥ और पिण, पंचामृत, फूल, फूलमाला, अक्षत, नेवेद्य, नानाजात  
का, लीला, सूका, फल, अत्तर, गुलाबजल, केशर, कपूर, रोली, मोली, आ  
दिपूजापेको सर्व सरंजाम यथाशक्ति तैयार मंगायके रखे ( पीठे ) पूजा  
सुरू करे ॥ ॐ ॥ प्रथम स्नात्रपूजाकी थापना रखके । कुशुमांजली लेके  
स्नात्रपूजा ( तथा ) अष्टप्रदारी पूजा करावे ( पीठे ) पंचपरमेष्ठी पढा  
ऊपर चावलांका तीन ढिगला करके । ग्यान, दर्शन, चारित्र, की थापना  
करे (ऊपर) वासक्षेप करके, चढापे सूधा तीन पान चढावे । उसके आगे दो  
चावलका ढिगला करके, चैत्यदेवता, क्षेत्रदेवताकी, थापना करावे, पान दोय

चढावे ॥ ऊपर कसुंबल कपनो बांधे (पीठे) दशदिग्पालके पट्टेऊपर जलका ठांटा देके वासहेप करे ॥ एकेक दिग्पालके टीकी देके फूल चढायके । एकेक चढापे सुधो नागर बेलको पान चढावे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दश दिग्पाल पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ॐ इंद्राय । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । इह अस्मिन् जंबुद्वीपे । दक्षिण ऋतार्धक्षेत्रे । अमुकनगरे । अमुकजिनचैत्ये । शांतिपूजा म होचवे । आगच्छ १ । वलिं गृहाण १ । उदयमध्युदयं कुरु १ स्वाहा ॥ ❀ ॥ ॐ इंद्रायनमः ॥ इति इंद्रआक्रान पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ॐ ॥  
पूर्वदिशे जलचंदनादि अष्ट द्रव्य चढावे ॥ ❀ ॥ १ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ अग्नये । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंबुद्वीपे । दक्षिण ऋतार्धक्षेत्रे । अमुक नगरे । अमुक चैत्ये । शांति पूजा महो चवे । आगच्छ १ । वलिगृहाण १ । उदय मध्युदयंकुरु १ स्वाहाः ॥ ॐ अग्नयेनमः ॥ १ ॥ ॐ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ यमदिग्पाल पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ यमाय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन् जंबु० । दक्षिण अमुक० । अमु० । शांतिपूजा० । आ० । वलिगृहाण १ । उदय म० । स्वाहा ॥ ❀ ॥ ॐ यमायनमः ॥ ❀ ॥ दक्षिण दिशकीतरफ यमदिग्पालकी पूजा करै ॥ ३ ॥ ॐ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ॐ ॥ अथ नैऋत दिग्पालपूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नैऋताय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन् जंबुद्वीपे० । शांतिपूजा० । आगच्छ १ । वलि० । उदय० कुरु १ स्वाहाः ॥ ॐ नैऋतायनमः ॥ नैऋत कूणकीतरफ अष्ट द्रव्यचढावे ॥ इतिः ॥ ४ ॥ ॐ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वरुणदिग्पाल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ वरुणाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे० । शांति पूजा० । आ० । वलि० । उदयम० । स्वाहाः ॥ ॐ वरुणायनमः ॥ पश्चिम दिशकीतरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ॐ ॥

## ॥ॐ॥ अथ वायव दिग्पाल पूजा ॥ॐ॥

॥ॐ॥ ॐ वायवे । सायु० सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे० । शांति  
पूजा० । आ० । बलिगृहाण १ । उदयम० । स्वाहाः ॥ ॐ वायवे नमः ॥  
वायवकूणकीतरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ इति ॥ ॐ ॥

## ॥ॐ॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥ॐ॥

॥ॐ॥ ॐ कुबेराय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे । द  
क्षिणचर० । शांति० । आ० । बलि० । उदय मज्जुदयं कुरु १ स्वाहाः ॥  
ॐ कुबेरायनमः ॥ उत्तरदिशितरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ॐ ॥

## ॥ॐ॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥ॐ॥

॥ॐ॥ ॐ ईशानाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् । दक्षिण०  
अमुक० । अमुक चैत्ये । शांतिपूजा० । आगच्छ १ । बलि० १ । उदय म  
ज्जुदयं कुरु १ स्वाहाः ॥ ॐ ईशानाय नमः ॥ ईशानकूणकीतरफ जल चंद  
नादि सर्व द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ॐ ॥

## ॥ॐ॥ अथ ब्रह्मदिग्पालपूजा ॥ॐ॥

॥ॐ॥ ॐ ब्रह्मणे । सायुधाय । सवा० । सप० । अस्मिन् । दक्षिणच  
र० । शांति० आ० १ । बलि० उदय मज्जु० स्वाहाः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥  
उर्ध्वदिश तरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ ॐ ॥

## ॥ॐ॥ अथ नागदिग्पालपूजा ॥ॐ॥

॥ॐ॥ ॐ नागाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबु० । १ ।  
तिपूजा० । आगच्छ १ । बलि० । स्वाहाः ॥ ॐ नागायनमः ॥ अर्धदिशि  
अष्टद्रव्य चढावे ॥ १० ॥ ऊपर फसुंवल वस्त्र मोलीसैं बांधे ( पीठि ) ॐ  
दशदिग्पालायनमः ॥ ऐसा कहके, यथाशक्ति रोकमी द्रव्य सज्जत नागरखेल  
का पान आदि सर्व द्रव्य चढावे । पढाके, दश दिशकी तरफ १० दीपक  
फूलवत्ती खर्मी धरके जगावे । ( या ) एक दीपक आगे जगा कर रखे ॥  
॥ ॐ ॥ इति दशदिग्पाल पूजनविधिः ॥ ॐ ॥

## ॥ॐ॥ अथ नवग्रह पूजन विधिः ॥ॐ॥

॥ॐ॥ ॐ नमो आदित्याय । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय ।



चढावे ॥ ऊपर कसुंवल कपमो बांधे ( पीठे ) दशदिग्पालके पटेऊपर जलका ठांटा देके वासक्षेप करे ॥ एकेक दिग्पालके टीकी देके फूल चढायके । एकेक चढापे सूधो नागर बेलको पान चढावे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दश दिग्पाल पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ॐ इंद्राय । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । इह अस्मिन् जंबुद्वीपे । दक्षिण भरतार्धक्षेत्रे । अमुकनगरे । अमुकजिनचैत्ये । शांतिपूजा म होछवे । आगच्छ १ । बलिं गृहाण १ । उदयमऋयुदयं कुरु १ स्वाहा ॥ ❀ ॥

ॐ इंद्रायनमः ॥ इति इंद्रआक्रान पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ॐ ॥

पूर्वदिशे जलचंदनादि अष्ट द्रव्य चढावे ॥ ❀ ॥ १ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ अग्नये । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंबुद्वीपे । दक्षिण भरतार्धक्षेत्रे । अमुक नगरे । अमुक चैत्ये । शांति पूजा महो छवे । आगच्छ १ । बलिगृहाण १ । उदय मऋयुदयंकुरु १ स्वाहाः ॥

ॐ अग्नयेनमः ॥ १ ॥ ॐ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ यमदिग्पाल पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ यमाय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन् जंबु० । दक्षिण अमुक० । अमु० । शांतिपूजा० । आ० । बलिगृहाण १ । उदय म० । स्वाहा ॥ ❀ ॥ ॐ यमायनमः ॥ ❀ ॥ दक्षिण दिशकीतरफ यमदिग्पालकी पूजा करै ॥ ३ ॥ ॐ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ॐ ॥ अथ नैऋत दिग्पालपूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नैऋताय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन् जंबुद्वीपे० । शांतिपूजा० । आगच्छ १ । बलि० । उदय० कुरु १ स्वाहाः ॥ ॐ नैऋतायनमः ॥ नैऋत कूणकीतरफ अष्ट द्रव्यचढावे ॥ इतिः ॥ ४ ॥ ॐ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वरुणदिग्पाल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ वरुणाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे० । शांति पूजा० । आ० । बलि० । उदयम० । स्वाहाः ॥ ॐ वरुणायनमः ॥ पश्चिम दिशकीतरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ॐ ॥

### ॥॥ अथ वायव दिग्पाल पूजा ॥॥

॥॥ ॐ वायवे । सायु० सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे । शान्ति  
पूजा० । आ० । बलिगृहाण १ । उदयम० । स्वाहाः ॥ ॐ वायवे नमः ॥  
वायवकूणकीतरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ इति ॥ ॥ ॥

### ॥॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥॥

॥॥ ॐ कुबेराय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे । द  
क्षिणचर० । शान्ति० । आ० । बलि० । उदय मन्त्र्युदयं कुरु १ स्वाहाः ॥  
ॐ कुबेराय नमः ॥ उत्तरदिशितरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ॥ ॥

### ॥॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥॥

॥॥ ॐ ईशानाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् । दक्षिण  
अमुक० । अमुक चैत्ये । शान्तिपूजा० । आगच्छ १ । बलि० १ । उदय म  
न्त्र्युदयं कुरु १ स्वाहाः ॥ ॐ ईशानाय नमः ॥ ईशानकूणकीतरफ जल चंद  
नादि शर्व द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ॥ ॥

### ॥॥ अथ ब्रह्मदिग्पालपूजा ॥॥

॥॥ ॐ ब्रह्मणे । सायुधाय । सवा० । सप० । अस्मिन् । दक्षिण  
च० । शान्ति० आ० १ । बलि० उदय मन्त्र्यु० स्वाहाः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥  
उर्ध्वदिश तरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ ॥ ॥

### ॥॥ अथ नागदिग्पालपूजा ॥॥

॥॥ ॐ नागाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबु० । १ ।  
तिपूजा० । आगच्छ १ । बलि० । स्वाहाः ॥ ॐ नागाय नमः ॥ अधोदिशि  
अष्टद्रव्य चढावे ॥ १० ॥ ऊपर कसुंबल वस्त्र मोलीसैं बांधे ( पीठे ) ॐ  
दशदिग्पालाय नमः ॥ ऐसा कहके, यथाशक्ति रोकनी द्रव्य सहित नागरवेल  
का पान आदि सर्व द्रव्य चढावे । पढाके, दश दिशकी तरफ १० दीपक  
फूलवत्ती खर्ची धरके जगावे । ( वा ) एक दीपक आगे जगा कर रखे ॥  
॥ ११ ॥ इति दशदिग्पाल पूजनविधिः ॥ ॥ ॥

### ॥॥ अथ नवग्रह पूजन विधिः ॥॥

॥॥ ॐ नमो आदित्याय । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय ।

अस्मिन् जंबुद्वीपे । दक्षिण जरतक्षेत्रे । अमुक नगरे । अमुक चैत्ये ।  
 शांतिपूजा महोत्सवे आगच्छ १ । बलिपूजा गृहाण १ । नदय मज्ज्युदयं कुरु १  
 अत्रपीठेतिष्ठ १ । स्वाहाः ॥ नैः सूर्यायनमः ॥ ऐसा कहके जलचंदनादि अष्ट  
 द्रव्य चढावे ॥ इति सूर्यपूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चंद्रपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैः चंद्राय । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । अस्मिन्  
 जंबु ० । दक्षिण ० । शांतिपूजा ० आ ० १ । बलि ० । अत्रपीठे तिष्ठ १ । नद  
 यमज्ज्यु ० स्वाहाः ॥ नैः चंद्रायनमः ॥ ऐसा कहके जलचंदनादि अष्टद्रव्यसैं  
 चंद्रमाकी पूजा करे ॥ ❀ ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मंगलपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैः नमो ज्योमाय । सायु ० । सवा ० । सप ० । अस्मिन् जं ० ।  
 दक्षि ० । अमु ० । शांतिपूजा महोत्सवे । आगच्छ १ । बलि ० १ । अत्रपीठे  
 १ । नदय ० । स्वाहाः ॥ नैः ज्योमायनमः ॥ मंगलकी पूजा करे ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बुधपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैः नमो बुधाय । सायु ० । सवा ० । सप ० । अस्मिन् जं ० । दक्षि  
 ण ० । अमुक ० । शांतिपूजा महोत्सवे । आगच्छ १ । बलि ० १ । अत्रपीठे तिष्ठ  
 १ । नदय ० । स्वाहाः ॥ नैः बुधायनमः ॥ ४ ॥ ऐसा कहके बुधकी पूजा करे ॥

॥ ❀ ॥ अथ बृहस्पति पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैः नमो बृहस्पतये । सायु ० । सवा ० । सप ० । अस्मिन् ० ।  
 शांति ० आ ० १ । बलि ० १ । अत्रपीठे ० १ । नदय ० स्वाहाः ॥ नैः बृहस्पत  
 येनमः ॥ ऐसा कहके बृहस्पतीकी पूजा करे ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ शुक्रपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैः नमो शुक्राय । सायु ० । सवा ० । सप ० । अ ० दक्षिण ० अमु ०  
 शांतिपूजा ० । आ ० । बलि ० १ । अत्रपीठे ० । नदय मज्ज्युदयं कुरु १ । स्वाहा  
 ॥ नैः शुक्रायनमः ॥ ६ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ शनिपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैः नमो शनिश्चराय । सायु ० । सवा ० । सपरि ० । अस्मिन् ० ।

दक्षिण अमुण शान्तिण आ १ वलिण अत्रपीठे १ उदय मन्त्र्युदय  
कुरु १ स्वाहा ॥ ॐ शनिश्चरायनमः ॥ इति ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ राज्ञ पूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ॐ नमो राहवे सायुण सवा १ सपरि १ अस्मिन् १ दक्षिण  
अमुक १ शान्तिपूजा १ आ १ १ वलि १ १ अत्रपीठे १ १ उदय १  
स्वाहाः ॥ ॐ राहवेनमः ॥ ॐ ॥ इति ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ केतूपूजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ नमो केतवे । सायुण सवा १ सप १ अस्मिन् १ दक्षिण । अ १  
शान्ति १ आगच्छ १ वलि १ १ अत्रपीठे १ उदय १ स्वाहा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ इसीतरै कमसें नगवानके वामपासे पट्टापर नवग्रहकी स्थाप  
ना करे ॥ ऊपर कसुंवल वस्त्र मोलीतें बांधे (पीठे) नागरवेल पान आदि  
सर्व द्रव्य ( तथा ) शक्ति मुजव रोकन नाणो ऊपर नेट करे (ऐसा कहे)  
ॐ नवग्रहायनमः ॥ चारुं तरफ नवदीपक ( वा ) एक दीपक धरे ॥ ॐ ॥  
इति नवग्रह पूजन थापन विधि ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ इसीतरै, अन्य मंगल प्रतिष्ठादिकमें ( जब ) दशदिग्पाल,  
नवग्रहकी थापना पूजा करणी होय ( तो ) शान्तिपूजाके ठिकाणें, जो  
पूजादि उठव होय । उसीका नाम लेकर पूजन थापन करावे ॥ विशेष विधि  
जो होय । सो गुरुके मुखसें समझके करावे ॥ (पीठे) शान्तिकारकके गृहसें  
शुद्ध जलसें सधव स्त्रीके हाथसें किया जुवा पांचुं रंगके धानका बाकुला  
( तथा पांचुं रंगकी खजली, गुलंगुला, खीर, दहीको करवो; मालपूवा, पांच  
रंगका लाडू, (इत्यादि) उत्तम १ खाद्यवस्तु मंगाके । एक परातमे सब द्रव्य  
जेला करै (और) घृत, खान्म, अत्तर, गुलाबजल, पांच वर्णा फूल, आदि सुगंधी  
द्रव्य मिट्टाके बलबाकुल तैयार करै ॥ ( पीठे ) गुरु, वासुदेवकी मुठी तीन  
वेर मंत्रसें मंत्रके, तीनवेर बलबाकुल ऊपर वासुदेव करै ॥ ( वासुदेव मंत्र )

॥ ॐ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं सर्वोपद्रवं विवस्य रक्त १ स्वाहा ॥ ॐ एमो अरिहं  
ताणं । ॐ एमो सिद्धाणं । ॐ एमो आयरियाणं । ॐ एमो उवप्पायाणं । ॐ  
एमो लोए सवसाज्जणं । ॐ एमो आगास गामीणं । ॐ एमो चारण  
लक्ष्मीणं । जे इमे किंघर । किंपुरस । महोरग । गरुड । गंधर्व । जक्ख ।

रक्खस । पिशाच । भूच । माइण पन्नइउ । जिणघर निवासिणो । सन्निहि  
 याय । तेसवे विलेवण धूव पुप्फ फल वइवसणाहिं । वलिपमिहंता । तुठिकरा  
 जवंतु । पुठिकरा, संतिकराजवंतु । सव्वं जणं कुर्वंतु । सव्वजिणाणं संहणप्रज्ञा  
 वउ । पसन्नज्जावतणे । सव्वत्थ ररकंतु कुर्वंतु । सव्व डुरियाणी नासंतु । सव्वा  
 सिव सुवसमंतु । संति तुठि पुठि सिव सत्थयण कारिणो जवंतुस्वाहा ॥  
 इस मंत्रसें तीनवेर वासक्षेप करके बलवाकुलको शुद्ध करै । (पीठे) आधा बलवा  
 कुल, दूसरी परातमें विसर्जनके निमित्त पट्टेपर वस्त्रसें ढांकके रख देवे । आ  
 धाबलवाकुल लेके घरके ( तथा ) चैत्यकेऊपर ११ स्त्रात्रिया शुद्ध होके  
 जावे । ( जिसमें ) प्रथम विनयवंत श्रावक चोटीका केश खुला करके बल  
 वाकुल दोनों हाथोंमें लेके, पूर्व दिशकी तरफ खमा रहै १॥ दूसरो केशरकी  
 कठोरी २। तीशरो फूलकी चंगेरी ३। चोथो आरीसो ४। पांचमो धूपदानो  
 ५। षष्ठो दीपक ६। सातमोचामर ७। आठमो घंटा ८। नवमो जलको कल  
 श ९। दशमो बलिवाकुलकीथाली १०। इग्यारमो मंगल वाजित्र ११। इसी  
 तरैसें सब स्त्रात्रिया एकेक दिशतरफ खमार है । ( जब ) शुद्ध हरफ उच्चारण  
 करनेवाला पंक्ति गुरु, जो दिग्पालकी पूजा बोलचूके ( तब ) क्रमसें जल  
 बाला, जल, केशर, फूल, बलवाकुल चढावे । चामरकरे । काच देखावे । वा  
 जित्र बजावे । इत्यादि ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ दशदिग्पाल आवाहन मंत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऐरावतः समारूढः । शक्रःपूर्वदिशिस्थितः । संघस्य शांतयेसोस्तु  
 बलिपूजां प्रयच्छतु ॥ १ ॥ ऐसा कहके पूर्वदिशकीतरफ जलचंदनादि बलवा  
 कुल चढावे ॥ १ ॥ ( अश्विक्वणके सन्मुख ) ॥ सदाबन्धि दिशोनेता । पाव  
 को मेषवाहनः । संघस्य शांतिये सोस्तु । बलिपूजां प्रयच्छतु ॥ २ ॥ ऐसा कह  
 के बलवाकुल चढावे ॥ ( दक्षिण दिशकीतरफ ) दक्षिणस्यां दिशःस्वामी ।  
 यमोमहिषवाहनः संघस्य ० । बलि ० ॥ ३ ॥ बलवाकुल चढावे । वाजित्रव  
 जावे ॥ ४ ॥ ( नैऋत कूणकीतरफ ) ॥ यमापरांतरालोको । नैऋतः शिववा  
 हनः । संघस्य ० । बलि ० ॥ ४ ॥ ( अथ पश्चिमदिशि ) ॥ यः प्रतीची दि  
 शोनाथः । वरुणो मकरस्थितः । संघस्य ० । बलि ० ॥ ५ ॥ ( अथ वायवकूण )  
 हरिणो वाहनयस्य । वायव्याधिपतिर्मस्तु । संघस्य ० । बलि ० ॥ ६ ॥ (अथ

उत्तरदिशि ) निधान नवकारूढ । उत्तरस्यां दिशिप्रभुः । संवस्य० बलि० ॥  
 ॥ ७ ॥ ( अथ ईशानकूण ) सितेवृषेधिरूढश्च । ईशानां च दिसोविभुः । सं  
 वस्य० । बलि० ॥ ८ ॥ ( अथ अधोदिशी ) ॥ पातालाधिपतियोस्तु । सर्व  
 दा पद्मवाहनः । संवस्य० । बलि० ॥ ९ ॥ ( अथ ऊर्ध्वदिशि ) ॥ ब्रह्मलो  
 क विजोयस्तु । राजहंस समाश्रितः । संवस्य० । बलि० ॥ १० ॥ ऐसा  
 कहके, ऊर्ध्वदिशिकों जलचंदनादि बलि चढावै ॥ ॥ ॥

इति दशदिग्पाल आधान बलवाकुल देनेकी विधिः ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ( पीठे ) कलशके भीतर श्रीशांतिनाथ स्वामीकी प्रतिमा निश्चल  
 पणें रखे । पंचरत्नकी पोछलीरखे । केशर पुष्पादिकसँ कलशकी पूजा  
 करे । गुरु वासङ्केप करे । तिसकेवाद कलशके आगे । कुशमांजली १ । लवण  
 उतारण २ । पहरावणी ३ । मंगलदीप ४ । करे । मंगलदीपकमें मोलीकी बट्टी  
 धृत ऐसा रखे । कि । शांतिपूजा पूरण होय उहांतक तो अवश्य अखंभ रहे  
 ( पीठे ) चतुर्विध संघसहृत् गुरु, इरियावही पम्किमें । चारनोकारको  
 कावसग्न करके, लोगस्स कहे ॥ बैठके, दहिणो गोमो धरतीपर रखे । मा  
 वोगोमो नम्रीज्जुत करके, चैत्यवंदन करे । नमोत्थुणं० कहके अरिहंत चेइ  
 याणं० वंदणवत्तिया० अनत्थु० । एक नवकारको कावसग्न करे । नमो ऊँत्  
 सिद्धा० कहके । युईकी गाथा कहे ( यथा ) ॥ यदंजि नमना देव । देहिनः  
 संतिसुरियता । तस्मै नमोस्तु वीराय । सर्वविघ्न विघातिने ॥ १ ॥ लोगस्स०  
 वंदन० अनत्थु० कहके १ नवकार० ॥ दूजीयुई कहे ॥ सुरपतिनत चरण  
 युगा । ज्ञानेयजिनादि जिनपती नौमी । यच्चन पालनपराः । जलांजलिं  
 ददतु दुःखेभ्यः ॥ २ ॥ इहां पुक्खरवरदी० । वंदनवत्तिया० कहके कावसग्न  
 करे ॥ तीसरी स्तुति कहे ॥ वदंति वंदारु गणाग्रतो जिनाः । सदर्थतो यद्रचं  
 यंति सूत्रतः । गणाधिपास्तीर्थं समर्थं नक्षणे । तदंगिना मस्तु मत्तं नमुक्तये  
 ॥ ३ ॥ इहां । सिद्धाणं बुद्धाणं० अनत्थु० कहके १ नवकारको कावसग्न  
 करे ॥ चोथी स्तुती कहे ( यथा ) शक्रः सुरा सुरवरैः सहदेवताभिः । सर्वज्ञ  
 शासन सुखाय समुद्यताभिः । श्रीवर्धमान जिनदत्त मतिप्रवृत्तान् । नव्यान्  
 जनाः नवतु नित्य ममंगलेभ्यः ॥ ४ ॥ ( पीठे ) बैठके, नमोत्थुणं० कहके  
 खमा ऊवे ॥ श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करेमि कान्तसग्नं ॥ वंदन

वत्तिया ० । अन्नत्थू ० कहके १ नव ० ॥ रोग शोभादिनिर्दोषै । रंजिताय जि  
तारये । नमः श्रीशान्तये तस्मै । विहितानत शान्तये ॥ ५ ॥ ( ततः ) श्रीशान्ति  
देवता निमत्तं करेमि ० । अन्नत्थू ० कहके का ० ॥ श्रीशान्तिजिन भक्ताय । न  
व्याय सुखसंपदं । श्रीशान्तिदेवता देया । दशांति मपनीयते ॥ ६ ॥ ( ततः )  
श्रीश्रुतदेवता निमत्तं ० ॥ सुवर्णशालनी देयात् द्वादशांगी जिनोद्भवा । श्रुतदेवी  
सदामह्य । मशेष श्रुतसंपदं ॥ ७ ॥ ( ततः ) श्रीभुवनदेवता निमत्तं ० ॥ चतुर्वर्णाय  
संघाय । देवीभुवन वासिनी । निहत्य डुरितान्येषा । करोतु सुखमकृतं ॥ ८ ॥  
( ततः श्रीक्षेत्रदेवतानिमत्तं क ० ) यासां क्षेत्रगतास्सन्ति । साधवः श्रावकादयः ।  
जिनाभ्यां साधयं तस्या । रक्षंतु क्षेत्र देवता ॥ ९ ॥ ( ततः श्रीअंबिका देवता  
निमत्तं क ० ) अंबानिहित भिंवाभे । सिद्धबुद्ध समन्विता । सिते सिंहे स्थि  
तागौरी । वितनोतु समीहितं ॥ १० ॥ ( ततः श्रीपद्मावती देवता निमत्तं क ० )  
धराधिपतिपत्नीया । देवी पद्मावती सदा । कुद्रो पद्मवतःसामां । पातुफुल्लत्फ  
णावली ॥ ११ ॥ ( ततः श्रीचक्रेश्वरी देवता निमत्तं क ० ) । चंचश्चक्रधरांचा  
रु । प्रवालदलसन्निभा । चिरंचक्रेश्वरीदेवी । नंदता निवन्नाचमं ॥ १२ ॥  
( ततः श्रीअञ्जना देवता निमत्तं ० ) खड्गखेटक कोदंरु । बाणपाणिस्तडित  
बुद्धिः । तुरंग गमना ज्ञता । कल्याणानि करोतुमे ॥ १३ ॥ ( ततः श्रीकुबेरा  
देवतानिमत्तं ० ) मथुरापुरी सुपार्श्व । श्रीपार्श्व स्तूप रक्षिका । श्रीकुबेरा नग  
रारूढा । सुतांकावतुवोन्नयात् ॥ १४ ॥ ( ततः श्रीब्रह्मदेवता निमत्तं ० ) ब्रह्म  
शांति समांपाया । दपाया द्वीरसेवकः । श्रीमत्सत्य पुरेसत्या । येनकीर्तिः कृता  
निजः ॥ १५ ॥ ( ततः श्रीगोत्र देवता नि ० ) यागोत्रं पालयत्येव । सकला  
पायतःसदा । श्रीगोत्रदेवतारक्षा । शंकरोतु नतां गिरां ॥ १६ ॥ ( ततः श्री  
शक्रादि समस्त देवता नि ० ) श्रीशक्रप्रमुखायक्षा । जिनशासनसंस्थिताः ।  
देवादेव्यस्तदन्येपि । संघरक्षंस्व पायतः ॥ १७ ॥ ( ततः श्रीसिद्धायिका श्री  
शासन देवता नि ० ) अन्नत्थू ० चारलोगस्सकोका ० स्तुतिं कहे । श्रीमद्भिमान  
मारूढा । यक्ष मातंग सेविता । सामां सिद्धायिका पातु । चक्रेचापेषु धारणी  
॥ १८ ॥ लोहस्स ० । कहके बैठे । चैत्यवन्दन ० । नमोत्थुणं ० । जयवी  
ररायपर्यंत कहै ॥ १९ ॥ इसी तरे १८ स्तुतीसैं देवतांदै ॥ ( पीठे ) सुंदर अंगो  
पांगवाले । सुशीलस्त्री पुत्रादिक सहित । विवेक गुणधारक । आठ स्नात्रिया मुख

कोश बांधके, तीन तीन नवकार गुणें (जिसमें) दो स्नात्रिया दो नालीवाला कलश हाथमें लेके मटकाके दोनुं तरफ खमा रहे ॥ एक स्नात्रियो धूप खेतो रहे ॥ १ स्नात्रियो फूल, चंदन, वासक्षेप, चढातो रहै ॥ दो स्नात्रिया लोटामें जल नरके दोनुं तरफ धारा देनैवाला कलशानें पूरता रहै । दोजणा दोनुं तरफ चामर ढालता रहै ॥ ( प्रथम ) गुरू आदि, सकलसंघ सात सात नवकार गुणें ॥ स्नात्रिया एकेक नवकार गुणके एकेक धारा देवे । ऐसैं सात धारा दे चूके ( तब ) गुरू, मधुरस्वरें स्पष्ट अक्षरोंसैं । नमो ह्रन् सिद्धाचार्यो कहंके ॥ अजितशांति प्रमुख साते स्मरण गुणें । ( पीठे ) नक्तामर, बन्मीशांति, ठोटी शांति, गुणें ॥ ( तथा ) सकलसंघमें जिसकों साते स्मरण शांति शुद्ध आती होय । जब तो गुरूकेसाथे, अपने मनमें साते स्मरण शांतिगुणें ( ओर ) नहि आवे सो सर्वसंघ नवकार मंत्र गुणता रहै ॥ साते स्मरण(तथा)शांति गुणें जहांतक अखंम ऊपरले ठोटे कलशमें धारा देता रहै । ठीककोई न करै । कोई आपसमें अन्य संसारी कथा न करै ॥ साते स्मरणादि संपूर्ण सर्व गुणचूके ( पीठे ) तीन तीन नवकार गुणके कलश धरै ( पीठे ) नीचेका कलशमेंसैं । जिन प्रतिमाकों निकालके अन्तीतरे अंग लूणा करके केशर पुष्पादिकसैं पूजा करै ॥ जगवानकी अन्ती, अंगीरचना करावे । नानाप्रकारका नैवेद्यफल चढाके । आरती उतारै । मंगलदीप करे ॥ पीठे शांतिजल सर्वसंघ लगावे । घरमें लेजाके ठांटे । शांतिपूजाकी मोली गुरूकेपास लेके राखनी बांधे ॥ ( इससे ) संपूर्ण संघमें नगरमें, देशमें, मरी आदिक सर्व रोग दोष दूर होके शांति होय । अनेक प्रकारसैं रुद्धी वृद्धी सुख शौभाग्यकों प्राप्त होय ॥ ( पीठे ) जो आधा बलिवाकूल परातमें रखा ऊवा है । सो लेके पूर्ववत् स्नात्रिया गुरूकेसाथ मंदरऊपर जाके दश दिग्पालकों विसर्जन करावै ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ दशदिग्पाल विसर्जन करनेकी विधि पूर्ववत् जाणनी इतना विशेष है ( कि ) आगच्छ १ के ठिकाणें गच्छ १ कहै ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( यथा ) ॐ नमो इंद्राय । पूर्वदिग् अधिष्टाय काय । ऐरावण वाहनाय । सहस्र नेत्राय । वज्रायुधाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंबुद्वीपे अमुक नगरे । अमुक मंदरे । अमुक महोत्तरे । सर्वोपद्रवावलिरक्त १ गच्छ



गच्छ स्वाहा ॥ पूर्वदिशकीतरफ ॥ ॐ इंद्राय नमः ॥ १ ॥ ( अग्नि कूणे ) ॥ ॐ  
 नमो अग्निमूर्तये । शक्तिहस्ताय सायु ० । सवा ० । सप ० । अस्मि ० । अमु ० ।  
 सर्वोपद्रवावलिरक्त १ । गच्छ १ स्वाहाः ॥ इति ॥ ( दक्षिणदिशे ) ॥ ॐ नमो  
 यमाय । दक्षिण दिगधिष्ठायकाय । महिषवाहनाय । दंभ आयुधाय । रुष्ण  
 मूर्तये । सायु ० । सप ० । अस्मिन् ० । सर्वोपद्रवावलिरक्त १ । गच्छ १ स्वाहाः  
 ॥ ३ ॥ इति ॥ ( नेत्रतकूणे ) ॥ ॐ नमो नैऋताय । खरगहस्ताय । सायु ०  
 सवाहनाय । सप ० । अस्मि ० । अमु ० । सर्वोपद्रवावलिरक्त १ । गच्छ १ स्वा  
 हाः ॥ ४ ॥ इति ॥ ( पश्चिमदिशे ) ॥ ॐ नमो वरुणाय । पश्चिमदिगधिष्ठा  
 यकाय । मकरवाहनाय । सायु ० । सप ० । अस्मिन् ० । अमु ० । सर्वोपद्रवा ० ।  
 गच्छ १ स्वाहाः ॥ ५ ॥ ( वायवकूणे ) ॐ नमो वायवे । वायवाधिपतये ।  
 ध्वजहस्ताय । हरिणवाहनाय । सा ० । सप ० । अस्मिन् ० । अमु ० । सर्वोप  
 द्रवा ० । गच्छ १ स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥ ( उत्तरदिशे ) ॐ नमो धनदाय ।  
 उत्तरदिगधिष्ठायकाय । नरवाहनाय । गदाहस्ताय । सप ० । अस्मिन् ० ।  
 अमु ० । सर्वोपद्रवा ० । गच्छ १ स्वाहाः ॥ ७ ॥ इति ॥ ( ईशान कूणे )  
 ॥ ॐ नमो ईशानाय । त्रिशूल हस्ताय । ईशानाधिपतये । वृषभवाहनाय । स  
 प ० । अस्मि ० । अमु ० । सर्वोपद्रवावलिरक्त १ । गच्छ १ स्वाहाः ॥ ७ ॥  
 इति ॥ ( ऊर्ध्वलोके ) ॥ ॐ नमो ब्रह्मणे । राजहंसवाहनाय । ऊर्ध्वलोकाधि  
 ष्ठायकाय । सायु ० । सप ० । अस्मि ० । अमु ० । सर्वोपद्रवा ० । गच्छ १ स्वा  
 हाः ॥ ८ ॥ इति ॥ ( अधोलोके ) ॥ ॐ नमो नागाय । पातालनिवासाय ।  
 पद्मवाहनाय । सायु ० । सप ० । अस्मि ० । अमु ० । सर्वोपद्रवावलिरक्त १ । गच्छ १  
 स्वाहा ॥ १० ॥ इक्षीतरैः क्रमसं दशदिग्पाल विसर्जन करैः ॥ ॥ ( पीठे )  
 नीचे आकर दिग्पाल नवग्रहादि सर्व देवताकों श्लोक पठके विसर्जन करैः ॥  
 ( यथा ) शक्राद्या लोकपाला दिशि विदिशि गता, शुद्ध सधर्मसक्ताः ।  
 आयातास्त्रात्रकाले कलुषहतिरुते तीर्थनाथस्य भक्त्या । न्यस्तारोषा पदाद्या  
 विहित शिवसुखाः स्वास्पदं सांप्रतंते । स्त्रात्रे पूजामवाप्य स्वमतिरुत मुदो  
 यांतु कल्याणभाजः ॥ १ ॥ आग्याहीनं क्रियाहीनं । मंत्रहीनंचयत्कृतं । त  
 त्सर्वं क्षम्यतु देवः । प्रसीद परमेश्वरः ॥ १ ॥ आक्रानं नैव जानामि । नैव जाना  
 मि पूजनं ॥ विसर्जनं नैव जानामि । त्वमेव शरणं ममः ॥ ३ ॥ ( पीठे ) यथा

शक्ति ग्यानपूजा, गुरुपूजा, साहमीवात्सल्य करे ॥ जैनयाचकारने दानदेवै ॥  
इति शांतिकपोष्टिक पूजा विधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथ पाठक बालचंदजीकृत पंच कल्याणक पूजा ॥❀॥

॥ ❀ ॥ तत्र प्रथम च्यवन कल्याणिक पूजा ॥❀॥

॥ ( दूहा ) ॥ ज्योतिरूप जगदीशनुं, अद्भुत रूप अनूप ॥ प्रवचन  
प्रभुता प्रगट पण, जय जय ज्योति सरूप ॥ १ ॥ ❀ ॥ चौथीसे जिनवर  
नमी, पंच कल्याणक रूप ॥ शासन नायक वरणवुं, दर्शन ज्ञान सरूप  
॥ २ ॥ ❀ ॥ कल्याणक उठव करे, इंद्रादिक जे देव ॥ ते नावे नविजन  
करे, श्रीजिनवरनी सेव ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ राग सरपदो ॥ जोति सकल जगदीशनी ॥ हां रे जगदीशनी ए ॥  
चार निक्षेप प्रमाण ॥ नाम जिनादिक जिन कहा, आगममांहि प्रधान ॥ १ ॥

॥ गाथा ॥ नाम जिणा जिण नामा । ठवण जिणा उ जिणंद पुंमिमां ॥  
दद्यजिणा जिण जीवा । नाव जिणा समवसरणत्था ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ दाल तेहीज ॥ विन कारण कारज नही, हां रे का० ए ॥ ए सव  
लोक प्रसिद्ध ॥ नाव निक्षेप प्रधानता । कारज रूपें सिद्ध ॥ १ ॥ विण आ  
कारें द्रव्यनो ॥ हां ॥ द्र० ए ॥ न झुवे आपन सिद्ध ॥ नामविना आकारनो,  
प्रगट पणे नवि बुद्ध ॥ २ ॥ नामादिक कारण सही ॥ हां ॥ का० ए ॥ इन  
विन नाव न होय ॥ नाव विगुहें जिनतणी । पूज करो सज्ज कोय ॥ ३ ॥  
व्यवहारें निश्चय लहे ॥ हां ॥ नि० ए ॥ कारण कारज होय ॥ पावम  
शाला कम करी, सौध चढे सज्ज कोय ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ( दूहा ) ॥ ज्ञानकला कलितातमा । लोकालोक प्रकाश ॥ व्यापकनावें  
थिर रह्यो । शुद्ध विकास विलास ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ राग सारंग ॥ हां होरे देवा, जोति सकल जिन राजनी । सज्ज लोका  
लोक प्रकाश ए ॥ हां होरे देवा, राजत श्रीजिनराजजी । वाणी प्रवचन शुद्ध  
वास ए ॥ १ ॥ हां होरे देवा, मांत नमुं नित्य शारदा । गुरुपंच कल्याणक  
सार ए ॥ हां होरे देवा, तीर्थकरना वरणवुं । गुण शास्त्र परंपर धार ए ॥ २ ॥

॥ ( दूहा ) ॥ शासन नायक जग धणी । त्रिभुवन पति परमेस ॥ पर  
उपगारी प्रभु तणा, गुण गावत सज्ज वेस ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ हांहोरे देवा, वीश आनक करि सेवना, बांध्युं जिन  
नाम प्रधान ए ॥ हांहो ० दिव्य अमर सुख अनुभवे । प्राये प्रभु पुण्य प्रमाण  
ए ॥ १ ॥ हांहो ० ॥ निरमल तर वर ज्ञानना । धारक कारक शुभयोग ए ॥  
हांहो ० ॥ शब्द वरण रस गंधना । शुभ फरस तणा वर जोग ए ॥ २ ॥  
हांहो ० ॥ शाश्वत सिद्धायण तणा । नित उत्सव करत सुरंग ए ॥ हांहो ० ॥  
बालचंद पाठक कहे । नित मंगल होत सुचंग ए ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ( दूहा ) ॥ पुण्य पूर्व नव प्रभुतणो । प्रगट्यो प्रगट प्रभाव ॥ सुरकुमरी  
नित प्रति करे । नाटक नवनव भाव ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूर्व मुख सावनं ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ शुद्ध निज दर्शन, करिय गुणकर्षना । जिनचरण सेवना विविधकारी ॥  
हे अइयो विविधकारी ॥ ए आ ० ॥ एक निजधर्ममय परमलय लीनता । दीनता  
सकल तज रज निवारी ॥ हे अई ० ॥ २ ॥ ॥ आत्मगुण अंतरातमप  
णे वृत्तिता । तजिय बहिरात्मजिन आण धारी ॥ हे अ ० ॥ आ ० ॥ २ ॥  
शुद्ध सम्यक्तगुण संपदा निज लही । सहीय शुभ धर्म रुचि भास सारी ॥ हे  
अ ० ॥ आ ० ॥ ३ ॥ विविधमणि रत्ननी जोति ऊगमग जगे, चंद्रिका भास  
भासित करारी ॥ हे अ ० ॥ आ ० ॥ ४ ॥ प्रवर कुल शुद्ध राजन्य प्रमुखें  
मुदा ॥ आयुकर बंध नर नव सुधारी ॥ हे अ ० ॥ न ० ॥ गर्भ अवतार निज  
मात उदरें लहे । बाल शुभ लग्न शुभ योग चारी ॥ हे अ ० ॥ शु ० ॥ ५ ॥  
॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

॥ शुभदिन शुभ मुझरत घमी । शुभ उच्च ग्रह चार ॥ देवलोक चवि प्रभु  
लहे । मातु उदर अवतार ॥ १ ॥ सुंदरवर प्रासाद महि, मध्यनिशा जिनमात  
स्वप्न देख सुख सेजमें । जाग्रत अति हरखात ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ राग काफी ॥ जिनजी नजो नवि प्यारा । या तें आनंद अधिक अ  
पारा ॥ जि ० ॥ १ ॥ सुख सेज सूती जिन माता । देखे सुपना मनजाता ॥  
चित्त हरखित झुय तिण वारा ॥ जि ० ॥ २ ॥ शुचि गज वृष सिंह मनुहार,  
लहमी दाम शशी दिनकार ॥ धज कुंज पदमसर सारा ॥ जि ० ॥ ३ ॥ वर  
हीर समुद्र विमान । रयणोच्चय मेरुसमान ॥ निर्धूम पावक सुखकारा ॥ जि ०  
॥ ४ ॥ शिवधान्य मंगल श्रियकारी । जाणी अर्थ हृदय क्रमधारी । शुभसूचक

पुण्य संनारा ॥ जि० ॥ ५ ॥ सुंदर वर सखियन संगें । करिधर्म जागरिकारंगें,  
निशि शेष गई तिणवारा ॥ जि० ॥ ६ ॥ एचणी एक पुष्पमाला चढावे ॥  
॥ॐ॥ दोहा ॥ॐ॥

॥ परम पुरुष परमात्मा, ज्ञावी जगवन ज्ञास ॥ प्रवचन प्रगटीकरण प्रजु  
पुण्य तणे सुप्रकाश ॥ १ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ पूजा सतर प्रकारी ॥ ए देशी ॥ॐ॥

॥ आज आनंद वधाई, जई त्रिजुवनमें ॥ चौद सुपन सूचित गुण जेहना,  
अवतरे माता उदरनमें ॥ आ० ॥ १ ॥ नृपति सदन वज्र सुपन शाख विध,  
अर्थ विचार करि निज गनमें ॥ पुत्र रंतन फल वचत नृपति फुल, परम  
कल्याण होत जनजनमें ॥ आ० ॥ २ ॥ प्रफुलित हरख भरत हीय उल्लसत,  
जिन जननी सुतात सुन तनमें ॥ दिन दिन बढत प्रवर धन जन मन, अधि  
क उत्साह घर घरनमें ॥ आ० ॥ ३ ॥ रूप रजत मणि माणक मोतियें,  
शंख प्रवाल शिल वरसनमें ॥ धनद धनद सुरइंद्र झकमत्तें, भरत भंमार नृपके  
सदनमें ॥ आ० ॥ ४ ॥ ताल कंसाळ मधु वीण वजावत, गीत गान गावत तन  
ननमें ॥ डुन्डुभि मुरज मृदंग घन गरजत, गरज गरज मानुं जैसे घनमें ॥  
आ० ॥ ५ ॥ सुर नर लोक माहे अधिक उत्साह बाह, निशिदिन होत  
जनजनपदमें ॥ इंद्र इंद्राणी नृप दोहद पूरत, मनोरथ होत जो जो मातु  
मनमें ॥ आ० ॥ ६ ॥ परम कल्याण शुचयोग संयोग जयो, शुच धरि  
शुच ग्रह शुच दिनमें ॥ वरण सके न ताहि कवि अवसरकों, आनंद जयो  
हे तीन जुवनमें ॥ आ० ॥ ७ ॥ उँझीं श्री परमात्मनेऽनंतानंत ज्ञानशक्तिये  
जन्मजरामत्युनिवारणाय, श्रीमक्तिर्नैद्राय च्यवनकल्याणके अष्टद्रव्यं यजा  
महे स्वाहा ॥ इति प्रथम च्यवन कल्याणक पूजा ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ अथ द्वितीय जन्मकल्याणक पूजा ॥ॐ॥

॥ ( दूहा ) ॥ प्रगटे पावन पतित प्रजु, अधम उधारन काज ॥ नृपकु  
लमाहे अवतरे, त्रिजुवनके शिरताज ॥ १ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ राग सौरठी ॥ ॐ ॥

॥ आज अधिक आनंद जयो रे बाला, आज सुरंग वधाईरे ॥ आठे,

जगपति जिनवर जनमिया रे वाला, सुर वधु वन मिल आई रे ॥ १ ॥ आठो आज आनंदधन नलव्यो रे वाला, दिशि कुमरी हरखाई रे ॥ आठो दशदिश निर्मलता थई रे वाला, फूल रही वनराई रे ॥ २ ॥ आठो फूलें फूली वनलता रे वाला, मधु मालती महकाई रे ॥ शालि प्रमुख सज्ज धान्यनी रे वाला, निपजी राशि सवाई रे ॥ ३ ॥ नारकी जीवें नरकमां रे वाला, कृष्ण इक शाता पाई रे ॥ सब जन मन हरषित ज्यो रे वाला, भूममल ठवि ठाई रे ॥ ४ ॥ शुभदिन शुभ महूरतघनी रे वाला, शुभग्रह शुभ पल आई रे ॥ जन्म थयो जिनराजनो रे वाला, प्रगटी पूर्व पुणवाई रे ॥ ५ ॥ ए पढी पुष्प तथा गुलाबजलकी वर्षा करे ॥ ॥ ॥

॥ (सोरंगो) ॥ त्रिभुवन मांहि सुरूप, जन्मसमय जिनराजनें ॥ वाजिब्रवजत अनूप, सुर नर कृत उत्सव ऊवे ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥ रावण निरत दणवे हो भला एदेशी ॥

॥ ॥ आज आनंद वधाई रे, देखो, आज आनंद वधाई ॥ जयजयकार ज्यो जिनशासन, सुरकुमरी हरखाई रे ॥ दे० ॥ १ ॥ वरवर गोरी मंगल गावत, मोतियन चौक पुराई रे ॥ ईति उपद्रव जय सब जागे, खार समुद्रे जाई रे ॥ दे० ॥ २ ॥ आज सनाथ ज्यो हे त्रिभुवन, ॥ जिनवर जनम्या जाई रे ॥ आज अधिक जग हर्ष ज्यो हे, धन धन माता कहाई रे ॥ दे० ॥ ३ ॥ जन्म महोत्सव करननकुं सब, दिशिकुमरी मिल आई रे ॥ करि कदलीगृह सुंदर रचना, पावन कर ऊर लाई रे ॥ दे० ॥ ४ ॥ जिनज ननी जिनवर पय प्रणमी, मस्तक आण चढाई रे ॥ स्नान करावत उन्नय शरीरे, तैलाज्यंग कराई रे ॥ दे० ॥ ५ ॥ नूषण नूषित अंग विलेपन, देव दूष्य पहराई रे ॥ दर्पण ले मंगल घट थापी, चामर जुगल दुलाई रे ॥ दे० ॥ ६ ॥ पंचवरनके फूल सुगंधित, सुर कुमरी वरषाई रे ॥ होम करी रक्षापोटरिया, जिनवर करे बंधाई रे ॥ दे० ॥ ७ ॥ मंगल गावत जिन जगज ननी, निजगृह मांहे ठाई रे ॥ सफल ज्यो निज आतम जाणी, दिशि कुमरी घर आई रे ॥ दे० ॥ ८ ॥ ॥ ॥

॥ (दूहा) ॥ अतिहि अधिक उत्सव करी, गइ कुमरी निज थान ॥ इंद्र हवे उत्सव करे, जन्म समय जिन जाण ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥॥ राग गोमी ॥ सांज समे जिन बंदो ॥ ए देशी ॥॥

॥॥ आज उठव मन जायो रे ॥ देखो माई ॥ जगजननी जिन जायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ विजुवन मांहि प्रकाश जयो हे, इंद्रासन अररायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ १ ॥ अवधिज्ञानधर जिनजीकुं निरखत, हृदय कमल उलसायो रे ॥ हरिणगमेषी इंद्र झकमत्तें, घंट सुघोष घुरायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ २ ॥ वनवन नवनवरूप मनोहर, सुरसमुदय मन जायो रे ॥ सुरकुमरी वरनूपण नूपित, अद्भुत रूप बनायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ३ ॥ नव नव यानवाहन रच सुरवर, सुरगिरि शिखरें आयो रे ॥ चौसठ इंद्र करत अति उत्सव, मेघ घटा घररायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ४ ॥ काली घटा वरदामनि चमकत, दाडुर मोर सुहायो रे ॥ अतिहि सुगंध पुष्पव्रज वरसत, मोतियनकी ऊर लायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥॥

॥ इहां प्रभु प्रतिमा पंचतीर्थी अंदरसैं लायके, सिंहासन ऊपर स्थापन करे (पीठे) स्नात्र पूजा करावे ॥॥

॥ (दूहा) ॥ शक जाय जिनवर गृहे, जिनजननी जिनराज ॥ प्रणमी श्रीमहाराजनी, भक्ति करे सुरराज ॥ १ ॥ ॥॥

॥ ॥ सुंदर नेम पियारो माई ॥ ए देशी ॥ ॥॥

॥ तुम सुत प्रान पियारो माई ॥ तु० ॥ ए आंकणी ॥ जगवत्सल ज गनायक निरख्यो, धन धन जाग्य हमारो माई ॥ तु० ॥ १ ॥ धन जगज ननी तुम सुत जायो, अयमउवारण हारो माई ॥ धन धन प्रगट जयो जग दिनकर, विजुवन तारन हारो माई ॥ तु० ॥ २ ॥ सब सुर चाहत स्नात्र करनकुं, सुरगिरि प्रभुजी पधारो माई ॥ कर जोमी प्रभु अरंज करतजं सब जनकाज सुधारो माई ॥ तु० ॥ ३ ॥ में सेवक तुम सुत चरणनको, आयों हूं अधिकारो माई ॥ इंद्र कहे पदपंकज प्रणमूं, जय सब दूर निवारो माई ॥ तु० ॥ ४ ॥ पांच रूप करि प्रभुजीकुं लावे, पांमुगवन सिणगारो माई ॥ चौसठ इंद्र महोत्सव करिहे, पूजन अष्ट प्रकारो माई ॥ तु० ॥ ५ ॥

॥ (दूहा) ॥ पंचरूप कर इंद्र जिन, पंमुग वन ले जाय ॥ सिंहासन उठ रंग गहि, स्नात्र करे सुरराय ॥ १ ॥ ॥॥

॥ ✽ ॥ इतनो गुमान न करियें ठवीली राधा हे ॥ ए देशी ॥ ✽ ॥

॥ जिनजीको पूजन करियें, हांरे हो रंगीले श्रावक हो ॥ जि० ॥ द्रव्य  
चाव वेज्जनेदें करतां, जव सागर निस्तरियें ॥ जि० ॥ १ ॥ गंगाजल चंद  
न पुष्पादिक, अंमविध मंगल धरियें ॥ चावविशुद्धें जिन गुण गावो, नाटक  
नवनव करियें ॥ जि० ॥ २ ॥ वज्रविध प्रभुकी भक्ति रचावत, वर्नन करन न  
तरियें ॥ वो आनंद देखे सोइ जाने, दुःख सब दूरें हरियें ॥ जि० ॥ ३ ॥  
पूजन करि प्रभुकुं घर लावे, आतम पुण्यें भरियें ॥ कर अठाइ महोत्सव  
आवत, सब सुर मिल निज धरियें ॥ जि० ॥ ४ ॥ ठंझी श्री प० अ०  
ज० जन्मकल्याणके अष्टद्रव्याणि यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ तृतीय दीक्षा कल्याणक पूजा ॥ ✽ ॥

॥ (दूहा) ॥ सुरकृत उत्सव अति अधिक, जये अनंतर प्रात ॥ मात  
पिता उत्सव करे, निज कुलक्रम विख्यात ॥ १ ॥ पार नही धनको जहां,  
अगणित जरे जंमार ॥ दान मनोबंधित दिये, दयावंत दातार ॥ २ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ गात्र लूहेण ॥ ए देशी ॥ ✽ ॥

॥ जिनजन्म महोत्सव रंगशुं रे, जये प्रात करत उतरंगशुं ॥ रंगसुं हांरे  
देवा रंगशुं ॥ नृपउत्सव करे अति घणो ॥ १ ॥ पुत्रजन्म कुल क्रम करे  
रे देवा, जगजस कीरत विस्तरे ॥ वि० ॥ घरघर उत्सव रंगमें ॥ २ ॥ सुर  
वधु मिल सुरसंगशुं रे ॥ देवा० ॥ करे नाटक नवरंगशुं ॥ रंग० हांरे० ॥  
बाललीला जिनसंगमें ॥ ३ ॥ रूपातिशयें शोभता रे ॥ देवा ॥ इंद्रादिक मन  
मोहता ॥ मो० हांरेमन० ॥ विद्याप्रभु विस्मयवती ॥ ४ ॥ परमप्रमोद  
प्रवीणता रे देवा, सुरक्रीमा अतिशयवता ॥ अ० हां० ॥ वैक्रिय शक्तिसमेलशुं  
रे ॥ ५ ॥ गावतगीत नमंगशुं रे देवा, वाजित्र नवनव रंगशुं ॥ रं० हां० ॥  
वजित अहोनिशि संगशुं रे ॥ ६ ॥ ✽ ॥

॥ (दूहा) ॥ तीन ज्ञान अतिशय धरे, अतिशय कला सुधाम ॥ सुर  
सुसंग क्रीमातिशय, अतिशयगुण अनिराम ॥ १ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ पंच वरणी अंगी रची ॥ ए देशी ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ वरणी न जाती रे, व० ॥ जिनजीकी शोभा व० ॥ चित्रजात नर  
सुरासुर निरखत, उरन एसो जग जाती ॥ जि० ॥ १ ॥ अनंत गुणें करि

शोजित प्रभु जी, शुद्ध संवेग सोवन जाती ॥ शिव मारग शुद्ध सेवत निशि  
दिन, पुण्यपुरुष पायागती ॥ जि० ॥ २ ॥ पर उपगारी पद्म पुरुषोत्तम,  
अद्भुत अनुभव रस पाती ॥ कामजोग वरविबुध प्रकारें, प्रांत जये सुख संघां  
ती ॥ जि० ॥ ३ ॥ जमुं जस ख्यात प्रगट त्रिभुवनमें, कुल राजन्योत्तम  
जाती ॥ धन धन तीन भुवनके साहिव, इयामें हमारी वरगाती ॥ जि० ॥  
॥ ४ ॥ इंद्र अहोनिश जावन जावत, देख दश अति हरखाती ॥ डण्ड  
नि प्रमुख वाजिप्र वजत नित, सुखधु वनमंगल गाती ॥ जि० ॥ ५ ॥  
ए पढके प्रभुकों पुष्प वासकैप चढावे ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (दूहा) ॥ प्रवरजोग प्रभुपुण्यतें, प्रगटे प्रगट प्रधान ॥ गुण  
ग्राहक गृह वासमें, दर्शन ज्ञान निधान ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ राग तुमरी ॥ तुम विन दीनानाथ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ प्रभुविन दीनानाथ दया विन, कोन कहावत कोई रे ॥ प्र० ॥  
गृहवासें शुद्धसंयमधारी, शुद्धसुनावें होई रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनज  
बनिवेंदें, स्वतनकी जर खोई रे ॥ प्रभुता प्रभुकी को कहि बरने, सुर नर नारी  
मोही रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ शुनत्रेयया शुनव्यान रमे नित, आतम निरमल  
धोई रे ॥ आतमरूप निहारत निजघर, संगसुमति जह जोई रे ॥ प्र० ॥  
॥ ३ ॥ प्रगट प्रकाश आत्मजजियरे, साम कहावत सोई रे ॥ गृहवासें  
शुद्धसंयम रागी, लागी लगन सवाई रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ निजप्रभुता प्रभु  
जीनो लीनो, अंतर शत्रु विगोई रे ॥ विषयवासना ठीण नई लख ॥ आतम  
शक्तिशुं ठोई रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ ऐसा कही फूल चढावे ॥ ॥

॥ ॥ (दूहा) ॥ दाता दीन दयाल प्रभु, देत संवत्सरिदान ॥ दूर करे  
द्वारिद्र जग, त्रिभुवनमाहि प्रधान ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ महदेवानंदकी, क्या ठवि लागत प्यारी ॥ ॥

॥ ॥ जगपति जिनवरकी, क्या ठवि मोहनगारी ॥ ज० ॥ मोहत  
प्रभुके मोहनरूपें, निरख निरख नरनारी ॥ क्या० ॥ १ ॥ जोगकर्म अंतराय  
कर्म कलु, क्षीण जण निरधारी ॥ दानसंवत्सर घनंजिम बरसत, पृथ्वी प्रमुदि  
तकारी ॥ क्या० ॥ २ ॥ नयलोकांतिक देव सबें मिल, हाजर होय सुचारी ॥  
जय जय मंगल शब्द उचारत, धर्म गहो सुखकारी ॥ क्या० ॥ ३ ॥ दान



धर्म शिवमारग प्रभुजी, प्रगट कियो हितकारी ॥ दाता दीनदयाल जगतमें  
जिन सम को सुविचारी ॥ क्या ० ॥ ४ ॥ इंद्रादिक सुर सुरी नर नारी, दीक्षो  
त्सव अतिचारी ॥ गान दान सनमान तान करी, प्रभुगति सकल सुप्यारी ॥  
क्या ० ॥ ५ ॥ तजि संसार लियो शुभयोगें, संयम सतरप्रकारी ॥ मनपर्यव  
र ज्ञान ज्यो तब, विहरत पर उपगारी ॥ क्या ० ॥ ६ ॥ नै ज्ञी प०  
अ० ज० श्री० दी० अष्टद्रव्या० स्वाहा ॥ ३ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ चतुर्थ केवलज्ञानकल्याणक पूजा ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ दोहा ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ गजवर अश्व समूह रथ, पायक कोमा कोम ॥ जिनदीक्षा  
महोत्सवसमें, हाजर होय तिण ठोर ॥ १ ॥ इंद्रादिक सुर असुर नर,  
प्रभुकुं करे प्रणाम ॥ नर नारी आशीष दे । जयजय त्रिभुवन साम ॥ २ ॥  
तजि आश्रव संवर गहे, संयमजाव निधान ॥ सब संसार तजी करी, जए  
अणगार प्रधान ॥ ३ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ तेरी पूजा बणी ते रसमें ॥ ए देशी ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ धारी धारी धारी, जिन जए संयमपद धारी ॥ चरणकमल व  
लिहारी ॥ जि० ॥ पंचसुमतिधर तीन गुपतिकर, सब जीवां सुखकारी ॥  
जि० ॥ १ ॥ जीत लिये उपसर्गपरीसह, शत्रुसेना गणचारी ॥ जयजेरवतें  
निःप्रकंप जए, निर्मम निरहंकारी ॥ जि० ॥ २ ॥ क्रोध मान माया लोच  
अकिंचन, आकिंचन ब्रह्मचारी ॥ पुष्करसम निरलेप जगत गुरु, नीरंजन  
अविकारी ॥ जि० ॥ ३ ॥ चेतन पर प्रभु अप्रतिघाती, खेसम निराश्र  
यारी ॥ खड्गी शृंग परें एकाकी, अप्रतिबंध विहारी ॥ जि० ॥ ४ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ (दोहा) ॥ रत्नत्रय परिग्रह करी, मुक्तिमार्ग अनिराम ॥ निशि  
दिन करत विहारक्रम, प्रासुकाम निजधाम ॥ १ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ सद्गुरुजी सुनो मेरी अरजी ॥ ए देशी ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ जिनवरजी जगतहितकारी ॥ जि० ॥ जग वत्सल जगबंधु  
जगत गुरु, जग नायक जयकारी ॥ जि० ॥ २ ॥ कूर्मतणीपर गुप्तइंद्रिया, अप्रमाद  
नारंमसुचारी ॥ अतिशय धाम धाम निजवीरज, वृषभपरें सुविहारी ॥ जि०  
॥ ३ ॥ शूर वीर प्रभु सिंहतणी पर, कुंजर करम विहारी ॥ अतिगंजीर

सायरसम शोजित, सौम्यलेश्या सुखकारी ॥ जि० ॥ ३ ॥ तेज पुंज दि  
नकर संम दीपत, हेम वरण मनुहारी ॥ सर्वसहन कारक धरणीपर, स्वच्छ  
हृदयकजधारी ॥ जि० ॥ ४ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ (दोहा) अनुत्तर धर संयमक्रिया, कल्पातीतजिणंद ॥ वीतराग  
विचरे प्रवर, रत्नत्रय जगचंद ॥ १ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ कुवजानें जादू मारा ॥ ए देशी ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ जाके रागवेष जया न्यारा रे, सोई श्याम सकल सुखकारा ॥  
जा० ॥ वासी चंदन सम प्रभु जगमें, अपकारें उपकारा रे, ॥ सो० ॥ १ ॥  
कंचन काष्ठ समान हे जाके, सुख दुःख सम उपचारा ॥ कोऊ निंदत  
कोऊ पूजत, जिनजी हे अविकारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ २ ॥ शिवसु  
ख अरु जवसुख हू न बांटे, वीतराग प्रभु प्यारा ॥ शूरवीर प्रभु हृषिकेश  
चढ, मोहनी मल्ल पिठारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ ३ ॥ ह्यायिक संयमने शुन  
योगें, अनुत्तर गुण गण धारा ॥ पाठकविजय विमल कहे प्रभुके, चरणकम  
ल वलिहारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ ४ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ (दोहा) घनघाती चउ कर्मकों, हृषिकर ह्यायिक ज्ञान ॥ दर्शन  
लोकालोकको । प्रगटप्रकाशी ज्ञान ॥ १ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ राग ठुमरी ॥ वस मन कृषी कुंमके तीर ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ पायो प्रभु जवजलनिधिको तीर, अतुलीवल वनवीर ॥ पा० ॥  
अनुत्तर जाके सुमति गुपति हे, अनुत्तरहृमासुधीर ॥ पा० ॥ १ ॥ मार्दवआ  
यवं अनुत्तर जाके, रोक्यो आश्रव नीर ॥ संवरजोग क्रिया नवि विणठी, रही  
ईयां सुख सीर ॥ पा० ॥ २ ॥ घनघाती सब शत्रुविनांशी, केवलज्ञान सुधी  
र ॥ पूरन दर्शन प्रगट जपो हे, निज आतम गुणह्वीर ॥ पा० ॥ ३ ॥ प्रा  
तिहार्य अतिशय जिनसंपद, जयो अनुकूल समीर ॥ दें उपदेश जविक प्रति  
बोधत, वचनातिशय गंजीर ॥ पा० ॥ ४ ॥ लोकालोक प्रकाश परम गुरु,  
कहि न शके मति सीर ॥ पाठक विजयविमल परमातम, प्रभुता परम सु  
धीर ॥ पा० ॥ ५ ॥ उंझी परमा० अ० ज० श्रीम० केवलज्ञानकल्या  
णके अष्टद्रव्याणि यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ४ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचम निर्वाण कल्याणक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ इंद्रादिक सुर सब मिली, तीन भुवन शिरदार ॥ सब  
दरसी सर्वज्ञानो, महिमा करे अपार ॥१॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अतुल विमल मित्या, अखंड गुणें ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अतुल विमल प्रभुता प्रभुकी लख, चौसठ इंद्र उठव धरे ए ॥  
चार प्रकारके सुर सब मिलकर, समवसरण रचना करे ए ॥ अ० ॥ १ ॥  
रजत कनक वररत्नप्रकारें, कनक रत्न मणि कंगुरा ए ॥ वृद्ध अशोक सिंहा  
सन शोजित, तीन ठव चामर दुरा ए ॥ अ० ॥ २ ॥ उड्डिनि प्रमुख श्रवण  
सुखदायक, गहिर सुरे वाजिच घुरे ए ॥ जानुप्रमाण पुष्पधन वरसत, जल  
ज थलज विकसित सुरे ए ॥ अ० ॥ ३ ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका  
इंद्रादिक सुरी सुर वरे ए ॥ नरनारी तिर्यग विद्याधर, वादशविध परिपद नरे  
ए ॥ अ० ॥ ४ ॥ भविजन धर्म तणे उपदेशें, जोजन गामि मधुर गिरे ए ॥  
प्रतिबोधत चौमुख श्रीजिनवर, निज निज भाषा अनुसरे ए ॥ अ० ॥ ५ ॥  
ए पदके वासहेप करे ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ प्रगटपणे प्रभुकी प्रज्ञा, प्रगट प्रकाशक रूप ॥ प्रग  
टी प्रभुता परमसम ॥ परमात्म पदभूप ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विगरी कौन सुधारे नाथ विना ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भूमंल भविकमल विबोधन, दिनकर सम जिनराया रे ॥  
भू० ॥ अणुजंते इक कोनी अमरपद, पंकज नमर लुजाया रे ॥ भू० ॥ १ ॥  
ग्राम नगर पुर पट्टण विचरत, त्रिभुवननाथ कहाया रे ॥ चौसठ इंद्र करे  
जाकी सेवा, तन मनसैं लयलाया रे ॥ भू० ॥ २ ॥ इंद्राणी मित्र मंगल  
गावत, मोतियन चोक पुराया रे ॥ सर्व जीव हितकारक प्रभुजी, निःश्रेयस  
सुखदाया रे ॥ भू० ॥ ३ ॥ भवजलनिधि निर्यामक जगगुरु, तारक सकल  
कहाया रे ॥ शासननायक संवसकलकुं, प्रवचन तत्त्व सुनाया रे ॥ भू०  
॥ ४ ॥ अनंतगुणकर प्रभुजीकी महिमा, बरने को कविराया रे ॥ पर उप  
कारक प्रभुके पाठक, विजय विमल गुण गाया रे ॥ भू० ॥ ५ ॥ ए कहके  
वासहेप करे ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥(दोहा)॥ निज निज भाषा भविकजन, तृपत न सुनतहि श्रोत ॥

मीठी अमृत सम गिरा, समुक्त श्रम नहि होत ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग कहेरवो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनंदवामिल गयो रे, दोय चरणुं परध्यान ॥ शुद्ध मन गह  
गह्यो रे ॥ जि० ॥ ज्ञापकज्ञेय अनंतनो रे, सबदरसी जिनचंद ॥ सुरतरु  
सम जग बालहो रे, सेवत सुर नर इंद ॥ धर्ममैं लह लह्यो रे ॥ दो० ॥ १ ॥  
चौदम गुण थानक करे रे, आतम वीर्य अनंत ॥ योग निरोधनकी किया  
रे, सुखम वादरकंत ॥ बंध सब टर गयो रे, सब संवर जयो रे ॥ दो०  
॥ २ ॥ घन कर आत्मप्रदेशनो रे, कर शैलेशी कण ॥ कर्म सकल दूर  
किया रे, जीर्णवस्त्र जिम पण, मुक्ति पद जिम लह्यो रे ॥ दो० ॥ ३ ॥  
ज्ञान किया कर कर्मकोरे, कृप कर पर अनुबंध ॥ निजआतम रूप लह्यो रे,  
शाश्वत सुख संबंध, सिद्ध शुद्ध बुध थयो रे ॥ दो० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( दोहा ) अकल अगोचर अगमगम, सिद्ध जग सुविशुद्ध ॥  
परमातम प्रभु परम पद, चिदानंद अविच्छेद ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग धनाश्री ॥ तेजतरणिमुखराजे ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तेज तरणि सम राजे, प्रभुजीको ॥ ते० ॥ एकसमयप्रभु ऊरध  
गतिकर, मुक्तिमहल सुविराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ १ ॥ सादि अनंत सदा शा  
श्वत वर, अनंत महासुख ठाजे ॥ अचल अगोचर प्रभु अविनाशी, सिद्धस  
रूप विराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ २ ॥ निरुपाधिकनिरुपम सुख प्रभुके, क  
हि न शके कविराजे ॥ अजर अमर अक्षय अविकारी, सकलानंद सहा  
जे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ३ ॥ संवत भगणीस तेरेतर, आवण शुद्धि पख राजे ॥  
श्रीजिनराज तणा गुण गाया, पंचमि दिवस समाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ४ ॥  
श्रीविक्रमपुर नगर मनोहर, श्रीसंध सकल समाजे ॥ पंच कल्याणक पूजा  
प्रभुकी, कीनी हित सुखकाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ५ ॥ श्रीखरतरगञ्ज ना  
यक लायक, युगप्रधान पद ठाजे ॥ जंगमगुरु जट्टारकवरश्री, जिनसौभाग्य  
सुराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ६ ॥ प्रीति विलास धर्मसुंदर गणि, अमृत संभु  
द्र मुद्राजे ॥ पाठक विजय विमल प्रभुके गुण, गावत घन जिम गाजे ॥  
प्र० ॥ ते० ॥ ७ ॥ हंसविलास प्रवरगणिवरकी, प्रेरणया सुसमाजे ॥  
श्रीजिनवरकी स्तवना कीधी, धर्मप्रभावना काजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ८ ॥

ॐ श्री ५० ॥ अनंत ॥ जन्म जरामृत्यु निवारणायः श्री मङ्गिनैन्द्रेण्यो नि  
वाणकल्याणके अष्टद्रव्याणि यजामहे स्वाहा ॥ इति पाठक विजयविम  
लजीविरचित पांच क० पू० सं० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ आरती ॥ राग मालवी गोमी ॥ ॥ ॥

॥ ॥ शुभ आरती प्रभुकी उदरचित्तें, करो नविक रसाल रे ॥ प्रथ  
मधूप सुगंधजिनकुं, उखेवो जिननाल रे ॥ १ ॥ जाल निजकर तिलक सुंदर,  
पहर पुष्प सुमाल रे ॥ दक्षिणकर जिन राजजुके, कर आवर्त सुमाल रे ॥  
शु० ॥ २ ॥ यथासगतें शुद्धजगतें, करो दिल खुशियाल रे ॥ द्रव्यजावें वि  
विधपूजा, नविकजाव विशाल रे ॥ शु० ॥ ३ ॥ गुण अनंत महंत गावें,  
प्रभुपरम दयाल रे ॥ जन्म सफलो करो नविजन, कहे पाठक वाल रे ॥  
शु० ॥ ४ ॥ इति आरती ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ पांच कल्याणक पूजा विधि ॥ ॥

॥ ॥ प्रथम बिंबप्रतिष्ठामें ( तथा ) ऊर्ध्वीवत सेठ सऊकारादिककी  
तरफसें ( तथा ) संघ समुदायके तरफसें, जो पांच कल्याणकका उठव  
होय ( तबतो ) विस्तार विधिसें एकेक दिनमें एकेक कल्याणकका उठव  
करे। पांच दिनमें पांच कल्याणक करै ( और ) जल यात्रा, चौबीस प्रकारी  
वीश स्थानक, सतर जेदी, नवपदजीकी एकेक दिन पूजा उठव विस्तार वि  
धिसाथ करावै। ऐसें १० दिनका उठव करै ॥ ( यथा ) पहले दिन पूठिया  
चंद्रवा तोरणादिकसें मंमपकी स्थापना करावे। १० दिग्पालांको बलवाकुल  
दिगावे। जल यात्रादि उठव करके मंगल कलश थापन करै ( इत्यादि ) ॥  
दूशरै दिन चवन कल्याणकको उठव करै ( जैसें ) देवलोकसें चवके माताके  
गर्भमें आवै ( तैलें ) जगवानकी माताको काष्ठमई घरादिकमें पमि बिंबो  
स्थापन करै ( पीठे ) ऊपर सेती काष्ठ विमानमें जगवानको प्रतिबिंब स्थापन  
करके नीचें उतारै ( पीठे ) चवदै स्वप्नांको कमसें उतारै। माताके मंमपकेपा  
स रखे। तीन नवकार गुणके उतारै ( ओर ) तीन नवकार गुणके स्था  
पन करै। ( पीठे ) एक ( वा ) २४ रत्न ( अथवा ) एक ( वा ) २४  
रुपियांसें। चवन कल्याणककी थापना करै ( और ) चवन कल्याणककी  
पांच पूजा पढै ॥ ॥ इति चवन कल्याणक पूजा ॥ १ ॥ ॥

## ॥ ✽ ॥ अथ जन्मकल्याणक विधि ॥ ✽ ॥

॥ तीसरे दिन जन्म कल्याणकको संपूर्ण उठव करै (जैसैं) ठप्पन दिश कुमरीका आगमन, और यावन्माध केली गृह रचना, दर्पण दर्शनादिक उठव करै ॥ तिस पीठे, सुमेरु पर्वतकी थापनाके ऊपर इंद्रादिकका रूप करके जगवानकों थापन करे । सोनें, रूपै, तांबा, पीतल, मट्टी आदि अनेक तरै का कलश बन सके तो १००८ कलश गंगानदी आदि अनेक ठिकाणेंका जलसैं भरनकरके स्नात्र उठव करावे ॥ जंगार १। दर्पण २। स्न करंमक ३। स्थाल ४। पुष्प चंगेरिका ५। इत्यादि उपकरण पूजाका सर्व जगवान आगे रखै ॥ सर्व क्षेत्रांकी सुगंधी उपधीपासैं स्नात्र करावे । गुलाबजलकी, पुष्पां की, रत्नांकी, वर्षा करे । तदनंतर सिद्धार्थ राजायें जिस माफक उठव कियो उस माफक अपनेसैं बन सके जिस मुजब संपूर्ण उठव करे । ( तदनंतर ) घृतसेर २४, । नैवेद्य सेर २४। गुन सेर २४। फल अठ्ठा २४ । चढावे । २४ सधव स्त्रियां मिलके २४ गवली करै ॥ जन्मकल्याणककी पांच पूजा पढ़ै । आरती मंगल दीप उतारे ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

## ॥ ✽ ॥ अथ दिक्का कल्याणक विधि ॥ ✽ ॥

॥ चौथे दिन दिक्का कल्याणकको उठव करै । खाशा पालखीमें जगवानकों बैठके, वर घोमो वाजिनादि सहत वने उठवसैं निकाले । अठ्ठा वाग वगीचामें लेजाके । अशोक, आम्रादि, उत्तम वृक्षके नीचे सिंघासनपर स्थापन करके स्नात्र उठव करावे । २४ । गज उत्तम वस्त्र चढावे । वाश क्षेत्र लेके नवीन चंद्रवा चढावे । दिक्का कल्याणककी पांच पूजा गवावे । जैन याचकादिककों दान देवै । साहमीवृत्तल करे ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

## ॥ ✽ ॥ अथ केवल ग्यान कल्याणक पूजा विधि ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ पांचमें दिन विगमा समोसरणकी रचना करे । मुगट ठव चामरादि अनेक तरैके रत्नजम्मित आभूषण सहत जगवानकों स्थापन करै । पंचवर्णा सुगंधी फूलांकी वर्षा करे । नाना प्रकारका वाजित्र बजावे केवल ग्यान कल्याणककी मीठा स्वरसैं पांच पूजा गावे ॥ इति ॥ ✽ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ मोक्ष कल्याणक विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ठेठे दिन विस्तार विधिसँ स्नात्र करावे । निर्वाण विधिका गुण वर्णनकी पांच पूजा करावे ॥ १४ अन्ना उत्तम द्रव्यका लामू चढावे । जंमारकी वृद्धी करे ॥ आरती मंगल दीप करे ॥ यथा शक्ति ज्ञान पूजा गुरु पूजा करे ॥ साहमी वञ्चन करै ॥ इति पंच कल्याणक पूजा विधि ॥ अब संक्षेप रुचि, शक्ति, जक्ति, बावले जो जीव होय (सो) अपनी शक्ति साफक । पंच कल्याणकी पूजा करावै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ संक्षेप विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम त्रिगुणा नीचे पांच साधिया करके । पांच रुपिया पांच नालेरसँ थापना करै । प्रतिमा जीकों तीन नवकार गुणके । स्थापनका मंत्र बोलके । समोसरणपर स्थापना करे ॥ ( स्थापन मंत्र ) ॥ ॐ नमो अर्जुन परमेश्वराय । षट् पंचाशद्विकुमारी परिपूजिताय । चतुःषष्टि इन्द्र महिताय सर्व जनहिताय । देवाधिदेवाय । अत्र पीठे तिष्ठ १ स्वाहा ॥ ❀ ॥ कोई पूजादिक महोत्सवमें इस मंत्रसँ समोसरणपर जगवानको स्थापन करना ॥ पीठे च्यवन कल्याणककी पांच पूजा पढै । अष्ट द्रव्य चढावे । पुष्पमाला १ तथा, पुष्प अन्तर चढावे । गुन्नावजलकी वर्षा करे । हीरो चढावे ॥ इत्यादि ॥ इति च्यवन कल्याणक पूजा विधि ॥ ❀ ॥ जन्म कल्याणककी पूजामें दो तीन पूजा गायके नीतरसँ पंच तीर्थी लायके स्थापन करै । स्नात्र करावै । धजा फेरावे । पीठे पंचतीर्थी सागी ठिकाणे स्थापन करै । पूजा सर्व ऊये पीठे । अष्टद्रव्य, गुरु, घृत, आदि चढावै । अष्टमंगलीककी रचना करे ॥ इति ॥ दिक्का कल्याणककी पूजामें । पुष्पमाला । वाशचूर्ण । अष्टद्रव्य, कोमल सुगंधी उत्तम वस्त्र चढावे ॥ इति ॥ केवल ग्यानकी पूजामें आचूषण अष्टद्रव्य, वाशचूर्ण, सपेद गोला, चढावै ॥ इति ॥ निर्वाण कल्याणकमें । गुरु, गोला, लामू, आदि अष्टद्रव्य चढावै ॥ पांचों पूजामें रोकनाणो यथाशक्ति चढावै । ( पीठे ) ग्यान पूजा, गुरु पूजा करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति संक्षेप पंच कल्याणक विधि ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ नवपद मन्त्र पूजा विधि लिपि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नवस्त्राव्रिया मंत्रितजलसे स्नान करे ॥  
 ( जलमंत्र ) ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षणी अमृतं आवय २ स्वाहा  
 ( इस मंत्रसे ) जलमंत्रे ( पीठे ) ॐ ह्रीं अमले विमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थ  
 जलोपमे पांवा बांवा अशुचि शुचिभवामि स्वाहा ॥ ( इस मंत्रको ) सात  
 बेर पढ़ता ऊवा स्नान करै ( पीठे ) ॥ ॐ ह्रीं आं कौं नमः ॥ सातबेर इस  
 मंत्रसे बख शुद्ध करके पहरे ( पीठे ) ॐ आं ह्रीं कौं अर्कते नमः ॥ ( इस  
 मंत्रसे ) सातबेर गुरुपासे केशर मंत्रायके तिलक करे ( पीठे ) ॐ ह्रीं  
 अवतर २ । सोमे २ । कुरु २ । बहगु २ । सुमणसे । सोमणसे । मज्ज म  
 ज्जरे । ॐ कवली कः कः स्वाहाः ॥ ( इस मंत्रसे ) मोली मेंढल मरोमा  
 फली मंत्रायके हाथके बांधे ॥ ( और ) जब मन्त्रजीके चारुं तरफ  
 मोली मेंढल बांधे । सोनी, इसी मंत्रसे मंत्रके बांधे ॥ इसीतरे अपना अंग  
 शुद्ध करके स्त्राव्रिया गुरुके सन्मुख हाथ जोमके बैठे ॥ ( जब गुरु ) ॐ पर  
 मेष्टी स्तोत्र पढ़के अंगरक्षा करै ॥ अंगरक्षा स्तोत्रः ॥ ॐ परमेष्टी नमस्कारं  
 सारं नवपदात्मकं । आत्मरक्षा करं वज्र । पंजराक्षं स्मरान्यहं ॥ १ ॥ ॐ  
 एमो अरिहंताणं ॥ शिरस्कं शिरसिस्थितं ॥ ॐ एमो सवसिद्धाणं । मुखे  
 मुखपटवरं ॥ २ ॥ ॐ एमो आयरियाणं । अंगरक्षा तिशायिनी । ॐ एमे  
 उवज्जयाणं । आयुधं हस्तयो दृढं ॥ ३ ॥ ॐ एमो लोणं सवसां ऊणं । मोच  
 के पादयोजुजे । एसो पंचनमुकारो ॥ शिलावज्जमगीतले ॥ ४ ॥ सव पांव  
 प्पणासणो । वप्रोवज्जमयोवहिः । मंगलाणंच सवेसिं । खादिरांगारं खातिकं  
 ॥ ५ ॥ स्वाहांतंचपदं देयं । पढमं हवइमंगलं । वप्रो परिवज्जमयं । पिधानं  
 देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महाप्रज्ञावा रक्षेयं । कुशेपद्रवनाशिनी । परमेष्टिपदोद्भूता  
 कथिता पूर्वसुरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां । परमेष्टि पदैसदा ॥  
 तस्य नस्या ज्ञयंव्याधि । राधिश्चापि कदाचिनः ॥ ८ ॥ ❀ ॥ इति आत्म  
 रक्षा वज्रपिंजर स्तोत्रं ॥ ❀ ॥ यह स्तोत्र तीनवार गुणके आत्मरक्षा करै ॥  
 ( पीठे ) तीन बेर नवकार मंत्रसे मंत्रके चोटीके गांठ देवे ॥ ( तथा )  
 तीन नवकार गुणके सव स्त्राव्रियाके कानांमें फुंक देवे ॥ ( इतनी विधीतो )  
 हरकोई पूजा प्रतिष्ठा मन्त्रादिकमें स्त्राव्रियाको प्रथम अवश्य करणी करा



णी चाहिये ॥ ( पीठे ) मंदरजीमें अधिष्टायक देव देवी जो होय । उन सर्वकी पूजा करावे । अष्ट द्रव्य चढावे ॥ ( पीठे ) चंपेलीका तेलमें, हिं गलू ( वा ) सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजीकी पूजा करे । चांदीका बरग ( वा ) मालीपन्नासैं अंग रचना करै । अत्तर चढावे । फूल, धूप, दीप, नेवेद्य फल, जल, रोकनाणो, इत्यादि सर्व द्रव्य ( उँ क्षेत्रपालायनमः ) ऐसा बोल ता ऊवा चढावे ॥ ( पीठे ) मंमलजीके दहिणेंपासे, १० दश दिग्पालके पट्टेकी थापना करे । एकेक दिग्पालकी पूजा पढके, जल चंदनादि सर्व द्रव्य, नागरखेलके पानसुखा चढाता रहे ॥ दशुं दिग्पालकी पूजा ऊए पीठे । ऊपर कसुंवल वस्त्र बांधे । आगे सर्व द्रव्य चढावे । दीपक करै ॥ ( पीठे ) वामपासे नवग्रहका पट्टकी थापना करके पूर्वोक्त प्रकार पूजा करै ॥ ( पीठे ) सर्व स्नात्रियांकुं १८ स्तुतीसैं देव वंदन करावे ॥ ( इहां ) १० दिग्पाल, नवग्रहकी पूजाका मंत्र ( तथा ) देव वंदनकी विधि विस्तारके जयसेती न लिखी है ( सो ) पूर्वशांति पूजामें लिख आए हैं ( उसी मुजब ) सर्व विधि करावे ( पीठे ) मंमलजीकी प्रतिष्ठा करे ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ अथ मंमल प्रतिष्ठा विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम दोनुंपासे मोली सुत्रकी वत्ती जगाके घृतका दीपक करै ॥ इन दोनुं दीपकों चार पहर अखंम रखे । ( पीठे ) सोतें, चांदी, आदिका कलशमें अबोट उतम जल जरके सोनावाणी करै । हाथमें कलश लेके । ७ सात नवकार गुणें ॥ उँ ऊँ जीरावला पार्श्वनाथ रक्षां कुरु १ स्वाहा ॥ इस मंत्रसैं ७ बार जलकों मंत्रके । मंमलजीके चारुं तरफ धारा देवे । ऊपर जरा ठांटा देके पवित्र करै । धूप खेवै ( पीठे ) नवतारी मोली सुत्रका साढा तीन आंटा मंमलजीके बाहर कर देवे । पूर्वोक्त मंत्रसैं मंत्रके मोली ( तथा ) मेंढल मरोमा फली चारुं तरफ बांधे ॥ ( पीठे ) के शरकी कटोरी हाथमें लेके ( उँ आँ ऊँ श्री अर्हतेनमः ) इस मंत्रसैं मंत्र के मंमलके ऊपर केशरका ढीटा देवे । ( ऊपर ) चावलको साथियो करै । टीकी देवे । मंमलके अगामी चावलको साथियो ( वा ) नंद्यावर्त करके ऊपर नालेर रुपियो जेट धरे ॥ ( पीठे ) केशर, चंदन, कुंकम, लेकर मंमल जीके चारुं तरफ तीन रेखा आलेखन करै ॥ ( पीठे ) वाशकैन, पुष्प, हाथ

में लेके ( ॐ नमो नूतनी नूतनात्री विश्वाधारनमः ॥ ) इस मंत्रसे सातबेर मंत्रके मंमलंजूमि, तथा, पीठकी पूजा करै ॥ फेर, आचार्य गुरु वांशक्षेप हाथमें लेके ( ॐ ह्रीं श्री अर्हत्पीठाय नमः ) इस मंत्रसे ७ बर मंत्रके मंमल पीठकी पूजा करै ॥ ( पीठे ) स्नात्रिया, हाथमें पुष्प, चावल, लेलेके तीन बर मंमलकों बधावे ॥ नीचे चावलको साथियो करके । रुपियो नालेर ध्यापनाको धरै । ( पीठे ) स्नात्रिया मंदरके, जीतरसे प्रतिमाजी लायके त्रिगमा ऊपर मंत्र पढके स्थापन करै ॥ ( स्थापन मंत्र ) ॥ ॐ नमो अर्जुन परमेश्वराय । चतुर्मुखाय परमेष्ठिने दिग् कुमारी परिपूजिताय । चतुषष्टि सुरासुरेन्द्र सेविताय । देवाधिदेवाय । त्रैलोक्य महिताय । अत्र पीठे तिष्ठ १ स्वाहा ॥ इस मंत्रकों ७ बर पढके । नवप्रतिमा ( वा ) एकप्रतिमा स्थापन करै ॥ ( इसीतरे ) मंमल प्रतिष्ठा करके ( पीठे ) सिद्धचक्र पूजा सुरू करै ॥ ५॥ ( प्रथम ) एंकारकेबीमें । सपेद गोलो, सपेद बख, सपेद धजा, ८ कर्कतन रत्न, ३४ हीरा, पुष्प, अक्षत, फल, दीप, धूप, हाथमें लेके अरिहंत पद की पूजा पढै ॥ ( यथा ) अथाष्टदल मध्याब्ज । कर्णिकायां जिनेश्वरान् । आभिर्भुतौल्लसद्बोधा । नावतः स्थापयाम्यहं ॥ १ ॥ निःशेष दोष धन धूम केतुः । नपारं संसार समुद्र सेतून् । यजै समस्तातिशयैक हेतून् । श्रीमज्जि नानांबुज कर्णिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्जुन्योनमः स्वाहा ॥ १ ॥ इस मंत्रसे अर्जुन पदकी ध्यापना पूजा करै । सर्व द्रव्य चढावै ॥ ( पीठे ) रकेवीमें । लाल गोलो, लाल धजा, लाल बख, ८ माणक रत्न, ३१ मुंगा, जल पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमें लेके सिद्ध पूजा पढै ॥ ( यथा ) तस्य पूर्व दले सिद्धान् । सम्यक्तादि गुणात्मकान् । निःश्रेय संपदं प्राप्तान् । निदधे ज्ञक्ति निजंरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्वं पत्रे परितः प्रणष्टः । उष्टाष्ट कर्मा मधिगम्य शुद्धि । प्राप्तान्नरान्सिद्धि मनंतबोधान् । सिद्धान् यजे शान्तिकराक्षराणां ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्री सिद्धेयोनमः स्वाहा ॥ पूर्व दिशकी तरफ सिद्ध पदकी स्थापना पूजा करै । सर्व द्रव्य चढावै ॥ ५ ॥ इति ॥ ५ ॥ ( पीठे ) रकेवीमें पीछो गोलो पीछी धजा, पीछो, बख, ५ गोमेदक रत्न, ३६ सोनेका फूल, जल, पुष्पादि सर्व पीठ द्रव्य हाथमें लेके आचार्य पदकी पूजा पढै ॥ ( यथा ) स्थापयामिततः सुरीन् । दक्षिणेस्मिन् दले मले । चरतः पंचधाचारान् ।

षट्त्रिंशद्गुणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सूरि सदाचार विचारसारा । नाचारयंतः स्वपरान्  
यथेष्टं । उग्रोपसर्गैक निवारणार्थः । मन्त्र्यर्च्यया स्यक्तगंधधूपैः ॥ ६ ॥ ॐ  
झी श्री सूरिभ्योनमः स्वाहा ॥ ३ ॥ दक्षिणदिशकी तरफ आचार्य पदकी  
स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ❀ ॥ ( पीठे ) हरितगोलो, हरितवस्त्र, हरामं  
गकालडू, हरीधजा, ४ इंद्रनील, १५ मरकतरत्नपत्रा, जल, पुष्पादि सर्व  
द्रव्य हाथमें लेके उपाध्याय पदकी पूजा पढै ॥ ( यथा ) द्वादशांग श्रुता  
धारान् । शास्त्राध्ययन तत्परान् । निवेशयाम्युपाध्यायान् । पवित्रे पश्चिमे  
दले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशं प्रशान्त्यै । पठन्ति येन्यानपि पाठयन्ति । अ  
ध्यापकां स्तान्पराब्जपत्रै । स्थितान्यविविधान् परिपूजयामि ॥ ८ ॥ ॐ झी श्री  
उपाध्यायेभ्योनमः स्वाहा ॥ पश्चिमदिशकीतरफ उपाध्याय पदकी स्थापना  
पूजा करे ॥ इति ॥ ❀ ॥ ( पीठे ) रकेवीमें स्यामगोलो, स्यामवस्त्र, स्यामधजा ।  
उदकालडू, ५ राजपट्ट, १७ अरिष्टरत्न, जल, पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमें ले  
के साधुपदकी पूजा पढै ॥ ( यथा ) व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान् । सुज्जध्या  
नैक मानसान् । उदक पत्रगतान् वारान् । साधुवासीस सुव्रतान् ॥ ९ ॥ वैरा  
ग्यमंतर्वचसि प्रसिद्धं । सत्यं तपो द्वादशधा शरीरे । येषा मुदक्यवगतान्  
सुकृतान् पवित्रान् । साधून्सदातान् परिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ झी श्री सर्व  
साधुभ्योनमः स्वाहा ॥ ५ ॥ उत्तरदिशकी तरफ साधुपदकी स्थापना पूजा  
करे ॥ इति ॥ ❀ ॥ ( पीठे ) रकेवीमें सपेदगोलो, सपेद धजा, सपेद  
वस्त्र, ६७ मोती आदि, श्वेतद्रव्य हाथमें लेके । दर्शन पदको श्लोक बोलके  
चढावे ॥ ( यथा श्लोकः ) जिनेन्द्रोक्त मतश्रद्धा । लक्षणे दर्शनेयजे । मिथ्या  
त्व मथनं शुद्धं । नस्त मीशान् सद्वले ॥ ११ ॥ ॐ झी श्री सम्यग् दर्शनाय  
नमः स्वाहाः ॥ ६ ॥ ईशान कृणु दर्शनपदकी स्थापना पूजा करै ॥ इति ॥  
( पीठे ) रकेवीमें ५१ मोती, श्वेतगोलो, श्वेत धजा, चावलका लडू आदि  
श्वेतद्रव्य हाथमें लेके, ग्यानपदको श्लोक बोलके चढावे ॥ ( श्लोकः )  
मशेष द्रव्यपर्याय । रूपमेवाव चासकं । ग्यानमाग्नेय पत्रस्थं । पूजयामि हि  
तावहं ॥ १२ ॥ ॐ झी श्री सम्यग् ग्यानाय नमः स्वाहा ॥ ७ ॥ अग्निकूण  
कीतरफ ग्यानपदकी स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ❀ ॥ ( फेर ) रकेवीमे  
सपेद गोलो, सपेद धजा, ७० मोती, श्वेतवस्त्र, आदि श्वेत द्रव्य हाथमें

लेके चारित्र पदको श्लोक बोलके चढ़ावे ॥ (श्लोकः) सामांयिकादि  
जिनेंदै । आरित्रं चारुपंचधा । संस्थापयामि पूजार्थं । पत्रैह नैकते क्रमा  
त् ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् चारित्राय नमः स्वाहा ॥ ८ ॥ नैकते कूणकी  
तरफ चारित्र पदकी स्थापना पूजा करै ॥ इति ॥ ॐ ॥ (पीठे) रकेवीमें  
५० मोती, श्वेतगोलो, श्वेत धजा आदि, सर्व सपेदद्रव्य हाथमें लेके, तप  
पदको श्लोक बोलके चढ़ावै ॥ (श्लोकः) विधा वादशधानिर्वा । पूतेपत्र  
तपःस्वयं । निधापयामि अक्तयात्र । वायव्यां दिशि शर्मदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं  
श्री सम्यग् तपसे नमः स्वाहा ॥ ९ ॥ वायव कूणकी तरफ तप पदकी  
स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ॐ ॥ (अथ अर्थ) ॥ निःस्वेदत्वादि दिव्या  
तिशय मयतनून् श्री जिनेंद्रान् सुसिद्धान् । सम्यक्तादि प्रलुष्टाष्टक गुणजृदा  
चार साराश्रसूरीन् । शास्त्राणि प्राणिरक्षा प्रवचन रचना सुंदराण्यादि संज्ञं ।  
स्तस्मिन्ध्वै पाठकानां यतिपति सहिता नर्चयाम्यवदानै ॥ १५ ॥ इत्थमष्ट  
दलं पद्मं । पूरये दहंदादिभिः । स्वाहातै प्रणवायश्च । पदैर्घिभिर् निवृत्तये ॥  
१६ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्जुन असिआनवा सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्र तपसे  
ज्यो ह्रीं श्री अर्ह परमेष्ठिन परमनाथ परमदेवाधिदेव परमार्हन् परमानंत  
चतुष्टय । परमात्मने तुभ्यं नमः ॥ (इति मूलमंत्रः) ॥ इति सिद्धचक्र  
प्रथमवल्लय मूलपूजा विधिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ द्वितीय वल्लयपूजा विधि ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ प्रथम वल्लयमें एक मध्य, चार दिश, चार विदिश, एवं अष्टदल  
कमलके आकार नवकोठा मंमलके मध्यभागमें होय । उन्कोकी पूर्वोक्त  
प्रकार पूजा करै ॥ (पीठे) दूसरा वल्लयमें चूनीके आकार १६ कोठा  
होय । (जिसमें) एकेक कोठाके अनंतर आठ कोठामें, अर्वादि आठ  
वर्ग स्थापन करै । (और) एकेक कोठा बीचमें खाली रहा है (उसमें)  
अनाहत पद (ॐ ह्रीं एमो अरिहंताणं) ऐना पदस्थापन करै ॥ (पीठे)  
एक रकेवीमें, मिश्री लवंग (तथा) एक रकेवीमें मोटी दाखां लेके खमा  
रहे । अनाहत पदमें मिश्री, लवंग, चढ़ावे ॥ और आठ वर्गमें दाया चढ़ावे ॥  
(यथा) ॐ ह्रीं एमो अरिहंताणं ॥ मिश्री लवंग चढ़ावे ॥ १ ॥ अ आ  
इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ व औं अः ॐ ह्रीं स्वर वर्गाय नमः ॥

( इहां ) १६ दाख चढावै ॥ ५ ॥ उँ ज़ी एमो अरिहंताणं ॥ मिश्री लवंग  
 ॥ ३ ॥ क ख ग घ ङ । उँ ज़ी व्यंजन कवर्गायैनमः ॥ १६ ॥ दाखच ॥ ४ ॥  
 उँ ज़ी एमो अरिहंताणं ॥ ७ ॥ चठजऊज । उँ ज़ी चवर्गायैनमः ॥ ६ ॥  
 उँ ज़ी एमो अरिहंताणं ॥ ७ ॥ ठठमढण । उँ ज़ी टवर्गायैनमः ॥ ७ ॥  
 उँ ज़ी एमो अरिहंताणं ॥ ८ ॥ तथदधन । उँ ज़ी तवर्गायैनमः ॥ १० ॥  
 उँ ज़ी एमो अरिहंताणं ॥ ११ ॥ पफवन्नम । उँ ज़ी पवर्गायैनमः ॥ १२ ॥  
 उँ ज़ी एमो अरिहंताणं ॥ १३ ॥ यरलव । उँ ज़ी यवर्गायैनमः ॥ १४ ॥  
 उँ ज़ी एमो अरिहंताणं ॥ १५ ॥ शषसह । उँ ज़ी शवर्गायैनमः ॥ १६ ॥  
 पहला अवर्गसें, पवर्गतक, वर्गदीठ १६ सोले दाख चढावै ॥ सब १६  
 दाख (और) यरलव १ । शषसह २ । यह दो वर्गमें ६४ दाख चढावै ॥ ॥  
 इति दूसरा बलय पूजनविधिः ॥ ॥ ॥

॥ अव ( तीसरा बलयमें ) चार दिश, चार विदिशमें आठ परमेष्ठी, पद  
 स्थापन निमत आठ कोठा करै ॥ इस आठ कोठाके बीच बीचमें बलाका  
 तीन तीन देवे ॥ तीनु बलाकामें २४ खाना ऊवै ॥ एकेक खानेमें दो दोय ल  
 विध पद स्थापन करनेसें । चौबीस घरमें ४८ लविध पद स्थापन पूजन करना ॥

॥ ॥ अथ लविधपद पूजनविधि ॥ ॥

॥ ॥ आठ परमेष्ठी पदोंमें । उँ ज़ी परमेष्ठिने नमः स्वाहा ॥ ऐसा ८  
 बेर कहके ८ बीजोरा चढावै (और) लविध पदका नाम बोलके खारकां ४८  
 चढावै ॥ ( यथा ) ॥ उँ ज़ी अर्जु एमो जिणाणं ॥ १ ॥ उँ ज़ी अर्जु ए  
 मो न्हि जिणाणं ॥ २ ॥ उँ ज़ी अर्जु एमो परमोहि जिणाणं ॥ ३ ॥ उँ ज़ी  
 अर्जु एमो सबोहि जिणाणं ॥ ४ ॥ उँ ज़ी अर्जु एमो अणंतोहि जिणाणं  
 ॥ ५ ॥ उँ ज़ी अर्जु एमो कवुद्धीणं ॥ ६ ॥ उँ ज़ी अर्जु एमो बीयबुद्धी  
 णं ॥ ७ ॥ उँ ज़ी अर्जु एमो पयाणुसारीणं ॥ ८ ॥ उँ ज़ी अर्जु एमो आ  
 सीविसाणं ॥ ९ ॥ उँ ज़ी अर्जु एमो दिठी विसाणं ॥ १० ॥ उँ ज़ी अर्जु  
 एमो संजिनसोयाणं ॥ ११ ॥ उँ ज़ी अर्जु एमो सयंसंबुद्धाणं  
 ॥ १२ ॥ उँ ज़ी अर्जु एमो पत्तेय बुद्धाणं ॥ १३ ॥ उँ ज़ी अर्जु एमो  
 बोहि बुद्धीणं ॥ १४ ॥ उँ ज़ी अर्जु एमो उज्जुमईणं ॥ १५ ॥ उँ ज़ी अर्जु  
 एमो विउल्लमईणं ॥ १६ ॥ उँ ज़ी अर्जु एमो दसपुवीणं ॥ १७ ॥ उँ ज़ी

अर्जु एमो चतुदश पुत्रीणं ॥ १८ ॥ उँ की अर्जु एमो अरुण निमत्त कु  
 शलाणं ॥ १९ ॥ उँ की अर्जु एमो विभूषण इष्टिपत्ताणं ॥ २० ॥  
 उँ की अर्जु एमो विज्ञाहराणं ॥ २१ ॥ उँ की अर्जु एमो चारण लक्ष्मीणं  
 ॥ २२ ॥ उँ की अर्जु एमो पण्णासमणाणं ॥ २३ ॥ उँ की अर्जु एमो आ  
 गासगामीणं ॥ २४ ॥ उँ की अर्जु एमो खीरासवेणं ॥ २५ ॥ उँ की अर्जु  
 एमो सपिया सवाणं ॥ २६ ॥ उँ की अर्जु एमो मज्झासवाणं ॥ २७ ॥  
 उँ की अर्जु एमो अमियासवाणं ॥ २८ ॥ उँ की अर्जु एमो सिद्धायणाणं  
 ॥ २९ ॥ उँ की अर्जु एमो जयवया महाइ महावीर वधमाण बुद्धरि ।  
 सीणं ॥ ३० ॥ उँ की अर्जु एमो उग्गतवाणं ॥ ३१ ॥ उँ की अर्जु एमो  
 अक्खीण महाणसियाणं ॥ ३२ ॥ उँ की अर्जु एमो वध्माणाणं ॥ ३३ ॥  
 उँ की अर्जु एमो दित्तवाणं ॥ ३४ ॥ उँ की अर्जु एमो तत्तवाणं ॥  
 ३५ ॥ उँ की अर्जु एमो महातवाणं ॥ ३६ ॥ उँ की अर्जु एमो घोर  
 तवाणं ॥ ३७ ॥ उँ की अर्जु एमो घोर गुणाणं ॥ ३८ ॥ उँ की अर्जु ए  
 मो घोर परिक्रमाणं ॥ ३९ ॥ उँ की अर्जु एमो घोर गुण वंजयारीणं ॥  
 ४० ॥ उँ की अर्जु एमो आमोसही पत्ताणं ॥ ४१ ॥ उँ की अर्जु एमो  
 खेत्तोसही पत्ताणं ॥ ४२ ॥ उँ की अर्जु एमो जत्तोसही पत्ताणं ॥ ४३ ॥  
 उँ की अर्जु एमो विप्पोसही पत्ताणं ॥ ४४ ॥ उँ की अर्जु एमो सवोसही  
 पत्ताणं ॥ ४५ ॥ उँ की अर्जु एमो मणवलीणं ॥ ४५ ॥ उँ की अर्जु  
 एमो वयण वलीणं ॥ ४७ ॥ उँ की अर्जु एमो कायवलीणं ॥ ४८ ॥ उँ की अ  
 र्जु अमयाललब्धि पदेज्योनमः ॥ ४९ ॥ इसीतरे लब्धिपदका नाम बोल २  
 के तीजे चौथे पांचमें बलयमें खारकां सब ४८ चढ़ावे ॥ ( पीठे ) मंमल  
 जीके गलेके स्थानके कीं कारजी स्थापन कि । है ( जहांसे ) साढातीन  
 बलाका, मंमलजीके चौतरफ देके नीचे(क्रों) ऐसा अक्षर लिखा है (जिसके)  
 प्रथम बलयमें, आठ दिशाये, आठ गुरु पादुकां स्थापन करके ८ दाम  
 मफल चढ़ावे ॥ ( यथा ) उँ की अर्जु पाडुकाज्योनमः ॥ १ ॥ ( दामम  
 चढ़ावे ) ॥ उँ की सिद्ध पाडुकाज्योनमः ॥ २ ॥ उँ की आचार्य पाडुका  
 ज्योनमः ॥ ३ ॥ उँ की गुरुपाडुकाज्योनमः ॥ ४ ॥ उँ की परमगुरु पाडु  
 काज्योनमः ॥ ५ ॥ उँ की अदृष्टगुरु पाडुकाज्योनमः ॥ ६ ॥ उँ की अनंत

गुरुपाङ्काज्योनमः ॥ ७ ॥ नै ज्ञी अनंतानंत गुरुपाङ्काज्योनमः ॥ ८ ॥ नै ज्ञी  
 श्रीअष्टगुरु पाङ्कज्योनमः स्वाहा ॥ इसीतरै ठावलयमें ८ दाम्म चढावे ॥  
 ( पीठे ) सातमा वलयमें आठे दिशायें । जयादिक ८ देवीकों स्थापन कर  
 के ॥ ८ नारंगी चढावै ॥ ( यथा ) नै ज्ञी जयायै नमः स्वाहा ॥ १ ॥ नै ज्ञी जंजायै  
 नमः स्वाहा ॥ २ ॥ नै ज्ञी विजयायै नमः स्वाहा ॥ ३ ॥ नै ज्ञी यंजायै नमः  
 स्वाहा ॥ ४ ॥ नै ज्ञी जयंत्यै नमः स्वाहा ॥ ५ ॥ नै ज्ञी मोहायै नमः स्वाहा ॥ ६ ॥  
 नै ज्ञी अपराजितायै नमः ॥ ७ ॥ नै ज्ञी अंजायै नमः ॥ ८ ॥ ( इसीतरै ) सातमा व  
 लयमें ८ नारंगी चढावै ॥ ९ ॥ ( पीठे ) आठमा वलयमें । १६ विद्यादेव्याकों  
 स्थापन करके चांदीका बरग लगाई नई १६ सुपास्यां चढावै ॥ ( यथा ) ॥  
 नै ज्ञी रोहण्यै नमः ॥ १ ॥ नै ज्ञी प्रहृत्यै नमः ॥ २ ॥ नै ज्ञी वज्रशंखदा  
 यै नमः ॥ ३ ॥ नै ज्ञी वज्रांकुशायै नमः ॥ ४ ॥ नै ज्ञी चक्रेश्वर्यै नमः ॥ ५ ॥  
 नै ज्ञी पुरुष दत्तायै नमः ॥ ६ ॥ नै ज्ञी काल्यै नमः ॥ ७ ॥ नै ज्ञी महाका  
 ल्यै नमः ॥ ८ ॥ नै ज्ञी गौर्यै नमः ॥ ९ ॥ नै ज्ञी गंधार्यै नमः ॥ १० ॥ नै  
 ज्ञी सर्वोच्च महाज्वालायै नमः ॥ ११ ॥ नै ज्ञी मानव्यै नमः ॥ १२ ॥ नै ज्ञी  
 वैरोव्यायै नमः ॥ १३ ॥ नै ज्ञी अह्रुतायै नमः ॥ १४ ॥ नै ज्ञी मानस्यै नमः  
 ॥ १५ ॥ नै ज्ञी महामानस्यै नमः ॥ १६ ॥ ( इसीतरै ) आठमा वलयमें  
 चारु तरफ १६ विद्यादेवीकों १६ सुपारी चढावै ॥ १७ ॥ ( पीठे ) नवमा  
 वलयकै वामपासे । २४ शाशनदेव्याकों स्थापन करके २४ सुपास्यां चढावै ॥  
 ( यथा ) ॥ नै चक्रेश्वर्यै नमः ॥ १ ॥ नै अजितवलायै नमः ॥ २ ॥ नै उरि  
 तायै नमः ॥ ३ ॥ नै काल्यै नमः ॥ ४ ॥ नै महाकाल्यै नमः ॥ ५ ॥ नै श्या  
 मायै नमः ॥ ६ ॥ नै शांतायै नमः ॥ ७ ॥ नै ऋकुटियै नमः ॥ ८ ॥ नै सुतार  
 कायै नमः ॥ ९ ॥ नै अशोकायै नमः ॥ १० ॥ नै मानव्यै नमः ॥ ११ ॥ नै  
 चंमायै नमः ॥ १२ ॥ नै विदितायै नमः ॥ १३ ॥ नै अंकुशायै नमः ॥ १४ ॥  
 नै कंदर्पायै नमः ॥ १५ ॥ नै निर्वाण्यै नमः ॥ १६ ॥ नै वलायै नमः ॥ १७ ॥  
 नै धारण्यै नमः ॥ १८ ॥ नै धरणप्रियायै नमः ॥ १९ ॥ नै नरदत्तायै नमः ॥ २० ॥  
 नै गांधार्यै नमः ॥ २१ ॥ नै अंविकायै नमः ॥ २२ ॥ नै पद्मावत्यै नमः ॥ २३ ॥  
 नै सिद्धायिकायै नमः ॥ २४ ॥ इसीतरै वामपासे २४ ॥ देव्यांकी स्थापना  
 करै ॥ ( पीठे ) दक्षिणपासे २४ यक्ष राजकी स्थापना करके २४ सुपारी

चढावै ॥ ( यथा ) ॥ वैवस्वतायनमः ॥ २४ ॥ वै पार्श्वायनमः ॥ २३ ॥  
 वै गोमेधायनमः ॥ २२ ॥ वै नृकुट्टयेनमः ॥ २१ ॥ वै वरुणायनमः ॥ २० ॥  
 वै कुवेरायनमः ॥ १९ ॥ वै यक्षगान्धर्वायनमः ॥ १८ ॥ वै गंधर्वायनमः ॥ १७ ॥  
 वै गरुडायनमः ॥ १६ ॥ वै किन्नरायनमः ॥ १५ ॥ वै पातालायनमः ॥  
 १४ ॥ वै षण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ वै कुमारायनमः ॥ १२ ॥ वै यक्षा  
 जायनमः ॥ ११ ॥ वै ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ वै अजितायनमः ॥ ९ ॥ वै  
 विजयायनमः ॥ ८ ॥ वै मातंगायनमः ॥ ७ ॥ वै कुसुमायनमः ॥ ६ ॥ वै  
 तुंगुरवेनमः ॥ ५ ॥ वै यक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ वै त्रिमुखायनमः ॥ ३ ॥  
 वै महायक्षायनमः ॥ २ ॥ वै गोमुखायनमः ॥ १ ॥ इसी तरे नवमा बल  
 यके दहिणेंपासे २४ यक्षकी स्थापना करके २४ सुपारी चढावै ॥ ( पीठे )  
 चार दिशायें ४ द्वारपालकी स्थापना करके । पीला बलवाकुल चढावै ॥  
 ( यथा ) वै कुमुदायनमः ॥ २ ॥ ( पूर्वदिशी ) ॥ वै अंजनायनमः ॥  
 दक्षिण ॥ १ ॥ वै वामनायनमः ॥ ( पश्चिम ) ॥ ३ ॥ वै पुष्पदंतायनमः  
 ॥ ४ ॥ उत्तरदिशि ॥ ५ ॥ ( पीठे ) चार विदिशकीतरफ चार वीर  
 पदे कृष्ण बलवाकुल चढावे ॥ ( यथा ) वै माणजद्रायनमः ॥ २ ॥ वै  
 पूर्णजद्रायनमः ॥ १ ॥ वै कपिलायनमः ॥ ३ ॥ वै पिंगलायनमः ॥ ४ ॥  
 ॥ ५ ॥ इसीतरे दशमा बलयमें आठुं दिशायें । ४ द्वारपाल । ४ वीर स्था  
 पन करै ॥ ( पीठे ) पूर्ण कलशके आकार, ऊपरमें किया ऊवा, सिद्धचक्र  
 जीके गल्लेके स्थानक, नवनिधान पदे, नव सोनें चांदी आदिकका कलशमें  
 यथाशक्ति रोकनाणो घालके स्थापन करै ॥ ( यथा ) वै नैसर्गकायनमः  
 ॥ १ ॥ वै पांशुकायनमः ॥ २ ॥ वै पिंगलायनमः ॥ ३ ॥ वै सर्वरत्नायन  
 मः ॥ ४ ॥ वै महापद्मायनमः ॥ ५ ॥ वै कालायनमः ॥ ६ ॥ वै महाका  
 लायनमः ॥ ७ ॥ वै माणवायनमः ॥ ८ ॥ वै शंखायनमः ॥ ९ ॥ इसीतरे  
 मुखस्थानके नवनिधानपदे ए कलश स्थापन करे ॥ १० ॥ ( पीठे ) को  
 हलोफल हाथमें लेके । दक्षिण नेत्रके बाहर पासमें बंगलीका आकार  
 किया है ॥ ( जहां ) वै श्री विष्णु स्वामिनेनमः ॥ १ ॥ ऐसा कट्टके  
 चढावे । ( फेर ) कोहलोफल हाथमें लेके वामनेत्रपासे बंगलीमें ( वै  
 क्षेत्रपालायनमः ) ॥ ऐसा बोलके चढावे ॥ २ ॥ ( पीठे ) तीसरो कोह



लोफल हाथमें लेके, अधःपीदीके दहिणेंपासे बंगलीमें ( उँ चक्रेश्वर्येन  
मः ॥ ) ऐसा बोलके चढावे ॥ ३ ॥ ( पीठे ) चौथो कोहलोफल हा  
थमें लेके नीचे पीदाके वामपासे बंगलीमें ( उँ अप्रसिद्ध सिद्धचक्राधिष्ठाय  
कायनमः ) ॥ ऐसा बोलके चढावे ॥ ४ ॥ ( पीठे ) दशदिगायें इंद्रादिक  
दशदिग्पालकों स्थापन करे ( वनसकेतो ) अपना २ वर्णमुजव वस्त्र नेवे  
य पुष्पादि द्रव्य चढावे ( अथवा ) सर्वकों एक द्रव्य सर्व समान चढावे  
( यथा ) उँ इंद्रायनमः ॥ १ ॥ कनकवर्ण । चंदन, केशर, चंपो, द्राख,  
पीत्रोवस्त्र, पान, सुपारी, रोकनाणो, आदि सर्व द्रव्य चढावे ॥ २ ॥  
( अशिकूणे ) उँ अग्नयेनमः ॥ १ ॥ रक्तवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥  
२ ॥ ( दक्षिणदिशि ) उँ यमायनमः ॥ ३ ॥ कालैवर्णका वस्त्रादि द्रव्य  
चढावे ॥ ३ ॥ ( नैऋतकूणे ) उँ नैऋतायनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रा  
दिक द्रव्य चढावे ॥ ( पश्चिमदिशि ) उँ वरुणायनमः ॥ धूसरवर्णका  
सब द्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ ( वायव्यकूणे ) उँ वायवेनमः ॥ ६ ॥ नीलवर्णका  
वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ उत्तरदिशि ) उँ कुबेरयनमः ॥ ७ ॥ सपेद  
वर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ईशानकूणे ) उँ ईशानायनमः ॥ ८ ॥  
सपेद वर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ( अगोदिशिः ) उँ नागायन  
मः ॥ ९ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ ( ऊर्ध्वदिशि )  
मस्तके । उँ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढावे ॥  
इसीतरे दशदिग्पालको स्थापन पूजन करै ॥ ५ ॥ ( पीठे ) नीचे पीदी  
स्थानकक बीचमें ए कोठा किया ऊँचा है ( जहां ) नवग्रहकी स्थापना  
पूजा करै ॥ ( यथा ) उँ सूर्यायनमः ॥ १ ॥ स्यावर्णका वस्त्रादिक द्रव्य  
चढावे ॥ १ ॥ उँ सोमायनमः ॥ सपेदवर्ण वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ २ ॥  
उँ ज्योमायनमः ॥ लाल रंग वस्त्रादिक द्रव्य ॥ ३ ॥ उँ बुधायनमः ॥ ४ ॥  
मुंगे रंगका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ उँ बृहस्पतयेनमः ॥ पीत्रवर्ण वस्त्रा  
दिक द्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ उँ शुक्रेयनमः ॥ सपेदवर्ण नांदोल वस्त्रादि द्रव्य  
चढावे ॥ ६ ॥ उँ शनिश्चरायनमः । नीत्ररंगका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ७ ॥  
उँ राहवेनमः ॥ काले रंग वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ उँ केतवेनमः ॥  
वीर रंग वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ इ गोरै नीचे नवग्रहकी स्थापना

करै ( पीठे ) स्नात्र, नवपदजीकी पूजा करायके । आरती नवपदजीकी करै  
 पीठे नवपदको चैत्यबंदन करै॥ उपनसन्नाण० ( तथा ) जोधुरि श्रीअरिहंत  
 मूलदृढ पीठपश्चियो । सिद्धसूरि उक्ताय साज्ज चिज्ज साह गरबिउ । दंश  
 ण नाण चरित तव पमिशाहे सुंदरू ॥ तत्तत्तखर सिरि वग्ग लद्धि गुरु पयद  
 लमंवरू । दिशिवाल जक्ख जक्खणीपमुह सुरकुशमेहि अलंकियो । सो  
 सिद्धवक्क गुरु कप्पतरू अलमन वंढिय दियउ ॥ १ ॥ ( पीठे ) । जंकिंचि  
 नमोत्थुणं० नमोर्जुत सिद्धा० कहके । नवपदजीको स्तवन ॥ उपन  
 सन्नाण महोमयाणं० आदिस्तवन कहके । जयवीरयाय अनत्थू कहके १  
 नव० कावसग्ग करै ॥ नवपद स्तुति कहै ॥ ( पीठे ) गुरूकेपास आयके  
 वाशक्षेप लेके ग्यानपूजा, गुरुपूजा करै ॥ धूप खेवै । रोकनाणो चढावे ॥  
 ( पीठे ) यथाशक्ति साधनीवात्सल्य करै ॥ इति नवपद मंमल पूजन विधिः  
 ॥ अब जाणना चाहियै ( कि ) जब कोई श्रीमंत उन्नीकी तपस्या करै  
 तब तो ठए महिने मंमल पूजा विस्तार बिशीसाय कराता रहै ॥ और  
 तपस्या ४॥ साढाचार बरसमें पूरण होय (तब) बमउठवकेसाथ मंमल रच  
 ना पूजा करै ॥ उद्यापन करै ॥ संपूर्ण देवखातै, ग्यानखातै, गुरुखातैका  
 उपगरण नव नव करायके । प्रथम धर्मशालामें सुशोजित करै । दशपनरैदिन  
 जलजात्रादि अनेक तरैका उठव करै ॥ ( पीठे ) देवका देवखातै देवै ।  
 ग्यानका ग्यानखातै । गुरूका गुरूखातै । उपगरणादि द्रव्य देवै ॥ (और)  
 ऊर्ध्वरहित क्रिया जावसैं संपूर्ण करै । द्रव्यपूजा अपनी शक्ति मुजव करै॥  
 ( और ) पंचायती संघ तरफसैं मंगलीक अर्थ ठए महिने मंमल रचना  
 नवपद पूजा अवश्य पूर्वोक्त विधिसहित करता रहै ॥ उन्नी करनेका विधि  
 ( तथा ) नवपद पूजा, स्तवन, धूर्इ, संपूर्ण, इस रत्नसागरका प्रथम जागमें  
 लिखा ऊत्रा है ( इससैं ) इहां न लिखा है । उसमुजव करै, करावै ॥  
 ॥ ॐ ॥ इति विशेष विधि ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ संधमालारोपण विधि लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ प्रथम मालारोपणका मङ्गलार्तके पहलेदिन मध्याह्नसमे सुहाग  
 एखी. चांदी आदिका आलरु जोतर, कुंकुंको स थियो करके, ऊपर चाव  
 लांको करै । पांच सुपारी नालेर १ धरी । माला पधरावी सुहागएखी अथ

ने हाथसे मस्तकपर धरै । ( पीठे ) सारै संघसहित गीत गावते वाजित्र वाजते गुरुपासे आवै ॥ सधवस्त्री गवली करै । और स्त्रीयां गवलीगावै ॥ ( पीठे ) गुरु उर्ध्वस्वासे, वर्धमानविद्या मंत्रेकरि वशक्षेप मुनीचरी माला प्रतिष्ठत करै ( यथा ) ॥ उँ झी एमो अहिंताणं । उँ झी एमो सिद्धाणं । उँ झी एमो आयरियाणं । उँ झी एमो उवप्पायाणं । उँ झी एमो लोए सब्बाज्जाणं । उँ झी एमो अरहउत्तगवउवप्पमाणास मित्तस । जए विजये जयंते अपराजिए सब्बसिद्धिए उँ झी ठः ठः ठः स्वाहा ॥ इति वर्धमान विद्या ॥ इसीतरै मालापर वशक्षेप करावके वाजित्र वाजते स्वरथानक आवै । वाजोट ऊपर थाल रखे । धूप दीप सहित रात्री जागणं करै । श्रीफलादिककी प्रज्ञावना करै । ( पीठे ) माला ग्राहक प्रज्ञातरुमें प्रतिक्रमण करके पमिलेहण देव वंदनादि करे । जिनपूजा करे ( पीठे ) मङ्गलवेलाये वाजित्रादि उन्नव सहित संघसाथे गुरुपासे आवै । पांच श्रीफल रोकनाणो हाथमें लेके । नांदकों ३ प्रवृत्तिणा देके झेठ करे । नांदके चौखूणें साधियाचार कुंकु चावलका करै ॥ ऊपर अज्ञा विदामादि फल चढावे ॥ ( पीठे ) मालाग्राहक चरवलो मुहपत्ती हाथमें लेके गुरुकेसाथ इरियावही पमिक्कमें ॥ ( पीठे ) श्रावक खमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहै ॥ फेर खमासमण देके, इच्छकार जगवन् तुह्मे अहं संघपति माला आरोहावणि देववंदामणि वश निक्षेप करो ( तब ) गुरु वशक्षेप करे ( पीठे ) फेर खमाससण देई तुह्मे, अहं संघपतिमाला आरोहावणी देववंदायो ( गुरुकहे वंदेह ) श्रावक इच्छ कही गुरुकेसाथ देववंदन करे ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ देववंदन विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम खमासण देके इच्छा ० जगवन् चैत्यवंदन करुं ( गुरुकहे करेह ) पीठे, गुरु चैत्यवंदन बोले ॥ श्रावक नमोत्थुणं कहै ॥ अरिहंतचेइ ० कही । एक नवकारको कावसग्ग करे । नमोर्झतु सिद्धा ० कहके । गुरु, स्तुति कहे ( यथा ) अर्हस्तनोतु सश्रेय । श्रियं यध्याननो नरैः । अप्येद्री सक लावेहि । रहंसा सहसोच्यते ॥ १ ॥ ( पीठे ) लोगस्सउज्जा ० । सबलो ए ० । वंदन ० । अनत्थू ० कहके १ नवका ० ॥ ( स्तुति कहै ) ॥ उमिति मंताय । शासनस्य नता सदायदङ्गीव । आश्रियंते श्रियांते । जवतो २ जिना

पातु ॥ २ ॥ ( पीठे ) पुक्खारंवरदी० वंदन० कहके १ नोकार० करै ( स्तुति )  
नवतत्त्वयुता त्रिपदी । मिश्रेता रुचिज्ञान पुण्यशक्तिमता । वरधर्म कीर्तिविद्या ।  
नद्यास्याज्जनगी जीवात् ॥ ३ ॥ ( पीठे ) सिद्धाणं बुद्धाणं० ममदिसंनु,  
यावत्कहै ॥ ( ततः ) श्रीशांतिनाथ आराधनार्थ करैमिका० । वंदन० ।  
अनत्थू० कहके । एक लोगस्सको कावसग्ग करै ॥ नमोर्हत्तू० ( स्तुति० )  
॥ श्रीशांतिश्रुतशांति । प्रशांतिको वशांति मुपशांति । नयतुसदा यस्यपदा  
सुशांतिदाः शांतिजिने ॥ ४ ॥ ( ततः ) चादशांगी आराधनार्थ क० ।  
वंदन० एक नोकारको का० । पारके नमोर्हत्तू० सकलार्थ सिद्धिसाधन ।  
बीजो पांगा सदास्फुरदुपांगा । जवतादनुपहतमहा । नमो पहा चादशांगीव  
॥ ५ ॥ ( ततः ) सुअदेवयाए आराधनार्थ क० ॥ अनत्थू० कहके १ नव  
कार० ( नमो० ) वंदवदती वागवादनी । जगवति फः श्रुतगमेत्तु । रंगसं  
रंगमितिवर । तरणीस्तुन्यं नमस्तीहः ॥ ६ ॥ ( ततः ) शासन देवता नि  
मित्तं करे० । अनत्थू कहै १ नवकार० ( स्तुतिः ) उपसर्गं विलय विष  
न । निरती जिन सासनावनै करता । हनमिह समिही तळुते । स्पुशासनै  
देवतानवतु ॥ ७ ॥ ( पीठे ) समस्त देवावजगराणं शांतिकराणां समदिधि  
समाहि० । अनत्थू० । १ नवकार० । ( स्तुतिः ) संघत्रये गुरु गुणोघ  
निर्घोसुवैया । व्रत्यादिकृत्य करणैक निवश्चकद्धा । तेशांतये सहजयंतु  
सुरा सुरीजिः । सधृष्टयो निखिलविघ्न विघातदह्ना ॥ ८ ॥ प्रगटणें एक  
नवकार, नमोत्थुणं०, जायंतिचेइ०, नमोर्हत्तू० कहके स्तवन कहै ॥ ३  
मिति नमो जगवत्त । अग्रिहंत सिद्धाचारिय उवजाए । वरसवसाज्ज मुणिसं  
घ । धम्मतिथय पवणरस ॥ १ ॥ सप्पणव नमो तद् जगवद् । सुअदेवयाइ  
सुद्धयाए । सितसंति देवयाय । सियपवणदेवयाणंच ॥ २ ॥ इंदगणीयमने  
रइया । वरुणो वायु कुवेर ईसाणा । वंजो नागुत्ति दसम । मविय सुदिसाण  
पालाण ॥ ३ ॥ सोम यम वरुण बेसमण । वासवाणं तदेव पंचन्दं । तद्  
लोगपालाणं । सुराई गह्वाणय नवन्दं ॥ ४ ॥ साहंतस्स समकम्बं । मअंमिणचेव  
धम्मणुणाणं । सिद्धिमिग्गं गच्छत । जिणाणं नवकार उ जणियं ॥ ५ ॥  
इति स्तवनं ॥ जयवीरराय कहै ॥ ( पीठे ) जगवान आगे पमदा करके माला  
आहक, गुरू प्रतई चादशावत्त वंदनाये वदि ( पीठे ) अमा होके कहै ।

इच्छाकारज ० तुझे अहं संघपतिमाला आरोहावणी उद्देशावणी नंदीसुत्र संज्ञ  
लावणी कानसग्न करावो । ( गुरु कहे करेह ) इच्छं, संघपतिमाला आरो  
उद्दे ० करेमिकानसग्न ॥ अनत्थु ० कहके १ लोगस्सको का ० ॥ प्रगट  
लोगस्सकहे ॥ गुरुपिण कानसग्न करे ॥ ( पीठे ) मालाग्राहक खमासण  
देई । इच्छाकार जगवन नंदीसुत्र संज्ञलावो ( तव ) गुरु ऊना होके हाथ  
मां, वासक्केप लेके ( तीन नवकार सुणावे ) नित्यारग पारगाहोह कहके  
मस्तकपर वासक्केप करे । ( पीठे ) श्रावक खमासमण देके इच्छा ० संघपति  
माला उद्देशन ( गुरु ० उद्देशन ) । फेर श्रावक इच्छामि ० इच्छाका ० । किञ्च  
णामी ( गुरु ० वंदित्तापवेह ) फेर खमा ० । इच्छंतुझे अहं संघपतिमाला  
उद्दिन । इच्छामो अणुसद्धि ॥ उदिधि १ खमासमणाणं । हत्थेणं ।  
सुत्तेणं । अत्थेणं । तडनयेणं । जोगकरी जाहि । गुरुगुण वृद्ध जाहि ।  
नित्यारग पारगाहोह ॥ ( फेर ) खमासण देई तुह्माणं पवेइए  
संदिसह साज्जाणं पवेमी ॥ ( गुरुकहै पवेह ) पीठे खमासण देके  
तीन नवकार गुणतां नांदकों ३ प्रदक्षिणा देवै । वासक्केप चढावे ॥  
गुरु १ प्रदक्षिणा देवे ( पीठे ) माला ग्राहक मुहपत्ती पमिले है ॥  
खमासण देके । इच्छा ० । तुह्माणं पवेइयं संदिसह जगवन कानसग्न करे  
मी । इच्छामि ० । इच्छाका ० जगवन तुझे अहं संघपति माला उद्देशामणी  
आरोहावणी करेम कानसग्न ॥ अनत्थु कहके १ लोगस्सको का ० ।  
प्रगट लोगस्स कहे । ( पीठे ) खमासण देके वैसणोसंदीसानं । दूजे ख  
मासणें वैसणोठानं । पीठे खमासण देके जो विधि कस्तां अवधि आसात  
ना लागी होय । ते सहू मन वचन कायार्थे करी मिच्छा ० ॥ इति नांदकी  
किरिया ॥ ( पीठे ) मालाग्राहक जगवानके नव अंगें नव रुपिया आदि  
चढाके नमस्कार करे । मज्जुर्त वेलायें मंदरजी बाहर जागा होय तो जग  
वानके सन्मुख सर्व संघ आयके खमा रहे । पीठे माला ग्राहक गुरुकेपास  
आके नव अंग पूजा करे । नव रुपिया आदि शक्ति प्रमाणें ग्यानवृद्धी निम  
त जेट करे ॥ ( पीठे ) गुरु उर्धस्वासें माला हाथमांलेके ७ नवकार  
गुणें । ( पीठे ) जो माला पहिरावे जिसकों माला पहिरनार यथा शक्ति  
महिरामणी करै । माला पहिरावणेवाला उर्धस्वासें करी संघ पतिकों माला

पहिरावै ॥ दोनु जिणो ८ दिनतक सच्चित कुशीलादिकका गुरुपासे पञ्च  
रकाण करे । ( पीठे ) मंदरजीके ऊपर चढानेको धजावनाई होय ( सो )  
धजा हाथमें लेके गीतगान वाजिआदिसहत मंदरजीके बाहर कर ३ प्रद  
क्षिणा देके, गुरूकेपास वासद्धेय पूजन कराके मंदरजीपर धजा चढावे ।  
( पीठे ) सर्व संघके सन्मुख गुरु धर्म देशना देवे ॥ साधमी वात्सल्य  
करे ॥ ॐ ॥ इति संघपति मालारोपणविधि ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ उपधान तप नित्यकर्तव्यता ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ नित्य कर्तव्यता माह ॥ नित्य कर्तव्यता कापि शास्त्रोक्ता  
कापि शांप्रतं दृश्यमानपरंपरागम्यां ( तथाहि ) उपधाने श्रावकैः विरुति मध्ये  
एकं धृतमेवग्राह्यं । नान्याकापि विरुतिः ॥ १ ॥ उपधाने त्रिंशन्नि विरुतिका  
नां मध्ये एक मपि निर्विरुतिकंग्राह्यं । तथा विधिकारणे तु सति खंमादि  
ग्रहणं यत्नयाकार्यं ॥ २ ॥ उत्कटद्रव्याण्यपि न ग्राह्याणि ॥ ३ ॥ आद्र  
हरितशाकोपि न ग्राह्यः ॥ ४ ॥ धृत तैलादि व्याघारितशाकोपि न ग्राह्यः  
धूमितस्तु ग्राह्य ॥ ५ ॥ तल्लित पपंट सीरावटिकादिकमपि न ग्राह्यं ॥ ६ ॥  
अन्नादि परिवेषिकास्त्री रुत रात्रि प्रायश्चित्ताशुश्रूयतिनान्यथा ॥ ७ ॥ अन्नादि  
परिवेषकाया वस्त्राणि दंमिता खंमितादिकानि न शुश्रूयन्ति ॥ ८ ॥ जेमना  
दिज्जूपस्थान मपि व्रत प्रायश्चित्तया खंमितादि वस्त्ररहितया प्रमार्जितं शुश्रूयति  
॥ ९ ॥ यावन्ति वस्त्रायुपकरणानि तपःप्रवेश प्रथम दिने गृहीतानि चरन्ति तानि  
सर्वाण्यपि जोग्याजोग्यानि उन्नयकाल प्रतिलेखनीयानि ॥ १० ॥ जे मन स्या  
लीकचोलिकादिनि तु जेमनदिने पादोनप्रहर प्रतिलेखनासमये प्रतिलेखनीयानि  
नान्वदा नान्यथा ॥ ११ ॥ कदाचित् दारकुंमलादिकं ग्रहणं स्वदेहाउत्तार्य  
स्वगृहादौमोच्यं नवेत् तदा विनोपधानं ययास्त्रिया अहोरात्र पौषयोगृहीतो नवे  
त्तस्पादस्ते रात्रौ । नतुदिने उपधान बाहिन्यादेहं साच प्रातस्तुक्तरथाने मुंचति  
॥ १२ ॥ उपधाने सर्वाणि वस्त्राणि स्वयंवा १ । मालिकयावा २ ॥ प्रतिले  
खितानि शुश्रूयन्ति ॥ १३ ॥ सर्व क्रियानुष्ठानमादेशनिर्देशादिकं मालिकाय  
आदेशेन शुश्रूयन्ति ॥ १४ ॥ क्रियानुष्ठानकारिका मालिकापि उन्नयकाले  
प्रतिक्रमणं करोति ॥ रात्रि प्रायश्चित्तं करोति । सप्तवारान् देव वंदति । तदा शुश्रूय  
ति नान्यथा ॥ १५ ॥ रजस्वलाया दिनत्रयं तपसिन पतति ॥ १६ ॥ महास्वाऽ

ध्यायसत्कं ७।८।ए सप्तम्यादि दिनत्रयं तपसि न पतति ॥ १७ ॥ प्रतिक्रम  
 णमध्ये प्रज्ञाते नमस्कार प्रत्याख्यानमेवकार्यं ( ततो ) गुरु समीपे क्रि  
 यासरे । उपवास १। आचाम्लं २। निर्विकृतिकं ३। एकाशनंवाकार्यं ॥१८॥  
 प्रत्याख्यान पारणसमये पूर्वं नमस्कार प्रत्याख्यानं पारयति । ततः उपवा  
 सादिकं ॥ १९ ॥ प्रथमापधान द्वय प्रवेशदिने मालादिनेच नव्याम्वरेण  
 उत्सूरिता भवति ॥ पौषवादि कर्तुं न शक्यते । तदा तृतीय प्रहर प्रतिलेखनानं  
 तरं सर्वोपकरणानि प्रतिलेख्य रात्रौ पोषधो वश्यं ग्राह्यः ॥ २० ॥ प्रातरुप  
 धानवाही गुरुसमीपे समागत्य इर्यापथिकी प्रतिक्रम्य पौषधसामायिकं च  
 लात्वा प्रतिलेखना मंग प्रतिलेखनां च करोति । ततो मुखवस्त्रिकां प्रतिलेख्य  
 उही पन्त्रिलेहणं संदेसामि । उही पन्त्रिलेहणं करेमि । इति कृमा श्रमण द्वयं  
 ददाति । ततो वंदनक षट्कदानानंतरं कृमा श्रमण दशकंददाति ॥ तत्क्रमश्चायं  
 वज्रवेलं संदि० । वज्रवेलं करेमि । वइसणं सं० । वइसणं ठा० । सिझायं  
 सं० । सिझायं क० । पांगुरणं सं० । पांगुरणं पन्त्रियाणमि । कठासणं  
 सं० । कठासणं ० ॥ २१ ॥ ततो वंदनकदानपूर्वं सुखतपः पृच्छा ॥ २२ ॥  
 संध्यायामप्येवं क्रियाकरणं (नवरं) पूर्वं प्रतिलेखनां अंगप्रतिलेखनांच करोति ।  
 न उही प्रतिलेखनां । ततो गुरोर्वंदन षट्कदानानंतरं कृमाश्रमण दशकदानमेवं  
 उही पन्त्रिलेहणं सं० । उही पन्त्रिलेहणं क० २ । सझायं सं० ३ । सझायं  
 क० ४ । वइसणं सं० ५ । वइसणं ठायेमि ६ । शेषं पूर्ववत् ॥ २२ ॥ पृथक्  
 प्रतिक्रमण सद्भावात् पाक्षिकवंदनकानि सुखतपः पृच्छापर्यंतां क्रिया सर्वमपि  
 कृत्वादेयानि ॥ २३ ॥ मालापरिधाने संध्यायां मालामन्त्रिमंत्रयित्वा । स्वगृहे रा  
 त्रिजागरणं कृत्वा । प्रातर्गच्छेत् पार्श्वे मालापरिधातव्या । तदनुतद्दिनाद्दिनदशकं  
 दशाहिकाकार्या तत्र पौषधग्रहणा ज्ञावेपि त्रिविधाहारमेकाशनं कुर्वन् उपधान  
 वाहीनिरांजस्तिष्ठति ॥ २४ ॥ सर्वाण्यपि उपधानानि उत्कृष्टविधिनावहनी  
 यानि । तदज्ञावे श्रावकैरेकांतरोपवासैः साधु जिस्तु उपवासाचाम्ल निर्विकृतिकै  
 काशनै कृत्वा तावन्त उपवासापूरणीयाः । न दिनसंख्या नियमोस्ति ॥ इति नित्य  
 कर्तव्यता श्रीसमयसुंदरोपाध्याय कृतोय विधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ उपधान तप विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंचमंगले सुयवखंधे । डुवालसंतवोपुर्विं । तत्र पंचणं अश्रय

णां । नमो अरिहंताणं ( इत्यत आरज्य ) नमो लोए संवसाज्जणं । यावत्,  
एगावायणादिऊई ॥ इत्त पुण अंशयणाअठ । तत्त अंशयंविळ अठमंच ३  
तत्त तिणं अंशयणाणं । एसोपंच नमोकारो ( इत्यत आरज्य ) पढमं हवई  
मंगलं; यावत् वीयावायणादिऊई २ ए पहिलो उपधानं ॥ पंचमंगल महासु  
यंस्कंधनउ कारन । पोसाह अविधइ २० ॥ उपवास १२ ॥ विधिसुंवहता १६  
पोसा । उपवास १२ ॥ ए पहिलो वीनमतप २० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ एमेव इरियावहिया सुयकखंधेविं । अठअंशयणा तिन्निचरमाणि  
चूलाचनइ । तत्तयडवालसमतवे पुणे । इत्ताकारेण संदिसह ( इत्यत आरज्य )  
जेमेजीवाविराहिया । यावत्पढमावायणादिऊई १ ॥ तत्त अंविळ अठो  
अठमेचकेए । एगेदिया ( इत्यत आरज्य ) ठामिकानसग्गं । यावत् वीयावाय  
णादिऊई २ ॥ ए वीजो उपधान । इरियावहियां सुयकंध । इरियावहीनउ  
तप वीसमनाम ॥ अविधइ पोसा २० उपवास १२ ॥ विधिसुंवहतां पोसा  
१६ उपवास १२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ जावारियं तत्तयए पढमं अठमं । तत्त, नमोत्थुणं ( इत्यत आरज्य )  
गंधहत्थीणं । यावत् पढम.वायणादिऊई १ ॥ तत्त सोलसहिं अंवल्लेहिं एगहं ।  
लोगुत्तमाणं ( इत्यत आरज्य ) धम्मरचानरंतचक्रवट्टीण । यावत् वीयावायणादिऊ  
ई २ ॥ तत्त पुणो सोलसहिं अंवल्लेहिं एगहं ॥ अप्पमिहयवरणाण दंसणघरा  
णं ( इत्यत आरज्य ) सव्वेतिविहेणवंदामि । यावत् तईयावायणादिऊई ३ ॥ ए  
व्रीजो उपधान ॥ जावारिहंतत्तय सुयकखंध नमोत्थुणंको तप पंवीसडनाम  
विधिसुं विहितां उपवास १९ पोसा ३५ ॥ (अने) अविधकरतां पोसा ३५ ॥  
उपवास २२ थायइ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ठवणारिहं तत्तयसुयकखंधे पुव्विंचनत्थं तत्त तिन्निआयंविळाणि  
तिणिअंशयणाणं । अरिहंतचेइयाणं । ( इत्यत आरज्य ) वंदणवत्तियाए,  
अन्नत्थकसंसिएणं प्रनृतिवोसरामि । इति यावत् एगावायणा दिऊई १ ॥ ए  
चंवथो उपधान ठवणारिहं तत्तय चउकमनाम पोसा ४ उपवासअठाई २ ॥

॥ ॥ नामारिहंत चइवीसत्तयए पढमं अठमं ( तत्त ) लोगस्सज्जो  
यंगरे ॥ ( इत्यत आरज्य ) चउवीसंपीकेवली । यावत् । पढमावायणादिऊई  
१ ॥ पुणो वारसदिं आयंविळेहिं गणहिं । उत्तमजियंचवंदे ( इत्यत आरज्य )



पासंतह वक्षमाणंचेतियावत् बीयावायणादिज्जइ २ ॥ पुणोतेरसहिं आयं  
बिलेहिंगणहिं एवमए ( इत्यतआरज्य ) प्रांतयावत् तइयावायणादिज्जइ ३ ॥  
ए पांचमो उपधान नामारिहतं चउवीसत्थय अछवीसमनाम विधसुं वहिता  
दिन २८ । पोसा २८ । उपवास साढापनरै ॥ एकांतरकरै ॥ अवधइकरतां  
दिन अछवीस । उपवास साढासतरै ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ सुयत्थसुयस्कंधे पढमचउत्थं तउपंचआयंविलाणि । अंतै  
पुक्खरवरदीवद्धे ( इत्यतआरज्य ) सुयस्स जगवन् । इतियावत् । एगावायणा  
दिज्जइ १ ॥ ए षष्ठोपधान सुयत्थय षकमनाम पोसा ६ । उपवास साढातीन  
सिद्धत्थयसुयस्कंधे पोसहसहितं चउविहार उपवास १ ॥ सिद्धाणं बुद्धाणं  
( इत्यतआरज्य ) तारेइनरिंवनारिंवा, यावत् एगावायणादिज्जइ १ ॥ एसा  
तमो उपधानमालानो तप ॥ ॥ ॥ ॥

## ॥ ॥ अथोपधान प्रवेशविधि रुच्यते ॥ ॥

॥ ॥ यदि बहवः श्राविकाः (वा) श्रावका उपधानप्रवेशंति । तदासंघनाम्ना  
चंद्रबलंग्राह्यं । संघस्य कुंजराशिर्ज्ञेयः । तदज्ञावेयोयावाप्रविशति । तन्नाम्ना  
चंद्रबलंग्राह्यं ( तथा ) उपधानवाही संध्यायां वाचकादिसमीपे समागत्य ।  
ईयांपथिकीं प्रतिक्रम्य क्लमाश्रमणदत्त्वा ज्ञेयति । अमुकउवहाणतवे पेसह  
गुरुर्ज्जणति पवेसामो नवकारसीकरेज्यो । अंगपमिलेहण संदिसावेज्यो । उप  
धानवाही ज्ञेयति । तद्वत्ति । अत्र क्लमाश्रमणदानानंतरं चतुर्विधाहारं करोतु ।  
पानी यथा पिवतु । जोजनंवा करोतु व्यवस्थानास्थि ( अथ ) केनापिका  
रणेन, संध्याया क्लमाश्रमणनदत्तं । ( तदा ) प्रतिक्रमणवेलातः पूर्वं, पूर्वरीत्या  
पाश्चात्परात्रावपि क्लमाश्रमण दानंकार्यं । कालवेलायां प्रतिक्रमणं कार्यं ।  
ननुकारसी प्रत्याख्यानं च मालिकापार्श्वकार्यं ततो सूर्योदयानंतरं वाचकादि  
समीपे समागंतव्यं । तत्र यदि प्रथमोपधानक्षयं ज्ञेयं तदा वक्ष्यं नंदीकार्या ।  
नंदीमध्येएवच तउपधानस्योत्क्षेपोविधेयः ॥ अथ यदि शेषोपधानानि ( तदा )  
नंदीनियमोनास्ति । ततः प्रातःप्रथमं उत्क्षेपः कार्यः ॥ ततः पोषध सामा  
यिकयो ग्रहणं । ततो वंदनषट्कदानपूर्वं प्रत्याख्यान करणं ततोमुहपत्ती  
पर्वकं सुखतपवंदनकक्षयदानं सुखतपपृच्छाच ॥ इति उपधान प्रवेश विधिः ॥

॥ ✽ ॥ अथ तपसी प्रवेशः उत्तक्षेप विधिः ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ प्रथमं ईयापथिकीं प्रतिक्रम्य । मुखवस्त्रिकाप्रतिलेख्य । वंदनव्यं दत्त्वा कृमाश्रमणपूर्व उपधानवाही जणति । पहिलैउपधानि पंचमंगल महासु यक्खंधतवं उद्धिबह (गुरुजणइ उद्धिखवामो) पहिलैउपधानि पंचमंगल महासु यक्खंध उरकेवावणियं नंदिपवेसावणियं काउत्सगं करावेह गुरुजणइ करावेमो॥ पहिलैउपधानि पंचमंगलमहासुयस्कंध उक्खेवावणियं नंदिपवेसावणियं करे मिकाउत्सगं । अन्नत्थउत्तसिएणं । इत्यादिपूर्वकायोत्सर्गे । चंदेसु० यावच्चित्तं ते । पारितेच संपूर्णः लोगस्सुज्जोगरे वाच्यः (ततः) कृमाश्रमणपूर्व पहिलइ उपधानि पंचमंगलमहासुयस्कंध उक्खेवावणियं चेइयाइ वंदावेह (गुरुकहे वंदा वेमो) वासक्खेवं करावेह ( गुरु० करेमो ) ततोवासक्षेपपूर्व संपूर्णचैत्यवंदनं क्रियते । एवं सर्वत्रउपधानेषु उत्त क्षेपोक्षेयः ( नवरं ) प्रथमोपधानद्वये नंदी मध्येकार्यते । शेषोपधानेषुतु यदि नंदी तदा नंदीमध्ये । यदिनंदी न । तदा प्रातः प्रवेशदिने उत्तक्षेपः कार्यते । परंनिज १ नामाज्जिलापेन॥ इति उत्तक्षेपः॥

॥ ✽ ॥ अथ वाचना विधि ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ संध्यायां प्रथमं चतुर्विधा हारं प्रत्याख्याय । ईयापथिकीं प्रतिक्रम्य मुखवस्त्रिकाप्रतिलेख्य वंदनक व्यं दद्यात् पहिलइ उपधानि पंचमंगल महा सुयक्खंधस्स पढमावायणा पम्मिग्गहण करेमि काउत्सगं । अन्नत्थू ० इत्यादि जणनपूर्व । कायोत्सर्गे । सागरवरगंजीरा यावत् लोगस्स १ चित्तं ते । पारिते च संपूर्णं जणिला । कृमाश्रमणव्यपूर्व इच्छाकारेण संदिस्सइ पहिलै । उपधान पंचमंगल० पढम वायणा पम्मिग्गहणत्थंचेइयाइवंदावेह (वंदावेमो) वासक्षेपः करावेह(करावेमो) ततो वासक्षेपः कार्यः । तत श्रैत्यवंदनं । ततः कृमा० दत्त्वा । उपधान वाद्दिनः करव्य गृहीत मुखवस्त्रिकान्नादित मुखस्य अर्वावनतगात्रस्य शरत्रयं पंचानामध्यपनानां वाचनां ददाति (ततः) वायणा माहे मिहामि उक्क मं । एवं सर्वत्रनिज वाचनान्जिलापोबोध्यः १ वाचनाविधि ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ तपः संपूर्ण क्रिया निक्षेप विधि ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ तपोवसानदिने संध्यायां रत चतुर्विधाहारः प्रातर्वा ईयापथिकीं प्रतिक्रम्य । मुखवस्त्रिकां प्रतिलेख्या वंदनकद्वयं दत्त्वा उपधानादितपोवाहीजणति

इच्छाकारेण तुष्टेऽग्रहं अमुकतवं निरिक्खवह (निरिक्खामो) पुनरपि कृमाश्रमणदत्त्वा जणति। इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् अमुक तव निक्खवणत्थं कानस्स गं करावेह (करावेमो) इच्छामि० अमुगतव निक्खवणत्थं करे मे कानस्स गं। अन्नत्थू० इत्यादि जणित्वा। कायोत्सर्गे नमस्कारमेकं पठित्वा। कृमाश्रमणदत्त्वा। अमुगतव निरिक्खवणत्थं चेईयाइवंदावेह (वंदावेमो) ततः संपूर्णं चैत्य वंदनं करोति। इति निक्षेपः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पम्पिपुत्रा विगयपारणाविधि रुच्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रातः गुरुसमीपे समागत्य। पृथक् प्रतिक्रमणे कृते। मुखवस्त्रिकां प्रतिलेख्य वंदनकषट्कंददाति। गुरुभिः समं प्रतिक्रमणेकृते वंदनकक्षयमेव (ततो गुरुर्जणति) पवेयणं पवेह। इति जणित्वा जणति। पम्पिपुत्रो विगयपारण्यं करेहति ततः स्वेप्सितं प्रत्याख्यानं करोति ततः गुरुसमक्षं जणति उपधानमाहे अज्झि आसातनाकीधी जुवइ तेमिच्छामि उक्कमं ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कृमाश्रमणविधि रुच्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उपधानवाही प्रातः पदिकसमीपे समागत्य। गुर्वदेशादीर्या पथिकी प्रतिक्रम्य। आगमनमालोच्य। पौषधं सामायिकं च गृहीत्वा। कृमाश्रमणक्षयपूर्वं प्रतिलेखनां अंगप्रतिलेखनां च करोति (ततो) मुखवस्त्रिकां प्रतिलेख्य। प्रथमं कृमाश्रमणेन। उही पमिलेहणं संदिस्साएमि। द्वितीयं कृमाश्रमणेन उही पमिलेहणं करेमि (इति जणति) ततो मुखवस्त्रिकां प्रतिलेख्य। पदिकपदे वंदनकषट्कं ददाति (ततो) गुरुर्वदति, पवेयणं पवेयह। उपधानवाही वदति। इच्छामि० अमुकउवहाणनिमित्तं निरुद्धं तवं करावेह। गुरु० उपवासे आंविळे निरुद्धेति एकाशने निमित्ते तिवक्तव्यं। ततः दशभिः कृमाश्रमणै रनुक्रमेण वदति वज्जवेलंसंदिसावेमि१। वज्जवेलंकरेमि२। वइसणं संदिसावेमि३। वइसणं ठाएमि४। सझायं संदिसावेमि सझयं करेमि५। पांगुरणं संदिसावेमि६। पांगुरणं पमिवाएमि७। कठासणं संदिसावेमि८। कठासणं पमिवाएमि९०। ततो मुखवस्त्रिका पूर्वं वंदनकक्षयं ददाति (गुरुर्वदति) सुखतप उपधानवाही वदति तुमारइप्रसादि प्रसादि॥ इति प्रज्ञाति विधिः॥ तृतीयं प्रहरस्य प्रतिलेखनायां जातायां स्थापनाग्रे मालिकादेशेन ईर्यापथिकी प्रतिक्रम्य। प्रथमं कृमाश्रमणेन पमिलेहणं करेमि१ द्वितीयं कृमाश्रमणेन पोसहसालं पवज्जेमि२। इत्युक्ता मुखव

स्त्रिकां प्रतिलेखयति । एवं क्षमाश्रमणक्षय दानपूर्व अंगप्रतिलेखन मुखवस्त्रिका  
प्रतिलेखयति । इत्थ अंगसद्देण अंगक्षय कमिपट्टाङ्गेयं इति गीयत्था जणति  
ततो वसतिं प्रमा न्यति । तत्रयदि तस्मिन् दिने जोजनंरुतं जवति । तदापरिधा  
न वेपं प्रतिलेखयति । नञोपबस्त्राणि(यदि)तस्मिन् दिने उपवासो जवति । तदा  
एकमपि वशनं न प्रतिलेखयति (ततः) प्रादिकसमीपे समागत्य । ईयापथिकी  
प्रतिक्रम्य । प्रतिलेखनां १ अंगप्रतिलेखनां च पुनर्गुरुसमर्द्धं करोति । पञ्चात्सि  
क्कायं संदिस्ताणमि । करेमि आठ नवकार (ततो)मुखवस्त्रिकां प्रतिलेख्य वंदन  
पट्कंददाति (ततः) त्रिविधाहारं चतुर्विधाहारंवा प्रत्याख्यानं कृत्वा क्षमाश्रम  
ण दशकं ददाति (तत्कमश्चायं) उही पम्पिलेहणं संदिस्तावेमि १ । उही पम्पि  
लेहणं करेमि २ । सिझायं सं ० ३ । सिझायं ० ४ । वइसणं संदि ० ५ । वइस  
णं ठाणमं ६ । कवासणं सं ० ७ । कवासणं पम्पिघाणमि ८ । पांगुरणं संदिसा  
वेमि ९ । पांगुरणं परिघाणमि १० । ततः मुखवस्त्रिकां प्रतिलेख्य वंदनद्वयं दत्त्वा  
सुखतपः पूज्जा (ततः) सर्वोपकरणानि प्रतिलेखयति मातृकादि सर्व प्रतिलेखय  
ति (तथा) यस्मिन् दिने जुक्ते । तस्मिन् दिने पोण प्रहर प्रतिलेखनायां थाली  
१ कचोलादिकं सर्वमुपजुज्यमाणं प्रतिलेखयति । उपवास दिने तु । इति तृती  
य प्रहर क्रियाविधि । (तथा) पाखी पम्पिकमणा माहि असझाइनउकाउसग्ग  
न करै तो आवती पाखीसीम सर्व सिद्धांतनी असझाइ ऊवइ । इरियावहीनो  
पाठगुण्योनसूजे तेजणी असझाईमाहे पिण असझाई नउ काउससगकीजइ ।  
युगप्रधान श्रीजिनचंद्र सूरिजीयइ महोपाध्याय श्रीसागरचंद्रगणिनै पूजा तव  
एसाहीजवावदीया । योगारंजविधिरथं । अत्रचतुर्मासीमध्ये योगारंजे वर्षमाश  
शुद्धिर्न गवेप्यते दिनशुद्धीयांहा । मृडध्रुवचरक्रिप्रैः । वारेजौमं शनिंविना आ  
द्याटनंतपोनंथा । लोचनादिसुजंसुजं ॥ १ ॥ इत्याचारदिनकरे । श्रीमुहपत्ती  
पन्नासं । अवारस आरुणमि पम्पिलेहा । दंमेपत्तेसोलस । कप्पेपणवीसगोअ  
मा ॥ १ ॥ पणवीसचोलपट्टे । गुरुकंवल तहचचेवसंथारे । कवासणे अवारस  
जपेदंमेअपंचेव ॥ २ ॥ इति प्रतिलेखना विचारः ॥ पण उववासायाम । अ  
व्यं कुणह अठमंअंते । नवकारउवहाणं । इत्थिमित्तं इरियाए ॥ २ ॥ रुक्कथयंमि  
तहएगं । अठमं अंविताणवत्तीसं । अरिहंतचेइयत्थए । चउत्थमायामतिथगंच  
२ ॥ चउवीसत्थएमठम । मेगंपणवीसजंति आयामा । नाणत्थमिचउत्थं

आयामा पंचनवहाणं ॥ ३ ॥ चनवीसं नववासा । एगासी अंबिलाणसवंगं ।  
 पंचोत्तरंच पोसहसय । मुवहाणेषुजाणेषु ॥ ४ ॥ वारस वारस एगो । पण  
 वीस अट्ठाईपाण पन्नरस । अनुठय नववासा । सवंगं सट्ठचनसठी ॥ ५ ॥  
 नवकार सहिय पोरसि । पुरमट्ठ अवट्ठ एगडुन्नवेहिं । इगठाणय निविगइ ।  
 विलेहिं अत्थं विलेणंच ॥ ६ ॥ पणयाला चनवीसं । सोलस चन १ हिअठ  
 हिकमेणं । चनइडहियएगेणय । आयरणा होइनुवासे ॥ ७ ॥ इति उपधा  
 नतपोगाथाविधि संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इत्युपाध्याय श्रीलक्ष्मीप्रधानगणिः पं । मोहनलालमुनिः आचार  
 दिनकरादि ग्रंथात्संगृहीकृते आचाररत्नाकर प्रथमप्रकाशे पंचदशम व्रतारो  
 पसंस्कारः समाप्तः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अंत्यसंस्कार विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ श्राद्धोपयाप्रवृत्तेन । पालयित्वा निजंभवं ॥ कालधर्मोप  
 संप्राप्ते । कुर्यादाराधनां परं ॥ १ ॥ तिसकी यह विधि ॥  
 जिनकल्याणकस्थाने । निर्ज्जीवेस्थां निलेशुचौ । अरण्येवा  
 स्वगृहेवा । कार्यअनशनोविधिः ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम शुद्धस्थानककैविषै । ग्लानपर्यंत आराधना कराणी  
 चाहिये ॥ तथा अवस्य जाविमरणकै विषै तिथि, वार, नक्षत्र, चंद्रव  
 लादि न देखणा चाहिए ॥ तहां संघ एकठे होकै । गुरु, ग्लानकूं यथा  
 सम्यक्त आरोपणमें कहीविधि उसमाफक प्रथम विधि करावे । इतना विशेष  
 है ॥ संलेहणा आराधना अजिलाप करे । ( और ) सर्वनंदि देववंदन  
 कायोत्सर्गादि विधि उसीमाफकहै । इसमें इतना विशेष है । वैयावृत्यकार  
 कायोत्सर्गकै अनंतर । आराधन देवता आराधनार्थ करेमि कानुसर्ग ॥  
 अन्नस्थ ऊससिएणं । जावअप्पाणं बोसिरामि तक कहकै ॥ १ ॥ लोगस्स  
 को कानुसर्ग करै ॥ पारके एमो अरिहंताणं । कहकै । आराधना स्तुति  
 कहै । सो लिखे है ॥ यस्याः सांनिध्यते जग्मा । वांछितार्थ प्रसाधकाः ।  
 श्रीमदाराधनादेवी । विघ्नव्रातापहासुवः ॥ १ ॥ शेषपूर्ववत् ॥ फेर तिसीविधि

करकै । सम्यक्त दंभक उच्चारण । वादशत्रुत उच्चारण । तिसीतरेसैं वासद्धे  
पादि कायोत्सर्गजादि ( तैत्तैहीज ) संश्लेषना आराधना उच्चारण करे ॥  
प्रदक्षिणा ग्लानकी शक्ति अनुशारैं दिरावै ॥ इहां इतना विशेषहै ॥ जाव  
नियमपञ्जुवासामी ( इसपाठकै ठिराणैं ) जावझोवाए । ऐसा पाठकहै ॥  
( पीठे ) सर्व जीवासीकैसाथ अराध कर्मावै । परमेष्टि मंत्रउच्चारणपूर्वक  
दोनूं हाथ जोमके ऐसा वचन कहै ॥ स्वामेमितवजीवे ॥ सबे जीवाखमं  
तुमे । मित्तीमे सबनूएसु । वैरमअनकेणइ ॥ १ ॥ फेर गुरुकहै स्वामेह । जो  
खमई । तस्त अस्थिआराहणा । जो नखमइ तस्तनस्थि आराहणा ॥ फेर  
आवक कृताश्रमण पूर्वक कहै ॥ जगवं अणुजाणह । तव गुरुकहै । अ  
णुजाणामि । ( पीठे ) आवक परमेष्टि मंत्रउच्चारण पूर्वककहै ॥ जंमए अणं  
तेणं जवप्नमणेणं । पुढविकाइआ । आउताइआ । तेउकाइआ । वाउका  
इआ । वणस्तइ काइआ । एगैंदिआ सुहमंवा । वायरवा । पऊतावा ।  
अपऊतावा । कोहेणवा । माणेणवा । मायाएवा । लोहेणवा । पंचिंदिअणेण  
वा । रागेणवा । दोसेणवा । वाइआवा । पोमिआवा । माणेणं वायाए काएणं ।  
तस्तमिच्छामिडुकमं ॥ फेर परमेष्टिमंत्र पढकै ऐसा कहै । जंमए अणंतेणं ।  
जवप्नमणेणं । वेइंदिआ । सुहमंवा । वायरवा । शेषपूर्ववत् ) फेर परमेष्टि  
मंत्र पढके आवक कहै । जंमए अणंतेणं । जवप्नमणेणं । अलियं नणियं  
कोहेणवा । माणेणवा । मायाएवा । लोहेणवा । पंचिंदि अणेणवा । रागे  
णवा । दोसेणवा । माणेणं । वायाए । काएणं । तस्तमिच्छामिडुकमं ॥ फेर  
परमेष्टि मंत्र पढकै ॥ जंमए अणंतेणं जवप्नमणेणं । अदिनंगहिअं ।  
कोहेणवा । माणेणवा । शेषपूर्ववत् ॥ ( फेर ) परमेष्टि मंत्र पढ करकै ॥  
जंमए अणंतेणं जवप्नमणेणं । दिवं, माणुस्सं, तिरिक्ख मेऊणं, सेवियं । को  
हेण ॥ ( शेषपूर्ववत् ) फेर परमेष्टि मंत्र पढकै ॥ जंमए अणंतेणं । जव  
प्नमणेणं । अवरसपावठाणाइं । कयायं । कोहेणवा । माणेणवा । ( शेष  
पूर्ववत् ) फेर परमेष्टि मंत्र पढकै । जंमए अणंतेणं । जवप्नमणेणं । पंचिंदि  
या देवावा मणुआवा । नेरइआवा । तिरिक्खजोणिआवा । जलयरवा ।  
थलयरावा । खयरवा । सन्नियवो । सुहमंवा । वायरवा ( शेषपूर्ववत् ) फेर  
मंत्र पढकै । जम्मेपुढविकायगयस्स । सिञ्जालेहु । सकरा । सन्हावालुआ ।

गेरिअ, सुवन्नाइं, महाधट्ठं, रूवसरीरं । पाणिवहे । पाणिसंघट्टणे । पाणिपी  
 मणे । पाववट्टणे । मिञ्चत्त पोसणे गणे संलग्गं । तं निंदामि गरिहामि । वोसिरा  
 मि ॥ जस्मे पुटविकाय गयस्स । सिद्धा जेठु । सक्का, सन्हा, वालुआ गे  
 रिअ, सुवन्नाइं, महाधट्ठरूवसरीरं अरिहंतचेइएसु । अरिहंत विंवेसु । धम्म  
 ठाणेषु । जंतुरक्खण ठाणेषु । धम्मोवगणेषु । संलग्गं तं अणुमोअेमि ।  
 कल्लाणेणं । अग्नि निंदेमि ॥ फेर परमेष्टि मंत्र पढकै ॥ जस्मे आनुकायग  
 यस्स । जल करग महिआ उस्सा । हिम हरतणुरूव सरीरं । पाणिवहे । पा  
 णिसंघट्टणे । पाणिपीमणे । पाववट्टस्स । मिञ्चत्त पोषणे । ठाणसंलग्गं तं नि  
 दामि । गरिहामि । वोसिरामि । जस्मे आनुकायगयस्स । जल, करग,  
 महिआ, उस्सा, हिम हरतणुरूव सरीरं, अरिहंत विंवेसु, धम्मठाणेषु, धम्मो  
 वगणेषु, जंतुरक्खणठाणेषु, जिणन्हाणेषु, तन्हा दाहावरण सुलग्गं । तं अ  
 णुमोअेमि कल्लाणेणं अग्निनिंदेमि ( फेर ) परमेष्टि मंत्र पढकै । जस्मे तेन  
 कायगयस्स । अगणि, इंगाल, मम्मुर, जाला, अलाय विज्जवक्काते अरूव  
 सरीरं । पाणिवहे । पाणिसंघट्टणे । पाणिपीमण पाववट्टणे । मिञ्चत्त पोस  
 णे । ठाणसंलग्गं । तं निंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जस्मे तेन कायगयस्स  
 अगणि, इंगाल, मम्मुर, जाला, अलाय विज्जवक्काते । अरूवसरीरं सीआव  
 हारे । जिणपूआ धूव करणे । नेवज्जयाए । बुहाहरणाए । संलग्गं ।  
 तं अणुमोअेमि कल्लाणेणं अग्निनिंदेमि ॥ फेर परमेष्टि मंत्र पढके ॥ जस्मे  
 वानुकायगयस्स । वानु ऊंजा सासरूव शरीरं । पाणिवहे । पाणि संघट्टणे ।  
 पाणिपीमणे । पाववट्टणे । मिञ्चत्त संपोसणे । संलग्गं । तं निंदामि । गरिहा  
 मि वोसिरामि । जस्मे वानुकायगयस्स । वाटऊंजा सासरूव शरीरं । पाणि  
 ररकणे, पाणिजीवणे, साज्जवआवच्चवम्मावहारे । संलग्गं तं अणुमोअेमि  
 कल्लाणेणं अग्निनिंदामि ॥ फेर परमेष्टि मंत्र पढकै ॥ जस्मे वणस्सइकायग  
 यस्स । मूल, कठ, ठल्लि, पत्त, फुल्ल, फल, वीअ, रस, निज्जासरूव सरी  
 रं । पाणिवहे । पाणिसंघट्टणे । पाणिपीमणे । पाववट्टणे । मिञ्चत्त पोसणे  
 ठाणे संलग्गं तं निंदामि । गरिहामि । वोसिरामि । जस्मे वणस्सइकायगय  
 स्स । मूल, कठ, ठल्लि, पत्त, फुल्ल, फल, वीय, रस, निज्जासरूव शरीरं ।  
 बुहारणेषु अरिहंतचेइय पूरणेषु । धम्मठाणेषु । नेवज्ज करणेषु । संलग्गं ।

तं अणुमोक्षमि । कक्षाणेणं अज्जिन्देमि । (फेर परमेष्टि मंत्र पढकै) । जम्मे तसकायगयस्स ॥ रस रत मंस मेअठि मज्जा सुक्क चम्म रोम नह नसा रूवं शरीरं । पाणिवहे पाणिसंघट्टणे । पाणिपीनणे । पाववट्टणे । मित्रतपोसणे । ठाणे संलग्गं । तंनिंदामि । गरिहामि । वोसिरामि ॥ जम्मे तस कायगय स्स । रस, रत, मंस, मेअठि, मज्जा, सुक्क, चम्म, रोम, नह, नसारूवं शरीरं । अरिहंत चेइएसु । अरिहंत विंवेसु । धम्मठाणेसु । जंतुसक्खणठाणेसु । धम्मोवगराणेसु । संलग्गा । तं अणुमोक्षमि । कक्षाणेणं अज्जिनिन्देमि ॥ (फेर परमेष्टि मंत्र पढके) ॥ जम्मे इत्थ जवे मणेणं डुबुचिंतिअं डुबूनासिअं । डुबूकयं । तंनिंदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जंमए इत्थजवे । मणेणं । वायाए काणं । सुबूचिंतिअं । सुबूनासिअं । सुबूकयं । तंअणुमोक्षमि । कक्षाणेणं अज्जिनिन्देमि ॥ (इहां मतलब येहै) । कि समारोपित करा या व्रत सम्यक्ता दिक ( तथापि ) व्रत सम्यक्तादिक आरोपण करणा चाहिए ॥ फेर जिसनै व्रतारोप पहले करा है ( तिसकुं ) अंत वखतमें एकशो चौबीस अतीचा रौंकी आलोचना अवश्य करणा चाहिए ॥ फेर गुरु सर्वसंघसहित । वास अक्षतादि ग्लानकै मस्तकपर क्लेपन करै ॥ इति ॥ ॥ ॥

॥ ( फेर ) पंचपरमेष्टि मंत्र पूर्वक ग्लानसाधु क्षमाश्रमण देतो थको कहै ॥ आयरिअ जवआए । सीसे साहम्मिए कुल्लगणेअ । जेमेकया कसाया । सवेतिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सवस्स समण संघस्स । जगवउ अंजलिं क रिय सीसे । सवखमावइत्ता । खमामिसवस्स अहयंपि ॥ २ ॥ जयवं जम्मए चउगइगएणं । देवा, तिरिआ, मणुस्सा, नेरइआ, चउकसाउ वगएणं । पंचिं दिअ वसट्टेणं । इहम्मिजवे । अत्तेसुवा जवग्गहणेसु । मणेणं वायाए का एणं । विज्जमिआ । संताविआ । अज्जिताइया । तस्समिहामि डक्कडं ॥ (फेर) इस आलावांकी विस्तारसेती व्याख्या करै ॥ वादग्लान, गुरुप्रति साधु साध्वी श्रावक श्राविकाप्रति प्रत्येक १ क्षमाणा करै ॥ फेर इहां गुरुपूजा संघपूजा करै ॥ इत्यंत संस्कार विधिः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ अणुश्राणविधि लि० ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ( फेर ) ग्लान श्रावक मृत्युनजीक आणेंसं सब चैत्यकै विपै पुष्पादिकसैं पूजा करवावै । चैत्य ग्यान आदि सात क्षेत्रोंकेविपै अपना



द्रव्यखरच करै ॥ ( पीठे ) पंच परमेष्ठिमंत्र उच्चारण पूर्वक पढै ॥ जेमे  
जाणंतुजिणा । अवराहा जे सुखासणेतेहं । आलोएमि नवछिन् । जाणं  
तो सबकालंपि ॥ १ ॥ ठनमत्थो मूढमणो । कित्तिअमितंपि संनरइजीवो  
जंचन संनरामि अहं । मिहामे डुकमंतस्स ॥ २ ॥ जंजंमणेण चिंतिअ ।  
ममुहं वायाइजासिअं किंचि । असुहं काएणकयं । मिहामे डुकमंतस्स ॥ ३ ॥  
खामेमि सबजीवे । सबवेजीवाखमंतुमे । मित्तीमे सब्बनूएसु । वैरंमअ न के  
णइ ॥ ४ ॥ इति ग्लानपाठः ॥ (फेर) तीन नमस्कार पठनपूर्वक कहै ॥  
चत्तारिमंगलं । अरिहंतामंगलं । सिद्धामंगलं । साङ्गमंगलं । केवलपन्नतो  
धम्मोमंगलं । चत्तारिलोगुत्तमा । अरिहंता लोगुत्तमा । सिद्धालोगुत्तमा । सा  
ङ्गलोगुत्तमा । केवलपन्नतो धम्मोलोगुत्तमो । चत्तारिसरणं पवज्जामि । अ  
रिहंते सरणं पवज्जामि । सिद्धेसरणं पवज्जामि । साङ्गसरणं पवज्जामि ।  
केवलपन्नतं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ऐसा तीनवेर पढै ॥ (फेर) गुरुवचनसे  
अष्टादश पापस्थानक वोसरावै ॥ सोलिखते है ॥ सबं पाणाइवायं पच्चक्खा  
मि । सबं मूसावायं पच्चक्खामि । सबं अदिन्नादाणं पच्चक्खामि । सबं मे  
ज्जणं पच्चक्खामि । सबं परिग्गहं पच्चक्खामि । सबं राईजोय ० । सबं  
कोहंप ० । सबं माणंप ० । सबं मायंप ० । सबं लोहंप ० । सबं रागं पच्च ०, सबं  
दोस, कलहं, अण्णक्खाणं, अरई, रई, पैशुन्न, परपरिवायं, मायामोसं, मिह्ठा  
दंसणसहं । इच्चेइआइं अठारस पाववाणाइं । डुविहं तिविहेणं वोसिरामी ॥  
अपढमम्मि ऊसासे तिविहेणं वोसिरामि ॥ (फेर) गुरुगीतार्थ, श्री योगसा  
खके पंचम प्रकाशमें कहा (वा) कालप्रदीपादि शास्त्रकैविषै कहाजिसमुजब  
ग्लानको आयुक्षय जाण करके । संघकी । तिणकै संबंधियेकी । राजादिककी  
आज्ञा ग्रहण करके । अण्णशण उच्चारण करावै (फेर) ग्लान शक्रस्तव पढकै  
परमेष्ठि मंत्रोच्चारण सहित पढै ॥ (यथा) । ज्वचरिम पच्चक्खामि तिविहं  
पिआहारं । अशणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अन्नत्थणान्नेगेणं । सहस्सागारेणं  
महत्तरागारेणं । सबसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ इति सागारी अण्णशणं  
अंतर्मुज्जुत्तं यावत् ज्वत्येव ॥ (अनागार मनशनं यथा) ॥ ज्वचरिमं निरागारं  
पच्चक्खामि । सबं असणं सबंपाणं सबंखाइमं सबंसाइमं अन्नत्थणा जोगेणं  
सहस्सागारेणं । अइअं निंदामि । पप्पिपुन्नं संबरेमि । अणागयं पच्चक्खामि ।

अरिहंतसंस्कारं। सिद्धसंस्कारं। साज्जसंस्कारं। देवसंस्कारं। अप्ससंस्कारं  
 वोसिरामि। जेमेज्जपमात्रं। इमस्सदेहस्समाइरयणीए। आहारं मुवहिदेहं। तिबि  
 हं तिबिहेणं वोसिरिअं ॥ (फेर) गुरुकहे नित्यारग पारगोहोइ। वासअकृता  
 दिक् गुरुसहित संघं ग्लानकै सन्मुखं मालै ॥ अणवयम्मिउत्तहो (इत्यादि)  
 स्तुति पढै(वा) चरणं जम्मणजूमि (इत्यादि पढै)॥फेर गुरुग्लानके अगामी  
 त्रिज्जुवन चैत्यांको वण्णं करे। अनित्यादि चादशज्जावनां वण्णं करे। अनादि  
 जवस्थितिवर्णनं करे। अनशनफल व्याख्यानं करे। श्रीसंघ गीतनृत्यादि  
 उत्सव करे। ग्लानपिण, जीवन मरणकी बांछा त्याग करके समाधीमें रहै  
 (फेर) मुज्जर्तनजीक आणेंसें, ग्लान सर्व आहार सर्वदेह वोसिरामि (ऐसा  
 वचन कहे) फेर अंतमें ग्लान पंचपरमेष्ठि स्मरणयुक्त शरीरप्रतें त्याग करै  
 ॥ ❀ ॥ इत्यंत संस्कारे अनशनविधि ॥ मरणान्तसमय जाणके, मानकीस  
 ज्याकै ऊपर स्थापन करे। जन्ममरणकी वखत, जमीनपर स्थापन करणेंका  
 व्यवहार है और मृत्यु होणेंसें, अजीवसरीरकूपिण व्यवहारके अर्थ सनाथ  
 पणों जणणेंकेवास्ते। तिसका पुत्रादिक कृतार्थपणों समजकै मृत्युशंस्कार  
 करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ❀ ॥ शव संस्कार विधि लिखतेहैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम शवके शिखावर्जित मस्तकमुंमन करावै (फेर) संपूर्ण स्व  
 जन संबंधियादिक सुगंधतेलादिक मर्दन करै, सुगंध जलसें स्नान करवावै  
 फेर केशर चंदना दिकका बिलेपन करावै। सुगंधफूलोंकी माला पहरावै ॥  
 अपणें ५ कुलयोग्य अट्टा वस्त्र आभरणादिकसें विजूपित करै ( इतना  
 विशेष है ) कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यकूं, त्यागकै। सुद्रादिकोंका सर्वथा  
 मस्तक मुंडन नहिं करे। तिसकैवाद, नवीन रची नई काष्ठशज्याकै  
 ऊपर, कुशका घास बिठाके, अट्टा वस्त्र बांधके, शवको स्थापन करे। अट्टा  
 वस्त्र ऊपर उढावे ॥ शवका उपगण होय सोपासमें रखे। (और) धनि  
 ष्टादि पंचक नक्षत्रांमें जो मृत्यु होय (तो) कुश घासका पूतला वण्णानुसार  
 गृहस्थवेशका करके। वस्त्र आचमणसें शोभा करके। शवकेपास स्थापन  
 करे। ( पीठे ) ज्ञातीजन चार जिणा खंदपर धारन करके स्मशान जूमि  
 का यें लावे। ( पीठे ) पुत्रादिक स्वजन, शवको उत्तरदिश तरफ मस्तक

करके काष्ठकी सिध्यापर थापन करे । अग्नि संस्कार करै ॥ और अन्न ज  
 हांतक न खावै। ऐसा दूध पीएँवाला लमकाकी मृत्यु होय(तो)जूमि संस्कार  
 करै । अग्नि दाह न करै ॥ ( और ) नस वखत जो दान लैनेवाला होय  
 जून सबकों यथाशक्ति दान देवै ॥ नदी कूवादिकका निर्मल जलसँ स्नान  
 करके। गया जिस रस्तेकों ठोमके । और रस्ते अपने घर आवै ॥ (पीठे)  
 तीसरे दिन चिताकी जस्म हड्डीकों लेके नदी समुद्रादिकमें प्रवाह करे ।  
 ( फेर ) शुद्ध जलसँ स्नान करके, शोक दूर करनेकों मंदर आवे ॥ जिन  
 बिंबकों नहिं फरसता थका चैत्य वंदन करै (पीठे) धर्मस्थान आवे । गुरु  
 महाराजकों नमस्कार करै ( तब ) गुरुपिण संसारको अनित्य  
 चलाचल स्वरूपको प्रतिबोध देके शोक दूर करावे ॥ ( पीठे ) अपने घर  
 जावे ॥ इस संस्कारमें, अंत्य आराधनासँ लेके, शोक दूर करने पर्यंत  
 अवश्य कार्य सेती मज्जुर्त्तादिक न देखै । ( परंतु ) अंतका स्नान, मृत  
 कार्य, इतना योग नक्षत्रादिकमें न करै (यथा) प्रेतक्रिया न कर्तव्या । यम  
 लेख त्रिपुंकरे । आद्रा मूलानुराधासु । मिश्र क्रूर ध्रुवेपुच ॥ १ ॥ धनिष्ठा  
 धं चके वज्या । तृणकाष्ठादि संग्रहाः । सध्या दक्षिण दिग्गयात्रा । मृत कार्य  
 गृहोद्यमा ॥ २ ॥ इतना हीन योग टालके प्रेत क्रिया करै ॥ (अब इहां) सूत  
 क विचार, किंचित् आचार दिनकर मुजब लिखें है (इससँ) विशेष खुलासा  
 सूतक विचार देखना होय(तो)इसी रत्नसागरका प्रथम भागमें लिखा ऊवा  
 है ॥ सो उसमें देख लेवे ॥ ( यथा ) अन्य वंशे समुद्भूते । मृते जा  
 तेथ तद्गृहे । परणीत सुतायाश्च । सूतिका नाशने तथा ॥ १ ॥ एतेषु चैव  
 सर्वेषु । सूतकस्या दिनत्रयं । सूतकं हंतितत्सर्वं । जातं जातं मृतं मृतं ॥ २ ॥  
 अनन्न जोजिवालस्य । सूतकस्या दिनत्रयं । अनष्ट वार्षिकस्यापि । त्रिज्जा  
 गो न च सूतकं ॥ ३ ॥ स्वस्ववर्णानु सारेण । सूतकांत जिनस्नपनं । साधर्म्मि  
 क वात्सल्यं । ततो न्वतु कल्याणं ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्राद्ध आराधना लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सर्वज्ञं नमस्कृत्य । उष्ट कष्ट प्रणाशनं । श्रावका राधनां व  
 द्ये । सुगमां शिष्यहेतवे ॥ १ ॥ अत्र आराधनायां पंच अधिकाराः ॥  
 सम्यक्त शुद्धि १ ॥ १८ पापस्नानक परिहार २ ॥ ८४ लक्ष जीवदामणं

३ ॥ डःरुत गहां ४ ॥ सुरुतानुमोदना ५ ॥ (तत्रादौ) चैत्य वंदना पूर्व । स  
 म्यक्त शुद्धि (तथाहि) ॥ प्रथमं ईयां पथिकी प्रतिक्रम्य । मुखवस्त्रिकां प्रति  
 लेख्य । वंदनं चयं दत्त्वा । चैत्य वंदनां प्रतिमार्गेरुत्वा । क्षमा श्रमणं चयं  
 चः दत्त्वा । आराधनारुत् वदति । जगवन् आराधनां श्रावयतः ॥ ततो गुरुर्वद  
 ति ॥ विधिपूर्वकं शृणु (तथाहि) अरिहंतो मह देवो १ । जावज्जीवं सुसाञ्ज  
 णो गुरुणो २ । जिणपन्नतंतं ३ । इयं समत्तं मए गहियं ॥ १ ॥ व्या० ॥  
 अर्हन् जगवन् ॥ ३४ अतिशय सहितः ॥ ६४ इंद्र महितः ॥ अष्टमहा  
 प्रातिहार्यं युक्तः ॥ १८ दोष निर्मुक्तः ॥ अनंत गुण व्याप्तः । परम पदवी  
 प्राप्तः । देवाधिदेवः श्री वीतराग देवो मम देवः ॥ १ ॥ (तथा) ॥ पंचमहाव्रत  
 पालिकाः ॥ १८ सहश्रीलांगरथ धारिका । रागवेष निवारिकाः । सं  
 सार समुद्रात् जग्य जीव तारकाः । क्रिया कलाप सावधानाः । सदा धर्म  
 ध्यानाः कुक्षिसंवल्लः । ज्ञान, दर्शन, चारित्र, निर्मलाः । साधवो मम गुरवः ॥  
 ॥ २ ॥ (तथा) ॥ उत्पन्न दिव्य विमल केवलग्यान श्री वीतराग देवजापित  
 हिंसाप्रतिकूलः । शुद्ध जीवदयामूलः मुक्तिपुरपाथेय समानः आज्ञा प्रधानो  
 धर्मो मम धर्मः ॥ ३ ॥ इति देव गुरु धर्म तत्त्वत्रय श्रद्धानस्वरूपं सम्यक्तं ॥  
 हृदये विशेषतो दृढीकार्यं ॥ १ ॥ अथ १८ पापस्थानानि ॥ आसव ५ ॥ कसाय  
 ४ ॥ २ वंधन ११ ॥ कलहा १२ ॥ जरकाण १३ ॥ परपरीवात १४ ॥ अरइ रइ  
 १५ ॥ पेसुल १६ ॥ मायामोसं च १७ ॥ मिञ्जतं १८ ॥ (तत्र प्रथमाश्रवे) ॥ पृथिवी  
 १ । अप्प २ । तेज ३ । वाऊ ४ । वनस्पति ५ । वैद्रिय ६ । तैद्रिय ७ । चतुरिंद्रिय  
 ८ । पंचेन्द्रिय ९ ॥ ज्जीवाः अजिहतादिः १० प्रकारैः । इह जन्वे । अनन्तेपुवा ज  
 वेपु ॥ मनसा १ वचसा २ कायेन ३ वा ॥ जानता । अजानता । जीवावि  
 राधितास्युः । तेषां अरिहंत १ सिद्ध २ साधु ३ देव ४ आत्म ५ गुरु ६  
 साक्षिकं त्रिकरण शुद्ध्या हे पुण्यात्मन् मिथ्या डःरुतं देहि ॥ १ ॥ (अथ  
 चित्तीयाश्रवे) ॥ हास्येन वा, क्रोधेन वा, मानेन वा, मायायेन वा । लोभेन वा ॥ मृषा  
 वाद उक्तो जवति । कन्यालीकादि महत्कूटानि । कथितानि स्युः । इह जन्वे  
 (इत्यादि) । मिथ्या डःरुतं देहि ॥ २ ॥ (अथ तृतीयाश्रवे) ॥ परद्रव्यापरहा  
 रेण वा । चौरिक्रिया वा ॥ चौरा अनाहत वस्तुग्रहणेण वा । रस मसि जेदेन वा ॥  
 कूटतूल कूट मानेन वा । अदत्तादानं गृहीतं जवेत् ॥ इह जन्वे ० ॥ मिथ्या ०

॥ ३ ॥ (अथ चतुर्थाश्रवे) ॥ देव मनुष्य । तिर्यक् संबंधि । मैथुनं सेवितं नव  
ति ॥ स्वस्त्री पर पुरुष गमनेन ॥ अति विषय लोलुपतया यत् अव्रह्मं सेवितं  
नवति ॥ इह नवे ० ॥ मिथ्या ० ॥ ४ ॥ (अथ पंचमाश्रवे) ॥ धन धान्य क्षेत्र ।  
वस्तु सुवर्ण । रोप्य । विपद । चतुःपदानां । अपरमित संग्रहेण ॥ क्षेत्ररूप  
गमनेन । वाणिज्य । वाटिका । नदी कूप महारंजन मूर्त्तादि करणेण च । परि  
ग्रह कृतो नवति ॥ इह नवे ० ॥ मिथ्या ० ॥ ५ ॥ (तथा) क्रोध मान माया  
लोभाः ॥ ४ ॥ कषाया कृता नवति ॥ ५ ॥ (तथा) रागस्त्रेधा ॥ स्त्री पुरुष  
जनो परि विषय लोलुपता । कामराग ॥ धन धान्य । स्वजन । पुत्र माता ।  
पितृ प्रमुख जनो परि रागः । स्नेहरागः । निजमतोपरि । अग्नि निवेशेन  
कदा ग्रहो दष्टिरागः ३ ॥ १ ० ॥ एवं द्वेषोपि ११ ॥ लोकैः सहकलहकारणं  
१२ ॥ कर्कश वचनादिना कलंकदानं ॥ १३ ॥ सत् असत् दूषण प्रकाशनेन ।  
१४ ॥ पश्यां निंदाकरणां रहसि १५ । मर्मोद्घटना । दंभ मुंमादि काराणं  
॥ १६ ॥ न्यासापहार करणं । मायायुक्त मृषा वादौवा ॥ १७ ॥ महामाई  
चामुंमा । चनुसर्षी । यक्ष । गोगा । क्षेत्रपाल । विनायक हरिहरादीनां । राग  
द्वेष कलुषित चित्तानां । देवतत्व बुद्ध्या माननं ॥ जोगी । सन्यासी । कमी ।  
कापमी । तापश । शेष । मुद्धा । चारित्र नृष्ट स्वलिंगी । निन्नवा  
दीनां कुगुरूणां । गुस्तत्व बुद्ध्या माननं । मिथ्यात्वि प्ररूपित । हिंसादोष  
उष्ट ॥ कुधर्मस्य धर्मबुद्ध्या माननं मिथ्यात्वं ॥ १८ ॥ पाप स्थानानि से  
वितानि नवति । इह नवे ० । मिथ्या ० ॥ २ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ ८४ लक्ष्मीजीवहामणं ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ (तत्र प्रथमं पृथिवीकायः) ॥ फटिक १ मणि २ रतन ३ प्रवाल  
४ हिंगलू ५ हरियाल ६ मणसिल ७ सुरमो ८ सोनो ९ रूपो १० गेरू  
११ खमी १२ वांती १३ अरणेटो १४ पलेवमो १५ जोमल १६ ॥  
वस्त्ररंगणी कालीमाटी ॥ ऊखरमाटी । पाषाण खर पृथ्वीप्रमुखा अनेक  
जेदाः । अस्याः । ११ सहस्राणि । खरपृथिव्यादेः उत्कृष्टमायुः । अंगुला  
संख्येय जागोदेहमानं ॥ आमलकप्रमाण खंमे ये जीवाः सन्ति । तेषां यदिसर्षप  
प्रमाण देहास्युः ॥ तदा जंबूद्वीपा नमांति ॥ अस्याश्च सप्त ७ लक्ष्योनयः  
एते जीवानां आरंभादिना विराधना कृतानवति ॥ इह नवे ० पूर्ववत् मिथ्या

डुःकृतं देहि ॥ १ ॥ अथ अप्पकायः ॥ तत्र आकासपाणी । झूमपाणी ।  
 नंत । हिम । करहा । धुंहरि । घनोदधि प्रमुखा अनेके जेदाः ।  
 अस्य सप्त ७ सहस्राणि उत्कृष्टं आयुः । अंगुला संख्येय जागोदेहमानं ।  
 एकस्मिन् जलविंदौ असंख्याता जीवाः ॥ ७ सप्तलक्ष्योनयः । एतज्जीवानां  
 आरंभादिना विराधनारुता भवति ॥ इह ज्वे पूर्ववत्, मिथ्या डुकृतं देहि ॥ २ ॥  
 (अथ तेजस्कायः) ॥ तत्राग्नि । अंगार । मुष्मर । जाल बीजली प्रमुखा अ  
 नेक जेदाः । तत्र त्रिक ३ अहोरात्रि उत्कृष्टं आयुः ॥ अंगुला संख्येय  
 जागोदेहमानं । गुंजाप्रमाणे अग्नौ असंख्याता जीवा । सप्त ७ लक्ष्योनयः  
 एतज्जीवानां उकालन निर्वापणाद्यामारंभेण विराधनारुता भवति ॥ इह ज्वे ७  
 पूर्व ७ मिथ्या ७ ॥ ३ ॥ (अथ वायुकायः) ॥ तत्र, गुंजावात । शुधवात ।  
 महावात । जूतेलियो । तनुवात प्रमुखा अनेके जेदाः । तस्य सप्त  
 ७ लक्ष्योनयः । एतज्जीवानां आरंभादिना विराधनारुता भवति ॥  
 इह ज्वे ७ । मिथ्या डु ७ देहि ७ ॥ ४ ॥ (अथ वनस्पतिकायः) ॥ सप्रत्येक  
 साधारण २ जेदेन देहा ॥ (तत्र) प्रत्येक वनस्पति । तस्याः अंश निंब  
 कदंब । असोग नाग पुन्नाग धव खदिर वन पीपल । कइर घोर । पेजमा ।  
 जालि । आक धतूरा । रायणि । केलि खड । तृण । हरीवेली । लता ।  
 पत्र फूल । ठालिप्रमुख । अनेके जेदाः । तस्य साधिक सहस्रयोजन देहमानं  
 पद्मद्रहादौ कमलादीनां १० दिग्गसहस्राणि उत्कृष्टं आयुः । १० लक्ष  
 योनयः ॥ ५ ॥ (अथ साधारण वनस्पतिः) ॥ कंद मूल । अंकूर । किस  
 लय । सेवाल । जुंफोम । पंचवर्ण फूलणि । गाजर । मूला । सूरण ।  
 लसण । प्याज आदौ । थोहरि । कुंवारपाठो । गिलोय । मोथ नीलीहलद  
 लत्तालू । पिंमालू । प्रमुखा अनेके जेदाः जघन्यं उत्कृष्टं च । अंतर्महूर्त्त आयुः  
 अंगुलासंख्येय जागोदेहमानं । एकस्मिन् सूच्यग्रजागप्रमिते अनंतकाये अ  
 नंताजीवा चतुर्दशलक्ष्योनयः । एतज्जीवानां जेदन जेदनाद्यारंभेण वेदनारुता  
 भवति ॥ इह ज्वे ७ । मिथ्या डुकृतं देहि ॥ ६ ॥ (अथ चिंद्रियाः) ॥ तत्र संख ।  
 सीप । कउमा । कातरा । पुरा । अलसीया । रुमि गंमोला । गामर ।  
 चूमेलि । मेहरि । प्रमुखा अनेके जेदाः । तेषां चादश वर्षाणि  
 उत्कृष्टमायुः । चादश योजनानि संखादीनां देहमानं । द्दिलक्ष्योनयः । एत

जीवानां विराधनाकृता जवति ॥ इह जवे ० मिथ्या डुकृतं देहि ॥ ७ ॥ (अथ  
 त्रीन्द्रियाः) ॥ तत्र कीमी । मकोमा । गादहिया । जुं । लीख । मांकेण । कुंथु  
 वा । उदेही । ईली धानकीमा । जवा । गोगीडा । घीवेली । मामोला  
 प्रमुखा अनेके जेदाः । तेषां ४९ एकोन पंचासद्दिनानि उत्कृष्टमायुः ॥ कोस  
 त्रयंच कर्णशृगालादीनां देहमानं । दिलक्योनय । एतज्जीवानां विराधनाकृता  
 जवति ॥ इह जवे ० मिथ्या ० देहिः ॥ ८ ॥ (अथ चतुरेन्द्रियाः) तत्र माखी विन्नु ।  
 जमरा । पतंगिया । तीमा । माठर । डांस । मासा । जमरी जणहणा  
 प्रमुखा । अनेके जेदाः । तेषां ४९ मासा उत्कृष्ट आयु । एक योजन प्रमा  
 णंच जमरादीनां देहमानं । दिलक्योनयः । एतज्जीवानां विराधनाकृता  
 जवति ॥ इह जवे ० मिथ्या ० देहि ॥ ९ ॥ (अथ पंचेन्द्रियाः) ॥ १० ॥  
 तेच । नारकि १ ॥ देवता २ ॥ तिर्यक् ३ ॥ मनुष्य जेदात् ४ ॥ त चतुर्वि  
 धा । तत्र रत्नप्रज्ञादि पृथिवी सप्तगता नारकी असंख्याताः । तेषां ३३ साग  
 रोपमाणि उत्कृष्ट आयुः ५०० धनुषि देहमानं ॥ च्यार लक्ष योनयः । एते  
 षां स्वयं परम धार्मिकी जूय, जेदन जेदन ककच विदारण ॥ त्रपुवान कुंजी  
 पाचनादि नानाविध कदर्थनया विराधना कृता जवति ॥ इह जवे ० ॥ मिथ्या  
 डुकृतं देहि ॥ १० ॥ अथ देवाः ॥ तेषां जवनपति १ । व्यंतर २ । ज्योति  
 षी ३ । वैमानिक ४ । जेदेन चतुर्जेदाः । ३३ त्रयत्रिंशत्सागरोपमाणि उ  
 त्कृष्टमायुः । सप्तहस्त देहमानं ॥ ४ चत्वारि लक्षयोनयः । तेषां दिव्यसुख  
 जोगं दृष्ट्वा । ईर्ष्याकरणेण । मंत्र यंत्र तंत्र आकर्षणो डुःख दानेन अपलापे  
 नवा विराधना कृता जवति ॥ इह जवे ० ॥ मिथ्या डुकृतं देहि ॥ ११ ॥  
 (अथ तिर्यंच) ॥ तेषां । जलचर १ । स्थलचर २ । खचर ३ । उपरिसर्प ४  
 जुजपरि सर्प जेदात् । पंचधा ॥ तत्र जलचराणां ॥ मत्त कञ्जप प्रमुख  
 अनेके जेदाः । तेषां संमूर्च्छमानां गर्जजानांच उत्कृष्टं पूर्वकोटिः आयुः । यो  
 जन सहस्रंच स्वयंभूरमण गतानां देहमानं ॥ १ ॥ (स्थलचराः) ॥ तेषां  
 सीह बाघ चीतरा सरज हाथी घोमा उठ बलद खर गाइ जैस । बली ह  
 रिण रोज ससा । सूवर रीठ सांवर । कूतरा सियालिया प्रमुखा अनेके जेदाः  
 तत्र युगलिकानां तेषां ३ त्रिक पल्योपमानि उत्कृष्ट मायुः । त्रिक कोश दे  
 हमानंच ॥ इतरेषांतु पूर्वकोटिः उत्कृष्ट आयुः । षट्कोश देहमानंच ॥ १ ॥

(खचराणां)॥हंस वगला सारस सीचाणां । समली गृध्र काग घूक होलावा  
होला चिमकला नीलचांस सूवटा प्रमुख अनेके जेदाः । तेषां पल्योपमस्य  
संख्येयो ज्ञाग उत्कृष्टं आयुः । धनुपृथुक्तंच ए देहमानंच । उपरिसर्पाणां ।  
अजगर । कालंदर सर्पाणां प्रमुखा अनेके जेदाः । तेषां पूर्वकोटिः उत्कृष्ट  
मायुः । योजन सहस्रंच देहमानं ४ (जुज परिसर्पाणां) । गोह । नजला ।  
काकिंमा । गिलोई वांजणी प्रमुखा अनेके जेदाः । तेषां पूर्वकोटिः उत्कृष्ट  
मायुः ॥ क्रोश पृथुक्तंच देहमानं । एपातिरश्वा चतुल्लक्ष योनयः एतेषां जेदन जे  
दन कदर्थन अंगावयव कर्तन ॥ नासावेध पृष्ठगालन ॥ अधिक नारारोपण  
निकश घात चारि पाणिय निरोधादि दुःखोत्पादनेन विराधना कृता भवति ।  
इहजवे ॥ मिथ्या डुकृतं देहि ॥ १२ ॥ मनुष्यां ॥ तेषांच ४५ लक्ष योजन प्रमाण  
मनुष्य क्षेत्र ॥ ५ जरत ॥ ५ ऐरवत । ५ महाविदेह । १५ कर्मजूमि ॥ ३० अक  
र्मजूमि ॥ ५६ अंतर क्षीपेषु गर्जजपर्याप्ताऽपर्याप्तं समूहिम जेदेन ३०३ जेदा  
भवति । तेच आर्य, अनार्य, ब्राह्मण, वैश्य, शुद्र, राजा, रांक, दष्ट, अदष्ट  
ज्ञान, अज्ञान, सुत, स्वजन । मित्र, शत्रु, प्रत्यक्ष, परोक्षादि जेदात् अनेक वि  
धाः ॥ तेषां युगलिकानां ३ त्रिक पल्योपमानि उत्कृष्ट मायुः ॥ ३ त्रिक क्रोश देह  
मानं । इतरेषांतु पूर्वकोटिः उत्कृष्ट मायुः ॥ ५०० धनुर्देहमानं ॥ एतज्जीवानां  
विराधना कृता भवति । इहजवे ॥ मिथ्या डुकृतं देहिः ॥ १३ ॥ तत्रापि  
विशेषतः ॥ माता, पिता, जाई, बहिन । पुत्र । कलत्र । मित्र, शत्रु । बज्र,  
वेटी । सासू । सुसरां । जेठाणी । देराणी ॥ काका । काकी । मासी । जूवा ॥  
साला । साली । पोतरा । पोतरी ॥ दोहीतरां दोहीतरी । दायाद । गोत्री । बेवाही  
आमोसी पामोसी प्रमुख जनैः । समंकलह कंदलादिना विराधना कृता भव  
ति ॥ इहजवे ॥ मिथ्या ० देहि ॥ १४ ॥ ३ ॥ अथ डुकृतं गर्हा ॥ तत्रपूर्व  
आशातना अर्हचैत्ये मूल गर्जांगरे ॥ महत्पो दश आशातनाः कृता । एवं  
सिद्ध, प्रवचना आचार्य, उपध्याय वाचनाचार्य, रक्षाधिक स्थविर, साधु, साध्वी  
श्रावक । श्राविका, समस्त संघस्य अर्जाक्तिः आशातनाः कृता भवति । तत्  
मिथ्या डुकृतं देहि ॥ १ ॥ कुतीर्य कदापि प्रवर्तितं २ ॥ कुगुरु कुदेव कुघ  
र्मसेवा कृता भवति ३ ॥ श्री बीतराग देवमार्गः कदापि अपलपितो भवति  
४ ॥ ज्ञान गुरु अपलपितो भवति ५ ॥ स्थापना प्रतिलेखिना विस्मृता भवति



६ ॥ गंठसी मुंठसी नवकारसी प्रमुख प्रत्याख्यानं विस्मृतं भवति ७ ॥ रात्रि  
 भोजनं कृतं भवति ८ ॥ उत्सुत्र प्ररूपितं भवति ९ ॥ ज्योतिष्क वेद्यक ।  
 नाटक कामशास्त्राणि शिक्षितानि भवति १० ॥ श्री जिन भवनं पातितं भव  
 ति ११ ॥ जिन विंवानि ज्ञानानि वा भवति १२ ॥ जिन प्रतिमा उत्थापिता  
 भवति १३ ॥ देवसंबंधानि लोटा लोटी कलसा पिंगाणा उरसियो सुकम्भि  
 कुंभी धोतीया प्रमुखानि उपगणानि स्वगृहे व्याजृतानि भवति १४ ॥ देव  
 गुरु द्रव्यं भक्षितं भवति १५ ॥ गुरु पुस्तकं विक्रीय भक्षितं भवति १६ ॥  
 पाप कुटुंबं पोषितं भवति १७ ॥ आकाशे आवरणं विना प्रतिक्रमणं कृतं  
 भवति १८ ॥ अरहद्दक्षेत्रं यंत्र कूपादारंजाः कृता भवति १९ ॥ इष्ट वियो  
 गे रोदनं कृतं भवति २० ॥ पार्श्वी दानेन कस्यापि गल्लकर्तनं कृतं भवति  
 २१ ॥ तन्मिथ्या डुरुतं देहि ॥ पुनः अनंतं भवकृत पाप गर्हा ॥ तथाहि ॥  
 खाटकीभवे गोमहिष ज्ञागादयो मारिता भवन्ति १ ॥ चटिकामारभवे चटिका  
 दयोमारिता भवन्ति २ ॥ धीवरभवे मज्जा मारिता भवन्ति ३ ॥ आखेटकभवे  
 मृगादयो मारिता भवन्ति ४ ॥ कुंभकारभवे, ज्ञाननिवाहा इष्टिका निवाहा वा  
 पाचिता भवन्ति ५ ॥ तैलिकभवे, सजीव तिल सर्षपादयः पीमिता भवन्ति  
 ६ ॥ सूत्रधार भवे वृक्षाः विना भवन्ति ७ ॥ मालिकभवे, नानाविध वनस्प  
 तयोरोपिताः विनाः विक्रीता भवन्ति ८ ॥ आष्टिकभवे गोधुम मुज्जादयो अ  
 ष्टा भवन्ति ९ ॥ लोहकारभवे, अग्न्यारंभ कृतो भवन्ति १० ॥ कृषीवलभवे,  
 क्षेत्रे हलक्षेतितं निदानं कृतं धान्यं लूनं वा भवन्ति ११ ॥ नारवाहकभवे करभ  
 वषभ खरादीनां मुपरि, प्रभूत नारारोपणेन, पृष्ठगालन, कीटक पातन, व्य  
 थोत्पादनात् कुमरणेन मारिता भवन्ति १२ ॥ जिह्वादिभवे सार्थो लुंठितो  
 भवन्ति १३ ॥ कोलिकभवे, वने दावानलोदतो भवन्ति १४ ॥ कोटपालभवे  
 छेदन भेदन तामिनादिना मनुष्याः कदर्थिता भवन्ति १५ ॥ काजी मुल्लान्भवे  
 चटिकादीनां बधः कृतो भवन्ति १६ ॥ अनाथ्यभवे बवरकुले मनुष्य शरीर  
 रुधिराण पट्टकूलवस्त्राणि रंजितानि भवन्ति १७ ॥ सिंह व्याघ्र चित्रकादिभवे  
 मृगादयो मारिता भवन्ति १८ ॥ सर्प वृश्चिकादि भवे दशनेन विष व्यापारात्  
 मनुष्यादयः पीमिता मारिता वा भवन्ति १९ ॥ माङ्गारी भवे मूषकादयो भ  
 क्षिता वा भवन्ति २० ॥ गृह कोकिलान्भवे मक्षिका भक्षिता वा भवन्ति २१ ॥

वक्त्रवे मत्स्या गृहीता ज्वन्ति २२ ॥ शकुनिज्वे तिष्ठ चटिकादयो गृहीता  
ज्वन्ति २३ ॥ पुनरपि इहज्वे परज्वे विषं वा कस्यापि दत्तं ज्वन्ति २४ ॥  
सपत्नी पुत्राणा मुपरिद्रोह श्रितितो ज्वन्ति २५ ॥ स्वकीय परिकीय गर्जो  
वागालितः पातितो ज्वन्ति २६ ॥ जीव पानीयं ढोलितं ज्वन्ति २७ ॥ शी  
लव्रतं गृहीत्वा जग्रं ज्वन्ति २८ ॥ इह परज्वे श्रावकानां तीव्रव्रतानि गृही  
त्वा जग्रानि ज्वन्ति २९ ॥ साधु साध्वीनां साधर्मिका साधर्मिकीणां वा नि  
दा कृता ज्वन्ति ३० ॥ अन्यदपि सूतिका दूतिका कर्म, खंरुन दलन रंधन  
लिंपनादिना यदारंज कृतं ज्वन्ति ॥ इहज्वे० मिथ्या दुःकृतं देहिः ॥ ४ ॥  
(अथ सुरुतानु मोदना) ॥ जिण जवण १ । विंव २ । पुत्थय ३ ॥ संधस  
रूवाइ सत्तखित्ताई ७ । जीणोच्चारो ८ । पोसह साला ए । साहारणं चैव १०  
॥ १ ॥ इह परज्वे श्री वीतराग चैत्यं कारापितं ज्वन्ति २ ॥ तेषां विंवा  
नि रत्न प्रवाल मग्माणी पापाण मयानि निर्मापितानि ज्वन्ति २ ॥ सूत्र सि  
द्धांत पुस्तकानिवा लेखयित्वा साधुज्यो वाचनार्थं प्रदत्तानि ज्वन्ति ४ ॥  
साधु साध्वीज्यः शुद्धानि एपणीयानि ॥ अशन पान खादिम स्वादिम वस्त्र  
पात्र पीठ फलक उपध जेपजादीनि ज्ञप्त्या प्रतिलान्जितानि ज्वन्ति ५ ॥  
साधर्मिकाणां जोजनेन वस्त्र परिधानेन वा ज्ञक्ति युक्तिः कृता ज्वन्ति ६ ॥  
जीणोच्चारो वा कृतो ज्वन्ति ७ ॥ पौषध शाला वा कारिता ज्वन्ति ८ ॥ सा  
धारण द्रव्यं वा दत्तं ज्वन्ति ९ ॥ आचार्य उपाध्याय वाचकादि पद प्रतिष्ठा  
महोत्सव कारितो ज्वन्ति ९ ॥ श्री शत्रुंजय, गिरिनारि, आबू, अष्टापद, संमे  
त सिखर, राणपुर । जेसल मेरु, अंजणापार्श्वनाथ, संखेस्वरा, सोरीपुर ।  
हथिणाउर । फलवधी प्रमुख, तीर्थ यात्रा कृता ज्वन्ति । तत्पुण्यं अनु  
मोदयः ॥ १० ॥ पुनः पूर्वज्वे पृथिवी कायो जूत्वा । वीतराग  
प्रतिमात्वेन । अप्पकायोजूत्वा । तीर्थकराणां स्नात्रा जिपेकत्वेन । अग्निजूत्वा,  
धूपोत्कृष्टत्वेन । दीपत्वेनवा । वायुजूत्वा, जिनानां, साधूनां, धर्मात्मानां, शीत  
लत्वजनकत्वेन । वनस्पतिजूत्वा पुष्पादि पूजात्वेन ॥ व्रशज्वे शंखोजूत्वा जि  
नाथे मंगलध्वनित्वेन । उपयोगत्वं प्राप्नोन्नवसि । तत्पुण्यं अनुमोदयः ॥ ११ ॥  
पुनः श्रीपर्युषणा पर्वणि श्री कल्पपुस्तकं गृहीतं वाचितं ज्वन्ति । श्रीप  
र्युषणादि पर्वपौषधिका जोजिताज्वन्ति ॥ १२ ॥ साधर्मिकवात्सल्यंवा कृतं

भवन्ति ॥ १३ ॥ सुपात्रेदानंदतन्भवन्ति ॥ १४ ॥ शीलव्रतं वा पालितं भवन्ति ॥ १५ ॥ कल्याणक एकादशी पंचमी पक्खवासन, उपधान समोसरण प्रमुख तपः कृतं भवन्ति । तेषां उद्यापनं वा कृतं भवन्ति ॥ १७ ॥ साधर्मिकगृहे लंघनिकाकृतान्भवन्ति ॥ १८ ॥ धर्मध्यानं वा कृतं भवन्ति ॥ १९ ॥ अन्यदपि यत्पुण्यं कृतं भवन्ति ॥ इह भवेत् । तत्सर्वं अनुमोदयः ॥ पुनरपि सांप्रतं निजवित्तानुसारि सप्तक्षेत्र्यां वित्तं व्ययीकुरु । आरंभादिनियमं पक्कं, मासं जावज्जीवं, वा कुरु । इत्यादि ॥ सर्वमंगल मांगल्यमित्यादि ॥ २ ॥ आराधनां सुगमसंस्कृत वार्त्तिकायां । चक्रे क्रमात् समयसुंदर आदरेण ॥ उत्रान्निधान नगरे महिमासमुद्र ॥ शिष्याग्रहेण मुनिषड्रस चंद्रवर्षे ॥ १ ॥ इति श्रीश्रावकाराधना समाप्तम् ॥ ❀ ॥ इत्युपाध्याय श्री लक्ष्मीप्रधानगणिः तत्सिष्यपं । मुक्तिकमलमुनिः आचारग्रंथात् संग्रहीकृते आचाररत्नाकर प्रथम प्रकाशे अंशसंस्कार १६ मा उदयः संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

❀॥ यति ब्राह्मणादीनां आचार्यपदारोपण विधिः ॥❀॥

॥ ( उक्तंच ) ऐहिकामुत्रिकाणांच । तपसां पुण्यकर्मणां । फलंतदोदयात्सुख । मारोहन्तिपदंजनाः ॥ १ ॥ ❀ ॥

❀ ॥ तिहां प्रथम यतीका पदारोपण करणेकी संक्षेप विधिः ( इहां लिखते है ) विशेष विधि आचारदिनकर, विधिप्रपादिकसैं जान लेना । यतीका पदारोपण कह्ये पीठे ( अनुक्रमसैं ) जैन ब्राह्मणका पदारोपण कहेंगा ॥ ( यथा ) विशुद्ध है कुल, जाति, रूप, चरित्र, ( और ) विधिसैं ग्रहण कीया है चारित्र । ( और ) जोगकुं धारके ३६ गुण युक्त होवे ( तिसकुं ) विधिसैं, ( अरु ) अनुक्रमसैं, आचार्यपद, गज्जनायकत्व पदका आरोपण करणा युक्त है ॥ पूर्वगुरु वेठे झुवे आचार्यपद देवें ( अथवा ) पूर्वगुरु पर लोक गये पीठे, यथोक्त गुणसहित, आचार्यकुं स्तोक शुद्ध उभ्र जलसैं स्नान करायकें नवीन रजोहरण, मुखवस्त्रिका, शयनासन, अरु, स्वेतवस्त्र धारन करायके सिंहासनपर वेठावे । ( तिससमये ) घणा आचार्य उपाध्याय, साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, एकठे मिले ॥ आचार्यपदोचित लग्नसमय आयेथके स्वगुरु ( अथवा ) अन्य वयवृद्ध ( अथवा ) ज्ञानवृद्ध, गीतार्थाचार्य, वर्द्धमान विद्यासैं । वासक्षेपादिक करके गणधर

विद्याका तिलक करै ( तेसैं ) अन्य आचार्योंपाध्याय, साधु, श्रावक  
श्राविका पिण परमेष्टि मंत्रपाठ करतां तिसही रीतीसैं श्रीखंभसैं तिलक करै॥  
( तदनंतर ) दृक्षगुरु पूर्वोक्त विधिसैं मंत्रित करके । वासाकृतदान साधुकुं,  
श्रावकु करै ( तदनंतर ) वृक्षाचार्य खमासमणाणं सुत्तेणं अत्येणं तडुज्येणं  
गुरुगुणेहिंबुद्धा नित्यारग पारगोहोहि । एसैं वृक्षाचार्य कहैं ( तब ) दूसरेजि  
वासाकृतक्षेप करै॥ वंदनक विधि पूर्ववत् । ओरपिण उपाध्याय साध्वाधिकारे  
पण पदारोपणविधि आचारदिनकरादि, विधिग्रंथोंसैं जान लेनी ॥ इति  
साधु आचार्य पदारोप विधिः ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ विप्राणां पदारोपण विधिः ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ आचार्य, उपाध्याय, स्थानपति, कर्माधिकारी, जेदसैं चार  
प्रकारके पदक्रमहैं ॥ अब प्रथम आचार्यपदका लक्षण कहते हैं ॥ आचार्य  
सम्यग्दृष्टि, द्वादशव्रतधारी, अन्यलिङ्गीके देवकों प्रणाम, संज्ञापण संस्तव  
विवर्जित, पापकर्मरहित, दुःप्रतिग्रहरहित, अरु, नित्यपञ्चखाणसहित होते  
हैं ( उक्तंच ) । स्वज्ञावादल्य संतुष्टा । अल्पज्ञापण तत्पराः । जिनागमा  
त्परनैव । पठन्ति श्रुतमादरात् ॥ १ ॥ नित्य धौतवस्त्र ज्ञाजो । द्वादशव्रत  
धारिणः । सम्यगन्यस्त तत्पराः । प्रमाणः ग्रंथवेदिनः ॥ २ ॥ प्रायः साव  
द्यविरता । मिथ्यादृक् संगवर्जिताः । धीराः शांताः गुणोपेताः । सर्वशास्त्र  
विदस्तथा ॥ ३ ॥ प्रतिष्ठादि सर्वकर्म । कारणाज्यास मालिनः । प्रत्याख्यान  
रता नित्यं । प्रायः प्राशुक ज्ञोजिनः ॥ ४ ॥ नित्य स्नानरता दांताः ।  
वाग्मिनो मंत्रवेदिनः ॥ पट्टकर्मसाधनाव्यय । हृदयास्ते विधैवहि ॥ ५ ॥  
साधूपास्तपरा नित्यं । शुद्धवैशसमुद्भवाः । प्रायःकनकरत्नादि । दुःप्रतिग्रहव  
र्जिताः ॥ ६ ॥ प्राणात्ययेपिशुद्रान्न । ज्ञोजनेपिपराङ्मुखाः । वृताक मूल  
कादीनां । पंचोड्वरकस्यच ॥ ७ ॥ परित्याग परानित्यं । प्रांजलाः प्रियवा  
दिनाः । विद्याप्रवादपूर्वोत्थं । मांत्रिकंकल्पमार्हतः ॥ ८ ॥ जानंतोजीवसं  
घाते । सर्वत्रापिरुपापराः । आचार्यपदमर्हति ॥ इदृशाः ब्राह्मणोत्तमाः ॥ ९ ॥

॥ ✽ ॥ ऐसे पूर्वोक्त गुणयुक्त ब्राह्मणाकुं आचार्यपददेनेकी विधि कहतेहैं  
सूरिपदके उचित शुभ लग्न आये थके आचार्यपदकुं प्राप्त ज्ञये ऐसे  
ब्राह्मण इत्यादि गुरुः । पूर्वोक्त गुणसंयुक्त ब्राह्मचर्य धारण किया । ज्ञा

स्वरे संपूर्ण करके स्वहस्ते जापकरे। जिनस्वरूपं । जिनलक्षणं जिनपदवृंदं ।  
जिनपादांबुजं । जिनमंदिरं । जिनकथालाभं । जिनबोधं । जिनदर्श  
नं । जिन महावीर्यं । जिनगुणस्तोत्रं । जिन जगन्मंगलं । ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं  
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं अहं अ सि आ उ सा ग्यान दर्शन चारित्र्यो ह्रीं  
नमः ॥ इस मंत्रका १०८ जापसदा करै । इतना न होसके तो ५४  
( तथा ) २७ ( या ) ए बेर अवश्य जाप करै ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं  
ह्रीं ह्रीं ह्रीं दिगंबराय धौतवस्त्रायनमः ॥ वस्त्र शुद्ध करै ॥ ॐ ह्रीं असि आ उ  
सा य अहं मम सर्वांग सुद्धिकुरु २ स्वाहाः ॥ स्नान मंत्र प्राणायामं ॥  
ॐ नूरजवस्व सवितुवरेण्यं । नृगुदेश्व सिद्धिमहि ॐ धी योनि प्रचोदयात् ॥  
इति आचमन मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं सर्वांगत गायत्रीमंत्रः ॥ ॐ ह्रीं सम्यग्  
दर्शनंनमः ॥ ॐ कमलव्यं, ॐ समलव्यं, ॐ लमलव्यं, ॐ कमलव्यं, ॐ शमलव्यं,  
ॐ षमलव्यं, ॐ समलव्यं, ॐ ह्रलव्यं, अत्रआत्मनेनमः ॥ जाप्य १०८ ॥ इति  
प्रज्ञात गायत्री विधिः ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ मध्याह्न गायत्री मंत्रः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं सम्यग् ग्यानाय नमः ॥ ह्रीं ह्रीं यमलव्यं, ह्रीं समलव्यं  
ह्रीं लमलव्यं । ह्रीं कमलव्यं । ह्रीं शमलव्यं । ॐ षमलव्यं । ह्रीं समलव्यं  
ह्रीं ह्रलव्यं अहं आत्मनेनमः ॥ जाप १०८ । इति मध्याह्नगायत्री ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ संध्यागायत्री मंत्रः ॥ ❀ ॥

॥ ॐ ह्रीं सम्यग् चारित्रायनमः । श्री ह्रलव्यं, श्रीफलव्यं, श्री समलव्यं  
श्री कमलव्यं । श्री लमलव्यं । श्री शमलव्यं । श्री षमलव्यं । श्री  
कमलव्यं, सिद्ध आत्मनेनमः । इसका १०८ बेर जाप करे ॥ ❀ ॥ इति  
संध्या गायत्री विधिः ॥ ❀ ॥

### ॥ ❀ ॥ अथ रुषिमंरुलजीकी पूजा विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ श्रीरुषभदेवजी १ ॥ श्री अजितनाथजी २ ॥ श्री संजवनाथजी  
३ ॥ श्री अजिनंदनजी ४ ॥ श्री सुमतिनाथजी ५ ॥ श्री पद्मप्रभुजी ६ ॥  
श्री सुपार्श्वनाथजी ७ ॥ श्री चंद्राप्रभुजी ८ ॥ श्री सुवर्दिनाथजी ९ ॥  
श्री शीतलनाथजी १० ॥ श्री श्रेयांसनाथजी ११ ॥ श्री वासुपुन्यजी

१२ ॥ श्री विमलनाथजी १३ ॥ श्री अनंतनाथजी १४ ॥ श्री धर्मनाथजी १५ ॥ श्री शांतिनाथजी १६ ॥ श्री कुंथुनाथजी १७ ॥ श्री अरनाथजी १८ ॥ श्री मल्लिनाथजी १९ ॥ श्री मुनिसुव्रतजी २० ॥ श्री नमिनाथजी २१ ॥ श्री नेमिनाथजी २२ ॥ श्री पार्श्वनाथजी २३ ॥ श्री वर्द्धमानजी २४ ॥ इति चतुर्विंशति तीर्थ कराः ॥ ॐ नमः । ॐ नमः १ ॥ वववववववववववववववव १ ॥ वववववववववववववववव २ ॥ वववववववववववववववव ३ ॥ वववववववववववववववव ४ ॥ ॐ ॐ ॐ अर्हं ज्ञोतमः ॥ ॐ ॐ सिद्धेज्यो नमः । ॐ ॐ आचार्येज्यो नमः । ॐ ॐ उपाध्यायेज्यो नमः ॥ ॐ ॐ सर्वं साधुज्यो नमः ॥ ॐ ॐ ज्ञानेज्यो नमः ॥ ॐ ॐ दर्शनेज्यो नमः । ॐ ॐ चारित्र्येज्यो नमः ॥ (इति प्रथम वलयः) ॥ १ ॥ ॐ इंद्राय नमः । ॐ अग्नये नमः । ॐ यमाय नमः । ॐ नैऋताय नमः । ॐ वरुणाय नमः । ॐ वायवे नमः । ॐ कुबेराय नमः । ॐ ईशानाय नमः । ॐ नागाय नमः । ॐ ब्रह्मणे नमः १० ॥ (दशदिग्पाल नामानि) ॥ (इति द्वितीय वलयः) ॥ २ ॥ ॐ सूर्याय नमः । ॐ चंद्राय नमः । ॐ मंगलाय नमः । ॐ बुधाय नमः । ॐ वृहस्पतये नमः । ॐ शुक्राय नमः । ॐ शनैश्चराय नमः । ॐ राहवे नमः ॥ (इति तृतीय वलयः ३) ॥ अ अ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ॡ ए ऐ ओ ॐ अं अः ॥ क ख ग घ ङ १ ॥ च छ ज झ ञ २ ॥ ट ठ ड ढ ण ३ ॥ त थ द ध न ४ ॥ प फ ब भ म ५ ॥ य र ल व ६ ॥ श ष स ह ७ ॥ ॐ ॐ इंद्रभूतये नमः १ ॥ ॐ ॐ अग्निभूतये नमः २ ॥ ॐ ॐ वायुभूतये नमः ३ ॥ ॐ ॐ व्यक्ताय नमः ४ ॥ ॐ ॐ सुधर्मणे नमः ५ ॥ ॐ ॐ मन्त्रिनाय नमः ६ ॥ ॐ ॐ मोक्षपुत्राय नमः ७ ॥ ॐ ॐ अकिंपिताय नमः ८ ॥ ॐ ॐ अचञ्चलाय नमः ९ ॥ ॐ ॐ मेतार्याय नमः १० ॥ ॐ ॐ प्रजासाय नमः ११ ॥ इति ११ गणधरनामानि ॥ ॐ ॐ अर्हं एमो जिणाणं १ ॥ ॐ ॐ अर्हं एमो अर्हजिणाणं २ ॥ ॐ ॐ अर्हं एमो परमोहि जिणाणं ३ ॥ ॐ ॐ अर्हं एमो सद्योहि जिणाणं ४ ॥ ॐ ॐ अर्हं एमो अणंतोहि जिणाणं ५ ॥ ॐ ॐ अर्हं एमो कोवुद्धीणं ६ ॥ ॐ ॐ अर्हं एमो वीयवुद्धीणं ७ ॥ ॐ ॐ अर्हं एमो पयाणुसारीणं ८ ॥ ॐ ॐ अर्हं एमो आसीविसाणं ९ ॥ ॐ ॐ अर्हं एमो दिवीविसाणं

१० ॥ उँ झी अर्हं एमो संजिन्नसोयाणं ११ ॥ उँ झी अर्हं एमो सयंसं  
 बुद्धाणं १२ ॥ उँ झी अर्हं एमो पत्तेयबुद्धाणं १३ ॥ उँ झी अर्हं  
 एमो बोहिबुद्धीणं १४ ॥ उँ झी अर्हं एमो रुज्जुमईणं १५ ॥ उँ झी अर्हं  
 एमो विज्जमईणं १६ ॥ उँ झी अर्हं एमो दशपुत्रीणं १७ ॥ उँ झी अर्हं  
 एमो चउदशपुत्रीणं १८ ॥ उँ झी अर्हं एमो अरुंगमहानिमित्तकुशला  
 णं १९ ॥ उँ झी अर्हं एमो विज्जवणइहिपत्ताणं २० ॥ उँ झी अर्हं एमो  
 विज्जाहराणं २१ ॥ उँ झी अर्हं एमो चारणाणं २२ ॥ उँ झी अर्हं एमो  
 यन्हासमणाणं २३ ॥ उँ झी अर्हं एमो आगासगामीणं २४ ॥ उँ झी  
 अर्हं एमो खीरासवाणं २५ ॥ उँ झी अर्हं एमो सप्पिआसवाणं २६ ॥ उँ  
 झी अर्हं एमो मज्झासवाणं २७ ॥ उँ झी अर्हं एमो अमियासवाणं २८ ॥  
 उँ झी अर्हं एमो सिद्धायणाणं २९ ॥ उँ झी अर्हं एमो जगवया महइम  
 हावीर वद्धमाण बुद्धरिसीणं ३० ॥ उँ झी अर्हं एमो उग्गतवाणं ३१ ॥  
 उँ झी अर्हं एमो अक्खीण महाणसियाणं ३२ ॥ उँ झी अर्हं एमो  
 वद्धमाणं ३३ ॥ उँ झी अर्हं एमो दित्ततवाणं ३४ ॥ उँ झी  
 अर्हं एमो तत्ततवाणं ३५ ॥ उँ झी अर्हं एमो महातवाणं ३६ ॥ उँ  
 झी अर्हं एमो घोरतवाणं ३७ ॥ उँ झी अर्हं एमो घोरगुणाणं ३८ ॥  
 उँ झी अर्हं एमो घोरपरक्कमाणं ३९ ॥ उँ झी अर्हं एमो वंनयारीणं ४० ॥  
 उँ झी अर्हं एमो आमो सहीपत्ताणं ४१ ॥ उँ झी अर्हं एमो खेत्तोसहीणं ४२ ॥  
 उँ झी अर्हं एमो जल्लोसहीणं ४३ ॥ उँ झी अर्हं एमो विप्योसहिपत्ता  
 णं ४४ ॥ उँ झी अर्हं एमो सवोसहिपत्ताणं ४५ ॥ उँ झी अर्हं एमो  
 मणवलीणं ४६ ॥ उँ झी अर्हं एमो वयणवलीणं ४७ ॥ उँ झी अर्हं ए  
 मो कायवलीणं ४८ ॥ (इत्यष्टचत्वारिंशद्विधपदानि) ॥ ॥ उँ नाजयेनमः  
 १ ॥ उँ जितशत्रवेनमः २ ॥ उँ जितारवेनमः ३ ॥ उँ संवरायनमः ४ ॥ उँ  
 मेघायनमः ५ ॥ उँ धंरायनमः ६ ॥ उँ प्रतिष्ठायनमः ७ ॥ उँ महशेनायनमः  
 ८ ॥ उँ सुग्रीवायनमः ९ ॥ उँ दृढाश्रयायनमः १० ॥ उँ विश्ववेनमः ११ ॥ उँ वसु  
 पुज्यायनमः १२ ॥ उँ कृतवर्मणेनमः १३ ॥ उँ सिंहसेनायनमः १४ ॥ उँ ज्ञा  
 नवेनमः १५ ॥ उँ विश्वसेनायनमः १६ ॥ उँ सूरायनमः १७ ॥ उँ सुदर्शनाय  
 नमः १८ ॥ उँ कुंजायनमः १९ ॥ उँ सुमित्रायनमः २० ॥ उँ विजयायनमः

२१ ॥ ॐ समुद्रविजयायनमः २२ ॥ ॐ अश्वशोनायनमः २३ ॥ ॐ सिद्धा  
 ध्यायनमः २४ ॥ ( इति चतुर्विंशति जिनजनका नामानिः) ॥ ॐ मरुदेवायै  
 नमः २५ ॥ ॐ विजयायैनमः २६ ॥ ॐ सेनायैनमः २७ ॥ ॐ सिद्धार्थायैनमः २८ ॥ ॐ  
 सुमंगलायैनमः २९ ॥ ॐ सुशीमायैनमः ३० ॥ ॐ प्रथ्वीमातायैनमः ३१ ॥ ॐ लक्ष्म  
 णायै नमः ३२ ॥ ॐ रामायैनमः ३३ ॥ ॐ नन्दायैनमः ३४ ॥ ॐ विश्वेनमः ३५ ॥  
 ॐ जयायैनमः ३६ ॥ ॐ स्यामायैनमः ३७ ॥ ॐ सुयसेनमः ३८ ॥ ॐ सुव  
 तायैनमः ३९ ॥ ॐ अचिरायैनमः ४० ॥ ॐ श्रियैनमः ४१ ॥ ॐ देव्यैनमः ४२  
 ॥ ॐ प्रज्ञावत्यैनमः ४३ ॥ ॐ पद्मावत्यैनमः ४४ ॥ ॐ वप्रायैनमः ४५ ॥  
 ॐ शिवायैनमः ४६ ॥ ॐ वामायैनमः ४७ ॥ ॐ विशालायैनमः ४८ ॥ ( इति  
 चतुर्विंशति जिनजननीनामः) ॥ ॐ क्रियैनमः ४९ ॥ ॐ श्रियैनमः ५० ॥ ॐ धृत्यै  
 नमः ५१ ॥ ॐ लक्ष्म्यैनमः ५२ ॥ ॐ गोप्यैनमः ५३ ॥ ॐ चम्प्यैनमः ५४ ॥ ॐ सर  
 स्वत्यैनमः ५५ ॥ ॐ जयायैनमः ५६ ॥ ॐ अंबायैनमः ५७ ॥ ॐ विजयायैनमः  
 ५८ ॥ ॐ क्लृप्तायैनमः ५९ ॥ ॐ अजितायैनमः ६० ॥ ॐ नित्यायैनमः ६१ ॥  
 ॐ मदद्रवायैनमः ६२ ॥ ॐ कामांगायनमः ६३ ॥ ॐ कामवाणायैनमः ६४ ॥  
 ॐ सानन्दायैनमः ६५ ॥ ॐ नन्दमालियेनमः ६६ ॥ ॐ मायात्यैनमः ६७ ॥  
 ॐ मायावित्त्यैनमः ६८ ॥ ॐ रोद्रयैनमः ६९ ॥ ॐ कलायैनमः ७० ॥ ॐ काल्यै  
 नमः ७१ ॥ ॐ कालप्रियायैनमः ७२ ॥ इति श्रीदेव्यादि चतुर्विंशतिनामानि ॥  
 ॥ ॐ गोमुखायनमः १ ॥ ॐ महायज्ञायनमः २ ॥ ॐ त्रिमुखायनमः ३ ॥  
 ॐ यक्षनायकायैनमः ४ ॥ ॐ तुंगुरवेनमः ५ ॥ ॐ कुसुमायनमः ६ ॥ ॐ मातं  
 गायनमः ७ ॥ ॐ विजयायनमः ८ ॥ ॐ अजितायनमः ९ ॥ ॐ ब्रह्मण्यैनमः  
 १० ॥ ॐ यक्षराजायनमः ११ ॥ ॐ कुमारायनमः १२ ॥ ॐ पणमुखायनमः  
 १३ ॥ ॐ पाताल्लायनमः १४ ॥ ॐ किन्नरायनमः १५ ॥ ॐ गरुडायनमः  
 १६ ॥ ॐ गंधर्वायनमः १७ ॥ ॐ यक्षेन्द्रायनमः १८ ॥ ॐ कुबेरायनमः १९ ॥  
 ॐ शरणायनमः २० ॥ ॐ नृकुटयेनमः २१ ॥ ॐ गोमेषायनमः २२ ॥ ॐ  
 पार्श्वयज्ञायनमः २३ ॥ ॐ ब्रह्मशांतेयनमः २४ ॥ ( इति गोमुखादि चतुर्विं  
 शति जिनशासन यक्षनामानि) ॥ २५ ॥ ॐ चक्रैस्वर्यैनमः २६ ॥ ॐ अजित  
 यलायैनमः २७ ॥ ॐ उरितायैनमः २८ ॥ ॐ कालिकायैनमः २९ ॥ ॐ महाकाल्यै  
 नमः ३० ॥ ॐ श्यामायनमः ३१ ॥ ॐ शांतायैनमः ३२ ॥ ॐ नृकुटयेनमः ३३ ॥ ॐ सुतार



कायैनमः॥ ॐ अशोकायैनमः १०॥ ॐ मानव्यैनमः ११ ॥ ॐ चंदायैनमः  
 १२ ॥ ॐ विदितायैनमः १३ ॥ ॐ अंकुशायैनमः १४ ॥ ॐ कंदर्पायैनमः  
 १५ ॥ ॐ निर्वाणायैनमः १६ ॥ ॐ वलायैनमः १७ ॥ ॐ धारणायैनमः १८॥  
 ॐ धरणप्रियायैनमः १९ ॥ ॐ नरदत्तायैनमः २० ॥ ॐ गंधार्घ्यैनमः २१ ॥  
 ॐ अंबिकायैनमः २२ ॥ ॐ पद्मावत्यैनमः २३ ॥ ॐ सिद्धायकायैनमः २४ ॥  
 (इति चक्रेश्वर्यादि चतुर्विंशति जिनशासन देवीनामानि) ॥ ॐ रोहियायैनमः  
 १ ॥ ॐ प्रज्ञप्तैनमः २ ॥ ॐ वज्रशंखलायैनमः ३ ॥ ॐ वज्रांकुशायैनमः  
 ४ ॥ ॐ चक्रेश्वर्यैनमः ५ ॥ ॐ नरदत्तायैनमः ६ ॥ ॐ काल्यैनमः ७ ॥ ॐ  
 महाकाल्यैनमः ८ ॥ ॐ गोर्घ्यैनमः ९ ॥ ॐ गंधार्घ्यैनमः १० ॥ ॐ महाज्वा  
 लायैनमः ११ ॥ ॐ मानव्यैनमः १२ ॥ ॐ वेरोट्यायैनमः १३ ॥ ॐ अह  
 स्तायैनमः १४ ॥ ॐ मानस्यैनमः १५ ॥ ॐ महामानस्यैनमः १६ ॥ (इति रो  
 हियादि षोडशविद्यादेवीनामानि) ॥ ॐ नैसर्गकायनमः १ ॥ ॐ पांडुकायन  
 मः २ ॥ ॐ पिंगलायनमः ३ ॥ ॐ सर्वरत्नायनमः ४॥ ॐ महापद्मायनमः ५॥  
 ॐ कालायनमः ६॥ ॐ महाकालायनमः ७॥ ॐ माणवायनमः ८॥ ॐ शंखायनमः  
 ९ ॥ (इति नवनिधाननामानि) ॥ ॐ सौधमेन्द्रायनमः १ ॥ ॐ ईशानेन्द्रायनमः  
 २ ॥ ॐ सनत्कुमारेन्द्रायनमः ३॥ ॐ माहेन्द्रायनमः ४॥ ॐ ब्रह्मेन्द्रायनमः ५॥  
 ॐ लांतकेन्द्रायनमः ६ ॥ ॐ शुकेन्द्रायनमः ७ ॥ ॐ सहश्रारेन्द्रायनमः ८ ॥  
 ॐ प्राणतेन्द्रायनमः ९॥ ॐ अच्युतेन्द्रायनमः १० ॥ ॐ चंद्रायनमः ११ ॥ ॐ  
 सूर्यायनमः १२ ॐ चमरेन्द्रायनमः १३ ॥ ॐ वल्लेन्द्रायनमः १४ ॥ ॐ धरणेन्द्रा  
 यनमः १५ ॥ ॐ जूतानेन्द्रायनमः १६ ॥ ॐ वेणुदेवेन्द्रायनमः १७ ॥ ॐ वेणु  
 दालेन्द्रायनमः १८ ॥ ॐ हरिकान्तेन्द्रायनमः १९ ॥ ॐ हरिस्सहेन्द्रायनमः २०॥  
 ॐ अग्निसखेन्द्रायनमः २१ ॥ ॐ अग्निमाणवेन्द्रायनमः २२ ॥ ॐ पूर्णेन्द्रायनमः  
 २३ ॥ ॐ विशिष्टेन्द्रायनमः २४ ॥ ॐ जलकान्तेन्द्रायनमः २५ ॥ ॐ जलप्रज्ञे  
 द्रायनमः २६ ॥ ॐ अमितगतीन्द्रायनमः २७ ॥ ॐ मितवाहनेन्द्रायनमः २८॥  
 ॐ बेलवेन्द्रायनमः २९ ॥ ॐ प्रज्जनेन्द्रायनमः ३० ॥ ॐ घोषेन्द्रायनमः ३१ ॥  
 ॐ महाघोषेन्द्रायनमः ३२ ॥ ॐ कालेन्द्रायनमः ३३ ॥ ॐ महाकालेन्द्रायनमः  
 ३४ ॥ ॐ सरुपेन्द्रायनमः ३५ ॥ ॐ प्रतिरुपेन्द्रायनमः ३६ ॥ ॐ पूर्णजद्रेन्द्राय  
 नमः ३७ ॥ ॐ माणजद्रेन्द्रायनमः ३८ ॥ ॐ जीमेन्द्रायनमः ३९ ॥ ॐ महा

जीमिन्द्रायनमः ४० ॥ ॐ किन्नरेंद्रायनमः ४१ ॐ किंपुरवेंद्रायनमः ४२ ॥ ॐ  
 सत्पुरुषेंद्रायनमः ४३ ॥ ॐ महापुरुषेंद्रायनमः ४४ ॥ ॐ अतिकायेंद्रायनमः  
 ४५ ॥ ॐ महाकायेंद्रायनमः ४६ ॥ ॐ गीतरतीन्द्रायनमः ४७ ॥ ॐ गीतयश  
 द्रायनमः ४८ ॥ ॐ सन्निहितेंद्रायनमः ४९ ॥ ॐ सामानिकेंद्रायनमः ५० ॥  
 ॐ धात्रेंद्रायनमः ५१ ॥ ॐ विधात्रेंद्रायनमः ५२ ॥ ॐ ऋषीन्द्रायनमः ५३ ॥  
 ॐ ऋषिपालतेंद्रायनमः ५४ ॥ ॐ ईश्वरेंद्रायनमः ५५ ॥ ॐ महेंद्रायनमः  
 ५६ ॥ ॥ ॐ वत्सेन्द्रायनमः ५७ ॥ ॐ विशालेंद्रायनमः ५८ ॥ ॐ हास्येंद्रायन  
 मः ५९ ॥ ॐ हास्यरतीन्द्रायनमः ६० ॥ ॐ श्रेयस्येंद्रायनमः ६१ ॥ ॐ महाश्रेय  
 स्येंद्रायनमः ६२ ॥ ॐ पदगेंद्रायनमः ६३ ॐ पदगुपतीन्द्रायनमः ६४ ॥ ( इति  
 चतुःपटीद्राणां नामानि ) ॥ ॐ अणिमसिद्धयेनमः १ ॥ ॐ गरिमसिद्धयेनमः २ ॥  
 ॐ लघिमसिद्धयेनमः ३ ॥ ॐ प्राकाम्यसिद्धयेनमः ४ ॥ ॐ महिम सिद्धयेनमः  
 ५ ॥ ॐ इस्तिवसिद्धयेनमः ६ ॥ ॐ विशिष्टवसिद्धयेनमः ७ ॥ ॐ प्राप्तिवसिद्ध  
 येनमः ८ ॥ ( इत्यष्टसिद्धिनामानि ) ॥ ॐ श्रीवरणेंद्रोरक्तुः १ ॥ श्रीपद्मावतिर  
 क्तुः २ ॥ श्री गौतमस्वामिनेनमः ३ ॥ श्रीवैरोद्यारक्तुः ४ ॥ इति श्री  
 रूपमंमलजीका पजनविधि संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वीशस्थानक मंमल पूजन विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एमोणंत विनाण सद्दसणाणं । सहाणं दिया सैसजंतूगया  
 णं । जवांजोज विट्ठेयणे वारणाणं । एमो बोहियाणं वराणं जिणाणं ॥ १ ॥  
 ॐ ह्रीं श्री अहंज्ञचोनमः १ इति प्रथम पदे जिनैद्रपूजा ॥ (अथ सिद्ध  
 पूजा) ॥ लोगगजागोपरि संठियाणं । बुद्धाण सिद्धाण मणिंदियाणं । निस्से  
 स कम्मरकय कारगाणं । एमो सया मंगल धारगाणं ॥ ॐ ह्रीं श्री सिद्धे  
 ज्योनमः २ ॥ (अथ तृतीय पद) ॥ अणंतसंसुद्ध गुणांकरस्स । डुरकंधया  
 रुग्गदिवाकरस्स । अणंत जीवाण दया गिहस्स । एमो २ संघ चउव्विह  
 स्स ॥ ॐ ह्रीं श्री प्रवचनायनमः ३ ॥ (अथ चतुर्थपद) ॥ कुवादि केली  
 तरु सिंधुराणं । सूरि सराणं मुणिवंधुराणं । धीरत्त संतज्जियमंदराणं ।  
 एमो सया मंगल मंदिराणं ॥ ॐ ह्रीं श्री आचार्येज्योनमः ॥ ४ ॥ (अथ  
 पंचम पद ) ॥ सम्मत्त संयम पतित जविजन अतिह थिर करता जला ।  
 अवगुण अदूपित गुणविजूपित चंद्रकिरण समोज्जला । अष्टाधिकादशसह

श सीलांगरथ रुचिरधाराधरा । नवसिंधु तारण प्रवर कारण नमो शिवरमु  
नीसरा ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं स्थविरायनमः ॥ (अथ ठोपद उपाध्याय) ॥  
सबोहिवीजं कुर कारणं । एमो एमो वायग वारणं । कुबोहि दंती  
हरिणोसराणं । विग्बोधसंताव पयोहराणं ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेज्योनमः  
॥ ६ ॥ अथ सातमो पद साधु पूजा ॥ संतज्जियासेस परी सहाणं । नि  
स्सेस जीवाण दयागिहाणं । सन्नाण पक्काय तरूवणाणं । एमो एमो होउ  
तबोधणाणं ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् साधुज्योनमः ॥ ७ ॥ (अथ अष्टम पदे  
ज्ञान पूजा) ॥ ठद्व पक्काय गुणाकरस्स ॥ सयापयासी करणोधुरस्स । मिच्च  
त्त अन्नाण तमोहरस्स । एमो एमो नाण दिवायरस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्  
ज्ञानायनमः ॥ ८ ॥ (अथ नवमं पद दर्शन) ॥ अणंत विन्नाण सुकारणस्स  
अणंत संसार विदारणस्स । अणंत कम्मवलि धंसणस्स । एमो एमो नि  
म्मल दंसणस्स ॥ (ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् दर्शनायनमः) ॥ ९ ॥ (अथ दशमो  
विनयपद) ॥ आणंदियासेस जगज्जणस्स । कुंदिंड पादमलताचणस्स । सुध  
म्म जुत्तस्स दयासयस्स । एमो एमो श्रीं विणयालयस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं स  
म्यग् विनयैनमः ॥ १० ॥ (अथ इग्यारमं पदै चारित्र) ॥ कम्मोघ कंतार  
दवानलस्स । महोदयानंद लयाजलस्स । विन्नाण पंके रुहकारणस्स ।  
एमो चरित्तस्सगुणापणस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् चारित्रायनमः ॥ ११ ॥  
(अथ बारमं पदै ब्रह्मचर्य) ॥ सग्गापवग्गग्गसुहण्यस्स । सुनिम्मलाणंत  
गुणालयस्स । सबवया नूषण नूषणस्स । नमोहि शीलस्स अदूसणस्स ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् ब्रह्मचर्यैनमः ॥ १२ ॥ (अथ तेरमं क्रियापद) ॥ विसुद्ध  
सद्धाण विनूषणस्स । सुलद्धि संपत्ति सुपोषणस्स । एमो सदाणंत गुणप्प  
दस्स । नमो नमो सुद्ध क्रियापदस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् क्रियायैनमः ॥ १३ ॥  
(अथ चवदमोतपपद) ॥ लद्धीसरोजा वलितावणस्स । सुख संलग्गसुपावण  
स्स । अमंगलानो कुह उद्वस्स । नमो नमो निम्मलसत्तवस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
सम्यग् तपसेनमः ॥ १४ ॥ (अथ पनरमो गोतमपद) ॥ अणंत विन्नाण  
विन्नाकरस्स । उवाल संगी कमलाकरस्स । सुलद्धवासा जय गौयमस्स ।  
नमो गणाधीस्वर गोयमस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं गौतमायनमः ॥ १५ ॥ (अथ सो  
लमा पदे जिनपूजा) ॥ मणुणसत्ता तिसयासयाणं । सुरासुराधीसरवंदियाणं ।

स्वोद्भविंवामल सगुणाणं । दयाधणाणं हिनमोजिणाणं ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जि  
नेज्योनमः ॥ १६ ॥ (अथ सतरस्रं चारित्रधारीपद) ॥ सर्विंदिया पार विकार  
दारी । अकारणा सेसजणोवगारी । महान्नवातंकरणापहारी । जयौ सदा  
सुख चरित्तधारी ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् चारित्रधारिज्योनमः ॥ १७ ॥ (अथ  
अंशरस्रं ग्यानपदपूजा) ॥ सुद्धक्रिया मंत्रल मंत्रनस्त । संदेह संदोह विखंन  
स्त । मुत्ती उपादान सुकारणस्त । नमोहि नाणस्त जसोधणस्त ॥ ॐ ह्रीं  
श्रीं सम्यग् ज्ञानायनमः ॥ १८ ॥ (अथ उगणीसमोश्रुतपद) ॥ अन्नाणवद्धी  
वनवारणस्त । सुबोहि वीजां कुरकारणस्त । अणंत संसुद्ध गुणालयस्त ।  
नमो दया मंदिरसत्थयस्त ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् श्रुतायैनमः ॥ १९ ॥ (अथ  
वीसमैपदै तीर्थं पदपूजा) ॥ तुज्यंनमः सकल विश्व वशंकराय । तुज्यंनमः  
स्त्रिजगती जनशंकराय । तुज्यंनमो ज्ञान मंत्रल मंत्रनाय । तुज्यं नमोस्तु  
जिनपंक विखंननाय ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् तीर्थपदेज्योनमः ॥ २० ॥  
२० धजासहत अष्टद्रव्य चढावे ॥ (पीठे) ६४ इंद्रपूजा ६४ अखरोट चढावै ॥  
ॐ सौधर्मैन्द्रायनमः १ ॥ ॐ ईशानैन्द्रायनमः २ ॥ ॐ सनत् कुमारैन्द्रायन  
मः ३ ॥ ॐ माहैन्द्रायनमः ४ ॥ ॐ ब्रह्मैन्द्रायनमः ५ ॥ ॐ लांतकैन्द्राय  
नमः ६ ॥ ॐ शुक्रैन्द्रायनमः ७ ॥ ॐ सहस्रारैन्द्रायनमः ८ ॥ ॐ प्रा  
णैन्द्रायनमः ९ ॥ ॐ अच्युतैन्द्रायनमः १० ॥ ॐ चंद्रैन्द्रायनमः ११ ॥  
ॐ सुर्यैन्द्रायनमः १२ ॥ ॐ चर्मैन्द्रायनमः १३ ॥ ॐ बलैन्द्रायनमः १४ ॥  
ॐ धरैन्द्रायनमः १५ ॥ ॐ भुतानैन्द्रायनमः १६ ॥ ॐ वेणुदेवैन्द्रायनमः १७ ॥  
ॐ वेणुदातैन्द्रायनमः १८ ॥ ॐ हरिकान्तैन्द्रायनमः १९ ॥ ॐ हरिस्सहस्रैन्द्रायनमः  
२० ॥ ॐ अग्निशिखैन्द्रायनमः २१ ॥ ॐ अग्निमाणवैन्द्रायनमः २२ ॥ ॐ पूर्ण  
द्रायनमः २३ ॥ ॐ विसिष्टैन्द्रायनमः २४ ॥ ॐ जलकान्तैन्द्रायनमः २५ ॥ ॐ  
जलप्रज्ञैन्द्रायनमः २६ ॥ ॐ अमितगतीन्द्रायनमः २७ ॥ ॐ मितवाहनैन्द्रायन  
मः २८ ॥ ॐ वेलवैन्द्रायनमः २९ ॥ ॐ प्रज्ञंजनैन्द्रायनमः ३० ॥ ॐ घोषैन्द्रा  
यनमः ३१ ॥ ॐ महाघोषैन्द्रायनमः ३२ ॥ ॐ कालैन्द्रायनमः ३३ ॥ ॐ महा  
कालैन्द्रायनमः ३४ ॥ ॐ सरूपैन्द्रायनमः ३५ ॥ ॐ प्रतिरूपैन्द्रायनमः ३६ ॥  
ॐ पूर्णचंद्रैन्द्रायनमः ३७ ॥ ॐ माणज्जैन्द्रायनमः ३८ ॥ ॐ नीमैन्द्रायनमः  
३९ ॥ ॐ महानीमैन्द्रायनमः ४० ॥ ॐ किन्नरैन्द्रायनमः ४१ ॥ ॐ किंपुरु

षेन्द्रायनमः ४२ ॥ नै सत्पुरुषेन्द्रायनमः ४३ ॥ नै महापुरुषेन्द्रायनमः ४४ ॥ नै  
 अमितकार्येन्द्रायनमः ४५ ॥ नै महाकार्येन्द्रायनमः ४६ ॥ नै गीतरतीन्द्रायनमः  
 ४७ ॥ नै गीतयशेन्द्रायनमः ४८ ॥ नै सन्निहितेन्द्रायनमः ४९ ॥ नै सामानि  
 केन्द्रायनमः ५० ॥ नै धात्रेन्द्रायनमः ५१ ॥ नै विधात्रेन्द्रायनमः ५२ ॥ नै  
 ऋषिन्द्रायनमः ५३ ॥ नै ऋषिपालतेन्द्रायनमः ५४ ॥ नै ईश्वरेन्द्रायनमः ५५ ॥  
 नै महेश्वरेन्द्रायनमः ५६ ॥ नै वत्सेन्द्रायनमः ५७ ॥ नै विसालेन्द्रायनमः  
 ५८ ॥ नै हास्येन्द्रायनमः ५९ ॥ नै श्रेयसेन्द्रायनमः ६० ॥ नै हास्यरतेन्द्रायन  
 मः ६१ ॥ नै पदगेन्द्रायनमः ६२ ॥ नै पदगपतेन्द्रायनमः ६३ ॥ नै महाश्रे  
 येन्द्रायनमः ६४ ॥ इति चोसठ इन्द्रनामः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥❀॥ १६ विद्यादेवी पदे १६ सोपारी चढावे ॥❀॥

॥ ❀ ॥ नै रोहिण्यैनमः १ ॥ नै प्रह्लसैनमः २ ॥ नै वज्रशृङ्खलायैनमः  
 ३ ॥ नै वज्रांकुशायैनमः ४ ॥ नै चक्रेश्वर्यैनमः ५ ॥ नै पुरुषदत्तायैनमः ६ ॥  
 नै कालपैनमः ७ ॥ नै महाकालपैनमः ८ ॥ नै गोम्यैनमः ९ ॥ नै गंधा  
 यैनमः १० ॥ नै महाज्वालायैनमः ११ ॥ नै मानव्यैनमः १२ ॥ नै वैरोढ्या  
 यैनमः १३ ॥ नै अन्नुत्तायैनमः १४ ॥ नै मानस्यैनमः १५ ॥ नै महामा  
 नस्यैनमः १६ इति षोडश विद्या देवी नामः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

### ॥❀॥ अथ २४ यक्षपदे सोपारी चढावे ॥❀॥

॥ ❀ ॥ नै ब्रह्मशांतियैनमः २४ ॥ नै पार्श्वयक्षायनमः २३ ॥ नै गौमेधायनमः  
 २२ ॥ नै ऋकुठयैनमः २१ ॥ नै बरुणायनमः २० ॥ नै कुबेरायनमः १९ ॥ नै यक्षे  
 द्रायनमः १८ ॥ नै गंधर्वायनमः १७ ॥ नै गरुडायनमः १६ ॥ नै किन्नरायनमः  
 १५ ॥ नै पातालायनमः १४ ॥ नै षण्मुखायनमः १३ ॥ नै कुमारायनमः  
 १२ ॥ नै यक्षराजायनमः ११ ॥ नै ब्रह्मण्यैनमः १० ॥ नै अजितायनमः  
 ९ ॥ नै विजयायनमः ८ ॥ नै मातंगायनमः ७ ॥ नै कुसुमायनमः  
 ६ ॥ नै तुंबुरवैनमः ५ ॥ नै यक्षनायकायनमः ४ ॥ नै त्रिमुखायनमः  
 ३ ॥ नै महायक्षायनमः २ ॥ नै गोमुखायनमः १ ॥ इति २४ यक्ष  
 नामः ॥ सोपारी चढावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

## ॥ ॐ ॥ अथ २४ यक्षणी नाम लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ चक्रेश्वर्येनमः १ ॥ ॐ अजितबलायैनमः २ ॥ ॐ डुरितार्थ्येनमः ३ ॥ ॐ कालिकायैनमः ४ ॥ ॐ महाकाल्यैनमः ५ ॥ ॐ श्यामायैनमः ६ ॥ ॐ शांतायैनमः ७ ॥ ॐ ऋकुटायैनमः ८ ॥ ॐ सुतारकायैनमः ९ ॥ ॐ अशोकायैनमः १० ॥ ॐ मानव्येनमः ११ ॥ ॐ चंभायैनमः १२ ॥ ॐ विदितायैनमः १३ ॥ ॐ अंकुशायैनमः १४ ॥ ॐ कंदर्पायैनमः १५ ॥ ॐ निर्वाणायैनमः १६ ॥ ॐ वलायैनमः १७ ॥ ॐ धारिण्येनमः १८ ॥ ॐ धरणप्रियायैनमः १९ ॥ ॐ नरदत्तायैनमः २० ॥ ॐ गांधार्येनमः २१ ॥ ॐ अंबिकायैनमः २२ ॥ ॐ पदमावत्येनमः २३ ॥ ॐ सिद्धायिकायैनमः २४ ॥ इति ॥

## ॥ ॐ ॥ अथ नवनिधाननामः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ नैसर्गिकायनमः १ ॥ ॐ पांडुकायनमः २ ॥ ॐ पिंगलायनमः ३ ॥ ॐ सर्परेलायनमः ४ ॥ ॐ महापद्मायनमः ५ ॥ ॐ कालायनमः ६ ॥ ॐ महाकालायनमः ७ ॥ ॐ माणवायनमः ८ ॥ ॐ शंखायनमः ९ ॥ इति नवनिधान पदे ए कलश चढावे ॥ ॐ ॥

## ॥ ॐ ॥ अथ २० दिग्पालादि नामः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ विजयस्वामिनेनमः ॐ क्षेत्रपालायनमः १ ॥ ॐ चक्रेश्वर्येनमः २ ॥ ॐ धरणिद्रायनमः ३ ॥ ॐ पद्मावत्येनमः ४ ॥ ॐ इंद्रायनमः ५ ॥ ॐ अग्नयेनमः ६ ॥ ॐ यमायनमः ७ ॥ ॐ नैऋतायनमः ८ ॥ ॐ वरुणायनमः ९ ॥ ॐ वायवेनमः १० ॥ ॐ कुबेरायनमः ११ ॥ ॐ ईशानायनमः १२ ॥ ॐ नागायनमः १३ ॥ ॐ ब्रह्मणेनमः १४ ॥ इति दशदिग्पाल ॥ ॐ सूर्यायनमः १५ ॥ ॐ चंद्रायनमः १६ ॥ ॐ ज्योमायनमः १७ ॥ ॐ बुधायनमः १८ ॥ ॐ बृहस्पतयेनमः १९ ॥ ॐ शुक्रायनमः २० ॥ ॐ शनैश्वरायनमः २१ ॥ ॐ राहवेनमः २२ ॥ ॐ कर्तवेनमः २३ ॥ इति नवग्रहनामः ॥ ॐ ॥ इहां ऋषिमंत्र पूजनकी ( तथा ) वीशस्थानक मंत्र पूजनकी विशेष विधि; नाममात्र स्थापन पूजन करनेकी लिखी है । ( इस उपरांत ) मंत्र प्रतिष्ठा वलवाकुलादिककी संपूर्ण विधि पूर्व नवपद मंत्र पूजामें लिखा है । उसीमुजव करनी ( इससे ) विशेषविधि करानी होय तो विद्वान् गुरुको पूछके करानी ॥ इति वीशस्थानक मंत्र पूजाविधि संपूर्ण ॥ ॐ ॥

## ॥ ❀ ॥ अष्टापद गिरिस्थापन पूजन विधि ॥ ❀ ॥

पूर्व

॥ ६॥

त्रिवेदिकमध्य

अशोकवृक्ष

उर्ध्वः ॥

॥ ❀ ॥ चतारिदक्षि

णाए । पश्चिम उ अठ

उत्तराड । दस पुवा ए दो

अठा । वयंमि वंदे चउवी

सं १ ॥ पुवाइं उसनम

जियं । दक्षिण उ संनवा

इचत्तारी । पश्चिम सुपा

समाइ । धम्माइ दसउ उत्त

रउ २ ॥ इति प्रथम परि

पाटी ॥ प्रथम चोवीस प्र

जुकी थापना करणी ।

तिसकी विधि लिखे हे

७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।

पश्चिम

१५।१६।१७।१८।१९।२०।२१।  
२२।२३।२४।२५। उत्तर ॥

(इहां)मैंढल, मुरमा फली, मोली, आत्मरक्षा पूर्वक सर्व नवपदजीके मंमलवत्  
जाणणा । नवग्रह, दसदिग्पाल, थापना सहित (पढे) २४ जिनकी थापना  
करै॥ ए श्लोक पढके॥ श्री नाज्ञेय जिनेशत्वं । नंदायत सितांशुकः । यथा कुमु  
दतीनेता । नंदायतसितांशुकः ॥ १ ॥ नै ज्ञी श्री अर्हं ऐं श्री ऋषभदेव  
स्वामी वेदिका पीठेतिष्ठ २ स्वाहा ॥ १ ॥ उपाध्व मजितंनक्त्या । कंदधाना  
मनेकपं । प्रणतो बोधितं ज्ञान । कंदधाना मनेकपं ॥ २ ॥ नै ज्ञी श्री  
अर्हं ऐं श्री अजितस्वामी ० २ ॥ श्री संनव प्रपन्नाये । समयंते सदादरात् ।  
ते संसार वनान्मुक्ति । समयंते सदा दरात् ॥ नै ज्ञी श्री अर्हं ऐं श्री संनवस्वा  
मी ० ३ ॥ येन नंदन ते तीर्थ । राजपाद सन्नाजनाः । विलसंति चिरंतेत्र ।  
राजपाद सन्नाजनाः ॥ ४ ॥ नै ज्ञी श्री अर्हं ऐं श्री अग्नि ० ४ ॥ पूजितां  
झिबयी मुक्तये । कांता राजीव मालया । सुमते तव लीनाहः । कांता राजीव  
मालया ॥ ५ ॥ नै ज्ञी श्री ऐं श्री सुमति ० ५ ॥ पद्मप्रज्ञः सुदृष्टीनां । जूरि  
शोभा तपोदयाः । हन्यात्तमांसि पूवेव । जूरिशोभा तपोदयाः ॥ ६ ॥ नै ज्ञी श्री  
अर्हं ऐं श्री पद्मप्रज्ञ ० ६ ॥ सुपार्श्वतत् श्रुतंश्रुत्वा । दर्पकोप क्रमानलां ।  
मुंचंति जंतवःशांता । दर्पकोपक्रमानलां ॥ ७ ॥ नै ज्ञी श्री अर्हं ऐं श्री

सुपार्श्व० ७ ॥ जवांश्चंद्र प्रजेन्द्रेण । यैरन्नाजिसमुन्नतः ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अहं  
 ऐं श्रीं चंद्र० ७ ॥ सुविधेत् विधिंप्राप्य । प्रमाद्यंत्य समाहितः । येतेश्व  
 यः श्रियं श्रस्त । प्रमाद्यंत्य समाहितः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अहं ऐं श्रीं सुवि  
 धि० ९ ॥ सेवते शीतलत्वाये । देवसंपन्नकेवलं । अपि मुक्तिर्नवेत्तेषां । देव  
 संपन्नकेवलं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अहं ऐं श्रीं शी० १० ॥ श्रीश्रेयांस  
 तनून्नाजां । परमोक्त गतिर्नवान् । अनंतानुसत्त्व विश्रांतं । परमोक्त गतिर्न  
 वान् ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अहं श्रीं श्रेयांस० ११ ॥ वासुपुज्य नवस्त  
 र्ण । नीरजा रूढ सक्रमः । हरत्वं विरहंमोहं । नीरजा रूढ सक्रमः ॥ १२ ॥  
 ॐ ह्रीं श्रीं अहं ऐं श्रीं वासुपुज्य० १२ ॥ विमलत्वां प्रतिस्वये । रंजयंति  
 मनोज्ञं । अपि डुर्जयं मुधैस्ते । रंजयंति मनोज्ञं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
 अहं ऐं श्रीं विमल० १३ ॥ जग्मिवां समनंतत्वां । नमस्यंति महापदं ।  
 येते विश्व त्रयी लक्ष्मी । नमस्यंति महापदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अहं ऐं  
 श्रीं अनंत० १४ ॥ नाशुन स्तवसिद्धांतो । येनाधीत नयस्ततः । वरंधर्म  
 जिनश्चर्मा । येनाधीत नयस्ततः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अहं ऐं धर्म० १५ ॥  
 श्रीशांते देहिनां देहि । सारंग विदधेधृतिं । शर्मकर्म तत्तेरंक । सारंग विदधे  
 धृतिं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अहं ऐं श्रीं शांति० १६ ॥ कुंथनाथस्तु पंथानं  
 विधुत्तारो वृषादृतः । पुंसां तन्पात्पिनाकीच । विधुत्तारो वृषादृतः ॥ १७ ॥  
 ॐ ह्रीं श्रीं अहं ऐं श्रीं कुंथु० १७ ॥ येनत्वं नाचितःकर्म । वनवैश्वानरो  
 पमः । सो अनाथ कुधीर्नव्या । वनवैश्वानरोपमः ॥ १८ ॥ नांज्जिपन्न सुतः  
 सिद्धि । प्रतिपन्न सदारुणः । येनतेज्जिद्यतेमद्वे । प्रतिपन्न सदारुणः ॥ १९ ॥  
 ॐ ह्रीं श्रीं अहं ऐं श्रीं मन्त्रिस्वामी० १९ ॥ श्री सुव्रत जिनाधीश । मङ्ग  
 मालोप लक्षितं । द्विरंच मित्र सेवक । मङ्गमालोप लक्षितं ॥ २० ॥ ॐ  
 ह्रीं श्रीं अहं ऐं श्रीं मुनिः २० ॥ देव्योपि त्वज्जुणोक्ताना । सहा मंदर सा  
 नुगाः । गायंतित्वां नमेन्नक्त्या । सहा मंदर सानुगाः ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
 अहं ऐं श्रीं नमि० २१ ॥ तृष्णातापात्तया वर्ष । शमिता दान वारणा ।  
 श्री नेमे जनतांराध्य । शमिता दानवारिणा २२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अहं ऐं श्रीं  
 नेम० २२ ॥ पार्श्वदेवः सदा रुत । महाहारतरंगिताः । नाटयंति चरिन्ते  
 महाहारतरंगिताः ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अहं ऐं श्रीं पार्श्व० २३ ॥ वीते



जिन पतिः पातुः । तत्त्वानः कांचनश्रियं । विभ्रन्नमेषु निस्सीमां । तत्त्वानः  
कांचनश्रियं २४ ॥ नै ज्ञी श्री अहं ऐं श्री वीरस्वामी अत्र वेदिका पीठे  
तिष्ठ तिष्ठ स्वाहाः २४॥ ( पीठे ) चौबीसप्रकारी पूजा करावै॥ पूजा नएया  
पीठे, बलवाकुलासैं दिग्पालादिककों विसर्जन करे ॥ इति अष्टापद पूजा ॥

॥ ❀ ॥ अथ नीवमे पाया नरणेकी विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथमसैं नीवषोदी गई हे, जिसके नीतर, बायव्य कोणमें लो  
टो १ नालेर १ मावे, ऐसो गमो खोदके, उस गढेके नीतर पृथ्वी  
का पूजन करणा ॥ नै पृथिवीनमः ॥ जलं समर्पयामि । ऐसा कहिके  
जलधारा देवे । पीठे रोलीको ठीठा देवे । मुंग, अक्षत, पुष्प, दोव, धूप,  
दीप, गुग्गु, पतासा, चढायके फेर जलधारा देवे । पान सुपारी चढावै ।  
सब चीजां मंत्र पूर्वक चढावे । चोखूणो रूपीयो, उसी गढेके बीचबीचमें  
धरणो । तीसपर लोटो धरणो । लोटेके नीतर रूपो, सोनो, मोती, मुंगा,  
माणक, ऐपांचे रत्न रखणा ( पीठे ) लोटो घीसैं नरणो । उस लोटेमांहि  
सोनेको नाग, चिमठी ( तथा ) चुंथीसैं धरके, नेत्रुत कुण मुखकीयां वेठाव  
णों । सुंवो रहे । मिगे नही, ऐसैं वेठावणो । नागके बांइ तरफ, रूपेकी ना  
गिणी, नेत्रुत कुणकी तरफ मुखकीयां वेठावणी ( पीठे ) नाग नागणीकी  
पूजा ऐसैं कराणी । नै अनंतायनमः॥ जलं समर्पयामी । ऐसा कहिके, थोमो  
सो जल, लोटेमांहि चढावणो । रोली समर्पयामि । ( ऐसो कहिकर ) रोली  
रो ठांठो लोटेमांहि देणो । अक्षत, पुष्प, दूर्वादि, धूप, दीप, नैवेद्य सम  
र्पयामि ॥ ऐसा कहिके, गुग्गु, पतासा, चढावणा । जलं समर्पयामि । ऐसा  
कहिकर, जलधारा देणी । तांबूल, पुगीफल, समर्पयामि । ऐसा कहिकर,  
पान सुपारी चढावणा । श्रीफल समर्पयामि । ऐसा कहिकर, श्रीफल  
चढावणा । लोटेके ऊपर रकेबीसैं ढांक देणा । रकेबीके ऊपर नालेर रख  
णा । सर्व द्रव्य चढावणा ( सो ) मंत्र पूर्वक चढावणा ( पीठे ) इंटा ५  
जलसैं पखालके, रोलीसैं ठीठा देणा । अक्षत फूल प्रमुख चढाय देणा ।  
मालकके हाथके मोतीकी राखनी बांधणी । तिलक करणो । रोलीका ठीठा  
देणा ( पीठे ) पांच इंटा कारीगरके हाथसे, लोटेके ऊपर रकेबी हे, रके  
बीके ऊपर श्रीफल हे, तिसपर वेठाय देणी । उसी वखत चोफेर सवा गज

प्रमाणे नीवजरं जरणी ( पीठे ) सर्व दिन काम चलू रखणा ॥ इति  
पाया जरण विधिः ॥ जद्रं कुरुष्व परिपालय सर्वंशं ॥ विघ्नं हरश्च विपुलां  
कमलां प्रयश्च । जेवातू कार्क सुर सिद्ध जलानि यावत् । स्थैर्यं नजश्च वित  
नुष्व समीहितानि ॥ १ ॥ अनेन वृत्तेन सर्वं देव देवी कलश ध्वजादि  
स्थापनं विधेयं ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पद्मावती विधान मारुपते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ अस्य श्रीपद्मावतीस्तोत्रमंत्रस्य ॥ श्री पार्श्वजिनेन्द्रऋषिः ॥  
श्री पद्मावतीदेवता बृहतीतुंदः ॥ आंबीजं ॥ ह्रीं शक्तिः ॥ क्रौंकीलकं ॥ श्री  
पद्मावतीप्रसाद सिद्ध्यर्थे जपेदिनियोगः ॥ ॐ पार्श्वजिनेन्द्र ऋषियेनमः ॥  
शिरसि ॥ ॐ पद्मावती देवतायै नमः ॥ मुखे ॥ बृहतीतुंदसेनमः ॥ हृदये ॥  
आंबीजाय नमः ॥ नाभौ ॥ ह्रीं शक्तये नमः ॥ पादयो ॥ क्रौंकीलकाय नमः ॥  
सर्वांगे ॥ ( अथ न्यासः ) ॥ ॐ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां  
नमः ॥ ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ धूं फ  
निष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रीं आं हृदयाय  
नमः ॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ क्रौं शिखायै वषट् ॥ ॐ ह्रीं कवचाय ह्रीं ॥  
ॐ धूं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ह्रीं अस्त्राय फट् ॥ एवं न्यासं निधाय ॥ ॐ आं  
क्रौं ह्रीं मंत्रेण प्राणायामं ॥ पूर्व्वामपुटेन पूरकं कुंजकं ॥ पुनः दक्षिणपुटे  
नरेचकं ॥ पुनः दक्षिणेन पूरकं कुंजकं ॥ वामेन रेचकं ॥ पुनः वामेन कुंजकं पूर  
कं ॥ दक्षिणे रेचकं ॥ एवं प्राणायाम ॥ पश्चात् योनिमुद्रां कुर्यात् ॥ ( अथ  
ध्यानं ) ॥ पद्मासना पद्मदलायताक्षी ॥ पद्मानना पद्मकरां ह्रिपद्मा ॥ पद्मप्रज्ञा  
पार्श्वजिनेन्द्रयक्षाः ॥ पद्मावती पातु फणिंद्रदेवी ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा मानसो  
पचारैः संपूज्य ॥ पुनः ॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रीं धूं ह्रीं पद्मावतीवरप्रदः १  
सर्वजनमेव समानय समानय स्वाहा ॥ एवं अष्टोत्तरशतं जपेत् ॥ पश्चात् स्तोत्र  
पठ्यते ॥ अथ स्तोत्रं ॥ श्री मन्त्रीर्वाण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पद्मावती पूजा स्तोत्र लि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री पार्श्वनाथजिननाथक रत्नचूम । पाशांकुशैर्नयफलांकित दो  
चतुष्कं ॥ पद्मावती त्रिनयने त्रिफणावतांसा । पद्मावती जयतिशासन पूर्णमूर्ति  
॥ १ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं अरुणवर्णी सर्वलक्षण संपूर्ण सायुधं सवाहनं बभूविन्द परि

वारसहितं पद्मावतीदेवी अत्रावतर १ तिष्ठ १ ठः ठः ठः संनिहितो वौषट् स्वा  
हा ॥ त्रिवारेण आक्रान्तं ॥ अथ पूजा ॥ सर्वलोकजन तापहारणी ॥ वार  
णीसुरजिगंधशालिनी ॥ अर्चयामि जिनशाशनदेवी ॥ पद्मिनीकुमुदनेत्रशालि  
नी ॥ १ ॥ जलंग्रहाण १ स्वाहा ॥ नृशंखिरोचिर्विमलैश्च लक्ष्मैः । विरक्त शालप  
क्तसंचयैश्च ॥ पद्मावती पद्मदलायताक्षी ॥ यजाम्यहं सर्वगुणैर्युतां च ॥  
३ ॥ (अक्षतं) ॥ कर्पूररुष्णागुरु कुंकुमाद्यैः ॥ गंधैर्महामोद मनोहरैश्च ॥ पद्मा  
वती कोकनदीप्रज्ञांगी ॥ यजाम्यहं कामसुखायहेतुं ॥ ४ ॥ (चंदनं) ॥ जाती  
केतकी पारजात कुसुमे कुंदैः जपा पाटलैः ॥ संध्याराग सुदेहकांति सुजगा  
सारस्वती सर्वदा ॥ पुष्पैर्वास कदंब कासित लसत्पद्माविनां देवता ॥ मन्त्र्य  
र्च्येषु गुणार्णवां जगवतीं पुष्पैस्सदा प्रार्चयेत् ॥ ५ ॥ (पुष्पं) ॥ सुगंध सुस्वाद  
सुनक्तिपुष्पैः ॥ पीयूष पिम्पोपमशालिङ्गधैः ॥ कल्याण निर्वृति शुभाजनस्थै  
संपूजये देविसुभासुरांगी ॥ ६ ॥ (नैवद्यं) ॥ सप्यंहुत्रांशुसाराप्लुतविशदसदा  
संगि संप्राप्त दीपैः ॥ ध्वस्तध्वातैः सुसांद्रैः सकल जन मनोहारिनिर्दीपवा  
तैः ॥ चंचचंद्रांशुजालै र्वि कठिन कुचदंढमध्ये लुठन्ति ॥ हारैर्विभ्राजितांगी  
जन सरणसरो जात नृंगी यजामि ॥ ७ ॥ (दीपं) ॥ चंचजुगल शीतदीप्ति  
विमल श्रीखंभसन्मिश्रितैः ॥ काश्मीरा गुरुधूपतांगघटनैर्धूमैर्दरैः कामदैः ॥  
देवी रक्तसरोज कांति विमला देहप्रज्ञाज्ञासुरा ॥ राजीवांजन शालिनी शुभ  
गतिपद्मावती चर्चयेत् ॥ ८ ॥ (धूपं) ॥ फुल्लद्रंजाघटोधैः फनसफलशतैर्मातुलै  
भातुलिंगैः ॥ जंजीरैः शश्वदंजोफलधरणिवहैः कोमलैः कामडग्निः ॥ चंचद्रा  
क्षाकपित्थैः क्रमुकपलशतैर्दाहिनीवप्रचक्रैः ॥ कल्याणांगीयतेहं जिनचरण  
सरोजात नृंगीफलाय ॥ ९ ॥ (फलं) ॥ श्रीमन्महाचीन डुकूलनेत्री ॥ सहस्रौमकौ  
शेयकचीनवस्त्रैः ॥ शुभ्रांशुकैः शोणिमणि प्रज्ञांगी ॥ यजाम्यहं पञ्चग राज  
देवी ॥ १० ॥ वस्त्रं ॥ कांचीसुत्र विमुत्र रत्न रचितैः केयूरसत्कुंडलैः ॥ मां  
जीरां गददूर्मिकादि मुकुटैः प्रालेयका वासकैः ॥ चंचघाटक पट्टकूल विलस  
द्ग्रेव्यैकैः नूतणैः ॥ सिंदूरांगद नूषणैः स्तुशुभ्रगैः संपूजयामो वयं ॥ १० ॥  
(आचरणं) ॥ इति पद्मावती पूजा समाप्ता ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ अष्टमय निवारण षंड ॥ ॥

॥ ॥ दूहा ॥ सरस वचन दे सरसती ॥ एह अरज अवधार ॥ प्रार

धिया पहमैनही ॥ उत्तम ए आचार ॥ १ ॥ हित करजे मोसुंहिवै ॥ दीजे  
वयण डुरस्त ॥ कवियणपिण गुणनैकहै ॥ सखरोघणुं सरस्त ॥ २ ॥ गुण  
गिरुनगौमीधणी ॥ पारसनाथ प्रगट ॥ मनसुधे मोटांतणां ॥ गुणगातां गह  
गट ॥ ३ ॥ ठंदनाराच ॥ प्रसिद्धि बुद्धि सिद्धि निद्धि रिद्धि वृद्धि पूरण ॥ क  
लत्त पुत्त कित्त वित्त वद्धते सनूरये ॥ वियोगं सोग रोग विग्घ सिग्घ घायकं ॥  
प्रगट देव नितमेव सेवो पासनायकं ॥ ४ ॥ गुमान मोम हत्थजोम देवको  
नि वगगये ॥ अनूप जूप चूपधारि आइपाय लगगये ॥ पज्ज वज्ज सुकित्त नित्त  
सव्व सौंजलायकं ॥ ५ ॥ प्र० ॥ कुवोह लोह द्रोह कोह मोह माण  
वज्जियं ॥ अनंत कांत ज्ञांत दांत रूपमैण लज्जियं ॥ अशेष शुद्ध तत्त जुत्त सो  
जये अमायकं ॥ ६ ॥ प्र० ॥ विताल जाल सुविताल अरुचंद वज्जियं ।  
रुद्धयी रिसाइजाण एथ आय रज्जियं । सुनैणकंद गंधकांत कार्जजोरारा  
यकं ॥ ७ ॥ प्र० ॥ कपूरपूर कस्तूर कुंकुमा तुरंगण । अरगजा अथग्ग  
में रहै गरकअंगण । अठेहगेह उत्तिदेह सबही सुहायकं ॥ ८ ॥ प्र० ॥  
मृदंग दौंदौंदौ दण्य मण्य वज्जये । न फेर जेर ऊल्लरी नीसाण मेघगज्जण ।  
तटकतांन थेइं २ लक्ख सुक्खदायकं ॥ ९ ॥ प्र० ॥ ( डहा ) करि १  
केहरि २ दव ३ कुद्धवहि ४ । राभि ५ समुद्ध ६ रोग ७ । अतिवंधण ८  
अय अठ्ठले । सामनांम संयोग ॥ १० ॥ ( ॐ भुजंगी ) वज्जंस्ति वको कुकंतो  
ऊकोला । लपकै विलग्गीपली माललोला । वले टेवला कावली सुंम दोला  
ऊरैनिअरां जेममहेकपोला ॥ ११ ॥ पज्ज चालतो जाण पाहामतोला ॥ ऊलके ल  
लकावतोलाल मोला । इसौ दूठपूठै पमंता अकोला । जपंतां करै नांचिनी  
मात चौला ॥ १२ ॥ ( इति हस्तिनय निवारणं ) महासदसीहं अवीहं अदंमं  
जरै फाल आफालतो पुठ कुंमं । मिगैफाम माचौ वरं वज्जमुंमं । महातिरक  
नखं रखे रोखठंमं ॥ १३ ॥ फुरकावतो मुंठ फामंततुंमं । ललकंत लोला विकटं  
विहंमं । धणीपास चौनाम ध्यानं धरंमं । टलै श्यालज्युं सीहहोए अहंमं ॥  
॥ १४ ॥ ( इति सिंघनय निवारणं ) ॥ जलां जंगलांमै जटाजूट जाला ।  
घणां जाम उज्जाममै अगजाला । वज्ज मृगवग्गं पशुं पंखिवाला ।  
घलंता कमेमा चिमा जंतिजाला ॥ १५ ॥ धुपैधूम लग्गोकीया नग्गकाला ।  
ऊलोउलाल रूखे टल्या नाहिटाला । वने संकटेण्ण आयां त्रिचाला । प्रज्ज

नामनीरै वुजै तत्तकाला ॥ १६ ॥ (इति अग्निजनय निवारणं) कलू कालरूपि  
 महा विकरालं । फणा टोप रोपै महा कोपजालं । बलकै बलंतो चलंतो  
 करालं । जिणै फूंकसूकै तरुमालडालं । हलाहाल संलोलियं विखलालं ।  
 रहै लाल लोचन दोजी हवालं । धरंता प्रभू नाम रिद्वे विचालं । सही साष  
 होवै जिसी फुल्ल मालं ॥ १७ ॥ (इति सर्पजनय निवारणं) जिमे नूपनूपे अधिके  
 अटकै । खलां हाड तूटै खडगांषटकै । परां हँवरां पाडनांखै पटकै । धुरां सिं  
 धुरां कंधरा नूधटकै ॥ १८ ॥ पमै प्राण संधाण बाणै वटकै । ऊकै केइ हाथाल  
 रोसे हटकै । ऊला जाल गोले ऊनालै नटकै । तुटै तुंम मुंडा प्रचंमा तटकै  
 ॥ १९ ॥ ठोहा सलोहा पमंता ठिठकै । ऊकै सूर ऊंऊम नांखैऊटकै । प्रभु नाम  
 लेतां इसेही अटकै । कदे बालवांकौ न होवै कटकै ॥ २० ॥ (इति युद्धजनय निवारणं)  
 जतन्नेघणै कोई वैसे जिहाजै । अथग्गे जले आइकुवाय बाजै । घटाटोप  
 मेघा घममंति गाजै । ऊवकै तरंगा विरंगाऊ बाजै ॥ २१ ॥ लिचापिचलागी  
 घनीताल जाजै । अहो कोई राखै अठै अम्मकाजै । इसे संकटे जेजपे  
 जैनराजे । सही पारपामें तिके सुरक साजै ॥ २२ ॥ (इति जलजनय नि  
 वारणं) गमं गुंवडंगोलकं हीय होमी । हरस्सं खसं उध्रसं गांठ फोमी । टलै  
 गोमथी कोठ अह्वार रोमी । महा ताप संताप आतंक कोमी ॥ २३ ॥  
 न होवै कदे काय में काव्य खोमी । सऊ आधिव्याधं सही जाइ बोमी ।  
 जिनंदं नमैं मनमैं मान मोडी । लहै सो सदा सुरक संपत्ति जोमी  
 ॥ २४ ॥ (इति रोगजनय निवारणं) अमुंठा बलेठा बले मन्न खोटा । जियां  
 चक्रवुचुंची लुल्यागाल गोटा । बलेपाघवांकी लपेटा लंगोटा । सहेटचास  
 ह्या सबला हाथ सोटा ॥ २५ ॥ दीयै कोरडा देह दोलाद वोटा । बदै  
 बोलवांका ऊंऊडंत जोटा । पम्या बंदिषांनै महाडुःख मोटा । प्रभु  
 नामथी वेग थायै बिठूटा ॥ २६ ॥ (इति बंदिजनय निवारणं) नमंता  
 जिणैसं सदा मन्न रागै । सहीये महा डुधजनय अठनागै । रली लोक लरकं  
 लुली पाय लागै । दिसो दिस्स मांहै जसो जस्स जागै ॥ २७ ॥ (कलश) परतिख  
 जिनवर पास । आस उद्धासह अप्पण । विविधजासगुण वादास चादालदक  
 प्पण । चैण दैण जसुचरण, ईति अति भीत निवारण । लीललाठ लषगांन  
 विमल कीरत्तिवधारण । दिणयंति जेमदीपंति डुति । विमलचंदमुख ठविकरण

दौलति विजय हरखांदीयण । वरमसीह ध्यानह धरण ॥ १९ ॥ इत्यष्टनय  
निवारण गौडी पार्श्वनाथजीको ठंड सं० ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ अथ थंनणापार्श्वनाथजीरो स्तवन लि० ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ प्रभुप्रणमरे पास जिणेसरथंनणो । गुणगाइवारे मुळमन ऊलट  
अतिघणो । ग्यानीविणरे एहनी आदिनकोलहे । तोहीपिणरे गीतारथगुरु  
इम कहै ॥ इमकहै साखतणै प्रमाणै राम दसरथनंदन । बांधवापाजै  
शीतकाजै समुद्रतट एकणवने । तिहांरह्या बांधव राम लठमण साथि सेन्या  
अतिघणी । प्रासाद एक उतंगतोरण थापना जिनवतरणी ॥ १ ॥ तिहां  
मूरतिरे मूळगुंजारै पासनी । मनवंठिरे आसापूरै आसनी । तेराजारे दिन  
प्रति पूजासाचवै । करजोमीरे वेवांधव इमवीनवै । वीनवैस्वामी तुहप्रसादै ज  
लधिजलथंने किमै । तोपाजबांधुं लंकसांधुं इमकही प्रभुपायनमै । वज्रपूज  
करतां ध्यानधरतां सातमास गया जिसै । नवदिवस अधिकाथया ऊपरि ।  
जलधिजलथंन्यौ तिसै ॥ २ ॥ एअतिसयरे अचरिजपेख्यो प्रभुतणो । तिण  
कारणरे नामदीयो तसुथंनणो । जलऊपरिरे पाजकरी पाथरतणी । गढलं  
कारे साधेवा सीताजणी ॥ गढलंकसाधी सीतआणी तेणवन आव्यावली ।  
दिन आठ अवाइमहोत्सव कीया मनपूगीरली । श्रीरामराजा शुद्धश्रावक विनी  
तानगरीवसै । बीशमाजिनवरतणैवारै इम थया गुरुनपदिसै ॥ ३ ॥ इण  
अनुक्रमरे केतलोकाल गयो वही । ते प्रतिमारे तिणवनमे निश्चल रही ।  
इण अवसररे इंद्रतणै आएसकरी । सायरतटरे सोवनमै चारापुरी । चारिका  
नगरी रुणराजा अर्द्धनरत तणोधणी । तिहां वसै यादवकोमि ठप्पन वहै  
आग्या जिनतणी । तिण काल तिणवन तेह तीरथ तेहनी महिमा सुणी ।  
सारंगप्राणी नावआणी आव्या तिहां यात्राजणी ॥ ४ ॥ (ढाल) ॥ आव्यो  
तिहां नरहर जिणहर मनउह्वास । मनमेंआणंदै बंदै थंनणपास । पेपेअ  
तिनवली पूजा प्रभुजीने देह । एकेणै कीधी इममनथयो संदेह । संदेहथयो  
अटवी चिजंपासै नहीमानवसंचार । केणकरी विथाधर सुरवर पूजा सतरप्र  
कार । इसो विमासी मंरुप अंतर रखाजु गुप्तैठाम । मध्यरातपातालै आबी ।  
वासग विसहरसाम ॥ ५ ॥ तिहां आबी प्रणमें दै नाटिकआदेस । मिलि  
नागकुमारी विरचे अदभुतवेस । शकस्तव पनणै जाण्यौ श्रावक एह ।

हरिप्रगट्यौ ततखिण साहमी तणइ ससनेह।ससनेह वासग किण्णनरेसरवैठा  
विंववषाणै । ए श्री जिणवर पास जिणेर आदिनकोई जाणै । असी सह  
सवरसामै पूज्या जेऊंतापायालै । वरण एकप्रसाद कराव्यौ थाप्या एह  
जिनालै ॥ ६ ॥ सज्जवात कहिने वासग गयो पायालै ॥ श्री कण्णनरेसर  
मनचिंतइ ततकालै । जो एहवो तीरथ ऊवै चारिकामऊार । तो जाणुं नर  
अव सफल थयौ अवतार । सफल जनम करिवानै काजै तेहविंव तिहां  
आणै । श्री चारिका हैममै जिणवर थाप्या प्रगट प्रमाणै । घणै काल  
पूजा तिहां पांमी करमनिकाचित जाणी । श्रावकनेसुपनांतर आवी देववदे  
इमवाणी ॥ ७ ॥ प्रभुप्रतिमा वाहण लेई समुद्रमऊारि । मुंकेज्यो नगरी  
यास्यै अवरप्रकार । तिणसागर अंतर कालगयो वज्जजाम । दक्खिणदिसि उत्त  
म कुंतीनगरी ठाम । कुंतीनगरी जैनवसै जिहां श्रावक सागरदत्त । वाहण  
सातवहै व्यापारै पोतै परघटवित्त । अन्य दिवस सायरविचवहतां जिहांठै  
अंनणपाश । ऊपरि आव्या अंन्या वाहण ते सविथया उदास ॥ ८ ॥ ठाल ॥  
माशदिवस वाणी थई अंवरसुरराय । प्रतिमा अंनण पाशनी सायरजल  
मांहि । सुरप्रगट्यो जिणसासणै ॥ सुरकहै वाणी एह प्रतिमा जावसुं प्रगटी  
करो । जइजैन कुंतीनगर जिणहर मूलनायक एधरो । ते विंव कुंतीमांहि  
थाप्यो कहै वज्ज श्रावक तिहां । ए सकल तीरथ नाथ समरथ पुन्यजोग  
मित्यो इहां ॥ ९ ॥ इणि अवसर दसनुरपुरइ पालत्तइसूर । विद्यावल अं  
वरजमें अतिसय नरपूर । तीरथजाय जिणहरनमें । तेनमेंसेजुंज प्रमुख  
गिरिवर सदापाखी पारणै । पालीयतांणेरह्या थाणै नागारजुन जोगीपणै ।  
ते धातु सोवनकाज धमतां माश ठै रसकरै । करिकोपनैख बीरनाखै रूप  
पंखीनोधरै ॥ १० ॥ तिणपालत्तै सूरिनै जाण्यौ एहमहंत । पूठै को सुरदाखवो  
अतिसय गुणवंत । कपाकरी मुजजाषवो । गुरु तेह जाखै जेहथंनै उपद्रव  
सुरनरतणों । तिण कस्यौ कुंतीनैप्रसादे पाशठै प्रभुअंनणो । कुण यद्द बीर  
वेत्ताल व्यंतर सहू तसुसेवा करै । तेहनी दष्टइ साधि विद्या जेम तुमवंठित  
सरै ॥ ११ ॥ विद्यापिण आकर्षणी । ऊती जोगीनैपास । ते प्रतिमा  
आणी तिहां । थापीनिज आवास । सोवनरस सीधो जिहां । रसतिहां सी  
धो सुजसलीधो । नदी सेढीनैतटै । गुरुनै जणाव्यो तिण कहाव्यो विंवजं

मास्यो घटै । इण कालधरम सुथान थोमा ऊसीमलेत्ताइण इहां । खाख  
 रातले सेढिकातीरै विंवजंमास्यो तिहां ॥ १२ ॥ ढाल ॥ मेघ आगमसही  
 नदी ऊलटिवही वेलुका विंवऊपर वलैए । तेणजुंइ धणचरै खीरसुरही  
 ऊरै चीकणी जूमि खाखरतलैए । केतला दिनपठै सुगुरु खरतरगत्ते । श्री अ  
 जयदेव सूरिसरूप । पटविगय परिहरी उग्रतप आदरी । रगतपिप्ती थया  
 मुनिवरूप ॥ ते रगतपिप्ती गलतकाया चित्तमें चिंता करै । अधरात सासण  
 देवी आवी कोकमा नवकार धरै । ए सूत्र तूं सुखऊइ सुपरै तामगुरु  
 जंपेइसो । जो थायसी मुऊ नीरोगकाया तो सही ऊखेलसुं ॥ १३ ॥ ताम  
 देवी कहै नदीयसेढी बहै । तेण तटवृद्ध खाखरतलैए । तिहां तुझे जाइवो त  
 वनकरिवो नवो प्रगट थासी प्रभु यंजणोए । तेहनें स्नात्र जल रोग सवि  
 जाय ठलै । इम कहिय गई सासण सुरीए । संघसगलोमिली तिहां जाइ  
 मनरली । ताम धरणिंदध्यानेंधरीए । तिहां करी जयतिऊअण वत्तीसी पाश  
 प्रगट्याततपिणें । तसु सनात्रनीरै सुखसरीरै धन्य २ सऊकोजणें ॥ तिहां  
 थांनथाप्यो सुजसव्याप्यो थयो परचो अतिघणो । तेहनें नामें तेणठामें  
 गामवास्यो यंजणो ॥ १४ ॥ थइय महिमाघणी पाश यंजण तणी सुगुरु  
 काया नवपल्लवीए । संघ आवै घणा करै वझावणा महयल कीरत विस्तरि  
 ए । सुपन जे देवता कोकमा नवऊता सूत्रते सूत्र सिद्धांत नामें । वृत्ति नव  
 अंगनी नेद नवजंगनी रची आचारज तेण ठामे । ते तेण ठामें सऊय  
 पामें आसकर जो आवए । वऊ जाव जत्ते एकचित्तै सेवतां सुख पावए ।  
 एकदा गु० धरणिंदध्यानें प्रगट थइं पदमावती । श्री अजयदेवसुरिंद  
 आगलि । इम कहै सांजल यती ॥ १५ ॥ तवनजे तुह  
 कस्यो मंत्र अतिशय जस्यो अंति तसुगाह जे वे कह्यो । तेह गुणीयै  
 जिहां इंद्र आवै तिहां कट विणतेह गुणवी नहोए । तेह जंमारवी काज सं  
 जारवी । अवरइण तवनमहिमाघणीए । समरतां संपदा रोगनावै कदा सदा  
 आवश्यकधुरि जेणीए । पम्किमणानितजणें धुरि एह दिवि खरतर तणीए ।  
 इम कह्यो सासणि देव सांमणि गई निजयांनिकजणीए । केतले दिवसे दे  
 सगुऊर सयल मलेत्तायन थयो । जलतांमजाणी विंवआणी । नयरश्रीपंचा  
 इति ठव्यो ॥ १६ ॥ पंचनयर सिरि पास जिणे सरू । दिन २ दीपइ अती



अलवेसरू । जात्र करेवा मुऊ जंतोरली । प्रभुमें जेठ्यो आस सहू फली ।  
 मुऊ आस सफली थईयसांमी जामजेठ्या जगपती । सोत्राग सुंदर करो  
 ननति करुं एती वीनती । अश्वसेन वामादेव अंगज ध्यान मनतोराधरुं ।  
 करि कृपा सांमी सीस नांमी सदा तुह्य सेवा करुं ॥ १७ ॥ कलश ॥  
 इम स्तव्यो थंजण पास सांमी नगर श्री पंजाइतै । जिम सुगुरु श्री मुख  
 सुणी वाणी साख आगम संमतै । ए आदि मूरति सकल सूरति सेवतां  
 सुख संपए । मन जाव आणी लाज जाणी कुशल लाज पयंपए ॥ १८ ॥  
 इति श्री थंजणा पार्श्वनाथ स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ उपदेशमाला यंत्राम्नाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं नमः ॥ नमिऊण जिणवरिंदे । इंदनरिंदच्चिए  
 तिलोय गुरु । उवएसमाल मणिवो । बुद्धामि गुरुवएसेणं ॥ १ ॥ जगच  
 डामणि नूने । उसन्नो वीरो तिलोच सिरतिलने । एगो लोगाइवो । एगोचक्खू  
 तिऊयणस्स ॥ २ ॥ इतिध्यात्वा वारत्रयं ॥ ॐ सच्चं ज्ञासइ अरिहा । सच्चं  
 ज्ञासइ केवली । जयवं एणं सच्चेणं । सच्चं सच्चेण मेज्जवने स्वाहा ।  
 इस मंत्रसे गाथा मंत्रके देखे । शनिवारे, संध्यासमये, श्री उपदेशमालाकी  
 गाथाका जितना अक्षर ऊवै । जिसको ३ ज्ञाग दीजइ । अक्षर १ ऊवरै, तो दिन  
 ५ कष्ट । दोय २ अक्षर ऊवरै, तो दिन १० कष्ट, पिण जीवै । सून्य आवै  
 तो विमासण न करै । अणसण करावै । उत्कृष्टी गाथा दिन ५ कष्ट  
 परंजीवै । मध्यमगाथाइ पंचरात्र ढील कीजै । चउकडीये कष्ट । शून्य आवै  
 तो नजीवै । मीडा ऊपर नाणूं धरावे । ते गाथा विचारै । पहिलीमीडा ६  
 तेसईकडा ०००००० (पीठे) नीचै मीडा दस १०, ते दाहका ०००००००  
 ००० ( फेर ) मीडा दस, ते गाथा ००००००००० ( पीठे ) उदा  
 हरणं । प्रथम मीडा ऊपरि धरावे । जितरमा मीडा उपर मेळै । तितर  
 मोसईकडो । इस अनुक्रमें गिणीजै । पीठे १० मीडा उपर धरावे । ते दाह  
 को जितरमो गिणीजे । पीठे नीचला १० मीमा ऊपरै धरावे । जिस मीमा ऊ  
 पर धरे । सो दाहकानी जितरमी गाथा जाणीजै । ( इसीतरे उपदेशमाला  
 गाथा यंत्र जोईजै ) शनिवारे संध्या समये, अक्षित पूजादिसहित चतुर्थप्रहरे  
 प्रथम सुजघटी पुनः पूजा करणीयाः । कुमारी करेण चित्रं करणीयं । युगंधरी

ढिगलीद । पुनः ढिगली १०। (गाथा)नमिऊण जिणवरंदे । पठित्वा वार ३ शतकः कथितः । पुनः दस १० ढिगली ऊपर धरावे । गाथा ज्ञेया । पश्चात् गाथा ३ अनुक्रमेण अवलोकी शुभाशुभं कथयति । । राजार्थे, राजमार्गे, देश, पुर, ग्राम, रोगार्थं, जीवतव्यादि, विलोकनीया । उपदेशमाला गाथाया यावंतो वर्णाःस्युः । तेत्रिजिह्वीयते । एकस्मिन् वर्णे उद्धरिते ५ पंच दिनानि कष्टं । व्योर्द्धरितयोः १० दश दिनानि जीवति । शून्ये सति विलंबो न विधेयः । अनशन मेव कारयितव्यं । इत्युपदेशमाला यंत्रकाम्नायः ॥

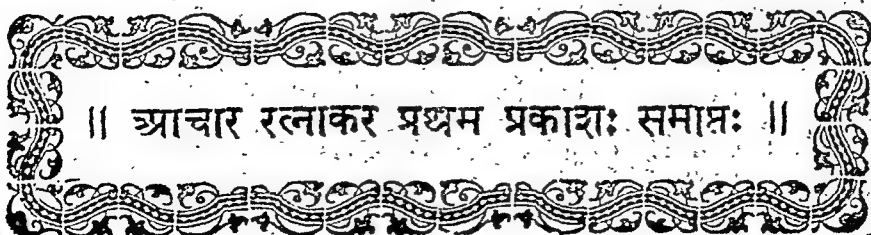
॥ ✽ ॥ अथ मंत्र नाम माला लि० ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ॐ कारमनवधानां । विद्यानामादिमादरात् । स्तुमः प्रज्ञाव संज्ञा र । विज्ञावित जगन्नयं ॥ १ ॥ ॐकारः प्रणवोऽप्योतिः । परमेष्ठि मयोध्रुवः । परम ब्रह्म विनय । प्रदीपो जातवेदसः ॥ २ ॥ परमः शक्तितत्त्वंच । श्री ज्ञानं श्री गृहंरमा । अर्हं मर्हं न्परब्रह्म । वाचकं परमेष्ठिनं ॥ ३ ॥ सिद्धि चक्र परं वीजं । द्विः पृथिव्युच्यते पुनः । पःपयः स्वाचसमेहो । हाव्योमां पाशएवच ॥ ४ ॥ प्रौ चतुष्कल मारुधातं । सौंजीवोऽङ्गः सहस्ररुक् । क्लींकारः काम राजःस्या । दृश्यं कामात्मकंस्मरः ॥ ५ ॥ क्लीं च माया महा माया । माया लता जगन्नयं । परमेष्ठ्यात्मकं शक्ति । हंःशून्यं गदितं बुधैः ॥ ६ ॥ क्लृंविद्धे पो रोपणधि । तत्त्वं माया मयंमतं । हौं ज्ञानं खंशिवः शस्त्रं । हंस आत्मा समीरणः ॥ ७ ॥ ऐंकारो ज्ञारती वाणी । मयंवाग्भवमेवच । शक्ति कुंमलिनी वीजं । त्रिपुरा परि कीर्तिता ॥ ८ ॥ अकारो हर इं विष्णु । मांयावाङ्मयमुच्यते । ऐंज्वलनं कौंचांकुश । निरोक्षौखश्वखादनं ॥ ९ ॥ ग्लैस्तंजनं प्रै ग्रहणं । द्विषन्निरोध नामकं । जूँकारो द्वेषणं स्वांच । चान्द्रं पीयूष नामकं ॥ १० ॥ ब्लैकारो द्रावणं ब्लैचा । कर्पणं यो विसर्जनं । उच्चाटनं च यं वायू । रसोलः स्वंजवासवौ ॥ ११ ॥ रः पावको ज्ञं क्रोधात्मा । विद्धेपो वाङ्मयं तथा । ह्रौं प्रेतासनं शक्ति । निर्नादः परिकीर्तितः ॥ १२ ॥ ह्रौँकारो महा शक्ति । क्लींचसोमं विपापहं । ह्रौँ महाक् कूटंच । संवर्त्तकं निगद्यते ॥ १३ ॥ सकार श्रंद्रमार्जीव । कुलं शक्ति फमस्त्रफुट् । विसर्जनं चालनं चो । ज्वाटः स्वधाच पौष्टिकं ॥ १४ ॥ वषट्क्वयं तथा द्रांद्नी । क्लीं ब्लैसः पंचसायकाः । कामराजं रतिवीजं । वाग्मन्त्रं मोहनं तथा ॥ १५ ॥ प्रीतिवीजं पंचमस्या ।

दकारः पंचमोमेतः । प्रासादः प्रौं तथा हंसं । विषापहंच निर्विषं ॥ १६ ॥  
 वीषमच पूजा ग्रहणं । कर्षणाकान संझकं । स्वाहाच शांतिकं हामौ ।  
 नमो जापश्च शोधनं ॥ १७ ॥ संबोषमा कर्णनिंचा । मंत्रणं कीर्पिकः ।  
 हांही हू हैं तथा होंहोः । हृदयं मस्तकं शिखा ॥ १८ ॥ नेत्रत्रयं क्रमेणै  
 वा । मनिधा गदिता मया । अकारै कारकाचट । तपया शंशपार्थिवाः  
 ॥ १९ ॥ अकारै खठठास्थश्च । फरषा मारुतामताः । इकारौ गजडादश्च ।  
 वलसा वारुणा स्तथा ॥ २० ॥ ईकारौ घऊढातश्च । जवहास्तैजसाः पुनः ।  
 चतुःसरा विसर्गाश्च । वर्गात्पा व्योमजामताः ॥ २१ ॥ उँमौलि रामुखमिई ।  
 नेत्रे कर्णा बुज्ज स्मृतौ । कूज्जु घ्राणे लृलृ गंडा । ए ऐ रदनयामलं ॥ २२ ॥  
 उँ ऊ उँष्टौ विंडुर्जिका । विसर्गः कंठ उच्यते । कादि चादी जुजौटादि । ता  
 दी चलण यामलं ॥ २३ ॥ पफौ कुक्की पृष्ट नाज्जी । हृदया निच वादयः ।  
 य र ल व श ष साश्च । सतैते धातवोमता ॥ २४ ॥ बीजो परि स्थितारेखा ।  
 कला चंद्रा हलांकुरौ । अर्ध खंड कला अर्ध । खंडादिभ्योमृतयुति ।  
 मारणादौ पुनः श्याम्या । धूम्राविघेषणादिषु ॥ २५ ॥ शुभ्राशात्पादिके  
 कार्ये । ध्येयोवर्णाश्च मंत्रगाः । इत्येषा कियती मंत्रा । मात्रका निर्मिता मया  
 ॥ २६ ॥ इति श्री मंत्र नाममाला समाप्ता ॥ श्रीरस्तुः ॥ ॥॥॥

### ॥ ✽ ॥ अथ स्वकुलप्रकाशनं ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ हिवकही माहरो कुलप्रकाशुं अहो नवियण तुमसुणो । गुरुगह्व  
 कोटिक चंद्रकुल अरु वयरिशखा चित्तणो । गुणगण जिनेसर सूरिपट्टण  
 विरुदपायो गुणकरी । सोजयउ खरतरगह्व मोहन प्रगट सज्ज नविहित  
 धरी ॥ १ ॥ गुरुगह्व खरतर तेजदीपै विक्रमपुर सोहै सही । जिन हंस  
 सूरीसर तणैपद, चंद्रसूरी जिनमही । गणधार लहमीप्रधान पाठक विनयगु  
 ण उल्लासए । बज्जरत्न संग्रह नगर मुंवइ किया मोहनजासए ॥ २ ॥ ✽ ॥



॥ आचार रत्नाकर प्रथम प्रकाशः समाप्तः ॥

॥ \* ॥ श्री जैनपाठशाला ॥ \* ॥

॥ \* ॥ आचाररत्नाकर ॥ \* ॥

॥ \* ॥ दूसरा प्रकाश ॥ \* ॥

॥ \* ॥ जैन इतिहास ॥ \* ॥

॥ \* ॥ सूचीपत्र ॥ \* ॥

॥ संख्या ॥ ॥ विषय ॥ ॥ पृष्ठांक ॥

॥ १ ॥ जैनधर्म अनादि उत्पत्तिस्वरूप....	....	....	१
॥ २ ॥ जैन ईश्वरका नामस्वरूप ....	....	....	२
॥ ३ ॥ कालचक्रका स्वरूप....	....	....	३
॥ ४ ॥ ठ आराका जूदा २ स्वरूप ....	....	....	४
॥ ५ ॥ जगत् मर्यादा ७ कुलगरस्वरूप ....	....	....	५
॥ ६ ॥ ५५ बोलगर्जित श्री कृष्णदेवस्वामीका अधिकार, श्रीकृष्णदेव स्वामीके १०० सो पुत्रोंका नाम, राज्याभिषेक विनीतानगरी स्वरूप, पुरुषोंकी ७२ कला, स्त्रीयोंकी ६४ कलाका नाम १८ लिपी सर्वकलाका स्वरूप, विद्याधरोंकी उत्पत्ति, समवशरण रचनाका स्वरूप, शांख्यमत स्वरूप, जैनब्राह्मणोंकी उत्पत्ति, स्वरूप, ४ चार वेदोंकी उत्पत्ति, यज्ञोपरि याग्यवल्क्य, सुलसा पिप्पलादका रसीला दृष्टांत, कैलास अष्टापद महादेवका निर्वाणस्वरूप, इत्यादि अधिकार		८-१९	
॥ ७ ॥ श्री अजितनाथ स्वामीका अधिकार ५५ बोलगर्जित दृष्टांत तथा दूसरा सगरचक्रवर्त्तिका दृष्टांत जान्हवी गंगोत्पत्ती			२९
॥ ८ ॥ तीजा श्री संजयनाथ स्वामीका अधिकार ५५ बो० दृष्टांत			३१
॥ ९ ॥ चौथा श्री अग्निनंदन ईश्वराधिकार ५५ बोलगर्जित दृष्टांत			३२
॥ १० ॥ ५ सा श्री सुमतिनाथ ईश्वराधिकार ५५ बो० दृष्टांत			३३

॥ ११ ॥ ङा श्री पद्मप्रभु ईश्वराधिकार	....	....	३४
॥ १२ ॥ सातमा श्री सुपार्श्वनाथ ईश्वराधिकार	....	....	३६
॥ १३ ॥ ङ मा श्री चंद्राप्रभु ईश्वराधिकार	....	....	३७
॥ १४ ॥ ए मा श्री सुविधनाथ ईश्वराधिकार	....	....	३८
॥ १५ ॥ दशमा श्री शीतलनाथस्वामी अधिकार	....	....	३९
॥ १६ ॥ ११ मा श्री श्रेयांशनाथ ईश्वराधिकार	....	....	४०
॥ १७ ॥ १२ मा श्री वासुपुज्यस्वामी अधिकार	....	....	४१
॥ १८ ॥ १३ मा श्री विमलनाथस्वामी अधिकार	....	....	४३
॥ १९ ॥ १४ मा श्री अनंतनाथ ईश्वराधिकार	....	....	४४
॥ २० ॥ १५ मा श्री धर्मनाथ ईश्वराधिकार	....	....	४६
॥ २१ ॥ १६ मा श्री शांतिनाथ ईश्वराधिकार	....	....	४७
॥ २२ ॥ १७ मा श्री कुंधुनाथ ईश्वराधिकार	....	....	४९
॥ २३ ॥ १८ मा श्री अरनाथ ईश्वराधिकार	....	....	५०
॥ २४ ॥ १९ मा श्री मल्लिनाथस्वामी अधिकार	....	....	५१
॥ २५ ॥ २० मा श्री मुनि सुव्रतस्वामी अधिकार	....	....	५३
॥ २६ ॥ २१ मा श्री नमिनाथ ईश्वराधिकार	....	....	५४
॥ २७ ॥ २२ मा श्री नेमिनाथ ईश्वराधिकार	....	....	५५
॥ २८ ॥ २३ मा श्री पार्श्वनाथ ईश्वराधिकार	....	....	५७
॥ २९ ॥ २४ मा, श्री महावीर तीर्थकराधिकार	....	....	५८
॥ ३० ॥ वारै चक्रवर्ति अधिकार	....	....	६०

१ नरतचक्रवर्ति, २ सगर, ३ मधवा, ४ सनत्कुमार,

५ श्री शांतिनाथ, ६ श्री कुंधुनाथ, ७ श्री अरिनाथ, ६१

८ सुभूम, ९ पद्म, १० हरिषेण, ११ जय,

१२ ब्रह्मदत्त, इन १२ चक्रवर्तिका संक्षेप दृष्टांत १२ ६२

॥ ३१ ॥ वारे चक्रवर्तिकी समान ऊर्धी अधिकार .... ६३

॥ ३२ ॥ नववासुदेव, एवलदेवका दृष्टांत नव .... ६४

१ तृपृष्ठवासुदेव, १ अचल बलदेव दृष्टांत .... ६३

२ त्रिपृष्ठ वासुदेव, २ विजय बलदेव, .... ६४

३ स्वयंभु वासुदेव, ३ चन्द्रवलदेव	....	....
४ पुरुषोत्तम वासुदेव, ४ सुप्रभु वलदेव	....	६५
५ पुरुषसिंह वासुदेव, ५ सुदर्शन वलदेव	....	६५
६ पुरुष पुंनरीक वासुदेव, ६ आनंद वलदेव,	....	६६
७ दत्तवासुदेव, ७ नंदन वलदेव	....	६६
८ लज्जमण वासुदेव, ८ रामचंद्र वलदेव	....	....
ए मा रुणवासुदेव, ए वलज्जद्र वलदेव,		
इनका विस्तारसें दृष्टांत	....	६७
इन ए दृष्टांतके सामल, ए प्रतिवासुदेवके नाम		
१ अधग्रीव, २ तारक, ३ मेरुक, ४ मधु, ५ निशुंद,		
६ वलि, ७ प्रह्लाद, ८ रावण, ए जरासिंध;		
प्रतिवासुदेवकों मारै, सो वासुदेव होय	....	....
॥ ३३ ॥ ११ रुद्र नाममात्र अधिकार	....	७०
१ नीम, २ जितशत्रु, ३ वल, ४ विश्वानर ५ सुप्रतिष्ठ,		
६ अचल, ७ पुंनरीक, ८ अजितधर, ए अजितवल,		
१० पेढाल, ११ सत्यकी रुद्रका विस्तारसें उत्पत्ति दृष्टांत		७१
॥ ३४ ॥ श्री महावीरस्वामीसें आजतक ११ गणधर प्रमुख		
७२ पट्टधारी आचार्योंका नाम, दृष्टांत, स्वरूप	....	७५
११ गणधर नाम प्रतिबोधधिकार	....	७६से७३
१ श्री गौतमस्वामी, २ श्री अग्निजूति, ३ श्रीवायुजूति		
४ श्रीअव्यक्तजी, ५ श्रीसुधर्मास्वामी, ६ श्री मंनिकस्वामी,		७०
७ श्री मौर्यपुत्र, ८ श्री अकंपित, ए श्री अचलघ्नाता,		७१
१० श्री मेतार्य, ११ श्री प्रज्ञासगणधर, ११ दृष्टांत,		७२
ये श्री महावीर स्वामीके, गणधर लब्धिधारक, ११ वमे		
शिष्य जये, इनमें पांचमा गणधर श्री सुधर्मास्वामीसें पट्ट		
धारी आचार्योंकी परंपरा चली, जिन सर्वका नाम		७२
दृष्टांत सहित, यथा ॥	....	७३
१ गणधर श्रीसुधर्मास्वामी, २ चरमकेबली श्रीजंबूस्वामी,		७४

३ श्री प्रन्नवस्वामी,	४ श्री सज्यंनवसूरिः,	८५
५ श्री यशोन्नद्रसूरिः	६ श्री संज्ञतिविजयसूरिः,	८६
७ श्री नद्रवाङ्मस्वामी,	८ श्री धूलन्नद्रस्वामी,	८७
ए श्री आर्यमहागिरीस्वामी,	१० श्री आर्यसुहस्तिसूरिः	८८
॥ विक्रमादित्य प्रतिबोधक सिद्धसेन दिवाकर दृष्टांत		८८
११ श्री सुस्थितसूरिः,	१२ श्री इंद्रदिन्नसूरिः,	१३ दिन्नसूरिः
१४ श्रीसिंहगिरि,	१५ श्रीवज्रस्वामी	१६ श्रीवज्रसेनसूरिः
१७ श्रीचंद्रसूरिः	१८ श्री समंतन्नद्रसूरिः,	१९ श्री देवसूरिः
२० श्री प्रद्योतनसूरिः	२१ श्री मानदेवसूरिः,	
२२ श्री मानतुंगसूरिः	२३ श्री वीरसूरिः	२३ जयदेवसूरिः
२५ श्री देवानंदसूरिः,	२६ श्री विक्रमसूरिः	
२७ श्री नरसिंहसूरिः	२८ श्री समुद्रविजयसूरिः,	१००
२९ श्री मानदेवसूरिः,	३० श्री विबुध प्रन्नसूरिः,	१००
३१ श्री जयानंदसूरिः	३२ श्री रविप्रन्नसूरिः,	१००
३३ श्री यशोन्नद्रसूरिः,	३४ श्री विमलचंद्रसूरिः,	१००
३५ श्री देवचंद्रसूरिः,	३६ श्री नेमिचंद्रसूरिः	१००
३७ श्री उद्योतनसूरिः	३८ श्री वर्धमानसूरिः	१०१
३९ श्री जिनेश्वरसूरिः,	सं । १०८० खरतर पदप्राप्ती	१०४
४० श्री जिनचंद्रसूरिः,	४१ श्रीजिन अन्नयदेवसूरिः	१०७
४२ श्री जिनवद्वन्नसूरिः	४३ श्री जिनदत्तसूरिः	१०९
४४ श्री जिनचंद्रसूरिः,	४५ श्री जिनपतिसूरिः	११५
४६ श्री जिनेश्वरसूरिः	४७ श्रीजिनप्रबोधसूरिः	११८
४८ श्री जिनचंद्रसूरिः,	४९ श्री जिन कुशलसूरिः	११९
५० श्रीजिनपद्मसूरिः	५१ श्रीजिनलब्धिसूरिः	१२०
५२ श्री जिनचंद्रसूरिः	५३ श्री जिनोदयसूरिः	१२१
५४ श्री जिनराजसूरिः,	५५ श्री जिनन्नद्रसूरिः	१२२
५६ श्री जिनचंद्रसूरिः	५७ श्री जिनसमुद्रसूरिः	१२३
५८ श्री जिनहंससूरिः	५९ श्री जिनमाणिक्यसूरिः,	१२४

६० श्री जिनचंद्रसूरि;	६१ श्री जिनसिंहसूरि;	१२५
६२ श्री जिनराजसूरि;	६३ श्री जिनरत्नसूरि;	१२७
६४ श्री जिनचंद्रसूरि;	६५ श्री जिनसुखसूरि;	१२९
६६ श्री जिननक्तिसूरि;	६७ श्री जिनज्ञानसूरि;	१३०
६८ श्री जिनचंद्रसूरि;	६९ श्री जिनहर्षसूरि;	१३१
७० श्री जिनसौभाग्यसूरि;	७१ श्री जिनहंससूरि;	१३३
७२ श्री जितचंद्रसूरि: सो वर्तमानमें विद्यमान है, इन सर्व		

आचार्योंका यथावस्थित किंचित् स्वरूप गर्जित, ७२ वज्रतर दृष्टांत १३५

## ॥ \* ॥ विज्ञापन ॥ \* ॥

॥ \* ॥ अहो देवानुप्रियो, अहो सर्वे सद्गृहस्थो, विचारणा चाहिये, के वर्तमानकालमें इंग्रेजसरकारकी शोचनीक राज्यनीतीसें, और आपके प्रचारसें, वज्रतसे मतवाले अनेक प्रकारसें उल्टे, तथा सुल्टे, विकल्प कर नेवाले विद्यापात्र होते जाते हैं, और अपनी अपनी उक्तिमुजब बुद्धीके फेलावसें, देशका, तथा अपने कुलधर्मका, फेर विशेष बुद्धी दिखलानेकों सर्व मतका इतिहास प्रगट किये, और करते हैं, सर्व इस कूलोंमें हींदी गुजराती मराठी इंग्रेजी सीखनेवाले विद्यार्थियोंकों इतिहास अवश्य सिखाते हैं, परंतु कितनेक ऐसे पंक्ति जाएं सो अन्य मतका किंचित् स्वरूप जानके अपनी क्युक्तियोंसें अन्य मतका खंमन वा अन्यमतका इतिहास प्रगट कियेहैं और करते हैं, परंतु कोई धर्मका असली तत्व समझेविगर खंमन मंमन करना सो कैसा है कि निरापेक्ष विद्वानोंके सन्मुख अपनी मूर्खताका चिन्ह प्रगट करना है, कितनेक इतिहास पुस्तकोंमें जैनधर्म उत्पत्ति विषय अनेक अपना १ ऊग्रा विकल्प करके जैनकों स्थापित करते हैं १ कोई लिखता है, बौद्धमत एक जैनधर्मकी शाखा है २, तो कोई लिखता है



जैनधर्म बौद्धमतकी एक शाखा है ॥ कोई कालमें यह दोनों मत एक थे ३  
 कोई लिखता है, जैनमत मल्लंदरनाथके पुत्रोंने चलाया हुआ है ३,  
 तो कोई लिखता है, क्या जानते नहिहो, विष्णु जगवान् दैत्योंके धर्म  
 अष्ट करनेको अर्हतका अवतार लिया था जबसे जैनमत चला है ४ ॥  
 कोई लिखता है, और सब बात ठूठी, यह जैनधर्म सं। ६०० के लग  
 जग चला है, इत्यादि अनेक विकल्प धर्मविषई किये हुए हैं, और पिण  
 देवविषय गुरुविषय, जैनआचार विषय, अनेक विकल्प करतेहैं, केई कहते  
 हैं जैनधर्मवाले ईश्वर नहि मानते हैं, १ तो केई कहते हैं, जैनधर्म  
 वाले ईश्वर मानते हैं पण जगवानकी नम्रमूर्ति रखते हैं, इससेती मंदरमें  
 जाना दर्शन करना न चाहिये, केई कहते हैं जैनलोक कुलाचारसे अष्ट  
 है और कुलाचार करानेवाले जैनीब्राह्मण कुलगुरुजी नहि हैं, जो आचार  
 करते हैं सो अन्य मतकी अपेक्षा करते हैं, इत्यादि अनेक ठूठे विकल्प  
 किये हुए पुस्तकोंमें देखके ( वा ) कोईकेपास सुनके जो जैनतत्व जा  
 एनेवाले पंथित लोक तो अवश्य उनको ठूठे समजते हैं और हास्य करतेहैं  
 क्यों कि मोहमदिराके नसेमें व्याप्त हुवे थके, जो वचन नहि कहने  
 लायक है सो कह देते हैं, इससेती जितने पुराण हैं, उन सर्वमें एकेकसे  
 विरुद्ध वाक्य है, जूदे जूदे ईश्वर मानेंसे, तथा जूदे जूदे प्रकारसे  
 श्रष्टी, जगत्की रचना मानेंसे, एकेककी अपेक्षाये एकेक ठूठे होनेसे, जैन  
 धर्मकी अपेक्षाये सर्व ठूठे होते हैं, क्यों कि जैनधर्म तो अनेकांतिक है  
 अनादी है, और जीवस्वरूप जगत्का स्वरूप अनादी मानते हैं और राग  
 द्वेषादिक अघारे दूषणो करके रहित, सर्व देवगणके पुज्यनीक, सर्व जीवोंके  
 ऊपर दया जाव धारन करनेवाले, परमपुरुष परमात्म गुणपायके जो सिद्धि  
 स्थानकमें निश्चल रहे हैं, कजी संसारमें जिसका आवागमन नहि रहा है  
 ऐसा ईश्वरको जैनधर्मवाले ईश्वर मानते हैं, परंतु जगतका रचनेवाला, तथा  
 संहार करनेवाला, स्त्री शस्त्र, जपमालादिक, धारन करनेवाला, तथा अपना लिं  
 गपूजानेवाला, राग द्वेषादिकसे अनेक कुकर्म करनेवाला होय ऐसा ईश्वरको  
 जैनीलोक ईश्वरतुल्य नमानते हैं और गृहस्थधर्मका, जन्मसे मरणपर्यंत, सं  
 पूर्ण आचार तथा साधुधर्मका संपूर्ण आचार जैनलोक मानते हैं, क्योंकि

जैनधर्ममें मोक्षप्राप्ति, ज्ञान, क्रिया, दोनोंमें होती है, कोई क्रियाकों उत्थापके ग्यानकों मानते हैं, तो कोई ग्यानकों उत्थापके क्रियाकों मानते हैं, ऐसे जो एकांतिक हैं उन सर्वकों जैनीलोक मिथ्यात्वी कहते हैं, इत्यादि संपूर्ण जैन धर्मका स्वरूप, तथा ईश्वरका स्वरूप, तथा जैनकुलाचारका स्वरूप तो वने वने जैनसिद्धांतोंमें हेतु, युक्ति, प्रमाण, दृष्टांत, करके विस्तारसें लिखे जाते हैं, जिसमें वज्रतसे तो जैनआचार, जैनजोतष, जैननीतिके ग्रंथ, कितनेक वर्षोंसें अन्यमति प्लेहादिक केई राजाओंके अनीतिके सबवसें विभेद तुल्य होगए है, तथापि आवश्यक सुत्र, आचारदिनकरादि अनेक आचार ग्रंथ प्रसिद्ध है, जिससें जो विवज्जन पुरुष है सो तो संपूर्ण जैनआचारकों जान शक्ते हैं, परंतु व्याकरणादि बोधरहित सामान्य वर्गवाले सर्व बाल मित्रोंको उस ग्रंथोंसें अपना संपूर्ण आचारका जाणपणा नहिं हो सक्ता है, इसी हेतुसें मेनें मेरी अल्पमति प्रमाणें वज्रत प्रयास करके सर्व जैन लोकोंके अवश्य जाणनें, सीखनें, करनें, लायक जैनआचार, तथा जैन इतिहास, इस रत्नसागरका दूसरा भागमें ठेपाके प्रशिक्ष किया है, यद्यपि इसमें संघकी मदत प्रथम मिलेविगर, कितनेक ठिकाणे सुधारा, बधाराकी आवश्यकता, रहगई है, तथापि सर्व जैनधर्म रागियोंके अवश्य उपयोगी पुस्तक है, इससेती मेरेको आशा है, कि गुणग्राही धर्मउद्योतक पुरुष, अवश्य इस पुस्तकको लेकर अपनेपास रखेंगे और ग्यानवृद्धी खाते पांच पंचवीस पुस्तक इकठ्ठीलेकर जैनशालाओंमें सीखनेंवाले लमकोंको तथा साधु साधर्मियोंको देकर पाठशालाको मदत देंगे, और सर्व ठिकाणें अपना धर्म इतिहासको प्रवर्तन करके मेरा परिश्रम सफल करेंगे, अलं विस्तरेण ॥ शुचंजवतु, कल्याणमस्तु ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मनमोहन पारस मिल्पो । मोहनगुण सुखकंद ॥

मोहनी मूरत देखके । मोहनचित आनंद ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पारसप्रज्जुके नामसें । सज्जसंकट मिटजाय ॥

इंतउपद्रव जयटले । मोहनगुण प्रगटाय ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुरुदीपक गुरुदेवता । गुरुधिनघोर अंधार ॥

जे गुरुवाणी बेगला । रन्वडिया संसार ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ २ ॥ रत्नसागर दूसरा ज्ञाग प्रसिद्ध करते जो धर्मरागी जैनसंज्ञानोंने प्रथम पुस्तकों लेके मदत दीवी है, जिनोका ग्यानवृद्धी उपकारार्थ मान्यसे नाम प्रकाश करते हैं ॥

१०१ बाफणासेठ श्री जुहारमलजी ठोगमलजी, उदेपुर ॥

३१ तत्वदीपक मोहन मंमली ॥ बीकानेर ॥

१५ बाबू राय श्री कालिकादासजी वदरीदासजी बहाडर, कलकत्ता ॥

११ बाबू राय श्री प्रतापसिंहजी धनपतिसिंहजी बहाडर, अजीमगंज ॥

॥ ❖ ॥ पुस्तक मिलनेका ठिकाना ॥ ❖ ॥

॥ १ ॥ मु। बीकानेर, ठि। बम्ने उपाशरेपासे, जैनलक्ष्मीशाला, पुज्य उपाध्याय श्री लक्ष्मीप्रधानजीगणिः पं। मुक्तिकमल मुनिः ॥ ❖ ॥

॥ २ ॥ मु। कलकत्ता, ठि। अफीमचौरस्तै ६१ नं० जैन विद्याशाला पं। जयचंद मुनिः पं। रावतमलमुनिः ॥ ❖ ॥

॥ ३ ॥ मु। मुंबई, ठि। विचला जुंयवामामें, श्रीचिंतामणजीके मंदिरमें जैनपाठशाला, पंमित धर्मचंद कल्याणचंदपासे ॥ ❖ ॥

॥ ❖ ॥ ये तीन ठिकाणोंमेंसे, कोई ठिकाणें ऊपर लिख्येमुजब पत्र देनेसे पुस्तक जेजनेमें आवेगा, ये तीनों ठिकाणें, तत्वदीपक मोहनमंमली, तरफसे जैनपाठशाला स्थापन है ॥ इनमें औरभी अनेक जातकी जैन बापैकी पुस्तकों तैयार मिलती हैं सो सूचीपत्र मंगायके देख लेना ॥

॥ ❖ ॥ पुस्तकोंके नाम ॥ ❖ ॥

रु० आ० मा०

॥ १ ॥ रत्नसागर प्रथम ज्ञाग	....	....	५	०	८
॥ २ ॥ रत्नसागर दूसरा ज्ञाग	....	....	१	८	६
॥ ३ ॥ आचाररत्नाकर प्रथम प्रकाश	....	....	१	०	४
॥ ४ ॥ आचाररत्नाकर दूसरा प्रकाश	....	....	१	४	४
॥ ५ ॥ खरतर राई देवशी प्रतिक्रमण	....	....	०	६	॥-
॥ ६ ॥ स्तवनावली दूसरा ज्ञाग	....	....	०	४	॥-
॥ ७ ॥ खरतर पांच प्रतिक्रमण	....	....	१	०	४

# ॥ अथ संक्षिप्त जैन इतिहास लि० ॥

॥ ✽ ॥ अब आचार रत्नाकरका दूसरा प्रकाशमें पाठक गणके उपकारार्थ जैन धर्मका स्वरूप प्रश्नोत्तरकी रीतसें लिखता हूँ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( प्रश्नः ) जैन धर्म कवसें प्रशिक्ष ज्ञा ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( उत्तर ) जैन धर्म अनादि कालसें प्रशिक्ष है ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( प्रश्नः ) जैन लोक जगत्का स्वरूप किस तरे मानते हैं ॥

॥ ✽ ॥ ( उत्तर ) द्रव्यार्थिक नयके मतसें, जैनलोक, जगत्का स्वरूप शाश्वत ( अर्थात् ) हमेशां प्रवाहसें ऐसाही मानते हैं । अनादि कालसें उत्कृष्ट, हीन, कालमुजव चढाव उतार स्वरूप चला आता है ॥ कोई इस संसारकी, श्रष्टीकी रचना करनेवालेको जैनी लोक न मानते हैं ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( प्रश्नः ) अन्य मतवाले कहते हैं ( कि ) जैन धर्मवाले श्रष्टी कर्ता ईश्वरको न मानते हैं, इस सेती नास्तिक है ( सो ) जैनी लोक ईश्वर मानते हैं, या नहिं ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( उत्तर ) जो जैन धर्मको नास्तिक कहते हैं ( सो ) नास्तिक हो सके हैं ( क्युं कि ) सर्व मतवाले अन्य २ प्रमाणसें, अन्य २ ईश्वर रक्त लोकरचना कहते हैं ॥ ( परंतु ) सत्य प्रमाणसें कोई ईश्वरकी करी श्रष्टी सिद्ध नहिं हो सकती है ( विचारना चाहिये ) लोकरचना तो एक ( और ) ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वरादिक, ईश्वर, रचनेवाले बज्रत हुए ॥ इससेती, एकके मतसें, एकका मत ऊँचा होतां, सब ऊँचे ऊँचे ( और ) यही बात अंतमें सिद्ध हुई, कि जगत् रचना अनादि है । इससें जगत्कर्ता ईश्वर कोई नहिं ( और ) जो ईश्वर नाम धारके राग, वेपमें, मग्न होकर रातदिन जगत् बिटवणामे फसरहे हैं । आपसमें लड रहे हैं । ( तथा ) अगरे दूषणों करके सहित हैं ( इसमाफक ) चरित्र करनेवालोंको जैनवाले

देवगतिमें मानतेहैं ( और ) जो ईश्वर, अनंत अपना आत्मगुणोंमें मग्न है ( तथा ) शांतिस्वरूप धारक है, रागद्वेषादिक अठारै दूषणों करके रहित है । लोकालोक त्रिकाल विषय पदार्थकों जाणनेवाले है । संसारमें आवा गमन रहित, हमेशा सिद्धिस्थानकमें विराजमान है ( ऐसा ईश्वरकों जैनधर्मवाले ईश्वर मानते हैं ) ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ प्रश्नः ॥ जैनधर्मवाले ईश्वर मानते हैं सो ईश्वरके कितने नाम हैं ॥

॥ ❀ ॥ ( उत्तर ) ॥ अनंतकालमें, अनंत तीर्थंकर, परमात्मगुण पायके सिद्धिस्थानककों प्राप्त हुए हैं, ॥ इस अपेक्षायें तो अनंतनाम है ( परंतु ) सर्वके गुणकी तुल्यतापणे समुच्चय, सत्यार्थ गुणयुक्त नाम १००८ हैं ॥ सो हजार नामको स्तोत्र, रत्नसागर प्रथम ज्ञागमें लिखा है ॥ ( फेर ) समुच्चय १४ नाम जैन ईश्वरका हेमकोशादिक ग्रंथमें प्रशिद्ध है ( यथा ) अर्जुन १॥ जिनः १ पारगत ३ त्रिकालवित् ४ । क्षीणाष्टकर्मा ५ परमेष्ठ्य ६ धीश्वरः ७ । संजुः ८ स्वयंजु ९ जगवान् १० जगत्पञ्च ११ । स्तीर्थंकर १२ स्तीर्थंकरो १३ जिनेश्वरः १४ ॥१॥ स्याद्वाद्य १५ जयदः १६ सर्वाः १७ । सर्वज्ञः १८ सर्वदर्शि १९ केवलीनौ २० । देवाधिदेव २१ वोधिदः २२ । पुरषोत्तम २३ वीतरागात्ता २४ ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( प्रश्नः ) ॥ जैनलोक अनादि अनंतकालमें एक ईश्वर मानते हैं ( वा ) अनंत ईश्वर मानते हैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( उत्तर ) ॥ एकजी मानते हैं ( और ) अनेकजी मानते हैं ॥

॥ ❀ ॥ ( प्रश्नः ) ॥ एककेसे मानते हैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( उत्तर ) ॥ रागद्वेषरहित, परमात्मगुण, अक्षयसुख संपदा, जाव, सबके तुल्य होनेसे एक ईश्वर गुणयुक्त नाम मानते हैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( प्रश्नः ) ॥ अनेक केसे मानते हैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( उत्तर ) ॥ द्रव्य, क्षेत्र, कालकी, अपेक्षायें अनंत सिद्धजए । इससेती अनंत ईश्वर मानते हैं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( प्रश्नः ) ॥ जैनलोक कालचक्रका स्वरूप किसतरै मानते हैं ॥

॥ ❀ ॥ ( उत्तर ) ॥ कालचक्रका दो जेद मानते हैं । १ अवसर्पणीकाल । २ उत्सर्पणीकाल ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ✽ ॥ ( प्रश्नः ) ॥ अवसर्पणीकाल किसको कहते हैं ( और ) इसका क्या प्रमाण है । कितना जेद है ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( उत्तर ) दस कोमा कोम सागरोपमको अवसर्पणी काल होता है । इसका ठ हिस्सा है ( अर्थात् ) जिसको जैनी ठ आरे कहते हैं ॥ इस कालके ठ आरामें अठ्ठी वस्तुओंकी दिन दिन हानी होती चली जाती है ॥

॥ ✽ ॥ ( प्रश्नः ) ॥ उत्सर्पणी काल किसको कहते हैं ( और ) क्या स्वरूप है । कितना प्रमाण है ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( उत्तर ) ॥ दश कोडाकोड सागरोपमका एक उत्सर्पणी काल होता है इसका पिण ठ आरा है । इस कालके ठ हिस्सामें दिन २ अठ्ठी वस्तुओंकी वृद्धी होती चली जाती है ( तथा ) एक सागरोपममें असंख्याता वर्ष होता है । ( जब ) उत्सर्पणीकाल उत्तरे, तब अवसर्पणीकाल सुरू ज़वे ( और ) जब अवसर्पणी काल उत्तरे, तब उत्सर्पणीकाल सुरू ज़वे । ऐसैं १० कोमाको ष सागरोपम प्रमाणें एक कालचक्र होता है ॥ अतीतकालमें, ऐसे कालचक्र अनन्ते व्यतीत हो गए हैं ( और ) आगुं अनन्ते व्यतीत ज़वेंगे । ( इसीमाफक ) अनादि अनन्त कालतक इस जगत्की चढाव उतार व्यवस्था चलती रहेगी ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( प्रश्नः ) अवसर्पणी, उत्सर्पणी कालके, ठे आराका क्या नाम है ( और ) क्या स्वरूप है । कितना २ प्रमाण है ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( उत्तर ) ॥ अवसर्पणी कालको पहलो आरो, सुखम सुखमानामें, चार कोडाकोड सागरोपम प्रमाण होता है ( इस कालमें ) भरत क्षेत्रकी जमीन अत्यंत सुंदर, वज्रत रमणीक, सोनैकेथाल समान बराबर थी । ( और ) इसमें मनुष्य, तथा सर्वजीव जानवर, बने सरलस्वभावी अल्प काम, क्रोध, मोह, राग वेपवाले होते थे ( प्रायें ) नीरोग सरीरवाले सुंदर रूपवान होते थे । दशजातिके कल्पवृक्षोंसैं, अपनैं खानैं पीनैं वस्त्र घरा दिकका सब मनोरथ पूरण करते थे ( और ) एक लम्का, एक लम्की दोनुंका युगल जन्मते थे । जब वे युवान अवस्थाको प्राप्त होते थे ( तब ) युगल जनमे ज़वे, आपसमें स्त्री भरतारका संबंध कर लेते थे । जैन मतके प्रमाणसैं तीन कोस प्रमाण जिनोंका सरीर होता था ( और )

तीन पल्योपम प्रमाण आऊखा होता था । जिनोंके दोयसै ठप्पन पृष्ठकरं मके हाड होते थे । ४९ दिनतक अपना पुत्रादिककी पालना करते थे । जीव हिंसा, ऊठ, चोरी, आदिक पापकर्म विशेष नहिं करते थे । तीसरेदिन पीठे मटरकी दाल प्रमाण आहार करते थे । कल्पवृक्षोंहीमें सो रहते थे । युगल जोमे पिण गिणतीमें थोडेही थे । (शेष) चउपाय, पक्षी, पंचेंद्री आदि, सर्वजातके जीव थे । परंतु सर्व क्रुद्रक नही थे । सरलस्वभावी थे । शालि प्रमुख सर्व अन्न, इहु प्रमुख सर्वरसाल, वनोंमें आपसेंही उत्पन्न होते थे । (परंतु) मनुष्योंके जोगमें नहिं आते थे ( निकेवल ) उसकालके मनुष्य देवाधिष्ठित कल्पवृक्षोंके दिया ऊवा फल फूलोंका आहार करते थे । वस्त्र पहनते थे । क्रुद्रक परिणामोंसें मरके निकेवल देवगतिकों जाते थे ॥ ( इत्यादि ) अवसर्पणी कालका पहला आरा ( और ) उत्सर्पणी कालका ठठा आरा की समान मर्यादा कही ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( अब दूसरा सुखना नामें आरा ) ॥ ये तीन कोमाकोड सागरोपम प्रमाण होता है । इसमें मनुष्य तिर्यंचका दो पल्योपमका आऊखा ( और ) दो कोशका शरीर होता है । बोरप्रमाणें दो दिन पीठे आहार करे । ११८ पासली ऊवे । ( और ) ६४ दिन पर्यंत अपना पुत्र युगल की पालना करे । कल्पवृक्ष सब प्रकारका मनोरथ पूरण करे । अंतमें मरके देवगतिमें जावे ॥ ( यह ) अवसर्पणीकालका दूसरा आरा, ( और ) उत्सर्पणीका पांचमा आराकी मर्यादा कही ॥ २ ॥ ( तीसरे ) सुखमडुःख मा नामें आरा, दो कोडा कोड सागरोपम प्रमाणें ( इसमें ) मनुष्य तिर्यंचका एक पल्योपमको आयु ( तथा ) एक कोशको शरीर होय । एकांतरे आमलाप्रमाणें आहार करे, ६४ पासली ऊवै । ७९ दिनतक अपना युगल पुत्रादिक की पालना करे । कल्पवृक्ष सर्व मनोरथ पूरण करे । सरलपणासें मरके देवगतिकों प्राप्त ऊवे ( यह ) अवसर्पणीका तीसरा आरा ( और ) उत्सर्पणीका चौथा आराकी मर्यादा कही ॥ ३ ॥ ( चौथो ) डुःखम सुखमा नामें आरा, ४२ हजार वर्ष ऊणा, एक कोमाकोम सागरोपम प्रमाणें ( इसमें ) मनुष्य, तिर्यंचका, उत्कृष्टा एक पूर्वकोम वर्षका आयु, ( तथा ) पांचसै मनुष्य प्रमाणें शरीर होय । नित्य जोजन करे ॥ ( इसमें ) युगलिया न

होय, सर्व संसारी आजीविका कर्मका करनेवाला होय (इससें) मरके देवता १ मनुष्य २ । तीर्थच ३ । नारकी ४ । ए चारुंगतिमें जाऐंवाले होय । केई जीव सर्वकर्म खपायके पांचमी मोक्षगतिकों जी प्राप्त होय ॥ ( यह ) अवसर्पणीका चोथा आरा ( और ) उत्सर्पणीका तीसरा आराकी मर्यादा कही ॥ ४ ॥ ( पांचमो ) दुःखमा आरा, इकवीसहजार वरपप्रमाणें ( इसमें ) मनुष्यांको उत्कृष्टो सात हाथ प्रमाणें शरीर, ( और ) १२० वर्षको आकरो होय । संसारी सर्व आजीविका करनेवाले होय ( मरके ) चारुंगतिमें जावे ( परंतु ) सर्व कर्म खपायके कोई मोक्षमें न जावे ( यह ) अवसर्पणी कालका पांचमा आरा, ( और ) उत्सर्पणीका दूसरा आराकी मर्यादा कही ॥ ५ ॥ ( ठगे ) दुःखमदुःखमा नामें आरा, २१ हजार वरपप्रमाणें । ( इसमें ) मनुष्यांको उत्कृष्टो २० वरसको आयु, ( तथा ) एक हाथको शरीर होय । वैताड्य पर्वतादिकका विलांमें रहनेवाले होय, धर्म, कर्म, करके रहित होय । सर्व मनुष्य, क्रूरकर्मी, न्यायमार्गरहित, मरके खोटी नरक निगोदादि गतिमें जावे ॥ ( यह ) अवसर्पणी कालका ठगा आरा ( और ) उत्सर्पणीका पहला आराकी मर्यादा कही ॥ ६ ॥ ( इसीतरे ) अवसर्पणी उत्सर्पणीका, ६ आराकी मर्यादा, जैनसिद्धांतोंमें कही है ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ( प्रश्नः ) ठ आररूप अवसर्पणी ( वा ) उत्सर्पणी कालमें, कितने १ परमात्म ज्ञान गुणयुक्त, जैनधर्म मुख्य, चतुर्विधसंघ स्थापन करनेवाले तीर्थकर होते हैं ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ( उत्तर ) ठ आररूप एकेक कालमें, २४ चौबीस तीर्थकर जगवान होते रहते हैं ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ( प्रश्नः ) अजी प्रचलित कोनसा काल ( तथा ) कोनसा आरा है ॥

॥ ॥ ( उत्तर ) अजी अवसर्पणी कालका पांचमा आरा है ॥ ॥

॥ ॥ ( प्रश्नः ) ये अवसर्पणी कालका कोनसा आरातक युगलि या मनुष्य होता रहा ( फेर ) कोनसे प्रकारसें संसार संबंधी नीति मर्यादा प्रवर्तन नई ॥ ॥

॥ ॥

॥ ॥ ( उत्तर ) अवसर्पणी कालका तीसरा आरा, वज्रतसा व्यतीत होनेतक तो, कर्मादिक रहित युगलिया मनुष्य, तीर्थच, होता रहा ( इस



उपरांत ) दक्षिण भरतार्ध मध्यखंडमें, सात कुलकर एक वंशमें उत्पन्न हुए । कुलकर उसको कहते हैं ( कि ) जिन्होंने तिस २ कालमुजब, मनुष्योंके वास्ते नीति मर्यादा बांधी है ( और ) इसी सात कुलकराको पाठा फेरसें लोकीकमें सप्त मनु कहते हैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( प्रश्नः ) किस प्रकारसें कुलकर उत्पन्न भये ( और ) क्या २ नीति मर्यादा प्रवर्तन करी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( उत्तर ) तीसरे आरे उतरतां, दश जातिके कल्पवृक्षहीय मान कालके सबव अल्प फल देनेवाले, थोमे रह गए ( तब ) युगलक लोकोनें, अपने २ वृक्षोंका ममत्व कर लिया । जो कोई युगल, दूसरेका कल्पवृक्षके पास फलादिक कुछ मांगे ( तो ) आपसमें क्लेश करै ( इस वास्ते ) युगल पुरुषोंके दिलमें विचार आया ( कि ) कोई ऐसा पुरुष होय, सो सबका न्याय करै । इसीसमें एक युगलको, एक वनके श्वेत हस्ती ने देखकर, अत्यंत प्रेमसें अपने स्कंधपर चढ़ा लिया ( जब ) युगल हाथीपर बैठा थाका वनमें फिरने लगा ( तब ) और युगल लोकोनें विचार । यह युगल सर्वमें बड़ा है । सो हाथीपर चढ़ा ऊँचा फिरता है ( इस वास्ते ) इसको अपना राजा न्यायाधीश बनाउ । ऐसा विचारके युगलको न्यायाधीशपणें स्थापन किया । इसका विमलवाहन नाम ऊँचा, ( इसके ) चंद्रयशा नामें चार्या ऊँई । ( इसनें ) सर्व युगल लोकोको, जूदा २ कल्प वृक्ष बांटके दे दिये ( जब ) कोई संतोष रहत युगलिया, दूसरेके कल्प वृक्षसें कुछ मांगता ( तो ) क्लेश करता ऊँचा, उसको साथ लेके, राजाके पास आता ( तब ) विमल वाहन (हा) तुमनें यह क्या काम किया । ऐसी हकारकी दंमनीति करी । इससें अपराधी युगल मर जाते थे (सो फेर) वैसा काम कभी न करते थे । इस प्रथम कुलगरका देहमान, ए० ० धनुषका ऊँचा (सो) युगल (तथा) हस्ती पिठले जवमें पञ्चिम महा विदेह क्षेत्रें, बाणियापणें दोनुं जाईं ऊँचे थे (जिसमें) एकतो सरल था (और) दूसरा कपटी था (परंतु) आपसमें स्नेह वज्रत था । कपटी जो कहता ( सो ) सरल मान लेता था । अंतमें सरल जाईं मरके युगल ऊँचा ( और ) कपटी मरके हाथी ऊँचा, ( इस सेती ) एकेकको देखनेसें ईहापो करता जाती स्मरण ग्यान

कों प्राप्त हुआ ( तब ) स्नेहमान होकर हाथीनें अपने नाईकों स्कंधपर चढा लिया । इसका विस्तार संबंध आवश्यकजी सुत्रसें जाण लेना ॥ (इति प्रथम कुलकर संबंधः) ॥ १ ॥ (दूसरा) कुलकर, विमल वाहनका पुत्र चहुस्मान् नामें कुलकर हुआ (जिसके) चंद्रकांता नामें जार्या हुई (और) ७०० धनुष प्रमाण देहमान हुआ । इसके पिण पूर्ववत् हकारकी दंम नीति रही ॥ २ ॥ इति ॥ ( तीसरा ) यशोमान् नामें कुलकर हुआ ( जिसके, सरूपा नामें जार्या हुई ( और ) ७०० धनुषका देहमान हुआ । इसके थोमे अपराधमें हकारकी, विशेष अपराधमें ( मा ) ऐसा काम मत करो । ऐसी दूसरी मकारकी दंडनीति हुई । इससें सर्व युगल वज्रत मरनें लगे ॥ इति ॥ ३ ॥ ( चौथा ) अञ्जिचंद्र नामें कुलकर हुआ ( जिसके) प्रतिरूपा नामें जार्या हुई ( और ) ६५० धनुष प्रमाण देहमान हुआ । इस केपिण हकार, मकार, की दंमनीति रही ॥ इति ॥ ४ ॥ ( पांचमा ) प्रशे नजित् नामें कुलकर हुआ ( जिसके ) चहुर्मती नामें जार्या हुई । (और) ६०० धनुष प्रमाण शरीर हुआ । इसके सामान्यपणासें हकार, मकारकी दंमनीति रही ( और ) विशेष अपराधीकों, धिक्कार, की दंम नीति करी ॥ जिसकों धिक्कार, कह देता, सो युगल जाणता मेरा सर्वस्व हरलिया ॥ इति ॥ ५ ॥ ( षठा ) मरुदेव नामें कुलकर हुआ । इसके श्रीकांता नामें जार्या इसका ५५० धनुष प्रमाण शरीर हुआ । इसकी वखतमें तीनुं दंड नीति रही ॥ ६ ॥ इति ॥ ( सातमा ) नाजि नामें कुलकर हुआ । (इसके) मरुदेवी नामें जार्या हुई । इसका ५२५ धनुषका देह मान हुआ । इस की वखतमें जघन्य अपराधीकों, हकार, कांडंक विशेष अपराधीकों, मकार, ( और ) उत्कृष्ट अपराधीकों धिक्कार, इसीतरे तीनुं दंम नीति रही । (तथापि) ॥ दिन दिन हीन कालके सबव असंतोषी युगल वज्रत होनें लगे । वज्रतसे अपराध करनें लगे । तीनुं दंम नीतिका जय नहिं मानएँ लगे (इस वखतमें) नाजि कुलकरके, मरुदेवी जार्याकीं कूखसें, चवद्वै स्वप्न सूचित, रुषभदेव कुमार पुत्रपणें उत्पन्न जये । ( ये ) रिषभदेव कुमार, क्रोमों देवताओंके पुज्यनीक जाए ( और ) युवान अवस्थामें राज्यपदकों धारन कर के ( संपूर्ण पुरुष, स्त्रियोंकी कला ( तथा ) राज्यनीति, धर्मनीति, आदिककों

प्रवर्तन करनेवाले, ब्रह्मादि अनेक नामधारक, प्रथम ईश्वर इस कालमें इस धरतीमें येही हुए । ( इसी तरे ) सात कुलकर हुए ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ( प्रश्नः ) रिखजदेव स्वामी कहाँसे आयके, मरुदेवी माताकी कूखमें उत्पन्न हुए ( और ) कोण प्रकारसे देवताओंके पुज्यनीक, संपूर्ण कलाकों ( तथा ) धर्मनीतिकों प्रवर्तन करनेवाले प्रथम ईश्वर हुए ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अब ५९ बोल गर्जित श्री ऋषजदेव अधिकार लि० ॥ ॥

॥ ॥ विनीता जूमीके विषै, श्री नाजि नामें, सातमा कुलकर हुआ ( जिसके ) मरुदेवी नामें पट्टराणी हुई । तिसकी कूखमें, सर्वार्थसिद्ध देवलोक थकी चक्के, मिति आषाढ वदि ४ के दिन, जगवान् उत्पन्न हुए ( तब ) मरुदेवी मातायें, वृषजकों आदलेके, अग्निशिखा पर्यंत, १४ स्वप्ना प्रगटपणें मुखमें प्रवेश करता देखा । ( इहां ) १४ स्वप्नका नाम लि० ॥ वृषज १ ॥ हस्ती २ ॥ सिंह ३ ॥ लक्ष्मीदेवता ४ ॥ दो पुष्पमाला ५ ॥ चंद्रमा ६ ॥ सूरज ७ ॥ इंद्रधजा ८ ॥ पूर्ण कलश ९ ॥ पद्म सरोवर १० ॥ क्षीर समुद्र ११ ॥ पुंमरीक देव विमान १२ ॥ रत्नराशि १३ ॥ निर्दूम अग्नि १४ ॥ ऐसा चवद्वै स्वप्ना देखा ( फेर ) गर्जके प्रजावै उत्तम २ जो जो मोहला, मरुदेवी माताकों उत्पन्न हुआ ( सो ) इंद्र आयके पूरण किया ( पीठे ) सर्व दिशायें सुजिख्य समें । मि । चैत्र वदि ८ के दिन, उत्तराखाढा नक्षत्रके विषै, जगवान्का जन्म हुआ । ( उसी वखत ) रुचक पर्वतकी रह नैवाली ५६ दिश कुमरी देव्यां आयके, सूतिका उठव किया ( पीठे ) उसी रात्रिकों ६४ इंद्रोंका आसन कंपायमान हुआ ( तब ) अपना अवधिज्ञानसे प्रथम जगवानका जन्म हुआ जाणके जन्म उठव करनेकों, मेरुपर्वत ऊपर आए ( जिसमें ) पहला सोधर्म इंद्र जगवानकी माताकेपासे आयके, मं गलीकके अर्थ माताके पासे, जगवानके समान, दूसरा प्रतिबिंब रखके, जगवानकों मेरु गिरके ऊपर ले गया ( उहां ) वमा उठवसे स्नान कराय के, अष्ट द्रव्यसे पूजा करके, अगामी बत्तीस वक्ष नाटक करके, जगवान कों, पीठा माताके पास लायके स्थापन किया । ( और ) क्रोमोई सोनइ यांकी ( तथा ) अन्य वस्त्र, धान्यादिककी, वर्षा करके नाजि राजाका घर भर दिया ( पीठे ) सर्व इंद्र आत्मा नंदीश्वर दीपजायके अगही उठव

करके, अपने १ स्थानक गए । ( फेर ) नाजि राजानें दशदिन पर्यंत जन्मके उल्लव किये ( उस वखत ) युगलिया लोक कुठ्नी जाणते नहीं थे ( इसवास्ते ) सोधर्म इंद्रनें, वज्रतसे देवता देव्याकों जगवानकेपास रखदिये ( सो ) सर्व व्यवहार बताते करते रहे ॥ ( पीठे ) ११ में दिन, कल्पवृक्षोंका दिया ज्वा, नानाप्रकारका जोजन, सर्व युग लियाकों जिमायके, नाजि राजायें, रिपज कुमर नाम स्थापन किया । नाम स्थापनका ये हेतू है ( कि ) जगवानकी दोनुंसायलोंमें वृषजका लांछन था । ( दूसरो ) मरुदेवी मातानें, चवदै स्वप्नाके प्रथम स्वप्नमें, वृषज देखा था ( इस सेती ) रिपज कुमर नाम स्थापन किया ॥ बाल अवस्थामें श्री कृष्णदेवकों जब चूख लगती थी ( तब ) अपने हाथका अंगूठा, मुखमे लेके चूस लेते थे । उस अंगुठेमें, इंद्रनें अमृतसंचार कर दिया था । जब कृष्ण देवजी बने हुए ( तब ) देवता उनकों कल्पवृक्षोंके फलल्याकर देते थे । वे फल खाते थे । जब कृष्णदेव, कुठम्पून एक वर्षके हुए ( तब ) इंद्र आया । रीते हाथसें स्वामिकेपास न जाना । इससें इक्षुदंम हाथमें लेके आया ( उसवखत ) श्री कृष्णदेव कुमर, नाजि कुलकरकी गोदीमें बैठे थे । तब जगवानकी दृष्टि इक्षुदंमपर पड़ी । तब इंद्रनें कहा ( कि ) हे जगवान् इक्षु भक्षण करोगे ( तब ) श्री कृष्णदेव कुमरनें हाथ पसाखा । तब इंद्रने, कृष्णदेव कुमारके, इक्षुकी इच्छा उत्पन्न होऐसें, जगवान्का इक्ष्वाकु कुल स्थापन करा ( यांसे इक्ष्वाकु वंशकी उत्पत्ति नई ) और श्री कृष्णदेवजीके वंशवालोंने, काश वनस्पति विशेषका रस पीया ( इस वास्ते ) काश्यपगोत्र प्रशिख ज्वा ॥ श्री कृष्णदेवजीके, जिस जिस वयमें जो जो काम उचितथा, सो सर्व इंद्रनें आयके करा ( यह ) अनादिका लसें, जो जो इंद्र होते आये हैं । उन सबका येही आचार है । कि प्रथम जगवान्के वयोचित सर्व काम करना ॥ ❧ ॥

॥ ❧ ॥ ( इस अवसरमें ) एक लम्की, एक लम्का, वहिन और नाई, बालअवस्थामें, तालवृक्षके हेठे खेलते थे । उहां तालके फल गिरनेसें लडका मरगया ( तब ) लम्कीकुं नाजिकुलकरनें लायके सोंपी ( तब ) उसनें कृष्णदेवके विवाह योग्य जाणके, यतनसें अपनेपास रखी । तिसका

नाम सुनंदा था ( और ) दूसरी ऋषभदेवके साथ जन्मी थी । उसका नाम सुमंगला था । इस दोनोंके साथ ऋषभदेव बाल्यावस्थामें खेलते हुए, यौवनवयमें प्राप्त हुए । ( तब ) इंद्रने विवाहका प्रारंभ करा । आगे युग लके समयमें विवाहविधि नहीं थी । ( इसवास्ते ) यह विवाहमें, पुरुषके कृत्य तो सर्व इंद्रने करे ( और ) स्त्रियोंकी तरफसे सर्व कृत्य इंद्रीणीने करे ( तबसे ) विवाहविधि सर्व जगत्में प्रचलित हुई । तब ऋषभदेव दोनों जायोंके साथ संसारिक विषयसुख भोगवतां, ठेलाख पूर्ववर्ष व्यतीत हुए ( तब ) सुमंगला राणीके, भरत ( और ) ब्राह्मी, यह युगल जन्मा । ( तथा ) सुनंदा के बाहुवली ( और ) सुंदरी यह युगल जन्मा । पीछेसे सुनंदाके तो और कोई पुत्रपुत्री नहीं हुई ( परंतु ) सुमंगला देवीके उगणपचास ( ४९ ) जोमे पुत्रोंहीके हुए । यह सब मिलकर सो ( १०० ) पुत्र ( और ) दो पुत्रियों हुई ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अब सो पुत्रोंके नाम लिखते हैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ १ भरत । २ बाहुवली । ३ श्रीमस्तक । ४ श्री पुत्रांगार क । ५ श्री मल्लिदेव । ६ अंगज्योति । ७ मलयदेव । ८ नार्गवतार्थ । ९ वंगदेव । १० वसुदेव । ११ मगधनाथ । १२ मानवर्त्तिक । १३ मान युक्ति । १४ वैदर्भदेव । १५ वनवासनाथ । १६ महीपक । १७ धर्मराष्ट्र । १८ मायकदेव । १९ आत्मक । २० दंभक । २१ कलिंग । २२ ईषक देव । २३ पुरुषदेव । २४ अकल । २५ भोगदेव । २६ वीर्यभोग । २७ गणनाथ । २८ तीर्णनाथ । २९ अंबुदपति । ३० आयुवीर्य । ३१ नायक । ३२ काक्षिक । ३३ आनर्त्तिक । ३४ सारिक । ३५ ग्रहपति । ३६ करदेव । ३७ कल्लनाथ । ३८ सुराष्ट्र । ३९ नर्मद । ४० सारस्वत । ४१ तापसदेव । ४२ कुरु । ४३ जंगल । ४४ पंचाल । ४५ शूरसेन । ४६ पुटदेव । ४७ कालिंगदेव । ४८ काशीकुमार । ४९ कौशल्य । ५० नद्रकाश । ५१ विकाशक । ५२ त्रिगर्त्तिक । ५३ आवर्ष । ५४ सालु । ५५ मत्स्यदेव । ५६ कुलियक । ५७ मुषकदेव । ५८ बाल्हीक । ५९ कांवीज । ६० मृडनाथ । ६१ सांद्रक । ६२ आत्रेय । ६३ यवन । ६४ आजीर । ६५ वानदेव । ६६ वानस । ६७ कैकेय । ६८ सिंधु । ६९ सोवीर । ७० गं

धार । ७१ काष्ठदेव । ७२ तोषक । ७३ शौरक । ७४ नारदाज । ७५  
शूस्सेन । ७६ प्रस्थान । ७७ कर्णक । ७८ त्रिपुरनाथ । ७९ अवंतिनाथ । ८०  
चेदीपति । ८१ विष्कंभ । ८२ नैषध । ८३ दशार्णनाथ । ८४ कुसुमवर्ण ।  
८५ नृपालदेव । ८६ पालप्रभु । ८७ कुशल । ८८ पद्म । ८९ महापद्म  
९० विनिद्र । ९१ विकेश । ९२ वैदेह । ९३ कठपति । ९४ नन्ददेव ।  
९५ वज्रदेव । ९६ सांद्रनद्र । ९७ सेतज । ९८ वत्सनाथ । ९९ अंग  
देव । १०० नरोत्तम ( यह ) श्री कृष्णदेवजीके १०० पुत्रोंका नाम कहा ॥

॥ ✽ ॥ अथ राज्याभिषेक, विनीता नगरी अधिकारः ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ( इस अवसरमें ) जीवोंके कषाय प्रबल होजानेसे । पूर्वोक्त  
हंकारादि तीनों दंडका, लोक नय नहिं करने लगे ( इस अवसरमें ) लो  
कोंने सर्वसे अधिक, ज्ञानादि गुणों करके संयुक्त, श्री कृष्णदेवकों जानके,  
युगललोक, श्री कृष्णदेवकों कहते हुए । ( कि ) अबके सर्व लोक दम्भका  
नय नहिं करते हैं । ( तब ) मति १ । श्रुति १ । अरु । अवधि  
३ । यह तीन ज्ञानकरके युक्त ( ऐसे ) आदिकुमर युगलियोंकुं कहते  
हुए ( कि ) जो राजा होता है ( सो ) दंडकर्ता है । फेर उस  
की आज्ञा कोई उल्लंघन नहिं कर सकता है । ऐसे वचन सुनकर, वे  
युगलिये बोले ( कि ) ऐसा राजा हमारेजी होना चाहिये । ( तब ) आदि  
कुमर बोले । जो तुमारी इच्छा ऐसी है ( तो ) नाजि कुलकरसे याचना  
करो । ( तब ) तिनोंने नाजिकुल करसे वीनती करके ( तथा ) आज्ञा लेके,  
आदिकुमरकुं राज्याभिषेक करणके लिये, पद्मसरोवर जल लेनेकुं गए  
( इस समें ) सौधर्मइंद्रका आशान कंपमान हुआ । तब अवधि ज्ञानसे, रा  
ज्याभिषेकका अवसर जानके, वज्रतसे देवता देवीयोंके संग आके, श्रीआ  
दिकुमरका राज्याभिषेक, संपूर्ण विधिसंयुक्त, महोष्ठवके साथ करा । ( जिस  
वखत ) ठव, मुगुट, कुंडलादिक, आभरण सहित, रत्नजम्बित सिंहासनपर  
बैठे हैं । उससमय, वे युगल लोक, कमलके पत्तेमें जल लेके आये । ( वहां )  
वत्साभरण सहित सिंहासनपर बैठे देखके, अंगूठेपर जलाभिषेक किया  
( तब ) इंद्रने विचारा ( कि ) यह युगल लोक बने विनयवान है । ऐसा  
जानके वैश्रमण नामा देवकुं आज्ञादीवी ( कि ) आदिराजाके ( तथा )

इस विनीत पुरुषोंके, रहनेके योग्य, विनीता नामसे, १ नगरी स्थापित करो ( तब ) वैश्रमण देवनें, गढ, मढ, प्रोल, प्राकारादिक, संयुक्त, वर्णव योग्य, १२ योजन, ४८ कोसमें नगरी बसाई । जिसके मध्य भागमें ११ जूमिकाके मकान, श्री आदि राजाके रहने योग्य बनाया ( और ) सर्व जाई बेटोंके योग्य, सात सात जूमिये मकान ( और ) दूसरोंके योग्य, तीन१ जूमिये मकान बनाये । इसका विस्तार संबंध, सेत्रुंज महात्म्यसें जाण लेना ( अब ) आदि राजा, चतुरंगिणी सेनाकेवास्ते, प्रथम बोहो तसे । हाथी, घोमे, गाय, जैशे, प्रमुख, उपयोगी जानवरोंकुं, वनसें मंगायके संग्रह करे ( और ) च्यार वंशकी स्थापना करी । उग्र १ । जोग १ । राजन्य ३ । क्षत्रिय ४ । जिसकुं कोटवालकी पदवी दीवी ( सो ) उग्र दंभ के करनेसें, उग्रवंशी कहलाये १ ( तथा ) जिसकुं आदि राजाई, गुरुतुल्य बने करके माने, तिससें वो जोगवंशी कहलाए १ ( तथा ) आदि राजा के, स्वजन संबंधि मित्रादिकके, राजन्य वंश कहलाए ३ ( और ) प्रजागणके सर्व क्षत्री वंश कहलाए ४ ( अब युगलियांके आहारकी विधि कहते हैं ) हीन कालके प्रभावसें, कल्पवृक्ष फल देनेसें रह गए । तब लोक, और वृक्षोंके, कंद मूल पत्र फल फूल खानें लगे । केईक इक्षु का रस पीनें लगे ( तथा ) सतरे जातिका कच्चा अन्न खानें लगे ( परंतु ) कितनेक दिनोंतक कच्चा अन्न उनकों जीर्ण न होनेसें, ऋषभदेवजीनें उन कों कहा ( कि ) तुम हाथोंसें मसलके, तूतमा दूर करके, खाउ ( फेर ) कितनेक दिनो पीठें, वैसेजी पाचन न होने लगा । तब अनेक ज्ञातसें कच्चा अन्न खानेकी विधि बताई । तोजी काल दोषसें अन्न पाचन न होने लगा ( इस अवसरमें ) जंगलोंमे वांसादिक घसनेसें अग्नी उत्पन्न हुई । पहली कित नेक कालतक अग्नि विच्छेद थी ( क्युं कि ) एकांत स्निग्ध कालमें ( और ) एकांत रुद्ध कालमें, अग्नी किसी वस्तुसें उत्पन्न नहिं हो शक्ती है ( कदाचित् ) कोई देवता विदेह क्षेत्रसें अग्नीकों लेनी आते ( तोजी ) इहां तत्काल बुझ जाती थी ( इसवास्ते ) पहले अग्नीसें पकाके खानेका उपदेश नहिं दीया ( पीठे ) तिस अग्नीकों तृणादि दाह कर्त्ता देखके, अपूर्व रत्न जानके पक न्हें लगे । जब हाथ जले, तब जयसें आदि राजाकुं आयके कहा ( और )

अपणा हाथ जला ज्वा देखाया ( तब ) आदि-राजानें अग्नीले आने की, और फल फूल पकायके खानेकी विधि बताई । फेर आप हाथीपर बैठे जूबे वनमें आये । युगलियोंके पास लीली मढी मंगायके, हस्तीपर बैठे जूबे सर्वके सामने एक हांभी बनायके दीवी ( और ) कहा कि, इसकुं अग्नीमें रखके पकावो । हांडी पकके तैयार जई ( तब ) उसमें धान्यका, जलका प्रमाण, रांधनेकी सर्व विधि बताई । जिसके हाथसें मढी मंगाई । और हांडी पकवाई (जिससें) कुंजकार कर्म प्रगट ज्वा । इससेती कुंजकारकुं, प्रजापति ( तथा ) पर्याप्ति कहते हैं ( फेर ) सनें सनें, सर्व आहार पकाके खानेकी विधि प्रगट हो गई ( औरनी ) संपूर्ण कर्म, कला मात्र, अपना मुत्रादिक प्रजा गणकुं बताई । आदि राजाके उपदेशसें, पांच मूल शिल्प ( अर्थात् ) कारीगर बने । कुंजकार १ । लोहकार २ । चित्रकार ३ । तंतुकार वस्त्र धणनेवाले ४ । नापित ५ । ( इस ) एकेक शिल्पका, अर्वा तर १० बीस जेद रहै हैं । (इससें) सब मिलके १०० जेद शिल्पके प्रशिद्ध जूबे ( तथा ) कर्पण कर्म, खेती आदिक करणा । ( तथा ) पाणिज्य कर्म, व्यापारादिक करनेकी रीति, तिससें धन उपार्जन करणा । धनका ममत्व करना । धनको शुभ क्षेत्रादिकमें लगाना ( इत्यादि ) संपूर्ण जगत् प्रशिद्ध कर्म बताये । (प्रथम) मढीके संचयोमें, अहरण हथोडी प्रमुख बनाये ( पीछे ) उससें उपयोगी काम लायक सर्व वस्तु बनाई गई ॥ (और) भरता दि पर्या लोकोको बहोत्तर कला सिखलाई ( तथा ) स्त्रियोंको चोसठ कला सिखलाई ( इन सर्व कलाके नाममात्र लिखते हैं ) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुरुषोंकी ७२ कलाका नाम ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ १ लिखनेकी कला । २ पढनेकी कला । ३ गणित कला । ४ गीत कला । ५ नृत्य कला । ६ ताल बजाना । ७ पट्ट बजाना । ८ मृदंग बजाना । ९ वीणा बजाना । १० वंश परीक्षा । ११ जेरी परीक्षा । १२ गज शिक्षा । १३ तुरंग शिक्षा । १४ घातुवांदा । १५ दृष्टिवाद । १६ मंत्रवाद । १७ वलि पलित विनाश । १८ रत्न परीक्षा । १९ नारी परीक्षा । २० नर परीक्षा । २१ ठंड वंश । २२ तर्कजल्पन । २३ नीति विचार । २४ तत्व विचार । २५ कविश



क्ति । २६ ज्योतिष शास्त्रका ज्ञान । २७ वैद्यक । २८ षट्छाषा । २९ यो  
गात्र्यास । ३० रसायण विधि । ३१ अंजन विधि । ३२ अठारह प्रकार  
की लिपि । ३३ स्वप्न लक्षण । ३४ इंद्रजाल दर्शन । ३५ खेती करणी ।  
३६ वाणिज्य करणा । ३७ राजाकी सेवा । ३८ शकुन विचार । ३९ वायु  
स्थंजन । ४० अग्नि स्थंजन । ४१ मेघवृष्टि । ४२ विलेपन विधि । ४३  
मर्दन विधि । ४४ ऊर्ध्वगमन । ४५ घटबंधन । ४६ घटभ्रमन । ४७ पत्र  
ढेदन । ४८ मर्मभेदन । ४९ फलाकर्षण । ५० जलाकर्षण । ५१ लोका  
चार । ५२ लोकरंजन । ५३ अफल वृक्षोंको सफल करणा । ५४ खड्गबं  
धन । ५५ तुरीबंधन । ५६ मुद्रा विधि । ५७ लोहज्ञान । ५८ दांत समा  
रण । ५९ काल लक्षण । ६० चित्रकरण । ६१ वाज्रयुद्ध । ६२ मुष्टि  
युद्ध । ६३ दंश युद्ध । ६४ दृष्टि युद्ध । ६५ खड्गयुद्ध । ६६ वागयुद्ध ।  
६७ गारुडविद्या । ६८ सर्पमर्दन । ६९ भूतमर्दन । ७० योग, सो द्रव्यानु  
योग अक्षरानु योग, व्याकरण, औषधानुयोग, । ७१ वर्षज्ञान । ७२ नाममाला

## ॥ ❀ ॥ स्त्रीयोंकी ६४ कलाका नाम ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ १ नृत्यकला । २ औचित्यकला । ३ चित्रकला । ४ वादित्र  
५ मंत्र । ६ तंत्र । ७ ज्ञान । ८ विज्ञान । ९ दंज । १० जलस्थंजन । ११  
गीतगान । १२ तालमान । १३ मेघवृद्धि । १४ फलवृद्धि । १५ आरा  
मारोपण । १६ आकार गोपन । १७ धर्म विचार । १८ शकुन विचार ।  
१९ क्रिया कल्पन । २० संस्कृत जल्पन । २१ प्रसाद नीति । २२ धर्म  
नीति । २३ वर्णिका वृद्धि । २४ स्वर्णसिद्धि । २५ तैलसुरजिकरण । २६  
लीलासंचरण । २७ गजतुरंग परिह्ता । २८ स्त्रीपुरुषके लक्षण । २९ का  
मक्रिया । ३० अष्टादश लिपि परिह्तेद । ३१ तत्काल बुद्धि । ३२ वस्तु  
बुद्धि । ३३ वैद्यक क्रिया । ३४ सुवर्णरत्न जेद । ३५ घटभ्रम । ३६ । सार  
परिश्रम । ३७ । अंजन योग । ३८ चूर्ण योग । ३९ हस्तलाघव । ४०  
वचन पाठव । ४१ ज्योतिष विधि । ४२ वाणिज्य विधि । ४३ काव्य शक्ति  
४४ व्याकरण । ४५ शालिखंमन । ४६ मुखमंमन । ४७ कथा कथन ।  
४८ कुसुमगुंथन । ४९ वरवेष । ५० । सकल ज्ञाषा विशेष । ५१ अजिघा  
ने परिज्ञान । ५२ आभरण पहरण । ५३ नृत्योपचार । ५४ गृहाचार ।

५५ शाठ्यकरण । ५६ । पर निराकरण । ५७ धान्यरंधन । ५८ केशवं धन । ५९ वीणादि नाद । ६० वितंभावाद । ६१ अंक विचार । ६२ लो कव्यवहार । ६३ अंसादरिका । ६४ प्रश्न प्रहेलिका ॥ यह खीकी ६४ कला कही ॥ ॥ ❧ ॥ ॥ ❧ ॥

॥ ❧ ॥ अबकी सर्व संसारीक कला पूर्वोक्त कलायोंका प्रकरभूत है ( इसवास्ते ) सर्व कला इनहीके अंतर्भाव है ( जैसे ) प्रथम लिपि कला के १८ जेद दक्षिण हाथसें ब्राह्मी पुत्रीकों सिखाए । तिसके नाम कहते हैं ॥ १ हंस लिपि । २ भूत लिपि । ३ यक्ष लिपि । ४ राक्षसी लिपि । ५ यावनी लिपि । ६ तुरकी लिपि । ७ किरि लिपि । ८ द्रावडी लिपि । ९ सैधवी लिपि । १० मालवी लिपि । ११ नडी लिपि । १२ नागरी लि पि । १३ लाटी लिपि । १४ पारंसी लिपि । १५ अनिमित्ती लिपि । १६ चाणकी लिपि । १७ मूलदेवी लिपी । १८ उडी लिपि ॥ (यह) अठारह प्रका रकि ब्राह्मी लिपि, देश विशेषके जेदसें, अनेक तरहकी हो गई । ( जै सेंकी ) १ लाटी । २ चौडी । ३ माहली । ४ कानडी । ५ गौर्जरी । ६ सोरठी । ७ मरहठी । ८ कौंकणी । ९ खुरासाणी । १० मागधी । ११ सिंहली । १२ हाडी । १३ कीरी । १४ हम्मीरी । १५ परतीरी । १६ मसी । १७ मालवी । १८ महायोधी । (इत्यादि) लिपी सिखाई ( तथा ) सुंदरी पुत्रीकों वाम हाथसें अंक विद्या सिखाई । (और) जो जगत्में प्रचलित कला है । जिनसें कार्य सिद्ध होते हैं । (वे सर्व) श्री कृष्ण देवनें प्रवर्त्ताई हैं । तिसमें कितनीक कला, कई बार लुप्त हो जाती है । फिर समय पाकर प्रगटनी हो जाती है ( परंतु ) नवीन कला, वा विद्या, कोइनी उत्पन्न नहिं होती है । जो कला व्यवहार, श्री कृष्ण देवजीनें चलाया है । उस का विस्तार, सर्व आवश्यक सूत्रसें देख लेना ॥ ❧ ॥

॥ ❧ ॥ श्री आदिराजायें, भरतकेसाथ ब्राह्मी जन्मी थी । तिसका वि वाहें तो, वाङ्मयलीकेसाथ किया ( और ) वाङ्मयलीकेसाथ, जो सुंदरी ज न्मी थी । उसका विवाह भरतके साथ कर दिया । तबसें माता पिताकी दीधी ऊई कन्याका विवाह प्रचलित हुआ । ( इससें ) पहले एक उदरके उत्पन्न ऊँवे, जाई बहिनके संबंध होता था- ( वो- ) दूर किया ॥ ( तब )

लोकजी इसीतरे विवाह करने लगे ( और ) विवाहकी विधि, सर्व आदिराजाके विवाहसमें, इंद्र, इंद्राणियोंने करी थी । उसीमुजब करने लगे ॥ श्री आदिराजा ये वज्रत कालतक राज्य किया । संपूर्ण राज्यनीतीसे, प्रजाके अर्थ, सबतरेके सुख उत्पन्न किये । ( इस हेतुसे ) श्रीरूपनदेव स्वामीको सर्व जगत्का कर्त्ता, जैनी लोक मानते हैं ( दूसरे मतवाले ) जो ईश्वरकी करी श्रद्धा मानतेहैं । ( वेनी ) ईश्वर, आदीश्वर, जगदीश्वर, योगीश्वर, जगत्का कर्त्ता, ब्रह्मा आदि, विष्णु आदि, योगी आदि, जगवान् आदि अर्हत आदि, तीर्थंकर, प्रथम बुद्ध, महादेव ( इत्यादि ) जो नाम और महिमा गाते हैं ( वे सर्व ) श्री रूपनदेवजीकेही गुणानुवाद हैं ( और ) कोई श्रद्धाका कर्त्ता नहीं है ॥ सर्व जगत्का व्यवहार चलाकर शेषमें नरतपुत्रकुं, विनीता नगरीका राज्य दीया ॥ बाज्रवली पुत्रकुं, तक्षशिला नगरीका राज्य दीया ॥ शेष एत पुत्रोंको उन्हींके नामसे, जूदे १ देश बसायके राज्य दीये ( जवसे ) अंग, वंग, कलिंगादि देशोंके नाम प्रशिद्ध हुवे । ( और ) सर्व गोत्रियोंकुंजी, यथायोग्य आजीविकाके विज्ञाग कर दिये ( इससमें ) नव लोकांतिक देवताये जगवानकुं दिक्काका अवसर जनाया । जगवान् आप अपने ज्ञानसे दिक्काका अवसर जानते हैं ( तथापि ) लोकांतिक देवोंका यहहीज जीत व्यवहार है ( पीठे ) संवत्सरी दान देकें, चैत्र वदि ८ के दिन, मन्त्र, कन्त्र, प्रमुख ४ हज़ार सामंत पुरुषोंकेसाथ दिक्का ग्रहण करी । दिक्काका महोत्सव सर्व, ६४ इंद्रोंने मिलके करा ( तब ) जगवानकुं चोथा मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न जया । दिक्का लिये बाद, १ वर्षतक शुद्ध आहार साधूके लेने योग्य नहिं मिला । जहां जगवान् जावै ( वहां ) हाथी, घोमे, आचूषण, कन्या, इत्यादिक वज्रतसे जेट करे । ( परंतु ) शुद्ध आहार देनेकी विधि कोई नहीं जानै ( क्यूंकि ) आगे कोई जिह्वा चर देखा नहीं था ॥ और जगवान् उससमय त्यागी थे ( इसवास्ते ) आहार बिगर कोईनी पदार्थ ग्रहण करा नहिं । ( पीठे ) १ वर्षके बाद, वैशाख सुदि ३ कुं, हथनापुर आये । ( तहां ) श्री रूपनदेव स्वामीका पड पौत्र, श्रेयासकुमरने जातिस्मरण ज्ञानके बलसे, जगवानकुं इक्षुरसका पारणा कराया । उस वखतमें, ५ द्रव्य देवतानें प्रगट करे । साढा १२ कोरु

सोनइयांकी वरषा करी । श्रेयांसका जश तीन जवनमें फेला । तब लोकोंने  
आयके पूज ( कि ) तुमने कृष्णदेव स्वामीकुं निहार्थी कैसेंजाने । तब  
श्रेयांस कुमारने आपणे ( अरु ) कृष्णदेव स्वामीकेसाथ, ८ जवोंका संबंध  
कह्या ( इससेती ) जगवानकुं साधु मुद्रामें देखके, मेरेकुं जातिस्मरण ज्ञान  
उत्पन्न जया । तिनसें ८ जवोंका संबंध, तथा निहार्थीपणा जाना ॥ इसका  
विस्तार सर्व आवश्यक सूत्रसें जाण लेना ॥ जब जगवानकुं एक वर्षतक शुद्ध  
आहार न मिला ( तब ) मछ, कछ प्रमुख ४ हजार पुरुष, जो साथमें दीक्षा  
लींथी थी ( सो ) नूखसें पीडित जूवे थके, वनमे गंगाके दोनूं किनारे,  
तापशपणा धारके, कंद मूल फल फूल खाते जूवे रहनें लगे ( और ) श्री  
कृष्णदेव स्वामीका ध्यान जप आदि, ब्रह्मादि शब्दोंसे करनें लगे (इहांसे)  
ताप शादिककी उत्पत्ति हुई ॥ (जब) श्रेयांस कुमारने आहार दिया । उस  
दिनसें सब लोक साधूकुं शुद्ध आहार देनेकी विधि जाननें लगे ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अब विद्याधरोंकी उत्पत्ति कहते हैं ॥ ॥

॥ ॥ श्री कृष्णदेवस्वामी दीक्षा लिपाकेबाद, १ हजार वर्षतक, देशमें  
दुःस्थायणें विचरते रहे । तिस अवस्थामें । कछ ( और ) महाकछके  
बेटे । नमि, और विन्मीने, आकर, जगवानकी वज्रत सेवा जक्ति करी  
( तब ) धरणींद्र संतुष्टमान होके, ४८ हजार पठित सिद्धविद्या उनकुं देकर,  
बेताढ्यगिरीकी, दक्षिण और उत्तर, यह दोनूं श्रेणीका राज्य दीया । ( तब )  
तिनके वंशी सब विद्याधर कहलाए ( इन्ही ) विद्याधरोंके संतानमें ।  
रावण, कुंजकर्ण, वालि, सुग्रीव, हनुमानादि, सर्व विद्याधर जए हैं ॥

॥ ॥ ( एकदा ) दुःस्थ अवस्थामें जगवान् बिहारकर्ते, तक्षशिला  
नगरीमें गए । वहां बाहिर, बागमें काउसग करके खडे रहे । यह खबर  
उहांके राजा, वाज्रवलीकुं हुई । ( तब ) वाज्रवलीने मनमें विचार  
करा । कि प्रजातसमें बडे आडंबरके साथ, पिता श्री कृष्णदेवजीकुं बांद  
नेकुं जाउंगा ॥ जब प्रजातसमें, बडे आडंबरसें बांदनेकुं गया ( तो ) वहां  
जगवानकुं नदेखा । वनमालीसें सुना ( कि ) जगवान् तो, सूर्य जगतेही  
बिहार कर गए ( तब ) वाज्रवली वज्रत उदासजयके, जहां जगवान्  
काउसग मुद्रामें ऊजे थे । उसजगे कानूमे अंगुली घालके ( बाबा आ

दम, बाबा आदम ) ऐसे ऊंचे स्वरसे पुकारके, उसी चरनूँके ठिकाने, रत्न  
 जई थुंन बनाके, धर्मचक्र तीर्थ स्थापितकरा । (यह) धर्मचक्र तीर्थ विक्रम  
 राजाके राज्यतक तो रहा ( पीठे ) स्लेष्मादिकके बज्रतसे प्रचारसे, धर्मचक्र  
 तीर्थ, ऐसा नाम तो नष्ट नया ( और ) यवन लोकोंने उसका नाम, मक्का,  
 ऐसा प्रशिक्ष कर ( और ) अवलसे तो यवनादिकनी, मद्यमांशादिक अ  
 न्ह नहिं खाते थे । यवनोंके मतमेंनी, नसादिक अन्ह खाता नहि कहा  
 है ( तथापि ) जो केइ खाते है । सो धर्मसे विरुद्ध है ॥ और श्रीरुषभ  
 देव स्वामी । जिन १ देशोंमे विचरे । वहांका लोकतो प्राये सरलस्वभावी  
 दयावंत ऊवे ( और ) नगवान् जिनदेशोंमे नगए ( अरु ) जिनूँने नगवान  
 के दर्शन नहिंकरे ( वो ) सर्व स्लेष्ठ, अनार्य, निर्दयी, हो गए । अनेक अपनी  
 कल्पनाके मत मानने लगे । उनका व्यवहार औरतरहका हो गया ॥

॥ ❀ ॥ ( इस कारणसे ) सर्व वरणोंका ( तथा ) सर्व मत मतांतरका  
 ( तथा ) सर्व वैद्यक, ज्योतिष, मंत्र, तंत्रादिक, संपूर्ण कला कौशल्यका  
 मूल उत्पत्तिकारण, श्री रुषभदेवस्वामी नए ॥ ( जब ) श्री रुषभदेवस्वामीकुं  
 चारित्र लियेबाद, १ हजार वर्ष व्यतीतनए ( तब ) विहार करके विनीता  
 नगरीके पुरिमताल नामा वागमें आये ( जिसकुं ) इससमय प्रयागजी क  
 हते है ( उहां ) वन वृक्षके नीचे, तेलेकी तपस्यायुक्त, मिति फाल्गुन वदि ११  
 के दिन, प्रथम प्रहरमें, संपूर्ण लोकालोक प्रकाशक, केवल ग्यान, केवल  
 दर्शन, उत्पन्न ऊवा ( नसीवखत ) ६४ इंद्र । नुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी,  
 वैमानिकके देवगण, सर्व आयके समोसरनकी रचना करी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अब समवशरनका किंचित स्वरूप लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम नुवनपति, वायुकुमारदेवता, १ योजन पृथ्वीका  
 कचरादिक दूरकरके शुद्ध करे ( तदनंतर ) नुवनपति मेघ कुमार नामें  
 देवता, १ योजन पृथ्वीपर सुगंधि जलकी वर्षा करे ( तदनंतर ) व्यंतर  
 देवता उसी पृथ्वीपर गोमे प्रमाण सुगंधि पुष्पोंकी वर्षा करे ( पीठे )  
 व्यंतरदेव पुष्पोंके ऊपर, वनस्पतिकुं बाधा रहित, १ योजनमें, रत्नोंकी पी  
 ठका बनावे । इस पीठकाके ऊपर, नुवनपति देवता, रूपेमई गढ, सुवर्णमई  
 कांगरांकी रचना करे ॥ तिसके च्यासंदिशे, ४ दरवाजा । उत्र, चामर, तोरण,

८ मंगलीक, धूपघटी ( प्रमुख ) वर्णन सहित करे (तिसके अंदर) ज्योतिषी देवता ) रत्नमई कांगरायुक्त, सुवर्णमई कोट, ४ दरवाजा सहित करे । तिसके अंदर ) वैमानिक देवता, मणि रत्नमई कांगरासहित, रत्नमई कोट ४ दरवाजा सहित करे ॥ दरवाजाका वर्णन पूर्ववत् जाण लेना, ( अब ) इसकोटके मध्यमें, रत्नमई २ पीठका बनावै । तिसकेऊपर मध्यभागमें २ रत्नमई स्थटक, वृक्षका थाण्णा बनावै । तिसके ऊपर, ठव चामरादि विभूति सहित अशोकवृक्षकी रचना करै । तिस अशोकवृक्षके नीचे, रत्नजडित सुवर्णमई ४ दिशे ४ सिंहाशन स्थापन करे । तिसऊपर, तीन ठव ( अरु ) दोनु तरफ चामर रहे । ( और ) इसीतरह वर्णवसहित जगवान्के बैठनेके लिये, स्वर्णरत्नमई मध्यकोटके बीचमें देवद्वैकी रचना करे । ऐसा वर्णन सहित समोसरणमें, जगवान् श्रीकृष्णदेवस्वामी पूर्वके दरवाजे प्रवेशकरके, चैत्यवृक्षके चौतरफ, प्रदक्षिणाञ्जल फिरते ऊवे, नमस्तीर्थाय, ऐसा वचन बोलके पूर्वाञ्जि मुख बैठे ( शेष ) तीन दिशाके सिंहाशनपर, जगवान्के समान, प्रतिधिंव इंद्र, स्थापित करे ( परंतु ) जगवान्के अतिशयसें (और) देवानुजावसें चारे दिशासें आनेवाले लोकोंकूं, साक्षात् कृष्णदेव स्वामी, सन्मुख बैठे, उपदेश देते मालुम ऊवे (जब) चार मुखसें धर्मोपदेश देते देखके, लोकोंने कृष्णदेव स्वामीकूं, चतुर्मुख ब्रह्मा, ऐसे नामसें केनें लगे ( धनंजयकोशमेंनी, कृष्णदेव स्वामीका नाम ब्रह्मा लिखा है) जवीसें जगवान्का नाम, ब्रह्मा प्रशिक्ष ऊवा ॥

॥ ✽ ॥ ( जब ) श्री कृष्णदेव स्वामीने केवल ज्ञान उत्पन्न ऊवा सुना (तब) जगत चक्रवर्त्ति राजा: परिवार सहित, वंदन नमस्कार करनेकूं, और धर्मोपदेश सुणनेकूं आते, रस्तेमें हाथीपर बैठी ऊई, मरुदेवी माता, समोसरण, ठव, चामरादि, अपने पुत्रका अतिशय देखतेही शुद्ध जावसें केवल ज्ञान पायके, मोक्षकूं प्राप्ति नई (तब) जगत राजा, हर्ष शोच सहित सम वसरणमें आया । वहां जगवान्के मुखसें धर्मोपदेश सुनके, जगत राजाके ५०० पुत्र, और १०० पोतूने दीक्षा ग्रहण करी ( तथा ) कृष्ण देव स्वामीकी पुत्री, ब्राह्मी प्रमुख, अनेक स्त्रीयोंने दीक्षा ग्रहण करी ( इनूमे ) जगत राजाके, बड़े पुत्रका नाम, कृष्णसेन पुंडरीक था ( वो ) जगवान्के प्रथम गणधर ऊवा ( यह ) पुंडरीक गणधर, शत्रुंजय पर्वतऊपर अंतमें मोक्ष

गया ( इससे ) शत्रुंजय तीर्थका नाम पुंडरीक गिरि प्रशिद्ध भया ( इसी मुजब ) शत्रुंजय तीर्थके अनेक नाम ऊये ( वोहोतसे ) स्त्री, पुरुषोंने, देशविरति श्रावक धर्म अंगीकार करा ( इस तरह ) साधु, साधवी, श्रावक, श्राविकारूप चतुर्विध संघ स्थापित करा । आगे कितनेकवरसोंसे विच्छेद ऊवा थका, इहांसे फिर, साधु श्रावक धर्म प्रवर्तन ऊवा ( इस समयमें ) परिव्राजक सांख्य मतवालुंकी उत्पत्ति भई ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अब सांख्यमतका स्वरूप लिखते हैं ॥ ❀ ॥

॥ भरतजीके ५०० पुत्रोंने दीक्षा लीथी (उसमे) एकको नाम मरीची था (सो) साधुपना पालना महाकठिन देखकै, नवीन मन कल्पित वेष धारन करा (क्यूं कि) पीठा गृहवास करनेमें तो, अपनी हीनता जानके, आजीविका चलानेके लिये मत स्थापित कीया ॥ इस रीतिसे अपना व्यवहार बनाया (कि) साधु तो, मनदंड वचनदंड कायदंड, इन तीनों दंडोंसे रहित है (और) में तो इन तीनों दंडों करके संयुक्त ऊं । इसवास्ते, मुजकों त्रिदंड रखना चाहिये ( दूसरा ) साधू तो द्रव्य अरु ज्ञाव करके मुंडित है । सो लोच कर्त्ते है ( अरु ) में तो द्रव्य मुंडित ऊं ( इसवास्ते ) मुझे उस्तरे पाठनेसें मस्तक मुंडवाना चाहिये । शिखान्नी रखनी चाहियै ( तीसरा ) साधु तो पंचमहा व्रत पालते हे ( अरु ) मेरे तो सदा स्थूल जीवकी हिंसाका त्याग रहो ॥ ( चौथा ) साधु तो निः कंचन है ( अर्थात् ) परिग्रह रहित है । अरु मुजकों एक पवित्रिकादि रखनी चाहिये । ( पांचमा ) साधु तो शीलसें सुगंधित है । अरुमें ऐसा नही ऊं ( इसवास्ते मुझे चंदनादि सुगंधि लेनी ठीक है ( षष्ठा ) साधु तो मोह रहित है ( अरु ) में मोह संयुक्त ऊं । इसवास्ते मुझे मोहाह्लादितकों ढत्री रखनी चाहियै ( सातमा ) साधू जूते रहित है । मुजकों पगोंमे कुठ जूती प्रमुख चाहियै ( आठमा ) साधू तो निर्मल है । इसवास्ते उनके शुक्लांबर वस्त्र है ( अरु ) में तो क्रोध मान माया अरु लोभ, इन चारों कषायों करके मेला ऊं ( इसवास्ते ) मुझे कषायला वस्त्र, ( अर्थात् ) गेरुसें रंगे ऊवे जगमे वस्त्र रखने चाहिये ( नवमा ) साधु तो सचित्त जलके त्यागी है । ( इसवास्ते ) में ढाणके सचित्त जल पीउंगा । स्नानन्नी करुंगा । ( इस तरे ) स्थूल मृषावादादिकसें नि

वृत्त हुआ । इस प्रकारसे मरीचिने स्वमतसे अपनी आजीविकाकेवास्ते लिंग बनाया । यही लिंग परिव्राजकोंका उत्पन्न जया । यह मरीचि इस जेबसे जगवान्केसाथ विचरता रहा ( तब ) लोक इसका साधुवोंसे बिसदृश लिंग देखके पूछा ( तब ) मरीचि, साधुका धर्म यथार्थ बतायके कहा ( कि ) ऐसा कठिन धर्म, हमारेसे पला नहीं ( तब ) मैंने यह लिंग धारण किया है । यह मरीचि समोसरणके बाहिर प्रदेशमें बैठा रहता ( उहां ) जो कोई इसकेपास उपदेश सुनता, उसकूं यथार्थ धर्मसे प्रतिबोध देके, नीतर जगवान्केपास जेज देता था ( पीठे ) एकदासमें मरीचि रोगग्रस्त हुआ । तब विचार किया ( कि ) मैं कुलिंगी हूं । इसवास्ते साधु लोक तो मेरी बेयावज नहिं करते हैं ( और ) मुझे कराणीजी युक्त नहीं है । इससे अबके शरीर अच्छा होने से, मेरे लायक कोई शिष्य करंगा ( जब ) मरीचि अच्छा हुआ । पीठे थोमा दिनके बाद, एक कपिल नामे राजपुत्र, मरीचिकेपास धर्म सुणनेकूं आया ( तब ) मरीचिने यथार्थ साधु धर्मका स्वरूप वर्णन किया । तब कपिल बोला ( कि ) साधु धर्म उत्तम है ( तो ) तुमने ऐसे जेब काहेकूं धारण करा । तब मरीचि बोला ( कि ) साधु धर्म हमारेसे पल नहीं सका । इससे मैंने यह लिंग स्वमति कल्पित धारण किया है । ( इस सेती ) तुम जगवान्केपास जायके दीक्षा ग्रहण करो । तब कपिल राजपुत्र समवसरणके नीतर गए ( वहां ) श्री कृष्ण देव स्वामीकों, ठव चामरादि सिंहासनयुक्त राज्यलीला जोगवता देखके, पीछ मरीचिकेपास आयके केने लगा ( कि ) श्री कृष्णदेव स्वामी तो राज्यलीला सुख जोगवते हैं । इसवास्ते उसका धर्म तो मुजकूं रुचे नहीं । अब तेरेपास कुठ धर्म है, या नहीं है । तब मरीचिने जाना ( कि ) यह ज्ञारी कर्मा जीवहै । मेराही शिष्य होने योग्य है । इस लोचसे मरीचिने कहा ( कि ) वहांजी धर्म है । और मेरेपासजी देशे धर्म है । ( तब ) कपिल, मरीचिकेपास दीक्षा लेके शिष्य हुआ ( सरपाः सरपेन रज्यते इति वचनात् ) ॥ यह सांख्य मतके प्रवर्तक, कपिलमुनीकि उत्पत्ति कहती ॥ ( उत्समय ) मरीचिके तथा कपिलकेपास कोईजी उसके धर्मसंबंधी पुस्तक नहीं था ॥ निःकेवल जो कुठ आचार मरीचिने बताया उस प्रकारे कपिल कर्ता रहा ॥ ( और ) मरीचिने, शिष्यके लोचसे, मेरे



आसनी किंचित् धर्म है (ऐसे) उत्सूत्र आपणोंसे एक कोटाकोटि सागरोपम लग जन्म मरण करके, अंतमे १४ मा तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी ऊँआ उस मरीचिके काल करे पीठे, कपिल मरीचिके बताया यथार्थ ज्ञानशून्य आचारमें चलता रहा । उस कपिलमुनीके, आसुरी नामे शिष्य ऊँवा । औ रानी वदोतसे शिष्य ऊँए ( जिनकुं ) पुस्तकशून्य, आचार मात्र, ज्ञान वत लाया । शिष्योंके ऊपर, वज्रतसा प्रेम रखता थका, कपिल मुनि, शेषमें काल करके, ५ मा ब्रह्म देवलोकमें देवता ऊँवा । उत्पत्तिके अनंतर, तत्काल अवधि ज्ञानसे देखा । कि मेनें परम्वमें क्या दान पुन्य करा है । तब पूर्व भव देखनेसे, अपना आसुरी प्रमुख शिष्यांकुं ग्रंथ ज्ञान शून्य देखा । तब विचार कीया । कि मेरे शिष्य कुठ जानते नही है ( इसवास्ते ) म्हें इस कुं कुठ तत्वोपदेश करुं । ऐसा विचार करके, कपिल देव आकाशमें, पंच वर्ण संमपमें रहकर, तत्वज्ञानका उपदेश कर्त्ता जया । अव्यक्तसे व्यक्त प्रगट होता है (इत्यादि) धर्मका स्वरूप आकासवानीसें सुनके, आसुरीनें तिस अवसरमें, षष्टि तंत्र, प्रमुख अनेक ग्रंथ बनाये ( फेर ) इसकी संप्रदायमें एक संख नामा आचार्य ऊँवा । (तवसें) इस मतका सांख्य मत नाम प्रशिष्य ऊँवा ( वास्तवमें ) सांख्य परिव्राजक संन्यासियोंके लिंगका, आचारादिकका सूत्र, यह मरीचि ऊँवा । एक जैन मतके विगर, सब मतोंकी जम, इसकुं समझना चाहिये ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अब जैन पंक्ति ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति लि० ॥❀॥

॥ ❀ ॥ ( जिस दिन ) श्री ऋषभदेव स्वामीकुं केवल ज्ञान उत्पन्न ऊँवा । उसी वखत भरत राजाके, आयुध शालामें हजार देवाधिष्ठित चक्ररत्न उत्पन्न ऊँवा । दोनू तरफका बधाईदार साथमे आया । उन दोनुंकुं बधाई देके धर्मकुं मोटा जानके, प्रथम केवल ज्ञानका उद्भव करके, पीठे चक्ररत्नका उद्भव करा ( औरानी ) हजार हजार देवाधिष्ठित १३ रत्न उत्पन्न जए । इस १४ रत्नोंके संयोगसें, भरत क्षेत्रके, ठं खंममें, अपनी आज्ञा मनाई (इस वास्ते ) इसका नाम, भरतखंम, ऐसा प्रशिष्य ऊँवा ॥ ( जब ) ठ खंम साधके, भरत पीठा विनीता नगरीमें आया । ( तथ पि ) चक्ररत्न आयुध शालामें प्रवेश करे नहि (जब) आपणेंए ज्ञाइयांकुं अपनी आज्ञा मनाएके

लिये दूत भेजा । ( तब ) बाहुवल्जी विगल एत जाइयांने विचार किया (कि) राज्य तो हमकूं, पिता कृष्णदेव स्वामी देगए है ( तो ) इस भरत की आज्ञा कैसे माने । चलो, अब पिताकूं पुठें । जो पिता आज्ञा 'देवेगा सो करेगें । ऐसा विचारके जगवान्केपास गए ( तब ) कृष्णदेव स्वामीने मनका अग्निप्राय जानके, ऐसा उपदेश करा । जिनसें एत जाइयोंने दीक्षा ग्रहण करी । सब जगमे ठेम दीये ( और ) बाहुवल्जी दूतके मुख से सुनके, वज्रतसे क्रोधमें आयके युद्धकी तयारी करी ( तब ) भरतजीनी चढके आये । दोनोंके आपसमें बड़ा युद्ध हुआ ॥ भरत तो चक्रवर्ती था ( और ) बाहुवल्जी बहोत बल पराक्रमका धरनेवाला था ( इसवास्ते ) कौइनी युद्धमें हारा नहि । चक्ररत्न, गोत्रपर चले नहि । इसवास्ते भरतजी जीत सके नही ( शेषमें ) बाहुवल्जी आपसें समझके दीक्षा ग्रहण करी । तब लोकोंमें भरतजीकी अपकीर्ति नई ( पीछे ) भरतजीनी अपणा सब जाइयोंकूं दीक्षादीवी सुनके, चित्तमें उदास होके, उनोंकूं राजी करणेलिये, भोजन करानेका । पकवानोंके गाने बजायके, जगवान्के, संमोसरणमें आया ( और ) केने लगा, कि अपना जाइयोंकूं भोजनकरायके, मेरा अपराधकूं माफ कराउंगा ( तब ) जगवान् श्री कृष्णदेवस्वामी कहने लगे (कि यह) आहार, साधुओंके लेने योग्य नहि ( तब ) भरतजी मनमें उदास होके केने लगे ( कि ) यह आहार किसकूं देउं ( तब ) जगवानने कहा, जो तेरेसें गुणोंमें अधिक होय, ऐसे बृद्धश्रावक साधुमीयांकूं भोजन कराव । तब भरतजीने वज्रत गुणवान् श्रावकोंकूं वो भोजनजिमाया ( और ) उन श्रावकोंकूं ऐसा कह दीया ( कि ) तुह सब जने मिलकर सदैव मेरे इहां भोजन कर लियां करौ । ( औरजी ) जो खरच तुमारे चढ़ीये ( सो ) मेरे भंडारसें लेलीयां करो ॥ ( और ) बाणिज्यादिक सर्व काम ठेमके, स्वाध्याय करनेमें, पढने पढानेमें, जगवान्को धरम प्रवर्तन करनेमें, सदाकाल सावधान रहो ( और ) मेरे महिलोंकेपास रहते जावे मेरेकूंजी ऐसे वचन सुनाते रहो । ( जितो जवान् बढते जयं । तस्मात् माह्न माह्न ) तब जो बृद्धश्रावक भरतजीके कहनेसें सब काम ठेमके निःकेवल धरमकार्य करणमें अग्रमवंतजए ( तबसें ) जैनी पंथित, बृद्धश्रावकोंकी उत्पत्ति

नई। श्री अनुयोगचारजी सूत्रमेंजी, जैनी पंडित श्रावकोंका नाम, बुद्धसाव  
 या ऐसा लिखाहै, यह वृद्धश्रावक ऋतजीके महिलोंकेपास बैठे ऊबे  
 ( जितोजवान् ) इस पूर्वोक्त वचनकूं सदाकाल उच्चारन कर्तैरहे । ( और )  
 ऋतजी तो सदा काल जोगविलासमें मग्न रहते थे ( तथापि ) वृद्धश्रा  
 वकोंका वचन सुनके, मनमें चिंतवन करनें लगे । कि मुऊकुं किसनें जी  
 ताहै । तब स्मरण ऊवा । कि मेरेकुं । क्रोध, मान, माया, लोभ, कषायादि  
 कसैं, मोहराजा जीत रयाहै ( इससेती ) हूं संसारमें मग्न हो रयो हूं ।  
 मेरे ज्ञाइयादिक सर्व धन्य है । जिनोंनें राज्य ठोमके चारित्र ग्रहणकी  
 या है । इत्यादिक धर्मकी वार्त्ता स्मरण करनेसैं, दिलमें वैराग्य उत्पन्न होता  
 था ( और ) वृद्ध श्रावक, बेखेर, माहन माहन, पूर्वोक्त वचन कहनेसैं,  
 लोक सर्व, उन वृद्धश्रावकांकूं, माहन ऐसे नामसैं कहने लगे ( तबसैं ) यह  
 जैनी ब्राह्मण उत्पन्न भए । प्राकृत भाषामें ब्राह्मणकूं माहन नामसैं लिखा  
 है । प्राकृत व्याकरणसैं, ब्राह्मण शब्द, वंजनण ( अरु ) माहन, इस दोय  
 नामसैं सिद्ध होता है । ऐसे श्रावक माहन जोजन करनेवाले, दिन २ वज्र  
 तबधे । तब रसोईदार ऋतजीकुं कहा । कि इनोमें श्रावककी, वा अन्य  
 पुरुषकी, क्या मालम पमे । तब जितनेश्रावक थे । उनकुं बुलायके सर्वकी  
 परीक्षा करी । श्रावक जानके ऋतजीनें उनोंके शरीरमें, कांकणी रत्नसैं  
 तीन२ रेखाका चिन्ह कीया ( इससैं ) जिनोपवीत धारनकी रीति प्रशिद्ध  
 नई ॥ ( पीठे ) ऋतजीका बेटा सूर्ययश ऊवा । जिसके संतानवाले, ऋ  
 तक्षेत्रमें, सूर्यवंशी कहे जाते हैं ( अरु ) वाज्जवलीका वन्मा पुत्र, चंद्रयश  
 था ( तिसके ) संतानवाले, चंद्रवंशी कहे जाते हे । श्री ऋषभदेवजीके  
 कुरुनामे पुत्रके संतानवाले सर्व कुरुवंशी कहे जाते हैं । ( जिनमें ) कौरव,  
 पांडव ऊये हैं ( जब ) ऋतका बेटा, सूर्ययश सिंहासनपर बैठा था । तब  
 तिसकेपास कांकणी रत्न नहि था ( क्यों कि ) कांकणीरत्न चक्रवर्ति शि  
 वाय और किसीकेपास नहि होता है । ( इसवास्ते ) सूर्ययश राजानें,  
 ब्राह्मण श्रावकांके गलेमें, सुवर्णमय जिनोपवीत करवा दीये । तथा जोजन  
 प्रमुख सर्व ऋतमहाराजकीतरे देते रहे ( जब ) सूर्यजशका बेटा, महा  
 यश, गद्दीपर बैठा ( तब ) तिसने रूपेके जिनोपवीत बनवा दीये । आगे

तिनके संतानोंने पंचरंगे रेशमी पट्टसूत्रमय जिनोपवीत बनाते रहे । इस पीठे सादेसूतके बनाये गये । यह जिनोपवीतकी उत्पत्ति कही ॥ \* ॥

॥ \* ॥ अब चार वेदोंकी उत्पत्ति लिखते हैं ॥ \* ॥

॥ \* ॥ जब ऋतजीनें, ब्राह्मणाकूं वज्रतसा मान्या पूज्या (तब) दूसरे ज्ञी लोक ब्राह्मणाकूं दानादिक देनं लगे ( और ) धर्मकृत्य सर्व उनूकेपास सीखनं लगे । तथा करानं लगे ( तब ) ऋत चक्रवर्तिनं, ऋषभदेवस्वामी के वचनानुसारे, तिन ब्राह्मणूके, स्वाध्याय करनेकेवास्ते, श्री जगवान् ऋषभ देवस्वामीकी स्तवनागर्जित, (और) पूजा, प्रतिष्ठादि, श्रावक धर्मका, संपूर्ण स्वरूप गर्जित, ८ कर्म, ७ नय, ४ निक्षेपा, ९ तत्त्व, । क्षेत्र प्रमाणादिक गर्जित, वज्रत मंत्रयुक्त ४ वेद रचे ( तिनके यह नाम ) १ संसार दर्शन वेद । २ संस्थापना परामर्शन वेद । ३ तत्वावबोधन वेद । ४ विद्या प्रबोध वेद । इन चारोंमें, सर्व नय वस्तूके कथन संयुक्त तिन ब्राह्मणांको पढाये । ऋत के ८ पाठतक तो, ब्राह्मणांकी भक्ति ऋतजीकी तरे करते रहे । (पीठे) प्रजा ज्ञी ब्राह्मणांको भोजन करानं लगी (तबसें) सर्व जगे ब्राह्मण पूजनीक सम जे गये । इस पीठे (आठमा) तीर्थंकर, श्री चंद्रप्रभु स्वामीके वखततक, सर्व ब्राह्मण जैन धर्मी श्रावक रहे ( अरु ) चंद्रप्रभु जगवान्के पीठे, कितना क काल व्यतीतजये, इस ऋतखंभमें, जैन मत (अर्थात्) चतुर्विधसंघ, और सर्वशास्त्र विभेद हो गये । (तब) तिन ब्राह्मणा जासोंको लोक पूठनं लगे । ( कि ) धर्मका स्वरूप हमको बतलावो । तब तिनोंने जो मनमें माना । (और) अपना जिसमें लाज देखा सो धर्म बतलाया । अनेक तरहके ग्रंथ बनाते रहे ( जब नवमा ) श्री सुविधिनाथ पुष्पदंत अरिहंत हुए । तिनोंने जब फेर जैन धर्म प्रगट करा (तथापि) कितनेक ब्राह्मणा जासोंने न माना स्वकपोल कल्पित मतहीका कदाग्रहरका ( जबसें ) अन्य मति ब्राह्मण हुए ( और ) उलटे जिन धर्मके साधुवांके क्षेपी बन गए ( इसी तरे ) ७ जगवान्के अंतर कालमें जिनधर्म विभेद होता रहा ( इससें ) वज्रत मिथ्या धर्म बढ़ता गया ॥ ( यजुक्त आगमे ) सिरिजरहचक्रवर्ती । आय रियवेयाण विस्सु उप्पत्ती । माहण पढणत्थमिणं । कहियं सुहजाण विवहारं ॥ २ ॥ जिणं तित्थे बुद्धिने । मिद्धने माहणेहिं तेव्विया । अस्संजयाण

पूआ । अप्पाणंकाहियातेहिं ॥ १ ॥ ( इत्यादि ) ॥ ( फेर ) कितनेक काल पीठे, याज्ञवल्क्य, सुलसा, पिप्पलाद, अरु पर्वत, प्रमुख ब्राह्मणा जासोंनै, धनके लोभसे, तिन वेदांमें जीव हिंसा प्रमुख प्ररूपणा करके उलट पुलट कर मारे । जैन धर्मका नामची वेदांमेंसे निकाल दीया । वलकी अन्योक्ति करके (दैतपदस्युवेदवाह्य) इत्यादिनामोंसे, साधुआंकी निंदा गर्जित, १ ऋग् । २ यजु । ३ साम । ४ अथर्वण, ये ४ नाम कल्पन कर दीये । ( यही बात ) बृहदारण्य उपनिषदके जाण्यमें लिखा है ( कि ) यज्ञोंका कहनेवाला सो यज्ञवल्क्य । तिसका पुत्र याज्ञवल्क्य । इस कहनेसेंजी यही प्रतीत होता है । जो यज्ञोंकी रीति, प्राय याज्ञवल्क्यसेंही चली है ( तथा ) ब्राह्मण लोकोंके शास्त्रमेंजी लिखा है ( कि ) याज्ञवल्क्यनें पूर्वकी ब्रह्मविद्या बमके, सूर्यपासे, नवीन ब्रह्मविद्या सीखके प्रचलित करी ( इस्से ) यही अनुमान निकलता है ( जो ) याज्ञवल्क्यनें, प्राचीन वेद ठोमके नवीन वेद बनाये । ( इस्सें ) वर्तमान ४ वेद ( और ) जीव हिंसायुक्त यज्ञकी उत्पत्ति, प्राय याज्ञवल्क्यादिकोंसें हुई संभव है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( तथा ) श्री तेसठ सलाका पुरुष चरित्र ग्रंथमें, आठमें पर्व के दूसरे सर्गमें, ऐसा लिखा है ( कि ) काशपुरीमें, दो सन्यासणियां रहती थी, तिसमें एकका नाम सुलसा था ( अरु ) दूसरीका नाम सुभद्रा था, ( यह ) दोनोंही वेद अरु वेदांगोंकी जानकार थी । ( तिस ) दोनों बहिनोंनें ब्रह्मतेस वादियोंको वादमें जीते । ( इस अवसरमें ) याज्ञवल्क्य परिव्राजक, तिनके साथ वाद करनेकों आया, आपसमें ऐसी प्रतिज्ञा करी ( कि ) जो हार जावै । वो जीतनेंवालेकी सेवा करै । ( तब ) याज्ञवल्क्यनें, सुलसाकों वादमें जीतके, अपनी सेवा करनेंवाली बनाई ॥ सुलसाजी रात दिन याज्ञवल्क्य की सेवा करनें लगी । ( अरु ) दोनों युवान थे, इससें कामातुर होके, आपसमें जोगविलास करनें लग गए । ( सब है ) कि अग्निकेपास, धी रहनेंसें पिघलैईगा ( तथा ) धी, घास, फूस, मिलनेंसें, अग्नि बधैईगा ( निदान ) दोनों काम क्रीमामें मग्न होकर, काशपुरीके निकट, कुटीमें वास करते थे ( तब ) याज्ञवल्क्य, सुलसाके पुत्र उत्पन्न जया ( तब ) लोकोंके उपहासके जयसें, उस लम्बेको, पीपलके रूढ़ नीचे ठोमकर, दोनों जागके

कहाई चले गए ॥ ( यह वृत्तांत ) सुलसाकी बहन, सुनद्राने सुनी । (तब)  
 तिस बालकके पास आई ( जब ) बालकको देखा ( तो ) पीपलका फल  
 स्वयमेव मुखमें पमा जवा चबोख रहा हे ( तब ) तिसका नामन्नी पिप्पला  
 द रक्खा । ( और ) ( तिसको अपने स्थानमें ले जाके यत्नसे पाला (अरु)  
 वेदादि शास्त्र पढाए ( तब ) पिप्पलाद बन्ना बुद्धीमान् जवा । वज्रत वादि  
 योंका अग्निमान दूर किया ( पीठे ) तिस पिप्पलादके साथ सुलसा (और)  
 याग्यवल्क्य, यह दोनों बांद करनेको आए ( तब ) तिस पिप्पलादनें दोनों  
 को बादमें जीत लिया ( और ) सुनद्रा मांसीके कहनेसे जान गया (कि)  
 यह दोनों मेरा माता, पिता है ॥ और मुझे जन्मतेको निर्दयी होकर गोम  
 गये थे ( इससे ) वज्रत क्रोधमें आया ( तब ) याज्ञवल्क्य ( अरु )  
 सुलशाके आगे । मातृमेध, पितृमेध, यज्ञोंको युक्तियोंसे स्थापन करके, पितृ  
 मेधमें याग्यवल्क्यों, (और) मातृमेधमें, सुलसाको मारके होम करा (यह)  
 पिप्पलाद, मीमांशक मतका मुख्य आचार्य हुआ ॥ इसका बातची नामें  
 शिष्य हुआ ( तबसे ) जीव हिंसा संयुक्त यज्ञ प्रचलित हुए ( इससे )  
 याग्यवल्क्यके वेद बनानेमें कुठनी संका नहीं ( क्यों कि ) वेदमें लिखा है  
 ( याज्ञवल्केति होवाच ) अर्थात् याग्यवल्क्य ऐसे कहता हुआ ( तथा )  
 वेदमें जो साखा है, वे वेदकर्त्ता मुनियोंकेही सब वंसे हैं ( इसी तरे ) श्री  
 आवश्यकजी मूल सूत्रमें लिखा है ( कि ) जीव हिंसा संयुक्त, जो वेद है  
 ( सो ) सुलसा ( अरु ) याग्यवल्कादिकोंने बनाये हैं ( और ) कितनीक  
 उपनिषदोंमें पिप्पलादकाजी नाम है ( तथा ) और मुनियोंकाजी कितनेक  
 जगमें नाम है । जमदग्नि, काश्यपतो वेदोंमें खुद नामसे लिखे हैं । फेर वे  
 दोके नवीन होनेमें कुठ संका नहीं ॥ (इस पीठे) महाकाल असुरके सहायसे,  
 पर्वतनें, वज्रत जीव हिंसा संयुक्त वेद प्रचलित किये है । उसका विशेष अधिकार  
 आवश्यक सूत्र, तेसठ शलाका चरित्रादिकमें लिखा है । उहांसे देख लेना (यह)  
 जैन ब्राह्मण, जैन वेद, ( तथा ) प्रसंगसे, अन्यमत वेदोत्पत्ति कही ॥  
 ( अब ) श्री कृष्णदेवस्वामीके परिवारकी संख्या कहते हैं ॥ जगवान् श्री  
 कृष्णदेव स्वामीके सर्व ८४००० साधु हुए (जिसमें) पुंनरीकजी प्रमुख  
 ८४ गणधर हुए ॥ ब्राह्मीजी प्रमुख ( ३००००० ) साध्वी हुई ॥

( १०६०० ) बेक्रिय लब्धिधारक हुए ॥ १२६५० वादी विरुद्ध धारक हुए ॥ ( १०००० ) अवधिग्यानी हुए ॥ ( १००००० ) केवल ग्यानी हुए ( १२७५० ) मनपर्यव ग्यानी हुए ॥ ( ४७५० ) चौदे पूर्वधारी हुए ॥ ( ३५०००० ) श्रावक हुए ॥ ( ५५४००० ) श्रावकएयां हुई (इत्यादि) वज्रतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें कैलाश पर्वतके ऊपर अष्टम तप करके संयुक्त, अनशन किया । पद्माशन मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसे, सर्व कर्मोंको खपायके, मिति माघ वदि १३ के दिन, ( १००००० ) पुरुषोंकेसाथ, ८४ पूर्व लाख वर्षको आऊषोपूरण करके, सिद्धिस्थानको प्राप्त हुए ॥ ( जब ) श्री ऋषभदेव स्वामीका कैलाश ( तथा ) दूसरा नाम अष्टाप्रद पर्वत ऊपर, निर्वाण हुआ ( तब ) ६४ इंद्रादि सर्व देवता निर्वाण उल्लव करनेको आए, तिन सर्व देवताओंमेंसे, अग्निकुमार देवतानें श्री ऋषभदेवकी चितामें अग्नि लगाई ( तबसेही ) यह श्रुति लोकमें प्रसिद्ध हुई है ( अग्नि मुखावै देवा ) अर्थात्, अग्नि कुमार देवता, सर्व देवताओंमें मुख्य है ( और ) अल्प बुद्धियोंने तो इस श्रुतिका ऐसा अर्थ बना लिये हैं ( कि ) अग्नि जो है, सो तेतीसकोम देवताओंका मुख है ॥ ऋगवानके निर्वाणका स्वरूप, सर्व आवश्यक सुत्र, ( तथा ) जंबुद्वीपपन्नतीसे जान लेना ( जब ) ऋगवानकी चितामेंसे, दाढ़ां दांत वगैरे सर्व इंद्र, देवतादिक, अपने १ देवलोकमें, पूजाके निमित्त लेजानें लगे ( तब ) वृद्ध श्रावक ब्राह्मण लोक मिलकर, वज्रत विनय संयुक्त, देवताओंसे याचना करने लगे ( तब ) देवता लोक, अहो याचका १, ऐसा बोलके देने लगे ( तबसे ) ब्राह्मणोंको याचक कहने लगे ( और ) ब्राह्मणोंने, श्री ऋषभदेवकी चितामेंसे अग्नि लेकर, अपने १ घरोंमें स्थापन करते हुए ( इससे ) ब्राह्मणोंको आहिताग्नय कहने लगे ॥ श्री ऋषभदेवकी चिता जले पीछे, दाढ़ादिक तो सर्व इंद्रादिक ले गए ( बाकी ) ऋस्मी अर्थात् राख रह गई, सो ब्राह्मणोंने थोमी थोमी सर्व लोकोंको दीनी ( तब ) उस राखको लेकै सर्वने अपने मस्तकपर त्रिपुंजाकारसे लगायी ( तबसे ) त्रिपुंज लगाना सख हुआ । ( और जब ) ऋतजीने कैलास पर्वतके ऊपर, सिंहनिषया नामें मंदर बनाया ( उसमें ) श्री ऋषभदेवस्वामीकी ( और ) आगे होनेवाले

२३ तीर्थ करोंकी, सर्व चौबीस प्रतिमा, अपना २ वर्ष प्रमाणमुजब, चारेई दिशामें संस्थापन करी ( और ) दंम रत्नसँ पर्वतकों ऐसँ ठीला ( कि ) जिस ऊपर कोई पुरुष पांवासँ न चढ सके । ( उसमें ) एकेक जोजन ऊंचा ८ पगथिया ररका ( इससँ ) कैलाश पर्वतका, दूसरा नाम अष्टापद ऊवा ॥ और तवसँही कैलाश, महादेवका पर्वत कह लाया ॥ मोटा जो देव सो महादेव, श्री रूपनदेवस्वामी, जिसका निर्वाण स्थान कैलाश ऊवा ॥ ( पीठे ) श्री भरत चक्रवर्ति ( और ) बाज्रवलजी केवलज्ञान पायके मोक्ष गए ( तव ) श्री भरतजीके पाटे, सूर्ययश राजा भया । तिसकी औलाद सूर्यवंशी कहलाए । सूर्ययशके पाटे महायश राजा गद्दीपर बैठा ( ऐसँ ) अतिवल, महावल, तेजवीर्य, कीर्तिवीर्य, दंमवीर्य ( इत्यादि ) अनुक्रमसँ अपने २ पिताकी गद्दीपर, बैठे ( परंतु ) भरतजीसँ आधा राज्य ( अर्थात् ) भरत क्षेत्रका तीन खंमके भीतर २ राज्य रहा ( अतमें ) भरतजीकी तरै आठ पाटतक तो, आरीसा महलमें, केवलग्यान पाय, दिक्षा लेके मोक्ष गए ( इस पीठे ) दूसरा तीर्थकर, श्री अजितनाथ स्वामीका पिता, जितशत्रु राजातक अशंख्य पाट ऊए । जिन सबका अधिकार चितांतर गंमिकासँ जाए लैना ॥ इति ५५ बोल गन्तित श्री रूपन देवस्वामी ( तथा ) पहला चक्रवर्ति भरतजीका अधिकार कहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अब दूसरा श्री अजितनाथस्वामी अधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अजोध्यानगरीमें, भरतजीकेपीठे, असंख्य राजा हो चके(तव) इक्ष्वाकुवंशी जितशत्रु राजा भया । तिसके विजयानामे राणी । तिसकी कूखमे, विजय अनुत्तर विमानसँ, वैशाखसुद १३ के दिन, भगवान अवतार लिया ॥ मातायें गजादि अग्निशिखापर्यंत, १४ स्वप्ना प्रगटपणें मुखमें प्रवेश करता देखा । गर्जमें ८ मास २५ दिन रहके । मिति माघ शुक्ल ८ के दिन, रोहिणी नक्षत्रे जन्म ऊवा (तव) जितशत्रु राजायें १० दिन पर्यंत जन्म उल्लव करके, अजितकुंमर, नाम स्थापन किया । लांठन हस्ती । शरीरमान ४५० धनुष । कंचनसमानवर्ण, तीन ज्ञानयुक्त, महातेजस्वी । भोगावलीकर्म निर्जरायें, विवाहकरके, क्रमसँ राज्यपदकों प्राप्त ऊवे ( पीठे ) अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसँ, संवत्सरपर्यंत मोठे दान देके, माघ कृष्ण



ए के दिन, अयोध्या नगरीमें, ठठप करके, शालवृक्षके नीचे १००० पुरुषोंके साथ दीक्षा ग्रहण करी । (उसीवखत) जगवानकों चोथा मनपर्यव ग्यान उत्पन्न जया । प्रथम ठठका पारणा, परमान्नसैं, ब्रह्मदत्त व्यवहारीके घरे जुवा ॥ ११ वरष ठठस्थपणैं विहार करके, अयोध्या नगरीगये (तव) वहां मिति पोषवदि ११ के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवल ज्ञान उत्पन्न जया । (तव) देवगणका कीया जुवा, समवसरणमध्ये बैठके, ११ परषदाके सन्मुख, धर्मोपदेश करके, चतुर्विधसंघकी स्थापना करी । जगवान्के सिंहसे न प्रमुखएगणधर जुवे ॥ १००००० सर्व साधु मुनिराज जए ॥ ३३०००० फल्गुश्री प्रमुख साधवी जुई ॥ १०४०० वैक्रियलब्धि धारक जुवे ॥ १४०० अवधिज्ञानी जए ॥ ११००० केवल ज्ञानी जए ॥ ११५५० मनपर्याय ज्ञानी जए ॥ ३७१० चवदे पूर्वधारी जए । ११४०० वादी विरुद्ध धरनेवाले जए । ११८००० व्रतधारी श्रावक जए ॥ ५४५००० व्रतधारक श्रावकएयां जई (इत्यादिक) बज्रतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें समेत शिखरपर्वतऊपर १००० साधुओंके साथ, १ मासकी संलेखना करके, कान्तसंग मुद्रासैं, सर्व कर्म खपायके, मिति चैत्रसुदि पंचमीके दिन, ७१ पूर्वलाखवरषको आनुषो पालकें सिद्धिस्थानकों प्राप्त जए ॥ शासनदेव महायक्ष । शासनदेवी अजितवला मानवगण । सर्पयोनि । वृषराशि । सम्यक्त पायेवाद तीसरे जवमें मोक्षगए (इस समयमें) दूसरा चक्रवर्त्ति सगरनामें जुवा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अब किंचित् सगर चक्रवर्त्तिका अधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री अजितनाथ स्वामीके, पिताका जाई, सुमित्र नामें युवराजा जुवा ॥ जिसके यशोमतीराणीयें । १४ स्वप्ना पूर्वक, सगरनामें पुत्रकों जन्मा (जव) जगवान्ने दीक्षा लीवी । (तव) अपना जाई सगर युवराजाकों राजगद्दीपर स्थापन किया । पीठे नवनिधान (और) चक्ररत्न, प्रगट होनेसैं, भरतक्षेत्रका ठठमसाधकें । दूसरा चक्रवर्त्ति जुवा । इनके, जन्हुकुमार प्रमुख ६०००० पुत्रजए। वो सर्व समुदाई कर्मकेयोग, एकदा भरतचक्रवर्त्तका कराया जुवा, सुवर्णमई अष्टापद पर्वतके ऊपर, रत्नामई, निज १ प्रमाणोपेत १४ जगवान्का मंदिर देखकें, पर्वतकी रक्षाके निमित्त, बज्रत ऊंमी खाईखोद कें, गंगानदीकों चउफेर करदीनी । तव उस जमीनके अधिष्ठित, देवगणकों

तकलीप होनेसे एकसाथ ६०००० हजार पुत्रोंको जन्म कर दीया । इसकी मालुम होनेसे, सगरचक्रवर्त्तिकों वज्रतसा दुःखजया ( पीठे ) सौ धर्मद्वेके मुखसे जवस्थितिका स्वरूप सुणके दुःख दूर किया ( पीठे जब ) सगर पुत्रोंके लाया जवा, गंगाकाजल बढता थका, अष्टापद पर्वतके चौफेर देशोंमे उपद्रव करने लगा ( तब ) जन्हुकुमारका पुत्र, जामीरथ, सगर चक्रवर्त्तिकी आज्ञा पायके, दंमरत्नसे जमीनको खोदके, गंगाजलका प्रवाहकुं, समुद्रमे मिला दिया ( इसीसे ) गंगाका नाम लोकीकमे जान्हवी ( तथा ) जामी रथी कहने लगे ॥ और यह खारासमुद्र पिण, देवसहायसे, सगरके पुत्रोंका लाया जवा जस्तक्षेत्रमे मालुम हो रहा है ( और ) सगरचक्रवर्त्तिकी आज्ञासे वैताढ्य पर्वतसे आयके, लंकाके टापूमे, प्रथम घनवाहन राजा जवा ( इस ) घनवाहन राजाके वंशमे, रावण, वज्रीपणादिक जए हैं ( सो ) राक्षसी विद्यासे राक्षस कहलाए ( इसीसे ) लंकाके टापूका नाम राक्षसदीप जवा ( और ) सिद्धगिरीके ऊपर, मंदिरोंका दूसरा उद्धार, सगरचक्रवर्त्तिने करा ( अरु ) वमादानेसरी जवा । अंतमे श्री अजितनाथ स्वामीके पास दीक्षा लेके, शुद्ध चारित्र्यसे केवल ज्ञानपायके, मोक्षको प्राप्त जया ॥ श्री रूपजदेव स्वामीके निर्वाणसे, पंचासलाख कोम सागरोपम विंतीत होनेसे, श्री अजितनाथ स्वामीका निर्वाण जवा ॥ १५ ॥ इति ५५ बोलगर्जित दूसरा अजितनाथस्वामी ( तथा ) दूसरा सगर चक्रवर्त्तिका अधिकारः संपूर्णः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ३ श्री संजवनाथस्वामी अधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सावत्थी नगरीमे, इक्ष्वाकवंशी, जितारी नामे राजा जवा ( तिसके ) सेना नामे पट्टराणी, जिसकी कूखमे, ऊपरला ग्रैवेयक विमानसे आयके, मिति फाल्गुन शुक्ल ८ के दिन, जगवान् उत्पन्न जया ( पीठे ) सर्व दिशा सुजिह्वसमे । मिति माघ शुक्ल १४, मृगशिर नक्षत्रे, जन्म कल्याण क जवा ( तब ) जितारी राजाये १० दिन पर्यंत उज्ज्व करके, संजव कुमार नाम स्थापन किया । अश्वका लंछन युक्त, कंचनवर्ण, शरीर प्रमाण ४०० धनुष जवा । तीन ज्ञानयुक्त । महा तेजस्वी । १००८ लक्षणांलंछत । जोगावली कर्म निर्जराये, विवाह करके, क्रमसे राज्यपद धारण किया । अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसे, संवत्सर पर्यंत मोटो दान हुके,

महातेजस्वी, १००८ लक्षणा लंकृत, जोगावली कर्मनिर्जरार्थे विवाहकरके  
 क्रमसें राज्यपद धारण कीया । अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें  
 संवत्सरपर्यंत मोटो दान देके, मिति वैशाख शुक्लए के दिन अयोध्यानगरीमें,  
 नित्य नक्तसें, शालवृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंके साथ दिक्षा ग्रहण करी  
 ( उसवखत ) चोथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न जयो । प्रथम पारणो परमान्नही  
 रसें, पद्मशेखरके घरे जूवो । १० वर्ष ठहरस्थपणें बिहार करके, फेर अ  
 योध्यानगरीमें चातुर्मास रहा । वहां ठठ तपसंयुक्त, मिति चैत्र शुक्ल ११  
 के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान उत्पन्न जया । उसवखत चतुर्निका  
 य देवगणके किया जूवा, समवसरणमें बैठके, ११ प्रखदाके सन्मुख, धर्मो  
 पदेश देके, चतुर्विधसंघकी स्थापना करी ॥ जगवान्के सर्वसाधु ३१००००  
 जूए ( जिसमें ) चरम प्रमुख १०० गणधर पदधारक जूए ॥ १८४४०  
 वैक्रियलब्धि धारक जूए ॥ ११००० अवधिज्ञानीजूए ॥ १०४५० मन  
 पर्यवज्ञानी जूए ॥ १३००० केवल ज्ञानीजूए ॥ १४०० चवदे पूर्वधारक  
 जूए ॥ १०४०० वादीविरुद्ध धरनेवालेजूए ॥ ५३०००० काश्यपीप्रमुख  
 साधवी जूई ॥ १८१००० श्रावक जूए ॥ ५१६००० श्राविका जूई ॥  
 (इत्यादिक) वज्रतसे जीवोंका उद्धार करके अंतसमें समेतशिखर पर्वतके  
 ऊपर, १००० साधुओंकेसाथ, १ मासका अणशण ग्रहण कीया ॥ काउ  
 सगग मुद्राधे, आत्मगुणकेध्यानसें, सर्व कर्मकों खपायके, मिति चैत्र शुक्ल  
 ए के दिन, ४० लाख पूर्वका आठखा पूरणकरके, सिद्धिस्थानकों प्राप्त  
 जूए ॥ शासनदेव तुंबरुयक्ष । शासनदेवी महाकाली । राक्षसगण । मूषक  
 योनि । सिंहराशी । अंतरकाल ए० हजार कोरु सागरोपम । सस्यक्तपाए  
 बाद तीसरे जवमें मोक्षगए ॥ इति ५५ बोलगर्जित श्री सुमतीनाथ स्वा  
 मीका अधिकारः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ६ वा श्री पद्मप्रभु अधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कोसंबी नगरीमें, इक्ष्वागवंशी, श्रीधरनामें राजा (जिसके) सुसीमा  
 पट्टराणी, तिसकी कूखमें, उपरिम ग्रैवेयक देवविमानसें चवके, मिति माघ कृष्ण  
 ६ के दिन उत्पन्न जूवा । मातायें १४ स्वप्ना देखा (पीठे) सर्व दिशा सुनिह  
 समें, मिति कार्तिक कृष्ण ११ के दिन, चित्रा नक्षत्रे, जन्म कल्याणक

ज्वा ( तव ) श्रीधर राजार्ये १० दिन पर्यंत उन्नव करके, सर्व गोत्रियोंके सन्मुख, पद्मकुमार नाम स्थापनकिया ( नाम स्थापनका येहेतू हे ) माताने पद्म सज्यापर सोनेका मोहला उत्पन्न ज्वा था ( और ) जगवान्का पद्म कमलके समान रंग था (इससे) पद्मकुमार नाम ज्वा । कमलका लंठन युक्त । रक्तवर्ण । शरीर प्रमाण १५० धनुष ज्वा । तीन ज्ञानयुक्त । महा तेजस्वी, १००८ लक्षणलंकृत, जोगावलि कर्म निर्जरायें, विवाह करके, क्रमसे राज्यपद धारण किया । अवसर आयेसे, लोकांतिक देवताके वचनसे, संवत्सरपर्यंत मोटो दानदेके, मिति कार्तिक कृष्ण १३ को, कोशंबीनगरीमें, एक उपवास करके, उन्न वृद्धके नीचे, १००० पुरुषोंकेसाथ, दिक्षा ग्रहण करी ( उस वखत ) चौथो मनपर्यंत ज्ञान उत्पन्न जयो । प्रथम पारणो, सोमदेव ब्राह्मणके घरे, परमाद्य क्षीर सेती जयो । ८ मास ठहरय पणे विहार करके, फेर कोशंबी नगरीमें आए ( वहां ) चौथजक्त संयुक्त चैत्र शुद्ध १५ के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान उत्पन्न जया । उस वखत चतुर्निकाय देव गणके किया ज्वा, समवसरणमें बैठके, १२ परपदा के सन्मुख, धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी ॥ जगवान्के सर्व ३३०००० साधु हुए ॥ ( जिसमें ) १०७ प्रद्योतन प्रमुख गणधर हुए ॥ १६१०८ वैक्रिय लब्धि धारक हुए ॥ १०००० अधि ज्ञानी हुए ॥ १०३०० मन पर्यंत ज्ञानी हुए ॥ १२००० केवल ज्ञानी हुए ॥ १३०० चन्दे पूर्वधारी हुए ॥ १६०० वादी विरुद्ध धरनेवाले हुए ॥ ४०१००० रति प्रमुख साधवी हुई ॥ २७६००० श्रावक हुए ॥ ५०५००० श्राविका हुई । ( इत्यादिक ) वज्रतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें, समेत शिखरजी पर्वतके ऊपर, ३०८ साधुओंकेसाथ, १ मासका अणशण ग्रहण किया । कान्तसग मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसे, सर्व कर्म को खपायके, मिति मिगसर वदि ११ के दिन, ३० लाख पूर्वका आग्रवा पूरण करके, सिद्धि स्थानको प्राप्ति हुए ॥ शासनदेव कुसुम यक्ष । शासन देवी शामा । राक्षसगण । महिष योनि । कन्या राशि । अंतर काष्ठ ९ हजार कोम सागरोपम । सम्यक्त पाएवाद तीसरे जन्ममें मोक्ष गए ॥ ✽ ॥ ॥✽॥ इति ५५ बोल गजित ६ श्री पद्म प्रज्जुका अधिकारः ॥ ६ ॥ ✽ ॥

## ॥ ॐ ॥ अथ ७ श्रीसुपार्श्वनाथजी अधिकारः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ बनारशी नगरीमें, इक्ष्वाकवंशी, प्रतिष्ठ नामें राजा ऊवा ( ति शके ) पृथ्वी नामें पट्टराणी, जिसकी कूखमें, मझम त्रेवेयक देव विमानसे आयके । मिति ज्ञाद्रवा वदी ८ के दिन, जगवान् उत्पन्न जया ( तव ) मा ताये चवदै स्वप्न देखा । पीठे सर्व दिशा सुजिह्वा समें, मिति जेष्ठ शुद्ध १ के दिन विशाखा नक्षत्रे, जन्म कल्याणक ऊवा । साथियेका लांछन युक्त । कंचन वर्ण, सरीर प्रमाण १०० धनुष ऊवा । तीन ज्ञानयुक्त । महा तेजस्वी । एक हजार आठ लक्षणांलंकृत, जोगावली कर्म निर्झरार्थे, विवाह करकै, क्रमसे राज्यपद धारण किया । अवसर आए लोकांतिक देवताकै वचनसे, संवत्सर पर्यंत मोटो दान देके, मिति जेष्ठ सुदी १३ के दिन, बनारशी नगरीमें, ठठ तप करकै, सरीश वृद्धकै नीचै, एक हजार पुरवोंकैसाथ, दिक्ता ग्रहण करी ( उस वखत ) चौथो मनपर्यवज्ञान उपज्यो । प्रथम ठठको पारणो, माहेंद्रदत्तकै घरे, परमान्नसें ऊवो । नवमास ठठस्थपणें विहार करकै, फेर बनारशी नगरीमें आये । वहां ठठ तप संयुक्त, फागुण वदी ६ के दिन, लो कालोक प्रकाशक, केवल ज्ञान उत्पन्न ऊवा ( उस वखत ) चतुर्निकाय देवगणका किया जया, समवसरणमें, बारह परखदाकै सन्मुख जगवान् धर्मो पदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी ॥ जगवानकै ३००००० तीन लाख सर्व साधू ऊए ( जिसमें ) विदर्भ प्रमुख ९५ गणधर ऊए ॥ १५ ३०० वैकीयलद्वि धारक ऊए ॥ ९००० अवधि ज्ञानी ऊए ॥ ८१५० मनपर्यव ज्ञानी ऊए ॥ ११०० केवल ज्ञानी ऊए ॥ १०३० चवदै पूर्व धारी ऊए ॥ ८४०० वादी विरुद्ध धारक ऊए ॥ ४३०००० सोमा प्रमुख साधवी ऊई ॥ १५७००० श्रावक ऊए ॥ ४९३००० श्राविका ऊई ( इत्यादिक ) बहोतसे जीवोंका उद्धार करकै, अंतसमें, समेत शिखरजी पर्वतकै ऊपर, पांचसै ५०० साधुवोंकैसाथ, एक माशका अणसण ग्रहण कीया ॥ कान्तसग्ग मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्म खपायकै, मिति फाल्गुण वदी ७ के दिन, बीस लाख पूर्वका आयुष्य पूर्ण करकै, सिद्धि स्थानकुं प्राप्त ऊए ॥ सासन देव मातंगजह्वा । सासन देवी सांता । राक्षस गण । मृग योनी । तुल राशी । अंतर्काल ९ सो कोमी सागरोपम । सम्यक्त

पायेबाद, तीसरै जवमें मोक्ष गए ॥ ✽ ॥ इति ५५ बोल गर्जित श्री सुपा  
श्वनाथस्वामी अधिकार संपूर्ण ॥ ✽ ॥

॥ ५५ ॥ अथ ८ श्री चंद्राग्रभू स्वामी अधिकारः ॥ ५५ ॥

॥ ✽ ॥ चंद्रपुरी नामा नगरीमें, इक्ष्वाकवंशी, महसेन नामें राजा  
( जिसकै ) लक्ष्मणा नामें पट्टराणी । जिसकी कूखमें, जयंतनामें विमानसैं  
आयकै, मिति चैत्र कृष्ण ५ के दिन उत्पन्न जया । मातायें चवदैं स्वम देखा  
पीठे सर्व दिशा सुनिक्क समैं, मिति पोष वद १२ के दिन, अनुराधा नक्षत्रे  
जन्म कल्याणक जूवा ( तब ) महसेन राजायें, १० दिनकाउज्ज्व कर  
कै, चंद्रप्रन्न कुमार नाम दिया । चंद्रमाके लांठनयुक्त, स्वेतवर्ण, शरीर प्रमाण  
१५० धनुष, तीन ज्ञानयुक्त; महा तेजस्वी, १००८ लक्ष्णालंकृत, जोगा  
बली कर्म निर्जरार्थे, विवाह करके, क्रमसैं राज्यपद धारण कीया । अवसर  
आये, लोकांतिक देवताके वचनसैं, संवत्सर पर्यंत मोटो दान देके, मिति  
पोष वदी १३ के दिन, चंद्रपुरी नगरीमें, ठठ तप करके, नागवृक्षके नीचे,  
१००० पुरुषोंकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी ( उस बखत ) चौथो मनपर्यंत  
ज्ञान उत्पन्न जयो । प्रथम ठठको पारणो, सोमदत्तके घरे, परमान्न क्षीरसैं  
जुवो ॥ ३ माश ठठस्थपणें विहार करके, चंद्रपुरी नगरीमें आए ( वहां )  
ठठ तप संयुक्त, मिति फागुण वदि ४ के दिन, लोकालोक प्रकाशक, केवल  
ज्ञान उत्पन्न जया ( उस बखत ) चतुर्निकाय देवगणके किया जूवा, समव  
सरणमें बैठकें, १२ परपदाके सन्मुख, धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी  
स्थापना करी । जगवानके सर्व १५०००० साधु जए ( जिसमें ) ९३  
दिन प्रमुख गणधर जए ॥ १४००० बैक्रिय लब्धि धारक जए ॥ ८०००  
अवधि ज्ञानी जए ॥ ८००० मनपर्यंत ज्ञानी जए ॥ १०००० केवल  
ज्ञानी जए ॥ २००० चवदे पूर्वधारी जए ॥ ७६०० बादी विरुद्धारक जए ॥  
३०८००० सुमना प्रमुख साधवी जई ॥ १५०००० श्रावक जए ॥  
४७९००० श्राविका जई ( इत्यादिक ) वज्रतसे जीवोंका उद्धार करकें,  
अंतसमें समेतशिखरजी पर्वतके ऊपर, १००० साधुओंकेसाथ, १ माश  
का अणसण ग्रहण कीया । कान्तसंग मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसैं, सर्व  
कर्मकों खपायकै, मिति चाद्रवा वदि ७ के दिन, दश लाख पूर्वका आउला

पूरण करके, सिद्धिस्थानकों प्राप्त हुए ॥ शासनदेव विजय यक्ष । सासन  
देवी नृकुटी । देवगण । मृग योनि । वृश्चिक राशि । अंतरकाल ९० कोमी  
सागरोपम । सम्यक्त पाएवाद, तीसरे जन्ममें मोक्ष गए ॥ ❀ ॥

इति ८ मा श्री चंद्राप्रभु स्वामीका अधिकारः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ९ मा श्री सुविधनाथ स्वामी अधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काकंदी नगरीमें, इक्ष्वाकवंशी, सुग्रीवनाम राजा जुवा (तिसके)  
रामा नामें पट्टराणी । जिसकी कूखमें, आनत नामा देवविमानसें चक्के,  
मिति फागुण वदि ९ के दिन जगवान् उत्पन्न जया । तब मातायें १४  
स्वप्ना देखा (पीठे) सर्व दिशा सुनिद्रासमें, मिति मिगसर वद ५, मूलन  
क्षेत्रे जन्मकल्याणक जुवा (तब) सुग्रीव राजायें १० दिनपर्यंत जन्म  
महोत्सव करके, सर्व गोत्रियोंके सन्मुख, सुविधिकुमर नाम स्थापन किया ॥  
मगरमञ्जुका लंठनयुक्त, स्वेतवर्ण, शरीरप्रमाण १०० धनुष जुवा । तीन  
ज्ञानयुक्त, महातेजस्वी १००८ लक्ष्णालंकृत, जोगावली कर्म निर्जरार्थे  
विवाहकरके, क्रमसें राज्यपद धारण किया । अवसरआये । लोकांतिक  
देवताके वचनसें, संवत्सर पर्यंत मोटो दान देके, मिति मिगसरवदि ६ के  
दिन, काकंदी नगरीमें, ठठ तप करके, शालवृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंके  
साथ, दिक्षा ग्रहण करी (उसवखत) चोथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न जयो ।  
प्रथम ठठको पारणो, पुष्पदत्तकेघरे, परमानसें जुवो । ४ मास ठठस्थपणें  
विहार करके, फेर काकंदी नगरी आए (वहां) ठठ तप संयुक्त, मिति का  
निकशुद ३ केदिन, लोकालोक प्रकाशक केवलग्यान केवल दर्शन उत्पन्न जुवा  
(उसवखत) चतुर्निकाय देवगणका किया जुवा समवसरणमें, १२ परख  
दाके सन्मुख, जगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी ।  
जगवान्के १००००० सर्व साधु हुए (जिसमें) वराह प्रमुख ८८ गण  
धर हुए ॥ १३००० वैक्रियलब्धि धारक हुए ॥ ८४०० अवधिज्ञानीनए ॥  
७५०० मनपर्यवज्ञानीनए ॥ ७५०० केवल ज्ञानीनए ॥ १५०० चौदे  
पूर्वधारीनए ॥ ६००० वादीविरुद्ध धरनेवालेनए ॥ १२०००० वारुणीप्रमुख  
साधवी हुई ॥ १२९००० श्रावक हुए ॥ ४७१००० श्राविका हुई  
(इत्यादिक) ब्रजतसे जीवोंका उद्धार करके, कर्मशत्रुओंसे ओढायके,

अंतसमें समेतशिखरजी पर्वतके ऊपर, १००० साधुओंके साथ, १ माशका अणशण ग्रहण किया। काउसग्ग मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानतें, सबकमा कों खपायके, मिति ज्ञाद्रवा शुद्ध ए के दिन, १ लाख पूर्वका आउखा पूरण करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्ति जए ॥ शासनदेव अजितयक्ष। शासनदेवी सुतारिका। राक्षसगण। वानरयोनि। धनराशि। अंतरकाङ्क्ष ए कोम सा गरोपम। सम्यक्त पायेबाद, तीसरेजवमें मोक्षगण॥५५॥ इति५५ बोलगर्जित श्री सुविधिनाथस्वामी अधिकारः ॥ ए ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ १० श्री शीतलनाथ स्वामी अधिकारः ॥ ॥

॥ ॥ जदलपुर नगरीमें, इक्ष्वाकवंशी, दृढरथनामैं राजा जवा ( तिस के ) नंदा नामे पढराणी, जिसकी कूखमें, अच्युत नामैं देवलोकसैं चवके मिति वैशाखवदि ६ के दिन उत्पन्न जया ( तव ) मातायें १४ स्वमा देखा ( पीठे ) सर्वदिशा सुजिहसमें, मिति माघवदि १२ कों, पूर्वाषाढा नक्षत्रे, जन्मकल्याणक जवा ( तव ) ५६ दिश कुमरी, ६४ इंद्रोंके जन्ममहोत्सव कियेबाद, दृढरथ राजा, १० दिवशका महोत्सव करके, श्री शीतलकुमर नाम दिया ॥ श्री वज्रका लंठनयुक्त, कंचनवर्ण, शरीरप्रमाण ९० धनुष जवा। ३ ज्ञानसहित, महातेजस्वी, १००० लक्ष्णालंकृत, जोगावली कर्म निर्जरायें, विवाह करके, क्रमसैं राज्यपदकों धारन किया। अवसर आये लोकांतिक देवताके वचनसैं, संवत्सरपर्यंत मोटो दान देके, मिति माघवदि १२ के दिन, जदलपुर नगरमें, ठठतप करके, प्रियंगु वृक्षके नीचे १००० पुरुषोंकेसाथ दिक्का ग्रहण करी ( उसवखत ) चौथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न जयो। प्रथम ठठको पारणो, पुनर्जसुके घरे, परमान्नझीरझैं जउ। तीनमाश ठठस्थपणें विहार करके, फेर जदलपुर नगर आए ( वहां ) ठठ तप सहित, मिति पोषवदि १४ के दिन, लोकालोकप्रकाशक, केवलज्ञान उत्पन्न जया। ( उसवखत ) चतुर्निकाय देवगणका किया जवा, समवसरणमें बैठके, १२ परखदाके सन्मुख, जगवान् धर्मोपदेशदेके, चतुर्विधसंघकी स्थापना करी ॥ जगवान्के १००००० सर्व साधुजए ( जिसमें ) नंद प्रमुख ८१ गणधर जए ॥ १२००० वैक्रियलब्धि धारक जए ॥ ७२०० अवधि ज्ञानीजए ॥ ७५०० मनपयवेज्ञानीजए ॥ १४०० चवदे पूर्वधारीजए ॥ ५८००



वादीविरुद्धधारीजए ॥ १००००६ सुयशाप्रमुख साधवी ऊई ॥ १८९०८०  
 श्रावकजए ॥ ४५८००० श्राविकाजई ( इत्यादिक ) वज्रतसे जीवोंका  
 उद्धार करके, अंतसमें समेतशिखरजी परवतके ऊपर, १००० साधुवोंके  
 साथ, १ माशका अणशण ग्रहण किया ॥ कान्तसंग मुद्रायें, आत्मगुण  
 के ध्यानसें, सर्वकर्माँको खपायके, मिति वैशाखवदि १ केदिन, १ लाख  
 पूर्वको आयुपूरण करके, सिद्धिस्थानकों प्राप्तिजए ॥ शासनदेव ब्रह्मायक ।  
 शासनदेवी अशोका । मानवगण । नकुलयोनि । धनराशि । अंतरकाल १  
 कोटि सागरोपम, सम्यक्त पाएवाद, तीसरे जवमें मोक्षगए ( इनोंकीबखतमें )  
 हरिवंशकुलकी उत्पत्तिजई ( जिसमें ) वसुराजादि ऊवे है । इसका विस्तार  
 संबंध जैनसिद्धांतोंसें जाणना ॥ ❀ ॥ इति ५५ बोलगर्जित श्री शीतलनाथ  
 स्वामी अधिकारः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ११ मा श्री श्रेयांसनाथस्वामी अधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिंहपुरी नगरीमें, इक्ष्वाकवंशी, विष्णु नामें राजा ऊवा ( ति  
 सके ) विष्णु नामें पट्टराणी, जिसकी कूखमें, अच्युतनामा १२ मा देव  
 लोकसें चक्के, मिति ज्येष्ठ वदि १४ के दिन, जगवान् उत्पन्न ऊवा ( तब )  
 मातायें, गजादि अग्निशिखा पर्यंत, १४ स्वप्ना प्रगटपणें मुखमें प्रवेश कर्त्ता  
 देखा ( पीठे ) सर्व दिशा सुनिद्रसमें, मिति फागुन वदि १२ कों, श्रवणनक्ष  
 त्रे, जन्म कल्याणक ऊवा ( उसी बखत ) ५६ दिशकुमरी मिलके सूति  
 का महोत्सव किया ( और पीठे ) ६४ इंद्र, मेरु पर्वतपर जगवान्कों ले  
 जायके जन्म महोत्सव किया ( तिस पीठे ) विष्णु राजा १० दिवसपर्यंत  
 मोटो जन्म महोत्सव करके, सर्व न्याती गोती प्रजा गणकों, मनसा जोज  
 न करायके, सर्वके सन्मुख श्रेयांस कुमार नाम दिया ॥ नाम स्थापनका  
 यह हेतु हैं ( कि ) विष्णु राजाके महिलमें, देव अधिष्ठित १ सज्याथी ।  
 उस देवसध्यापर जो सूवे वेठे, तो अकस्मात् कोई उपद्रव ऊवे विगर रहै  
 नहीं ( जब ) जगवान् विष्णु माताके गर्भमें आये ( तब ) माताकों उस  
 देवसध्यापर, सोनेका मोहला उत्पन्न जया ( इस सेती ) विष्णु माता जब  
 देवसध्यापर सूती, तब देवता प्रसन्न होके, माताकी सेवामें हाजर जया ।  
 कोई तरहका उपद्रव नहिं हो सका ( इसवास्ते ) पितायें श्रेयांसकुमार

नाम दिया । गेंमेका लंठन युक्त, कंचन वर्ण, शरीर प्रमाण ८० धनुष ऊँचा ।  
 तीन ज्ञान सहित, महा तेजस्वी, १००८ लक्ष्णालंकृत, जोगावली कर्म  
 निर्जराथे, विवाह करके, क्रमसे राज्यपद धारण किया । अवसर आये, लो  
 कांतिक देवताके वचनसे । संवत्सर पर्यंत मोठो दान देके, मिति फाल्गुन  
 वदि १२ के दिन, सिंदहपुरी नगरीमें, ठठ तप करके, तिंडुक दृक्के नीचे,  
 १००० पुरुषोंके साथ दिक्षा ग्रहण करी । उस वखत चौथो मनपर्यव  
 ज्ञान उत्पन्न जयो । प्रथम ठठको पारणो, नंदरायके घरे, परमान्न क्षीरसे  
 ऊँचो ॥ दो मास ब्रह्मस्थपणें बिहार करके ( फेर ) सिंदहपुरी नगरीमें आए  
 वहां ठठ तप सहित, मिति माघ वदि ३ के दिन, लोकालोक प्रकाशक के  
 बल ग्यान उत्पन्न जया ( उस वखत ) चतुर्निकाय देवगणके किया जया  
 समवस्तरणमें, १२ परपदाके सन्मुख, जगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध  
 संघकी स्थापना करी ॥ जगवान्के ८४००० सर्व साधु ऊँच ( जिसमें )  
 कछप प्रमुख ७६ गणधर पद धारक जए ॥ ११००० वैक्रियलब्धि धार  
 क जए ॥ ६००० अवधिज्ञानी जए ॥ ६००० मनपर्यव ज्ञानी जए ॥  
 ६५०० केवल ज्ञानी जए ॥ १३०० चौदै पूर्वधारी जए ॥ ५०००  
 वादी विरुद्धधारक जए ॥ १०३००० साधवीर्यो जई ॥ २७८००० श्रावक  
 जए ॥ ४४८००० श्राविका जई ॥ इत्यादिक वज्रतसे जीवोंका उद्धार  
 करके, ( अंतसमें ) समेत सिखरजी पर्वत ऊपर, १००० साधुओंके साथ,  
 एक मासका अणसण ग्रहण किया ॥ काउसग्ग मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यान  
 से, सर्व कर्मकों खपायके, मिति श्रावण वदि ३ के दिन, ८४ लाख वरपका  
 आयुष्य पूरण करके, सिद्धि स्यानकों प्राप्त जए ॥ शासनदेव यक्षराज ।  
 शासनदेवी मानवी । देवगण । वानर योनी । मकर राशि । अंतरमान ५४  
 सागरोपम । सम्यक्त पाये बाद तीसरे जवमें मोह गए ॥ ❀ ॥  
 इति ५५ बोल गर्जित श्री श्रेयांस जिन अधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ( इन्नोंके वखतमें ) त्रिपृष्ठ नामें पहला वासुदेव, अचल नामें  
 बलदेव ऊँचा ( जिणोंमें ) अपना बैरी, अश्वघ्रीव प्रति वासुदेवकों मारके, ज  
 रत क्षेत्रके तीन खंभका राज करा ॥ ( और ) इन्नोंके समयमें, वैताढ्य पर्व  
 तसे, श्रीकंठ नामा विद्याधरके पुत्रन, पद्मोत्तर विद्याधरकी बेटीकों अप

हरण करके, अपना वहनोई राक्षसवंशी, लंकाका राजा, कीर्तिधवलके शर  
णमें गया ( तब ) कीर्तिधवलनें तीनसे जोजन प्रमाण, वानर द्वीप, उनके  
रहनेकों दिया । तिनके संतानोंमेंसें चित्र, विचित्र, विद्याधरोनें, विद्यासें बंद  
रका रूप बनाया, ( तब ) वानरद्वीपके रहनेसें, और वानरका रूप बनाने  
सें, वानरवंशी प्रसिद्ध हुये । तिनोंकी ओलादमें वाली, सुग्रीवादिक हुए हैं॥

॥ ❀ ॥ १२ मा श्री वासुपूज्यस्वामी अधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चंपापुरीनामा नगरीमें, इक्ष्वाकुवंशी, वसुपूज्यनामे राजा हुआ  
( उसके ) जयानामें पट्टराणी, जिसकी कूखमें, प्राणतनामा १० मा देवलो  
कसें चक्के, मिति ज्येष्ठसुदि ९ के दिन, जगवान् उत्पन्न हुये । तब  
मातायें, गजादि अग्निशिखापर्यंत, १४ स्वप्ना प्रगटपणें मुखमें प्रवेश  
कर्ते देखे । पीठे सर्व दिशा सुनिक्षसमें, मिति फाल्गुनवदि १४, शतजि  
षानक्षत्रे, जन्मकल्याणक हुआ ( उसीवखत ) ५६ दिशाकुमारीयों मिलके  
सूतिकामहोत्सव कीया ( पीठे ) ६४ इंद्र मेरुपर्वतपर जगवानकों लेजाय  
के जन्ममहोत्सव कीया ( तिस पीठे ) वसुपूज्य राजायें, १० दिनपर्यंत,  
मोठो जन्म महोत्सव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकुं मनसानोजन क  
रायके, वासुपूज्य कुमरनाम स्थापन किया ( नाम स्थापनका यह हेतु है )  
वासवनाम इंद्र, जब जगवान् माताके गर्भमें आये, तब इंद्रनें जगवान्की  
माताकों बारंवार पूज्या । इस्सें वासुपूज्यनाम ( अथवा ) वसुकहिये रत्न  
वासव कहिये वैश्रमण, जब जगवान गर्भमें आये । तब वैश्रमण देवनें  
राजाके घरमें बारंवार रत्नांकी वर्षा करी, इत्यादि कारणोंसें, वासुपूज्य नाम  
दिया । पामेका लंठनयुक्त, लालवर्ण, शरीरप्रमाण ७० धनुष हुआ । तीन  
ज्ञानसहित, महातेजस्वी, १००८ लक्ष्णालंकृत, जोगावलीकर्म निर्जरार्थें  
विवाह किया । अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें, कुमारावस्थामें  
संवत्सरपर्यंत मोठो दान देके, फाल्गुन सुदि १५ के दिन, चंपानगरीमें,  
ठठप करके, पामलवृक्षके नीचे, ६०० पुरुषोंके साथ, दीक्षा ग्रहण करी ।  
उसवखत चौथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न जयो । प्रथम ठठको पारणो सुनंदके  
घरे, परमान्नक्षीरसें हुआ । १ मास ठठस्थपणें विहार करके, फेर चंपान  
गरीमें आये । वहां ठठतप सहित, मिति माघसुदि २ के दिन, लोकालोक

प्रकाशक, केवलज्ञान केवलदर्शन उत्पन्न हुआ, तब चतुर्निकाय देवगणका की या हुआ समोसरणमें, १२ पर्पदाके सन्मुख, जगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी । जगवान्के ७२००० सर्व साधु हुये (जिसमें) सुज्जम प्रमुख ६६ गणधर पदधारक हुये ॥ धारणी प्रमुख १००००० साधवियों हुई ॥ १०००० वैक्रियलब्धि धारक हुये ॥ ५४०० अवधि ज्ञानीजये ॥ ६००० केवल ज्ञानीजये ॥ ६५०० मनपर्यव ज्ञानीजये ॥ १२०० चवदे पूर्वधारीजये ॥ ४७०० वादी विरुद्धधारीजये ॥ २१५००० श्रावक हुये ॥ ४२६००० श्राविका हुई (इत्यादिक) वहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें चंपानगरीमें, ६०० साधुवोंकेसाथ, १ मासका अनशन ग्रहण कीया । कान्तसंग मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसे, सर्व कर्मकों खपायके, आषाढसुदि १४ के दिन, ७७००००० वर्षको आयुष्य पूरण करके । सिद्धि स्थानकों प्राप्ति जये । शासनदेव कुमारयक्ष । शासनदेवी चंमा । राक्षसगण अश्वयोनी । कुंजराशि । अंतरमान ३० सागरोपम । सम्यक्तपायेवाद तीसरे जन्ममें मोक्ष गये । इनोके वखतमें दूसरा विप्रेनामा वासुदेव (अरु) अचल नामें चलदेव हुआ । इनका बेरी, तारक नामें दूसरा प्रतिवासुदेव हुआ । इति ५५ बोलगर्जित श्री वासुपूज्यस्वामी अधिकारः ॥ १२ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १३ मा विमलनाथस्वामी अधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कपिलपुरी नगरीमें, इक्ष्वाकुवंशी, रुतवर्मनामें राजा हुआ (ति सके) श्यामानामें पहराणी । जिसकी कूखमें, सहस्रारनामें ७ मा देवलोक सें चवके, मिति वैशाखसुदि १२ के दिन जगवान् उत्पन्न हुये, तब मातायें गजादि अग्निशिखापर्यंत १४ स्वप्ना, प्रगटपणें मुखमें प्रवेशकर्ता देखा पीठे सर्व दिशा सुजिह्वसमें, मिति माघसुदि ३ के दिन, उत्तराज्जाद्रपद नक्षत्रे जन्मकल्याणक हुआ (उसीवखत) ५६ दिशा कुमारीयों मिलके, सूतिका महोत्सव किया पीठे ६४ इंद्र मिलके, मेरु पर्वतपर, जगवान्को लेजायके, जन्म महोत्सव कीया । तिस पीठे रुतवर्म राजायें, १० दिवस पर्यंत, मोटो जन्म महोत्सव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकुं मनसा नोजन करायके, विमल कुमार नाम स्थापन किया । (नाम स्थापनका यह हेतु है) कि जब जगवान् माताके गर्भमें आये । तब माताकी बुद्धि, अरु शरीर, दोनों निर्मल

हो गये (इससे) विमल कुमार नाम स्थापन किया । वाराहका लंछनयुक्त, कंचनवर्ण, शरीर प्रमाण ६० धनुष ऊँचा । ३ ज्ञान सहित, महा तेजस्वी, १००८ लक्षणांलंकृत, जोगावली कर्म निर्जरायें, विवाह करके, क्रमसे राजपद धारण किया । अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसे, संवत्सर पर्यंत वनो दान देके, मिति माघ सुदि ४ के दिन, कंपिलपुर नामा नगरमें, ठठ तप करके, जंबू वृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंके साथ, दीक्षा ग्रहण करी । उस वखत चौथो मन पर्यव ज्ञान उत्पन्न ज्यो । प्रथम ठठको पारणो, जय राजाके घरे, परमान्न क्षीरसें ऊँचो । दो मास ठठस्थपणें विहार करके, कंपिलपुरी नगरीमें आये । ठठ तप सहित, पोषसुदि ६ के दिन, लोकालोक प्रकाशक, केवल ज्ञान, केवल दर्शन उत्पन्न ऊँचा । (तब) चतुर्नि काय देवगणका किया ऊँचा, समोसरणमें, १२ परषदाके सन्मुख, जगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी ॥ जगवान्के ६८००० सर्व साधु ऊँचे ( जिसमें ) मंदर प्रमुख ५७ गणधर पद धारक ऊँचे ॥ धरा प्रमुख १००८०० सर्व साध्वी ऊँई ॥ १००० वैक्रिय लब्धि धारक ऊँचे ॥ ३६०० वादी विरुद्ध धारक ऊँचे ॥ ४८०० अवधिज्ञानी ऊँचे ॥ ५५०० मनपर्यव ज्ञानी ऊँचे ॥ ५५०० केवल ज्ञानी ऊँचे ॥ १२०० चव दे पूर्वधारी ऊँचे ॥ २०८००० श्रावक ऊँचे ॥ ४२४००० श्राविका ऊँई ( इत्यादिक ) वज्रतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें, समेत शिखरजी पर्वत ऊपर, ६०० साधुओंके साथ, १ मासका अनशन ग्रहण किया कान्तसंग मुद्रायें, आत्म गुणके ग्यानसें, सर्व कर्मकों खपायके, मिति आषाढ वदि ७ के दिन, ६०००००० वर्षको आयुष्य पूरन करके, सिद्धि स्थान कों प्राप्ति ज्ये । शासन देव षन्मुख यक्ष । शासन देवी विदिता । मानवगण गगयोनि । मीन राशि । अंतर्मान ए सागरोपम, सम्यक्त पायेवाद तीसरे जव मोक्ष गये ॥ इनोके वारे तीसरा स्वयंभू वासुदेव, अरुनद्र नामा बलदेव तथा मेरक नामा प्रति वासुदेव ऊँचा ॥ ❀ ॥ इति ५५ बोल गर्जित श्री विमल स्वामी अधिकारः संपूर्णम् ॥ १३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथ १४ मा श्री अनंतनाथ स्वामी अधिकारः ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अयोध्या नगरीमें, इक्ष्वाकवंशी, सिंहसेन नामें राजा ऊँचा

तिसके सुयशा नामें पट्टराणी । जिसकी कूखमें, प्राणत नामा, देवलोक  
 सें चबके, मिति श्रावण वदि ७ के दिन, जगवान् उत्पन्न हुआ । तब  
 मातायें गजादि अग्नि शिखापर्यंत, १४ स्वप्ना प्रगटपणें मुखमें प्रवेश कर्ता  
 देखा ( पीठे ) सर्व दिशा सुजिह्वसमें, मिति वैशाख वदि १३ के दिन,  
 रेवती नक्षत्रे, जन्म कल्याणक हुआ ( उसी वखत ) ५६ दिशा कुमारीयों  
 मिलके, सूतिका महोत्सव किया ( पीठे ) ६४ इंद्र मेरु पर्वतपर जगवान्  
 कों ले जायके, जन्म महोत्सव कीया ( तिस पीठे ) सिंहसेन राजायें १०  
 दिवसपर्यंत मोठो जन्म महोत्सव करके, सर्व न्याती गेती प्रजागणकों मनसा  
 भोजन करायके, सर्वके सन्मुख, अनंतनाथ नाम स्थापन कीया ( नाम स्थाप  
 नका यह हेतु हे ) कि जगवान् गर्भमें आये, तब स्तनजमित चित्र विचित्र  
 मोठी दाममाला, स्वप्नमें मातायें देखी । तिस कारणसें, अनंतनाथ नाम स्थापन  
 किया सीचाणें कालंठनयुक्त, कंचनवर्ण, शरीर प्रमाण ५० धनुष हुआ । तीन  
 ज्ञान सहित, महा तेजस्वी, १००० लक्ष्णालंकृत, जोगावली कर्म निर्ज  
 रार्थें विवाह कीया, क्रमसें राज्यपद धारन कीया । अबसर आये, लोकांतिक  
 देवताके वचनसें, संवत्सरपर्यंत मोठो दान देके, वैशाख वदि १४ के दिन,  
 अयोध्या नगरीमें, ठठ तप करके, अशोक वृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंके  
 साथ दीक्षा ग्रहण करी । उस वखत चोथो मनपर्यंत ज्ञान उत्पन्न जयो ।  
 प्रथम ठठकों पारणो, विजय राजाके घरे परमान्न क्षीरसें हुआ ॥ ३ वर्ष ठठ  
 स्थपणें बिहार करके, अयोध्या नगरीमें आये । वहां ठठ तप सहित, वैशाख  
 वदि १४ के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ । उस वख  
 त चतुर्निकाय देवगणका कीया हुआ समोसरणमें १२ परपदाके सन्मुख,  
 जगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी । जगवान् के  
 ६६००० सर्व साधु ज्ये ( जिसमें ) जस प्रमुख ५० गणधर पद धारक  
 जये । पद्मा प्रमुख ६२००० सर्व साध्वी हुई । ८००० वैक्रिय लब्धि धारक  
 जये ॥ ३२०० वादीबिहद धारक जये ॥ ४३०० अवधिज्ञानी जये ५०००  
 मनपर्यंतज्ञानी जये ॥ ५०० केवलज्ञानी जये ॥ १००० चवदे पूर्वधारी जये ॥  
 २०६००० श्रावक जये ॥ ४१४००० श्राविका जये ( इत्यादिक ) वज्र  
 तसे जीवोंका उधार करके, अंतसमें, समेत शिखरजी पर्वतपर, ७०० साधु

वोंकेसाथ १ मासका अनशन ग्रहण कीया । काठसगमुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्वकर्मोंकं खपायके, मिति चैत्रसुदि ५ के दिन, ३०००००० वर्षको आयुष्य पूरन करके, सिद्धिस्थानकों प्राप्ति जये ॥ शासनदेव पाताल यक्ष । शासनदेवी अंकुशा । देवगण । हस्तियोनि । मीनराशि । अंतर्मान ४ सागरोपम । सम्यक्तपायेवाद तीसरेजन्ममें मोक्षगये ॥ इन्नोंकेवारे, चोथा पुरुषोत्तमनामा वासुदेव ( अरु ) सुप्रभनामा बलदेव ( तथा ) मधुकैटभनामा प्रतिवासुदेव हुआ ॥ इति ५५ बोलगर्जित श्री अनंतनाथस्वामी अधिकारः ॥

॥ ❀ ॥ अथ १५ मा श्री धर्मनाथस्वामी अधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रत्नपुरीनामा नगरीमें, इक्ष्वाकुवंशी, जानुनामें राजा हुआ ( तिस के ) सुव्रतानामें पट्टराणी । जिसकी कूखमें, विजयनामा अनुत्तर विमानसें चबके, मिति वैशाखसुदि ७ के दिन, जगवान् उत्पन्न हुआ । तब मातायें गजादि अग्निशिखापर्यंत १४ स्वप्ना प्रगटपणें मुखमें प्रवेशकर्ता देखा ( पीठे ) सर्व दिशा सुजिह्वसमें, मिति माघसुदि ३ के दिन, पुष्पनक्षत्रे, जन्मकल्याणक हुआ ॥ उसीवखत ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूतिका महोत्सव कीया ( पीठे ) ६४ इंद्र मेरुपर्वतपर जगवानकों लेजायके जन्म महोत्सव कीया । तिस पीठे जानुराजायें, १० दिवसपर्यंत बन्ने जन्ममहोत्सव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों, मनसा भोजन करायके, सर्वके सन्मुख, श्री धर्मनाथ नाम स्थापन किया ॥ नाम स्थापनाका यह हेतु है । कि परमेश्वरके गर्भमें आनेसें, माता दानादिक धर्ममें तत्पर नई ( इससें ) धर्मकुमार नामस्थापन कीया । वज्रका लांछन युक्त, कंचनवर्ण, शरीरप्रमाण ४५ धनुष हुआ । तीन ज्ञानसहित, महातेजस्वी, १००८ लक्ष्णालंकृत, भोगावली कर्मनिर्जरार्थे विवाह करके, क्रमसें राज्यपद धारन कीया । अवसर आये लोकांतिक देवताके वचनसें, संवत्सर पर्यंत मोटो दान देके, मिति माघसुदि १३ के दिन, रत्नपुरीनगरीमें, ठठप करके, दधिपर्णनामा वृद्धके नीचे, १००० पुरुषोंकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी उसवखत चोथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न जयो । प्रथम ठठकोपारणो, धन सिंहके घरे, परमानन्दक्षीरसें हुआ । दो वर्ष ठठस्थपणें विहार करके, रत्नपुरी नगरीमें आये । ठठप सहित, पोषसुद १५ के दिन, लोकालोक प्रकाशक,

केवल ज्ञान, केवल दर्शन उत्पन्न हुआ (उत्पन्न) चतुर्निकाय देवगणका कीया  
 हुआ समोसरणमें, १२ परपदाके सन्मुख, जगवान् धर्मोपदेश देके, चतु  
 विंध संघकी स्थापना करी। जगवान्के ६४००० सर्व साधु हुए ( जिस  
 में ) अरिष्ट प्रमुख ४३ गणधर हुए ॥ आर्यशिवा प्रमुख ६२४०० सर्व  
 साधवीर्यो हुई ॥ ७००० वैक्रिय लब्धि धारक हुए ॥ १८०० वादी विरुद्ध  
 धारक हुए ॥ ३६०० अवधि ज्ञानी हुए ॥ ४५०० केवल ज्ञानी हुए ॥  
 ९०० चवदे पूर्वधारी हुए ॥ २०४००० श्रावक हुआ ॥ ४१३००० आ  
 विका हुई ( इत्यादिक ) वज्रतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें, समेत  
 शिखरजी पर्वतपर, १०८ साधुओंके साथ, १ मासका अनशन ग्रहण कीया  
 कान्तसंग मुद्राई, आत्मगुणके ध्यानसे, सर्व कर्मोंकुं खपायके, मिति ज्येष्ठ  
 सुदि ५ के दिन, १० लाख वर्षको आयुष्य पूरन करके, सिद्धिस्थानकों  
 प्राप्त जये ॥ शासनदेव किन्नर यक्ष। शासन देवी कंदर्पा। देवगण। मंज  
 र योनी। कर्कराशि। अंतरमान ३ सागरोपम। सम्यक्तपायेवाद तीसरेजन्ममें  
 मोक्ष गये ॥ ( इनोकेवारे ) ५ मा पुरुष सिंहनामा वासुदेव ( अरु ) सुदर्शन  
 नामा बलदेव ( तथा ) निशुंज नामा प्रति वासुदेव हुआ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ इति ५५ बोल गर्जित श्री धर्मनाथाधिकारः ॥ ॥

॥ ॥ १५ मा श्री धर्मनाथ स्वामीके पीठे, अरु १६ मा श्री शान्तिना  
 थ स्वामीके पहिले, तीसरा मधवा नामा चक्रवर्ति ( और ) चोथा सनत्कु  
 मार नामा चक्रवर्ति हुआ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ १६ मा शान्तिनाथ स्वामी अधिकारः ॥ ॥

॥ ॥ हस्तनापुर नामा नगरमें, इक्ष्वाकुवंशी, विश्वसेन नामें राजा  
 हुआ ( तिसके ) अचिरा नामें पट्टराणी, जिसकी कूखमें, सर्वार्थसिद्ध ना  
 मा देवलोकसें चवके, मिति ज्ञाद्रवा बदि ७ के दिन, जगवान् उत्पन्न जये। तब  
 मातायें, गजादि अग्निशिक्षापर्यंत, १४ स्वप्ना प्रगटपणें मुखमें प्रवेश कर्त्ता  
 देखा ( पीठे ) सर्व दिशा सुनिहसमें, ज्येष्ठ बदि १३ के दिन, जरणी नक्ष  
 त्रे, जन्म कल्याणक हुआ ॥ उसीवखत ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूति  
 का महोत्सव कोया। ( पीठे ) ६४ इंद्र मेरु पर्वतपर, जगवान्को ले जायके,  
 जन्म महोत्सव कीया ( तिस पीठे ) विश्वसेन राजायें १० दिवसपर्यंत, मोटो



जन्म महोत्सव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों मनसा जोजन करायके, सर्वके सन्मुख शांतिकुमर नाम स्थापन कीया ॥ नाम स्थापनका यह हेतु है, कि गर्भमे जगवान्के उत्पन्न होनेसे, पूर्व जो मरीआदिक रोगोपद्रव वज्रतथा, वो शांति हो गया ( इस कारणसे ) शांति कुमर नाम दिया । हिरणका लांठनयुक्त, कंचनवर्ण, शरीरप्रमाण ४० धनुष ऊँचा । ३ ज्ञान सहित, महातेजस्वी, १००८ लक्षणांलंकृत, जोगावलीकर्म निर्जरार्थे, चक्र वर्तिपद धारण करके, ६४ हज़ार स्त्रियाँको परणया ( पीठे ) अवसर आये लोकांतिक देवताके वचनसे, मिति ज्येष्ठवदि १४ केदिन, हस्तनापुर नगरमें, ठठतप करके नंदीवृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी (उसवखत) चोथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न ऊँचो । प्रथम ठठको पारणो, सुमित्रके घरे परमान्नक्षीरसें ऊँचो । १ वर्ष ठठस्थपणें विहार करके, फिर हस्तनापुर नगरमें आये । वहां ठठतप सहित, पोषसुदि ए के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवल ज्ञानकेवल दर्शन उत्पन्न ऊँचा ( उसवखत ) चतुर्निकाय देवगण का कीया ऊँचा समोसरणमें, १२ परषदाके सन्मुख, जगवान् धर्मोपदेश देके चतुर्विध संघकी स्थापना करी । जगवान्के ६२ हज़ार सर्व साधु ऊँचे ( जिसमें ) चक्रायुध प्रमुख ३६ गणधर पदधारक ऊँचे ॥ सुचिप्रमुख ६१६०० साधवीयों ऊँई ॥ ६००० वैक्रिय लब्धिवंत जये ॥ २४०० वादी विरुद धारक जये ॥ ३००० अवधि ज्ञानीजये ॥ ४००० मनपर्यव ज्ञानी जये ॥ ४०० केवल ज्ञानी जये ॥ ८०० चवदे पूर्वधारी ऊँचे ॥ १ लाख १९ हज़ार श्रावक ऊँचा ॥ २ लाख ९३ हज़ार श्राविका ऊँई ॥ ( इत्यादिक ) वज्रतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें समेत शिखरजीपर वतपर, ९०० साधुओंकेसाथ, १ मासका अणशन ग्रहण कीया । कान्त गग मुद्राई आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्माँकों खपायके, मिति ज्येष्ठ वदि १३ के दिन, १ लाख वर्षको आयुष्य पूरण करके, सिद्धिस्थानकों प्राप्त जये । शाशनदेव गरुड यक्ष । शासनदेवी निर्वाणी । मानव गण । हस्ति योनी । मेष राशि । अंतरमान अर्द्धपटपोपम । सस्यक्त पायेवाद १२ मे जवमें मोक्ष गये ॥ ❀ ॥ इति ५५ बोल गर्जित ५ मा चक्रवर्त, १६ मा श्रीशांतिनाथ स्वामी अधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ✽ ॥ अथ १७ मा श्री कुंथुनाथ स्वामी अधिकारः ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ गजपुर नामा नगरमें, इक्ष्वाकुवंशी, सूरनामा राजा ऊवा ( ति सके ) श्री नामा पट्टराणी । जिसकी कूखमें, सर्वार्थ सिद्धि नामा देवलोकसें चबके, मिति श्रावण वदि ए के दिन, जगवान् उत्पन्न जये । तब मातायें, ग जादि अग्नि शिखापर्यंत, १४ स्वप्ना प्रगटपणें मुखमें प्रवेश कर्त्ता देखा ( पीठे ) सर्व दिशा सुनिद्ध समें, वैशाख वदि १४ के दिन, रुतिका नक्षत्रे, जन्म कल्याणक ऊवा । उसी वखत ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूतिका महोत्सव कीया ( पीठे ) ६४ इंद्र मेरुपर्वतपर जगवानकों ले जायके जन्म महोत्सव कीया ( तिस पीठे ) विश्वसेन राजायें १० दिवस पर्यंत, मोटो जन्म महोत्सव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों मनसा जोजन करायके, सर्व के सन्मुख, श्री कुंथु कुमार नाम स्थापन कीया ॥ नाम स्थापनका यह हेतु है कि जगवान् गर्भमें आया, तब माता रत्नमई कुंथुवोंकी राशि देखती नई । इससें, कुंथु कुमार नाम दिया ॥ वकरांका लंठनयुक्त, कनकवर्ण, शरीर प्रमाण ३५ धनुष ऊवा । ३ ज्ञानसहित, महा तेजस्वी, १००८ लक्ष्णालंखित जोगावली कर्मनिर्जरार्थे, चक्रवर्त्ति पद धारण करके, ६४ हज़ार स्त्रियांकों परणया ( पीठे ) अवसर आयें लोकांतिक देवताके वचनसें, मिति चैत्रवदि ५ के दिन, हस्तनापुर नगरमें, ठठप करके, नीलक वृद्धके नीचे १०० पुरुषोंकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी ( उत्सवखत ) चौथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न जयो । प्रथम ठठको पारणो, व्याघ्रसिंघके घरे, परमानन्दकीसें ऊवो । १६ वर्ष ठठस्यपणें विहार करके, फिर हस्तनापुर नगरमें आयें । वहां ठठप सहित, चैत्रसुदि ३ के दिन लोकांलोक प्रकाशक केवल ज्ञान उत्पन्न ऊआ ( उत्सवखत ) चतुर्निकाय देवगणका कीया जया समोसरणमें १२ परपदाके सन्मुख जगवान् धर्मोपदेश देके चतुर्विध संघकी स्थापना करी ॥ जगवानके ६० हज़ार सर्व साधु जये ( जिसमें ) सांव प्रमुख ३५ गणधर पदधारक जये ॥ दामिनी प्रमुख ६०६०० साध्वी ऊई ॥ ५००० वैकि यलब्धिवंत जये ॥ २००० वादीविरुद्धपद धारक जये ॥ २५०० अवधि ज्ञानी जये ॥ ३३४० मनपर्यव ज्ञानीजये ॥ ३२०० केवल ज्ञानीजये ॥ ६०० चवदे पूर्वधारीजये ॥ १ लाख ७९ हज़ार श्रावक ऊआ ॥ ३ लाख ८१

हजार श्राविका हुई ( इत्यादिक ) वज्रतसे जीवोंका उद्धार करके, अंत  
समें समेतशिखरजी पर्वतऊपर, १००० साधुओंकेसाथ, १ मासका अनशन  
कीया । कान्तसंग मुद्राई, आत्मगुणके ध्यानसे, सर्वकर्मोंकुं खपायके, मिति  
वैशाखवदि १ के दिन, ६५ हजार वर्षको आयुष्य पूरण करके सिद्धि  
स्थानकों प्राप्ति जये । शासनदेव गंधर्वयक्ष । शासनदेवी वला । ढागयोनी ।  
वृषराशि । अंतरमान पावपल्योपम । सम्यक्त पायेवाद तीसरेजन्ममें मोक्षगये॥  
॥ इति ५५ बोलगर्जित ६ वा चक्रवर्त्ति, १७ मा श्री कुंथुनाथ स्वामीका  
अधिकार संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १७ मा श्री अरनाथस्वामी अधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गजपुरनामा नगरमें, इक्ष्वाकुवंशी, सुदर्शनाम राजा हुआ ( तिस  
के ) देवीनामें पट्टराणी हुई । जिसकी कूखमें सर्वार्थसिद्ध नामा देवलोक  
सें चवके, मिति फागणसुदि ९ के दिन जगवान् उत्पन्न जये । तब मातायें  
गजादि अग्निसिखापर्यंत १४ स्वप्ना प्रगटपणें मुखमें प्रवेशकर्त्ता देखा । पीठे  
सर्व दिशा सुनिद्रसमें, मिगसर सुद १० के दिन, रेवतीनक्षत्रे जन्मकल्या  
एक हुआ । उसीवखत ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूतिका महोत्सव कीया  
पीठे ६४ इंद्र मेरुपर्वतपर जगवान्कों लेजायके जन्ममहोत्सव कीया । तिस  
पीठे सुदर्शनराजायें १० दिवसपर्यंत मोटो जन्ममहोत्सव करके, सर्व न्याती  
गोती प्रजागणों मनसान्नोजन करायके, सर्वके सन्मुख, श्री अरनाथ कुमार  
नाम स्थापन कीया । नाम स्थापनाका यह हेतु है, कि जगवान् जब गर्भमें  
स्थित हुआ, तब मातायें स्वप्नमें, सर्व रत्नमई अरदेख्या (इसकारणसें) अरकुमार  
नाम दीया । नंद्यावर्त्तका लंठनयुक्त, कनकवर्ण, शरीरप्रमाण ३० धनुष हुआ ।  
३ ज्ञानसहित, महातेजस्वी, १००८ लक्ष्णालंकृत, जोगावली कर्म निर्ज  
रार्थ, चक्रवर्त्ति पदधारण करके, ६४ हजार स्त्रियांकोंपरण्या (पीठे) अवसर  
आये लोकांतिक देवताके वचनसें, मिति मिगसरसुदि ११ के दिन, हस्त  
नापुर नगरमें, ठठतप करके, आंवाका वृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंकेसाथ  
दीक्षा ग्रहण करी ( उसवखत ) चौथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न जयो । प्रथम  
ठठकोपारणो, अपराजितके घरे परमान्नक्षीरसें हुआ । तीनवर्ष ठठस्थपणें  
बिहार करके, फिर हस्तनापुरमें आये । वहां ठठतप सहित, कार्तिकसुदि

१२ के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ ( उसवखत )  
चतुर्निकाय देवगणका कीया हुआ समोसरणमें १२ पखिदाके सन्मुख,  
जगवान् धर्मोपदेश देके चतुर्विध संघकी स्थापना करी । जगवान्के ५०  
हज़ार सर्व साधुजये ( जिसमें ) कुंज प्रमुख ३३ गणधर पदधारक जये ।  
रक्षिता प्रमुख ६० हज़ार साध्वी हुई । ७३०० वैक्रिय लब्धिबन्त जये ॥  
१६०० वादी विरुदपद धारकजये ॥ २५०० अवधि ज्ञानीजये ॥ २५५१  
मनपर्यव ज्ञानीजये ॥ २८०० केवल ज्ञानीजये ॥ ६१० चवदे पूर्वधारी  
जये ॥ १ लाख ८४ हज़ार श्रावक जये । ३ लाख ७२००० श्राविका  
हुई ( इत्यादिक ) वज्रतसे जीवोंका उधार करके, अंतसमें समेत शिखर  
जी पर्वतपर, १००० साधुवोंकेसाथ, १ मासका अनशनकीया । कानसगग  
मुद्राई, आत्मगुणके ध्यानसे, सर्व कर्माकों खपायके, मिति मिगसरसुदि १०  
के दिन, ८४००० वर्षको आयुष्यमान पूरा करके, सिद्धिस्थानकों प्राप्ति  
जये । शासनदेव यक्षराज । शासनदेवी धारणी । देवगण । हस्तियोनी ।  
मीनराशि । अंतरमान १ हज़ार कोमवर्ष । सम्यक्त पायेवाद तीसरे जन्ममें  
मोक्ष गये ॥ इहां १८ मा, तथा १९ मा, तीर्थ्यकरके बीचमें, ६ वा पुरुष  
पुंमरीक वासुदेव, तथा आनंदनामा बलदेव, बलिनामा प्रतिवासुदेव जये  
इस पीठे ८ मा सुज्जमनामें चक्रवर्त्ति हुआ । इस पीठे, दत्तनामा ७ मा वासु  
देव, तथा नंदनामा बलदेव, और प्रल्हादनामा प्रतिवासुदेव जये ॥ इति ५५  
बोलगर्जित ७ मा चक्रवर्त्ति, १८ मा श्री अरनाथ स्वामीका अधिकार सं०  
॥ ❀ ॥ अथ १९ मा श्री मल्लिनाथस्वामी अधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मथुरा नामा नगरीमें, इन्द्राकुवंशी, कुंजनामें राजा हुआ । तिसके  
प्रजावतीनामें पट्टराणी हुई । जिसकी कूखमें, जयंत विमानथी चवके,  
मिति फागुण सुदि ४ के दिन, जगवान् उत्पन्न जये । तब मातायें, गजादि  
अग्निशिखापर्यंत, १४ स्वप्ना प्रगटपणें मुखमें प्रवेशकर्त्ता हुआ देखा ( पीठे )  
सर्व दिशा सुज्जिह्वसमें, मिगसर सुदि ११ के दिन, अश्विनीनक्षत्रे जन्म  
कल्याणक हुआ । उसीवखत ५६ दिशा कुमारीयां मिलके सूतिका महोत्सव  
कीया । पीठे ६४ इंद्र, मेरुपर्वतपर जगवान्को लेजायके, जन्ममहोत्सव  
कीया ( तिस पीठे ) सुदर्शनराजायें १० दिवसपर्यंत मोटो जन्ममहोत्सव

करके, सर्व न्याती गौती प्रजागणकों मनसा भोजन करायके, सर्वके सन्मुख श्री मल्लिकुमर नाम स्थापन कीया ( नाम स्थापनका यह हेतु है ) कि भगवान् जब गर्भमें आया तब भगवान्की माताकों सुगंधवाले फूल मालाकी सय्याऊपर, सोनेका दोहद उत्पन्न जया । सो देवतानें पूरण कीया ( इस कारणसे ) मल्लिकुमर नाम दीया । कलशका लंछनयुक्त, नीलवर्ण, शरीर प्रमाण १५ धनुष ऊँचा । ३ ज्ञानसहित, महातेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, विवाह कियेविगर, कुमार अवस्थामें रया ( पीठे ) अवसर आये लोकांतिक देवताके वचनसे, मिति मिगसरसुदि ११ के दिन, मथुरा नगरीमें, ठठतप करके, अशोकवृक्षके नीचे, ३०० पुरुषोंकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी ( नसवखत ) चौथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न जयो । प्रथम ठठको पारणो, विश्वसेनकेघरे, परमानक्षीरसें ऊँचो । किंचित्काल ठठस्थपणें रहके, फिर उसीदिन मथुरानगरीमें । ठठ तपसहित, मिगसर सुदि ११ के दिन लोकालो क प्रकाशक केवलज्ञान उत्पन्न ऊँचा ( नसवखत ) चतुर्निकाय देवगणका कीया ऊँचा समोसरणमें ११ परिषदाके सन्मुख भगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विधसंघकी स्थापना करी । भगवान्के ४० हज़ार सर्व साधु जये । ( जिसमें ) अग्निहक प्रमुख १८ गणधर पदधारक ऊँचे ॥ बंधुमती प्रमुख ५५ हज़ार सर्व साध्वी ऊँई ॥ १५०० वेक्रियलब्धिवंत जये ॥ १४०० वादी विरुद्ध धारक जये ॥ ११०० अवधिज्ञानी जये ॥ १७५० मनपर्यव ज्ञानी जये ॥ ११०० केवलज्ञानी जये ॥ ६६८ चवदे पूर्वधारी ऊँचे ॥ १ लाख ८३ हज़ार श्रावक जये ॥ ३७०००० श्राविका ऊँई, इत्यादिक वज्रतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें समेतसिखरजी पर्वतऊपर, ५०० साधुओंकेसाथ १ मासका अनशन कीया । कानुसग्ग मुद्राई, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्वकर्माकों खपायके, मिति फागुणसुदि ११ के दिन, ५५ हज़ार वर्षको आयुष्यमान पूरा करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्ति जये । शासनदेव कुबेरयक्ष । शासनदेवी धरणीप्रिया । देवगण । अश्वयोनि । मेषराशि । अंतर मान ५४००००० वर्ष, सम्यक्तपायेवाद तीसरे जवमें मोक्ष गया ॥ ❀ ॥ ॥ इति १५ मा श्री मल्लिनाथस्वामी अधिकारः १५ ॥ ❀ ॥

॥५॥ अथ १० मा श्री मुनिसुव्रतस्वामी अधिकारः ॥५॥

॥ ✽ ॥ राजगृही नामा नगरीमें, हरिवंशी, सुमित्र नामें राजा ऊवा (तिसके) पद्मावती नामें पद्मराणी नई । जिसकी कूखमें, अपराजित नामा अनुत्तर विमानसें चक्के, मिति श्रावण सुदि १५ के दिन, जगवान् उत्पन्न जया । तब मातायें गजादि अग्नि शिखापर्यंत, १४ स्वप्ना प्रगटणें मुखमें प्रवेश कर्ता ऊवा देखा, पीठे सर्व दिशा सुनिक्षसमें, ज्येष्ठ वदि ८ के दिन, श्रावण नक्षत्रे, जन्म कल्याणक ऊवा ( उस वखत ) ५६ दिशा कुमारीयों मिलके, सूतिका महोत्सव कीया ( पीठे ) ६४ इंद्र, मेरु पर्वतपर जगवान् कों ले जायके, जन्म महोत्सव कीया । तिस पीठे, सुमित्र राजायें १० दि वसपर्यंत, बमो जन्म महोत्सव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों मन सा नोजन करायके, सर्वके सन्मुख, मुनि सुव्रत कुमार नाम स्थापन कीया । ( नाम स्थापनका यह हेतु हे ) कि जगवान् गर्भमें स्थित ऊवा, तब माता मुनिकी तरे, नले व्रतवाली होती नई ( इस हेतुसें ) मुनि सुव्रत नाम दीया । कृष्णके लंठनयुक्त । इयामवण, शरीर प्रमाण १० धनुष ऊवा । ३ ज्ञान संहित, महा तेजस्वी, १०८ लक्ष्णालंकरण, जोगावली कर्म नि जंरायें, विवाह करके, क्रमसें राज्यपद धारण कीया । पीठे अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें, मिति फागुण वदि १२ के दिन, राजगृही न गरीमें, ठठ तप करके, चंपेका वृक्षके नीचे, १०००० पुण्योंकेसाथ, दीक्षा ग्रहण करी ( उस वखत ) चोथो मनपर्यंत ज्ञान उत्पन्न जयो । प्रथम ठठ को पारणो, ब्रह्मदत्तके घरे, परमात्म हीसें ऊवो । ११ मास ठठस्थप णें विहार करके, फिर राजगृही नगरीमें आये । वहां ठठ तप संहित, फागु ण वदि १२ के दिन, लोकालोक प्रकाशक, केवल ज्ञान उत्पन्न ऊवा ( उस वखत ) चतुर्निफाय देवगणका कीया ऊवा समोसरणमें, १२ पंरिपदाके सन्मुख, जगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संधकी स्थापना करी । जगवा नके ३० द्द्वार सर्व साधु जये ( जिसमें ) महिं प्रमुख १८ गणवर ऊये पुष्पवती प्रमुख ५० द्द्वार सर्व साधु नई ॥ २००० वैक्रिय लब्धिवंत जये ॥ १२०० वादी विरुद धारक जये ॥ १६०० अवधि ज्ञानी जये ॥ १५०० मनपर्यंत ज्ञानी जये ॥ १८०० केवलज्ञानी जये ॥ ५०० चवदे

पूर्वधारी ज्ञेये । १ लाख ७९ हजार श्रावक ज्ञेये ॥ ३ लाख ५० हजार श्राविका जई ( इत्यादिक ) वज्रतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें समेत शिखरजी पर्वतऊपर, १००० साधुओंके साथ, १ मासका अनशन कीया ॥ कान्तसंग मुद्राई, आत्मगुणके ध्यानसे, सर्व कर्मोंको खपायके, मिति ज्येष्ठ वदि ए के दिन, ३० हजार वर्षको आयुष्य मान पूरो करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्ति ज्ञेये । शासनदेव वरुण यक्ष । शासनदेवी नर दत्ता । देवगण । वानर योनि । मकर राशि । अंतरमान ६ लाख वर्ष । सम्यक्त पायेवाद, तीसरे जन्ममें मोक्ष गये ॥ ❀ ॥ इति ५५ बोल गर्जित १० माश्री मुनि सुव्रत स्वामी अधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ९१ माश्री नमिनाथस्वामी अधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मथुरा नामा नगरीमें, इक्ष्वाकुवंशी, विजय नामा राजा ऊवा तिसके विप्रा नामें पट्टराणी जई । जिसकी कूखमें, प्राणत नामा देव लोकसें चवके, मिति आशोज सुदि १५ के दिन, जगवान् उत्पन्न ज्ञेया । ( तब ) मातायें गजादि अग्नि शिखापर्यंत, १४ स्वप्ना प्रगटणें मुखमें प्रवेश कर्ता ऊवा देखा ( पीठे ) सर्व दिशा सुनिद्रासमें, मिति श्रावण वदि ८ के दिन, अश्विनी नक्षत्रे जन्म कल्याणक ऊवा ( उसी वखत ) ५६ दिशा कुमारीयों मिलके, सूतिका महोत्सव कीया ( पीठे ) ६४ इंद्र मेरु पर्वतपर जगवानकों ले जायके जन्म महोत्सव कीया ( तिस पीठे ) विजय राजायें १० दिवसपर्यंत मोटो जन्म महोत्सव करके, सर्व न्याती गोती प्रजा गणकों मनसा जोजन करायके, सर्वके सन्मुख, श्री नमीनाथ कुमार नाम स्थापन कीया ( नाम स्थापनका यह हेतु हे कि ) जगवान् माताके गर्भ में आये, तब वैरी राजायोंनेनी नमस्कार करा ( इस कारणसें ) नमी कुमार नाम दीया । कमलका लंठनयुक्त । पीतवर्ण । शरीरका प्रमाण १५ धनुष ऊवा । ३ ज्ञान सहित, महा तेजस्वी, १००८ लक्ष्णालंकृत, जोगा वली कर्म निर्जरार्थे, विवाह करके, राज्यपद धारन किया । पीठे अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें, मिति आषाढ वदि ए के दिन, मथुरा नगरीमें ठव तप करके, १ हजार पुरुषोंकेसाथ, बकुल वृक्षके नीचे, दीक्षा ग्रहण करी । उस वखत चौथो मन पर्यव ज्ञान उत्पन्न ज्ञेयो । प्रथम ठवको पार

णो, दिक्षु कुमारके घरे, परमात्मा क्षीरसें जूवो । ए मास ठगस्थपणें विहार करके फिर मधुरा नगरीमें आये । वहां ठगप सहित, मिगसरसुदि ११ के दिन, लोकालोक प्रकाशक, केवल ज्ञान उत्पन्न जूवा ( उत्पन्न ) चतुर्नि काय देवगणका कीया जूवा समोसरणमें, १२ परिपदाके सन्मुख जगवान् धर्मोपदेश देके चतुर्विध संघकी स्थापना करी । जगवान्के १० हज़ार सर्व साधु जये ( जिसमें ) शुद्धप्रमुख १० गणवर जूये । अनिला प्रमुख ४१ हज़ार सर्व साध्वी जई ॥ ५००० वैक्रियलव्यवृत्त जये ॥ १००० वादी विरुद्ध धारक जये ॥ १६०० अवधि ज्ञानी जये १२५० मनपर्यव ज्ञानी जये ॥ १६०० केवल ज्ञानीजये ॥ ४५० चवदे पूर्वधारीजये ॥ १ लाख ७० हज़ार श्रावक जये ॥ ३ लाख ४० हज़ार श्राविका जई ( इत्यादिक ) वज्रतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें समेतशिखरजी पर्वतऊपर १००० साधुओंकेसाथ १ मासका अनशनकीया । काउसग मुद्राई आत्मगुणके ध्यानसे, सर्व कर्मोंको खपायके, मिति वैशाखवदि १० के दिन, १० हज़ार वर्षको आयुष्यमान पूरो करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्ति जये । शासनदेव नृकुटीयक । शासनदेवी गंधारी । देवगण । अश्वयोनि । मेराशि । अंतरमान ५००००० वर्ष, सम्यक्त पायेवाद तीसरेजवमें मोक्षगये ॥ इन्नोंके बारे हरिषे एनामा १० मा चक्रवर्ति जूवा ॥ और ११ मा ( तथा ) १२ मा तीर्थंकरके अंतरमें, ११ मा जयनामा चक्रवर्ति जूआ ॥ इति ११ मा श्री नमिनाथस्वामी अधिकार संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥❀॥

॥❀॥ अथ १२ मा श्री नेमिनाथस्वामी अधिकारः ॥❀॥

॥ ❀ ॥ सोरीपुरनामा नगरमें, हरिवंशी, समुद्रविजयनामें राजा जूवा तिसके शिवादेवी नामें पट्टाणी । जिसकी कूखमें, अपराजितनामें देव लोकसें चवके, मिति कार्तिकवदि १२ के दिन, जगवान् उत्पन्न जया । तब मातायें गजादि अग्निशिखापर्यंत १४ स्वप्ना प्रगटपणें मुखमें प्रवेशकर्ता देखा । पीठे सर्व दिशा सुनिहसमें, मिति श्रावणसुदि, ५ के दिन, चित्रा नक्षत्रे, जन्मकल्याणक जूवा ( उत्पन्न ) ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूतिका महोत्सव कीया ( पीठे ) ६४ इंद्र मेरुपर्वतपर जगवान्को लेजायके जन्ममहोत्सव कीया । तिस पीठि समुद्रविजय राजायें १० दिन पर्यंत मोटो



जन्ममहोत्सव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों मनसा चोजन करके, सर्वके सन्मुख, श्री अरिष्टनेमि कुमार नाम स्थापन कीया ( नाम स्थापनका यह हेतु है कि) जगवान् जब गर्भमें आया, तब मातानें अरिष्ट रत्नमय वस्त्र मोटा नेमी (चक्रधारा) आकाशमें उत्पन्नमान स्वप्नमें देखा । तिस कारणसे अरिष्टनेमि नाम दिया । शंखके लंठनयुक्त, श्यामवर्ण, शरीरका प्रमाण १० धनुष ऊँचा । ३ ज्ञानसहित, महातेजस्वी, १००८ लक्ष्णालंकृत विवाहकिये विगर कुमारअवस्थामें रये ( पीठे ) काकेका बेटा श्रीकृष्ण, तथा, बलज द्रुन वज्रत हठ करके, मनविगर राजीमतीके साथ विवाह ठहराया । जब जान लेके जगवान् सुसराके घरे तोरणकेपास आये । उहाँ मारणके निमित्त वज्रतसे जानवर वामा पीजरामें नरे ऊँचे देखे । तब दया करके सर्व जीवाँकों बंधमेंसे छोटाए । और आप पीठा धिरके दिक्का लेनेकों तैयार नए, फेर लोकांतिक देवताके वचनसे, मिति श्रावणसुदि ६ के दिन, चारका नगरीमें, ठठ तप करके, वेमसवृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंके साथ, दीक्षा ग्रहण करी ( नसवखत ) चोथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न नयो । प्रथम ठठको पारणो, वरदिन्नके घरे, परमान्नक्षीरसे ऊँचो । ५४ दिन ठठस्थपणें विहार करके, फिर गिरनार पर्वतपर आये वहाँ अठम तपसहित, आशोजवदि अमावसकेदिन, लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान उत्पन्ननया । नसवखत चतुर्निकाय देवगणका कीया नया समोसरणमें, १२ परिषदाके सन्मुख, जगवान धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी । जगवानके १८ हज़ार सर्व साधुनये ( जिसमें ) वरदत्त प्रमुख ११ गणधर पदधारक ऊँचे । यक्ष दिन्ना प्रमुख ४० हज़ार सर्व साध्वी ऊँई ॥ १५०० वैक्रियलब्धिवंत नये ॥ ८०० वादीविरुदपद धारक नये ॥ १५०० अवधि ज्ञानी नये ॥ १००० मनपर्यव ज्ञानी नये ॥ १५०० केवल ज्ञानी नये ॥ ४०० चवदे पूर्वधारी नये ॥ १ लाख ६४ हज़ार श्रावक नये ॥ ३ लाख ३६ हज़ार श्राविका नई ( इत्यादिक वज्रतसे जीवोंका उद्धार करके अंतसमें गिरनारजी पर्वतपर, ५३६ साधुवोंकेसाथ १ मासका अनशन कीया । पद्मासन मुद्राई, आत्मगुणके ध्यानसे, सर्व कर्माँकू खपायके, मिति आषाढ सुदि ८ के दिन १ हज़ार वर्षको आयु

प्यमान पूरण करके; सिद्धि स्थानकों प्राप्ति जये । शासनदेव गोमेध यक्ष । शासनदेवी अंबिका । राक्षस गण । महिष योनि । कन्या राशि । अंतर मान ८३ हजार ४ से ५० वर्ष, सम्यक्त पायेबाद नवमें जवमें मोक्ष गये ॥ इन्नोंके वारै, इन्नोंके चाचेका वेटा, श्रीरुष्ण नवमा वासुदेव, तथा बलभद्र बलदेव जया ॥ और बाईशमा जगवान पीठे, तेवीसमा जगवान पहले इस अंतरमें १२ मा ब्रह्मदत्त नामें चक्रवर्ति जया ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथ २३ मा श्री पार्श्वनाथस्वामी अधिकारः ॥❀॥

॥ वणारसी नामा नगरीमें, इक्ष्वाकुवंशी, अश्वसेन नामें राजा हुआ । जिसके वामा देवीनामें पट्टराणी, जिसकी कूखमें, प्राणतनामा देवलोकसें चबके, मिति चैत्र वदि ४ के दिन, जगवान् उत्पन्न जये । तब मातायें, गजादि अग्निशिखा पर्यंत, १४ स्वप्ना प्रगटपणें मुखमें प्रवेश कर्त्ता देखा । पीठे सर्व दिशा सुनिद्धसमें, मिति पोष वदि १० के दिन, विशाखा नक्षत्रे जन्म कल्याणक हुआ । उसी वखत ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूतिका महो ज्व कीया । पीठे ६४ इंद्र, मेरु पर्वतपर जगवानकों ले जायके, जन्म महोज्व कीया । तिस पीठे अश्वसेन राजायें १० दिवसपर्यंत मोटो महो ज्व करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों, मनसा जोजन करायके सर्वके सन्मुख श्री पार्श्व कुमार नाम स्थापन कीया । नाम स्थापनाका यह हेतु है, कि जगवान जब गर्भमें आया, तब मातायें अंधारी रात्रीकों सर्प जाता हुआ देखा, इससें माता पितायें विचारा कि ए गर्भका प्रजाव है ॥ इस कार एसें पार्श्वनाथ नाम दिया । सर्पका लंठनयुक्त, नीलवर्ण, शरीरका प्रमाण ए हाथ हुआ । ३ ज्ञान सहित, महा तेजस्वी, १००८ लक्ष्णालंकृत, जो गावली कर्म निर्जरार्ये विवाह कीया । राज्यपद नहिं धारण करके, लोकां तिक देवताके वचनसें, मिति पोष वदि ११ के दिन, वणारसी नगरीमें, ठठ तप करके, धातकी वृद्धके नीचे, ३०० पुरुषोंकेसाथ, दीक्षा ग्रहण करी । उस वखत चौथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न जयो । प्रथम ठठको पारणो, धनाके धरे, परमान् कीरसें जवो । ८४ दिन ठठस्थपणें बिहार करके फिर वणारसी नगरीमें आये, वहां अवम तपसहित, चैत्रवदि ४के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवल ज्ञान केवल दर्शन उत्पन्न जया । उस वखत, चतुर्निकाय

देवगणका कीया जुवा, समोसरणमें, १९ परिवदाके सन्मुख, जगवान् धर्मो पदेश देके चतुर्विध संघकी स्थापना करी । जगवान्के १६ हज़ार सर्व साधु जये । जिसमें, आर्यदिन प्रमुख १० गणधर पद धारक जये । पुष्प चूमा प्रमुख ९८ हज़ार सर्व साध्वी जई ॥ ११०० वैक्रिय लब्धिवंत जये ॥ ६०० वादी विरुद पद धारक जये ॥ १००० अवधि ज्ञानी जये ॥ ७५० मनपर्यव ज्ञानी जये ॥ १००० केवल ज्ञानी जये ॥ ३५० चवदे पूर्वधारी जये ॥ एक लाख ६४ हज़ार श्रावक जये ॥ ३ लाख ३९ हज़ार, श्राविका जई ॥ इत्यादिक वज्रतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें समेत शिखरजी पर्वतऊपर, १ मासका अनशन कीया । कान्तसंग मुद्राई आत्म गुणके ध्यानसे, सर्व कर्मकों खपायके, मिति श्रावण सुदि ८ के दिन, ३३ साधुओंकेसाथ, १०० वर्षका आयुष्य मान पूरण करके, सिद्धिस्थानकों प्राप्ति जए ॥ शासनदेव पार्श्व यक्ष, शासनदेवी पद्मावती, राक्षस गण, मृग योनी, तुल राशि, अंतरमान ९५० वर्ष, सम्यक्त पायेवाद १० में जये मोक्ष गया ॥ इति २३ मा श्री पार्श्वनाथ स्वामीका ५५ बोल गर्जित अधिकारः॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २४ मा श्री वर्द्धमानस्वामी अधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ब्राह्मण कुंमग्रामनामा नगरमें, कोमालश गोत्रका धरणहार कृष्णदत्त नामें ब्राह्मण जुवा, जिसके देवानंदानामें जार्या जई, जिसकी कूखमें प्राणतनामा देवलोकसें चवके, मिति आशाढ सुद ६ के दिन उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रकेविषे जगवान् उत्पन्न जया । तब देवानंदा ब्राह्मणीयें चण्डै स्वप्ना देखा ( पीठे ) सौधर्म इंद्र ब्राह्मणोंके कुलमें पूर्वकर्मकेयोग जगवान् कों उत्पन्न जुवा देखके, आश्चर्यभूत संबंध जुवा जानके, अपना आग्या कारी हरणगमेषी देवताकों जेजा, सो हरणगमेषी देवता आयके देवमाया करके देवानंदाकी कूखसें जगवान्को करसंपुटमें ग्रहण करके, कृत्रियकुंम ग्रामानगरकेविषे, इक्ष्वाकुवंशी, सिद्धार्थनामें राजा, जिसके त्रिशला नामें पट्टराणी, जिसकी कूखमें मिति आशोजवद १३ के दिन अवतारण किया । और त्रिशला माताकी कूखसें पुत्रीको अपहरण करके, देवानंदा ब्राह्मणीकी कूखमें संक्रामण किया । इसीतरे हरणगमेषी देवता इंद्रकी आग्या करके अपने स्थानक गया ( और ) जिसवखत देवतानें देवानंदाकी कूखसें त्रिश

ला क्षत्रियाणीकी कूखमें संक्रामण किया, तब देवानंदायें तो अपना १४ स्वप्ना त्रिशला क्षत्रियाणीके पास जाता हुआ देखा, और त्रिशला क्षत्रियाणीनें प्रगटपणें १४ स्वप्ना मुखमें प्रवेश होता देखा । पीछे सर्व दिशा सुनिश्चितमें, मिति चैत्र वदि १३ के दिन, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रे, जन्म कल्याणक हुआ । उसी वखत, ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूतिका महोत्सव कीया । पीछे ६४ इंद्र मेरु पर्वतपर जगवानकों ले जाय के, जन्म महोत्सव कीया । तिस पीछे सिद्धार्थ राजायें १० दिवसपर्यंत मोटो महोत्सव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों, मनसा भोजन करायके, सर्वके सन्मुख, श्री वर्धमान कुमार नाम स्थापन कीया । नाम स्थापनका यह हेतु हे, कि जब जगवान् गर्भमें आया, तब सिद्धार्थ राजा धनसें राज्यसें परिवारसें वञ्चित बधता रहा, इससें वर्धमान कुमार नामदिया । तथा इंद्रादिक देवतायोंनें मेरु पर्वतपर जगवानका जन्म महोत्सव करनेके समय अनंत बली देखके, महावीर नाम स्थापन किया ॥ केशरीसिंह खंठन, पीतवर्ण, शरीरका प्रमाण ७ हाथ हुआ । तीन ज्ञान सहित, महा तेजस्वी, १००८ लक्षणात्में रुत, भोगावली कर्म निर्जरायें, विवाह कीया । राज्यपद धारण न किया, अवसर आये, लोकान्तिक देवताके वचनसें, मिति मिगशर वदि ११ के दिन, क्षत्रीकुंभ नामा नगरमें, ठठ तप करके, साल वृद्धके नीचे, एकाकीपणें दीक्षा ग्रहण करी, उस वखत चोथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न जयो । प्रथम ठठको पारणो, घञ्जल ब्राह्मणके घरे, परमान्न क्षीरसें जूयो । १२ वर्ष ठठ स्थपणें विहार करके, झुजुवालका नदीपर आये, वहां ठठ तप सहित, वै शाख सुदि १० के दिन, लोकालोक प्रकाशक, केवल ज्ञान उत्पन्न जया । उस वखत चतुर्निकाय देवगणका कीया जया समोसरणमें, १२ परिपदा के सन्मुख, जगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी । जगवान्के सर्व साधु १४ हज़ार जये । जिसमें इंद्रज्यूति प्रमुख ११ गणधर पद धारक जये ॥ चंदनवाला प्रमुख ३६००० सर्व साध्वी जई ॥ ७०० बैक्रिय लब्धिवंत जये ॥ ४०० वादी विरुद धारक जये ॥ १३०० अवधि ज्ञानी जये ॥ ५०० मनपर्यव ज्ञानी जये ॥ ७०० केवल ज्ञानी जये ॥ ३०० चवदे पूर्वधारी जये ॥ १ लाख ५९ हज़ार श्रावक जये ॥ ३ लाख

१८००० श्राविका जई ॥ इत्यादिक वज्रतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें पावापुरी नगरीमें, ठठ तपका अनशन कीया ॥ पद्माशन मुद्राई, आत्मगुणके ध्यानसे, सर्व कर्मोंको खपायके, मिति कार्तिकवदि अमावशके दिन, एकाकी, ७२ वर्षका आयुष्यमान पूरण करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्ति जये शासनदेव ब्रह्मशांति यक्ष । शासनदेवी सिद्धायिका । मानव गण । महिष योनि । कन्या राशि । सम्यक्त पायेवाद ९७ में जब मोक्ष गये, श्री महावीरस्वामी मोक्ष गये पीछे, तीन वर्ष, साठी आठ महिना गए, चौथा आरा उत्तरा, और पांचमा आरा सरू जुवा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इति २४ श्री वर्द्धमान स्वामीका ५५ बोल गर्जित अधिकारः इसी तरै चौबीश जगवान्का नाम मात्र दृष्टांत कहा ॥ अब २४ जगवान्के, १२ चक्रवर्ति, ए वासुदेव, ए बलदेव, ए प्रति वासुदेवादि बने ९ उत्तम पुरुष मोक्षगामी राजादिक जए, जिन सर्वका नाम मात्र दृष्टांत इहां लिखता जुं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १२ चक्रवर्ति अधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पहला श्री भरत चक्रवर्तिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विनीता नयरीमें प्रथम जगवान् श्री ऋषभदेव नामें राजा जुवा जिनोंके सुमंगला नामें राणी, जिसका पुत्र भरत नामें पहला चक्रवर्ति जुवा इनके ६४ हज्जार स्त्रीयों जुई, जिसमें मुख्य स्त्रीरत्न सुदामा नामें जई । जब चक्ररत्नादिक १४ रत्न उत्पन्न जुवा, तब इस भरत क्षेत्रके ठ खंभ में राज्य किया । अंतमें आरीसा महलमें, शुद्ध जावनासें केवलग्यान पाय के चारित्र ग्रहण करके, ८४ पूर्व लाख वर्षको आयुष्य पूरण करके मोक्षकों प्राप्त जुवा ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूसरा सगर चक्रवर्तिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अयोध्या नगरीमें, सुमित्र नामें राजा जुवा, जिसके जसवती नामें पट्टराणी, जिनके पुत्र सगर नामें दूसरा चक्रवर्ति जुवा । इनकें चद्रा नामें स्त्रीरत्न जई । जब चक्ररत्नादिक, १४ रत्न उत्पन्न जए, तब भरत क्षेत्रके ६ खंभकों साधके राज्य किया । अंतमें चारित्र ग्रहण करके

७२ पूर्व लाख वर्षको आयुष्य पूरण करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्त हुआ ॥

॥ ❀ ॥ तीसरा मधवा नामें चक्रवर्त्तिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सावत्थी नगरीमें, समुद्रविजय नामें राजा, जिसके सुनद्रवती नामें पट्टराणी हुई, जिनके पुत्र मधवानामें तीसरा चक्रवर्त्ति हुआ । इनके सुनद्रानामें खीरत्न हुई । अंतमें शुनन्नावसें चारित्र लेके सर्व पांच लाख वर्षको आयुष्य पूरण करके देवलोककों प्राप्त हुआ ॥ इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चौथा सनत्कुमारनामें चक्रवर्त्तिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हथनापुरनामा नगरमें, अश्वसेननामें राजा, जिसके सहदेवीनामें पट्टराणी, जिनके पुत्र सनत्कुमार नामें चौथा चक्रवर्त्ति हुआ । इनके जया नामें खीरत्न हुई । ६ खंमका राज्य किया, अंतमें शुनन्नावसें चारित्र ग्रहण करके, तीन लाख वर्षका आयुष्य पूर्ण करके देवलोककों प्राप्त हुआ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांचमा, श्री शांतिनाथ चक्रवर्त्तिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हथनापुरनामा नगरमें, विश्वसेननामें राजा, जिसके अचिराना में पट्टराणी, जिनके पुत्र शोलमा जगवान्, पांचमां चक्रवर्त्ति श्री शांतिनाथ स्वामी हुआ, इनके विजयानामें खीरत्न हुई, ७ खंमका राज्य किया, अवसर आये चारित्र लेके केवल ग्यानपायके सर्व एक लाख वर्षको आयुष्य पूरण करके सिद्धिस्थानकों प्राप्त हुआ ॥ इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ६ ठा, श्री कुंथुनाथचक्रवर्त्तिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हथनापुरनामा नगरमें, सूरनामें राजा, जिसके श्रीनामें पट्टराणी जिनके पुत्र १७ मा जगवान्, ठा चक्रवर्त्ति श्री कुंथुनाथस्वामी हुआ । इनके कन्हसिरीनामें खीरत्न हुई, ७ खंमका राज्य किया । अवसर आये चारित्र लेके केवल ग्यान पायके, ८५ हजार वर्षका आयुष्य पूरण करके मोक्षकों प्राप्त हुआ ॥ इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ७ मा श्री अरनाथनामें चक्रवर्त्तिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हथनापुरनामा नगरमें, सुदर्शननामें राजा, जिसके देवीनामें पट्टराणी, जिनके पुत्र १८ मा जगवान्, ७ मा चक्रवर्त्ति, श्री अरनाथस्वामी हुआ । इनके पद्मश्रीनामें खीरत्न हुई । ७ खंममें राज्य किया, अंतमें

चारित्र लेके केवल ग्यान पायके ६० हजार वर्षका आयुष्य पूरण करके मोक्षकों प्राप्त हुआ ॥ इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ८ मा सुभूमनामैं चक्रवर्तिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हथनापुरनामा नगरमें, कीर्त्तिवीर्यनामैं राजा जिसके तारानामैं पट्टराणी, जिनके पुत्र सुभूमनामैं आठमा चक्रवर्ति हुआ । इनके सूरश्री नामैं स्त्रीरत्न जई । अंतमें ३० हजार वर्षका आयुष्य पूरण करके सातमी नरक पृथ्वीमें उत्पन्न हुआ ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ ❀ ॥ ९ मा पद्मनामैं चक्रवर्तिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वणारसी नामैं नगरीमें, पद्मोत्तर नामा राजा, जिसके ज्वाला नामैं पट्टराणी, जिसके पुत्र महापद्म नामैं नवमा चक्रवर्ति हुआ । इनके वसुंधरा नामैं स्त्रीरत्न जई । अंतमें १९ हजार वर्षको आयुष्य पूरण करके मोक्षकों प्राप्त हुआ ॥ इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ १० मा हरिषेण नामैं चक्रवर्तिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कंपिलपुर नामा नगरमें, हरि नामैं राजा, जिसके मेरा नामैं पट्टराणी, जिनके पुत्र हरिषेण नामैं दशमा चक्रवर्ति हुआ । इनके देवी नामैं स्त्रीरत्न जई । अंतमें दश हजार वर्षको आयुष्य पूरण करके सिद्धि स्थानकों प्राप्त हुआ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ ❀ ॥ ११ मा, जय नामैं चक्रवर्तिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राजगृही नामैं नगरीमें, विजय नामैं राजा, जिसके विप्रा नामैं पट्टराणी, जिसके पुत्र जय नामैं इग्यारमा चक्रवर्ति हुआ । इनके बलह्वी नामैं स्त्रीरत्न जई । अंतमें तीन हजार वर्षको आयुष्य पूरण करके सिद्धि स्थानकों प्राप्त हुआ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ ❀ ॥ १२ मा ब्रह्मदत्त नामैं चक्रवर्तिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कंपिलपुर नामा नगरमें, ब्रह्म नामैं राजा, जिसके चूलणी नामैं पट्टराणी, जिसके पुत्र ब्रह्मदत्त नामैं बारमा चक्रवर्ति हुआ । इनके कुरमती नामैं स्त्रीरत्न जई । अंतमें १६ से वर्षको आयुष्य पूरण करके सातमी नरक पृथ्वीमें नारकी पणें उत्पन्न हुआ ॥ इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥

॥ ❖ ॥ १२ चक्रवर्ति समानरुद्धी अधिकारः ॥ ❖ ॥

॥ ❖ ॥ ये १२ चक्रवर्ति काश्यपगोत्रमें ज्ञये, इन सर्वका कंचनसमान शरीरकावर्ण ज्ञवा । इस भरतक्षेत्रका ६ खंभमें राज्य किया । नवनिधान १४ रत्न, १६ हज्जार यक्ष, ३२ हज्जार मुगट वक्षराजा, ६४ हज्जार अंतेजरी, एकेक राणीसाथे दोदो वरांगना होय, तब एक लाख ८२ हज्जार वरांगना, ८४ लाख हाथी, ८४ लाख घोमा, ८४ लाख रथ, ९६ कोटि प्यादा । ३२ हज्जार नाटक, ३२ हज्जार वमादेश, ३२ हज्जार बेला उल । १४ हज्जार जलपंथ । २१ हज्जार सन्निवेश । १६ हज्जार राजधानी ५६ अंतरद्वीप । एए हज्जार द्रोणमुख । ए६ कोटि ग्राम । ४९ हज्जार उद्यान । १८ हज्जार श्रेणि प्रश्रेणी । ८० हज्जार पंक्ति । ७ कोमि कौ टंघिक । १६ हज्जार आगर । ३२ कोमि कुल । १४ हज्जार महामंत्रवी, १४ हज्जार बुद्धिनिधान । १६ हज्जार स्वेच्छराज्य । २४ हज्जार कर्पट । २४ हज्जार संवाधन । १६ हज्जार रत्नाकर । २४ हज्जार खेमा सुन्य । १६ हज्जार द्वीप । ४८ हज्जार पाटण । ५० कोमि दीवमिया । ८४ लाख महानिसाण । १० कोमि धजापताका । ३६ कोमि अंगमर्दक । ३६ कोमि आचरण धारक । ३६ कोमि सूपकार । तीन लाख जोजन थानक । एक कोमि गोकुल । तीन कोमि हल । ३६० सुआर । एए कोमि माटंघिक एए कोमि दासीदास । एए लाख अंगरक्षक । एए कोमि जोई । एए कोमि कावमिया । एए कोमि मसूरिया । एए कोमि थड्यायत । एए कोमि पटतारक । एए कोमि मीठाबोला, १ कोमि ८० हज्जार रासज । १२ कोमि सुखासण । ६० कोमि तंबोली, ५० कोमि पखालिया ॥ इत्यादि अनेक प्रकारकी रुद्धी सर्व चक्रवर्तिके समान होती है ॥ इति ॥ ❖ ॥

॥ ❖ ॥ अथ नववासुदेव, बलदेवका दृष्टान्त लि० ॥ ❖ ॥

॥ ❖ ॥ १ तृपृष्ठ वासुदेवः १ अचल बलदेवः ॥ ❖ ॥

॥ ❖ ॥ ११ मा जगवान् श्री श्रेयांसनाथ स्वामीके बारे, शोजनपुरनामा नगरमें, प्रजापतिनामें राजा ज्ञवा, जिसके मृगावतीनामें पहराणी, जिसकी कुखसें सातमा देवलोकसें आपके, ७ स्वमासूचित तृपृष्ठनामें पुत्र ज्ञवा ॥



और दूसरी जद्रानामें राणी, जिसकी कूखसें ४ स्वप्ना सूचित अचलनामें पुत्र हुआ । ये क्रमसें बधता था अपना वैरी अश्वघ्रीव प्रतिवासुदेवको युद्धमें मारके, पहला वासुदेव हुआ । चक्रवर्त्तिसें आधा अर्थात् इस जगतक्षेत्रका तीन खंभमें राज्य किया । नीलेवर्ण, देहमान ८० धनुषका हुआ, अंतमें ८४ पूर्व लाख वर्षका आयुष्य पूरण करके तृपृष्ठ वासुदेव सातमी पृथ्वीमें गया । और बलदेवका उज्जलवर्ण, शरीर प्रमाण ८० धनुष हुआ, अंतमें चाईका मरण देख वैराग्यसें चारित्र ग्रहण किया, क्रमसें केवलज्ञान पायके ८५ पूर्व लाख वर्षका आयुष्य पूरण करके मोक्ष गया ॥ इति ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ २ द्विपृष्ठ वासुदेवः, २ विजय बलदेवः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ १२ मा तीर्थकरके बारे, चारामतीनामा नगरमें, वंजनामें राजा, जिसके कुमानामें पट्टराणी, जिसकी कूखमें १० मा देवलोकसें आयके, ७ स्वप्ना सूचित, द्विपृष्ठनामें पुत्र हुआ ॥ और दूसरी सुजद्रानामें राणी, जिसकी कूखसें ४ स्वप्ना सूचित विजयनामें पुत्र हुआ । ये क्रमसें युवान अवस्थाको प्राप्त हुआ, तब अपना वैरी तारकनामें प्रतिवासुदेवको मारके, दूसरा वासुदेव, बलदेव हुआ । तीन खंभमें राज्य किया, वासुदेवका नीला वर्ण, देहमान ७० धनुष हुआ । अंतमें ७२ पूर्वलाख वर्षका आयुष्य पूरण करके, ठी नरक पृथ्वीमें गया । और विजयबलदेवका उज्जलवर्ण, शरीरप्रमाण ७० धनुष हुआ, अंतमें शुद्धभावसें चारित्र लेके केवलज्ञान पायके ७३ पूर्वलाख वर्षको आयुष्य पूरण करके मोक्षमें गया ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ३ स्वयंभूः वासुदेवः ३ जद्र बलदेवः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ १३ मा तीर्थकरके बारे, कोई चारका नामा नगरीके विषे, रुद्र नामें राजा हुआ । जिसके पुहवी नामें पट्टराणी, जिसकी कूखसें, ६ वा देवलोकसें आयके, ७ स्वप्ना सूचित स्वयंभू नामें पुत्र हुआ ॥ और सुप्रजा नामें दूसरी राणी, जिसकी कूखसें ४ स्वप्ना सूचित जद्र नामें पुत्र हुआ । ये क्रमसें युवान अवस्थाको प्राप्त जया, तब अपना वैरी मेरुक नामें प्रति वासुदेवको मारके, तीसरा वासुदेव बलदेव हुआ । इस जगत क्षेत्रके तीन खंभमें राज्य किया । वासुदेवका नीलावर्ण, देहमान ६० धनुष हुआ ।

अंतमें ६० पूर्व लाख वरपका आयुष्य पूरण करके, ठी नरक पृथ्वीमें गया । और चंद्र बलदेवका उज्ज्वल वर्ण, शरीरप्रमाण ६० धनुषजया, अंत में चारित्र अंगीकार करके, केवल ग्यान पायके सर्व ६५ पूर्वलाख वरपको आयुष्य पूरण करके मोक्ष गया ॥ इति तीसरा वासुदेव, बलदेव दृष्टान्तम् ॥

॥ ✽ ॥ अथ ४ पुरपोत्तम वासुदेवः, सुप्रभु बलदेवः ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ १४ मा तीर्थकरके बारे, बारवई नामा नगरीमें, एक सोम नामें राजा जवा । जिसके सीता नामें पट्टराणी, उसकी कूखसें ८ मा देव लोकसें आया जवा, ७ स्वप्ना सूचित, पुरपोत्तम नामें पुत्र जवा । और दूसरी सुदर्शना नामें राणी, जिसकी कूखसें ४ स्वप्ना सूचित सुप्रभु नामें पुत्र जवा । ये जब युवान अवस्थाको प्राप्त जया, तब अपना वैरी, मधु नामें प्रति वासुदेवको मारके, चोथा वासुदेव, बलदेव, इस जगत क्षेत्रमें जवा । तीन खंभमें अखंभ राज्य किया । वासुदेवका नीलावर्ण, और शरीर प्रमाण ५० धनुषका जवा । और अंतमें ३० लाख पूर्वको आयुष्य पूरण करके ठी पृथ्वीमें गया ॥ और बलदेवका उज्ज्वलवर्ण शरीर प्रमाण ५० धनुष जवा । अंतमें ५५ पूर्व लाख वरपको आयुष्य पूरण करके मोक्ष गया ॥ इति चोथा वासुदेव, बलदेव, प्रति वासुदेव, दृष्टान्तम् ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ ५ मा पुरपसिंह वासुदेवः, सुदर्शन बलदेवः ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ १५ मा तीर्थकरके बारे, अश्वपुरी नामा नगरीमें, शिव नामें राजा जवा । जिसके अम्मा नामें पट्टराणी, उसकी कूखसें, चोथा देवलोकसें आया जवा, ७ स्वप्ना सूचित, पुरपसिंह नामें पुत्र जवा । और दूसरी विजया नामें राणी, जिसकी कूखसें ४ स्वप्ना सूचित, सुदर्शन नामें पुत्र जवा । ये जब युवान अवस्थाको प्राप्त जवा । तब अपना वैरी निसुंज नामा प्रति वासुदेवको मारके पांचमा वासुदेव, बलदेव इस जगत क्षेत्रमें जया । तीन खंभमें राज्य किया । इसमें वासुदेवका नीला वर्ण, शरीर प्रमाण ४५ धनुष जवा, अंतमें १. लाख वरपका आयुष्य पूरण करके, ठी नरक पृथ्वीमें गया ॥ और बलदेवका उज्ज्वलवर्ण, शरीर प्रमाण ४५ धनुष जवा । अंतमें एक लाख ७० हजार वरपको आयुष्य पूरण करके मोक्ष गया ॥ इति पांचमा वासुदेव, बलदेव, प्रति वासुदेव दृष्टान्तम् ॥ ✽ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ६ पुरुषपुंडरीक वासु० आनंदबलदेवः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अठारमा उगणीसमा तीर्थंकरके अंतरमें, चक्रपुरीनामा नगरीमें महाशिवनामें राजा, जिसके लक्ष्मीनामें पट्टराणी, उसकी कूखसे पांचमा देवलोकसे आया हुआ, सात स्वप्ना सूचित, पुरुष पुंडरीकनामें पुत्र हुआ । और दूसरी वैजयंतीनामें राणी, उसकी कूखसे, चार स्वप्ना सूचित आनंद नामें पुत्र हुआ । ये दोनों जब युवान अवस्थाकों प्राप्त जये । तब अपना वैरी, वल्लीनामा ठा प्रतिवासुदेवकों मारके ठा वासुदेव बलदेव जये । तीन खंममें राज्य किया । इसमें वासुदेवका नीलावर्ण, सरीरप्रमाण २९ धनुष हुआ । अंतमें ६५ हज़ार वर्षका आयुष्य पूरण करके, ठी नरक पृथ्वीमें गया । और बलदेवका उज्जलवर्ण, सरीरप्रमाण २९ धनुष हुआ । अंतमें शुभ्रजावसें चारित्र लेके, केवलग्यान पायके, सर्व ८५ हज़ार वर्षका आयुष्य पूरण करके सिद्ध गतिमें गया ॥ इति ठा वासुदेव बलदेव दृष्टान्तम् ॥

॥ ❀ ॥ अथ ७ मा दत्त वासुदेवः नंदन बलदेवः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ १९ मा तीर्थंकरके वारे, वणारसीनामा नगरीमें, अग्नासिवनामें राजा हुआ । जिसके सेसवतीनामें पट्टराणी, उसकी कूखसे, पहला देवलो कसे आया हुआ, सात स्वप्ना सूचित दत्तनामें पुत्र हुआ । और दूसरी जयंती नामें राणी जिसकी कूखसे चार स्वप्ना सूचित नंदननामें पुत्र हुआ, ये दोनों जब युवान अवस्थाकों प्राप्त जये, तब अपना वैरी प्रल्हादनामा प्रतिवासुदेव कों चक्ररत्नसें मारके, सातमा वासुदेव बलदेव, जये । तीन खंममें राज्य किया ॥ इसमें वासुदेवका नीलावर्ण, सरीरप्रमाण २६ धनुष हुआ । अंतमें ५६ हज़ार वर्षका आयुष्य पूरण करके, पांचमी नरक पृथ्वीमें गया ॥ और नंदन बलदेव, अपना जाईका मरण देखके, बैराग्यसें सर्वे चारित्र ग्रह ण किया । कमसे केवल ग्यान पायके सर्व ६५ हज़ार वर्षका आयुष्य पूरण करके मोक्ष गया ॥ इति सातमा वासुदेव बलदेव दृष्टान्तम् ॥

॥ ❀ ॥ ८ मा लठमण वासुदेवः, रामचंद्र बलदेवः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ २० मा तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत स्वामीकेवारे, अयोध्यानामा नगरीमें, दशरथनामें राजा हुआ, जिसके सुमित्रानामें पट्टराणी, उसकी

कूखसँ तीसरा देवलोकसँ आया ऊँवा, सात स्वप्ना सूचित लठमणनामँ पुत्र ऊँवा । और दूसरी अपराजिता नामँ राणी जिसकी कूखसँ चार स्वप्ना सूचित रामचंद्र नामँ पुत्र ऊँवा । ये दोनुं जब युवान अवस्थाकों प्राप्त जये । तब शीताकों अपहरण करनेवाला, अपना बैरी, लंकाका राजा, रावण प्रतिवासु देवकों मारके, आठमा वासुदेव बलदेव ऊँये । इस भरतक्षेत्रके ३ खंममें राज्य किया, इसमें लठमण वासुदेवका नीलावर्ण, सरीर प्रमाण १६ धनुषका ऊँवा । अंतमें १२ हज़ार वरषका आयुष्य पूरण करके चोथी पृथ्वीमें उत्पन्न जया । और रामचंद्र बलदेव, अपना चाईका मरण देखके, वैराग्यसँ चारित्र्य ग्रहण किया । क्रमसँ केवल ज्ञान पायके, सर्व १५ हज़ार वरषका आयुष्य पूरण करके, सिद्धगिरी पर्वत ऊपर मोक्ष गया ॥ इसी रामचंद्रजीकों वज्रतसे हिंदू लोक, अपना ईश्वरावतार मानते हैं ॥ और रावणकों दशमुख वाला राक्षस कहते हैं, तथा लोकीक रामायणमेंनी रावणके २० मुख लिखे हैं, सो गीक नहीं हैं, क्योंकि मनुष्यके स्वाप्नाधिकही दशमुख कदापि नहीं हो सके हैं, पद्म चरित्रादिकमें लिखा हे, कि रावणके बने बनेसँकी परंपराय सँ, एक बन्ना नव माणिक रत्नका द्वार चला आता था, सो रावणनें बालाव स्यासँ अपने गलेमें पहन लिया था । और वे नौही माणक वज्रत बने थे । चार चार माणक दोनुं स्कंध तरफ जमे ऊँये थे । एक बीचमेंथा, ऐसँ नव माणकमें नव मुख दीखता था, और एक रावणका असली मुख था इसवास्ते दशमुखवाला रावण कहा जाता हे । और रावणके समयसँही हि मालयके पद्माममें बद्री नाथका तीर्थ उत्पन्न ऊँआ हे । तिसकी उत्पत्ति जैन धर्मके शास्त्रोंसँ ऐसे जानी जाती हे, कि यह असली पार्श्वनाथकी मूर्ति थी, तिसकाही नाम बद्रीनाथ रक्खा गया हे । इसका विशेष अधिकार देखना होय तो पद्म चरित्र पार्श्वचरित्रसँ जाण लैना ॥ इति आठमा वासु देव, बलदेव दृष्टान्तम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ए मा कृष्ण वासुदेवः, बलभद्र, बलदेवः, ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ १२ मा श्री नेमिनाथ जगवान्के बारे, शोरीपुर नामा नगरमें, समुद्र विजयजी नामँ राजा, जिसका ठोठा चाई वसुदेवजी ऊँवा, जिसके पूर्व नियाणँके योगसँ ७२ हज़ार स्त्रीयों ऊँई, जिसमें मुख्य देवकी नामँ

राणी, जिसकी कूखसे सातमा देवलोकसे आया ऊवा सात स्वप्ना सूचित  
 कृष्ण नामें पुत्र ऊवा । और दूसरी रोहणी नामें राणी । जिसकी कूखसे  
 चार स्वप्ना सूचित बलभद्र नामें पुत्र ऊवा, इन दोनोंकों कंसके जयसे वसुदे  
 वजी अपना गोकुलमें, नंद गोवालियेके घरे, कितनेक वर्ष ठिपे ऊवे  
 रखे । जब ये दोनों युवानावस्थाकों प्राप्त जये । तब प्रथम तो अपना ज्ञा  
 इयोंकों मारनेवाला, कंसकों वैरी जानके मल्ल अखामेमें आयके, कंसकों  
 मारा, जब यादव लोक बल्लतसे जयकों प्राप्त ऊवे, कि कंसका सुसरा जरा  
 सिंध प्रति वासुदेव अजी सर्वमें मोटा राजा है, इससे कदास यादवोंको क्षय  
 नहिं कर देवे, इस जयसे शोरीपुर, तथा मथुरा नगरीसे, यादव सर्व निकल  
 के समुद्रके किनारे जायके, उहां दारका नगरी वसायके कितनेक वर्ष सुख  
 से रहा । पीठे जब जरासिंध अपनी सेना लेके युद्ध करनेकों आया । तब  
 कृष्ण बलभद्र युद्धमें जरासिंध प्रति वासुदेवकों मारके, नवमा वासुदेव, बलदेव  
 ऊवा । इसमें वासुदेवका श्यामवर्ण, सरीरप्रमाण १० धनुष ऊवा । ये, श्री  
 नेमनाथस्वामीका वमा जक्त अविरति सम्यग् दृष्टि श्रावक ऊवा । अंतमें  
 सर्व एक हजार वर्षका आयुष्य पूरण करके तीसरी पृथ्वीमें उत्पन्न जया ।  
 और बलदेवका उज्जल वर्ण, सरीरप्रमाण १० धनुष ऊवा । जब दारकानगरी,  
 यादवोंका क्षय ऊवा, और अपना ज्ञाई श्रीकृष्णका कुसंबीवनमें जराकुमारके  
 हाथसे मरण ऊवा देखके, वैराग्यसे संसारको असार जाणके, शुद्धभावसे  
 चरित्र ग्रहण किया । क्रमसे सो वर्ष चरित्र पालके, सर्व १२०० वर्षको  
 आयुष्य पूरण करके, पांचमा ब्रह्मदेव लोकमें देवतापणे उत्पन्न जया । आवती  
 चौबीसीमें बारमा, तेरमा तीर्थकरहोके दोनों मोक्ष जासी ॥ ये कृष्ण, बल  
 भद्र, जगतमें बल्लत प्रसिद्ध है । क्योंकि बल्लतसे लोक श्री कृष्ण वासुदेव  
 को साक्षात् ईश्वर, तथा ईश्वरका अवतार, जगत्का कर्ता मानते है । सो  
 यह बात श्री कृष्ण वासुदेवके जीते जये न ऊई, किंतु उनके मेरे पीठे  
 लोक कृष्ण वासुदेवकों ईश्वरावतार मानने लगे हैं ॥ तिसका हेतु श्री त्रेसठ  
 सलाका पुरुष चरित्रमें ऐसे लिखा है । कि: जब कृष्ण वासुदेवने कुसंबी वनमें  
 शरीर ठोमा, तब काल करके तीसरी बालु प्रजा पृथ्वी (पातालमें) गये, और  
 बलभद्रजी एकसौ वर्ष जैन दिक्षा पालके पांचमा ब्रह्मदेवलोकमें देवता

जये, वहां अवधि ज्ञानसे अपना नाई श्रीकृष्णकों पातालमें तीसरी पृथ्वी में देखा । तब नाईके स्नेहसे वैकिय शरीर बनाकर श्री कृष्णके पास पोंह चा । और श्री कृष्णसे आलिंगन करके कहा । किमें वल्लभ नामा तेरे पिछले जन्मका नाई जुं, में काल करके पांचमा देवलोकमें देवता जुआ जुं, और तेरे स्नेहसे इहां तेरे पास मिलनेकों आया जुं, सोमें तेरे सुखवास्ते क्या काम करूं ॥ इतना कहकर जब वल्लभद्रजीनें आपनें हाथों ऊपर कृष्णजीकों लिया, तब कृष्णका शरीर पारैकी तरे हाथसे ढरके चूमि ऊपर गिर पना, फेर मिलकर संपूर्ण शरीर पूर्ववत् हो गया ॥ इसीतरे प्रथम आलिंगन करनेसे, फेर विरतांत कहनेसे, और हाथोंपर उठानेसे जान लिया । कि यह मेरे पूर्व जन्मका अति वल्लभ वल्लभद्र नाई है । तब श्री कृष्णजीनें संच्रमसे उठके नमस्कार करा । तब वल्लभद्रजीनें कहा, हे भ्राता, जो श्री नेमिनाथ स्वामीनें कहा था । कि यह विषय सुख महा दुःखदाई है सो प्रत्यक्ष तुमकों प्राप्ति जुआ । और तुज्ज कर्म नियंत्रितकों में स्वर्गमेंनी नहिं लेजा सक्ता जुं । परंतु तेरे स्नेहसे तेरे पास में रहा चाहता जुं । तब कृष्णजीनें कहा, हे भ्राता, तेरे रहनेसेनी मैनें करे जये कर्मका फल तो मुज्जकों अवश्य भोगवनाही है । परंतु मुज्जकों इस दुःखसे वो दुःख बड़त अधिक है । जोमें दारका, और सकल परिवारके दग्ध हो जानेसे, एकला कुशंव वनमें जरा कुमारके तीरसे मरा । और मेरे शत्रुओंकों सुख, तथा मेरे मित्रोंकों दुःख जुआ, जगत्में सर्व यडवंशी वदनाम जये, इसवास्ते हे भ्राता, तूं नरतखंममें जाकर, चक्र, शारंग, शंख, गदाका धरनेवाला, और पीला वस्त्र, तथा गरुड ध्वजाका धरनेवाला, ऐसा मेरा रूप बनाकर विमानमें बैठ कर लोकोंकों दिखलाव । तथा नीला वस्त्र हल मूशल शंखका धरनेवाला ऐसा रूपसे तूं विमानसे बैठके अपना सागीरूप सर्व जगे दिखलाकर लोकोंकों कहो, कि रामकृष्ण दोनुं हम अविनाशी पुरुष हैं । और स्वेच्छा विहारी हैं । जब लोकोंकों यह सत्य प्रतीत हो जावेगा । तब अपना सर्व अपयश दूर हो जावेगा । यह श्रीकृष्णजीका कहना सर्व श्री वल्लभद्रजीनें अंगीकार किया । और नरतखंममें आकर कृष्ण, वल्लभद्र, दोनुंका रूप करके सर्व जगे विमानारूढ़ दिख लाया, और ऐसे कहने लगा, कि भोलोको तुम कृष्ण,

बलनद्र, अर्थात् हमारे दोनोंकी सुंदर प्रतिमा बनाकर, ईश्वरकी बुद्धीसे बने आदरसे पूजो, क्यों कि हमही जगत्के रचनेवाले, और स्थिति संहारके कर्त्ता हैं, और हम अपनी इच्छासे स्वर्ग ( वैकुण्ठसे ) चले आते हैं । और धारका हमनेही रचीथी, तथा हमनेही उसका संहार करा है, क्यों कि जब हम, वैकुण्ठमें जानेकी इच्छा करते हैं, तब अपना सर्व वंश धारका सहत दग्ध करके चले जाते हैं । हमारे उपरांत और कोई अन्य कर्त्ता, हर्त्ता, नहीं है । ऐसा बलनद्रजीका कहना सुननेसे प्राय केङ्ग्राम, नगरके लोक कृष्ण बलनद्रजीकी प्रतिमा सर्व जगे बनाकर पूजने लगे, तब अपनी प्रतिमाकी भक्ति करनेवालोंको बलनद्रजीने वज्रत धनादिक सुख देके आनंदित किए । इसवास्ते वज्रतसे लोक हरिभक्त हो गए । जबसे भक्त ज्ञेय तबसे पुस्तकोंमें श्री कृष्णजीको पूर्णब्रह्म परमात्मा ईश्वरादि नामोंसे लिखा है लोकीकमें श्री कृष्ण होयेको पांच हज़ार वर्ष कहते हैं, इससे क्या जानें जबसे बलनद्रजीने कृष्णजीकी पूजा करवाई, तबसेही लोकोंने कृष्णको ईश्वरावतार माना होय, और उस समयको पांच हज़ार वर्ष ज्ञात होय, तो इस बातको पांच हज़ार वर्ष ज्ञात होगा ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इति नवमा श्री कृष्ण वासुदेव, बलनद्र बलदेवका दृष्टांत संपूर्णम् ॥

॥ ❀ ॥ इसीतरे ६३ तेसठ शिलाका पुरषोंका दृष्टांत इहां नाममात्र लिखा है । इन सर्वका विस्तारसे संबंध देखना होय, तो श्री हेमाचार्यजी महाराजकृत तेसठ शिलाका पुरषोंका चरित्रादिकसे देख लेना ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ और जितने कालमें १४ जगवान् हुए हैं, इतने कालमें इग्यारै रुद्र हुए हैं, जिनका किंचित संबंध लिखता हूं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ११ रुद्र नाम, गति विचार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ १ श्री कृष्णदेव स्वामीके बारे, महारुद्र परणामका धरनेवाला जीमवत नामें पहला रुद्र ज्ञात, अंतमें मरके सातमी नरक पृथ्वीमें गया ॥ इति ॥ ❀ ॥ २ श्री अजितनाथ स्वामीके बारे जितशत्रु नामें दूसरा रुद्र ज्ञात, सो अंतमें मरके सातमी नरक पृथ्वीमें गया ॥ इति २ ॥ ❀ ॥ ३ श्री सुविधिनाथ स्वामीके बारे, रुद्र बल नामें तीसरा रुद्र ज्ञात । अंतमें मरके छठी नरक पृथ्वीमें गया ॥ इति ॥ ❀ ॥ १० मा श्री शीतलनाथ स्वामीके

बारे, विश्वानर नामें चौथा रुद्र ऊँचा । अंतमें ठी नरक पृथ्वीमें गया ॥ इति ॥ ११ ॥ ११ मा श्री श्रेयांशनाथ स्वामीके बारे, सुप्रतिष्ठनामें पांचमा रुद्र ऊँचा । अंतमें मरके ठी नरक पृथ्वीमें गया ॥ इति ॥ ११ ॥

१२ मा श्री वासुपुज्य स्वामीके बारे, अचल नामें ठी रुद्र ऊँचा । अंतमें मरके ठी पृथ्वीमें गया ॥ इति ॥ १२ ॥ १३ मा श्री विमलनाथ स्वामीके बारे, पुंमरीक नामें सातमा रुद्र ऊँचा । अंतमें मरके ठी पृथ्वीमें गया ॥ इति ॥ १३ ॥ १४ श्री अनंतनाथ स्वामीके बारे, अजितधर नामें आठमा रुद्र ऊँचा । अंतमें मरके पांचमी नरक पृथ्वीमें गया ॥ इति ॥ १४ ॥

१५ मा श्री धर्मेनाथ स्वामीके बारे, अजितबल नामें नवमा रुद्र ऊँचा । अंतमें मरके चौथी नरक पृथ्वीमें गया ॥ इति ॥ १५ ॥ १६ मा श्री शांतिनाथ स्वामीके बारे, पेढाल नामें दशमा रुद्र ऊँचा । अंतमें मरके चौथी नरक पृथ्वीमें गया ॥ इति ॥ १६ ॥

१७ मा श्री महावीरस्वामीके बारे, सत्यकी नामें इग्यारमा रुद्र ऊँचा । अंतमें मरके तीसरी पृथ्वीमें गया ॥ ये इग्यारमा रुद्र लोकीकमें वज्रत मान्यताकों प्राप्त ऊँचा थाका है, इससे इनका इहां किंचित विस्तारसे दृष्टांत लिखते हैं ॥ १७ ॥ अथ ११ मा रुद्र सत्यकी दृष्टांत लि० ॥ ११ ॥

॥ ११ ॥ विशाला नगरीके, चेटक राजाकी ठी पुत्री सुज्येष्ठा नामा कुमारी कन्यानें दिक्षा लीनीथी, अर्थात् जैन मतकी साध्वी हो गई थी, वो किसी अवसरमें उपाश्रयके अंदर सूर्यके सन्मुख आतापना लेती थी, इस अवसरमें पेढाल नामा परिव्राजक अर्थात् संन्यासी विद्या सिद्ध था, सो अपनी विद्या देनेकेवास्ते पात्र पुरपकों देखता था । और उसका विचार ऐसा था, कि यदि ब्रह्मचारणीका पुत्र होवे तो सुनाय हेविगा । तब तिस संन्यासीनें, रात्रीमें सुज्येष्ठाकों, नग्नपणें शीतकी आतापना लेतीकों देखा, तब धुंध विद्यासे अंधकारमें अचेत करके उसकी योनीमें अपने बाध का संचार करा, तिस अवसरमें सुज्येष्ठाकों क्रतु धर्म आ गया था इसवास्ते गर्ज रह गया, तब सायकी साध्वीयोंमें गर्जकी चर्चा होनें लगी, पीठे अतिशय ज्ञानीनें कहा कि, सुज्येष्ठानें विषय भोग किसीसें नहीं करा, अरु तिस विद्याधरका सर्व वृत्तांत कहा, तब सर्वकी शंका दूर हो गई, पीठे



जब सुज्येष्ठाके पुत्र जन्मा, तब तिस लम्बकेकों श्रावकनें अपने घरमें ले जाके पाला, तिसका नाम सत्यकी रक्खा, एकदा समय सत्यकी, साध्वीयों के साथ श्री महावीर जगवान्के समवसरणमें गया, तिस अवसरमें एक काल संदीपक नामा विद्याधर श्री महावीर स्वामीकों वंदना करके पूछने लगा, कि मुझकों किससे जय है, तब जगवंत श्री महावीर स्वामीनें कहा कि यह जो सत्यकी नामा लम्बका है, इससे तुझकों जय है । तब काल संदीपक सत्यकीके पास गया, अवज्ञासे कहने लगा, कि अरे तू मुझकों मारैगा, ऐसे कहकर जोरावरीसे सत्यकीकों अपने पगोंमें गेरा, तब तिसके पिता पेढालनें सत्यकीका पालन करा, और अपनी सर्व विद्यायों सत्यकीकों देदई, पीछे जब सत्यकी महारोहणी विद्याका साधन करने लगा, इस सत्यकीका यह सातमा जब रोहणी विद्या साधनमें लग रहा था, रोहणी विद्यानें इस सत्यकीके जीवकों पांच जन्ममें तो जीवसें मार गेरा, और छठे जन्ममें ठे महिने शेष आयुके रहनेसें, सत्यकीके जीवनें विद्याकी इच्छा न करी, परंतु इस सातमें जन्ममें तो तिस रोहणी विद्याकों साधनेका प्रारंभ करा तिसकी विधि लिखते हैं । अनाथ मृतक मनुष्यकों चितामें जलावे, और आले चमनेकों शरीर ऊपर लपेटके पगके वामें अंगुठेसें खमा होकर जहां लग वो चिताका काष्ठ जले, तहां लग जाप करे, इस विधिसें सत्यकी विद्या साध रहा था । उहां काल संदीपक विद्याधरजी आ गया, और चितामें काष्ठ प्रक्षेप करके सात दिन रात्रीतक अग्नि बुझने नदीनी, तब सत्यकी इसीतरे सात दिन वामें अंगुठेसें खमा रहा, ऐसा सत्यकीका सत्य देखके रोहणी देवी आप प्रगट होकर काल संदीपककों कहने लगी कि मत विघ्नकरः—क्यों कि मैं इस सत्यकीके सिद्ध होनेवाली ऊं, इसवास्तेमें सिद्ध हो गई ऊं, तब रोहणी देवीनें सत्यकीकों कहा, कि मैं तेरे शरीरमें किधरसें प्रवेश करूं, सत्यकीनें कहा मेरे मस्तकमें होकर प्रवेश कर, तब रोहणीनें मस्तकमें होकर प्रवेश करा, तिससें मस्तकमें खमा पड़ गया, तब देवीने तुष्ट मान होकर तिस मस्तककी जगों तीसरे नेत्रका आकार बना दिया, तब तो सत्यकी तीन नेत्रवाला प्रसिद्ध हुआ, पीछे सत्यकीनें सोचा कि पेढालनें मेरी माता राजाकी कुमारी बेटी साध्वीकों बिगा

मा है । ऐसा शोचकर अपने पिता पेढालकों मार दिया, तब लोकोंने सत्यकीका नाम रुद्र ( जयानक ) रख दिया, क्यों कि जिसने अपना पिता कों मार दिया उससे और जयानक कौन है ॥ पीठे सत्यकीने विचारा कि काल संदीपक मेरा बैरी कहां है, जब सुना काल संदीपक अमुक जगामें है, तब सत्यकी तिसके पास पौहचा । फेर काल संदीपक विद्याधर तहांसे जाग निकला, तोजी सत्यकी तिसके पीठे लगा, तब काल संदीपक देठ ऊपर जागता रहा, परंतु सत्यकीने उसका पीठा न ठोमा, फेर काल संदीपकने सत्यकीके मुलानेवास्ते तीन नगर बनाये, तब सत्यकीने विद्यासें तीनों नगरजी जला दीये, तब काल संदीपक दोमके पाताल कलशमें चला गया, सत्यकीने तहां जाकर काल संदीपकों मार माला, तिस पीठे सत्यकी विद्याधर चक्रवर्ति हुआ, तीन संध्यामें सब तीर्थक्षेत्रों कों बंदना करके नाटक करता हुआ, तब इंद्रने सत्यकीका नाम महेश्वर दीया, तिस महेश्वरके दो शिष्य हुये, एक नंदीधर, दूसरा नांदिया, तिनमें नांदीया तो विद्यासें बैलका रूप बना लेता था, और तिस ऊपर महेश्वर चढके अनेक क्रीमा कुतूहल करता था, महेश्वर श्री महावीर जगवंतका अविरति सम्यग् दृष्टि श्रावक था, परंतु बन्ना जारी कामीया, और ब्राह्मणों केसाथ उसके बन्ना जारी बैर हो गया था, इससे विद्याके बलसें सैकम्नों ब्राह्मणोंकी कुमारी कन्यायोंको विषय सेवन करके बिगामा, और लोक तथा राजा प्रमुखकी बज्र वेटीयोंसें काम क्रीमा करने लगा, परंतु उसकी विद्या योंके जयसें उसे कोई कुछ कह सकता नहीं था, और जो कोई मनाजी करता था सो मारा जाता था, महेश्वरने विद्यासें एक पुष्पक नामा विमान बनाया तिसमें बैठके जहां इच्छा होती तहां चला जाता था, ऐसे उसका काल व्यतीत होता था, एकदा प्रस्तावि महेश्वर उज्जयिन नगरमें गया तहां चंद्र प्रद्योतकी एक शिवानामा राणीको ठोमके, दूसरी सब राणीयोंके साथ विषयभोग करा, औरजी सब लोकोंके बज्र वेटीयोंको बिगामना शुरू करा तब चंद्र प्रद्योत राजाको बन्नी चिंता हुई, अरु विचारा कि कोई ऐसा उपाय करीयें कि जिससें इस महेश्वरका विनाश ( मरणा ) हो जाय । परंतु तिसकी विद्याके आगे किसीका कोई उपाय नहीं चलता था, पीठे तिस

उज्जैन नगरमें एक उंमा नामें वेश्या बनी रूपवंत रहती थी, उसका यह कौल था कि जो कोई इतना धन मुझे देवे, सो मेरेसे जोग करे, जो कोई उसके कहेमुजब धन देता था सो उसके पास जाता था । एक दिन महेश्वर उस वेश्याके घर गया, तब तिस उंमा वेश्यानें महेश्वरके सन्मुख दो फूल करे, एक विकशा ऊँआ, दूसरा मिचा ऊँआ, तब महेश्वरनें विकशे फूलकीतर्फ हाथ पसारा, तब उंमा वेश्यानें मिचा ऊँआ कमल महेश्वरके हाथमें दीया, और कहा कि यह कमल तेरे योग्य है, तब महेश्वरनें कहा क्यों यह कमल मेरे योग्य है ॥ तब उंमानें कहा, इस मिचे ऊँए कमल समान कुमारी कन्या है सो तुझको जोग करनेवास्ते बल्लभ है ॥ और मैं खिले ऊँए फूल समान ऊँ, तब महेश्वरनें कहा तून्नी मेरेको बल्लभ है, ऐसा कहकर जोग जोगनें लगा, और तिसकेही घरमें रहनें लगा, तिस उंमाने महेश्वरको अपने वशमें कर लीया, उंमाका कहना महेश्वर उल्लंघन नहीं कर सकता था, ऐसे जब कितनाककाल व्यतीत ऊँआ, तब चंद्र प्रद्योतने उंमाको बुलायके उसको बल्लभ धन, और आदर सन्मान देकर कहा, कि तू महेश्वरसे यह पूछे कि ऐसाभी कोई काल है कि जिसकालमें तुमारेपास कोईभी विद्या नहीं रहती ॥ तब उंमाने महेश्वरको पूर्वोक्त रीतिसें पूछा, तब महेश्वरनें कहा कि जब मैं मैथुन सेवता ऊँ तब मेरेपास कोईभी विद्या नहीं रहती अर्थात् कोई विद्या चलती नहीं तब उंमाने चंद्र प्रद्योत राजाको सर्व कथन सुना दीया, तब राजाने उंमासे कहा कि जब महेश्वर तेरेसे जोग करेगा, तब हम उसको मारेगे, जब उंमाने कहा कि मुझकोमत मारना, तब चंद्रप्रद्योतने कहा कि तुझको नहीं मारेगे ॥ पीछे चंद्रप्रद्योतने अपने सुन्नटोको ठाना, उंमाके घरमें ठिपा रक्खा जब महेश्वर उंमाकेसाथ विषय सेवनमें मग्न होके दोनोंका शरीर परस्पर मिलके एक शरीरवत् होगया, तब राजाके सुन्नटोने दोनोंहीको मार माला और अपने नगरका उपद्रव दूर करा, पीछे महेश्वरकी सर्व विद्यायोंने उसके नंदीश्वर शिष्यको अपना अधिष्ठाता बनाया, जब नंदीश्वरने अपने गुरुको इस विटंबनासे मारा सुना, तब विद्यासे उज्जयिन नगरके ऊपर शिला बनाई, और कहनें लगा कि हे मेरे दासो, अब तुम कहां जाओगे, मैं सबको मा

रंगा, क्यों कि मैं सर्व शक्तिमान् ईश्वर हूँ, किसीका मारा मैं मरता नहीं हूँ मैं सदा अविनाशी हूँ, यह सुनकर वज्रतसे लोक मरे, सर्व लोक वीनती करके पगोंमें पड़े, अरु कहने लगे, कि हमारा अपराध क्षमा करो, तब नंदीश्वरने कहा कि, जो तुम उसी अवस्थामें (अर्थात्) उमाके जगमें महे श्वरका लिंग स्थापन करके पूजा तोमें तुमको जीता ठेमुंगा, तब लोकोने तैसेही बनाकर पूजा करी, पीछे नंदीश्वरने इसीतरै प्राय केइ गाम नगरोंमें लोकोंको मरा मराके मंदर बनवाये, तिनमें पूर्वोक्त आकारे जगमें लिंगस्थापन कराके पूजा कराई ॥ यह श्री महावीरस्वामीजीका अविरति सम्यग्दृष्टी श्रावक, इग्यारमारुद्र सत्यकी महेश्वरका दृष्टांत कहा ॥ ❀ ॥ इसीतरै त्रेशठ शिलाका उत्तम पुरषोंका इहां संक्षेप मात्र अधिकार कहा ॥ विशेष अधिकार देखना होय तो, आवश्यक, कल्पसुत्र, त्रेशठ शिलाका पुरष चरित्रादिकमें देख लेना ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इति श्री खरतरगच्छीय पुज्य उपाध्याय श्री लक्ष्मीप्रधानगणिः तद्विष्यमुनिः मोहनलाल मुक्तिकमल विरचिते, आचाररत्नाकर द्वितीयप्रकाशे त्रेशठ शिलाका पुरष संक्षिप्त अधिकारः संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अब चौबीसमा जगवंत श्री महावीरस्वामीसे लेकर आज काल पर्यंत पट्टपरंपरा आचार्यादिकोंका किंचित् दृष्टांत लिखता हूँ ॥

॥ ❀ ॥ श्री महावीरस्वामीके सब शिष्य साधुवर्ग चौदह हज़ार हुए जिन सर्वमें मुख्य बड़े शिष्य इग्यारे गणवर हुए ॥ तिन इग्यारे गणधरोंका नाम कहते हैं । १ इंद्रजुति अर्थात् श्री गौतमस्वामी, २ अग्निजुति, ३ वायुजुति, ४ व्यक्तस्वामी, ५ सुवर्मस्वामी, ६ मंडिकपुत्र, ७ मौर्यपुत्र, ८ अवकंपित, ९ अचलघ्राता, १० मैतार्य, ११ प्रजास, और छत्तीस हज़ार सर्व साध्वी हुई, तथा श्रेणक, उदायन, कोणक, उदायी, चेटक, चंद्रप्र द्योतन, नवमल्लकी, नवलेखकी, दशार्णजद्रादि अनेक राजालोक श्रीमहावीर स्वामीके सेवक हुए, और शंख, पुष्कली, आनंद, कामदेव, सत्यकी महे श्वरादि बड़े बड़े श्रावक, तथा मुलसा, चेलणा, जयंती आदि श्रावक एयांतो लाखोंही हुए ॥ ऐसे श्री महावीर जगवंत विक्रमसंवत्से ( ४७० ) वर्ष पहिले पावापुरी नगरीमें, हस्तपाल राजाकी पुराणी राजसन्नामें, बहत्तर

वर्षका आयु जोगवके कार्तिक वदि अमावस्याकी रात्रिके पीठले प्रहरमें पद्मासन किये ज्ये शरीरादि चार कर्मकी सर्व उपाधी ठोडके निर्वाण ज्ञे ( मोक्ष पज्जे ) तिस समयमें श्री गौतमस्वामी और श्रीसुधर्मस्वामी, यह दो वमे शिष्य जीते थे, शेष नववमे शिष्य तो श्री महावीरस्वामीके जीते ज्ये ही एक मासका अनशन करके केवल ज्ञान पायके मोक्ष चलेगये थे, यह इग्यारहही वमे शिष्य जातिके तो ब्राह्मण थे, चार वेद, और ठे वेदांगादि सर्व शास्त्रोंके जानकार थे, इन इग्यारह पंक्तियोंके चौताली ससै ( ४४०० ) विद्यार्थी थे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इनोंका संबंध ऐसे है कि:-जब जगवंत श्रीमहावीरस्वामीकों केवलज्ञान ज्ञे, तिस अवसरमें मध्यपापा नगरीमें, सोमल नामा ब्राह्मण ने यज्ञ करनेका आरंभ करा था, और सर्व ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ विद्वान् जान कर इन पूर्वोक्त गौतमादि इग्यारह आचार्योंको बुलाया था ॥ तिस समय तिस यज्ञ पामाके ईशान कूणमें महासेन नामा उद्यानमें, श्रीमहावीर जगवंतका समवसरण, रत्न सुवर्ण रौप्यमय क्रमसें तीन गठ संयुक्त देवोंने बना या तिसके बीचमें बैठके जगवंत श्रीमहावीरस्वामी उपदेश करने लगे, तब आकाश मार्गके रस्ते सैंकमो विमानोंमें बैठे हुये चार प्रकारके देवता ओ जगवंत श्रीमहावीरके दर्शनकों और उपदेश सुननेकों आते थे, तब तिनों यज्ञ करनेवाले ब्राह्मणोंने जाना कि, यह देव सर्व हमारे करे हुये यज्ञकी आ ज्ञतियों लेने आये हैं, इतनेमें देवता तो यज्ञ पामेकों ठोमके जगवानके चरणोंमें जाकर हाजर ज्ये, तथा और लोकजी श्रीमहावीर जगवंतका दर्शन करके और उपदेश सुनके गौतमादि पंक्तियोंके आगे कहने लगे, कि:-आज इस नगरके बाहिर सर्वज्ञ सर्वदर्शी जगवान् आये हैं, नतो उसके रूपकी कोई तारीफ कर सका है, अरु न कोई उसके उपदेशसे संशय रहता है, और लाखों देवता जिनोके चरणोंकी सेवा करते हैं इससे हमारे वमे जाग्योदय है, जो ऐसे सर्वज्ञ अरिहंत जगवंतका हमने दर्शन पाया, ऐसा जब गौतमजीने सुना कि, सर्वज्ञ आया, तब मनमें ईर्ष्याकी अग्नि-ज्मकी, अरु ऐसे कहने लगाकि:-मेरेसे अधिक और सर्वज्ञ कौन है ? मैं आज इसका सर्वज्ञपणा उमा देता ज्ञं ? इत्यादि गर्व संयुक्त जग

वान् श्रीमहावीरकेपास पङ्कचा, और जगवानकों चौतीस अतिशय संयुक्त देखा, तथा देवता, इंद्र, मनुष्योंसे, परिवृत देखा, तब बोलनेकी शक्तिसँ हीन हुआ, जगवंतके सन्मुख जाके खमा हो गया, तब जगवंतने कहा कि:— हे गौतम इंद्रभूति तू आया, तब गौतमजीने मनमें विचारा कि, जो मेरा नामज्नी ये जानते हैं, तोज्नी मैं सर्व जगें प्रसिद्ध हूँ मुझे कौन नहीं जानता हे इन्हें मेरा नाम लीया इस बातमें कुछ आश्चर्य और सर्वज्ञ इसकों नहीं मानता हूँ, किंतु मेरे मनमें जो संशय है तिसकों दूर कर देवे तोमैं इसकों सर्वज्ञ मानुं तब जगवंतने कहा, हे गौतम ! तेरे मनमें यह संशय है:— जीव है कि नहीं ? और यह संशय तेरेकों वेदोंकी परस्पर विरुद्ध श्रुतियोंसे हुआ है वो श्रुतियाँ यह है, सो कहते हैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ “ विज्ञानघनपुत्रे तेज्योन्नतेज्यः समुत्थाय तान्येवानुविनश्यति न प्रेत्य संज्ञास्तीतीत्यादि ” इससे विरुद्ध यह श्रुति हैं:—सर्वैः अयमात्मा ज्ञानमय इत्यादि इन श्रुतियोंका अर्थ जैसा तेरे मनमें आसन होता है, तैसाही प्रथम श्रुतिका अर्थ कहते हैं । नीलादि रूप होनेसे विज्ञानही चैतन्य है चैतन्य विशिष्ट जो नीलादि तिस्से जो घन सो विज्ञानघन, सो विज्ञानघन इन प्रत्यक्ष परिष्ठितमान रूप पृथ्वी, अप्प, तेज, वायु, आकाश, इन पांच भूतोंसे उत्पन्न होकर फेर तिनके साथही नाश हो जाता है अर्थात् भूतों के नाश होनेसे उनकेसाथ विज्ञानघनकानी नाश हो जाता है, इस हेतुसे प्रेत्यसंज्ञा नहीं अर्थात् मरके फेर परलोकमें और कोई नर नारकका जन्म नहीं होता, इस श्रुतिसे जीवकी नास्ती सिद्ध होती है, और दूसरी श्रुति कहती है कि:—यद् आत्मा ज्ञानमय अर्थात् ज्ञान स्वरूप है इससे आत्मा की सिद्धी होती है, अब ये दोनों श्रुतियाँ परस्पर विरोधी होनेसे प्रमाण नहीं हो शक्ती है और बहुत परस्पर आत्माके स्वरूपमें विरोधी मत है, कोई कहता है कि:—“ एतावानेवपुरुषो, यावानिन्द्रियगोचरः ॥ तद्रेवकपदं पश्य, यददंत्य वज्रश्रुता ” ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ यहज्नी एक आगम कहता है तथा “ न रूपं चिद्धतः पुज्यतः ” अर्थात् आत्मा अमूर्ति है, यहज्नी एक आगम कहता है, तथा “ अकर्तानिगुणोचोक्ता आत्मा, अर्थ:— अकर्ता सत्त्व, रज, अरु तम, इन तीनों गुणोंसे सुख दुःखका जोगनैवाला

आत्मा है, यहजी एक आगम कहता है, अब इनमेंसे किसको सच्चा और किसको जूठा मानें परस्पर विरोधी होनेसे, सर्व तो कुछ सच्चे होही नहीं शक्ते हैं तथा युक्ति प्रमाणसेजी मरके परलोक जानैवाली आत्मा सिद्ध नहीं होती है ऐसा हे गौतम तेरे मनमें संशय है, अब इसका उत्तर कहता हूं कि, तूं वेद पदोंका अर्थ नहीं जानता है इत्यादि कहके श्रीगौतमजीके संशयको दूर करा, ये सर्व अधिकार मूलावश्यक और श्रीविशेषावश्यकसें जान लेना, मैंने ग्रंथके जारी और गहन हो जानेके सबवसें यहां नहीं लिखा क्योंकि सर्व इग्यारह गणधरोंके संशय दूर करनेका कथनके चार हजार श्लोक है, पीछे जब गौतमजीका संशय दूर हो गया, तब गौतमजी पांचसो अपने विद्यार्थियोंके साथ दीक्षा लेके श्रीमहावीर जगवंतका प्रथम शिष्य हुआ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ इसीतरे इंद्रजित्को दीक्षित सुनके, दूसरा जाई अग्निजित् वने अग्निमानमें भरकर चला और कहने लगाकि, मेरे जाईको इंद्रजाली येनें बलसें जीतके अपना शिष्य बना लीया, तो मैं अजी उस इंद्रजालीके जीतके अपने जाईको पीछा लाता हूं इस विचारसें जगवंत श्रीमहावीरजी केपास पहुंचा, जब जगवानको देखा, तब सर्व आइ बाइ झूल गया मुखसें बोलनेकीजी शक्ती न रही, और मनमें वन्ना अचंन्ना हुआ, क्योंकि ऐसा स्वरूप न उसने कभी सुना था और कभी देखा था, तब जगवानने उसका नाम लीया, अग्निजित्ने विचारा कि यह मेरा नामजी जानते है, अथवा मैं प्रसिद्ध हूं मुझे कौन नहीं जानता है, परंतु मेरे मनका संशय दूर करे तो मैं इसको सर्वज्ञ मानूं, तब जगवंतने कहा हे अग्निजित् तेरे मनमें यह संशय है कि कर्म है किंवा नहीं यह संशय तेरेको विरुद्ध वेदपदोंसें हुआ है क्योंकि तूं वेद पदोंका अर्थ नहीं जानता है, वे वेदपद यह है:- “पुरुषएवेदंघिसर्वयदूतं यच्च ज्ञाव्यं उतामृतत्वस्येशानोयदन्नेनाऽतिरोहति यदेजाति यन्नेजति यदूरे यदुअंतिके पदंतरस्य यदुत सर्वस्यास्य बाह्यत इत्यादि ” इससें विरुद्ध यह श्रुति है:- “पुण्यःपुण्येनेत्यादि ” और इन का अर्थ तेरे मनमें ऐसा नासन होता है कि, पुरुष अर्थात् आत्मा, एव शब्द अवधारणके वास्ते है, सो अवधारण कर्म और प्रधानादिकोंके व्यवहेद

वास्ते है, “इदं सर्वं” अर्थात् यह सर्व प्रत्यक्ष वर्तमान चेतन अचेतन वस्तु “अं” यह वाक्यालंकारमें है यदन्तु अर्थात् जो पीठे हुआ है और आगेको होवेगा, जो मुक्ति तथा संसार सो सर्व पुरुष आत्मा ब्रह्मही है तथा उतशब्द अतिशब्दके अर्थमें है, और अपिशब्द समुच्चय अर्थमें है अमृतत्वस्य अमरणभावका अर्थात् मोक्षका ईशानः प्रभुः अर्थात् स्वामी (मालक) है, यदिति यच्चैति च शब्दके लोप होनेसे यदिति बना इसका अर्थ जो अन्न करके वृद्धि का प्राप्त होता है, “यदेजति” जो चलता है ऐसे पशुआदिक और जो नहीं चलता है ऐसे पर्वतादिक और जो दूर है मेरु आदिक “यत्तु अंतिके” उ शब्द अवधारणार्थमें है, जो समीप अर्थात् नैमे है सो सर्व पूर्वोक्त पदार्थ पुरुष अर्थात् ब्रह्मही है, इस श्रुतिसे कर्मका अभाव होता है अरु दूसरी श्रुतिसे तथा शास्त्रांतरोंसे कर्म सिद्ध होते है, तथा युक्तिसे कर्मसिद्ध होते नहीं क्योंकि अमूर्त आत्माको मूर्ति कर्म लगते नहीं, इसवास्ते मैं नहीं जानता कि कर्म है वा नहीं यह संशय तेरे मनमें है, ऐसा कह कर जगवानने वेदश्रुतिषोंका अर्थ बराबर करके तिसका पूर्वपक्ष खंमन करा, सो विस्तारसे मूलावश्यक तथा विशेषावश्यकसे जानलेना अग्निभूतिनेनी गौतमवत् दीक्षा लेनी ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥ अग्निभूतिकी दीक्षा सुनके तीसरा वायुभूति आया, परंतु आगे दोनों जाईयोंके दीक्षा ले लेनेसे इसको विद्याका अग्निमान कुठनी न रहा, मनमें विचार करा कि मैं जाकर जगवानको वंदना (नमस्कार) करुंगा ऐसा विचारके आया आकर जगवंतको वंदना (नमस्कार) करा । तब जग वंतने कहा तेरे मनमें संशय तो है परंतु जोनसे तूं पूठ नहीं शक्ता है, संशय यह है कि जो जीव है सो देहही है और यह संशय तेरेको विरुद्ध वेदपद श्रुतिसे हुआ है, और तूं तिन वेदपदोंका अर्थ नहीं जानता है वे वेदपद ये हैं:- “विज्ञानवन इत्यादि” पहिले गणधरकी श्रुति जाननी, इससे देहसे जीव (आत्मा) सिद्ध नहीं होता है, और इस श्रुतिसे विरुद्ध यह श्रुति है, (सत्येव लज्यस्तपसा त्येपब्रह्मचर्येण नित्यज्योतिर्मयो हि शुश्रोयं पश्यति धीरायतयः संयतात्मान इत्यादि) इस श्रुतिसे देहसे जिन आत्मा सिद्ध होती है, इसवास्ते तुझको संशय है, पीठे जगवानने यह सर्व संशय दूर



करा, तब तीसरा वायुभूतिनेत्री अपने पांच सौ विद्यार्थीयोंके साथ दीक्षा लीनी ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वायुभूतिकी तरें शेष आठ गणधर क्रमसे आये, तिसमें चौथा अव्यक्तजी आया, तिनके मनमें यह संशय था कि पांचभूत है कि नहीं ए संशय विरुद्ध श्रुतियोंसे ऊआ, वे परस्पर विरुद्ध श्रुतियों यह हैं—“स्वप्नोपम वै सकलमित्येव ब्रह्मविधरंजसाविज्ञेयइत्यादीनि” तथा इससे विरुद्ध यह श्रुति है “द्यावापृथिवी जनयन्देवइत्यादी” तथा पृथिवीदेवता, अप्सोदेवता, इत्यादीनि इनका अर्थ तेरे मनमें ऐसा जासन होता है:—अर्थ, स्वप्न सरीखा वैनिपात अवधारणार्थे संपूर्ण जगत है “एष ब्रह्मविधि” अर्थात् यह परमार्थ प्रकार है, अंजसा सीधेन्यायसे जानना योग्य है, यह श्रुति पंचभूतका अज्ञाव कहती है, और श्रुतियां पांचभूतकी सत्ताको कहती है इसवास्ते तेरेको संशय है, तेरे मनमें यहनी है कि:—युक्तिसे पांचभूत सिद्ध नहीं होते हैं, पीठे जगवानने इसका पूर्वपक्ष खंमन करा वेद पदोंका यथार्थ अर्थ कराये, यह अधिकार उक्त ग्रंथोंसे जान लेना ॥ यह सुनकर चौथा वायुभूतिनेत्री अपना पांचसै शिष्योंके साथ दीक्षा लीनी ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ तब पांचमां सुधर्म नामा पंक्ति आया, इसकाजी उसीतेरे सर्वाधीकार जानलेना यावत् तेरे मनमें यह संशय है कि मनुष्यादि सर्व जैसे इस जन्ममें हैं तैसेही अगले जन्ममें होते हैं कि, मनुष्य कुष्ठ और पशुआ दिनी बन जाते हैं, यह संशय तेरेको परस्पर विरुद्ध वेद श्रुतियोंसे ऊआ है सो वेद श्रुतियों यह हैं:—“पुरुषोवैपुरुषत्वमश्नुते पशवः पशुत्वं इत्यादीनि” यह श्रुति जैसा इस जन्ममें पुरुष स्त्री आदि है वे पर जन्ममेंनी ऐसेही होवेंगे, इसे विरुद्ध यह श्रुति है “अगालोवैएषजाहते यः सपुरुषोदह्यत इत्यादि इन सर्व श्रुतियोंका जगवानने अर्थ करके संशय दूर करा, तब अपने पांचसे शिष्योंके साथ दीक्षा लीनी ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तीस पीठे ठठा मंमिक पुत्र आया तिसके मनमें यह संशय था, कि बंध मोक्ष है, वा नहीं है यह संशयनी विरुद्ध श्रुतियोंसे ऊवा है, सो श्रुतियों यह हैं: “स एष विगुणोविभुर्न बध्यते, संसरति वा न मुच्यते मोचयति वा ॥ एष बाह्यमन्यंतरं वा वेदइत्यादीनि” इस श्रुतिका ऐसा

अर्थ तेरे मनमें जासन होता है, “एषअधिकृतजीवः” अर्थात् यह जीव जिसका अधिकार है “विगुणः” अर्थात् सत्त्वादि गुण रहित सर्वगत सर्व व्यापक पुण्य पाप करके इसको बंध नहीं होता है, और संसारमें भ्रमण भी नहीं करता है, और कर्मोंसे छूटता भी नहीं है, बंधके अभाव होनेसे दूसरोंको कर्मबंधसे भोलाता भी नहीं है, इस कहनेसे आत्मा अकर्ता है, सोई कहता है, यह पुरुष अपनी आत्मासे बाहिर महत् अहंकारादि और अज्यंतर स्वरूप अपना जानता नहीं, क्योंकि जानना ज्ञानसे होता है, और ज्ञानजो है, सो प्रकृतिका धर्म है, और प्रकृति अचेतन है, बंध मोक्ष नहीं इस श्रुतिसे बंध मोक्षका अभाव सिद्ध होता है। अब इसे विरुद्ध श्रुति यह है सो कहते हैं “नही वैशरीरस्य प्रिया प्रिययोरपहतिरस्ति अशरीरं वा वसंतं प्रिया प्रिये नस्पृशत इत्यादीनि” इसका अर्थ कहते हैं:— सशरीरस्य, अर्थात् शरीर सहितको सुख दुःखका अभाव कदापि नहीं होता है, तात्पर्य यह है कि संसारी जीव सुख दुःखसे रहित नहीं होता है, और अमूर्ति आत्माको कारणके अभावसे सुख दुःख स्पर्श नहीं कर शक्ते हैं, इस श्रुतिसे बंध मोक्ष सिद्ध होते हैं, तथा तेरे मनमें यह भी बात है:— कि युक्तिसे भी बंध मोक्ष सिद्ध नहीं होते हैं इत्यादि संशय कहकर भगवान् ने तिसके पूर्वपक्षको खंमन करके संशय दूर करा, तब मंमत्तपुत्र साढेतीनसौ विद्यार्थियोंके साथ दीक्षित जया ॥ ६ ॥ ❧ ॥

॥ ❧ ॥ ७ ॥ तिसके पीछे सातमा मोर्यपुत्र आया, तिसके मनमें यह संशय था कि:— देवता है किंवा नहीं है यह संशय परस्पर विरुद्ध श्रुति योंसे ऊँचा वो श्रुतियो यह है: “स एष यज्ञायुधीयजमानो ज सास्वर्गलोकं गच्छति इत्यादि श्रुतियो स्वर्ग तथा देवताओंकी सिद्धि करती हैं, इससे विरुद्ध श्रुति यह है:— अपामसोमं अमृता अन्नम् अगमामज्योतिर्विदामदेवान् ॥ किं नूनमस्मानृतुणवदरातिः किमु धूर्तिं रमुतमर्त्यस्येत्यादीनि “तथा को जानाति मायोपमान् गीर्वाणानि इयं वरुणकुबेरादीन् इत्यादि”— इनका ऐसा अर्थ तेरे मनमें जासन होता है, कि— पाणीको पीते ज्ञेये एतावता सोमलताकारस पीते हुये अमृत (अमरण) धर्मवाले हम ज्ञेये हैं ज्योति स्वर्ग और देवताको हम नहीं जानते हैं तथा देवता हम हुये हैं, यह भी

नहीं जानते देवता तृणैकी तरें हमारा क्या कर शक्ते है, यह श्रुति अज्ञाव प्रतिपादन करती है, और यह ज्ञावकी प्रतिपादक है, “धूर्तिजराअमृत मर्त्यस्य” अमृतत्व प्राप्तपुरुषकों क्या कर सक्ती है। इन श्रुतियोंका यथार्थ अर्थ करके, और तिसका पूर्वपक्ष खंडन करके जगवाननें इनका संशय दूर करा, तब यहजी साढेतीनसौ ढात्रोंके साथ दीक्षित जया ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ८ ॥ तिस पीठे आठमा अकंपिक आया उसके मनमेंजी वेदकी परस्पर विरुद्ध श्रुतियोंके पदोंसे, नरकवासी है कि नहीं। यह संशय उत्पन्न हुआ था, वो परस्पर विरुद्ध श्रुतियों लिखते हैं:— “नारको वै एष जाय तेयः शुद्रान्नमश्नाति इत्यादि” इसका अर्थ— यह ब्राह्मण नारक होवेगा जो शूद्रका अन्न खाता है। इस श्रुतिसें नरक सिद्ध होता है, तथा “नह वैप्रेत्यनरके नारका संतीत्यादि सुगमार्थः। इस श्रुतिसें नरकका अज्ञाव सिद्ध होता है। इनका अर्थ करके और पूर्वपक्ष खंडन करके जगवाननें तिसका संशय दूर करा तब अकंपिकनेंजी तीनसौ ढात्रोंके साथ दीक्षा लीनी ॥८॥

॥ ❀ ॥ ९ ॥ तिस पीठे नवमा अचलज्जाता आया, तिसकोंजी परस्पर वेदकी विरुद्ध श्रुतियोंके पदोंसे, पुण्य पाप है कि नहीं। यह संशय था, सो वेद पद यह है— “पुरुषएवेदंग्रिसर्वेइत्यादि दूसरे गणधरवत्, इससें विरुद्धपद यह है:— “पुण्य पुण्येन कर्मणा जवति, पाप पापेन कर्मणा जवति इत्यादि” इससें पुण्यपाप सिद्ध होते हैं, यह संशयजी जगवाननें दूर करा तब यहजी तीनसौ ढात्रोंके साथ दीक्षित जया ॥ ९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ १० ॥ तिस पीठे दशमा मेतार्य आया। उसकोंजी वेदकी परस्पर विरुद्ध श्रुतियोंसें यह संशय हुआ था, कि परलोक है किंवा नहीं है वो श्रुतियों यह हैं:— विज्ञानधन, इत्यादि प्रथम गणधरवत् अज्ञाव कथन श्रुति जाननी” तथा “सर्वैः अयं आत्मा ज्ञानमय इत्यादि” परलोक ज्ञाव प्रतिपादक श्रुति जाननी। इनका तात्पर्य जगवाननें कहा, तब मेतार्यजीनें निःशंक होके तीनसौ ढात्रोंके साथ दीक्षा लीनी ॥ १० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ११ ॥ तिस पीठे इग्यारहवा प्रज्ञास नामा गणधर आया तिस के मनमेंजी वेद श्रुतियोंके परस्पर विरुद्ध होनेसें यह संशय था कि निर्वाण है कि नहीं है, वो श्रुतियों यह हैं:— “जरामर्यं वा एतत्सर्वं यदग्नि होत्रं”

इस्सें विरुद्ध श्रुति यह है:—“ देवह्यणी वेदितव्ये परमपरं च तत्र परं सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्मेति ” इनका यह अर्थ तेरी बुद्धिमें जासन होता है कि:—अग्निहोत्र जो है सो जीव हिंसा संयुक्त है, और जरा मरणका कारण है, अरु वेदमें अग्निहोत्र निरंतर करणां कहा है, तब ऐसा कौनसा काल है, कि जिसमें मोक्ष जानेका कर्म करीयें, इसवास्ते आत्माकों मोक्ष ( निर्वाण ) कदापि नही हो शक्ता है, अरु दूसरी श्रुति मोक्ष प्राप्तिनी कहती है, इसवास्ते संशय ऊआ है, इसका जब जगवाननें उत्तर देके निशंक करा तब तीनसौ ऋतोंके साथ दीक्षा लीनी ११॥ इसीतरे श्रीमहावीर जगवंतके वैशाख शुद्धि दशमीके दिन मध्यपापानगरीके महासेन वनमे ( ४४०० ) शिष्य ऊये, तिस पीठे राजपुत्र, श्रेष्ठपुत्रादि, तथा राजपुत्री, श्रेष्ठपुत्री, राजाकी राणीयां आदिकोंने दीक्षा लीनी । तथा जब जगवंत श्रीमहावीरजी पावापुरीमें मोक्ष गये, तिसही रात्रिमें इंद्रचूति, अर्थात् गौतम गणधरकों केवल ज्ञान ऊआ । तब इंद्रोंने निर्वाण महोत्सव करके, ग्यानका उत्सव करा, और सुधर्मस्वामीजीकों श्रीमहावीर स्वामीजीकी गद्दीऊपर बैठाया । श्रीगौतमजीकों गद्दी इसवास्ते न ऊई कि:; केवलज्ञानी पुरुष कोई पाठ ऊपर नही बैठता है, क्योंकि केवली तो जो पूछे उसका उत्तर अपने ज्ञानसेही देता है, परंतु ऐसा नही कहता है, कि मैं अमुक तीर्थकरके कहनेसे कहता ऊं, इसवास्ते केवलज्ञानी पाठ ऊपर नही बैठता है, जेकर बैठे तो तीर्थकरका शासन दूर हो जावे, यह कर्जी हो नहि शक्ता, जो अनादि रीतिकों केवली जंग करे, इसवास्ते श्रीगौतमजी केवलज्ञानी था, इस्सें गद्दी ऊपर नही बैठे, और श्रीसुधर्म स्वामी बैठे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सुधर्मस्वामी पचास वर्ष तो गृहस्थावास ( घरमें ) रहे, और तीस वर्ष श्रीमहावीर जगवंतकी चरण सेवा करी, जब श्रीमहावीर निर्वाण ऊआ, तिस पीठे वारावर्ष तक ठब्रस्थ रहे, और आठ वर्ष केवली रहे, क्योंकि श्रीमहावीर अर्जुनके पीठे केवली होकर वारावर्ष श्रीगौतमजी जीते रहे, और श्रीगौतमजीके निर्वाण पीठे, श्रीसुधर्मस्वामीजीकों केवल ज्ञान ऊआ । केवली होकर आठ वर्ष जीते रहे, श्रीसुधर्मस्वामीजीकी सर्वायु एकसौ ( १०० ) वर्षकी थी. सो श्रीमहावीरजीके बीशवर्ष पीठे मोक्ष

गये ॥ ३ ॥ श्रीसुधर्मस्वामीके पाट ऊपर, श्रीजंबूस्वामी बैठे । सो राजगृह नगर कावासी श्रीप्रज्जदत्त श्रेष्ठकी धारणी नामा स्त्रीनें जन्मेथे, निन्नानवे क्रोम सोनइये और आठ स्त्रीयोंकों ठोमकर दीक्षा लेता चया, सोलेवर्ष गृहस्थ वासमें रहे, बीश वर्ष व्रतपर्याय, और चौतालीस वर्ष केवलपर्याय पालके श्रीमहावीरके निर्वाण पीठे चौशठमें वर्ष मोक्ष गये ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ यह श्रीजंबूस्वामीके पीठे जस्तक्षेत्रमें दश बातें बिहेद होगई तिसका नाम लिखते हैं:—१ मनः पर्यायज्ञान, २ परमावधि ज्ञान, ३ पुलाक लब्धि ४ आहारकशरीर, ५ कृपकश्रेणि, ६ उपशमश्रेणि, ७ जिनकल्पमु न्की रीति, ८ परिहार विशुद्धिचारित्र, तथा सूक्ष्मसंपराय, और यथाख्यात यह तीन तरेंके संयम, ९ केवलज्ञान, १० मोक्ष होना, यह दश वस्तु बिहे द हो गई, श्रीमहावीर जगवंतके केवली ऊये पीठे जब चौदहवर्ष बीतेथे, तब जमाली नामा प्रथम निन्दव ऊआ । और सोलावर्ष पीठे तिष्य गुप्त नामा दूसरा निन्दव ऊवा । श्रीजंबूस्वामीकी आयु असी वर्षकी थी ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ ४ ॥ जंबूस्वामीके पाट ऊपर, प्रज्जवस्वामी बैठे । तिनकी उत्प त्ति ऐसैं है, विंध्याचल पर्वतके पास जयपुर नामा पत्तन था, तिसका विंध्य नामा राजा था, तिसके दो पुत्र थे, एक वमा प्रज्जव, दूसरा ठोटा प्रज्जु, विंध्यराजाने किसी कारणसैं ठोटे पुत्र प्रज्जुकों राज तिलक दे दीया, तब वमा ठोटा प्रज्जव जुस्सैं होकर जयपुर पत्तनसैं निकलकर, विंध्याचलकी विषम जगामें गाम बसाकर रहने लगा, और खाचखनन, बंदिग्रहण रस्ते लूटनादि, अनेक तरेंकी चोरीयोंसैं अपने परिवारकी आजीविका करता था, एक दिन पांचसौ चोरोंकों लेकर राजगृह नगरमें जंबूजीके घरकों लूटनें आया, तहां जंबूस्वामीनें तिसकों प्रतिबोध करा, तब तिसनें पांचसौ चोरोंके साथ दिक्षा श्रीजंबूजीके साथ लीनी. इत्यादि जंबूजीका और प्रज्जवजीका अधिकार जंबूचरित्र, तथा परिशिष्ट पर्वादि ग्रंथोंसैं जान लेना. प्रज्जवस्वामी तीसवर्ष गृहस्थ पर्याय, चौतालीश वर्ष व्रतपर्याय, तथा एकादश वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्व पंचाशी वर्षकी आयुपूरी करके श्री महावीरसैं पंचहत्तर वर्ष पीठे स्वर्ग गया ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ ५ ॥ श्रीप्रज्जवस्वामीके पाट ऊपर, श्रीशय्यंजव स्वामी बैठे, जि

नोनें मनक साधुकेवास्ते दशभैकालिक सुत्र बनाया, तिनकी उत्पत्ति ऐसैं है: एकदा प्रस्तावें प्रजवस्वामीनें रात्रिमें विचार करा कि मैरे पाट ऊपर कौन बैठेगा, पीठे ज्ञान बलसैं अपने सर्वसंघमें पाट योग्य कोई न देखा, तब परदर्शनीयोंकों ज्ञान बलसैं देखनें लगा, तब राजगृह नगरमें शय्यञ्चव चढकों यज्ञ करते ज्ञेयोंकों अपने पाट योग्य देखा, पीठे प्रजवस्वामी बिहार करके, सपरिवारसैं राजगृह नगरमें आये, उहां दो साधुओंकों आदेश दीया कि तुम यज्ञ पामेमें जाकर निष्ठाके वास्ते धर्म लाज कहो, और यज्ञ करने वालोंकों ऐसे कहो:— “अहोकष्ट महोकष्ट तत्त्वं विज्ञायते नहि” तब तिन साधुओंनें पूर्वोक्त गुरुका कहना सर्व कीया। जब ब्राह्मणोंने “अहो कष्ट” इत्यादि सुना, और तिस यज्ञ वामेमें शय्यञ्चव ब्राह्मणनें यज्ञ दीक्षा लीनी थी, तिसने यज्ञ वामेके दरवाजेमें खमेथके, अहोकष्ट इत्यादि मुनि योंका कहना सुनके विचार करनें लगा, कि ऐसा उपशम प्रधान साधु होते हैं, इसवास्ते यह असत्य (जुग) नहीं बोलते हैं, इससैं मनमें संशय होगया, तब उपाध्यायकों पूछा कि तत्व क्या है, तब उपाध्यायनें कहा कि चार वेदमें जो कथन करा है सो तत्व है, क्योंकि वेदोंके शिवाय और कोई तत्व नहीं है, तब शय्यञ्चवनें कहा कि तूं दक्षिणाके लोचसैं मुँहकों तत्व नहीं बतलाया है, क्योंकि राग द्वेष रहित, निर्मम, निःपरिग्रह, शांत, दांत, महान्त मुनियोंका कहना जूझा नहीं होता है, और तूं मेरा गुरु नहीं तैनें तो जन्मसैं इस जगत्कों उगनाही सीखा है, इसवास्ते तूं शिक्षाके योग्य है, इसवास्ते यातो मुँहे तत्व कह दे, नहीं तो तलवारसैं तेरा शिरच्छेद करुंगा, ऐसैं कहके जब मियानसैं तलवार काठी, तब उपाध्यायने प्राणांत कष्ट देखके कहा हमारे वेदोंमेंजी ऐसैं लिखा है और हमारी आग्नायजी यही है, जब हमारा कोई शिरच्छेद किया चाहे तब तत्व कहनां नहीं तो नहीं कहनां तिस वास्तेमें तुँहकों तत्व कह देताहूं कि इस यज्ञ स्थंजके हेठे अर्द्ध तकी प्रतिमा स्थापन करी है, और नीचेही तिसकों प्रवृत्त होकर पूजते है, तिसके प्रभावसैं यज्ञके सर्व विघ्न दूर हो जाते हैं, जेकर यज्ञस्थंजके नीचे अर्द्धतकी प्रतिमा न राखें तो मद्गतपा सिद्धपुत्र, और नारद, ये दोनों यज्ञकों विध्वंस कर देते हैं, पीठे उपाध्यायने यज्ञस्थंज उत्तमके अर्द्धतकी

प्रतिमा दिखाई और कहा कि यह प्रतिमा जिस देवकी है, तिस अर्हतका कहा ऊँचा धर्म जीवदया रूप तत्व है, और यह जो वेद प्रतिपाद्य यज्ञ हैं वे सर्व हिंसात्मक रूप होनेसे विरुद्धना रूप है, परंतु क्याकरें जेकर हम ऐसे न करें तो हमारी आजीविका नही चलती है, अब तूं तत्व जानले और मुँहकों ठोम दे, अरु तूं परमार्हत होजा, क्योंकि मैंने अपने पेटकेवास्ते तुँहकों वज्रत दिन वहकाया है, तब शिष्यंनवने नमस्कार करके कहा तूं यथार्थ तत्वके कहनेसे सच्चा उपाध्याय है, ऐसा कह कर शिष्यंनवने तुष्टमान होकर यज्ञकी सामग्री जो सुवर्णपात्रादि थे, वे सर्व उपाध्यायकों दे दई, और प्रज्ञवस्वामीके पास जाकर तत्वका स्वरूप पूछकर दीक्षा लेलीनी, शेष इनका वृत्तांत परिशिष्टपर्वादि ग्रंथसे जान लेना शिष्यंनवस्वामी अठाईस वर्ष गृहस्थावासमें रहे, इग्यारह वर्ष सामान्य साधु व्रतमें रहे, और तेवीस वर्ष युगप्रधानाचार्य पदवीमें रहे, इसीतरें सर्वायु वाशठ वर्ष जोगवके श्रीमहावीर जगवंतके अठानवे वर्ष पीठे स्वर्ग गये ॥३॥

॥ ३ ॥ ६ ॥ श्रीशिष्यंनवस्वामीके पाठ ऊपर यशोन्नद्र स्वामी बैठे, सो बावीस वर्ष गृहस्थावासमें रहे, और चौदहवर्ष व्रतपर्यायमें रहे, अरु पंचास वर्ष तक युगप्रधान पदवीमें रहे, इसीतरें सर्वायु त्वासी वर्षकी जोगके श्री महावीरसे ( १४८ ) वर्ष पीठे स्वर्गमें गये ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ ७ ॥ श्रीयशोन्नद्रस्वामीके पाठ ऊपर, श्री संज्ञूतविजय स्वामी बैठे, सो वैतालीस वर्ष तक गृहस्थ रहे, और चालीस वर्ष व्रत पर्यायमें रहे, तथा आठ वर्ष युगप्रधान पदवीमें रहे, सर्वायु नव्वे वर्ष जोगके स्वर्गमें गये, ॥ ७ ॥—॥ ८ ॥ श्री संज्ञूतिविजय स्वामीके पाठ ऊपर, श्री नद्रवाज स्वामी बैठे सो नद्रवाज स्वामीने, १ आवश्यक निर्युक्ति, २ दशवैकालिक निर्युक्ति, ३ उत्तराध्ययन निर्युक्ति, ४ आचारांगकी निर्युक्ति, ५ सूत्ररुदंग निर्युक्ति, ६ सूर्यप्रज्ञति निर्युक्ति, ७ ऋषिनाषित निर्युक्ति, ८ कल्प निर्युक्ति, ९ व्यवहार निर्युक्ति, १० दशा निर्युक्ति, ये दशनिर्युक्तियो, और १ कल्प, २ व्यवहार, ३ दशाश्रुतस्कंध, यह नवमे पूर्वसे उद्धार करके बनाये, और एक वज्रत वमा नद्रवाज नामें संहिता ज्योतिष शास्त्र बनाया, उपसर्गहर स्तोत्र बनाया, जैनमतीयों ऊपर वज्रत उपकार

करा । इनही चन्द्रवाङ्मजीका सगानाई बराहमेहर हुआ, वो पहिले तो जैनमतका साधु जुवा था, फेर साधुपणा ठोमके बराही संहिता बनाई और जो बराह मिहर विक्रमादित्यकी सन्नाका पंक्ति था, वो दूसरा बराहमिहर था, संहिता कारक वो नहीं हुआ, इसका संपूर्ण वृत्तांत परिशिष्ट पर्वसे जान लेना, श्रीचन्द्रवाङ्मस्वामी गृहस्थावासमें पैंतालीश वर्ष रहे, सत्तरे वर्ष व्रतपर्याय, अरु चौदह वर्ष युगप्रधान, सर्व मिलकर ठहत्तर वर्षकी आयु जोगके श्रीमहावीरसें एकसौसत्तर ( १७० ) वर्ष पीठे स्वर्ग गए ॥

॥ ❀ ॥ ८ ॥ चन्द्रवाङ्म स्वामीके पाठ ऊपर श्रीस्थूलचन्द्र स्वामी बैठे इनका वज्रत वृत्तांत है सो परिशिष्ट पर्वग्रंथसें जान लेना, १ श्री प्रजवस्वामी, २ श्री शिष्यचक्रस्वामी, ३ श्री यशोचन्द्रस्वामी, ४ श्री संज्ञूत विजय, ५ श्रीचन्द्रवाङ्मस्वामी, ६ श्रीस्थूलचन्द्रस्वामी, यह ठहों आचार्य चौदह पूर्वकेवेत्ता थे, श्रीस्थूलचन्द्रस्वामी तीस वर्ष गृहस्थावासमें रहें, चौबीस वर्ष व्रत पर्याय, अरु पैंतालीस वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्वायु निजानवे वर्षकी जोगके श्रीमहावीरके पीठे ( २१५ ) वर्षें स्वर्ग गये, श्रीमहावीरसें दोसौ चौदह वर्ष पीठे आपाढा चार्यके शिष्य तीसरे निन्दव हूये ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीस्थूलचन्द्रस्वामीके वखतमें नवनंदका एकसौ पंचावन ( १५५ ) वर्षका राज्य उद्देद करके चाणक्य ब्राह्मणने चंद्रगुतराजाको राजसिंहासन ऊपर बैठाया, और चंद्रगुतके संतानोंने एकसौ आठ वर्षतक राज्य कीया चंद्रगुत मोरपालका बेटा था, इसवास्ते चंद्रगुतका मौर्यवंश कहते हैं, यह चंद्रगुत जैनमतका धारक आवक राजा था, यह चंद्रगुत, तथा नवनंदका वृत्तांत देखना होवे, तदा परिशिष्ट पर्व, उत्तराध्ययनवृत्ति तथा आवश्यक वृत्तिसें देख लेना ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री स्थूलचन्द्रस्वामीके पीठे ऊपरले चार पूर्व, प्रथम संहनन, प्रथम संस्थान व्यवद्दे हो गये, तथा श्रीमहावीरसें दोसौ बीस ( २२० ) वर्ष पीठे अश्वमित्र नामा चौथा क्षणिकवादि निन्दव हुआ, और श्रीस्थूलचन्द्रजीके समयमें बारा वर्षका उर्जिक ( काल ) पन्ना, उस समयमें चंद्रगुतका राज था, तथा श्री महावीरके पीठे ( २२८ ) वर्ष व्यतीत हुए तब गंग नामा पांचमा निन्दव हुआ ॥ ❀ ॥ ८ ॥



॥ ❀ ॥ ए ॥ श्रीस्थूलचद्रजीके पाट ऊपर श्रीआर्यमहागिरि बैठे, सो आर्यमहागिरिके शिष्य, १ वज्रल, २ वलिस्सह ऊआ, फेर वलिस्सहका शिष्य श्रीउमास्वातीजी जया जिसने तत्त्वार्थादि सूत्र रचे है और उमास्वातीका शिष्य श्यामाचार्य, जिसने प्रज्ञापना (पन्नवणासूत्र) बनाया, यह श्यामाचार्य श्रीमहावीरसें तीनसौ बृहत्तर वर्ष पीठे स्वर्ग गया, और आर्य महागिरजी तीस वर्ष गृहवासमें रहे, चालीस वर्ष व्रतपर्याय, अरु तीस वर्ष युगप्रधान पदवी सर्वायु एकसौ वर्षकी जोगके स्वर्ग गया ॥ ❀ ॥ ए ॥

॥ ❀ ॥ १ ॥ श्रीआर्यमहागिरजीके पाट ऊपर श्रीसुहस्तिसूरि, जिसने एक ज्ञीखारीकों दीक्षा दीनी, वो ज्ञीखारी काल करके चंद्रगुप्तका बेटा विंड सार और विंडसारका बेटा अशोक और अशोकका बेटा कुणाल, तिस कुणालका बेटा संप्रति राजा ऊआ, तिस संप्रति राजानें जैनधर्मकी वज्रत वृद्धि करी, क्यों कि कल्पसूत्रके प्रथम उद्देशमें श्रीमहावीरके समयमें अबकी निसवत वज्रत थोमे देशोंमें जैनधर्म लिखा है, मारवान, गुजरात, दक्षिण, पंजाब वगैरे देशोंमें जो जैनधर्म है, सो संप्रति राजाहीसें फैला है, यद्यपि इस कालमें जैनी राजाके न होनेसें जैनधर्म सर्वजगें नही, परंतु संप्रति राजाके समयमें वज्रत उत्पत्तिपर था, क्योंकि संप्रति राजाका राज्य मध्य खंभ और गंगापार और सिंधु पारके सर्व देशोंमें था, संप्रति राजानें अपने नौकरोंकों जैनके साधुओंका वेष बनाकर अपने सेवक राजाओंके जो शक, यवन, फारसादि, देशों थे, तिन देशोंमें भेजे, तिनोंने तिन राजाओंकों जैनके साधुओंका आहार विहार आचारादि सर्व बताया और समझाया पीठेसें साधुओंका विहार तिन देशोंमें कराकर लोकोंकों जैनधर्मी करा, और संप्रति राजानें ( १५००० ) निनानवें हज़ार जीर्ण ( पुराने ) जिनमंदिरोंका उद्धार कराया, अर्थात् पुराना टूटाफूटाकों नवा बनाया और ब्बीस हज़ार ( २६००० ) नवीन जिनमंदिर बनवाये और सोने, चांदी पीतल, पाषाण, प्रमुखकी सवा क्रोर प्रतिमा बनवाई, तिसके बनवाये मंदिर नमौल, गिरनार, शत्रुजय, रतलाम प्रमुख अनेक स्थानोंमें खमे हमनें अपनी आंखोंसे देखे हैं, और संप्रतिकी बनवाई जिनप्रतिमा तो हमनें सैंकनों देखीहै, इस संप्रति राजाका वृत्तांत परिशिष्ट पर्वादि ग्रंथोंसें समग्र जान लेना ॥

॥ ५५ ॥ श्रीसुहृस्ती सूरि आचार्यने उज्जयिनकी रहनेवाली नन्दासेठानीका पुत्र अवंती सुकुमालकों दीक्षा दीनी, और जहां उस अवंती सुकुमालने काल करा था, तिस जगे तिस अवंती सुकुमालके महाकाल नाम पुत्रने जिनमंदिर बनाया, और तिस मंदिरमें अपने पिताके नामसे अवंती पार्श्वनाथकी मूर्ति स्थापनकरी, कालांतरमें ब्राह्मणोंने अपना जोर पाकर तिस मंदिरमें मूर्तियों देते दावकर ऊपर महादेवका लिंग स्थापन करके महाकाल ( महादेवका ) मंदिर प्रसिद्धकर दीया, पीछे जब राजा विक्रम उज्जयिनमें हुआ, तिस अवसरमें कुमुदचंद्र, अर्थात् सिद्धसेन दिवाकर नामा जैनाचार्यने कल्याणमंदिर स्तोत्र बनाया, तब शिवका लिंग फटकर विचमेंसु पूर्वोक्त श्रीपार्श्वनाथकी मूर्ति फिर प्रगट हुई ॥ ५५ ॥

॥ ५६ ॥ इनका संबंध ऐसा है कि, विद्याधर गञ्जमें, जब स्कंदिलाचार्यका शिष्य वृद्धवादि आचार्य था, तिस अवसरमें, उज्जयिनका राजा विक्रमादित्य था, तिसका मंत्री कात्यायन गोत्री देवर्षिनामा ब्राह्मण, तिसकी दैवसिका नामा स्त्री, तिनका पुत्र सिद्धसेन, सो, विद्याके अजिमानसे सारे जगतके लोकोंको तृणवत् ( घासफूसश्रमान ) समझताया, और ऐसा जानता था कि मेरे समान बुद्धिमान् कोइनी नहीं, और जो मुझको बादमें जीत लेवे, तो मैं उसकाही शिष्य बन जाऊंगा, पीछे तिसने वृद्धवादीकी वज्रत कीर्ति सुनी उनके सन्मुख जाने वास्ते सुखासन ऊपर बैठके जगुकञ्ज ( जमौच ) कीतरफ चला जाता था, तिस अवसरमें वृद्धवादीनी रस्तेमें सन्मुख आता हुआ मिला, तब आपसमें दोनोंका आलाप संलाप हुआ पीछे सिद्धसेनजीने कहा कि, मेरे साथ तुम वाद करो, तब वृद्धवादीने कहा कि वाद तो करूं, परंतु इस जंगलमें जीते द्वारेका कहनेवाला कोइ शास्त्री नहीं, तब सिद्धसेनजीने कहा कि, यह जो गौ चरानेवाले गोप हैं, येही मेरे तुमारे शास्त्री रहे, वे जिसको कहेंगे द्वार सो द्वार, तब वृद्धवादीने कहा वज्रत अच्छा येही शास्त्री रहे, अब तुम बोलो, तब सिद्धसेनजीने वज्रत संवत्त जाया बोली और चुप करी, तब गोपोंने कहा यह तो कुञ्जनी नहीं जानता केवल ऊंचा बोलके हमारे कानोंको पीमा देता है, तब गोप कहने लगे, हे वृद्ध तं बोल ? पीछे वृद्धवादी अवसर देखके

कच्चा बांधकर तिन गोपोंकी ज्ञापामें कहनें लगे, और थोमे थोमे कूदनेंजी लगे, जो ठंड उचारा सो कहते हैं “ नविमारिये नविचोरियें, परदारागमण निवारिये ॥ थोवाथोवदाइयें, सग्गिमट्टेमट्टेजाइयें ॥ १ ॥ फेरजी बोले, और नाचनें लगे ॥ ठंड ॥ कालो कंवल नीचोवट्ट, ठाठें जरिउ दीवड थट्ट ॥ एवम पडीउ नीले जाड, अवरकिसोठे सग्ग निलाड ॥ २ ॥ यह सुनकर गोप वज्रत खुशी झये और कहनें लगे कि वृद्धवादी सर्वज्ञ है, इसनें कैसा मीठा कानोंकों सुखदायी हमारे योग्य उपदेश कहा, और सिद्धसेन तो कुछ नहीं जानता, तब सिद्धसेनजीने वृद्धवादीकों कहा कि हे जगवान् ! तुम मुझकों दीक्षा देकें अपना शिष्य बनाने, क्योंकि मेरी प्रतिज्ञा थी, के जो गोप मुझे हारा कहेंगे, तो मैं हारा और तुमारा शिष्य बनूंगा, यह सुनकर वृद्धवादीनें कहा, कि जूगुपुरमें राजसन्नाके बीच तेरा मेरा वाद होवेगा, परंतु यह गोपोंकी सन्नामें वादही क्या है, तब सिद्धसेन कहा, मैं अवसर नहीं जानता तुम अवसरके ज्ञाता हो इसवास्ते मैं हारा पीठें वृद्धवादीने राजसन्नामें उसको पराजय करा, तब सिद्धसेननें दीक्षा लीनी, गुरुनें उनका नाम कुमुदचंद्रजी दीया, पीठे जब आचार्य पदवी दीनी, तब फिर सिद्धसेन दिवाकर नाम रखवा, पीठे वृद्धवादी तो और कहीकों विहार कर गये, और सिद्धसेन दिवाकरकों सर्वज्ञ पुत्र ऐसा विरुद दीया ऐसा विरुद बोलते हुए अवंती नगरीके चौकमें लाये, तिस अवसरमें राजा विक्रमादित्य हाथी ऊपर चढा सन्मुख मिला तब राजाने सर्वज्ञ पुत्र ऐसा विरुद सुनके तिनकी परीक्षा वास्ते, हाथी उपर बैठेहीनें मनसें नमस्कार करा तब आचार्यनें धर्मलाज कहा, राजाने पूछा कि बिनाही वंदना करे, आप मेरेकों धर्मलाज क्यों कर कहा, क्या यह धर्मलाज वज्रत सस्ता है, तब आचार्यनें कहा यह धर्मलाज क्रोमचिंतामणि रत्नोंसेंजी अधिक है जो कोई हमकों वंदना करता है उसकों हम धर्मलाज कहते हैं और ऐसंजी नहीं जो तुमने हमकों वंदना नहीं करी तुमनेंजी अपने मनसें वंदना करी, तो मनही सर्व कार्यमें प्रधान है, इस वास्ते हमनें धर्म लाज कहा है, और तुमनें मेरी परीक्षा वास्तेही मनमें नमस्कार करा है, तब विक्रमराजा तुष्टमान होकर, हाथीसें नीचे उतरकर सर्वसंघकी

समझ बंदना करी, और एक क्रौम अशफी दीनी, परंतु आचार्यने अशफीयां नही लीनी, क्योंकि वे त्यागी थे, और राजाजी पीठा नही लेता, तब आचार्यकी आज्ञासें संघपुरूपोनें जीर्णोद्धारमें लगादीनी, राजाके दफतरमें तो ऐसा लिखा है ॥ श्लोक ॥ धर्मलाज इतिप्रोक्ते, दूरा उन्नित पाणये ॥ सूरये सिद्धसेनाय, ददौकोटिं धराधिपः ॥ १ ॥ श्री विक्रमराजाके आगे सिद्धसेन दिवाकरनें ऐसैनी कहा था कि ॥ गाथा ॥ पुणे वास सहस्ते । सधंभि वरिसाण नवनवइकए ॥ होई कुमार नरिंदो, तुहविक्रमराय सारिस्थो ॥ १ ॥ अन्यदा सिद्धसेन चित्रकूटमें गये, तहां वज्रत पुराने जिनमंदिरमें एक बम्हा मोटा स्थंज देखा, तब किसीकों पूछा कि यह स्थंज किसतराका है, यह सुनकर किसीनें कहा कि यह स्थंज औपध द्रव्यमय जलादि करके अनेक वज्रवत् है, इस स्थंजमें पूर्वाचार्योंनें वज्रत रहस्य विद्याके पुस्तक स्थापन करे है, परंतु किसीसें यह स्थंज खुलता नही यह सुनकर सिद्धसेन आचार्यनें तिस स्थंजकों सूंघा तिसकी गंधसें तिसकी प्रतिपक्षी औपधियोंका रस, तिससें वो स्थंज कमलकी तरें खिन्न गया तब तिसमें पुस्तक देखा, तिसमें सुं एक पुस्तक लेकर बांचा, तिसके प्रथम पत्रमें दो विद्या लिखी पाई, एक सरसों विद्या, और दूसरी सुवर्णविद्या, तिसमें सरसों विद्या उसकों कहते है कि, जो काम पमे तब मंत्रवादी जि तने सरसोंके दाने जपके जलाशयमें गेरे, उतनेही अश्वार वैतालीश प्रकार के आयुधों सहित बाहिर निकलके मैदानमें खमे हो जाते हैं तिनोंसें शत्रुकी सेना जंग हो जाती है, पीठे जब वो कार्य पूरा हो जाता है तब अश्वार अदृश्य हो जाते हैं, और दूसरी हेमविद्यासें विनामेहनतके जितना चाहे, उतना सुवर्ण हो जाता है तब ये, दो विद्या सिद्धसेननें लेलीनी, पीठे जब आगे बांचने लगा, तब स्थंज मिला गया सर्व पुस्तक चीचमें रह गये, और आकाशसें देव वाणी ऊई, कि तूं इन पुस्तकोंके वाचने योग्य नही आगे मत बांचना, बांचंगा तो तत्काल मर जायगा, तब सिद्धसेनने मरके विचार करा कि दो विद्या मिली दोही सही, पीठे चित्रोमसें विहार करके पूर्वदेशमें कुमार पुरमें गये, तहां देवपाल राजा था तिसकों प्रतिबोधके पक्षा जैन धर्मी करा, तहां वो राजा सिद्धांत श्रवण करता है, जब ऐसै कितनाक

काल व्यतीत हुआ, तब एकदा समय राजा ठना आया, और आंसुसे नेत्र जरकर कहने लगा कि:— हे जगवन् हम वमे पापी हैं, क्यों कि आपकी ऐसी उत्तम गोष्ठिका रस नही पीसके हैं कारण कि हम वमे संकटमें पड़े हैं, तब आचार्यने कहा तुमकों क्या संकट हुआ, राजा क हने लगा कि वज्रत मेरे वैरी राजे एकठे होकर मेरा राज्य ठीना चाहते हैं, तब फेर आचार्यने कहा, कि हे राजन् तू आकुल व्याकुल मत हो, जब मैं तेरा साहाय कहों तो फेर तुझे क्या चिंता है, यह बात सुनकर राजा वज्रत राजी हुआ, पीठे आचार्यने राजाकों पूर्वोक्त दोनों विद्यायोंसे समर्थ कर दीया, तिन विद्यायोंसे परदल जंग हो गया तिनका मेरा रुना सर्व राजानें लूट लीया, तब राजा आचार्यका अत्यंत नक्त हो गया, उससे आचार्य सुखोंमें पड़के शिथिलाचारी होगया, यह स्वरूप वृद्धवादी जीनें सुना, पीठे दया करके तिनका उद्धार करने वास्ते तहां आये दरवाजे आगे खड़े होकर कहला जेजा कि एक बूढा वादी आया है, तब सिद्ध सेनने बुलाकर अपने आगे बैठाया वृद्धवादी सर्व अपना शरीर वस्त्रसे ढांक कर बोले:—“अण फुल्लियफुल्लमतोमहिं” मारोवामोमिहिंमणुकुसुमेहिं ॥ अ च्चिनिरंजणंजिण, हिंमहिकाइवणेणवणु ॥ १ ॥ इस गाथाकों सुनकर सिद्ध सेनने विचारजी करा परंतु अर्थ न पाया तब विचार करा कि क्या यह मेरे गुरु वृद्धवादी हैं जिनके कहेका मैं अर्थ नही जानता हूं पीठे जब बार बार देखने लगा तब जाना कि यह मेरा गुरु है पीठे नमस्कार करके कृमापन मांगा, और पूर्वोक्त श्लोकका अर्थ पूछा तब वृद्धवादी कहने लगे “अणफुल्लियेत्यादि” अणफुल्लियफुल्ल प्राकृतके अनंत होनेसे अप्राप्त फूल फलोंकों मत तोम, जावार्थ यह है कि योग जो है, सो कल्पवृक्ष है, किसतरे कि जिस योग रूप वृक्षमें तप नियम तो मूल है, और ध्यान रूप वना स्कंध है, तथा समता पणां कविपणां, वक्तापणां, यश, प्रताप, मरण, उच्चाटन, स्तंजन, वशीकरणादि सिद्धियों कि जो सामर्थ्यां सो फूल है, अरु केवलज्ञान फल है, इससे अच्छी तो योगकल्पवृक्षके फूलही लगे हैं सो केवल ज्ञानरूप फल करके आगे फलेगे, इसवास्ते तिन अप्राप्त फल पुष्पोंकों क्यों तोमता है अर्थात् मत तोम ऐसा जावार्थ है, तथा “मारोवा

मेनिहिं" जहां पांच महाव्रत आरोपा है तिनकों मत मरोम "म  
 पुकुसुमे त्यादि" मयरूप फूलें करी निरंजनं जिनं पूजय (निरंजन  
 जिनकों पूज) "वनात् वनकिंहिंमसे" राजसेवादि बुरे नीरस फल क्यों  
 करता है इति पयार्थ, तव सिधसेन सूस्निं गुरु शिक्षाकों अपने शिर  
 ऊपर धरके और राजाकों पूढके वृद्धवादी गुरुके साथ विहार कर, और  
 निविम चारित्र धारण करा, अनेक आचार्योंसँ पूर्वीका ज्ञान सीखा, एकदा  
 सिधसेनजीनिं सर्वसंघकों एकठो करके कहा कि तुम कहोतो सर्वा  
 गर्मोंकों में संस्कृत ज्ञापामें कर देउ, तव श्रीसंघने कहा क्या तीर्थकर  
 गणधर संस्कृत नदी जानते थे, जो तिनहोनें अर्धमागधी ज्ञापामें  
 आगम करे ऐसी बात कहनेसँ तुमको पारांचिक नाम प्रायश्चित्त लागा  
 हम तुमसँ क्या कहें तुम आपही जानते हो, तव सिधसेनने गुरुका वचन  
 प्रमाण करके कहा कि, मैं मौन करके वारावर्षका पारांचिक नाम प्राय  
 श्चित्त लेके गुप्त मुख वस्त्रिका, रजोहरणादि लिंग करके और अवधूत रूप  
 धारके फिरेगा, ऐसँ कह कर गच्छकों ठोमके नगरादिकोंमें पर्यटन करने  
 लगे, वारा वर्षके पर्यंतमें उज्जयिन नगरीमें महाकालके मंदिरमें शेफालि  
 काके फूलों करके वस्त्ररंगे पहने ऊए सिधसेनजी जाके बैगा, तव  
 पूजारी प्रमुख लोकोंने कहा तुम महादेवकों नमस्कार क्यों नहीं करता  
 सिधसेन तो बोलतेही नहीं हैं ऐसँ लोकोंकी परंपरासँ सुनकर विक्रमादी  
 त्यनेजी तहां आकर कहा "क्षीरलिलिक्षो जिक्षो किमिति त्वया देवोनबंधते"  
 तव सिधसेनने कहा मेरे नमस्कारसँ तुमारे देवका लिंग फट जायगा फेर  
 तुमकों महाडुःख होवेगा, मैं इस वारते नमस्कार नहीं करता ऊं तव  
 राजानें कहा लिंग तो फट जानेदो परंतु तुम नमस्कार करो पीठे सिध  
 सेनजी पद्मासन बैठके कहने लगा, तथाहि ॥ श्लोक इंद्रवज्रा वृत्त ।  
 स्वयंभुवं भूतसहस्रनेत्र, मनेकमेकाक्षरजाबलिंगं ॥ अव्यक्तमध्याहत विश्व  
 लोक, मनादिमध्यांतमपुण्यपापं ॥ २ ॥ इत्यादि प्रथमही श्लोक पढनेसँ  
 लिंगमेंसँ धूँआ निकला, तबलोक कहनें लगे शिवजीका तीसरा नेत्र  
 खुला है, अंब इस जिह्वाओं अग्निनेत्रसँ जस्मकरेगा, तव तो विजलीके  
 तेजकी तरें तन्मत्ताट करता प्रथम अग्नि निकला, पीठे श्रीपार्श्वनाथजीका

बिंब प्रगट हुआ, तब वादी सिद्धसेनने कल्याणमंदिर नवीन स्तवन करके कृमापन मांगा, तब राजा विक्रमादित्य कहने लगा कि हे जगवन् यह क्या अदृश्यपूर्व देखनेमें आया यह कौनसा नवीन देव है और यह प्रगट क्यों कर हुआ, तब सिद्धसेनजीने कहा, अवंतीसुकुमालका पुत्र महाकालने पिताके नामसे अवंती पार्श्वनाथका मंदिर और मूर्ति बनाय स्थापन करी थी, तिसकी कितनेक वर्ष लोकोने पूजा करी, अब सर पाकर ब्राह्मणोंने जिनप्रतिमाकों हेठ दावके ऊपर यह शिवलिंग स्थापन करा इत्यादि सर्व वृत्तांत कहा, और हे राजन् इस मेरी स्तुतिसँ शासन देवताने शिवलिंग फामके बीचमेंसे यह प्रतिमा प्रगट कर दीनी, अब तू सत्यासत्यका निर्णय कर ले, तब विक्रमादित्यने एकसौ गाम मंदिरके खरच वास्ते दीये और देवके समक्ष गुरु मुखसे वारा व्रत ग्रहण करे, और सिद्धसेनकी वज्रत महिमा करी अपने स्थानमें गया और वादीद्र ( सिद्ध सेनदिवाकरकों ) गुरुने जिनधर्मकी प्रज्ञावनासें तुष्टमान होकर संघमें ली या, अरु पूर्ववत् आचार्य बनाया ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एकदा प्रस्तावे सिद्धसेन दिवाकर विहार करते ऊँचे मालवेके देशमें जो नै कारनामें नगर है, तहां गये तिस नगरके ज्ञात श्रावकोने आचार्यकों विनती करी, जैसे हे जगवन् इसी नगरके समीप एक गाम था, तिसमें सुंदर नामा राजपुत्र ग्रामणी था, तिसकी दो स्त्रीयां थी, एक स्त्रीके प्रथम पुत्री जन्मी वो स्त्री मनमें खीजी तिस अवसरमें उसकी सौकनत्री प्रसूत होनेवाली थी, तब तिस बेटीवालोंने विचारा कि इसके पुत्र न होवे तो ठीक है, क्यों कि नही तों यह पतिकों बल्लभ हो जावेगी, तब दाईसें मिलके उससे पैदा हुआ पुत्रकों बाहिर गिरा दीया, और तत्कालका मरा हुआ लम्का उसके आगे रख दीया, पीछे जो लम्का बाहिर गिरा गया था, उसकों कुलदेवीने गौकारूप करके पाला जब आठ वर्षका हुआ तब इस नैकार नगरके शिवजननके अधिकारी नरटने देखा और अपना चेला बना लीया, एकदा प्रस्तावे कन्यकुब्ज देशका आंखोंसे आंधा राजाने दिग् विजय कार्यसें तहां पमाव करा तब रात्रिमें उस ठोटे चेलेकों शिवजन्त व्यंतर देवताने कहा कि शेष जोगराजाकों देना उसकी आंख

अन्नी हो जावेगी तैसँही करा तिससँ राजाकी आंख अन्नी होगई तव राजाने सो गाम मंदिरके खरच वास्ते दीये और यह वना ऊंचा जो शिव का मंदिर है सोजो उसीने वनवाया, और हम इस नगरमें रहते हैं परंतु मिथ्या दृष्टियोंके बलवान् होनेसँ हम जिनमंदिर बनाने नहीं पाते हैं इस वास्ते आपसँ वीनती करते है, कि इस मंदिरसँ अधिक हमारा मंदिर यहां बने तो ठीक है, और आप सर्वतरसँ सामर्थ्य हो तिनका वचन सुनकर बादिंद्रने अवन्तीमें आकर चार श्लोक हाथमें लेकर विक्रमादित्यके द्वार पास आये, दरवाजे द्वारके मुखसँ राजाको कहाया “दिदृक्षु जिक्षुरायात । स्ति एति द्वारवारितः । हस्तन्यस्तचतुः श्लोकः । उतागुप्तुगुप्तु ॥ १ ॥ तिस श्लोक को सुनकर विक्रमादित्यने वदलेका श्लोक लिखकर भेजा ” दत्तानिदशलक्ष्णा णि, शासनानिचतुर्दश ॥ हस्तन्यस्तचतुः श्लोकः ॥ उतागुप्तुगुप्तु ॥ २ ॥ तिस श्लोकको सुनकर आचार्यने कहा भेजा कि, जिह्वा तुमको मिला चाहता है, परंतु धन नहीं लेता, तव राजाने सन्मुख बुलवाये और पित्रानके कहने लगा, कि गुरुजी वज्रत दिनों पीठे दर्शन दीया, तव आचार्य कहने लगे धर्मकार्यके करनेसँ वज्रत दिन ऊये चिरसँ आना ऊआ, अब चार श्लोक तुम सुनो ॥ अपूर्वेयं धनुर्विद्या, प्रवताशिक्षिता कुतः ॥ मार्गणौघः समज्येति, गुणोयातिदिगंतरे ॥ १ ॥ सरस्वती स्थितावके, लक्ष्मीकरसरो रहे ॥ कीर्त्तिःकिंकुपिता राजन् । येन देशांतरेगता ॥ २ ॥ कीर्त्तिस्तेजांतजा ड्येव, चतुरंजोधिमज्जनात् ॥ आतपाय धरानाथ, गतमार्त्तममंमलं ॥ ३ ॥ सर्वदासर्वदोसीति, मिथ्या संस्तूयसेजनैः ॥ नारयोलेजिरे पृष्ठ । नवक्षपरयो पितः ॥ ४ ॥ यह चारों श्लोक सुनके राजा वज्रत खुश ऊआ, और आचार्यको कहने लगा, जो मेरा राज्यमें सार है, सो मांगो तो देदेऊ, तव आचार्यने कहा मुझेतो कुछभी नहीं चाहता, परंतु उँकार नगरमें चतुर्द्वार जैनमंदिर शिवमंदिरसँ ऊंचा बनान, और प्रतिष्ठाभी कराऊ, तव राजाने वैसँही करा तव जिनमत प्रभावना देखके संघ तुष्टमान ऊआ, इत्यादि प्रकारसँ जैनधर्मकी प्रभावना करते ऊए दक्षिणदेशमें प्रतिष्ठानपुरमें जाकर अनशन करके देवलोक गये, तव तहांसँ संघने एक नदको सिद्धसेनकी गङ्गा पास खबर करनेको भेजा तिस नदनें सूरियोंकी सजामें आधा श्लोक



पढा और बार बार पढताही रहा, वो आधा श्लोक यह है:- स्फुरति  
वादिखद्योताः । सांप्रतं दक्षिणापथे ॥ जब बार बार यह अर्धा श्लोक सुना  
तव सिद्धसेनकी वहिन साधवीनें सिद्ध सारस्वत मंत्रसें अर्ध श्लोक पूरा  
करा । नूनमस्तगतोवादी । सिद्धसेनोदिवाकरः ॥ १ ॥ पीठे तिस जहनें सर्व  
वृत्तांत सुनाया, तव संबंधों वना शोक हुआ ॥ इति सिद्धसेन दिवाकरका  
प्रसंगसें संबंध कथन करा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यह श्रीआर्य सुहस्ति आचार्य तीस वर्ष गृहस्थ्यावासमें रहे, और  
चौबीसवर्ष व्रत पर्याय तथा ठैतालीश वर्ष युगप्रधान पदवी सर्व मिलकर एकसौ  
वर्षकी आयु भोगके श्रीमहावीरसें दोसौ एकानवे ( १९१ ) वर्ष पीठे स्वर्ग  
गये, ११ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ १२ श्रीआर्य सुहस्ति सूरिके पाठऊपर, श्रीसुस्थित सूरि  
हुवा तिनोनें क्रोमोंवार सूरिमंत्रका जापकरा, इसवास्ते गह्वका को  
टिक, ऐसा दूसरा नाम श्रीसंघनें रक्खा, क्योंकि श्री सुधर्मस्वामीसें लेकर  
दशपाठतक तो अनगार निग्रंथगह्व नाम था, पीठे दूसरा कोटिक गह्वनाम हुआ

॥ ❀ ॥ १३ श्रीसुस्थितसूरिके पाठ ऊपर श्रीइंद्रदिनसूरि हुआ, इस  
अवसरमें श्री महावीरसें चारसौ त्रेपन ( ४५३ ) वर्ष पीठे गर्दभिह्वरा  
जाके उठेद करणैवाला, दूसरा कालिकाचार्य हुआ, इसकी कथा कल्प  
सूत्रमें प्रसिद्ध है, और श्रीमहावीरसें ( ४५३ ) वर्ष पीठे जृगुकह्व ( जमों  
चमें ) श्रीआर्य खपुटाचार्य विद्याचक्रवर्त्ती हुआ, इनका प्रबंध श्रीप्रबंध  
चिंतामणिग्रंथ, तथा हारिचंद्री आवश्यककी टीकासें जान लेना, और  
( ४६० ) वर्ष पीठे आर्यमंगु, दृष्टवादी, पादलिप्त तथा कल्याण  
मंदिरका कर्त्ता ऊपर जिसका प्रबंध लिख आये सो सिद्धसेन दिवाकर  
हुआ, जिनोंने विक्रमादित्यको जैनधर्मी करा सो विक्रमादित्य श्री महा  
वीरसें ( ४७० ) वर्ष पीठे हुआ, सो ( ४७० ) वर्ष ऐसें हुए है-  
जिस रात्रिमें श्रीमहावीरजी निर्वाण हुए, उस दिन अवंति नगरीमें पालक  
नामा राजाको राज्याभिषेक हुआ, यह पालक चंद्रप्रद्योतका पोता था  
तिसका राज्य (६०) वर्ष रहा, तिसके पीठे श्रेणिकका वेठा कोणिक और  
कोणिकका वेठा उदायी जब बिना पुत्रके मरा, तब तिसकी गद्दी उपर नंद

नामा नाइ वैठा, तिसकी गद्दीमें सर्व नंदनामा नव राजे ऊए, तिनका राज्य ( १५५ ) वर्ष तक रहा, नवमें नंदकी गद्दी ऊपर मौर्यवंशी चंद्रगुप्त राजा ऊआ, तिसका बेटा विंडुसार, तिसका बेटा अशोक, तिसका बेटा कुणाल तिसका बेटा संप्रति महाराजादि ऊए, इन मौर्यवंशीयोंका सर्व राज ( १०८ ) वर्ष तक रहा, यह पूर्वोक्त सर्व राजे प्रायें जैनमत वाले थे, तिनके पीछे तीस वर्ष तक पुष्पमित्र राजाका राज्य रहा, तिस पीछे वलमित्र ज्ञानुमित्र, यह दोनों राजाका राज्य ( ६० ) वर्ष तक रहा, तिस पीछे ननवाहन राजाका राज्य ( ४० ) वर्ष तक रहा, तिस पीछे तेरा वर्ष गर्दभिद्धका राज्य रहा, और चार वर्ष शकोंका राज्य रहा, पीछे विक्रमादित्यने शकोंको जीतके अपना राज्य जमाया, यह सर्व ( ४७० ) वर्ष ऊए ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ १४ श्री इंद्रदिन सूरिके पाठ ऊपर श्रीदिनसूरि ऊये ॥

॥ ✽ ॥ १५ श्रीदिन सूरिके पाठ ऊपर, श्रीसिंहगिरी सूरि ऊये ॥

॥ ✽ ॥ १६ श्रीसिंहगिरिजीके पाठ ऊपर श्रीवज्रस्वामी हूये, जिनको वाढ्यावस्थासें जातिस्मरण ज्ञान था, और आकाशगामनी विद्यानी थी, जिनोंने दूसरे वारावर्षीकालमें संघकी रक्षा करी, तथा जिनोंने दक्षिणपंथमें बौद्धोंके राज्यमें श्रीजिनेंद्रपूजावास्ते फूल लाके दीये, बौद्धराजाको जैनमती करा, यह आचार्य पीठला दशपूर्वका पाठक ऊआ, जिनसें हमारी वज्रीशाला उत्पन्न ऊई, इनका प्रबंध आवश्यक वृत्तिसें जान लेना, सो वज्रस्वामी श्रीमहावीरसें पीछे चार सौ ठानवे, और विक्रमादित्यके संवत् ठवीसमें जन्मे, और आठ वर्ष घरमें रहे, चौतालीस वर्ष सामान्य साधुव्रतमें रहे, और ढ्ठीस वर्ष युगप्रधान पदवी में रहे, सर्वायु अंगशी वर्षकी जोगी, तथा इन आचार्यके समयमें जावन शाह सेठनें श्री शत्रुंजय तीर्थका विक्रम संवत् ( १०८ ) में तेरहवा वना उधार करा, तिसकी श्रीवज्रस्वामीनें प्रतिष्ठा करी, यह श्रीवज्रस्वामी श्रीमहावीरसें ( ५८४ ) वर्ष पीछे स्वर्ग गये, इन श्री वज्रस्वामीके समयमें दशमा पूर्व, और चौथा संहनन, और संस्थान, व्यवहृद होगये, यहां श्री सुहस्ती सूरि सें लेके श्रीवज्रस्वामी तक अपर पढावलियोंमें १ श्रीगुणसुंदरसूरि, २ श्रीकालिकाचार्य, ३ श्रीस्कंधलाचार्य, ४ श्रीरिवतीमित्र, सूरि, ५ श्रीधर्मसरि, ६ श्रीनद्रगुप्ताचार्य, ७ श्रीगुप्ताचार्य, यह सात क्रमसें

युगप्रधान आचार्य ज्ञये, तथा श्रीमहावीरसें पांचसौ तेतीस ( ५३३ ) वर्ष पीठे श्रीआर्यरक्षितसूरिनें सर्व शास्त्रोंके अनुयोग पृथग् पृथग् कर दीये ये प्रबंध आवश्यक वृत्तिसें जान लेना, तथा श्रीमहावीरसें ( ५४८ ) में वर्ष त्रैराशिके जीतनेवाले श्रीगुप्त सूरि ज्ञये, तिनका प्रबंध उत्तराध्यनकी वृत्ति, तथा श्रीविशेषावश्यकसें जान लेना, जिसनें त्रैराशिक मत निकाला तिसका नाम रोहगुप्त था, वो श्रीगुप्तसूरिका चेला था, जिसका उल्लूक गोत्र था जब रोहगुप्त गुरुके आगे हारा, और मत कदाग्रह न लेना तब अंतरंजिका नगरीके वल्लभीराजानें अपने राज्यसें बाहिर निकाल दीया, तब तिस रोहगुप्तनें कणाद नामा शिष्यकरा, उसको १ द्रव्य, २ गुण, ३ कर्म, ४ सामान्य, ५ विशेष, ६ समवाय, इन षट् पदार्थोंका स्वरूप बतलाया, तब तिस कणादनें वैशेषिक सूत्र बनाये तहासें वैशेषिक मत चला ॥

॥ ❀ ॥ १७ श्रीवज्र स्वामीके पाट ऊपर श्रीवज्रसेन सूरि बैठे, वे डिर्जिहमें श्रीवज्रस्वामीके वचनसें सोपारक पत्तनमें गये, तहां जिनदत्तके घरमें ईश्वरी नामा तिसकी जार्यानें लाख रूपकके खरचनेसें एक हांमी अन्नकी रांधी, जिसमें विष ( जहर ) मालने लगी, क्योंकि उनोंने विचारा था कि अन्न तो मित्रता नहीं तिसवास्ते जहर खाके सर्व घरके आदमी मरजायेंगे तिस अवसरमें श्रीवज्रसेनसूरि तहां आये, वो उनको कहनें लगे कि तुम जहर मत खाइ कलकों सुगाल हो जावेगा तैसेंही ऊआ तब तिन शेरठके चार पुत्रोंने दीक्षा लीनी तिनके नाम लिखते हैं:- १ नागेंद्र, २ चंद्र, ३ निवृत्त, ४ विद्याधर, तिन चारोंसें स्वस्व नामके चार कुलबने यह वज्रसेनसूरि नववर्ष तक गृहस्थावासमें रहे और ( ११६ ) वर्ष समान साधुव्रतमें रहे, तथा तीन वर्ष युग प्रधान पदवीमें रहे सर्वायु ( १२८ ) वर्षकी जोगके श्री महावीरसें ( ६२० ) वर्ष पीठे स्वर्ग गये, तथा श्री वज्रस्वामी और वज्रसेन सूरिके बीचमें, आर्य रक्षित सूरि तथा श्रीडुर्बलिका पुष्यसूरि, यह दोनों युग प्रधान ज्ञये, श्रीमहावीरसें ( ५८४ ) वर्ष पीठे गोष्ठा माहिल सातमांनिन्हव ज्ञवा, तथा श्रीमहावीरसें ( ६०९ ) वर्ष पीठे श्रीरुष्णसूरिका शिष्य शिवभूति नामें था, तिसनें दिगंबर मत प्रवृत्त करा, सो अधिकार विशेषावश्यादिकोंसें जान लेना ॥ ❀ ॥

॥ ॐ ॥ १८ श्रीवज्रसेन सूरिके पाठ ऊपर श्रीचंद्रसूरि बैठा, तिनके नामसे गञ्जका तीसरा नाम चंद्रगञ्ज हुआ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ( १९ ) श्रीचंद्रसूरिके पाठ ऊपर श्री सामंतनद्रसूरि झये, सो पूर्वगत श्रुतिके जानकार थे ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ २० श्रीसामंतनद्र सूरिके पाठ ऊपर, श्रीदेव सूरि झये, तथा श्रीमहावीरसें ( ५९६ ) वर्ष पीछे कोरंट नगरमें तथा सत्यपुरमें नाहमन्त्रीने मंदिर बनवाया, प्रतिमाकी प्रतिष्ठा जज्जक सूरिनें करी, प्रतिमा श्रीमहावीरकी स्थापन करी जिसकों " जयन वीरसत्त्वनरिमंडण कहते हैं ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ २१ श्रीवृद्धदेवसूरिके पाठ ऊपर श्रीप्रद्योतनसूरि झये ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ २२ श्री प्रद्योतन सूरिके पाठ ऊपर, श्रीमानदेवसूरिझये, इनके सूरिपद स्थापनावसरमें दोनों स्कंधोंपर सरस्वती और लक्ष्मी साक्षात् देख कें यह चारित्रसें द्रष्ट हो जावेगा ऐसा विचार करके खिन चित्त गुरुकों जानके गुरुके आगे ऐसा नियम करा कि:— नक्तिवाले घरकी नित्ता और दूध, दही, घृत, मीठा, तेल, अरु सर्व पक्काजका त्याग कीया, तब तिनके तपके प्रज्ञावसें नामोल पुर जो पालीके पास है तिसमें १ पञ्चा, २ जया, ३ विजया, ४ अपराजिता, ५ चार नामकी चार देवी सेवा करती देखी, कोइ मुख कहने लगा कि ए आचार्य स्त्रीयोंका संग क्यों करता है तब तिन देवीयोंने तिसकों सिद्धा दीनी, तथा तिसके समयमें तिक्हिला नगरीमें वज्रत श्रावक थे तिनमें मरीका उपद्रव हुआ तिसकी शांतिकेवास्ते श्री मानदेव सूरिनें नामोल नगरीसें शांतिस्तोत्र बजाकर जेजा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ २३ श्री मानदेवसूरिके पाठ ऊपर श्री मानतुंगसूरि झये, जि नोंने नक्तामर स्तवन करके, वाण अरु मयूर पंक्तिोंकी विद्या करके चमत्कृत हुआ जो वृद्ध भोजराजा तिनकों प्रतिवधा, और जयहर स्तवन करके नागराजाकों वश करा, तथा नत्तिनरेत्यादि स्तवन जिनोंने करे हैं ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ २४ श्रीमानतुंगसूरिके पाठ ऊपर श्री वीरसूरि बैठा सो वीरसूरिनें श्री महावीरसें ( ७७० ) वर्षमें तथा विक्रम संवत्के तीनसौ वर्ष पीछे नागपुरमें श्रीनमि अर्हतकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा करी, यदुक्त ॥ आर्या ॥ ना

गपुरे नमिजवन, प्रतिष्ठयामहितपाणिसौजाग्यः ॥ अजवदीराचार्य, सिद्धिः  
शतैः साधिके राज्ञः ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ २५ श्री वीरसूरिके पाठ ऊपर श्री जयदेवसूरि बैठे, ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ २६ श्रीजयदेवसूरिके पाठ ऊपर श्री देवानंदसूरि बैठे, इस  
अवसरमें श्रीमहावीरसें ( ८४५ ) वर्ष पीठे बल्लभी नगरी जंग ऊई,  
तथा ( ८८१ ) वर्ष पीठे चैत्येस्थिति, तथा ( ८८६ ) वर्ष पीठे ब्रह्मचीपिका  
शाखा ऊई ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ २७ श्रीदेवानंदसूरिके पाठ ऊपर श्री विक्रमसूरि बैठे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ २८ श्रीविक्रमसूरिके पाठ ऊपर श्री नरसिंहसूरि बैठे, यतः ॥  
नरसिंहसूरिरासी, दतोऽखिलग्रंथपारगोयेन ॥ यत्कोनरसिंहपुरे, मांसरतिस्त्या  
जितास्वगिरा ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ २९ ॥ श्रीनरसिंहसूरिके पाठ ऊपर श्रीसमुद्रसूरि ऊए ॥  
॥श्लोकः ॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥ खोमीणराज कुलजोपि समुद्रसूरि, गच्छं  
शशास किल यः प्रवणः प्रमाणी ॥ जित्वातदा कृपनकान् स्ववशं वितेने  
नागद्गुदेजगनाथनमस्यतीर्थम् ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ३० श्रीसमुद्रसूरिके पाठ ऊपर श्रीमानदेवसूरि ऊए ॥ श्लोकः ॥  
वसंततिलकावृत्तम् ॥ विद्यासमुद्रहरिन्द्रमुनीन्द्रमित्रं, सूरिर्वज्रवपुनरेवहि  
मानदेवः ॥ मांया त्रयातमपियोनघसूरिमित्रं, लेनेविकामुखगिरा तपसोऊयंते  
॥ १ ॥ श्रीमहावीरसें एक हजार वर्ष पीठे सत्यमित्र आचार्यके साथ  
पूर्वोका व्यवहृद ऊआ, यहां १ श्री नागहस्ति, २ रेवतीमित्र, ३ ब्रह्मचीप,  
नागार्जुन, ५ नूतदिन्न, ६ श्री कालकसूरि, ये है युगप्रधान यथाक्रमसें  
श्रीवज्रसेनसूरि और सत्यमित्रके बीचमें ऊए, इन पूर्वोक्त है युगप्रधानोंमेंसें  
शक्रान्निवंदित श्रीकालिकाचार्य श्रीमहावीरसें ( ९९३ ) वर्ष पीठे पंचमीसें  
चौथकी संवत्सरी करी, तथा श्री महावीरात् ( ९८० ) वर्ष पीठे एक  
पूर्व विद्या धारक युगप्रधान श्री देवर्द्धिगणिः कृमाश्रमण ऊए जिणोंने  
शाशन देवके सहायसें सर्व साधुवोकों इकठा करके सर्व सिद्धांत पुस्तकोंमें  
लिखाया इससें यह बने प्रवचन प्रज्ञावीक ऊए, तथा श्री महावीरात्  
( १०५५ ) वर्ष पीठे, और विक्रमादित्यसें ( ५८५ ) वर्ष पीठे, यकनी सा

धवीका धर्मपुत्र श्रीहरिचन्द्र सूरि स्वर्गवास हुए, ये आवश्यकजी मूलसुत्रादि ककी बनी टीकाका, तथा ( १४४४ ) प्रकरणोंका कर्ता हुए ॥  
तथा ( १११५ ) वर्ष पीछे श्री जिनचन्द्रगणि युगप्रधान हुआ,

॥ ✽ ॥ ३१ श्री मानदेवसूरिके पाठ ऊपर, श्रीविबुधप्रज्ञसूरि हुआ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ३२ श्रीविबुधप्रज्ञसूरिके पाठ ऊपर, श्री जयानंदसूरि हुआ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ३३ श्रीजयानंदसूरिके पाठ ऊपर, श्रीरविप्रज्ञसूरि हुआ, सो महावीरसें पीछे ( ११७० ) वर्ष और विक्रमसंवत्सें ( ७०० ) वर्ष पीछे, नामोल नगरमें श्रीनेमिनाथका प्रासाद ( मंदिरकी ) प्रतिष्ठा करी, तथा श्रीवीरात् ( ११९० ) वर्ष पीछे ऊमास्वाति युगप्रधान हुआ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ३४ श्रीरविप्रज्ञसूरिके पाठ ऊपर, श्रीशोदेवसूरि बैठे, यहां श्रीमहावीरसें ( १२७१ ) वर्ष पीछे, और विक्रम संवत्सें ( ८०१ ) के सालमें अणहल पुर पढ़न वनराज राजेने बसाया, वनराज जैनी राजा था, तथा श्रीवीरात् ( १२७० ) और विक्रमादित्यके संवत् ( ८०० ) के सालमें ज्ञाद्रपद शुद्ध तीजके दिन वप्पचन्द्र आचार्यका जन्म हुआ, जिसने गवालियरके आम नामा राजाकों जैनी बनाया, इनका विशेष चरित्र प्रबंध चिंतामणि ग्रंथसें जान लेना ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ३५ श्रीशोचन्द्र सूरिपढ़े, श्रीविमलचंद्र सूरि हुआ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ३६ श्रीविमलचंद्र सूरिकेपाठऊपर श्रीदेवसूरिहुआ ये उपधान वाच्य ग्रंथकाकर्ता और तिसकाल आश्रय सिथलाचार मार्गकों त्याग करके शुद्धमार्ग धारन करनेवाले हुए इससें सुविहित पद्ध प्रसिद्ध नया

॥ ✽ ॥ ३७ श्रीदेवसूरि पढ़े, श्रीनेमिचंद्र सूरि हुये ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ३८ श्रीनेमिचंद्र सूरिके पाठ ऊपर, श्रीउद्योतन सूरि हुए ॥ इणोंसें ८४ गङ्गाकी थापना हुई ॥ इसका स्वरूप किंचित लिख ताऊं ॥ श्रीउद्योतन सूरजी महाराजकों शुद्ध क्रियापात्र बने विद्वान् जाणके उर ८३ साधुवोंका शिष्य आयके महाराजके पास पढ़नें लगे ॥ और तिस अवसरमें एक अंजोहरनामा देशमें जिनचंद्रनामें आचार्य शिथला चारी चैत्यवासीथा, जिसके एक वर्द्धमानमुनि नामें शिष्य था, सो वर्द्धमान मुनि आगमकों पढ़ते जहां ( ८४ ) चौराशी आशातनाका अधिकार

देखा कि जगवानके मंदरमें चौरासी आशातना न करनी, तब अपना गुरुसँ पूछा कि हे स्वामी आशातनाका तो ऐसा विचार लिखा है, और आपां मंदरमें रहते हैं, मंदिरोंमें रहनेसँ कोई आशातना बचसक्ती नहीं है इससँ ऐसा आचार तो मेरे दिलमें रुचता नहीं, तब गुरुने अनेक युक्तिसँ समझाया, परंतु वर्द्धमान मुनिका चित्त शिथलाचार ठोमके शुद्ध मार्ग धारन करनेका जया, सर्व स्थानके आचार्योंकी गवेषणा करी तब श्रीउद्योतन सूरजी महाराजकों शुद्ध मार्गानुसारी क्रियावंत सुना, इससँ श्रीउद्योतन सूरिमहाराजके पास आयके शिष्य होके रहा ॥ तब गुरुमाहाराज योग उपधान बहायके सर्व सिद्धांत पढाए, अनुक्रमें योग्य जाणके आचार्य पद दीया गह्वलाज्ञादि जाणके उत्तराखंभके विषे विहार करनेकों आज्ञादीवी, तब श्रीवर्द्धमानसूरि गुरुकी आज्ञा पाके उत्तराखंभमें विहार करने लगे, और श्रीउद्योतनसूरि महाराज ( ८३ ) तयांशी साधुवोंका शिष्यादिकके साथ विहारकरता थका मालवादेशका संघके साथ सिद्धगिरी तीर्थकी यात्रा करनेको आया ॥ उहां ऊषजादि सर्व चैत्य विंवोंकों वंदन करके पिठामी प्राजसँ उतरके सिद्धवम्ननीचे रात्रीकों रहे, तब उहां आधी रात्रके समें गामेका आकार ऐसा रोहणीनक्षत्रमें बृहस्यतीका प्रवेश देखके गुरु महाराज कहने लगे, कि यह समय ऐसा उत्तम है, कि जिसके मस्तकपर हाथ करें सो वमा प्रतापीक होय, तब ( ८३ ) साधुवोंका शिष्य बोला कि हमारै मस्तकपर वासचूर्ण करो, हम सर्व आपसँ पढे हैं, इससँ आपकेही शिष्य हैं तब गुरुने कहा कि वासचूर्ण लावो तब शिष्य लोक उंतावलसँ सूके ठाणेंकाचूर्ण करके गुरु माहाराजकों दिया, तब गुरुमाहाराज पिए तिसचूर्णकों मंत्रके तयांशी ( ८३ ) शिष्योंके मस्तकपर कर दिया और अपना अल्प आज्ञा जाणके उसी सिद्धवम्ननीचे अणशण करके देवलोक गए, और तयांसी शिष्य आचार्य पदकों पायके जूदे जूदे देशोंमें साधुवोंके साथ विचरने लगे, इसीतरे १ निजशिष्य, और तयांसी साधुवोंका शिष्य आचार्य पदकों प्राप्त ऊवा, इससँ इहांसँ चौरासी गह्व प्रसिद्ध ऊआ ॥ ये ( ८४ ) चौरासी आचार्य वमे प्रतापीक नए ॥ ३८ ॥

॥३॥ ३९ श्री उद्योतनसूरिपढे, श्री वर्द्धमानसूरि: नए, ये आचार्य पद

कों प्राप्त होके, ठे महिनातक आंखिलकी तपस्या करी-तब घरएँद्र हाजर  
 ऊआ वंदन नमस्कार करके कहनें लगा, कि मेरे लायक कार्य होय सो  
 कहो, तब महाराजनें श्री सीमंघर स्वामीकेपास जेजके सूरिमंत्र मंगवाया,  
 पीठे उहांसें विहार करके सरसापत्तन गए, तिस अवसरमें सोमनामा एक  
 ब्राह्मणके शिवदाश, बुद्धिसागर, नामें दोय पुत्र था, और कल्याणवती  
 नामें एक-पुत्री थी, यह तीनों सोमेश्वर महादेवकों वज्रत ध्यावन किया  
 इससें सोमेश्वर महादेवका अधिष्ठाता आयके हाजर ऊवा, कहा वर मांग  
 तब तीनों बोला हमकों बैकुंठ देवो, तब देव कहनें लगा, कि अजी  
 मुझकों बैकुंठ न मिली है तो तुमकों कहांसें देउ, परं जो तुमकों बैकुंठकी  
 इच्छा होय तो इहां श्री वर्धमान सूरि आएहें उणेंकेपास जावो, तुमकों  
 बैकुंठ जाणेंका मार्ग बतावैगा, ऐसा कहकर देवता अदृश्य हो गया, तब  
 तीनोंजणे स्नान करकै उपाशरै आके गुरू महाराजसें बैकुंठका मार्ग पूछा, तब  
 उसवखत एक जाईके मस्तकपर चोटीमें भेटी मछी स्नान करते रह गई  
 थी सो देखायके विनय, दयामूल जिनधर्मका उपदेश दिया, तब तीनोंजणे  
 प्रतिबोध पायके दिक्कालीवी तब गुरूमहाराज योगादिक बहायके सर्वसि  
 द्धांत पढायके शिवदाशका जिनेश्वर ऐसा नाम करा, एकदा जिनेश्वरनें कहा  
 कि हे स्वामिन् जो आपकी आज्ञा होय तो गुजरात देशमें जावें, उहां जा  
 एंसें वज्रत लाज उत्पन्न होगी, तब श्री वर्धमानसूरि बोला कि गुजरातमें  
 अजी हीनाचारी चैत्यवासियोंका बहोत प्रचार बध गया है, इससें वे लोक  
 अनेक प्रकारसें उपद्रव करेंगे, तब श्री जिनेश्वर बोला कि जूवांके जयसें  
 क्या बख माल देना चाहिये, इससेती आप प्रसन्न चित्तसें आज्ञा देवो,  
 तब गुरू महाराज श्री जिनेश्वर, बुद्धिसागरकों, आचार्यपद देके गुर्जर दे  
 शमें विहार करनेकी आग्या दीवी, तब दोनों गुजरात देशमें विचरणे लगे,  
 और कल्याणवती साधवीकों महत्तरापद देकर साधवीयोंकेसाथ विहार करमें  
 की आग्यादीवी, पीठे श्रीवर्धमानसूरियें १३ तेरे बादशाहोंसें मान पाया  
 ऊआ चंद्रावती नगरी स्थापक, पोरबान गोत्रीय, श्रीविमलमंत्रीकों प्रतिबोध  
 देके जैनधर्मी अपना श्रावक किया, और विद्विन्न ऊवा आयूजी तीर्थकों  
 प्रगट करनेका उपदेश दिया, तब विमलमंत्री गुरूका वचन अंगीकार



करके गुरुकों साथ लेके आवूजी आया, तब उहांके रहीस ब्राह्मण लोक या बात सुनके विमलमंत्रीकों कहनें लगे कि यह हमारा तीर्थ है अर्जी हमारा मंदर है तुमारा मंदर नहिं है, इससें जिनमंदर नहिं होनें देवोंगे, तब गुरुमहाराज एक पुण्यमालामंत्रके विमलमंत्रीके हाथमें दीनी, और कहा कि ब्राह्मणोंनें कहो कि ये सदैवसें जैनका तीर्थ है, जो न मानो तो तुमारी कोई कन्याके हाथमें ये पुण्यमाला देवो, और मुंगर ऊपर फिरो, जिस ठिकाणें तुमारी कन्याके हाथसें फूलमाला गिरपमे जहां हमारा तीर्थ, देव है ॥ इसीतरै करा ॥ जहां फूलमाला पमी उहां पूजाका उपगणसहित तीनप्रतिमा प्रगट जई ॥ १ श्री आदिनाथ स्वामी ॥ २ अंबिकादेवी ॥ ३ चवालीनाथ क्षेत्रपाल ॥ ऐसी तीनप्रतिमाकों प्रगट जई देखके ब्राह्मण लोक बने आश्चर्यकों प्राप्त जए, तथापि ब्राह्मण जातीपणा सें कहनें लगे तुमारा देव है तो देवकी पूजा करो, परंतु मंदर होनेसें तो हम मरमिटेंगे, तब वमा दयाल उत्तम पुरुष विमलमंत्रीनें विचार किया कि ये कोण गिणतीमें है, अर्जी मंदर बना सक्ताऊं, परंतु ये निक्षुक है इनकों क्या जोर देखाऊं, इससें इनोंकों बहोतसा द्रव्य देके, राजी करके जिन मंदर तैयार कराऊं, ऐसा विचारके ब्राह्मणोंकों बज्रतसा धन देके राजी किये, पीठे बज्रमोला मकराणेंका पत्थर मंगवायके, वमा १ बावन ( ५२ ) जिनाला मंदर बनाया, और सारे मंदरमें ऐसी ऊणी कोरणी कराई, जिस मंदरका सर्व पत्थर कोरणी मजूरीका, अठारै ( १८ ) क्रोम ५३ त्रेपन लाख आसरे द्रव्य खरच जूबा, विमलमंत्रीके करानेसे विमलवसहि नाम प्रसिद्ध जूआ, पीठे सर्व तैयार होनेसें सं० १०८८ श्री वर्द्धमानसूरिनें प्रतिष्ठाकरी पीठे अणशण करके उसी वर्षमें देवलोकगए ॥ ३९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ४० श्री वर्द्धमानसूरीके पाटऊपर श्री जिनेश्वरसूरि जए सो सं० १०७९ आचार्य पदकों प्राप्त होके श्री बुद्धिसागरसूरिके साथ मरुस्थल देशमें विहार करके क्रमसें गुर्जर देशमें अणहल्लपुर पट्टण गए, उहां डल्लन राजाका प्रोहत शिवशर्मा नामें ब्राह्मण जो अपना मामाया तिसके घरमें गए, उहां शिवशर्मा ब्राह्मण अपना लमकाकों वेद पदोंका अर्थ बताय रहा था उसमें कितनेक वेदपदोंका उलटा अर्थ बतावें लगा तब गुरुबोला इसमुजब नही

है, हम कहें जिसमुजब है, तब सच्चा अर्थ सुनके प्रोहत बोला कि आपको इस माफक वेदका अर्थको जाणपणो किसतरें ऊबो, आपसंसारी अवस्थामें कौन नगरीको, अरु किसका पुत्र हो, तब महाराजने कहा कि, हम वणा रसी नगरीका, सोम नामें ब्राह्मणका पुत्र हैं, तब शिवशर्मा प्रोहतने पिठाणा, कि येतो मेरा नाणजा है, ऐसा जाणके वज्रत भक्तीमान ऊआ, वज्रमान्त पर्वक अपनै मकानमें रखला, उहां रहते औरनी केई पदार्थोंमें प्रोहत के दिलमें संदेह था सो सर्व दूर किया, तब शिवशर्मा प्रोहत वज्रत महा राजका रागी ऊआ, तब उहांके चैत्यवासीयोंने विचारा, कि श्री जिनेश्वर सूरिके इहां रहनेसे अपना पमदा खुल जायगा, अपनेको कोई न मानेंगा, सर्व लोक इनांके रागी हो जायगे, इससे कोई उपाय करना चाहिये, ऐसा विचारके डल्लन राजाके पास जायके चुगली किया, कि दिल्लीसे ग्रंथ गेटक चोर आए हैं, सो आपके प्रोहतके इहां रए हैं, तब राजा ऐसा वचन सुनके प्रोहतको बुलाकर पूछने लगा, कि तेरे घरे चोर आया सुना है तब प्रोहत बोला कि, मेरे घरमें चोरतो कोई नहिं आए हैं परंतु शुद्धक्रिया पात्र साधु आए हैं जो उनांको चोर कहते होंगे सो आप चोर होवेंगे, तब राजा शुद्ध चार देखनेकेलिये श्री जिनेश्वर सूरिको अपने पास बुलाया, और चैत्यवासियोंको भी बुलाये, जब श्री जिनेश्वरसूरी राजाकी सनामें हाजर ऊवा, तब राजायें नमस्कार करा, तब गुरुमहाराज पिण धर्मलान आशीर्वाद देके अपने बैठवा योग्य स्थानके, कंवली बिठाके, इरियावही पम्किमके, जमीनकी पम्बले हण करके, बैठे । तब राजायें विचारा, कि शुद्धआचार ऐसाही होता है ॥ और चैत्यवासी जो आए सो राजाको आशीर्वाद देके, इसी तरें विस्तरोंके ऊपर बैठ गये, तब राजायें चैत्यवासियोंका विरुद्ध आचार देख के श्री जिनेश्वरसूरी महाराजको साधुका आचारपूठा तब, श्री जिनेश्वर सूरी महाराज बोला, कि आपका देवाधिष्ठित ग्यानका जंमार है, उसमें सर्व मत स्वरूपनिवेदक पुस्तक है, उसमेंसे आपके पंमितीके पास एक दोय पुस्तक मंगवावो, तब राजायें जंडारमेंसे पुस्तक मंगवाया, जब पंमि तीके प्रथम दशमी कालकजी पुस्तक हाथ लगा, सो राजसनामें लेके आये, तब गुरुमहाराज कहा, कि इस पुस्तकको चैत्यवासियोंके हाथमें

देके आप साधुका आचार सुनो, तब चैत्यवासी पुस्तक वाचते थे जहाँ वज्रत साधुका आचार आने लगा उहाँ ठोमने लगे, तब गुरुमहाराज बोला, कि राजसज्जाने दिनकों चोरी होती है, तब राजायें पूछा किसतरेसे, गुरुने कहा, कि इहाँ इहाँ साधुके आचारका कई पन्ना ठोम दिये हैं, तब राजा बोला कि, आप वाचो, गुरुमहाराजने कहा, हमारे वाचनेसे ये फेर कल्पित बात करेंगे, इससे आपके बने पंक्तिकेपास ये पुस्तक बचावो, तब राजायें अपने पंक्तिकेपास उस पुस्तकमेंसे साधुका आचार सुना, तब उसी आचारमुजब श्री जिनेश्वरसूरीका सत्य आचार देखा, और चैत्यवासियोंका उस पुस्तकसे विरुद्ध आचार देखा, इससे सारी सज्जानके सामने राजायें कहा ॥ अतिशय पापें करके श्री जिनेश्वरसूरी सच्चा जवा, इससे ये खरतरा है, और चैत्यवासी हारगया, इससेती ये कमला है ॥ हारा सो कमला थया ॥ जीता खरतर जाणिया ॥ तिणीकाल श्री संघमें । गच्छदोयवखाणिया ॥१॥ इसी तरे सुविहित पद्धधारक श्री जिनेश्वरसूरि, वीरसंवत् १५५० ॥ विक्रम संवत् १०८० खरतर विरुद्धकों प्राप्त जए । तबसे कोटिक गच्छ, चंद्रकुल, वयरी शाखा, खरतर विरुद्ध, असाज्जेद थिबर साधु, नवा साधुवोंने कहने लगे, इहाँसे मूलकोटिक गच्छका नाम खरतर गच्छ प्रसिद्ध हुआ, अतिशयेन खरा सत्य प्रतिज्ञा येते खरतराः इत्यादि खरतर विरुद्धकों प्राप्त होनेवाले श्री जिनेश्वरसूरी बने प्रज्ञावीक जए ॥४०॥ ॥ तत्पदे ४१ मा ॥ श्री जिनचंद्र सूरी जये ॥

सो जब आचार्यपदकों प्राप्त होके विहार करते प्रथम दिल्ली सहरमें गए उहाँ एक पुरुषकों ज्ञान्यशाली देखके ऐसा कहा कि तुं दिल्लीका बादशाह होगा, जब वो पुरुष बोला कि मैं जो बादशाह होऊंगा तो आपमुझे दरशण अवश्य देना, फेर दिल्लीके आसपासमें महाराज विहार करने लगे, जब वो पुरुष मोजदीन नामे बादशाह हुआ, तब गुरुमहाराज फेर दिल्ली नगरमें गए, तब दिल्लीके संघने बादशाहकों अरज करी हमारे पुज्य श्री जिनचंद्रसूरि महाराज आये हैं, सो उनका प्रवेश जह्व करनेकी इच्छा है, तब मोजदीन बादशाहजी पूर्वोक्त वर देनेवाले अपना गुरुकों आया जानके, संपूर्ण वाजिबसहत संघकेसाथमें, आपसामने गया, प्रवेशजह्व

सहित-शहरमें लायके धनपाल - नामा श्रीमाल्यके वने मकानमें उतारा क  
खाया, उहां रहते धनपाल श्रीमाल प्रमुख वज्रतसे श्रीमालांकों प्रतिवो  
धके जैनीश्रावक किये, तवसे "श्रीमाल" जैनीश्रावक ऊए, और कितनेक  
राज्याधिकारीयोंकों प्रतिवोधके जैनीश्रावक किये, उनोंकों बादशाहने वज्रत  
मान दिया इससे उनका "महतियाण" गोत्र ऊआ, ये महतियाण गोत्रवाले  
कातो जगवानकों नमस्कार करै, का अपना धर्माचार्य जिन चंद्रसूरि गुरुकों  
नमस्कार करै, और कोई देवगुरुकों नमस्कार न करै, फेर महाराजके उपदेशसे  
बादशाहजी वज्रत सरल परिणामी ऊआ, सारे देशमें पर्यूपणादिपर्व दिनोंमें,  
वज्रत जीव हिंसा जेमाई, इसमाफक धर्मउपायक वने प्रतापीक, संवेगरेग  
शालादि, अनेक प्रकरण कतां श्रीजिनचंद्र सूरिऊए, अंतमें अणशण करके  
देवलोककों प्राप्त ऊये ॥ ४१ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ४२ ॥ मा श्रीजिनचंद्र सूरिके पाठ ऊपर, ठोटा गुरनाई, श्री  
अजयदेव सूरि ऊए ॥ इनका संबंध किंचिद्विखताऊं ॥ धारापुरी नामा न  
गरमें, धलानामें सेठ, जिसके धनदेवी नामें स्त्री, जिनके अजय कुमार नामें  
पुत्र ऊआ, क्रमसें सर्व कला शीलके गुवान अवस्थाकों प्राप्त जया, तव  
एकदा प्रस्तावे श्रीजिनेश्वर सूरि विचरते ऊए धारापुरी नगरीमें आए, जब  
नगरका सर्व लोक महाराजकों वादनेंकों गए, तव अजय कुमारजी अपने  
पिताकेसाथ गया, श्रीजिनेश्वर सूरि महाराजके मुखसें धर्म उपदेश सुनके  
वैराग्यकों प्राप्त जया, संसारकों असार जाणके दिक्षा ग्रहण करी, क्रमसें  
शुद्धीके बलसें, सकलशास्त्र पढके आचार्यपदकों प्राप्त जया । एकदा  
व्याख्यानमें शृंगारादि नवरसकों वज्रत पोषण करा, तव सारी सजा वज्रत  
आनंदकों प्राप्त नई, परंतु श्रीजिनेश्वर सूरि महाराज एकांतमें ऐसा उलंछा  
दिया, कि आत्माथीकों शृंगारादिक रसका वज्रत पोषण करना न चाहिये,  
ऐसा गुरुका वचन सुनके आत्मशुद्धीके अर्थ प्रायश्चित्तमांगा, तव  
गुरु कहा, ठे मासतक आबिलकी तपस्या करै, और ठाठकी आठ  
पीवै, जब शुद्धी ऊवै, तव श्री अजयदेव सूरि गुरुका वचन तहसि करके  
इसी मुजब तपस्या करनें लगे । ऐसी कठन तपस्या करनेंसे, अंत प्रांत  
आहारखानेसें, कोई पुणरुत कर्मके योग, सरीरमें गलत कोदरोग ऊपन्न

होगया, तथापि धर्मसें चलित चित्त न हुआ, शरीरकी शुश्रूषा मात्रकी न करै, जब क्रमसें वज्रत रोग बढ़नें लगा, तब श्री अन्नयदेव सूरीके अण्णशण करनेकी इच्छा उत्पन्न नई, संघके आग्रहसें धवलिका नामें नगर गए, उहां तेरसकेदिन आधी रात्रकेसमें शाशन देवी प्रगट होके कहा कि हे स्वामिन् ये नवसुत्र कोकमीकों सुलजावो, तब गुरु महाराज बोले " कि हाथोंकी आंगुली गलनेसें सुलजावणेंकी समर्था रही नहीं, । तब शाशन देवी कहनें लगे, अज्जीतक आप वज्रत कालतक श्रीवीर जगवानको शाशन दीपावोगे, अरु नवांग सुत्रकी टीका करोगे, इससें हे स्वामिन् आप रोग जानेंका उपाय सुनो ॥ स्थंजनपुरके नजीक, सेढिका नदीके तीरे, खंखर पलास वृक्षके नीचे, श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी अतिशय युक्त प्रतिमाहे उहां निरंतर एक गाय आयके प्रतिमाके मस्तकपर सदा दूधकी धारा देके चली जावै है, उसी ठिकाणें सर्व संघकेसाथ आपजायके श्री पार्श्वप्रभुकी स्तवना करना जब उहांसें श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी प्रतिमा प्रगट होगा जिसके स्नात्रजलसें आपका रोग रहित दिव्य शरीर होवेगा, ऐसा स्वप्नमें कहके देवी अदृश्य होगई, जब प्रज्ञात समय जया, तब उहांसें विहार कर के स्थंजनपुर गए, उहांके सर्व संघकों साथमेंलेके पूर्वोक्त स्थानके गए, उहां जाके नमस्कार करके "जयतिज्जअण्ण" इत्यादि वत्तीस गाथाको नवीन स्तोत्र करके स्तवना करतां थकां "फणफण फार फुरंतरियण०" इत्यादि शोलमाकाव्य बोलते, श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी प्रतिमा जमीनमेंसे प्रगट नई, फेर सारी स्तवना जब पूर्ण नई, तब सर्व संघ मिलके आनंदके साथ स्नात्र पूजा करके, जगवानका स्नात्रजल महाराजके सरीरपर सींचा । के तत्काल रोग रहित कंचनवर्णा शरीर होगया, तब तो सर्व संघ, तथा नगरका लोक देखके वमै आश्चर्य माननए, और जहां प्रतिमा प्रगट नई, तहां बहोत मनोहर उंचा सिखरवृक्ष मंदर बनवाया, मंदर तैयार होनेसें श्री अन्नय देवसूरि महाराजनें उसी प्रतिमाको स्थापन करी, तहां स्थंजनक नामें महातीर्थ प्रशिद्ध हुआ, बहोत यात्री लोक आनें लगे, और जयतिज्ज अण्ण स्तोत्र, गुरु महाराजनें किया, जिसके अंतके दो काव्योंमें धरणेंद्र पद्मावतीको आकर्षणरूप बीज मंत्र गोपित रखाथा इससें उसको हर

कोई कार्यमें अपवित्रपणें स्त्री पुरुष बालकादिक गुणें जब धरणेंद्रकों  
 आयके हाजर होना पमे, इससे धरणेंद्र हाथ जोमके गुरुमहाराजने क  
 हने लगा कि ये दो गाथा आप जंमार करो, जो शुद्धभावसे तीस काव्य  
 सदा पन्निक्मणेंके आदमेंगुणेंगे, तो ठिकाणे वेगही उनका उपद्रव दूर क  
 रंगा, ऐसा धरणेंद्र पद्मावतीका वचनसे अंतका दो काव्य जंमार किया,  
 संघकों बोलनेका मना किया, पीछे स्वप्नेमें शासन देवतायें नवक्रोकमा  
 सूतका सुलजावणें वावत कहा था, इसवारते जगवानके नवांग सुत्रोंकी  
 टीका करी, वीर सं० १५८१, विक्रम सं० ११११, श्री स्थंजणा पार्श्व  
 नाथ प्रगट किया ॥ और वीर सं० १५९० ॥ विक्रम सं० ११२०, में  
 श्री नवांग सुत्रोंकी टीका करी ऐसे महाअतिशयी चारित्र पात्र चूनामणी  
 निकेवल सर्व जीवोंके उपगारके अर्थ गांवनगरोंमें बिहारकरते थके बज्जत  
 कालतक धर्मका उद्योत करते रहे एकदा श्री अन्नय देवसूरीके प्रतिबोधक  
 दो आवाक अणशण करके देवलोक गए जब देवलोकमें जातेही ग्यानके  
 प्रयोगसे जाना, कि हमारा धर्माचार्य श्री अन्नयदेव सूरी है, उनको प्र  
 सादसे ये देवलोकका सुख मिला हे, इससे अत्यंत रागी जया थका महा  
 विदेहमें श्री सीमंधर स्वामीकेपास जाके हाथ जोडके ऐसा प्रण किया  
 कि हमारा धर्माचार्य श्री अन्नयदेवसूरी इहांसे कोन गतिमें जावेंगे, और  
 कितना ज्वमें मोक्ष जायगे, तब जगवान सीमंधरस्वामीने कहा कि तुमारा  
 गुरु इहांसे अणशण करके चोथे देवलोक जावेगा, उहांसे महाविदेह क्षेत्र  
 में उपजके मोक्षजावेगा इससे ये ज्वसे तीसरे ज्वमें मोक्ष जावेगा ऐसा ज  
 गवानका वचन सुणके आनंदित हुआ थका श्री अन्नयदेवसूरीके व्याख्या  
 नावशरमें सारी सजाकेसामने दोनों देवता आयके कहा, ॥ जणियं तित्थय  
 रेहिं । महाविदेहे ज्वमित्थंमि, तुह्माणचेव गुरुणो ॥ मुरकेसिग्घं गमिहंति  
 ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ इसमाफक शासन प्रजावीक श्री अन्नयदेवसूरी गुर्जर दे  
 शमें कप्पडवाणिज्य नामाग्रामके विषे अंतमें अणशण करके वि. सं ११६७  
 कालकरके चोथे देवलोक गए ॥ ४२ ॥ ✽ ॥

॥ ४३ ॥ श्री अन्नयदेवसूरीके पाठकपर, श्रीजिनवल्लभसूरी जए ॥  
 तिके प्रथम कूर्चपुर गच्छीय चैत्यवासी श्रीजिनेश्वर सूरीकेशिष्य थे जब उनों

केपास दशमी कालकजी सुत्र पढनें लगे तब वैराग्यकों प्राप्त होके गुरुकों कहा, कि साधुका आचार तो ऐसा है, और आप ऐसा सिथलाचारकों क्युं धारण किया है, तब गुरुनें कहा अनी हमारा ऐसाही कर्मोदय है, तब श्रीजिनवल्लभसूरी गुरुकों पूठके शुद्ध क्रियानिधान, परम संवेगी, श्रीजिन अन्नयदेवसूरीका शिष्य होगया, शुद्धचारित्र पालताथका अनुक्रमें सकल शास्त्रकों पढके गीतार्थ ऊआ, एकदा विहार करते चीतोड नगरमें आए, उहां चंमिकादेवीकों प्रतिबोधके जीवहिंसा ठेमाई, चंमिकादेवी पिए शुद्ध क्रियापात्र साधुजाणके बनी नक्तिमान्जई, फेर उहांके संघनें साधारण द्रव्यसें ७२ बहोत्तर जिनालयमंमिंत श्री महावीरस्वामीका मंदर बनाया, जि सकी प्रतिष्ठा करी, और पिंमविशुद्धिप्रकरण, षट्शीतिप्रकरण, संघपद्धा आदि अनेक ग्रंथ किये । तथा दस हजार १०००० प्रमाणें वागमी लोकोकों प्रतिबोधके जैनी श्रावक किये ॥ फेर उसी चित्रकूट नगरमें विक्रम सं । ११६७ श्री अन्नयदेवसूरीके वचनसें श्रीदेवन्नद्राचार्यजीनें श्रीजिनवल्लभ सूरीकों आचार्यपदमें स्थापन किये, ठे महिनातक आचार्यपद जोगव के, अंतमें अणशण लेके कालकरके देवलोक गए, इस समय मधुकरा खरतर शाखा निकली ये प्रथम गच्छ जेद जया ॥ ४३ ॥ ❀ ॥

॥ ४४ मा ॥ श्रीजिनवल्लभसूरीके पाट ऊपर, श्रीजिनदत्तसूरि: ऊए ॥ सो वमा दादाजीके नामसें सर्वलोकमें प्रशिद्ध जए ॥ इनोका किंचित् अधिकार लिखता ऊं ॥ धंधूका नाम नगरमें, ऊंवरुगोत्रिय, वाठिगनामें एक मंत्री ऊवा, जिसके बाहम देवी नामें अस्त्री, उसकी कूखसें चंद्र स्वप्न करके सूचित सं । ११३२ जन्म ऊआ, तब माता पितायें दश दिनका बऊत उछव करके सर्व स्वजनांके सामनें सोमचंद्र ऐसा नाम दिया, गुजलक्षणों सूचित पांच धाय माय करके पालीजताथका जब पांच बरषका जया, तब माता पितायें अछा पंमिंतके पास पढानेकों वैठाया, बुद्धीकेबलसें थोमा दिनोंमें बहोतसी कला विद्या शीखी, आठ बरषका ऊये पीठे गुरुमहाराज के पास उपदेश सुनके वैराग्यकों प्राप्त जया, तब अपना माता पिताकी आग्या लेके सं । ११४१ वाचक धर्मदेवगणि:के पास दिक्षा ग्रहण करी, अर्थात् जैन साधु जया, पीठे गुरुकेपास संपूर्ण शास्त्रोंका अध्ययन

करने लगा, इस अवसरमें गुरु महाराज सारंगपुरके विषे कुंवरपाल उपाध्यायको अंतका अणशण दिराया, आराधना कराई, सो कुंवरपाल उपाध्याय मरके देवगतिकों प्राप्त जया, तब ग्यानके उपियोगसे पूर्वजबका संबंध जाणके गुरुके पास आया, गुरुकों नमस्कार करके सोमचंद्र मुनिकों कहने लगा, कि, जो सोमचंद्र तुम आचार्य पदकों प्राप्त ऊबोगे, परं तीन मज्जत्त देखनेमें आवेगा, जिसमें पहले मज्जत्तमें मरणांत कष्टहे, अरु दूसरे मज्जत्तमें गह्व जेद हे, इससे तीसरा मज्जत्त वज्जत अज्ञा हे, तीसरा मज्जत्तमें आचार्यपद ग्रहण करना, ऐसा कहकर देव अदृश्य होगया, पीठे कथंचित् ज्ञावी प्रबलयोग दूसरा मज्जत्तमें सं । ११६ ए मि । वै । १६६ के दिन श्री देव ज्ञद्राचार्यजीयें सूरि मंत्र देके श्रीसोमचंद्रजीकों आचार्यपदमें स्थापन किये, जब श्रीजिनदत्त सूरि ऐसा नाम प्रशिक्ष करा, पीठे बिहार करते प्रथम चित्रकूट नगरमें गए, उहां श्री चिंतामणिपार्श्वनाथके, मंदरके स्थंज में रही ऊई विद्याम्नायकी पुस्तक विद्यावलसें प्रगटकरके ग्रहण करी । फेर उज्जयिनीनगरमें गए, उहां महाकालके मंदरके स्थंजमेंसे सिद्धसेन दिवा करकी विद्याम्नाय पुस्तक विद्यावलसें आकर्षण करके ग्रहण करी फेर तीन क्रोम झीकारजीका जाप किया, जाप करतां चोसठ योगणीयोंने महाराजकों बलनेका विचार किया, तब कोई वीर आयके महाराजकों खबर दी नी । के आज व्याख्यानमें ६४ योगणी आवैगी, जब गुरुमहाराज आवकों पास ६४ पाटिया मंगायके, मंत्रके, आवकएयोंकों सोंपदिये, और कहा आज व्याख्यानमें ६४ स्त्रीयों नवी आवैगी उनोंको पाटियाऊपर बैठगणां, पीठे जब व्याख्यानमें आवकएयोंके रूपसें योगएयों आई, नमस्कार करके आवकएयोंमें पाटिया ऊपर बैठगई, व्याख्यान पूरण ऊए पीठे जब उठनें लगी तो उठनें नपाई कीलीजगई, तब तो अपनो अहंकार ठोमके नमस्कार करके योगणियो कहनें लगी, कि हमे सर्व तो आपको बलनें आईथी परंतु आप हम सर्वकों बललीनी, अब हम सर्व आपकी आग्याकारणियों होके रहसां, हमकों ठोमो, जबगुरु महाराज कहा कि फेर कज्जी कोई खरतर आचार्यकों बलनामति, तब योगणियोंने ऐसा वचन अंगीकार किया और सात बर दिया ॥ १ प्रतिधाममें खरतर आवक दीक्षित्वंत होगा ॥ २ प्राय



करके खरतर श्रावक निर्धन नहिं होगा ॥ ३ संघमें मरी आदिकसें कुमरण नहीं होगा ॥ ४ अखंभ शीलपालक साधवीके कृतु न आवेगा ॥ ५ आपका नाम लेता बीजली आदि कोईतरेका उपद्रव संघमें न ऊबेगा ॥ ७ प्राये खरतर श्रावक सिंधू देशमें गयां धनवंत होगा ॥ ऐसा सात वर देके फेर योगणियो कहनें लगी कि १ खरतर आचार्य सिंधुदेश गयांथका पंचनदीकों साधन करै ॥ २ खरतर आचार्य दिनप्रति दो हज़ार (२०००) सूरिमंत्रको जाप करै ॥ ३ खरतर साधु नित्य दो हज़ार नवकार मंत्रको जाप करै ॥ ४ खरतर श्रावक दिनप्रति सबेर, सांजे, दोनों कालमें सात स्मरण शुद्ध अक्षरोंसें शुद्धचित्तसें गुण ते रहै, वा सुनते रहै ॥ ५ खरतर श्रावक दिन प्रति तीन खीचनीकी माला गुणते रहै, एक मणिका ऊपर एकनवकार १ उवसगह रं. स्तोत्र गुणें, उसकों खीचनी माला कहते हैं ॥ ६ खरतर श्रावक मासमें दो आंबिल अवश्य करै, और दादाजीकी ध्यावनार रखे ॥ ७ खरतर साधु उती सक्ति सदा एकाशणो करै ॥ ये ७ वर पालनेसें पूर्वोक्त ७ वर सफल होवेंगे ॥ ऐसा कहके फेर योगणियों कहनें लगी कि, दिल्ली १ अजमेर २, जयपुर ३, उज्जैन ४, मुलतान ५, उवनगर ६, लाहोर ७ ॥ इन नगरोंमें पूर्ण शक्ति रहित खरतर गृह नायक रात्रवासी न रहै ऐसा कहकै अपणें ठिकाणें गई, तथा फेर अजमेर नगरमें पाक्षिक पन्तिकमण करते थके श्रीगुरुमहाराज बेरबेर ऊवत्कार करती थकी बीजलीकों मंत्रबल करकै पात्रकै अधोनाग में रक्खी, तब प्रतिक्रमण वाद पात्रके नीचेसें निकाली, जब उसनें कहाकि जिनदत्त नाम ग्रहण करणेंसें मैं नहिं पडूंगी ऐसा वर देकै अपनें ठिकाणें गई, फेर एकदा गुरु माहाराज विहार करते थके बृद्ध नगर गए, तहां जिनमत उन्नतीकों नहिं सहता थका ब्राह्मणलोक जिनमंदिरमें मरी नई गऊकों माल गए, उहां मरी गऊ कों देखकै ब्राह्मण कहणें लगे, अहो जैनीयोंका देव गऊ घातक है ऐसा वचन सुनकै खेदातुर नए थके श्रावक लोक गुरुमहाराजसें वीनती करी तब गुरुमहाराज मंत्रबलें व्यंतर प्रयोग करकै मरी थकी गऊ कों अछी करी, तब तिका गऊ अपणी इच्छासें उठकै, शिव मंदरमें शिव मूर्तिऊपर आकै पमगई, तब नगरमें ब्राह्मणोंको अत्यंत लज्जा उत्पन्न नई तब लज्जित नए थके ब्राह्मण गुरुमहाराजके चरणकमलमें पमकै ऐसा क

हते नए, अहो स्वामिन् आप महंतहो, अब आज पीठै इस नगरमें जो को  
 ई आपकी परंपराके सूरि आवेंगे उनका प्रवेश उत्सव हम लोक करेंगे  
 आप रुपाकरके हम लोकोंने कोई नोकरी जोलावो, तब महाराज  
 बोला, मंदिरोंकी भक्ति करो, मंदिरोंमें पमिलेहण करो और चावल  
 नेवेद्य, फल, जो खाएँकी चीज चढै सो लेवो करो, तबसे वे ब्राह्मण मं  
 दिरोंकी भक्तिकरनें लगे, सो गंधप, भोजक नामसे प्रसिद्ध हुए उस  
 वखतमें बहोतसी जैन मतकी प्रभावना नई, तथा फेर एकदा गुरुमहाराज  
 उच्च नगरमें गए, उहां प्रवेश उन्नव समयें मनुष्योंके वाङ्मल्यसे उस नगरके  
 मालक मुगलका पुत्र बाहनसे पम्कै मरगया तब श्रावक सर्व खेदातुर भया  
 थका गुरुमहाराजकों वीनती करी, तब गुरुमाहाराज यह बात सुनकै  
 जिन मत प्रभावनाकैवास्तै व्यंतर प्रयोग करकै ठै मासतक मरेनए मुगलपुत्र  
 कों जीवाया, तथा फेर नागदेव नामें श्रावक, अंवन इति दूसरा नामें, एकदा  
 गिरनारपर्वतमें तीन उपवास करके अंबिकाकों आराधन करकै कहा कि हे  
 माता इस समयमें भरतक्षेत्रकै विषै युग प्रधान धारक कोण सूरि है, जिनकों  
 में अपने गुरुपणें स्थापन करूं ऐसा पूछा, तब अंबिकादेवी तिसकै हाथ  
 मे सुवर्ण अक्षरोंसे एक श्लोक लिखा ॥ दासानुदासाइवसर्वदेवा । यदीयपा  
 दाब्जतलेलुगंति ॥ मरुस्थलीकल्पतः सजीयात् । युगप्रधानोजिनदत्तसूरिः ॥  
 इसकाव्यकों जो वांचेगे उनकों युग प्रधान जाणना, अवतिको श्रावक ठिका  
 णें १ बहोत सूरिकों हाथ दिखलावै, परंकोईभी अक्षर वाचणकों समर्थ नहिं  
 नए पीठै एकदातिको पाटणनगरमें तांबावामा पामकै विषै श्रीजिनदत्तसू  
 रिकै पास आकै हाथ दिखलाता भया, तब गुरुमाहाराज तिसकै हाथ  
 लिखित स्वर्णाक्षर ऊपर वास चूर्णमालकै शिष्यजणी आज्ञादीवी तब शिष्यनें  
 उनहरफोंकूं वांचे, जब नागदेव श्रावक परम भक्तिवंत भया । इस मुजब  
 कलिकालमें युग प्रधान पद धारक श्रीगुरुमाहाराज नए एकदा व्याख्यान करते  
 थके श्रीगुरुमाहाराजनें विद्यावलसें अपना स्मरण करता हुवा श्रावकका  
 जहाज डूबता जानके तत्काल जहाजकों देववलसें समुद्रके पार उतारा,  
 ये बात जबसंघकों मालुम नई तब वहुत महमा करनें लगे, तथा फेर  
 एकदा श्रीगुरुमाहाराज प्रबल प्रवेश उन्नव करकै मुलतान नगरमें गए, तदा

चार मार्गमें रहा थाका, पत्तनमें बसनेवाला, परपक्षीय अंवननामें श्रावक खरतर गच्छकी उन्वतीकों नहिं सहता थाका बोला, कि इस नगरमें इस आंमंवरसे आप आए हो, परं अणहिल्लपत्तनमें इसतरसे आवोगे जबमें जानोंगा, यह बात सुनकै गुरूमहाराज बोले कि हमतो इसी प्रकार करकै आवेंगे, परंतु तैल लवण आदि, चीज खांधे रखके सन्मुख मिलेंगा, पीठे जब गुरूमहाराज कितने दिनवाद अणहलपुर पत्तन गए तब अंवन श्रावक दैववससे निर्धन जया थाका मुलतान नगरसेती जागके पत्तन जाकै तैल लवणादि व्यापार करकै आजीवका करने लगा, उहां गुरूके प्रवेश उत्सव समय सन्मुख मिला, गुरू उलख करकै बतलाया, तब गुरू ऊपर अतिदेष धारन करता थाका कपट करकै खरतर श्रावक हो गया, एकदा श्रीगुरूमहाराजकों विष मिश्रित शाकरका जल पिलाया, तब गुरूमहाराज विष प्रयोग जानकै, तहांका राय जणसालीगोत्रीय, आज्ञनामें मुख्य श्रावक प्रते, ए स्वरूप कहा तब आज्ञनामें श्रावक घनीमें जोजन जावे ऐसा उंठ ऊपर नोंकरकों चढाकै, पालहणपुर सेती विष अपहारिणी जमी मंगवाकै निर्विष कीए, तबवो अंवन लोकमें नंदीजता थाका मरकै व्यंतर जया, व्यंतर होके फेर श्रावकोंमें उपद्रव करने लगा, तब गुरूमहाराज विद्यावलसे सर्व उपद्रव दूर किया, और व्यंतरजी जागके अपने स्थानक गया, तथा फेर एकदा विक्रमपुरमें मरीका उपद्रव प्रगट जया, तब गुरूमहाराज उस उपद्रवकों दूर करा, तब दुःखित जए थके महेश्वरीलोक बोले, कि हे स्वामिन् हमारे ऊपर रुपा करके हमारे कुटंबको उपद्रव दूर करो, तब गुरूमहाराजने उनोंका वचन ग्रहण करकै उन लोकोंका उपद्रव दूर करते जए, तब महेश्वरी गोत्रका श्रावक जया, तथा कितनेक शिवमत वाले श्रावक नहिं जए, तब तिनमेंसे जिसकै चार पुत्र था उसका एक पुत्र ग्रहण करा, जिसके तीन पुत्रीथी तिससे एक पुत्री ग्रहण करी, ऐसे (५००) पांचसै शिष्य साधु जए, ७०० सातसै साधवी जई, इसीतरै श्रीजिनदत्तसूरिमहाराज बहोत नगरोंकै विषै विहार करते रजपूत ब्राह्मणादिकों प्रतिबोधके नाहदा, राखेचा, जणसाली, नवलरका, मागा, बाफणा इत्यादि गोत्रअलंकृता "एक लाख पचीस हजार श्रावक करा," तथा

श्रीगुरुमाहाराज मुलतान नगरकै बिषै लुंणीया गोत्रीय हाथी साहकै ऊपर  
रुपा करकै पन्चमणैमें तिसकों, अजियंजियसव जयं । यह स्तोत्र दीया,  
तथा अणहिलपत्तनकै बिषै, वोथरा गोत्रीय श्रावकांकों जयतिञ्जअण वरक  
प्यरुरकजयजिणधनंतरि । यहस्तोत्र दीया, फेर गुरुमाहाराज मेमता नग  
रकै बिबै, गणधर चोपडा गोत्रीय श्रावकांकों उवसग्गहरं पासं । यह स्तवन  
दीया । फेर जलऊपर कंवलीतिरणादि प्रकार करकै पंचनदी पंचपीर  
साधक, संदेह दोलावली आदि अनेक ग्रंथकारक, नानाविद्यासहित, परम  
उपकारी परमयश सौजाग्यधारक महाप्रज्ञावीक श्रीजिनदत्तसूरिः संवत्  
१२११ आषाढ सुदि एकादशीके दिन अजमेर नगरमें अणशणकरकै पह  
ला सौधर्मनामा देवलोकमें टकलनामा विमानमें ४ पल्योपमके आनखे  
महर्द्धिक देवतापणें उत्पन्न जए ॥ यदुक्तं ॥ जणियं तित्थयेरेहिं । महाविदेहे  
ज्वमितइयंमि । तुह्माणेंतेगुरुणो । मुरके सिग्धंगमिस्संति ॥ १ ॥ टकलयं  
मिबिमाणे । संपइसोहम्मकप्पमअंमि । चउपल्लिव्वमआठ । देवोजाठ मह  
होठ ॥ २ ॥ श्रीजिनवल्लभसूरि पढ प्रज्ञाकर श्रीजिनदत्तसूरी महाराजके  
शिष्यादि सर्व संघके सामनें देवतायें आयके ऐसा वचनकहा, इसीतिरे बने  
प्रज्ञावीक श्रीजिनदत्तसूरि महाराजकों वन्नादादाजीके नामसें सर्व संघपूज  
नें ध्यावनें लगे ॥ ४४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तत्पढे ४५ गा । श्री जिनचंद्रसूरिः जए, पिता साहरासलक  
माता देल्हणदेवी तिसके पुत्र सं । ११९१ मि । ज्ञाद्रवा सुद ८ के दिन  
जन्म, सं । १२११ वैशाख सुदि ५ के रोज विक्रमपुरकै बिषै रासलरुत  
नंदीमहोत्सव सहित श्रीजिनदत्तसूरियें आप आचार्यपदमें स्थापन कीए,  
ऐसे श्रीजिनचंद्रसूरि नरमणिमंजित जाल स्थल खोमीया क्षेत्रपाल सेवित  
जए, अथ अन्यदा श्रीगुरुमहाराज गुर्जर देश प्रति जाते थके, श्रीमालगोत्री  
मदनपाल श्रीचंद्रादिकके आग्रह करकै दिल्लीनगर गए, उहां वाद  
शाहकों अनेक चमत्कार देखाके अपना जक्तिवंत किया अरु वज्रत  
सा धर्मका उद्योत किया, पीठे एकदा गुरुमहाराज अपनी अंत अ  
वस्था जानके मदनपालकों कहाकि हमारै मस्तकमें मणि है, तिसकों  
अग्नि संस्कारसमयमें दूधसें नरानया पात्र रक्षण करकै तुम ग्रहण कर

ना, मार्गमें विश्राम लेनेकैवास्तै सेढीकों न रखना ऐसा कहके महा राज सर्व आयु २६ वरसको पालकै सं। १२२३ जाद्रवा वदि १४ चतुर्द शीके रोज अणशण करकै स्वर्ग गए ॥ तदा सर्व श्रावक मिलकै अग्नि सं स्कार करनेकैवास्तै जाते थके नरवजार माणक चोकतक आए, तब कोई कार्यपणैकरकै पहली कहा गुरूकावचन झूलके विश्रामकैवास्तै सेढीकोंनीचै रखदीनी मणग्रहण करनेकैवास्ते, दुग्धपात्रनी न रखा, परं तहां एक वियावान् योगी मणग्रहणकरनेकी इच्छासँ दुग्धपात्र नरके एकांत बैठ गया पीठे फेर बहोत यत्न करकै सीढीकों उगाने लगे तो पिण सीढी उठे नही, तब सर्व नगरकै विषै या बात फैली अनुक्रमसँ बादशाहनेंजी सुनी तहां बादशाह आप आयकै बहोत उगानेका उपाय करा, परंसेढी उहांसँ सिरकी नहिं, तब वा दशाह बोला कि सत्य है यह देव, ये जैनका सेवमा जीतांजी चमत्कारी था और मुवांजी चमत्कारी ऊवा, इसका स्थान इहांइज ऊवो, तब श्रावकोंनें तहांइ अग्निसंस्कार करा, तिस अवसरमें गुरूके मस्तकसेती मणी फमाकशब्द करकै योगीनें रखवा था सो दुग्धपात्रमें पत्नी, योगी उसकों ग्रहण करकै अपनें ठिकाणें गया, तब मदनपालनें कहाकि गुरूमहाराज पहली मेरेसँ कहा था, परंमें जलदीकै सबवसँ झूल गया, तब सर्व साधु श्रावक तिसकों उलंजा दिया अरु तिसी ठिकाणें श्री जिनचंद्रसूरीकी बतरी बनवाई बादशाह प्रमुख सर्व लोकोंनें बहोत बज्जमान करा, सर्व लोक जातदेनें लगे, तिस ठिकाणैकी अनीतक यात्रियोंसँ पूजा होती है, इसमाफक प्रजावीक श्रीगुरूम हाराज नए, इहांसेती चतुर्थपाठकै विषै अतिशयवंत जिनचंद्रसूरी नाम दे णा, ऐसा पद्मावतीनें वर दिया ॥ ४५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इनोके समयमें श्री देवचंद्र सूरीका शिष्य तीन क्रोम ग्रंथका कर्ता कलिकालमें सर्वज्ञ विरुद्ध धारक पाठणका कुमारपाल राजाकों प्रतिबो धक श्री हेमाचार्यजी नए सं। ११६६ सूरिपद, सं। १२२९ देवलोक, इनो का विशेष अधिकार कुमारपाल चरित्रसँ जाणना ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तत्पट्टे ४६ मा श्रीजिनपतिसूरि नए, तिके मालू गोत्रीय साह यशोवर्धन पिता, सूहवदेवी माता, सं। १२२० चैत्र वद ८ के दन मूलनक्षत्रे जन्म ऊवा, सं। १२२८ फागुण वदि ८ अष्टमीके

दिन दिल्लीनगरकै विषे दिक्षा, सं । १५३३ सै कार्तिक सुदि १३  
 त्रयोदशीकेदिन श्रीजयदेवाचार्य आचार्यपदमें स्थापन किये पीठे विहार करते  
 श्रीजिनपतिसूरि एकदा बहर नामा पत्तनकै विषे गए, तहां ३६ ठत्तीस बादियांकां  
 जीतकै बहोत जिन शासनकी प्रजावना करी, तथा फेर एकदा आसापुरमें श्री  
 मालझाती हाजी साहनें मंदिर बनवाया, उसकी प्रतिष्ठाकै अवसरमें मणियह  
 ण करनेवाला योगीनें जिन प्रतिमाकां स्तंजन करदी तब चिंता सहित श्रीजि  
 नपतिसूरिनें अपना गुरूकां आराधन किया, तब श्रीजिनचंद्रसूरि महाराज  
 प्रगट होकै चूण दिया, पीठे प्रजातसमय गुरू उन प्रतिमां ऊपर चूण माला  
 तिस करकै प्रतिमा जलदी उठ गई, तब योगी प्रसन्न जयाधका मणिकां पीठे  
 देदीवी, श्रीगुरूमहाराजकी महिमा बहोत फैली, तथा फेर एकदा श्री  
 गुरूमहाराज, अजमेर नगरमें चतुर्मासी रहे, तब उहांके रहनेवाले  
 रामदेवादिक श्रावकांके अगामी, खेमगामवासी ठाजेम गोत्री मंत्री उद्धरण  
 साहकी प्रसंसा करे, एकदा रामदेव श्रावक मंत्री उद्धरणसें जायके मिले,  
 तब तिस मंत्रीयें रामदेवप्रते बहोत आदर सहित अपने घरलायके विधिसें  
 भोजन करा कै नृत्तिकरी, तिस अवसरमें मंत्रवीकी स्त्री देवमंदिरमें देववन्दन  
 करनेकैवास्तैचली जब सामा, कंचूकी, अनेक वस्त्रसें नरी ठावनीयां साथमें  
 ग्रहण करी, तब रामदेवनें पूछा किसवास्तै इतना वस्त्रग्रहण कीएहें तब सेवक  
 लोक कहते जए, कि यह वस्त्र साधर्मिक स्त्रीयांकां देनेकेवास्तै हमेसां लेजाते  
 हैं तब रामदेव कहनें लगा कि श्रीजिनपतिसूरजी महाराज जो तुमारी प्रशंसा  
 करी सो योग्य है, कि जिसकै घरमें ऐसे धर्मकार्य होते है, अथ एकदा ऊध  
 रण मंत्रवीनें नागपुरमें देववर कराया, तब विंव प्रतिष्ठा निमत मंत्रवीयें अपना  
 कुलगुरूकां बुलवाए, परं कोई कारण करकै मञ्जुत्त ऊपर न आए और ऊध  
 रणकी स्त्री खरतर गच्छके श्रावककी पुत्री थी, तिसनें मंत्रवीके कुलगुरुप्रतेही  
 नाचारी मानकै शुद्ध संवेग रंगधारी श्रीजिनपतिसूरि महाराजकां बुलवाए  
 तिके मञ्जुत्तकै ऊपर तहां आए, तब तिनोकेपास सेती प्रतिष्ठा करवाई ऊध  
 रण मंत्री कुटंव सहित खरतर गच्छीय श्रावक होगए, तिस मंत्रवीके कुलधर  
 नामें पुत्र जया जिसनें बाहममेर नगरमें उंचा तोरण सहित मंदिर बनवाया  
 तथा फेर मरोट नगरमें रहनेवाले नेमिचंद्र जंमारीनें परिक्षा करकै शुद्ध सं

वेगवंत श्रीगुरुप्रते जानकै चारित्रकी इच्छा करता थका अंवरु नामे अपणा पुत्र गुरुमाहाराजके जेठ करा, इसमाफक श्रीजिनपतिसूरि सर्व आयु ६७ समसठ वरसको पालके सं । १२७७ पाटहणपुर नगरमें स्वर्ग गए ॥ ४६ ॥ इनोंके समयमें सं । १२१३ अंचलनाम गह्व ऊवा, सं । १२२६ सांई पौर्णमीयक मत ऊवा, सं । १२५० आगमिया मत ऊवा सं । १२८५ चित्रवाल गह्वके चैत्यवासी जगचंद्राचार्यजीसैं तपा नाम गह्व प्रचलित जया,

श्रीजिनपतिसूरिपट्टे ४७ मा श्रीजिनेश्वरसूरि जए, तिणोंका सं । १२४५ मार्गशिर सुदि एकादशीके दिन जरणी नक्षत्रमें जन्म: तथा मरोटनगरके जंमारी नेमिचंद्र पिता लक्ष्मी माता, अंवरु ऐसा मूलनाम, सं । १२५५ खेम नगरके विषैदीक्षा देके वीरप्रज्ज नाम दिया फेर सं । १२७८ माघसुदि ठठके दिन जालोरनगरमें मालूगोत्री साह खीमसीनैं १२ वारे हाऊर रुपये खरच करकै नंदीमहोत्सव करा, सर्व देवाचार्यनैं सूरिमंत्र करकै पद स्थापना करी, इस माफक श्रीजिनेश्वरसूरि सं । १३३१ आसोज वदि ६ ठठके दिन अणशण करकै स्वर्ग गए, इनोंके वारेमें सं । १३३१ जिन सिंहसूरिसेती लघू खरतर शाखा निकली, यह तीसरा गह्वजेद ॥ ४७ ॥ ॥॥॥

श्रीजिनेश्वरसूरि पट्टे ४८ मा श्रीजिनप्रबोधसूरि जए, साह श्रीचंद पिता, सिरिया देवी माता, तिनके पुत्र सं । १२५५ जन्म, पर्वत ऐसा मूलनाम, सं । १२९६ फागुण वदि ५ पंचमीके दिन हस्त नक्षत्रमें थिराद नगरके विषै दीक्षा ग्रहण करी, प्रबोधमूर्ति ऐसा दिक्षाका नाम जया अनुक्रमे वाचक पद प्राप्त जए, संवत् ॥ १३३१ ॥ आसोज वदि पंचमीके दिन संक्षेप करकै पाट महोत्सव जया, पीठै संवत् ॥ १३३१ ॥ फागुण वदि ८ अष्टमीके दिन विस्तार करकै स्वाति नक्षत्रमें जालोर बसणैवाले मालूगोत्रीय साहखीमशानैं २५ हजार रुपया खरच करकै पाट महोत्सव करा, इसमाफक श्रीजिनप्रबोधसूरि निर्मल चारित्र आराधन करकै सं । १३४१ स्वर्ग गए ॥ ४८ ॥

तत्पट्टे ४९ मा श्रीजिन चंद्रसूरि जए ॥ तिके समियाणा गाममें रहणैवाले बाजेहमगोत्रीय मंत्रीदेवराज पिता कमलादेवी माता, खंजराय मूलनाम सं । १३२६ मिगशिर सुदि ४ चोथकूं जन्म सं । १३३२ जालोर नगरके विषै दीक्षा सं । १३४२ वैशाख सुदि ३ तीज सोमवारके दिन मालूगोत्रीय साहखीम

सीनें १९ वारे हज्जार रुपया खरच करकै महोत्सव करा इसमाफक गुरूमा  
हाराज देशोंमें बिचरते थके बहोत राजस्थानमें मान्यनीक जए जिसमें मुख्य  
दिल्लीके बादशाह, तथा चीतोमगढका राजा, जेसलमेरका राजा, मंडोरका  
राजा, यह मोटे ४ राजे तो महाराजके परम जक्त जए, महाराजकै ४  
मोंपदेशसँ आपापणँ राज्यादिकमें जीव दयादिक धर्म उन्नती करी, सवराजादिक  
खरतर गज्जकों राज गज्ज कहनँ लगे, बादशाहनँ आदि लेकै फुरमाणजी अ  
पनी ९ मोहर जपका लिखके दीया, सो आजतक खरतर गज्जके प्राचीन  
जंमारोंमें है, ऐसे गुरूमाहाराज कलिकाल केवली विरुद विख्यात अनेक  
बादीयाकों जीतनँवाले जिनशासनोन्नति करनँवाले श्रीजिन चंद्रसूरजी सं।  
१३७६ कुसुमाण ग्राममें स्वर्ग गए ॥ तिस वखतमें खरतर गज्जकों राज  
गज्ज विरुद मिला ॥ ४९ ॥

॥५॥

॥ तत्पछे ५० मा श्रीजिन कुशलसूरजीमहाराज जए ॥ तिके समियाणा  
गामके बसणँवाले, राजेहम गोत्रीय, मंत्री जिल्हागर पिता, जयतश्रीमाता,  
सं। १३३० जन्म, सं। १३४७ दीक्षा सं। १३७७ ज्येष्ठ वदि एकादशीकै  
दिन श्रीराजेंद्राचार्यँ सूरिमंत्र, दिया, तव पाठणके बसणँवाले साहतेजपालनँ  
नंदीमहोत्सव करा, १४०० चोबीससँ साधु साधवी जणी, तथा ७०० सातसँ  
वेवधारी जैनपंमितादिककों वस्त्रादिक दीया, तथा तिस अवसरमें दिल्लीनगरके  
रहनँवाले महतीयाण गोत्रीय, विजयसिंह श्रावक उहां जायकै बहोत द्रव्य  
खरच करकै नंदीमहोत्सव करा, तथा सं। १३८० साहतेजपालनँ निकाला  
संघकै साथ सेत्रुजै तीर्थ गए, तहां गुरूमहाराज मानतुंग नामँ खरतर वसीकै  
मंदिरमें १७ सत्ताबीसअंगुल प्रमाणँ श्री आदिनाथ विंवकी प्रतिष्ठा करी  
तथा जीमपल्लिह नगरमें चुवनपालनँ बनवाया ७१ बहोत्तर जिनालयमेंमित  
श्रीश्रीस्वामीके मंदिरकी प्रतिष्ठाकरी, तथा जेशलमेर नगरमें, जस धवलनँ  
मंदिर बनवाया श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथकी प्रतिष्ठाकरी, तथा फेर जालोर नगरमें  
श्रीपार्श्वनाथकी प्रतिष्ठा करी, तथा आगरा नगरमें रहनँवाले श्रीसंघकै आय  
हसँ साथ होकै सेत्रुजयकी यात्रा करकै आपाठ वदि ७ सप्तमीके दिन  
पाठण नगरमें आए तथा श्रीगुरूमहाराजकै १२०० वारेसँ साधु संप्र  
दायमें जए, १०५ एकशो पांच साधवीयांका संप्रदाय जया, तथा श्रीगुरू



महाराज विनयप्रज्ञादिक शिष्यांकों उपाध्याय पद दीया, जिस विनय प्रज्ञ उपाध्यायें निर्धन जया अपनै जाईकों संपत्तिके वास्तै मंत्र गर्जित गौतमरासवनायकै दिया, तिसकै गुणनेसैं अपनाजाई फेर धनवंत जया इसमाफक बहोत श्रावक प्रतिबोधक, परम जिनधर्म प्रज्ञावक, श्रीजिन कुशलसूरि सं। १३८९ फागुण वदि अमावसके रोज, देराजूर नगरमें ८ आठ दिनतक अणशण करकै स्वर्ग प्राप्त जए । तिके अजीतक दादोजी ऐसे नाम करकै सर्व जगत्रमें प्रसिद्ध हैं, प्रतिनगरमें गुरुमहाराजके चरण कमल पूजीज रयेहें, सोमवती पूनमकों प्रथम दर्शन दिया, तिस कारणसैं सोमवार पूनमकों विशेष करकै पूजा होती है ॥ ५० ॥

॥ तत्पद्ये ५१ मा श्रीजिनपद्मसूरि जए, तिके ठजेहमवंश चूषण सं। १३८२ जन्म सं। १३८९ ज्येष्ठ सुदि ६ ठक्के रोज श्रीदेराजूर नगरमें साह हरपालनै नंदीमहोत्सव करा, तब आठमें वरसे तरुण प्रज्ञ आचार्यै सुरिमंत्र दीया, अथ एकदा श्रीगुरुमहाराज बाहममेर नगरमें श्रीमहावीरस्वामीके मंदिरमें देव वंदन करनेवास्तै गए तहां देव मंदिरको दरवाजो ठोटा, प्रतिमावनी देखकै, पंजाबदेशके रहनेवालेथे तिसवास्तै तिस देशकी जाषा करकै कहा, बूहा नंदा, यानें दरवजा ठोटा, वसही बड़ी यानें प्रतिमावनी, अंदर क्यूं माणिति यानें जीतर किस्तरैसैं माई, ऐसे प्रगट वालजाव वचन सुनकै, श्रीगुरुमहाराजके पासमें रहा थका, विवेक समुद्र उपाध्यायें कहा, कि मौन करो, ततो व्याख्यान स्थिति प्रवर्त्तन करते थके, तिन उपाध्यायकेसाथ, श्रीगुरुमहाराज गुर्जर देशमें आए तहां पाटणके पास सरस्वती नदीके तट ऊपर रात्रवासी रहे परंतिस वखतमें गुरुमहाराजकों ऐसी चिंता उत्पन्न जई कै सवेरे संघके अगामी इस जाषा करकै किस्तरै व्याख्यान करंगा, ऐसी चिंता करते थके गुरु महाराजके जाग्यसैं अर्ध रात्र समयमें सरस्वती नदीकी अधिष्ठायाका सरस्वती देवी प्रगट होके ऐसा वर दिया, अहो स्वामी प्रज्ञात समयमें आप संघके अगामी जो कुठ कहोगे, तिससैं सकल संघ प्रसन्न होगा अब प्रज्ञात समयमें संघके अगामी गुरु महाराज अपनी इच्छासैं अर्द्ध तो जगवंत इंद्र महिता, इत्यादि नवीन काव्य वनायके उपदेश दिया तब

समस्त संघ श्री गुरु महाराजको व्याख्यान सुन करके बहोत प्रसन्न हुए  
तहां गुरु महाराज बाल बल कूचां सरस्वती विरुद प्राप्त हुए, इस  
माफक श्रीजिनपदसूरि सं। १४०० वैशाख सुदि १४ चउदशके रोज  
पाटण नगरमें स्वर्ग गए ॥ ५१ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ तत्पछे ५२ मा श्री जिनलब्धि सूरि हुए, पाटण नगरके  
वसन बाले, नवलखा गोत्रीय, साह इस्वरदासन नंदी महोत्तव करा, तरुण  
प्रजाचार्य सूरि मंत्र दीया, अनुक्रमें गुरुमहाराज सर्व सिद्धांत सिरोमणि, अष्ट  
विधान साधक हुए, तिके सं। १४०६ नागपुर नगरमें स्वर्ग गए ॥ ५२ ॥

॥ ✽ ॥ तत्पछे ५३ मा श्रीजिनचंद्रसूरि हुए ॥ तिके सं। १४०६ माघ सुदि  
१० दशमीके रोज, नागपुर निवासी, श्रीमाल साहहाथीने नंदीमहोत्तव सहित  
पद स्थापना करी, तरुण प्रजाचार्यसूरि मंत्र दिया, ऐसे श्रीजिनचंद्रसूरि सं।  
१४१५ आषाढ वदि १३ त्रयोदशीके रोज स्तंजन तीर्थविषे स्वर्ग गए ॥ ५३ ॥

॥ ✽ ॥ तत्पछे ५४ मा श्री जिनोदय सूरि हुए, तिके पाटणपुर  
वसन बाले, मालगोत्रीय, साह रुंदपाल पिता, धारल देवी माता, सं।  
१३०५ जन्म, समरो, ऐसा मूलनाम सं। १४१५ आषाढ सुदि २  
दुजके दिन, स्तंजन तीर्थके विषे, लूणीया गोत्रीय साह जेशलरुत नंदी  
महोत्तव करके श्री तरुण प्रजाचार्य पद स्थापना करी, तहां स्तंजन तीर्थ  
विषे श्री अजितनाथ मंदिरकी प्रतिष्ठा करी, तथा सेवुंजयकी यात्रा करके  
उहां पांच प्रतिष्ठा करी, इस माफक पांच तिथमें उपवास करनेवाले  
फेर १२ वारे गांमके विषे अमारि डूंनी फिरानेवाले २८ अगवीस साधु  
बांके परवार करके अनेक देश बिहार करतेथके, श्री जिनोदय सूरि सं।  
१४३२ चाद्रवा वदि ११ एकादशीके रोज पाटण नगरमें स्वर्ग गए ॥  
तिनोके वारे सं। १४२२ बेगम खरतर शाला निकली ॥ ५४ ॥

॥ ✽ ॥ श्री जिनोदय सूरिपछे ५५ मा श्री जिनराज सूरि हुए  
तिके सं। १४३२ फागुण वदि ६ ठक्के दिन, पाटण नगरमें साह  
धरणने नंदी महोत्तव किया सूरि पदमें प्राप्त हुए, तब गुरुमहाराज सवालक  
प्रमाणें न्याय ग्रंथ पढे और सर्व सिद्धांतके पारंगामी हुए ऐसे गुरुमहाराज  
सं। १४६१ देवलवामा नगरमें स्वर्ग गए ॥ ५५ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ तत्पट्टे ५६ मा श्री जिनचन्द्र सूरि जए तत्प्रबंधोयथा ॥ प्रथम सं । १४६१ श्री सागर चंद्राचार्य, श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनवर्धन सूरिकों स्थापन कीएथे, तिके एकदा जेशलमेरगढमें श्री चिंतामणि पार्श्व नाथके पासमें रही क्षेत्रपालकी मूर्ति देखकै स्वामी सेवकका बराबर बैठना अयुक्त है, ऐसा विचार करकै क्षेत्रपालकी मूर्तिकों उठायकै दरबज्जेके विषे स्थापन करी तब क्रोधायमान जया थका क्षेत्रपाल जहां तहां गुरुमहाराज का चतुर्थ व्रतका जंगपणा दिखलानें लगा, इसीतरे एकदा गुरुमहाराज चित्रकूटके विषे गए, तहां पिण देवता तिसी तरेसें करा, तब सर्व श्रावक चतुर्थ व्रतका जंग जानकै यह पूज्य पदके योग्य नहिं है ऐसा विचार करा क्रमसें वर्धमान सूरि व्यंतर प्रयोग करकै अथलीजूत जए थके पिप्पलक ग्राममें जाकै रहे, कितनेक शिष्य पासमें रहे, तब सागर चंद्राचार्य प्रमुख समस्त साधु वर्ग एकत्र होकै, गच्छकी स्थिति रखणें वास्तै, नवीन आचार्य स्थापन करना, ऐसा विचार करा, तब नवीनगोरा नाम क्षेत्रपालकों आराधन करके, और सर्व देशके खरतर गच्छीय संघकी अनुमति हरताइर मंगवायके सर्व साधुमंडली एकठि करनै जाणसोल ग्राम आए, तहां श्रीजिनराजसूरियें एक अपणें शिष्यकों वाचक शीघ्रचंद्रगणीकेपास पढनैकेवास्ते रखल था सो समस्त शास्त्रका पारगामी जया, जणसाली गोत्रीय, जादोमूल नाम सं । १४५१ दीक्षा ग्रहण करी, अनुक्रमें पंचवीस वर्षके जए, तब तिनकों योग्य जानके श्रीसागरचंद्राचार्य सातजकाराद्धर मिलाय के सं । १४७५ माघसुदि पूर्णमासीकेदिन, जणसाली नालामाहनें सवा लक्ष रुपये खरच करकै नंदीमहोत्सव सहित सूरि षट्में स्थापन किए ॥ सप्त जकार लिखे हे ॥ १ जाणसोल नगर ॥ २ जणशालिक गोत्रीय ॥ ३ जादो नाम ॥ ४ जरणी नक्षत्र ॥ ५ जद्राकरण ॥ ६ जद्वारक पद ॥ ७ जिनचन्द्र सूरि ॥ इस माफक बने प्रज्ञाकी श्री जिनचन्द्र सूरि विचस्ते थके, आवूजी, गिरनारजी, जेशलमेर प्रमुख ठिकाणोंके विषे विंन तथा नवीन चैत्योंकी प्रतिष्ठा करते जए, ठिकाणें ठिकाणें पुस्तकोंके जंमार स्थापन किये, अंतमें सं । १५१४ मिंगशर बदि नवमीके दिन कुजल मेरु नगरमें देवलोककों प्राप्त जए, इनोंके बारे

सबत् १४७४ श्रीजिनवर्द्धन सूरिसै, पिप्पलक खरतर शाखा निकली यह  
पांचमा गह्व जेद जया ॥ ५६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ✽ ॥ ५७ ॥ श्री जिनचंद्र सूरिके पाठ ऊपर, श्री जिनचंद्र सूरि  
 ज्ञए ॥ तिके जेशलमेर वासी, चम्म गोत्रीय, साह वज्जराज पिता, बाल्हा  
 देवी माता सं । १४७७ जन्म सं । १४९२ दिक्षा सं । १५१४ वैशाख  
 वदि ९ द्वितियाके दिन कुंजल मेरु रहवासी कूकम चोपमा गोत्रीय, साहस  
 मरसिंहने नंदी महोत्तव किया, श्री कीर्ति रत्नाचार्य पद स्थापना करी, फेर  
 विचरते थके अरुंदाचल ऊपर, नवफणा पार्श्वनाथ विंवप्रतिष्ठा कारक, श्री  
 धर्मरत्नसूरि, गुणरत्नसूरि प्रमुख अनेक संमलाचार्य पद स्थापक श्रीजिनचंद्र  
 सूरि वि. । सं । १५३० जेशलमेर नगरमें देवलोकको प्राप्त ज्ञए ॥ ५७ ॥ ✽ ॥

॥ ॐ ॥ इनोके बारे वि । सं । १५०८ अहमदाबादमें लोके लेख  
करने प्रतिमा उत्थापन करी । सं । १५२४ लुंपक मत प्रचलित जया, इनमें  
जेप धारक सं । १५३३ में जूणा नाम रिपि जया, इनकी किंचित् उत्पत्ति  
लिखता जूं, अहमदाबादमें दशाश्रीमाली लोका नामें एक लेखकथा, सो  
जतियोंकी पुस्तकों लिखता था, एक दिन तपगृहका ग्यानजी जतीकी  
पुस्तक लिखी, जिसमें ब्रजत खोट रह गई, जब ग्यानजी कुछ कठोर वचन  
बोले, तब लोका लम्बे लगा, तब धक्का देके लोकाको निकाल दिया, पीछे  
नीवड़ी जायके राजकारजारी लखमसी नाम बाणियेके सामने कूका, तब  
लखमसीने दकीकत पूछी, लोकेने कहा, सच्चा धर्म कहतां तपा जियां मन  
माखो, तब लखमसी बोला इहां तुं थारो मत चलाव, में तेरा पक्ष जूं, जब  
ब्रजत लोकानि रुपण दलद्री होता जानके, मंदर प्रतिमाका उत्थापन किया  
मन आए सो ग्रंथ माने, वत्तीस सुत्रको सच्चा करके मान्या, परंतु मेरी  
माथी सो बांछ थी, इसी न्यायसे ३२ सुत्रको सच्चा मान्या, परंतु उनमें  
पंचांगी प्रमाणका, तथा प्रतिमा पूजनका अधिकारको जूठा मान्या, इससे  
मनोमती जवा, २५ वरप गृहस्थपणें लुंपक मतकी प्ररूपणा करी, पीछे  
लोकेके उपदेशसे एक ज्ञाणा नाम बाणियेके बेटेने जेप धारण किया उस  
का जूणारिपि नाम जवा पीछे प्ररवारवधता इसमें तीन गांड़ी जूं नांगोरी,  
गुजराती, उत्तरादि, इत्यादि इति लुंपकोत्पत्तिः ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ✽ ॥ ५८ ॥ श्री जिनचंद्र सूरिके पाट ऊपर, श्री जिनसमुद्र सूरि नए तिके वाहमेरवासी, पारख गोत्रीय, देको साह पिता, देवल देवी माता सं। १५०६ जन्म, सं। १५२१ दिक्का। सं। १५३० माघसुदि तेरस के दिन जेशलमेरके वासी संघपति सोनपालने नंदी महोत्सव किया, श्री जिनचंद्र सूरियें स्व हस्तसे पद स्थापना करी, फेर बिहार करते पंचनदी सोम यक्षादि साधक, परम चारित्रवंत श्री जिनसमुद्र सूरि: वि। सं। १५५५ अहमदाबाद नगरमें देवलोक गये ॥ ५८ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ५९ ॥ श्रीजिनसमूद्रसूरिके पाटऊपर, श्रीजिनहंससूरि: नए॥ तिके सैत्रावा नगरवासी, चोपमा गोत्रीय, साह मेघराज पिता, कमला देवी माता, सं। १५२४ जन्म, सं। १५५६ वैशाख सुदि ३ के दिन रोहणी नक्षत्रे श्रीवीकानेर नगरमें करमसी मंत्रियें लक्ष्मण द्रव्य खरच करके आचार्य पदका उत्सव किया, तथा ज्ञानासरजीके मंदरकेपास, मोटा श्रीनमिनाथजीका बिंब चैत्यकी प्रतिष्ठा कराई, पीठे एकदा आगरा नगरमें रहनेवाले सं। डुंगरसीजी मेघराजजी पोमदत्त प्रमुख संवने वज्रत आयुह करके वीनती जे जके महाराजकों बुलाया तब गुरुमहाराजजी उहां गए, तब बादशाहें जेजे हाथी घोमा पालखी वाजित्र चामरादि आमंत्र करकै सहित, गुरुमहाराज का प्रवेश महोत्सव करा तहां संघने गुरुभक्ति संघजक्त्यादिकमें, दोय लक्ष रुपिया खरच करा पीठे फेर कोई चुगलखोरके चुगली करनेसे बादशाहने फेर गुरुमहाराजकों बुलवाए, धवलपुरमें रखे, तब देवकासानिध सेती गुरुमहाराज बादशाहके चित्तकों प्रसन्न करकै, पांचसौ बंदीवानाकों ठेकायकै अमारमुंजी पिठवायके उपासरे आए, तब समस्तसंघ वज्रत हर्षित नए फेर गुरुमहाराज अति सौभाग्य धारक, तीन नगरकै विषै तीन प्रतिष्ठा कारक अनेक संघपति प्रमुखपद स्थापक पाटण नगरमें तीन दिनका अणशण करकै सं। १५८२ में स्वर्ग गए॥ तिस वखतमें सं। १५६४ मरुदेशकै विषै आचार्य शांतिसागरसेती, आचार्य खरतर शाखानिकली यह ठग गज्ज जेद जया तथा इनोंके वखतमें सं। १५६२ कडुआमत ऊवा, सं। १५७० में लुंकामतसे निकलके बीजानामा जेषधरनेबीजामत निकाला, सं। १५७२ नागपुरी तपांमेंसे निकलके पार्श्वचंद्रजीने अपने नामसे पार्श्वचंद्र मत निकाला ॥ ५९ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ तत्पट्टे ६० मा श्रीजिन माणिक्यसूरि जए ॥ तिके कूकम  
चोपमा गोत्रीय साहजीवराज पिता, पद्मादेवी माता, सं । १५४ए जन्म  
सं । १५६० दीक्षा सं । १५७२ जादवा वदि ए नवमीके दिन साहदेव  
राजनें नंदी महोत्सव किया, श्री जिनहंस सूरिये अपणें हाथ करकै पद  
स्थापना करी फेर गुर्जर देश सिंधु देशादिकमें बिहार कारक पंच नदीसाधक  
श्रीजिनमाणिक्यसूरि कितनेक वरषतक जेशलमेरगढमें रहे, तहांमुनि सर्व  
स्थिताचारी हो गए, प्रतिमा उत्थापक मत बहोत फैला, तब बीकानेरके  
बासी बन्नावत मंत्री संग्राम सिंहनें गह्व स्थिति रखेवास्ते, श्रीगुरुमहाराजको  
बुलवाए तबजावसेती किया उधार करकै, श्रीगुरुमहाराजनें विचारा, कि  
यहले देशउर नगरमें श्रीजिनकुशलसूरिजी महाराजकी यात्रा करकै पीठे  
सबं परिग्रह त्यागकै बिहार करुंगा, इसवास्ते गुरुमहाराज यात्राफेवास्ते देराउर  
गए, तहां गुरुदर्शन करकै जेशलमेर पीठ आतेवखतमें गुरुमहाराजको मा  
गमें जलअजावसें त्रिपा परीशह बहोत उत्पन्न जया, जलरातको मिला, तब  
गुरुमहाराज दिलमें विचार कात मेंनें इतनें वरषतक रात्रिकों चोबिहार पञ्च  
वखाण करा जिसको एक दिनकैवास्ते कैसें खंमन करुं, अइसा विचारकै तहां  
हीज सं । १६१२ आषाढ सुदि पंचमीके दिन अणशण करकै काल  
प्राप्त होकै स्वर्ग गए ॥ ✽ ॥ ६० ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ तत्पट्टे ६१ मा श्रीजिनचंद्रसूरि जए तिके बमली गामवासी रीहम  
गोत्रीय, साह श्रीवंतपिता सिरियादेवी माता, सं । १४ए४जन्म सं । १६०४दीक्षा  
सं । १६१२ जादवा सुदि ए नवमीके दिन जेशलमेर नगरमें राउल माल  
देव कारित नंदी महोत्सव करकै सूरिपदमें प्राप्त जए, तिसहीज रात्रकै बिषै  
श्रीजिन माणिक्यसूरि प्रगट होकै सेवाकी पोथीमें रहा आम्नाय सहित  
सूरि मंत्र पत्र श्रीजिनचंद्रसूरिकों दिया, फेर श्री जिनचंद्रसूरि, संवेगरंगमें  
वासित चित्त जयायका गह्वकैविषै शिथिलपणा देखकै, सबं परिग्रहका त्याग  
करकै, बन्नावत मंत्री संग्राम सिंहका पुत्र कर्मचंदकै आयह करकै, बीकानेरन  
गरमें गए, तहां प्राचीन उपाश्रयको शिथिलाचारी यति लोफोंके रोका जया देख  
कै मंत्रवीनें अपणी अश्वशाला महाराजको दीवी, उरची बहोत गुरुकी  
जक्ति करी, गुरुमहाराज तहां किया उधार करकै सुबिहित साधु मार्ग अंगी

कार करा, अपणें समान साधुवाकेसाथ बिहार करकै, ठिकाणें १ प्रतिमा  
 उत्थापक मत खंमन करते थके, अपणी समाचारी दृढ करते थके  
 अनुक्रमें गुर्जर देशमें गए, तहां अहमदाबाद नगरमें, काकमी व्यापार  
 करकै आजीवका करता थका, मिथ्यात्वी कुलोत्पन्न, पौरवान्नातीय सिवा  
 सोमजी नामें दोनूं जाईकों प्रतिबोध देके सर्व कुटुंब सहित धनवंत  
 श्रावक करा, जिणोंने सेवुंजयकी यात्रा करके सर्व देशोंके जैन लोककों  
 एकेक मोहर, एकेक थालकी लहाणी दीनी, तथा पाटण नगरमें एकदा तप  
 गच्छी विजय दान सूरीका शिष्य, धर्मसागर गणिः लोकोंकै अगामी श्री अ  
 जय देवसूरि खरतर गच्छमें नहिं जए इत्यादि कितनेक वचन उत्सुत्र कहा, तब  
 गुरुमहाराज पाटण चौमास करके शास्त्रसेवाद करकै चोरासी गच्छीयमुनि  
 लोकोंके सामनें धर्मसागरकों जीता, तब सर्व कहनें लगे, नवांगीटीका  
 रचन करनेवाले श्रीअजयदेवसूरि खरतर गच्छमें जए, ऐसा सर्वनें अंगीकार  
 करा, फेर तिनके बनाया जया कुमति कुदालनामें ग्रंथकूं असुध करा,  
 तथा फेर फलोधी पार्श्वनाथके मंदिरमें तपगच्छवालानें ताला लगाया जया  
 हाथफरस करके उवामा, सर्व लोक आश्चर्यमान जए, पीठे फेर एकदा मंत्रि  
 कर्मचंद्र प्रमुखसें गुरुमहाराजको अति महत्व सुनकै बादशाहनें दर्शनकै  
 वास्तै बुलवाया, गुरुमहाराज लाहोर नगर जाकै, अकब्बरकों प्रतिबोध दिया  
 तब अकब्बर बादशाह गुरुका सुध आचार व्यवहार देखकै अमृतकै  
 समान अत्यंत मिष्ट वाणी सुन करकै, गुरुकै वचनसें पर्युषणादिक सब  
 पर्व तिथियोंमें कोइ सहरमें जीव हिंसा न करसकै ऐसी नदघोषणा अपणें  
 राज्यमें दिरवाई, फेर एक वर्ष तक स्तंभ नगरकै पास समुद्र नदीमें मत्ता  
 दिक नहिं मारसकै ऐसा हुकम करिवाया इसीतरे जीव दयाधर्मको बहोत  
 विस्तार कियो, गुरुका महा अतिशय देखकै, बादशाहनें युग प्रधान, राज  
 गच्छ विरुद्ध दिया, पहले परवन्नोंकी नकल देखकै उसी मुजब ए नवमो  
 हरा परवन्ना लिखकै दिया, जिस्में सारांस इतनाहे, कि महारे राज्यमें जहां  
 श्रीजिनचंद्रसूरजी महाराज पधारे उहां राजादिक सर्व लोक भक्ति साच  
 बेंगे, और सिद्धाचलजी, गिरनारजी, शिखरजी प्रमुख सर्व तीर्थोंमें, तथा  
 इनका ठिकाणें १ धर्म स्थानकोंमें कोइ जीव हिंसादि कार्य न करै, गुरुकी

आज्ञा मुजब कार्य करै, इत्यादि पंखना खरतर गच्छकै जंमारोंमें है, तथा अकचर वादशाहके आग्रहसे तिस अवसरमें गुरुमहाराजनें जिन सिंहसूरिकों अपणें हाथसेती आचार्यपदमें स्थापन करा, तब अति प्रसन्न जया थका बच्चावत मंत्रीकर्मचंद्रनें महोत्सव करा, तहां नवग्राम ए, नवहस्ति ए, पांचसै ५०० घोमा जैन याचकादिककों दानमें दिया, इस्तरैसें सवाकोम द्रव्य खरच करा, फेर मंत्रवीनें अनेक प्रकारसें खरतर गच्छकी महिमा करी, तथा फेर सं । १६५१ श्री गुरुमहाराजनें पंचनदी साधन करी, तहां पांचपीर मानचंद्र खोमीया क्षेत्रपालदेवादिककों साधन किये, इस माफक बहोत जिनशासन की उन्नती करणेंवाले जए, फेर गुरुमहाराजके समयराज १, महिमाराज २, धर्म निधान ३, रत्न निधान ४, ज्ञान विमल ५, इत्यादि ए५ पचाण वैशिष्य जए, ऐसे श्री जिनचंद्र सूरजी महाराज, सर्व आयु ७५ पचत्तर वरसको पाल करके सं । १६७० आसोजवदि १ दूजके दिन वेना तटमें स्वर्ग प्राप्त जए । तिस वखतमें सं । १६११ जावहर्ख उपाध्यायसे ती जाव हर्खीय खरतर शाखा निकली, यह सातमा गच्छ जेद जया ॥६१॥

॥५॥ श्रीजिनचंद्र सूरि पढे ६१ मा श्रीजिनसिंह सूरि जए, तिके गणधर चोपमा गोत्रीय, साह चांपसी पिता, चतुरंगीदेवी माता, सं । १६१५ मिगशिर सुदि १५ पूर्णमाशीके दिन खेतासर गाममें जन्म, मानसिंह मूलनाम सं । १६१३ मिगशिर वदि ५ पंचमीके दिन बीकानेरमें दिक्षा, सं । १६४० माघ सुदि ५ पंचमीके दिन जेशलमेरमें वाचकपद सं । १६४९ फागुण सुदि १ दूजके दिन, लाहोर नगरमें, बीकानेर रहनेवाले बच्चावतमंत्रि कर्म चंदनें सवाकोम द्रव्य खरचके आचार्यपदका उन्नव किया सं । १६७० वेना तटमें सूरिपद, सं । १६७४ पोष वदि १३ तेरसके दिन मेमता नगरमें स्वर्ग गए ६१

॥ ५ ॥ तरपढे ६३ मा श्री जिनराज सूरि जए, तिके वोथरा गोत्रीय साह धर्मसीपिता, धारलदेवी माता, सं । १६४७ वैशाख सुदि ७ सातमके दिन जन्म, सं । १६५६ मिगशिर सुदि ३ तीजके दिन बीकानेरमें दिक्षा राजसमुद्र दिक्षानाम, सं । १६६० आसावलिपुरमें श्री जिनचंद्र सूरियें वाचक पद दीया, सं । १६७४ फागुण सुदि ७ सातमके दिन मेमता नगरमें चोपमा गोत्रीय साह करणनें महोन्नव किया, सूरि पदकों प्राप्त जए



श्री जिनराज सूरिनाम ऊवा ॥ फेर श्री जिनराज सूरि, लोद्रव पत्तनकै विषै श्री जेशलमेर निवासी, जणशाली शेरू साहनें उधार करा श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ चैत्यकी प्रतिष्ठा करी, तथा सं। १६७५ वैशाख सुदि १३ त्रयोदशी शुक्रवारके दिन श्री राजनगर निवासी पोरबाम झातीय संघपति सोमजीका पुत्र रूपजीनें बनवाया श्रीशत्रुंजय ऊपर चतुर्मुख देवालयमें श्रीरिखनादि चौमुखजिनकां आदलेके ५०१ पांचसै एक प्रतिमाकी प्रतिष्ठा करी, तथा फेर ज्ञानुवम ग्रामकै विषै साह चांपसीके बनवाया देवघर मंमन श्रीअमृत श्रावि पार्श्वनाथ प्रमुख ७० अशी विंवकी प्रतिष्ठा करी, तथा मेरुता नगरमें गणधर चोपमा गोत्रीय संघपति श्री आशकरण साहके करवाया श्रीशांति नाथ स्वामीके चैत्यकी प्रतिष्ठा करी, इस तरेसें राजनगरादि अनेक नगरोंकै विषै श्रीजिन चैत्योंकी प्रतिष्ठा करी, इस माफक श्री जिनमत उन्नती कारक, अंबिका प्रदत्त वरधारक, बंधाणी नगरमें चिरकालकी जमीनमें रही प्रतिमाकां प्रसस्तीका अक्षर देखकै प्रगट कारक, इत्यादिक महा प्रतापी, समस्त तर्क, व्याकरण, छंद, अलंकार, कोश, काव्यादि, विवधशास्त्र पारीण, नैषधी काव्य की, जैनराजी टीका प्रमुख, अनेक ग्रंथ रचन करणै वाले, श्रीवृहत् खरतर गह्व नायक श्री जिनराज सूरि सं। १६९९ आषाढ सुदि ९ नवमीके दिन पत्तनमें स्वर्ग गए, ॥ इन्नोंकेवारे सं। १६७६ जिनसागर सूरिसें लघु आचार्य खरतर शाखा निकली, यह ७ मा गह्व जेद जया ॥

॥ ❀ ॥ तत्पटे ६४ मा श्रीजिनरत्नसूरि जये ॥ तिके सेरूणागाम निवासी लूणिया गोत्रीय साह तिलोकसी पीता, तारादेवी माता, रूपचंद्र मूलनाम निर्मल वैराज्ञ करके मातासहित दिक्षा ग्रहण करी, फेर सं। १६९९ आषाढ सुदि ७ सातमके दिन श्रीजिनराजसूरजी महाराजनें स्वहस्तसें सूरि मंत्र दिया, फेर शुद्धचारित्रपात्र श्रीजिनरत्नसूरि सं। १७११ श्रावण वदि ७ सातमके दिन आगरा नगरमें स्वर्ग गये ॥ ६४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सं। १७०० में उपाध्याय श्रीरंग विजय गणिसैं, रंगविजय खरतर शाखा निकली, यह ९ मा गह्व जेद जया । फेर तिस बखतमें तिन मांयसें श्री सार उपाध्याय सेती, श्री सारीय खरतर शाखा निकली, यह १० मा गह्व जेद जया ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ✽ ॥ तत्पद्ये ५५ मा श्रीजिनचंद्रसूरि ज्ञेय ॥ तिकेगणधर चोपमा गोत्री  
य साहसहस करण पिता, सुपियारदेवी माता, हेमराज मूलनाम, हखेखान  
दीक्षा नाम सं। १७११ नाद्रवा सुदि १० दशमीके दिन, श्री राजनगरमें,  
नाहदा गोत्री, साहजयमल्ल तेजसी, मातृकस्तूरवाईने आचार्य पदका महोत्सव  
कीया, पीठे गुरुमहाराज योधपुरवासी साह मनोहरदासनं निकाला  
संघके साथ श्रीसत्रुंजयकी यात्रा करी, तथा मंमोवर नगरमें संघपति साह  
मनोहरदासनं बनवाया चैत्य शृंगार श्रीरिखनादि २४ चौबीस तीर्थकर  
बिंबोंकी प्रतिष्ठा करी, इसमाफक नानादेशमें बिहार करनेवाले सर्व सिद्धांत  
पारगामी श्रीजिनचंद्रसूरि सं। १७८३ श्री सूरतवंदरमें स्वर्ग गए ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ इन्नोंके बारे दुंदकमत प्रचलित जया, इनकी किंचित् उत्पत्ती  
लिखता हूं॥ सूरत नगरमें एक वोहराबीरजी नामें दशा श्रीमाली जया जिस  
के फूलां नामें बालविधवा बेटी थी, उसनें लवजी नामें एक पुत्रको गोदलिया  
सो लुंपकांके उपाशरे पढनेंको जाताथा लुंपकांकी संगतसे बेराग्य पायके वज  
रंगजी लोंकेपासे दिक्कालीबी, दो वर्षपीठे गुरुको कहनें लगा कि शास्त्रमुजब  
आचार नहिं क्युंपालते हो, गुरु कहा इस कालमें ऊठपट दया नहिं होती  
हे तव लवजी बोला तुम भ्रष्टाचारी हो मैं तुमारा मत ठोरेके जुदी दिक्का ले  
सुं, ऐसा कहके दो जती नूणाजी, सुखजीकों, लेकर तीन जिणां आपही जेप  
धारण किया, मुंहआमी मुहपत्ती बांधी, इनका नवीन मत देखके कोई घरमें  
उतरण नदिया, तब वज्रत दिन उजड़े ऊए, टूटे फूटे दुंदमकानमें रहे  
इससेती दुंदिया नाम ऊवा, तीनोंने मत चलाने वावत वज्रत कष्ट किया  
तब वुगलेके माफक ऊपरकी दुंज फुंफां देखके घणां लुंपक पक्षी गुजराती  
बणिया नाननें लगे, क्युं कि अग्यानी लोक ऊपरकी फुंफा देखते हैं  
जिसमें गुजराती प्रायें हग्याही ऐसे होते हे, कि जिसका पक्ष करते हैं जो  
बात पकम लेते हैं, सो मुसकिलसे ठोमते हैं, इसीवास्ते कईफिरके एकाति  
क मतवाले प्रायें गुजरात देशसेही निकले हैं, ऐसा जैनतत्वादशमें, पीतां  
वरीमुनी आत्मारामजी लिखते हैं, ये दुंदकमत उत्पत्ती कही, इसी  
दुंदको मैंसे तेरे पंथी जीपमजी प्रमुखा निकल्या, सो इनको उत्थापके आ

पका फिरका जमानें लगे, इसमेंसुं फेर १४ पंथी निकला, इत्यादि मनोमती मंदिरप्रतिमाका उत्थापक मत ऊवा ॥ ६५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तत्पट्टे ६६ मा श्रीजिन सुखसूरि जए, तिके फोग पत्तन निवासी साहलेचा बोहरा गोत्रीय, साहरूपसी पिता, सुरूपा माता, सं। १७३९ मिगशिर सुदि १५ पूर्णमासीके दिन जन्म, सं। १७५२ माघ सुदि ५ पंचमीके दिन पुण्यपालसर गाममें दिक्षा, सुखकीर्ति दीक्षा नाम सं। १७५६ आषाढ सुदि ११ एकादशीके दिन, सूरतबंदरमें रहवासी चोपमा गोत्रीय पारख सामीदासनें इग्यारै ११००० हज़ार रुपिया खरच करके पद महोत्तव करा, फेर एकदा गोगा बंदरके विषै, नवखंमा पार्श्वनाथ स्वामीकी यात्रा करके, श्रीगुरुमहाराज संघकेसाथ स्तंभन तीर्थ जानेंकेवा स्तै जिहाज ऊपर चढे, तब मार्गमें समुद्रके मध्यभागमें, जिहाजके नीचेका पाठिया टूट गया, तहांजलसैं नराजया जिहाज देखके गुरुमहाराजनें इष्टदेवका आराधन किया, तब दादाजी श्रीजिनकुशल सूरजी महाराजके साहाय्य करके अकस्मात नवीन जिहाज प्रगट होनैसे समुद्रपार पंजुंचे, तब फेर जिहाज अदृश्य होगया, फेर स्थंभना, सेत्रुंजयकी यात्रा करी, सकल शाख पार गामी, अनेक वादीकों जीतनेवाले श्रीगुरुमहाराज तीन दिन अणशण करके सं। १७८० ज्येष्ठ वदि १० दशमीके दिन श्रीरिणी नगरमें स्वर्गकों प्राप्त जए, उसी रात्र देवतायें अदृष्ट वाजित्रवजाया, उस नगरके राजादिक सर्व लोक वाजित्र ध्वनि करके आश्चर्यवंत जये ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तत्पट्टे ६७ मा श्री जिनभक्ति सूरि जए ॥ तिके इंद्रपाल नगर निवासी सेठगोत्रीय साह हरचंद्र पिता, हरिसुख देवी माता, सं। १७७० ज्येष्ठ सुदि १ द्वितीया दिन जन्म, भीमराज मूलनाम सं। १७६९ माघ सुदि ७ सप्तमीके दिक्षा, भक्तिक्षेम दिक्षा नाम सं। १७८० ज्येष्ठवदि ३ तृतीया दिन, रिणीपुरमें श्रीसंघकृत्महोत्तवसैं, आचार्यपदकों प्राप्त जए, फेर नाना देशमें बिहार करनेवाले, सादमी नामा नगरकेविषै हस्ति चालनादि प्रकार करके, प्रतिपक्षीकों जीतके, विजय लक्ष्मीकों धारनेवाले सर्वसिद्धांत पारगामी, श्रीसिद्धाचलादि सकल महातीर्थ यात्राकारी, श्रीगूढा नगरके विषै श्रीअजितजिन चैत्य प्रतिष्ठाकारी, महातेजस्वी, सकल विघ्न

न सिरोमणि, श्रीराजसोम उपाध्याय, श्रीरामविजय उपाध्याय, श्रीकुमाप्र  
मोदउपाध्यायादि संसेवितचरण कमल ऐसे श्रीजिनजक्ति सूरि कछदेश मंन  
श्रीमाम्नी बंदरकेविषै सं । १८०४ ज्येष्ठसुदि ४ चोथके दिन स्वर्ग गए, ॥  
उसरात्रीमें अग्निसंस्कार भूमिकेविषै देवतानें दीपमाला करी, ऐसे प्रजावीक  
गुरुमहाराज जए ॥ ६७ ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ तत्पट्टे ६८ मा श्रीजिनलान्न सूरि जए, तिके बीकानेरके रहने  
वाले, वोयरागोत्रीय, साहपचायणदासपिता, पद्मादेवी माता, सं । १७७४  
श्रावण सुदि ५ पंचमीके दिन, बापेउ गामकेविषै जन्म, लालचंद्र मूलनाम  
सं । १७८९ ज्येष्ठ सुदि ६ ढक्के दिन जेशलमेरमें दिक्षा, लक्ष्मीलान्न  
दिक्षानाम, सं । १८०४ ज्येष्ठ सुदि ५ पंचमीके दिन श्री माम्नी बंदरमें  
ठाजेमगोत्रीय साह जोजराजकृत नंदीमहोच्चव करके पदस्थापन जया,  
फेर जेशलमेर, बीकानेर, आदि, अनेक पुरकेविषै बिहार करके श्री  
गोडी पार्श्वनाथ, तथा धूलेवां, अर्बुदाचल, सिद्धाचलजी, गिरनारजी, प्रमुख  
तीर्थोंकी यात्रा करते थके, गुरुमहाराज सूरत बंदर गए, तहां सं ।  
१८२७ वैशाख सुदि १२ द्वादशीके दिन, आदिगोत्रीय साह नेमी दास  
पुत्र, जाई दासनें बनवाया, नवीन चैत्यमंडन श्री शीतलनाथ, सहस्रफणा  
पार्श्वनाथ, श्री गोडी पार्श्वनाथ आदि १८१ विंवोकी प्रतिष्ठा करी, तथा  
सं । १८२८ वैशाख सुदि १२ द्वादशी दिन, तिसीज देवघरमें श्री महावी  
रादि८२ वयासी विंवोकी प्रतिष्ठा करी, प्रतिष्ठा तथा संघजक्तीमें ३६०००  
ठंसीस हज़ार रुपिया खरच करा, सं । १८३४ आसोजबदि १० दशमी  
के दिन श्री गुढा नगरके विषै स्वर्ग गए ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ तत्पट्टे ६९ श्री जिनचंद्र सूरि जए, तिके बीकानेरवासी ब्रह्मा  
वत मुहता, रूपचंद्र पिता, केसर देवी माता, सं । १८०९ कल्याण सरगा  
ममें जन्म, अनूपचंद्र मूलनाम सं । १८२२ मंमोवरमें दिक्षा, उदयसार  
दिक्षा नाम, सं । १८३४ आसोज बदि १३ त्रयोदशीके दिन, गुज लग्नमें,  
गूढा नगरके विषै, कूकम चोपमा गोत्रीय, दोसी लरका साहनें महोच्चव  
करा, सूरि पदमें प्राप्त जए, फेर अयोध्या, चंद्रावती, पामलिपुर, चंपा  
मुर्शिदाबाद, समेत शिखर, पावापुरी, राजगृही, मिथिला, क्षत्रिय कुमग्राम

काकंदी, हस्तिनागपुर आदि, तीर्थोंकी यात्रा करी, क्रमसें लखणौ नगर आए, उहां प्रतिमा उत्थापकका मत बढनेसें, राजा बहुराजनें, आग्रहके साथ रक्खा चौमासा करवाया, तब उहां वज्रतसा प्रतिमा उठापक मत खंमन किया, फेर तिस नगरकै नजीक उद्यानमें राजा बहुराजको उपदेश देकै, श्रीजिन कुशलसूरजी महाराजका थुंन बनवाया, उहांसें बिहार करके, सर्व तीर्थोंकी यात्रा करते, श्री जिनचंद्रसूरि: सूरत बंदरमें, सं। १८५६ ज्येष्ठ सुदि ३ तीजको स्वर्ग गए ॥ ६९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तत्पढे ७० मा श्री जिनहर्खसूरि जए, तिके बालेबागाम बासी मीठमिया बोहरा गोत्रीय, साहितिलोकचंद्र पिता, तारा देवी माता, हीरचंद्र मूल नाम, सं। १८४१ आठ गाममें दिक्षा, हितरंग दिक्षानाम सं। १८५६ ज्येष्ठ सुदि १५ पूर्णमाशीके दिन, श्री सूरत बंदरमें श्री संघका किया उठव सहित सूरिपदको प्रात जए, तब तिसी नगरमें, श्री संघे चैत्य बिंबोकी प्रतिष्ठा कराई, तथा सं। १८६० अक्षय तृतीयाके दिन देवीकोठके श्री संघनें बनवाया मंदरमें १५० बिंबोंकी प्रतिष्ठा करी, तथा फेर जालोर नगरमें मंत्री अखयराजनें बनवाया मंदिरकी प्रतिष्ठा करी, तथा सं। १८६६ चैत्र सुदि १५ पूर्णमाशीके दिन, गिम्नीया संघपति राजाराम, लूणीया साह तिलोकचंदनें, निकाला संघ, सवालक श्रावक, ११०० इग्यारैसें साधुबोंके साथ, श्री सिद्धाचलजी गिरनारजीकी यात्रा करी, फेर गुरुमाहाराज अनेक देशोंमें विचरते सं। १८७० शम्भेत शिखर तीर्थ राजकी यात्रा करी, फेर सं। १८७६ श्री संघके साथ शिखरजीकी यात्रा करी, फेर दक्षिण देशमें अंतरीक पार्श्वनाथ, मगशी पार्श्वनाथ, धूलेवागढ, इत्यादि तीर्थोंकी यात्रा करते, सं। १८८७ आषाढ सुदि १० दशमीके दिन, श्रीबीकानेर नगरमें, श्री सीमंघर स्वामीके मंदिरमें ३५ पचवीस बिंबकी प्रतिष्ठा करी, सं। १८८९ साध सुदि १० दशमीके दिन, श्री बीकानेर नगरमें, सेठिया गोत्र साह अमी चंदनें बनवाया, शम्भेतशिखरगिरी जाव विराजित मंदिरकी प्रतिष्ठा करी तिस अवसरमें, जेशलमेर निवासी, बाफणा साह बहादरमलजी, जोरावर मलजीके, मनमें संघ निकालके सिद्धगिरी जानैका विचार ऊआ, तब

परिवार सहित बीकानेर नगरमें आए, महामहोदयसे गुरुमहाराजको वंदन नमस्कार किया, सात क्षेत्रमें वज्रत द्रव्य खरच किया फेर गुरुमहाराज श्री संघके साथ श्रीसिद्धाचलकी यात्रा करनेको चले, बीचमें वर्षाकाल आया, जब गुरुमहाराज मंमोवर नगरमें चौमासा रहा, उहां सं। १८९२ कार्तिक वदि ए के रोज, चार पहरका अणशण पालके देवलोक गए ७०

॥॥॥ इस समय मंमोरिया खरतर शाखा जई, इसमें श्रीजिन महेंद्रसूरिः महाराज जए यह १२ मा गङ्ग जेद जया, इसीतरे मूल कोटिक गङ्ग खरतर कल्पवृक्षकी इग्यारे शाखा जई ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ श्री जिनहखं सूरिके पाटऊपर, श्रीजिनसौजाग्य सूरि जए, तिके माखाडमें, खाई सेरमा गामवासी, कोठारी गोत्रीय, साहकरमचंद पिता, करुणादेवी माता, विण सं। १८६२ जन्म, सुरतराम मूलनाम, सं। १८७७ सिंधिया दोलतरावके लंस्करमें दिक्षा ग्रहण करी, सौजाग्य वि शाल दिक्षा नाम, सं। १८९२ मिगशर सुद ७ सातमको गुरुवार शुभ लग्नमें श्री बीकानेर नगरमें आचार्यपदको प्राप्त जए, खजानची साह लाल चंद सालमसिंहने वज्रत द्रव्य खरचके नंदीमहोदय किया, जब श्री जिन सौजाग्यसूरि ऐसा नाम स्थापन जया, ये महाराज आचार्यपदको प्राप्त होतेही जावझीव एकलगाणा करना, शाल डशाला न उठना, पावाविहार करना, इत्यादि बहोतसा प्रमाद शिथिलतापना ठेम्के, कठन आचार धारण किया, इनोके महात्मगुण देखके, बीकानेरका राजाधिराज श्री रत्नसिंहजी तथा सिरदारसिंहजी महाराज प्रमुखतो वज्रतसे नक्तिरागको धारण करने वाले तथा स्वर्णमुद्रिकासें चरणकमलको पूजन करनेवाले जए, पीठे क्रमसे सर्वगांव नगरोंमें विहार करते मुर्शिदाबाद अजीमगंज नगरमें आए, उहां श्री संघके आग्रहसे चौमासे किये, श्रीनेमिनाथ स्वामीके मंदरमें विंवप्रतिष्ठा करी, फेर उहांसे दूगम बावू प्रतापसिंहजी प्रमुखसंघकी प्रेरणासे विहार करते कल कतै गए, जब बावू प्रतापसिंहजीने महाराजको दर्शन कराने निमत्ते काती महोदयसे अधिक, श्री धर्मनाथ स्वामीका समोसरण निकालके दादावामी ले गए, उहां तीन दिन उठवरहा फेर सहरमें आए, धर्मका वज्रत उद्योत जया, उहां कितनेक दिन रहकार, फेर मुर्शिदाबाद बालूचर आए, उहां

दूगम बाबू इंद्रचंदजीकों सिद्धगिरीजाके निनाणों यात्रा करनेका उपदेश दिया, तब इंद्रचंदजी पिण तत्काल संघ निकालके बहरीपालते थके गुरू महाराजके साथ जाए, उहांसे विहार करते चंपा नगरी गए, उहां बीकानेरके संघने बनवाया जया, श्री जिनमंदरकी बमे नव्वकेसाथ प्रतिष्ठा करी, फेर उहांसे विहार करके, शिखरजी, बनारस प्रमुख, सर्व तीर्थोंकी यात्रा करते जाए, जयपुर, कृष्णगढ, अजमेर, पाली, पंचतीर्थी, आबूजी, संखेश्वरापार्श्वनाथ, तारंगा, गिरनारजी प्रमुखकी यात्रा करते सं । १९०९ आषाढ मासमें श्री सिद्धगिरी गए उहां चौमास रहके निनाणों यात्रा करी, फेर गोगा, जवनगर, अमदावाद, धूलैवादिककी यात्रा करके, बीकानेरका राजा श्री रत्नसिंहजी महाराज प्रमुख, सर्व संघके आग्रहसे सं । १९०९ मि । फागुण वद ७ दिन बीकानेर आये, सं । १९०४ मि । माघसुद १० के दिन श्री संघके बनाया जया श्री सुपार्श्वनाथ स्वामीके मंदरकी प्रतिष्ठा करी, सं । १९०५ वैशाख सुद ५ के दिन श्री चिंतामणजीके मंदरमे श्रीजिन बिंबोंकी प्रतिष्ठा करी, सं । १९०६ मिगशर सुद १३ के दिन मंमोवर पुरमें खरतर गह्व अधिष्टायक गोरानाम क्षेत्रपालकों प्रशन्न किया, फेर सं । १९१४ आषाढसुद १ दिन श्री बीकानेर नगरमें बिंब प्रतिष्ठा करी, सं । १९१६ मि । वैशाख वद ६ के दिन नालगाम दादावामीमें संघका बनवाया नवीन मंदरकी तथा जिनबिंबोंकी प्रतिष्ठा करी, इत्यादि वहुत उपगारी धर्म उद्योतक, आचार्य गुणधारक, श्रीजिनसौजाग्य सूरि: सं । १९१७ माघसुद ३ रात्रकों चार प्रहरतक अणशण करके श्री बीकानेरमें देवलोककों प्राप्त जए ॥ ७१ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीजिन सौजाग्य सूरिकेपाटऊपर श्री जिनहंससूरि जए, तिके कुजटी गामवासीय गोताणी गोत्र, साहमनसुख पिता, जयादेवी माता, सं । १९०० जन्म हिमतराम जन्मनाम, सं । १९१७ फागुण वदि ५ पंचमीके दिन बीकानेर नगरमें दिक्षा लीनी, चोपना कोठरी, गैवरचंदजीने दिक्षा महोत्सव करा, हितवृद्धन दिक्षा नाम जया, सं । १९१७ फागुणवदि ११ एकादशीके दिन आचार्य पदकों प्राप्त जये, तब वज्रावत अमरचंदजी तथा जालरापाटण निवासी, गजमे चूरा मलजी, तथा गोलह्वा ग्यानचंदादि

करने वज्रत द्रव्य खरच करके नंदीमहोत्सव किया, तथा बीकानेरका महाराज श्रीसिरदार सिंहजीने दोयचार बेर गुरुमहाराजका दर्शण किया, गजनेरा दिकमें गुरुमहाराजकी तथा सर्वसाधुमंमलीकी वज्रत चक्ति करी, फेर बीकानेरका सत्तावीससे गामनगरोंमें, तथा देशणोक, आगरा मिरजापुर, आदि देशोंमें बिहार करते मुर्शिदाबाद गए, उहां सं । १९२४ मि । फागुण वद ४ चौथके दिन दूगरु प्रतापचंदजीका पुत्र रायबहादर लक्ष्मीपति सिंह, धनपति सिंहके, करायानया १ श्री ऊपनदेव, २ श्री वासुपुज्य, ३ श्रीनेमिनाथ, ४ श्रीमहावीर, ये चारमहाराजका पाडुका, श्रीसम्भेतसिखरजी पर्वत ऊपर जूदा जूदा चार ठिकाणें प्रतिष्ठा करके स्थापन किये, सं । १९२६ मि । फागुण सुद सातमके दिन, अजीमगंजका समस्त श्रीसंघके बनाया हुआ रामबागमें, श्रीअष्टापदजीरामंदर, तथा जिन बिंबोंकी प्रतिष्ठा करी, श्रीसंघने वज्रत द्रव्य खरचके अठई महोत्सव किया, फेर कमसे दिह्ली, रिणी, राजगढ, चुरू, इत्यादि क्षेत्रोंमेंबिहार करते सं । १९२९ मि । जेष्ठ वद ९ नवमीके दिन बीकानेर नगरमें गए, सं । १९३१ मिति जेष्ठ सुद १० दशमीके दिनमाण चौकमें उपाध्याय श्रीलक्ष्मण प्रवानजी गणिके उप देशसे तथा अंग मदतसे बनवाया हुआ, नवीन श्रीकुयुनाथ स्वामीका मंदर की प्रतिष्ठा करी, सं । १९३२ श्रीचितामणजीके मंदरमें संघका किया उठ बेकसाथ श्रीजिनबिंबोंकी प्रतिष्ठा करी, इत्यादि शुभकार्य करनेवाले सौम्य गुणधारक श्रीजिनहंससूरिः सं । १९३५ मिति कार्तिक वद १२ वासकेदिन चार पहरका अणशण करके बीकानेर नगरमें देवलोकको प्राप्त ज । ॥७२॥

॥ ७३ ॥ श्री जिनहंससूरिके पाठ ऊपर श्री जिनचंद्रसूरि गए, सो गोलठा गोत्रीय सं । १९३५ मि । माघसुद ११ के दिन आचार्य पद धारक, सौम्यगुणधारी वत्तमानकालमं विद्यमान विचरते हैं ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अथ ग्रंथ प्रशिद्धकर्त्ता गुर्वावली ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ श्रीमहावीर स्वामीसे पूर्वोक्त कोटिक खरतरगङ्गा आचार्योंके पेश ठमें पाटे, श्री जिनचंद्रसूरि गए, जिनोके शिष्य पुज्य उपाध्याय पद धारक श्री उदय तिलकजी गए, सो बीकानेरका मुकीम अवीरचंदजी मरके देवता हुआ उसको प्रतिबोधके अपने वश्यमें किया, और इसी देवताके मद



तसैं दिल्लीमें बैठे, बीकानेरके राजाकों अनेक तरहके चमत्कार देखाके अपना आग्याकारी किया, तब राजानेंजी बड़तसा मान बधाया, अरु अपना गुरूपणें स्थापन किया, इत्यादि अनेक गुणधारक सर्व अंग नपांग कों जाणनैवाले परम नपगारी धर्म उद्योतक झुए ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ २ ॥ तिनोँके शिष्य पुज्य श्री अमरशीजी गणिः ऊए ॥

॥ ३ ॥ तिनोंके शिष्य पुज्यश्री लक्ष्मी चंद्रजी गणिः ऊए ॥

॥ ४ ॥ तिनॉके शिष्य पुज्य श्री विजमालजी गणिः ऊए ॥

॥ ४ ॥ तिनोके शिष्य पुज्य श्री हाथी रामजी गणिः ऊए ॥  
॥ ५ ॥ तिनोके शिष्य पुज्य श्री हाथी रामजी गणिः ऊए ॥

॥ ५ ॥ तिनके शिष्य पुज्य श्री विद्या विशालजी गणिः ऊए ॥  
॥ ६ ॥ तिनोके शिष्य पुज्य श्री विद्या विशालजी गणिः ऊए ॥

॥ ७ ॥ तिनोँके शिष्य विद्यमान, पुज्य उपाध्याय श्री लक्ष्मी प्रधानजी

॥ ७ ॥ तिनका शिष्य विद्यमान, पुण्य पुण्य...  
गणिके आग्यानुसार, वीकानेर, कलकत्ता, मुंबईमें, जैनपाठशाला स्थापक  
तथा ग्यानवृक्षचर्य, स्तनसागर प्रथम जाग, तथा दूसरा जागादि धर्म  
संग्रहके हजारों पुस्तक प्रशिक्षकारक, जैनका सेवक, में एक अल्पश्रुधिया,  
मुनि: मोहनलाल मुक्तिकमल नामकजं ॥ ❀ ॥  
... विनय ब्रह्मानयक्त वाचेंगे, पढ़ेंगे, सुनेंगे,

मुनिः मोहनलाल मुक्तकमल नामकञ्ज ॥ ॐ ॥  
 ॥ ॐ ॥ जो ये पुस्तकों विनय वज्रमानयुक्त वाचेंगे, पढ़ेंगे, सुनेंगे,  
 जिनोंके परवारमें सदैव द्वेष, कुशल, जय, कल्याण, होते रहेंगे ॥  
 ॥ ॐ ॥ तब लग या

जिनोके परवारमे सदैव क्षेम, कुराल, जय, कल्याण, रहै ॥  
 ॥ ❀ ॥ जबलग मेरु अडिगगहै, जबलग ससिहर सूर ॥ तब लग या  
 षोथी सदा, रहजो गुणजरपूर ॥ १ ॥ शुभंभवतु, श्रीरस्तु, कल्याणमस्तु ॥  
 इति श्री खरतरगह्वीय पुज्य उपाध्याय श्री लक्ष्मीप्रधान गणिः, तन्निष्य  
 यन्मित्र मोहनलाल मुक्तिकमल मुनिः विरचिते आचाररत्नाकर द्वितीय  
 प्रकाशे कोटिकगह्व गुर्वावली संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ इति जैनइतिहासः समाप्तः ॥

